Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DESH DOOT
1949 G. K. U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

a Samaj Foundation Chenna

main, Gurukul Kangri Coll

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113450

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

COMPILED

R T-197

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY.
Price 2 Annas

९ जनवरी, १९४९ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 9th January, 1949

पुस्तकालय,
गुरुकुल काँगड़ी.

न्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

२ आना
प्रकाशक = इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस लिमिटेड इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ़ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुये प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किये बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों के छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविता-प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।||=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता रा[य] बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय क[ा] बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्त[र] किया है कृतविद्य श्री सूर्यकान्त त्रिपाठ[ी] 'निराला' ने। "विषवृक्ष सभी के घर [के] आँगन में लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से विषवृक्ष में रोग, शोक आदि नानावि[ध] फल लगते हैं।" इस उपन्यास में विषवृक्ष है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्था [में] अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का आश्र[य] पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही गई फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा [हो] गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे री[झे] कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया। उपन्यास में वर्णित उलझनों में पड़ा पाठक चकरा जाते हैं। भाषा [और] कथानक सभी विचित्र है। मूल्य [२)] दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की बेटी थ[ी]। उसका विवाह करने की चिन्ता में माँ[-बाप] और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के [लिए] चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में द[र्शन] करने के लिए ठहर गये। वहाँ के म[हन्त] अम्बिकाचरण पुरी ने नवदुर्गा को [...] करने के लिए जो जाल रचा उसका [...] पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता [है।] अन्त में महन्त का चपट चाकर अधर[...] मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और [मियाँ] का सिर' की कहावत के अनुसार म[हन्त] जी से खासी रकम ऐंठकर और नव[दुर्गा] को विधि से पत्नी बनाकर चलता हु[आ]। लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति [...] में लाकर कराई है उससे पाठक वि[...] और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य [...] एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० ब्रजे[...] वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने [...] देहाती लुहार की अल्पवयस्क बे[टी] घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहा[...] महराजगंज की रानी पृथ्वीकुँवरि [के] आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ [...] की कृपा से इस लड़की ने विद्या [...] फिर इसमें उन गुणों का विकास [...] जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान[...] है। इसने असहयोग आन्दोलन में [...] भाग लिया और अन्त में कलकत्ता [...] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [...] विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँ[...] प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उ[...] की घटनावली, विचारों का संघर्ष [...] चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहने[...] है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113450

देशदूत

[वर्ष ११, संख्या १८] . [रविवार, ९ जनवरी, १९४९]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

स्वर्गीय महात्मा गांधी के पुत्र श्री मणिलाल गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये हैं। आपने एक वक्तव्य में कहा है कि अफ्रीका की मलान सरकार भारतीयों को वहाँ से खदेड़ने में उतारू बन बैठी है। यही नहीं, सरकार की ओर से जुल्म भी किया जा रहा है। आपने यह भी बतलाया कि यूरोपियन लोग वहाँ चाहे कुछ करें कानून के शिकंजे में वह तथापि नहीं आते; किन्तु, भारतीयों को कारण ही कानून के शिकंजे में फँसाया जाता है और उनको सजायें दी जाती हैं। अपने राम की समझ में यह वहाँ कोई नई बात नहीं हो रही है। स्मट्स के शासन-काल से जो रवैया चला आ रहा है वही अब तक जारी है। सच तो यह है कि यूरोपियनों के लिए अब वह दिन नजदीक आ गया है जब कि अफ्रीका से ही नहीं, एशिया से भी वह कूच करेंगे। यह रंग-भेद अब ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। कहावत है कि जब चींटी के मरने के दिन आते है तो उसके पंख जम जाते हैं। यूरोपियनों के भी अब पंख जमने शुरू हो गये हैं। वह दिन शीघ्र आनेवाला है जब कि यूरोपियनों के विरुद्ध एशिया में यह नारा लगेगा कि 'गोरे यहाँ से चले जायँ,' जैसा कि कुछ साल पहले भारतवर्ष में नारा लगा था कि 'अँगरेजों यहाँ से चले जाओ'।

* * *

चीन में जोरों की चर्चा हो रही है कि कम्युनिस्ट और मार्शल च्यांग में युद्ध-बन्दी के लिए समझौता होनेवाला है। उधर अमरीका में मैडम च्यांग काई शेक ने आवाज बुलन्द की है कि सन् १९४९ का वर्ष चीन के लिए उतना ही कठोर और संकटपूर्ण होगा जितना सन् १९४८ रहा है। अपने राम की समझ में यही बात आती है कि समझौते का ढकोसला दिखाना-मात्र है। चीन की तरफ से सम्भव है समझौते की चर्चा चल रही हो, लेकिन कम्युनिस्टों की तरफ से जोरदार फौजी तैयारियाँ हो रही हैं। यही नहीं मार्शल च्यांग काई शेक को गिरफ्तार करने के लिए भारी रकम इनाम भी रक्खे गये हैं। इसके सिवा सबसे खास बात यह है कि सबसे पहले समझौता अमरीका और रूस में होना चाहिए तब कहीं चीनी और कम्युनिस्ट फौजों का समझौता सम्भव है। कम्युनिस्ट ऐसे बेवकूफ नहीं हैं कि जो चीनी समझौते के नजदीक जायें, क्योंकि वह जानते हैं कि यदि समझौता हो भी जाता है तो भी झगड़े की जड़ बनी ही रहती है। कहा नहीं जा सकता कि चीनी ऊँट किस करवट बैठे ? लेकिन यदि चीन पराजित हुआ तो भारतवर्ष की तीन दिशाओं में कम्युनिस्ट साम्राज्य कायम हो जायगा। यह सब किसकी बदौलत होगा—अमरीका की।

* * *

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला का कहना है कि युद्धबन्दी हो जाने के कारण काश्मीर के भाग्य का निर्णय रियासत जनता द्वारा किये जाने की हमारी माँग पूरी हो गई। अपने राम की समझ में नहीं आता कि भविष्य में काश्मीर के भाग्य का फैसला किस आधार पर होगा ? क्या सम्पूर्ण काश्मीर भारतीय संघ में शामिल हो जायगा ? क्या अँगरेज गिलगिट को भारतीय संघ के सुपुर्द कर देंगे ? क्या जम्मू जहाँ काश्मीरी पंडितों का बहुमत है डोगरा राज्य के अधीन रहेगा ? आखिर होगा क्या ? संयुक्त राष्ट्र-संघ के कमीशन ने यह युद्धबन्दी इसलिए नहीं कराई है कि काश्मीर भारतीय संघ के सुपुर्द कर दिया जाय। काश्मीर का विभाजन होगा या नहीं ? यदि होगा तो किस आधार पर ? इसकी कलई तो आगे आगे खुलेगी। किन्तु अन्तिम वही हुआ जो बहुत पहले किया जा सकता था। किन्तु लाखों रुपये स्वाहा करके और हजारों फौजियों तथा वहाँ की जनता को गोल-गप्पे में डालकर। देखना है काश्मीर-कमीशन अपने पैंतरे अब किस प्रकार बदलता है ?

* * *

सुना है जयपुर में होनेवाली कांग्रेस विषय निर्वाचिनी समिति में हिन्दी के मामले को लेकर बड़ी तूफानबाजी हुई। बड़े बड़े नेताओं ने बड़ी गरमागरम बातें कीं। राष्ट्र के कुछ नेता तो हिन्दुस्तानी के नाम पर मर मिटने को तैयार हो गये। अपने राम की समझ में नहीं आता कि कांग्रेस के महान् नेता राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में क्यों ऊहापोह मचा रहे हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी तो होगी ही। उसे कोई भी शक्ति रोक न सकेगी। अल्पसंख्यकों को प्रसन्न करने के लिए कांग्रेस नेता हिन्दी के विरुद्ध चाहे जितना शोर-गुल मचायें और हिन्दुस्तानी का झण्डा ऊँचा करने का प्रयत्न करें, परन्तु अन्ततोगत्वा हिन्दी के झण्डे के नीचे उन्हें आना ही पड़ेगा। यदि अगला चुनाव हिन्दी के आधार पर हुआ तब हिन्दुस्तानी के हिमायती कांग्रेसी नेताओं की क्या हालत होगी ? मुसलमान तो हिन्दुस्तानी के नाम पर बाजी मार ले जायँगे, लेकिन बड़े बड़े नेताओं का हिन्दुस्तानी के नाम पर यदि तख्ता उलट जाय तो आश्चर्य नहीं। भारतवर्ष का ज्यों-ज्यों विभाजन होता जायगा त्यों-त्यों सांस्कृतिक विचारधारा और भी बलवती होती जायगी। हिन्दी का प्रश्न भी एक सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रश्न है। नेताओं को इसे अपनी डायरी में नोट कर लेना चाहिए।

* * *

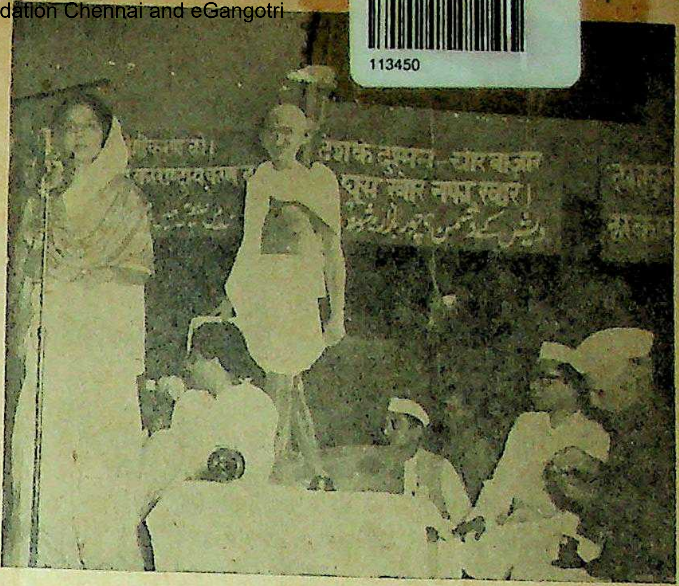

सुप्रसिद्ध समाजवादी महिला श्री अरुणा आसफ अली अखिल भारतीय समाजवादी दल की सभा में व्याख्यान दे रही हैं। आचार्य नरेन्द्रदेव तथा डाक्टर राममनोहर लोहिया बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं।

सिक्खों के गुरु नानक का प्राचीन तैल चित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

एशियाई राष्ट्रों का सम्मेलन

भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एशिया के समस्त राष्ट्रों को आमन्त्रित किया है कि वह नई दिल्ली में होनेवाले एशियाई राष्ट्रों के सम्मेलन में भाग लें। पंडित नेहरू के कथनानुसार इस सम्मेलन में यह निश्चय किया जायगा कि एशियाई राष्ट्रों का संगठन किस प्रकार दृढ़ किया जाय और ऐसे कौन से उपाय काम में लाये जायें जिनके द्वारा उनमें पारस्परिक एकता और सहानुभूति दृढ़तर होती जाय। इस प्रकार के सम्मेलन बुलाने की योजना पंडित नेहरू के हृदय में उस समय उत्पन्न हुई जिस समय डच सरकार ने इंडोनेशिया पर आक्रमण किया था और यह सम्भावना थी कि यदि युद्ध बन्द न हुआ तो एशियाई राष्ट्रों के ही लिए नहीं वरन् समस्त यूरोपियन राष्ट्रों के लिये भी खतरा उत्पन्न हो जायगा। हमें ज्ञात हुआ है कि पंडित नेहरू की इस योजना का एशिया के सभी राष्ट्रों ने स्वागत किया है और विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन की उपयोगिता का भी अनुभव किया है।

इस समय एशिया ही नहीं यूरोप भी संक्रान्ति काल से गुजर रहा है। साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने साम्राज्य के विस्तार तथा आर्थिक उद्योग-धन्धे के विकास के निमित्त इस प्रकार कार्रवाइयाँ कर रही हैं जिससे छोटे राष्ट्रों में एक संघर्ष उत्पन्न हो गया है। यूरोपियन राष्ट्र अपने उपनिवेशों को गुलाम बनाये रखने के लिए सतत उद्योगशील हैं। अमरीका, ब्रिटेन और रूस इन तीनों महान् राष्ट्रों का पारस्परिक संघर्ष संसार की शान्ति और व्यवस्था को भंग करने की ओर अग्रसर हो रहा है। जर्मनी, दक्षिण अफ्रीका, फिलिस्तीन, अरब राष्ट्र, चीन तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के द्वीपों और उपनिवेशों की राजनैतिक समस्यायें इस समय भावी संघर्ष की ओर संकेत कर रही हैं। कम्युनिज्म की व्यापकता योरुप और एशिया में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। जनता गरीबी, आर्थिक संघर्ष और दैनिक जीवन में उपयोग आनेवाली वस्तुओं के अभाव और महँगी से परेशान हो रही है। भीतरही भीतर समस्त संसार में एक प्रकार की क्रान्ति की आग सुलग रही है जिसका विस्फोट कब होकर एक तीसरे महायुद्ध का आविर्भाव हो जाये, इस सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

साम्राज्यवादी राष्ट्रों की स्वार्थ-लोलुपता उस चरम सीमा तक पहुँचती जा रही है जिसे संसार की शांतिप्रिय जनता सहन करने को तैयार नहीं है। भारत का संसार के महान राष्ट्रों में एक स्थान है, संसार का भविष्य बहुत कुछ भारत की सहानुभूति पर ही निर्भर है। यदि यह कहा जाय कि भविष्य में भारतवर्ष संसार की गुलाम जनता के लिए शान्ति और व्यवस्था का सन्देशवाहक बनेगा तो आश्चर्य की बात नहीं। ऐसे अवसर पर एशियाई राष्ट्रों के सम्मेलन का एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। यदि एशियाई राष्ट्र अपनी पारस्परिक एकता बनाये रहने की एक योजना स्थिर कर लेते हैं तो साम्राज्यवादी राष्ट्रों के लिए भी यह एक बड़ी चेतावनी होगी और सम्भव है कि इस चेतावनी से संसार में शान्ति और व्यवस्था की स्थापना में एक प्रकार की सहायता प्राप्त हो।

पिछले कुछ दिनों की घटनायें हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित कर रही हैं कि यूरोपियन राष्ट्र साम्राज्यवादी राष्ट्रों के सहयोग तथा सहानुभूति से एशियाई राष्ट्रों को या तो गुलाम बनाये रखना चाहते हैं या आर्थिक, राजनैतिक, समाजिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से उन्हें पंगु बना देना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि एशियाई राष्ट्रों की जनता द्वारा उनका आर्थिक भंडार दिन-प्रतिदिन बढ़ता जाय; उनका व्यापार दिन-दूना रात चौगुना दृढ़तर होता जाय, वहाँ की जनता उनकी पराधीनता में पिसती जाय तथा उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किये रहें। किन्तु अब युग बदल गया है; गुलाम जनता भी अब जागृत हो गई है; वह किसी प्रकार भी विदेशियों की पराधीनता स्वीकार करने को तैयार नहीं है। इंडोनेशिया इसका जीता-जागता उदाहरण है। डच साम्राज्यवादी इंडोनेशिया को गुलाम बनाये रखना चाहते हैं, किंतु इंडोनेशिया के निवासी डचों की गुलामी अस्वीकार करके स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। इसी प्रकार एशिया के अन्य राष्ट्र भी चाहते हैं कि उनके देश में विदेशियों का प्रभुत्व किसी प्रकार भी स्थापित न होने पाये। दिल्ली में होनेवाले सम्मेलन का इस दृष्टि से एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। यदि भारतवर्ष, अफगानिस्तान, ईरान, अरब, ईराक, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशियाई द्वीप तथा उपनिवेश, चीन, स्याम तथा अन्यान्य छोटे राष्ट्र संगठित हो गये, उनमें एकता स्थापित हो गई तो यूरोपियन साम्राज्यवादियों की दाल कदापि नहीं गल सकती। एशिया के लिए वह दिन सौभाग्य का होगा जब कि नये युग के इस सन्देश को यहाँ के राष्ट्र स्वीकार कर लेंगे। इस समय भी एशियाई राष्ट्रों पर यूरोपियन साम्राज्यवादी राष्ट्रों का एक प्रभाव तो है ही। उनके उस प्रभाव से यदि मुक्ति पाना है तो उसका एकमात्र उपाय है—एशियाई राष्ट्रों का पारस्परिक संगठन। रंगभेद, आज व्यापक रूप से अपना जहर फैला रहा है। गोरी जाति कभी भी नहीं चाहती कि काली जाति अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से संगठित होने पाये। दक्षिण अफ्रीका में यद्यपि ८० प्रतिशत ऐसे भारतीय निवास करते हैं जो वहाँ के जन्मजात निवासी हैं किन्तु वहाँ के अल्पसंख्यक गोरे उन्हें खदेड़ने के लिए उतावले हो उठे हैं।

दक्षिण अफ्रीका भी एशिया का महाप्रांत है। यदि एशिया के राष्ट्र संगठित होते हैं तो दक्षिणी अफ्रीका उनका एक अंग बन जाता है। इस प्रकार वहाँ की गोराशाही के समाप्त होने में विशेष समय न लगेगा। हम तो समझते हैं कि भविष्य में यह रङ्ग-भेद इतना व्यापक रूप ग्रहण करेगा कि यूरोप और एशिया पक्ष और विपक्ष दल के रूप में इसी आधार पर अपन भविष्य निर्माण करने की ओर अग्रसर होंगे। हम अभी इस सम्बन्ध में निश्चय रूप से तो कुछ नहीं कह सकते, किन्तु हो सकता है कि तृतीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने का मूल कारण रङ्गभेद ही हो। यूरोप बनाम एशिया का पारस्परिक संघर्ष संसार में एक व्यापक रूप ग्रहण कर सकता है। इसलिए हमें अभी से सचेत होना है कि एशियाई राष्ट्र संगठित हों और उनमें पारस्परिक एकता स्थापित हो।

दिल्ली में होनेवाले एशियाई राष्ट्रों के सम्मेलन का हम स्वागत करते हैं। हम चाहते हैं कि अभी से ऐसी दृढ़तर योजना सम्मेलन द्वारा स्वीकृति की जाय जिसका आधार आर्थिक हो। सैनिक दृष्टि से भी सभी एशियाई राष्ट्रों को एक ऐसी योजना स्वीकृत करनी चाहिए जो सुरक्षा के लिये लाभकारी सिद्ध हो। विदेशी राष्ट्र यदि संसार की शान्ति और व्यवस्था में बाधक हैं तो उनका खुलकर विरोध किया जाय। आर्थिक दृष्टि से कोई भी यूरोपियन सम्राज्यवादी राष्ट्र एशिया को अपना बाजार न बना सके। कोई साम्राज्यवादी शांति और व्यवस्था को भंग करे तो एशियाई राष्ट्र सामूहिक रूप से उसके प्रतिरोध के लिए तैयार हो जायँ। कुछ इसी प्रकार की योजनायें यदि सम्मेलन द्वारा स्वीकृत हुईं तो सचमुच यह संगठन एशियाई राष्ट्रों के लिए संजीवनी का कार्य करेगा। हमारा विश्वास है कि भारत-सरकार बड़ी दूरदर्शिता से इस प्रकार का कार्य करने जा रही है। एशियाई राष्ट्रों के संगठन की सफलता समस्त संसार में शांति और व्यवस्था की सफलता समझी जायगी इसमें सन्देह नहीं।

भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू, आपने समस्त एशियाई राष्ट्रों को आमन्त्रित किया है।

पारिभाषिक शब्दावली

केन्द्रीय सरकार का क्य[ा] कर्तव्य है ?

लेखक, डाक्टर राकेश गुप्त, एम० ए० डी० फिल्०

परतंत्रता की शृंखलाओं को तो[ड़] चुकने के पश्चात् आज जब हम अप[नी] परतंत्रता के अवशेष चिह्नों को भी सम[ाप्त] करने के संबंध में सोचते हैं तो अँगरेजी [के] स्थान पर अपने देश की भाषाओं [को] शिक्षा का माध्यम बनाने की बात स[बसे] पहले हमारे सामने आती है। पर इस [मार्ग] पर अग्रसर होने से पहले एक अनि[वार्य] प्रश्न जो हमारे सामने उपस्थित होत[ा है] वह यह है कि हम अँगरेजी की पारिभा[षिक] शब्दावली को अपनी भाषाओं में [किस] रूप में ग्रहण करें। हमारे शिक्षा-[मंत्री] मौलाना आजाद का इस संबंध में [यह] मंतव्य है कि अँगरेजी की शब्दावली [को] ज्यों का त्यों ग्रहण कर लेना ही सर्वा[धिक] सुविधाजनक होगा। संभव है कि उन[के इस] मंतव्य को स्वीकार करके हम इस परि[वर्तन] कालकी कठिनाइयों को आज के लिये [कुछ] कम कर सकें; पर आगे आनेवाली पी[ढ़ियों] पर सदा के लिये एक विदेशी भाषा [की] शब्दावली का बोझा लादना [कोई] बड़ी समझदारी का काम नहीं [कहा] जा सकता।

संतोष का विषय है कि मौलाना [आजाद] के इस मत को देश के किसी भी को[ने से] कोई समर्थन प्राप्त नहीं हुआ, और [काशी,] प्रयाग तथा पूना इत्यादि में कई बड़ी संस्थाएँ पारिभाषिक शब्दावली के नि[र्माण] के कार्य में दत्तचित्त हैं। मध्यप्रान्त में [वहाँ] की सरकार की ओर से ही डा० र[घुवीर] के निरीक्षण में इस संबंध का एक [बड़ा] प्रयत्न हो रहा है, जो शब्दों के चुना[व में] अपनी एक विशेष विलक्षणता के [कारण] हाल में ही पत्र-पत्रिकाओं में आले[चना] एवं चर्चा का विषय बना है। पर इन सब प्रयत्नों की ओर देखकर ए[क ओर] हमें इसबात से प्रसन्नता होती है कि हम [अपनी] आवश्यकताओं के प्रति स्वयं ही इतने [जाग]रूक हैं कि बिना किसी सरकारी स[हायता] अथवा प्रोत्साहन के भी हम उन्हें पू[रा कर] सकते हैं, वहीं दूसरी ओर इन विख[रे हुए] प्रयत्नों की असंबद्ध अनेकता के [कारण] भावी परिणाम के रूप में हमारे [शिक्षा] एवं अध्ययन के क्षेत्र में जो [गड़बड़ी] उत्पन्न होगी, वह हमारी चिन्ता [का] कारण है।

पारिभाषिक शब्दों का निर्मा[ण इस] लिये किया जा रहा है कि हमारी [भाषाओं] में प्रत्येक विषय के ग्रंथ सुविध[ापूर्वक] लिखे जा सकें। पर यदि एक ही [भाव] अथवा वस्तु को व्यक्त करने के लि[ये भिन्न-] भिन्न व्यक्तियों द्वारा निर्मित अनेक [शब्दों] का प्रचलन हुआ तो हमारी कठि[नाइयाँ] पहले से भी अधिक बढ़ जायेंगी। किसी भी ऐसी पुस्तक का अध्य[यन न कर] सकना, जिसमें पारिभाषिक शब्दों [की बहु]लता हो, हमारे लिये प्रायः असंभ[व हो] जायेगा। परीक्षक अपने प्रश्न-पत्र

शेष पृष्ठ १८ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

गत जून के अन्त में ब्रिटेन की जनसंख्या की गणना से सिद्ध हुआ है कि वहाँ महीने में २,७४,००० बढ़ गई है। इस बढ़ी हुई संख्या का चित्र अभी प्रकाशित हुआ जिसमें दिखलाया गया है कि १५,१३,-५०० स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक हैं। स्त्रियाँ प्रायः ३० से ४४ वर्षीया और ५० से ६० वर्षीया और उसके ऊपर अवस्था की हैं। पुरुषों की कुल संख्या २,४२,६०,-६०० और स्त्रियों की संख्या २,५७,७३,-१०० विगत जून में थी।

*   *   *

अमेरिका के हालीवुड शहर में इतना आलस्य छा रहा है कि लोग सामान खरीदने, धोबी की दूकान पर जाने, बाल की दूकान तक जाने में मोटरकार इस्तेमाल करते हैं। कुछ तो बिस्तर तक जाने के लिए छोटी मोटरकार इस्तेमाल करते हैं जिसकी कीमत ३५ पौंड से लेकर १५० पौंड (३५० रुपये के लगभग से २१०० रुपये) तक है।

*   *   *

न्यूयार्क के एक आदमी को अदालत में चोरी की चीज पहचानने के लिए गवाह बनाकर लाया गया। आदमी को ६ बोतलें दिखलाई गईं और कहा गया कि बतलाओ इन बोतलों में कौन सी बोतल है? गवाह ने शराब की बोतलों को लेकर चखा। थोड़ी थोड़ी कर वह इतनी पी गया कि गवाह की दशा वहीं खराब हो गई और वह अनाप-शनाप बकने लगा। अदालत को स्वयं अपने गवाह की रक्षा के लिए परेशान होना पड़ा। मुकदमा खारिज कर दिया गया।

*   *   *

एक अँगरेज का कहना है कि ईश्वर ने सर्वप्रथम मनुष्य बनाया। तत्पश्चात् स्त्री। इसके पश्चात् जब उसने अनुभव किया तो मनुष्य के लिए तम्बाकू बनाया।

*   *   *

एक अँगरेज विद्वान् का कहना है कि मैं जिससे मिलता हूँ वे या तो लेखक या रचयिता की अभिलाषा रखते हैं या धनी होना चाहते हैं।

*   *   *

ब्रिटिश पार्लियामेंट के एक सदस्य कहते हैं कि यद्यपि प्रत्येक बालक यह जानता है कि फिल्म कैसे बनी है और यह भी व्यक्त कर सकता है कि मोटर की मशीन और पुर्जे कैसे बने हैं। परन्तु थोड़े से ही क्यों पार्लियामेंटरी कार्य के सम्बन्ध में जानते हैं?

*   *   *

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

प्रयाण-गीत

लेखक, श्रीपालसिंह 'क्षेम' एम० ए०

बढ़े चलो जवान देश के, बढ़े चलो।

क्रूर काल का विनाश दैत्य सो गया।
मिट चली अमा-निशा, प्रभात हो गया।
झर रही कनकमयी किरन, प्रभा हँसी,
मुक्ति - देवता कलंक - कूल धो गया॥

झूमते व्यतीत के कुहास-पंथ से—बढ़े चलो जवान देश के, बढ़े चलो।

मानता अभी घिरी घटा नहीं कटी।
मानता अभी विभीषिका नहीं घटी॥
हैं डरा रही अभी विलोल बिजलियाँ,
मानता अभी सुदूर है सुखद-तटी॥

मृत्यु को कँपा रहे प्रयाण-चाप से—बढ़े चलो जवान देश के, बढ़े चलो।

वीर आर्य जाति की कहानियाँ लिए।
शिवि-दधीचि-अस्थि की निशानियाँ लिए॥
तुम अजेय पुत्र वीर, नीलकंठ के—
रुको न आज, आग की जवानियाँ लिए॥

शीर्ष राष्ट्र-भूमि को नवल प्रकाश से—मढ़े चलो जवान देश के, मढ़े चलो।

मन्द हो चरण न तनिक वीर भारती।
माँ उतारने खड़ी सँवार आरती॥
अश्रु हैं सुभाष के तुम्हें बुला रहे,
भस्म कर्मचन्द्र की तुम्हें पुकारती॥

विश्व-सृष्टि की निजी नवीन कल्पना, गढ़े चलो जवान देश के, गढ़े चलो।

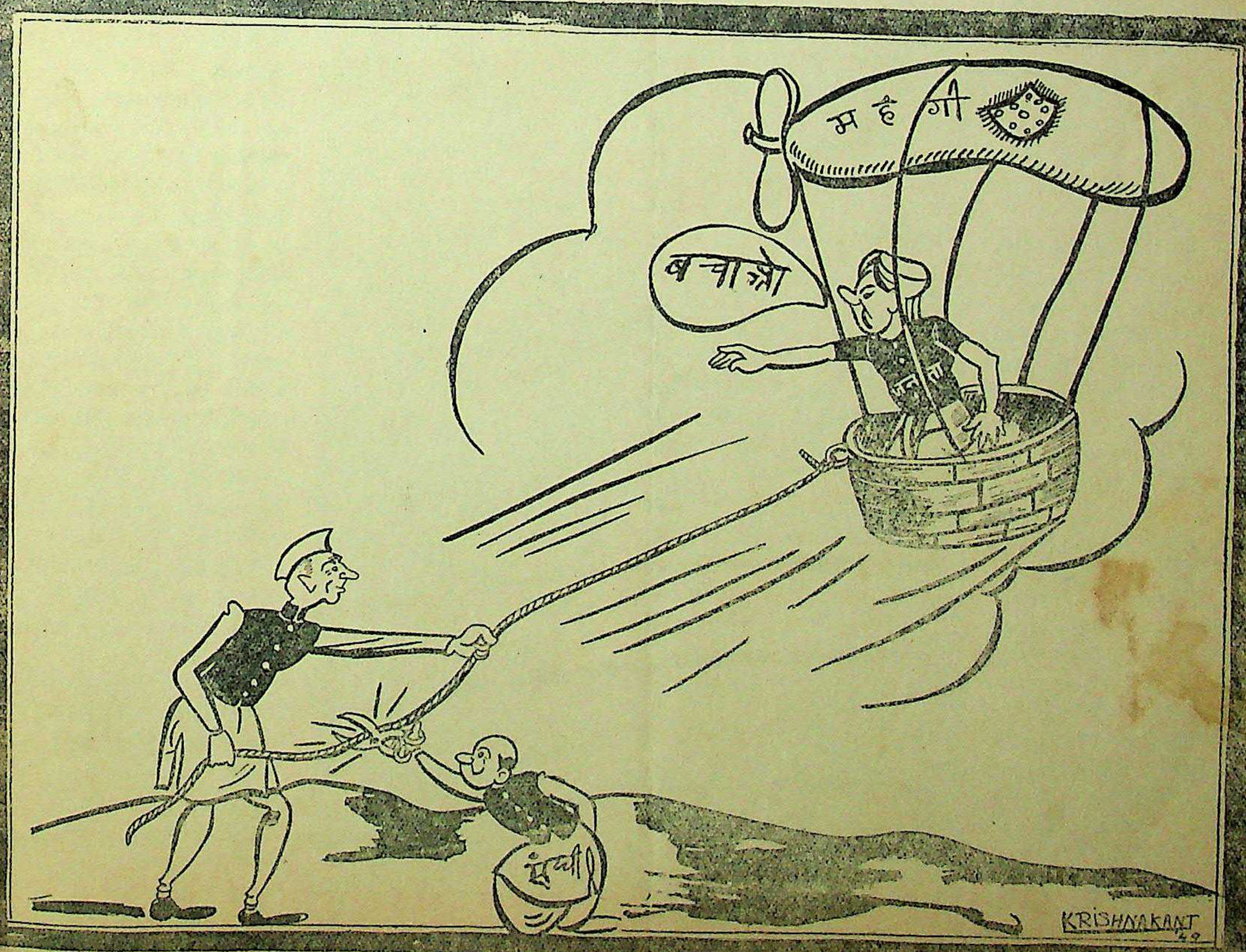

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक बीमा और मजदूर

क्या सरकार श्रमजीवियों की समस्या हल करेगी ?

लेखक, श्री विजयचन्द्र टंडन, एम० ए०

> सरकार मजदूरों की समस्या हल करने का उद्योग कर रही है। मजदूरों के हित के लिये बीमा भी उपयोगी है। इस लेख में भी योग्य लेखक ने बीमा की उपयोगिता मजदूरों के लिये हितकर प्रमाणित की है। लेख अत्यन्त सामायिक और मजदूरों की हित की दृष्टि में एक सुझाव उपस्थित करता है।

भारत के श्रम मंत्री माननीय श्री जगजीवन राम और देशरत्न डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद।

सामाजिक बीमा क्या है ? क्या सामाजिक बीमा भारतवर्ष के मजदूर वर्ग की गिरी हुई हालत को सुधारने में सहायता दे सकेगी ? क्या भारतवर्ष का अनपढ़ मजदूर सामाजिक बीमा के महत्त्व को समझकर उससे पूरा लाभ उठा सकेगा ? भारतीय सरकार के हाल ही में 'बीमा कारपोरेशन एक्ट' (इन्शोरेन्स कारपोरेशन एक्ट) के पास करने के बाद यह प्रश्न देश के गरीब मजदूर तथा अन्य हितैषियों के सामने आ गये हैं। इन प्रश्नों का ठीक उत्तर भारतीय मजदूर की वर्तमान दशा और इस नए एक्ट का पूर्णतया अध्ययन करके ही दिया जा सकता है।

वर्त्तमान मजदूर वर्ग

मजदूर वर्ग, वैसे तो आज प्रत्येक स्वतन्त्र देश के लिये एक समस्या बन गया है। परन्तु भारतवर्ष में इस समस्या का अन्य स्वतन्त्र देशों से कहीं अधिक महत्त्व है। भारतवर्ष हाल ही में विदेशी पंजों से रिहा हुआ है। देश की औद्योगिक उन्नति इस शिशु स्वतन्त्रता को बलिष्ठ बनाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। देश की औद्योगिक उन्नति में उत्पत्ति के अन्य दो साधनों— भूमि, पूँजी या व्यवस्था के अतिरिक्त तीसरे साधन 'श्रम' का अधिकांश हाथ है। परन्तु क्या यह साधन आज तक के असन्तुष्ट वातावरण में अधिक सहायक हो सकेगा ? भारतवर्ष का मजदूर अनपढ़, अयोग्य और असहाय है। अपने बाल-बच्चों का पेट भरने, बीमारी में दवा-दारू करने और ब्याह-शादी में भाई-बन्धुओं से मिलने में उसको कठिनाई होती है। प्रातःकाल से रात तक भरपूर मेहनत करने के बाद भी वह अपने बाल-बच्चों के लिये एक फूटी कौड़ी भी छोड़ जाने को असमर्थ होता है। यह सब क्यों ? और इसका केवल एक ही उत्तर है कि उसका वेतन उसकी मेहनत के बराबर नहीं मिलता।

यहाँ एक प्रश्न उठता है कि क्या देश की सरकार का यह कर्त्तव्य नहीं है कि देश के इस वर्ग की दशा सुधारने का भार अपने ऊपर ले ? इस प्रश्न का उत्तर मि० चर्चिल की मिनस्ट्री के काल में मि० बेवरिज ने, अपनी एक योजना जो 'बेवरिज प्लान' के नाम से मशहूर है, द्वारा दिया था। मि० बेवरिज ने अपनी इस योजना में बताया था कि देश की सरकार का कर्त्तव्य केवल बेकार को नौकरी देना ही नहीं है बल्कि बीमार की मुफ्त दवा-दारू का प्रयोजन करना, लँगड़े-लूले और अपाहिज को भरपेट भोजन देना भी देश की सरकार का कर्त्तव्य है। मि० बेवरिज ने सामाजिक बीमा के ऊपर काफी जोर दिया। बेवरिज प्लान कुछ संशोधनों के बाद मान ली गई जिससे मजदूर वर्ग का काफी लाभ हुआ है।

भारतवर्ष में भी इस योजना का प्रभाव पड़ा और ब्रिटिश सरकार के समय में ही श्री अडारकर को भारतवर्ष के लिये एक सामाजिक बीमा-योजना बनाने का काम सौंपा गया। श्री अडारकर की योजना बहुत कुछ बेवरिज-योजना पर ही निर्भर रही। परन्तु विदेशी सरकार के हथकंडों के कारण वह लागू नहीं की गई। भारतवर्ष में ऐसी योजना को सफल बनाने में कुछ कठिनाइयाँ अवश्य हैं सामाजिक योजना में मजदूर, पूँजीपति और सरकार तीनों को ही अपनी आय का कुछ अंश देना पड़ता है। भारतवर्ष का मजदूर इतना गरीब है कि उसके लिये अपनी थोड़ी आय का जरा सा भी अंश देना बहुत ही कठिन होगा। परन्तु देश के स्वतंत्र होने के बाद मजदूर अपने लाभ के लिये ज्यों-त्यों करके थोड़ा बहुत तो देने में आनाकानी नहीं करेगा। इसी आधार पर भारतीय सरकार ने सामाजिक बीमा इन्शोरेन्स कारपोरेशन एक्ट पास किया है। इस एक्ट का पूर्णतया ज्ञान होना आवश्यक-सा हो जाता है।

बीमा कारपोरेशन एक्ट

सरकारी बीमा कारपोरेश एक्ट इसी साल अप्रैल के महीने से लागू किया गया है। फिलहाल यह एक्ट कारखानों में काम करनेवाले केवल उन्हीं मजदूरों तक सीमित रहेगा जिनकी आय ४०० रु० माहवार से अधिक नहीं है। इस एक्ट के अनुसार एक कोष बनाया जायगा जिसमें मिल-मालिक और मजदूर दोनों ही अपनी आय का कुछ अंश जमा करें जिससे बिमारी, मातृत्व और आकस्मिक दुर्घटना के समय मिल में काम करनेवाले मजदूर को आवश्यक सहायता पहुँचाई जायेगी। केन्द्रीय सरकार पहले पाँच वर्षों तक इस योजना के प्रबन्ध करने की लागत के खर्चे का दो-तिहाई हिस्सा और प्रान्तीय सरकार एक तिहाई हिस्सा अपने कोष से देगी। प्रत्येक मिल-मालिक, अपने प्रत्येक मिल मजदूर के औसत दिन-प्रति-दिन के वेतन के हिसाब से इस कोष में रुपया जमा करेगा जो लगभग ७ आने या २१ रु० प्रतिहफ्ता प्रतिमजदूर होगा। मिल-मजदूर इस एक्ट के अनुसार आठ वेतन श्रेणियों में बाँटे गये हैं। सबसे अन्तिम श्रेणी उन मजदूरों की है जिनका वेतन एक रुपये से कम है। इस श्रेणी के मजदूरों को इस बीमा कोष में कुछ जमा नहीं करना पड़ेगा, परन्तु वह प्रत्येक लाभ के हकदार अवश्य रहेंगे। इससे ऊँची श्रेणी के मजदूरों को दो आना प्रति हफ्ता और इससे ऊँची श्रेणी के मजदूर, जिनकी आय १½ रु० और २) रु० प्रतिहफ्ता के बीच में है, को चार आने प्रति हफ्ता कोष में देना पड़ेगा। इनसे ऊँची श्रेणियों में प्रत्येक मजदूर को अपने मालिक की कोष में दी हुई पूँजी का आधा देना पड़ेगा। इस प्रकार बीमा कोष में मिल-मजदूर और मिल-मालिक दोनों ही अपनी अपनी औकात के हिसाब से अपनी अपनी आय का कुछ अंश जमा करेंगे।

प्रत्येक मजदूर, जो इस योजना में अपना बीमा करा लेगा, बीमारी के समय मुफ्त दवा-दारू का हकदार होगा। इस एक्ट में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि केवल मजदूर ही नहीं बल्कि उसके पूरे परिवार को बीमारी के समय सहायता मिलनी चाहिए। परन्तु पूरे परिवार पर यह तब ही लागू हो सकेगा कि जब प्रान्तीय सरकार कोष में इस बढ़े हुए खर्चे के लिये काफी रुपया जमा कर लेगी। अनुमान लगाया गया है कि केवल मजदूर ही की डाक्टरी देख-रेख का खर्चा लगभग छः रुपया प्रतिव्यक्ति प्रतिवर्ष के करीब पड़ेगा। वैसे देखा जाय तो यह कुछ अधिक नहीं है क्यों कि भारतवर्ष के मजदूर की शोचनीय दशा को सुधारने के लिये इससे अधिक की आवश्यकता है। परन्तु वर्तमान खर्चा जो केवल छः आने प्रतिव्यक्ति पड़ता है उससे तो यह अवश्य अधिक है और इसलिये कुछ हद तक सन्तोषजनक है।

डाक्टरी देख-रेख के अतिरिक्त बीमार मजदूर को अधिक से अधिक आठ हफ्ते तक बीमारी की दशा में कुछ नकद (नगद रुपया) भी दी जायेगी जिससे बीमारी के कारण बेकारी के समय में वह अपने घर का खर्चा चला सके। जो औरतें मजदूरी करती हैं और अपना बीमा योजना के अनुसार करा चुकी हैं उन्हें गर्भवती होने के समय बारह हफ्ते

शेष पेज १८ पर देखिए

जयपुर कांग्रेस में 'अखंडज्योति' जो भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी जन-क्रान्ति और एशिया

चीन के पराभव से प्रजातन्त्रवादी राष्ट्रों के लिए एक खतरा

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

प्रजातन्त्र में महान् परिवर्तन हो रहा है। कम्यूनिस्टों तथा चीनी सरकार में समझौते की वार्ता हो रही है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने प्रजातन्त्र चीन की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर अध्ययनपूर्ण प्रकाश डाला है और यह प्रमाणित किया है कि चीनी प्रजातन्त्र का पतन एशिया ही नहीं समस्त संसार के लिए खतरे का प्रारम्भ है। लेख अध्ययनपूर्ण और पठनीय है।

प्रजातंत्र चीन के मार्शल च्यांगकाई शेक जो समझौते के लिए उत्सुक हैं।

चीनी जन-क्रांति का वेगशाली प्रवाह नानकिंग से टकरा रहा है। यह चीन की तीसरी जन-क्रांति है। पहली क्रांति की लहर ने मांचू राजवंश का अंत किया। इसके नेता डा० सनयात सेन थे। दूसरी जन-क्रान्ति की लहर ने सामन्तवाद को नष्ट किया। चीन एक हुआ। देश में केन्द्रीय शासन स्थापित हुआ। पर क्रांति बीच ही में रुक गई। इस क्रांति के नेता डा० सनयात सेन के तीन सिद्धान्तों और सूत्रों को भूल गए। मार्शल च्यांगकाई शेक पिछले २७ साल से क्युमिंटांग पार्टी के नेता और चीन के शासक हैं। पर वे क्रांति-रथ को आगे बढ़ाने के बजाय निहित स्वार्थवर्ग के दलदल में फँस गए और चीन पर चार चार परिवारों का नियन्त्रण और राज्य स्थापित करने में सहायक हुए। वे जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा चीन में शासन स्थापित करने में विफल रहे। वे चीनी जन-जीवन को सुखी और समृद्धि बनाने में असफल रहे। यूनानियों, यूस्लावियों, बड़े जमींदारों, सरदारों और महाजनों के कठोर पाश से जनता को मुक्त कराने में विफल रहे। वे कम्युनिस्ट पार्टी के नेता माओसे-तुंग के शब्दों में कागजी शेर सिद्ध हुए और अब चीनी जन-क्रांति की वर्षा उनको बहाये दे रही है। कम्युनिस्टों की सफलता और च्यांग की पराजय का रहस्य इसी में निहित है।

सबके लिए जमीन

भारतीयों के समान चीनी भी व्यक्ति-वादी हैं। चीनी भी परम्पराप्रिय और रूढ़िप्रिय हैं। इसलिए मार्क्सवाद के लिए चीन उर्वरा क्षेत्र नहीं है। पर कृषि-प्रधान देश होने के कारण और जमींदारों कर उगाहकों, और महाजनों के कठोर चंगुल में किसानों के रहने के कारण चीन कम्युनिस्ट के प्रसार के लिए बहुत उपयुक्त क्षेत्र है। भारत में भी कम्युनिस्टों की लोकप्रियता और सफलता का यही एक बड़ा कारण है।

माओ-सेतुंग की जन-सेना (पीपल्स आर्मी) द्वारा च्यांग-शासन से मुक्त किये गये प्रदेशों में सामन्तवाद के अवशेषों का अन्त कर दिया गया है। एक विदेशी एक मुक्त-प्रदेश में कुछ मास रहा। वहाँ उसने 'सामन्त' (फ्युडलि) नाम इतने अधिक बार सुना कि उस शब्द को सुनते सुनते उसके कान पक गए और उसको हार्दिक इच्छा रही कि उसके कान में फिर यह शब्द न पड़े। कम्युनिज्म ने सदियों से अपरिवर्तित और न बदलनेवाले चीन को बदल दिया। चीनी जनता को कम्युनिज्म में बदलने में सफल हुआ है। कम्युनिज्म के लिये उपयुक्त क्षेत्र शहर और शहरों में भी मजदूर बस्ती समझा जाता है। गाँवों और किसानों को इसके लिये उपयुक्त क्षेत्र नहीं माना जाता। गाँवों के लोग और किसान प्रकृति से पुरातन-प्रेमी होता है और अपनी जमीन का मोह छोड़ने में असमर्थ होता है। सामूहिक जीवन की अपेक्षा वैयक्तिक जीवन को अधिक पसन्द करता है। यही कारण है कि कम्युनिस्टों ने दुनिया भर में अपने कार्य का क्षेत्र और केन्द्र शहरों को बनाया है। चीन इसका केवल अपवाद है। यहाँ चीनी कम्युनिस्टों ने शहरों की ओर पीठ फेर रखी है और गाँवों को उन्होंने अपना कार्य-क्षेत्र बनाया है। फलतः उन्होंने अवस्थाओं और परिस्थितियों के अनुसार अपने कार्यक्रम और सिद्धान्तों में भी परिवर्तन किया।

पिछले साल एक और सुधार भूमि-कानून में किया गया, जिससे देहातों का मध्यम वर्ग भी जन-क्रांति के साथ चलने को उद्यत हो जाय। प्रदेश पर अधिकार होने के साथ उसकी सारी खेती की जमीन सब लोगों में बराबर-बराबर बाँट दी जाती है। भाग पानेवालों में स्त्रियाँ और बच्चे भी होते हैं। यदि जमींदार सौभाग्य से जीवित बचा रह जाता है और गाँव के लोगों की प्रतिहिंसा और प्रतिशोध से बच जाता है, तो उसको भी जमीन का एक भाग अन्यों के समान मिल जाता है।

कृषि-सुधार कानून अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। भारतवर्ष में भी भूमि और कृषि-कानून में सुधार हो रहा है। जमींदारी-प्रथा का भी अन्त करने की कोशिश बिहार, युक्तप्रांत, आसाम और मद्रास में की जा रही है। कांग्रेस ने भूमि-कानून पर विचार करने के लिए एक कमेटी नियुक्त कर रखी है। भूमि-समस्या एशिया के सब देशों में है। चीन में कम्युनिस्ट पार्टी ने 'उनमुक्त प्रदेशों' का प्रश्न में सफलता के साथ हल किया है। खेती से सामन्ती उत्पादन का अन्त कर दिया गया। उत्पादक पूँजी और क्रय शक्ति दोनों किसानों के हाथ में दे दी गई है। जमींदारों की पूँजी देहातों से हटाकर कस्बों और शहरों में बदल दी गई है। इससे केवल 'युक्त-प्रदेश' में ही नहीं अपितु समस्त चीन में उत्पादन का नवीन युग आरम्भ हुआ है। लाखों एकड़ जमीन किसानों में बाँट दी गई है। यह एकाकी रूप नहीं है। यह उत्पादन का एक अंग है। व्यवसाय और उद्योग के संरक्षण और विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है।

जमीन खेत जोतनेवाले की है

वैयक्तिक सम्पत्ति का अभी अन्त नहीं किया गया है, क्योंकि गाँववालों के रग-रग में वैयक्तिक सम्पति की भावना रमी हुई है। इसलिए डा० सनयातसेन का यह प्रोग्राम कि 'जमीन खेत जोतने-वाले की है' अभी अपनाया गया है। क्युमिंटांग पार्टी के प्रोग्राम के यह अन्तर्गत है। पर वह भी कागजी कानून से आगे नहीं बढ़ा। सामूहिक खेती को अभी जारी नहीं किया गया है। सामूहिक खेती के लिए औद्योगीकरण आवाश्यक है। और आगे की प्रगति के लिए यह आवश्यक है।

* * *

चीन की २० करोड़ आबादी का चीनी प्रदेश इस समय कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकार में है। सोवियत यूनियन और पीत नदी के बीच चीनी कम्युनिस्टों के आठ बड़े शहर हैं, जिनकी आबादी २ लाख से ८ लाख तक है। इनमें से अधिकांश में जापानियों द्वारा विकसित औद्योगिक प्लाण्ट मौजूद है। इस प्रदेश की दस्तकारी को अपेक्षाकृत आधुनिक उद्योग अपने हाथ में ले रहे हैं। एक बात यहाँ समझ लेनी चाहिए। जब कहा जाता है कि चीनी कम्युनिस्ट आधुनिक उद्योग और मैशीनरी बरत रहे हैं, तब यह सापेक्षिक होता है और चीनी गुरिल्ला आर्थिक तंत्र को ध्यान में रखकर वह बात कही जाती है। पर दो 'नार्थ चीन बार्डर रीजन' उत्तरीय चीन के सीमान्त दो प्रदेशों में यात्रा करने के बाद डेविड क्रुक ने अनुभव किया कि २० करोड़ चीनी जनता अयांत्रिक युग में प्रवेश कर रही है।

वैयक्तिक सम्पत्ति और वैयक्तिक साहस के प्रति चीनी कम्युनिस्टों के रवैये में परिवर्तन हुआ है। जापान के साथ जब लड़ाई चल रही थी, तब जमींदार और भूमिपति जापानियों के साथी और मित्र समझे जाते थे। उनका उद्योगों से भी सम्बन्ध होता था। इसलिए ४ मई १९४६ से जब जमीन के कानून में नया सुधार किया गया और जमींदारों की जमीन जब्त की गई, तो उसके साथ तो कुछ उद्योग भी नष्ट हो गए और कुछ व्यवसाय भी जब्त हो गये। यह कम्युनिस्टों की नीति के विरुद्ध था, क्योंकि उनको शोषित नीति सामन्तवाद और नौकर-शाही पूंजीवाद का नाश करना था। क्रान्तिकारी युद्ध के प्रथम वेग और उत्साह में इस नीति का पूर्णतः पालन नहीं किया गया। पर १९४८ के आरम्भ में इस नीति का अन्त हो गया और वैयक्तिक और निजू व्यवसाय को नवीन चीनी आर्थिक तंत्र में यथोचित स्थान दिया गया और उसकी रक्षा की गई। फरवरी में चीन का नया साल शुरू होता है। इस दिन 'इण्डस्ट्रियल एण्ड कमर्शियल' ब्यूरो के अधिकारी और जनता द्वारा संचालित उद्योगों के डाइरेक्टर नववर्ष के दिन निजू व्यापारियों और उद्योग-पतियों के घर-घर और दूकान-दूकान मिलने गए। चीन के व्यापारियों और व्यवसा-यियों पर इसका अद्भुत प्रभाव पड़ा। गवर्नमेंट द्वारा लम्बी मुद्दत के लिये किसी उद्योग को कर्ज देने का जो प्रभाव पड़ता है वही प्रभाव इस शिष्टाचारी मिलन का हुआ। सरकारी अधिकारी अब तक व्यापारियों और व्यावसायियों के लिए अलभ्य थे। वह दुख और बाधा दूर हो गई। इससे यह स्पष्ट हो गया कि कम्यु-निस्ट सामन्तवाद के दुश्मन हैं पूँजीवाद के नहीं।

१९४६-४७ में किसानों ने जमीनों के समान जमींदारों की शहरी सम्पत्ति और व्यवसाय को भी बाँट लिया था। अब उसमें परिवर्तन हुआ है। पिछले नुकसान की भरपाई करने के ख्याल से नहीं, बल्कि उत्पादन की सतह ऊँची करने के विचार से यह परिवर्तन हुआ है। १९४६-४७ में जिनका व्यवसाय और उद्योग छीन लिया गया था, उनको अब मुआवजा देकर लौटाया जा रहा है। मैशीन माल और फर्म का नाम सब कुछ उनको वापस किया जा रहा है। कुछ व्यवसायी और व्यापारी भयभीत हैं। उनका ख्याल है कि बलिदान के बकरे को जैसे पहले खूब खिला कर मोटा-ताजा किया जाता है, और

शेष पेज १४ पर देखिए

मैडम च्यांगकाई शेक जो इस समय अमरीका में विराजमान हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महावीर त्यागी जी से भेंट !

सरदार पटेल, माननीय पंत तथा त्यागी के बीच होनेवाली वार्ता के कुछ संस्मरण

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'प्रेम'

संस्मरण भी साहित्य का एक जीवित अंग है। कई मास हुए बीमारी की दशा में सरदार पटेल स्वास्थ्य सुधारने के लिए देहरादून पधारे थे। संयुक्तप्रान्त के प्रधान मन्त्री माननीय पन्त तथा श्री त्यागी जी भी वहाँ उपस्थित थे। इस संस्मरण में पत्रकार ने उसी अवसर के सुंदर संस्मरण इस लेख में प्रस्तुत किये हैं, जो पठनीय हैं।

भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभभाई पटेल।

श्री महावीर त्यागी, सदस्य-विधान-परिषद् एवं युक्तप्रांत के तपे-परखे जन-नायक (जो आजकल कुछ अस्वस्थ हैं) से भेंट प्राप्त करने की दृष्टि से मैं उनके स्थान "रैन बसेरा" पहुँचा। दरवाजे पर लगे नोटिस बोर्ड पर पढ़ा—"मैं अस्वस्थ हूँ दिन भर प्रातः ८ बजे से रात के नौ बजे तक कुशल समाचार पूछनेवालों का ताँता लगा रहने के कारण मुझे आराम नहीं मिलता इस कारण मैंने मिलना बन्द कर रखा है। आशा है आगत सज्जन भेंट का प्रयत्न न करेंगे।" मैंने नौकर के हाथ स्लिप भिजवाई और मुझे स्वीकृति मिल गई।

सीढ़ियाँ चढ़कर मैं उनके कमरे में पहुँचा। त्यागी जी पलँग पर लेटे थे। ऊपर उन्होंने कम्बल ले रखा था। सामने स्टूल पर टेलीफोन, एक मेज पर आज की डाक एक पैड जिस पर त्यागी अपनी आत्मकथा के कुछ अंश लिख रहे हैं, नीचे फर्श पर वेस्ट पेपर बास्केट, एवं एक चिलमची।

मेरे आते ही वे बड़े स्नेह से बोले, "आओ श्रीराम, कहो अच्छे तो हो?"

मैंने हाथ जोड़ते हुये कहा, "जी कृपा है।"

मैंने पूछा, "आपने मुलाकात बन्द कर रखी है। आना धृष्टता तो नहीं हुई?"

त्यागी जी की हँसी को "हँसना शब्द व्यक्त नहीं कर सकता उसके लिये दूसरा शब्द है, जिसे अट्टहास कहते हैं। इस समय भी वे अपने उन्मुक्त हास्य से बीमारी को एक निर्मम धक्का देते-से जरा उठ बैठे। और बोले, "मुलाकात बन्द होती है परेशान करनेवालों के लिये, क्या तुम भी परेशान ही करने के लिये आये हो?" और फिर एक जोर के ठहाके से कमरा गूँज उठा। मैं मन ही मन सोच रहा था कि यह सेनानी जो अपने जीवन के तीन चौथाई भाग में ब्रिटिश शासन को ललकारता रहा है, बीमारी को भी ललकार रहा है और ऐसा कि पड़ोसी यदि देखे न तो इस अट्टहास को सुनकर वे कभी भी नहीं सोच सकते कि त्यागी जी बीमार हैं।

मैंने पूछा—"त्यागी जी, हिन्दी राष्ट्र-भाषा हो जायेगी न? विधान-परिषद् में इस प्रश्न पर अड़ंगेबाजी लगाई जा रही है।"

त्यागी जी ने कहा—"हिन्दी को राष्ट्रभाषा होने से कोई रोक नहीं सकता। हिन्दी का झगड़ा वस्तुतः अँगरेजी से है। हिन्दुस्तानी को शिखंडी बनाकर अँगरेजी के समर्थक हिन्दी को अपदस्थ करना चाहते हैं किन्तु सम्भव नहीं। रही बापू की मान्यतावाली बात, सो भाई यह तो आज एक फैशन हो गया है। अपने तमाम राजनैतिक जीवन में बापू को जिन्होंने धक्का दिया। बापू की मान्यताओं, प्रस्तावों में अमेंडमेंट करके अपनी प्रमुखता की छाप लगाते गये। ये ही आज बापू के सबसे बड़े ठेकेदार बन बैठे हैं। बापू ने जिस नैतिकता को हमारे देश की राजनीति में पनपाया उसे फिर वे इस देश से दूर करते जा रहे हैं। बापू के जीवन में "सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत जीवन में कोई अन्तर नहीं" का रव छाया रहा, किन्तु यह ध्वनि इतनी धीमी पड़ गई है कि सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन प्रायः पृथक् होते जा रहे हैं और यह इन्हीं ठेकेदार गांधी भक्तों के कारण है।

मैंने देखा त्यागी जी भावुक हो उठे हैं। मेरा पत्रकार सजग हो उठा, भावुकता को धार देने के लिए मैंने पूछा, "त्यागी जी, इस सम्बन्ध में आप वर्तमान हाई कमान्ड से चर्चा नहीं करते?" आखिर बापू की विरासत की जिम्मेदारी उनके अनुयायियों पर ही तो सबसे अधिक है अमेन्डमेंट करनेवालों पर तो इतनी अधिक नहीं।

त्यागी जी का चेहरा वेदना से भर उठा मुझे लगा, जैसे मैंने उनके मर्म पर चोट कर दी हो। वे तिलमिला उठे और बोले, "श्रीराम क्या पूछते हो, अभी थोड़े दिनों की बात है जब सरदार साहब, सरदार वल्लभभाई पटेल, मसूरी आये थे। पंत जी पं० गोविन्द वल्लभ पंत भी उनसे मिलने मसूरी पधारे। संयोग की जब पंत जी एवं सरदार वहाँ कुछ बातचीत कर रहे थे, मैं भी जा पहुँचा। सरदार साहब के साथ मैं देहरा भी रहा और मसूरी भी। उस समय मुझे आया देख, सरदार साहब बोले, "त्यागी जी तुम एक मास से मेरे साथ हो मैंने कभी भी तुमसे इस बारे में नहीं पूछा। आज जब पंत जी तुम्हारे सामने हैं और वे मुक्तकण्ठ से तुम्हारी प्रशंसा कर रहे हैं, तब मैं भी तुमसे पूछता हूँ तुमने प्रान्तीय असेम्बली से त्याग-पत्र क्यों दिया?"

मैंने पंत जी की ओर देखते हुये कहा, "पंत जी इस अदालत में भी आपने मेरे विरुद्ध अर्जी दावा दायर कर दिया।"

पंत जी व्यस्त हो उठे, बोले "भाई त्यागी जी, मैंने तो तुम्हारी प्रशंसा ही की है। एक शब्द भी जो तुम्हारे विरुद्ध कहा हो, पूछ देखो?"

सरदार की ओर देखते हुए मैंने कहा, "आप अस्वस्थ हैं कभी फ़ुरसत में बातें होंगी। लेकिन जब आपने पूछ लिया तो थोड़ा तो कहना ही चाहिये। सरदार साहब, मैं तो गांधी की गली का कुत्ता था। जब मेरा मालिक मुझे चुटकी बजाता था तो मैं कान खड़े करता था। जब वह सीटी बजाता था, तब मैं भौंकता था, दौड़ता था; शिकार करता था। आज मेरा मालिक मर गया है। मैं लावारिस होकर चौरास्ते पर बैठा राहगीरों को देखता रहता हूँ। अब कोई मुझे चुटकी नहीं बजाता। इधर उधर से सीटियों की आवाज आती है, पर मेरे कान उनके आशना नहीं। जब कभी हुड़क उठी तो उठा, अँगड़ाई ली, कान फटफटाये और दुलकी की चाल उन्हीं, उन रास्तों पर जाता हूँ जिन जिन गली और रास्तों से मेरा मालिक जाया करता था। जमीन सूँघकर लौट आता हूँ। अब कहीं उसकी गंध भी नहीं आती।"

सरदार की आँखें भर आई थीं। भर्राये स्वर में वे बोले, "भाई हम भी उसी गली के हैं।" और आँखों पर रुमाल लगा लिया। मुझे लगा कि मैं ज्यादा कह गया। बस मैं उठा, सरदार को हाथ जोड़े और चल पड़ा। सरदार ने धीमे स्वर में कहा, "त्यागी जी" पंत जी जोर से बोले, "त्यागी जी, सुनो तो सरदार साहब बुला रहे हैं।" पर मैंने हाथ सिर से ऊपर उठाकर जोड़ दिये, बोला कुछ नहीं। सीधा अपनी जीप में बैठ मैं देहरा चला आया।

त्यागी चुप हो गये थे। लगता था जैसे उनका रोम रोम अभी किसी भूकम्प के धक्के से हिलकर क्लान्त हो उठा है। मैंने देखा आज अब और कोई बातचीत सम्भव नहीं। न भाषा के प्रश्न पर, न राजनीति पर। इस कारण मैंने बातचीत समाप्त करते हुए कहा, "त्यागी जी, मैं आज की बातचीत पत्रों में दे सकता हूँ।" त्यागी जी थोड़ा सजग हो बोले, "अच्छा तो मैं पत्रकार से बात कर रहा था। लेकिन श्रीराम यह चालाकी क्यों?"

मैंने हाथ जोड़ते हुये कहा, "आप प्रत्येक बात नाप-तौलकर बोलते और उसमें हृदय कम होता और मस्तिष्क अधिक यह मेरे पत्रकार को ठीक नहीं लगा। मैं यह चाहता हूँ कि इसी तरह मैं आपसे अधिक से अधिक भेंट प्राप्त करूँ और उन्हें पत्रों में लिखूँ। मैं समझता हूँ इससे वर्तमान कालीन कितने ही प्रश्नों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

संयुक्तप्रांन्त के प्रधान मन्त्री मान
पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्त।

त्यागी जी ने इसकी स्वीकृति और मैंने उठकर नमस्ते की।

भावुकता के प्रभाव में बहते हुये जन-नायक के प्रत्येक भाव को मैं बटो चाहता हूँ। इसी लोभ के कारण हिन्दी के प्रश्न का छूटना बरदाश्त और मैं समझता हूँ कि श्री त्यागी जी कही सरदार को चन्द लाइनें इत मूल्यवान् हैं जिनका मुकाबला सा की किसी बड़ी से बड़ी निधि से किया सकता है। हिन्दी के प्रश्न पर उनकी हुई एक बात में भी इतना सार है इससे राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर एक नई रोश पड़ती है। हिन्दुस्तानी तो सचमुच श्चित रूप और असमर्थ भाषा के रू शिखंडी के रूपक में इतनी स्पष्ट हुई है चमत्कार। हिन्दुस्तानी के समर्थकों रूप में अँगरेजी आज भी अपने आ पर आसीन है और इतना और से धृष्टता नहीं है कि हिन्दी-विरोधी में अँगरेजी के भक्तों का सहयोग करने का महान् प्रयत्न चल रहा है। कई नजरें स्पष्ट देख रही हैं।

मुफ़्त

२२॥) की सेन्टर सेकेण्ड रिस्ट

नये चालान की कुछ खास चुनी हुई घ
सुन्दर मजबूत स्वीस की बनी ३ सा
गारण्टी गोल क्रोम केस १८॥)
सेकेण्ड २२॥) फ्लाट शेप ४ ज्वेल
छोटी साइज
„ शेप ७ „ क्रोम २७) रोल्ड गोल्ड
„ शेप १५ „ „ ३२) रोल्ड गोल्ड
रेकटेंगुलर कर्भ व टोनो (चित्र
५ ज्वेल क्रोम केस ३०) रोल्ड गोल्ड
७ ज्वेल क्रोम केस ३७) रोल्ड गोल्ड
१५ ज्वेल क्रोम केस ५२) रोल्ड गोल्ड
एलार्म टाइमपीस १८) सुपीरियर
बीग २५) डाक खर्च अतिरिक्त
तीन घड़ी एक साथ लेने से २२॥)
रिस्टवाच मुफ़्त मिलेगी।
एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब०
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

उलहना किसे ?

लेखक, स्वामी सत्यभक्त

दैनिक जीवन में मानव के सामने अनेक घटनाएँ घटती हैं। घटनायें अच्छी भी ती हैं और बुरी भी, किंतु इसके लिए किसे उलहना दिया जाये ? इस विचारपूर्ण हानी में अनुभवी लेखक ने कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया है जो हृदय पर एक छाप छोड़ जानेवाली हैं। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

कभी कभी जीवन में ऐसी ऐसी नाएँ या दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, जो नी तो आदमियों के निमित्त से ही हैं र भी उनके विषय में यह निर्णय करना ठिन या अशक्य ही होता है कि उनके रे में किसे उलहना देकर किसी तरह ल का उफान निकाल लिया जाय। टनाएँ हो जाती हैं पर उनसे सम्बन्ध नेवाले सभी आदमी निरपराध होते यहाँ तक कि प्रकृति के सिर भी उनका नहीं मढ़ा जा सकता। अभी अभी रासिवनी प्रवास के समय ऐसी ही दो नाएँ या दुर्घटनाएँ हो गईं।

वारासिवनी आने के लिए जो भाई निमंत्रण देने आये उनसे तारीख श्चित हो जाने पर वे बोले—आपको के लिए गोंदिया जंकशन पर कोई दमी भेज दिया जायगा।

मैंने कहा—इसकी बिलकुल जरूरत ीं है। प्रवास में मेरे साथ कोई न कोई ता ही है तब और एक आदमी का न क्यों खराब किया जाय। वारासिवनी गोंदिया करीब चार घण्टे की सफर है, दिन और कुछ रात बर्बाद हो जायगी। नी तकलीफ की कोई जरूरत नहीं। पर तय हुआ कि गोंदिया आदमी भेजा जायगा।

पर घर पहुँचने पर उनका दिल न ना। यह सोचकर कि गोंदिया पर मुझे ब पाँच घण्टे रुकना पड़ेगा, दिन में जन की तकलीफ होगी, आदमी जायगा भोजनादि का अच्छा इन्तजाम कर ा, उन्होंने आदमी भेज दिया। यद्यपि दमी मुझे पहचानता न था पर मैं कण्ड क्लास में आनेवाला था इसलिये भाई ने सेकिण्ड क्लास के सब यात्री ने की कोशिश की, पर भीड़ में वे न पकड़ पाये। तब उन्होंने अपर स का वेटिंग रूम घण्टे घण्टे बाद तीन र देखा पर मैं न मिला। बेचारों की जनादि की सारी तैयारी बेकार गई।

इधर गाड़ी से उतरते ही मैं स्त्रियों के टिंग रूम में ठहर गया था, क्योंकि मेरे थ वीणादेवी थीं। पुरुषों के वेटिंग म में उन्हें कुछ तकलीफ होती, इसलिए त्रयों के वेटिंग रूम में ठहरना ठीक मझा। उसमें कोई दूसरी स्त्री थी नहीं, सलिए वहाँ मेरे बैठने उठने में किसी एतराज न था। आनेवाले भाई ने मुझे पुरुषों के वेटिंग रूम में बार बार देखा पर वहाँ मैं कैसे मिलता। इसलिए उन्होंने पक्का विश्वास कर लिया कि मैं आया ही नहीं। खैर, हम जिस गाड़ी से वारासिवनी गये उसी गाड़ी से वे भी लौटे। बालाघाट पर गाड़ी करीब एक घन्टे खड़ी रही, क्योंकि दम्पति अपने बाल बच्चों और नौकर के साथ हम दोनों से मिलने आये। बड़ी देर तक चर्चा होती रही, गोंदिया आनेवाले भाई ने मुझे बातचीत करते देखा भी, पर इस दृढ़ विश्वास से कि मैं तो आया ही नहीं हूँ उन्होंने जाँच नहीं की।

गाड़ी जब वारासिवनी पहुँची तब स्वागत के लिए बहुत से भाई खड़े थे। मोटर भी लाये थे। पर उनके पहले मिले गोंदियावाले भाई, जिन्होंने समाचार दिया कि हमने गोंदिया पर दिन भर देखा स्वामी जी आये ही नहीं। यह सुनकर सब निराश हुये और लौट गए।

अपर क्लास का डिब्बा पीछे था, अँधेरी रात थी। मैं डिब्बे के सामने खड़ा खड़ा बाट देखता रहा। फिर कुली से सामान उठवाकर वेटिंग हाल के पास आया। स्टेशन छोटा होने से अपर क्लास का वेटिंग रूम था ही नहीं। पूछने से पता लगा कि तहसील का मुकाम होने पर भी यहाँ ताँगा नहीं है, लोग पैदल ही जाते हैं, रास्ता भी जरा यों ही है, रात भी अँधेरी है। शहर एक मील से कुछ दूर ही है। यह सब सुनकर हम किंकर्तव्य-विमूढ़ बने खड़े रहे, इतने में प्लेटफार्म की बत्तियाँ बुझा दी गईं जहाँ खड़े थे वहाँ भी अँधेरा हो गया।

इस घटना का क्या कारण होना चाहिए यह समझ में न आया, जो कल्पनाएँ कीं सब गलत ही गलत थीं। रात के ६॥ बजे से सारी रात वहाँ बिताई नहीं जा सकती थी। अन्त में एक कुली को चिट्ठी देकर शहर में भेजा। चिट्ठी ठिकाने से पहुँच गई, लोग तुरन्त मोटर लेकर आये और हम ११ बजे तक ठिकाने लग गये।

घटना तो विचित्र ही हो गई थी, पर यह निर्णय करना कठिन था कि इसमें अपराध किसका था ? कहा जा सकता है कि मेरी ही गलती थी। मैं गोंदिया पर स्त्रियों के वेटिंग रूम में क्यों ठहरा ? पर जब यह तय हुआ था कि मुझे लेने गोंदिया पर कोई न आयगा तब मुझे किसी की चिन्ता कैसे हो सकती थी ? कहा जा सकता है कि यदि लेने को गोंदिया तक आदमी न भेजा जाता तो यह परेशानी न होती। पर भेजनेवालों ने तो अधिक, प्रेम, भक्ति और सेवा का परिचय दिया था और इसके लिए उन्होंने ऐसा कोई कार्य नहीं किया था जिसे अविवेक कहा जाय, तब इसके लिए उन्हें धन्यवाद ही दिया जा सकता है। अगर कहा जाय कि गोंदिया जानेवाले भाई का कुसूर है, तो उनका भी क्या कुसूर ? यह स्वप्न कहाँ से आता कि मैं पुरुष होकर भी स्त्रियों के वेटिंग रूम में ठहरूँगा। वीणादेवी का आने का तो उन्हें पता ही नहीं था। तब मेरे न आने का निश्चय करना उचित ही था। इस निश्चय के बाद जो कुछ हुआ वह बिलकुल स्वाभाविक था। इस प्रकार दुर्घटना तो हो गई, पर बताइये उलहना किसे दिया जाय ?

वारासिवनी में हम जिनके यहाँ ठहरे

क्या वीणा देवी यही हैं जिनका इस कहानी में वर्णन किया गया है ?

फा० ५

T. B. टी. बी. "तपेदिक" चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर, खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

अनेक प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस--आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (Jabri Jagadhri) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है--जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैंकर्स (D) 'जगाधरी' (पूर्वी पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह और उनका सारा कुटुम्ब बहुत सेवा-भावी, अनुरागी और सज्जन था। ठहरने के लिए जगह भी अच्छी थी। भीतर कमरे भी थे और बाहर छत भी थी। गर्मी मालूम होने पर बाहर सो सकते थे। पेशाब के लिए व्यवस्था भी अच्छी थी। मैं तो जल्दी सो गया, पर वीणादेवी को गर्मी के कारण नींद न आई इसलिए वे एक दो बजे रात में छत पर आकर सो गईं। करीब चार बजे मैं पेशाब के लिए उठा और कमरे में से छत पर आते समय मेरा सिर चौखट से टकरायी, चौखट से ही टकराता तो कोई बात न थी, पर चौखट में जो चटकनी लगाने की कुंडी थी उससे टकराया, इससे चमड़ा फट गया, खून की धार बहने लगी, मुँह को हाथ लगाया तो सारा पंजा खून से भीग गया, कपड़े और जमीन भी खून से भीग गई।

वीणादेवी को बड़ी मुश्किल से नींद आई थी, इसलिए सोचा कि कच्ची नींद में उन्हें क्यों जगाया जाय? घरवालों को भी परेशान करना ठीक न मालूम हुआ। इसलिए चुपचाप पानी से मुँह आदि धोकर घाव पर उँगली जमाकर बैठ गया। वैसलीन लगा लिया और घाव दबाये बैठा रहा। आध घण्टे बाद वीणादेवी की अपने आप नींद खुली तब मैंने यह समाचार उन्हें सुनाया। वे घबराईं और बोलीं कि घाव को पानी लगाना तो अच्छा न हुआ, पानी लगने से घाव के पकने का डर है। यह बात मुझे भी मालूम थी, पर खून से भरा हुआ मुँह देखकर वीणादेवी विशेष घबरा न जायँ, इसलिये जल्दी में घाव को भी पानी लग गया। खैर! बातचीत से घरवाले भी जग गये, देशी, विदेशी जो दवाइयाँ मिलीं लगाई गईं। खून अच्छी तरह बन्द हो गया सिर में हलकी भन्नाहट रह गई। मैंने उसकी पर्वाह न की और युवकों को साथ लेकर नहर की तरफ घूमने चल दिया। दो मील घूम आया, दुपहर में प्रवचन चर्चा तथा शाम को प्रवचन किया। घाव में दर्द तो तीन चार दिन रहा पर उससे कार्य में कोई बाधा न पड़ी।

इस दुर्घटना से सबसे अधिक मानसिक कष्ट हुआ उन्हें, जिनके घर मैं ठहरा था। उन्हें शायद घर के दरवाजे छोटे होने का रंज था। उनके घर के प्रायः सभी दरवाजे ऊँचे थे। सिर्फ ऊपर के कमरों से छत पर जाने के दरवाजे ऊँचे नहीं बनाये जा सकते थे, मकान की रचना ही कुछ ऐसी थी। इसलिये उनका इसमें किसी भी तरह जरा भी अपराध नहीं कहा जा सकता।

हाँ! मेरी ही गलती कही जा सकती है कि जब मुझे मालूम था कि दरवाजा छोटा है और उसके लिये मैं झुका भी था तो इतना अधिक क्यों न झुका जिससे सिर न टकराता। पर सत्याश्रम में मुझे कभी झुककर निकलने का अवसर नहीं आता? और जब मैं जागा तो नींद की खुमारी थी ही, ऐसी हालत में सिर टकरा गया इसमें मेरा भी क्या अपराध है?

तब प्रश्न होता है कि उलहना किसे दिया जाय?

जब हम किसी दुर्घटना के शिकार होते हैं तब हमारा मन किसी न किसी पर उबलना चाहता है और किसी न किसी को लक्ष्य करके बक-झक भी शुरू हो जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि बहुत सी दुर्घटनाओं में किसी न किसी की बड़ी भारी गलती भी होती है, भले ही वह असंयम से न हुई हो, नासमझी से हुई हो। पर ऐसी बहुत सी घटनाएँ होती हैं जिनमें हम किसी को अपराधी नहीं कह सकते, ऐसी हालत में अच्छा यही है कि हम किसी भी दुर्घटना के होने पर बक-झक न करें। पहले सब बातों को अच्छी तरह से समझ लें। फिर अगर किसी को उलहना देने से आगामी दुर्घटनाओं के रुकने की संभावना हो तो उलहना दें। नहीं तो निर्विकार भाव से घटना का पूरा समाचार संवाददाता की तरह दूसरों को सुना दें जिससे सब लोग दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सतर्कता का पाठ पढ़ लें। ऐसी हालत में अधिकांश दुर्घटनाएँ युद्धशाला न बनकर पाठशाला बन जायँगी।

मुफ्त सुन्दर रिस्टवाच

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन

करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूँघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिरको ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २।) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यु गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं।

जरूरी नोट:—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ और चार अंगूठी लन्डन न्यु गोल्ड, और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जलदी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा।

आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लन्डन कमर्शियल कम्पनी

(D.D.A.) पी० बी० २ अमृतसर

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना ३) रुपये तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको दस हजार रु नकद इनाम। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई बा० ला० मुन्शीराम जी क्लाथ मर्चेन्ट धर्मशाला से लिखते हैं कि आपका सो अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला, यह देखकर बहुत खुशी हुई न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार कर दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है।।१२ तोले सोना वापसी डाक से भेज दें बाद में आपको और भी आर्डर दिया जायगा। यह सोना कसौटी पर अस सोने का रंग देता है और असली सोने की तरह कूटा या पिघलाया जा सकता है। किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिसको हुशियार से हुशियार शर्राफ मुश्किल पहचान सकता है, मशहूर करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु०। ३ तोला का मू ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला का २८) रु०।

जरूरी नोट:—हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त जावेगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी काँटे और जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोला के खरीदार को एक लाकट विमय चैन, जोड़ी चूड़ी और दो बाम्बे फैशन अँगूठी और डाक-खर्च माफ। माल पसन्द न हो पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता—

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी (D. A.)

हल्का नं० २२ अमृतसर

बृहत्

अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा

(मूल ले०—महामना डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)

ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)

प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिट

पो० लहेरियासराय (बिहार)

आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा ज के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उ चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहि इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६॥) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—

सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)

लहेरियासराय (बिहार)।

! अपूर्व अवसर !

'मोहिनी' सुगन्धि यद्यपि दामों में सस्ती पर गुणों और सुगन्धि के टिकाउ में अनुपम है। मोहिनी नम्बर २२१ (सर्वोत्तम किस्म) १।-)॥ प्रति शीशी १५॥।) दर्जन। मोहिनी नं० १२१ प्रति शीशी (सर्वोत्तम किस्म छोटे नाप की ।॥)॥ प्रति शी ६) प्रति दर्जन वी० पी० पी के लिए एक साथ तीन शीशियों से कम का आर्ड स्वीकार किया जायगा। डाक खर्च अलग।

बोस ब्रदर्स, (सक्शन ०२) नंबर ८९ खेलात बाबूलेन, पो० आ० कोसीपु

कलकत्ता नं० २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

शहद गुणकारी है
शरीर को नीरोग रखने का साधन

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त बी० काम्

भोजन और औषधि, दोनों रूपों में शहद अद्वितीय है। जो मनुष्य अस्वस्थ रहते हैं, उसके प्रयोग से अपना स्वास्थ्य सुधार सकते हैं और जो मनुष्य स्वस्थ हैं वे अपने स्वास्थ्य को बनाये रख सकते हैं, और सुधार सकते हैं और उसका आनन्द ले सकते हैं। शहद में दीर्घायु का रहस्य छिपा है। वास्तव में शहद देवों का भोजन है और शहद के समान अन्य कोई वस्तु नहीं है।

फूलों का सुन्दर रूप, उनकी आश्चर्य-जनक सुगन्धि और उनके अन्दर मकरन्द की उपस्थिति कीड़े-मकोड़ों, विशेषतया मधुमक्खियों को, अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मकरन्द ही इन मधुमक्खियों का भोजन है। भोजन की खोज में मधुमक्खियाँ इन फूलों पर मँडराती रहती हैं और फूलों का सर्वश्रेष्ठ अंग एकत्र कर लेती हैं। वे उसे अपने पेट में पचाती हैं। उपरान्त वे उसे छत्तों में इकट्ठा कर देती हैं और वह कुछ समय में गाढ़ा होकर शहद तैयार हो जाता है।

यद्यपि शहद चीनी के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है, वह चीनी नहीं है। वह चीनी से कहीं अधिक मूल्यवान् और उत्तम वस्तु है। चीनी बनाने में, ईख में पाये जानेवाले सब खनिज लवण और बिटेमिन नष्ट हो जाते हैं। शहद के साथ यह बात सत्य नहीं है। उसमें सब बिटेमिन यथावत रहते हैं। ईख से बनी हुई चीनी एसीडीटी बढ़ाती है। शहद अलकालीडिटी उत्पन्न करता है। चीनी शरीर में जाकर सड़ने लगती है और उसे पचाने में बहुत देर लगती है। शहद इसीलिए अमृत भी कहा गया है। शहद के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इसमें निम्नांकित अंश होते हैं।

जल	१७·७
फलों की चीनी	४०·५
अंगूर की चीनी	३४·०
गन्ने की चीनी	१·९
खनिज लवण	·२
अन्य पदार्थ	४·२
मोम इत्यादि	१·५

दूध की भाँति शहद की ओर कीड़े आकृष्ट नहीं होते। यदि वे शहद तक पहुँच भी जाते हैं तो वे तत्काल मर जाते हैं। मधुमक्खियों के रोग भी मनुष्यों से भिन्न होते हैं और इस कारण वे मनुष्यों को शहद के द्वारा नहीं ग्रसते।

पेट और आँतों के रोगों में मधु अति लाभदायक सिद्ध होता है। यह भूख और पाचन-शक्ति का सहायक है, रक्त को शुद्ध करता तथा बढ़ाता है, वीर्य-सम्बन्धी विकारों को दूर करता है, हृदय को शक्तिशाली बनाता है, शरीर की मांस-पेशियों को बलिष्ठ करता है, मस्तिष्क को शक्ति देता है, नेत्रों में नवीन ज्योति उत्पन्न करता है ओठ प्रौढ़ और गालों को लाल करता है। शहद से यह सब इसलिए संभव है क्योंकि शहद बहुत हलका होता है और इसके पचाने में कुछ समय नहीं लगता और जब यह पच जाता है तो यह न केवल रक्त में मिल जाता है वरन् स्वयं रक्त बन जाता है और एक बारगी शक्तिशाली सिद्ध होता है।

शहद एक प्राकृतिक औषधि है। वह सर्दी, जुकाम, खाँसी, अपच, बेरी,२बवासीर, श्वेत प्रदर, थकावट, चक्कर आना, मिर्गी, गर्मी, श्वास और दमा और राजयक्ष्मा भी दूर करता है। खाज, फोड़े, फुन्सी, कोढ़, दाद भी उसके प्रयोग से दूर किये जाते हैं। शहद रोगों में खाने के अतिरिक्त लगाने के भी काम आता है। जले, कटे और घावों पर शहद लगाने से लाभ होता है। शहद लगाने से न पीप पड़ती है और न बाद में दाग ही रह जाता है। टाइफाइड बुखार और निमोनिया के पश्चात् शहद देने से हृदय को उत्तेजना नहीं प्राप्त होती जैसा कि ब्रान्डी देने से बहुधा होता है। शहद का प्रभाव स्थायी होता है। अतएव शहद रोगों को ठीक करता है और मनुष्य को स्वस्थ और अपने काम में दत्तचित्त रखता है।

गर्भवती स्त्रियाँ, नवजात शिशु और बालक जन्म के पश्चात् माताएँ सदैव शहद और घी खा सकती हैं और उससे पूर्ण लाभ उठा सकती हैं।

शहद चर्म को कोमल बनाता है। थोड़ा सा शहद प्रतिरात्रि मुख पर लगाने से मुख कान्तिमय, उज्ज्वल और चिकना हो जाता है। इस रूप में शहद स्नो, क्रीम और पाउडरों से कहीं श्रेष्ठ है। सभी अच्छे अच्छे साबुन इसी कारण कुछ न कुछ शहद अथवा ग्लैसरीन का अंग रखते हैं।

शहद के अन्य प्रयोग यह हैं कि वह आइसक्रीम, बिसकुट और मिठाइयाँ बनाने के काम में आता है।

शहद खाने की सर्वसुगम विधि, सुबह और शाम, शुद्ध ताजे जल के साथ शहद खाकर पानी पी लेना है। बालकों को ४ माशे से ८ माशे तक खाना चाहिये। वयस्क ६ माशे से दो तोले तक अपनी आवश्यकता और शक्ति के अनुसार खा सकते हैं। यह ध्यान रखना चाहिये कि शहद की मात्रा अधिक न हो जाय। जब वह घी के साथ सेवन किया जाय तो घी और शहद की मात्रयें भिन्न भिन्न होनी चाहिएँ। दोनों समान होने से शहद विष हो जाता है। यदि उसे दूध के साथ लिया जाय तो दूध गर्म न होना चाहिये।

शुद्ध शहद होना, शहद के लाभों के लिये शर्त है। अशुद्ध शहद चीनी से भी खराब हो सकता है। उसका खाना व्यर्थ होगा। आजकल जब दूकानदारों के आचरण ठीक नहीं हैं, खूब चोरबाजारी और मुनाफाखोरी होती है, केवल अशुद्ध शहद ही देखने को मिलता है। इसी कारण वह लाभ नहीं करता।

शहद के गुण मक्खियों, फूलों और स्थानों के भेद से भिन्न भिन्न होते हैं। छोटी मक्खियों का शहद बड़ी मक्खियों के शहद से अच्छा माना जाता है। बसन्त अथवा अक्टूबर, नवम्बर के महीनों में एकत्र किया हुआ शहद ही सही शहद होता है। उस समय अच्छे फूलों की बहुतायत है और मौसम भी वर्षा इत्यादि से मुक्त होता है। काश्मीर और हिमालय का शहद सर्वोत्तम होता है।

शुद्ध और अशुद्ध शहद में पहचान करना अति कठिन कार्य है। देश में प्रयोग किये जानेवाले अनेक ढंग हैं परन्तु वे सब अधूरे हैं। उन पर निर्भर नहीं हुआ जा सकता। कोई वैज्ञानिक अनुसन्धान ही अपने विश्लेषण द्वारा शहद की सही पहचान करने का यंत्र दे सकेगा। शुद्ध शहद में भी दाने पड़ सकते हैं। वह गाढ़ा भी ऋतु के परिवर्तन के साथ हो सकता है। इस दृष्टि से केवल यही कहा जा सकता है कि ताजा और शुद्ध शहद वह है जिसमें मनमोहक सुगन्ध होती है, जिसका रंग अति सुन्दर होता है और जो अत्यधिक स्वादिष्ट लगता है।

शहद इस प्रकार एक महा स्वास्थ्यप्रद खाद्यपदार्थ है। वह सब संसार भर की औषधियों के ऊपर है। शहद से सब परिचित हैं और कोई ऐसा नहीं जो शहद को पसन्द न करता हो। बालक युवा, और वृद्ध सब शहद को प्रेम के साथ खाते हैं। औषधियों के स्थान पर हमें प्राकृतिक औषधि शहद ही का सेवन करना चाहिये और इससे न केवल हम रोगों से बचेंगे वरन् स्वस्थय रहेंगे।

जयपुर शहर में महाराजा का नये राज-भवन का एक सुंदर दृश्य।

आप अभिनेता हो सकते हैं

यदि आप सिनेमा में अभिनेता अथवा अभिनेत्री होना चाहें, और १००) से १५००) प्रतिमास पैदा करना चाहें, तो आज ही लिखें। आप कम पढ़े हैं इसकी कुछ चिन्ता नहीं। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

डाइरेक्टर
नेशनल फिल्म कारपोरेशन, हल्का नं० १३, (D. A.) जलन्धर सिटी

श्वेत कुष्ठ की अद्भुत दवा

प्रिय सज्जनो! औरों की भाँति मैं अधिक प्रशंसा करना नहीं चाहता। यदि इसके ३ दिन के लेप से सफेदी के दाग जड़ से आराम न हों तो मूल्य वापस। जो चाहें -)॥ का टिकट भेजकर शर्त लिखा लें। मूल्य बतौर नमूना ३) पूरा खुराक ५) रू० शीघ्र फायदा करनेवाल नं० १, १०) पेशगी भेजनेवालों को डाक खर्च माफ। १८ प्रकार के गलित कुष्ठ के निराश रोगी अपनी पूरी-पूरी हालत लिखकर दवा मँगा लें और आराम होकर लाभ उठावें, वी० पी० छुड़ाते समय हमारा पता अवश्य देख लें।

विष्णु आयुर्वेदभवन नं० १२
पोस्ट वारसलीगंज, (गया)

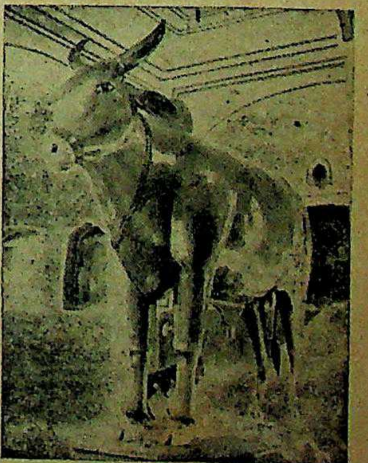

जयपुर की महारानी के राजप्रसाद में इस बैल की प्रतिदिन पूजा होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

'हिन्दुस्तानी' का पाखंड

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति 'हिन्दुस्तानी' के समर्थकों में एक भ्रम उत्पन्न हो गया है। इसलिए उनका भ्रम निवारण कर देना उचित है।

देश के वह नेता जो कि आज उस महान् स्वर्गीय आत्मा—पूज्य बापू के नाम का उपयोग करते हैं और कहते हैं कि यदि हिन्दुस्तानी' की उपेक्षा की गई तो बापू की आत्मा को कष्ट तथा दुख मिलेगा, उनसे आज स्पष्ट शब्दों में यह कह देना आवश्यक है कि वह जनता को भ्रम में न डालें और इस प्रकार के भ्रमात्मक प्रचार द्वारा भारत राष्ट्र के प्रति विश्वासघात न करें। सम्भवतः उन नेताओं को यह नहीं ज्ञात है कि जिस स्थिति से आज संसार का प्रत्येक देश गुजर रहा है, उसमें सांस्कृतिक एकता के अभाव में कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। आज जब हम अपने राष्ट्र की ओर देखते हैं, तो हमें विदित होता है कि देश के कुछ चोटी के नेता देश की सांस्कृतिक एकता के साथ बालकों जैसा खेलवाड़ कर रहे हैं, और यह अनुभव नहीं करते कि वह भारत राष्ट्र की महान् शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं। यह नेता अपने को 'गांधीवाद' का समर्थक कहने का दावा करते हैं, और उसी के फलस्वरूप वह भाषा के क्षेत्र में भी 'हिन्दुस्तानी' का उचित तथा अनुचित सभी ढङ्गों से समर्थन करते हैं। क्या हम इन 'गांधीवादी' नेताओं से यह प्रश्न कर सकते हैं कि अन्य क्षेत्रों में वह किस हद तक उस महान् स्वर्गीय आत्मा की आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं?

मेरी समझ में भाषा के क्षेत्र में स्वर्गीय राष्ट्रपिता के नाम की दोहाई देकर यदि देश के एक या दो नेता 'हिन्दुस्तानी' जैसी कृत्रिम भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हों, तो उन्हें जनमत जान लेना चाहिये और इस बात से सजग हो जाना चाहिए कि वह अपने इस भ्रमात्मक प्रचार में सफल नहीं हो सकते। राष्ट्रभाषा के महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर कुछ भी कहने से पूर्व हमें अनायास ही अपने देश के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू का हैदराबाद में दिया गया कुछ दिन पूर्व का भाषण स्मरण हो आता है। कौन नहीं जानता कि आप कितने योग्य, विद्वान् तथा अनुभवी नेता हैं? कौन ऐसा भारतीय होगा जो कि आपकी प्रखर राष्ट्र-भक्ति में विश्वास न रखता हो? किसको नहीं ज्ञात है कि आपने देश के लिये कैसी-कैसी यातनायें और कष्ट सहे? किन्तु भाषा के क्षेत्र में श्रद्धेय नेहरू जी के भी वही तर्क व्यर्थ से हैं। आपने कहा कि हम 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा इसलिये बनाना चाहते हैं कि पूज्य बापू की यही इच्छा थी। हमें आज भाषा के क्षेत्र में अपने इस भूले हुए नेता को भी ठीक मार्ग दिखाना है और उसे स्पष्ट रूप से यह बता देना है कि जनता उसके भ्रमात्मक प्रचार में आकर 'हिन्दुस्तानी' जैसी बे सिरपैर की भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं मान सकते। आज देश के कोने कोने से 'हिन्दुस्तानी' के राष्ट्रभाषा बनाये जाने के विरुद्ध आवाज आ रही है और देश के एक या दो नेताओं की इच्छा होने के कारण जनमत की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

सबसे मुख्य बात तो यह है कि जिस सिद्धान्त को लेकर इस कल्पित भाषा को जन्म दिया गया, जब उसका ही अस्तित्व मिट गया तो अब इस भाषा को प्रोत्साहन देना उचित तथा व्यावहारिक न होगा। इस भाषा का जन्म देश के विभाजन के पूर्व इस तर्क पर किया गया कि भारतवर्ष एक ऐसा देश है जिसमें कि हिन्दू और मुसलमान आदि सभी धर्मावलम्बी रहते हैं; और ऐसी स्थिति में केवल एक ही भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना उचित न होगा। सबसे अधिक भ्रमपूर्ण बात जो इस कृत्रिम भाषा के जन्म देने पर कही गई वह यह कि हिन्दी केवल हिन्दुओं की भाषा है। सम्भवतः इन नेताओं को यह ज्ञात न था कि हिन्दी के जन्मदाता और उसके विकसित करनेवालों में मुसलमानों के ही पूर्वजों का नाम प्रमुख रूप से आता है। हिन्दी का वर्तमान उज्ज्वल स्वरूप, उसकी व्यापकता तथा साहित्यिकता में उनके पूर्वज जायसी, कबीर, रहीम तथा रसखान आदि का कितना प्रमुख हाथ है, यह स्वयंसिद्ध है। किन्तु तो भी इसकी उपेक्षा कर हिन्दू-मुस्लिम एकता की स्थापना के लिये यह आवश्यक समझा गया कि वार्तालाप की एक ऐसी भाषा बनाई जाय जिसमें कि हिन्दी तथा उर्दू दोनों का समन्वय हो। सम्भवतः इस प्रकार की भाषा में हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं के शब्दों का समान प्रयोग किया जाय, यही उनका तात्पर्य था। उदाहरण के लिये 'प्रयाग' से ही प्रकाशित "नया हिन्द" नामक मासिक पत्र में जिस प्रकार की खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया जाता है, उसी भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान देने का विचार देश के कुछ नेताओं का था। किन्तु मुख्य बात तो यह है कि 'हिन्दुस्तानी' का ढोंग हिन्दू-मुस्लिम एकता के सिद्धान्त को लेकर रचा गया था, अतएव देश का विभाजन हो जाने से वह ढोंग आज स्वतः समाप्त हो गया है।

यह सब होते हुए भी 'हिन्दुस्तानी' में जो सबसे बड़ा अभाव है, वह यह कि गहन विषयों में तो उसका प्रयोग कभी सम्भव हो ही नहीं सकता। जिस भाषा की कोई लिपि नहीं, कोई साहित्य नहीं और जिसमें कि व्याकरण-सम्बन्धी कोई वैज्ञानिकता नहीं, वह कैसे सफल हो सकती है, यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है। इतना समय हो गया, किन्तु आज तक 'हिन्दुस्तानी' का कोई सर्वमान्य स्वरूप ही निश्चित नहीं हो पाया है। 'हिन्दुस्तानी' हिन्दी तथा उर्दू का ऐसा मनमाना सम्मिश्रण है, जो व्यक्तिगत रुचि के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है। वास्तव में 'हिन्दुस्तानी' का नाम ही अत्यन्त भ्रामक तथा अनुपयुक्त है। रेडियो की भाषा में हमें उसका स्वरूप 'अरबी' और 'फारसी' के शब्दों में देखने को मिलता है और वह इसी को 'हिन्दुस्तानी' भाषा कहते हैं। यदि ऐसी भ्रामक भाषा राष्ट्रभाषा के पद पर सम्मानित की जायगी तो निश्चित ही वह राष्ट्र को अवनति की ओर ले जायेगी।

प्रयाग —उमेशचन्द्र मिश्र

१जनवरी,४६

* * *

नव संस्कृति संघ

भारतीय समाज में महान् परिवर्तन होनेवाले हैं। देश में नवजीवन हिलोरें ले रहा है। भारत की अवरुद्ध जीवनशक्ति फिर वेगवती हो चली है। आज का भारत अपने सपने सच करने के लिए निकल पड़ा है। इस नवजीवन-प्रवाह को कोई रोक नहीं सकता; उसे रोकने के सब प्रयत्न निरर्थक सिद्ध होंगे। इस तरह सामाजिक शक्ति नष्ट करने से व्यक्तियों और समूहों को रोकना है; साथ ही सामाजिक शक्ति की दिशा निर्धारित करनी और उसका नियन्त्रण करना है।

पुरानी परम्परायें और सामाजिक नीति-रीति आज हमारा पथ-निर्देश नहीं करतीं। इसलिए आज की नई परिस्थिति में हमें उनका सुधार और नियमन करना है। आज नये नेतृत्व की आवश्यकता है। जनता के व्यापक और विस्तृत हित के आधार पर निर्मित सम्पूर्ण सामाजिक सिद्धान्त ही हमारा पथ प्रदर्शन कर सकता है। जन जागरण तथा जनक्रान्ति की रीति ही समाज के समुचित विकास का साधन बन सकती है। इस प्रकार हमें स्वतन्त्रता, समता और मानवता के आधार पर एक सुन्दर सबल संस्कृति की सृष्टि करनी है, ऐसी सभ्यता तथा संस्कृति की स्थापना उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व स्थापित करने से ही नहीं हो जायगी। इसके लिए पुनर्निर्माण का कार्य ही समुचित रीति से करना होगा। मानव-प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए नागरिक स्वतन्त्रता तथा उत्तरदायित्वपूर्ण प्रजातांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता होगी। सुन्दर और सम्पूर्ण मनुष्यत्व की सृष्टि तभी हो सकती है जब साधन भी सुन्दर हों, मानवोचित हों। उद्देश्य और साधन परस्पर सम्बद्ध और एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। दोनों का अपना अपना महत्त्व है।

इसके अतिरिक्त इतने काल के सामाजिक विकास के बाद जो मौलिक माननीय सत्य प्रतिष्ठित हो गये हैं उन पर जोर देना, उन्हें समाज के पुनर्निर्माण में उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्न करना नितान्त आवश्यक है। उनकी अवहेलना करके स्वस्थ सामाजिक जीवन नहीं चलाया जा सकता। श्रेणी नैतिकता के नाम पर सभी पुरानी मान्यताओं और सिद्धान्तों का बहिष्कार उचित नहीं। समाज के दीर्घकालीन अनुभव तथा संचित ज्ञान का निरादर अनुचित होगा। साथ ही पुरानी मान्यताओं और प्राचीन संस्कृति का अध्ययन भी आवश्यक है। हमारी नवीन संस्कृति के निर्माण में उनका बहुत बड़ा हाथ होगा।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि हमारे कलाकार और साहित्यकार युग जीवन के पथ-प्रदर्शक बनें, क्योंकि वे ही समाज के अग्रचेता और उसके नेता होते हैं। उनके सहयोग से हम जिस संस्था को जन्म देना चाहते हैं उसका नाम होगा 'नव संस्कृति संघ'। यह संघ इस सर्वोत्तम सामाजिक कर्तव्य की पूर्ति करने की चेष्टा करेगा। 'संघ' का कार्य होगा नवीन संस्कृति के आलोक से समस्त सामाजिक जीवन में स्फूर्ति और तेज भरकर, सभी समस्याओं का समाधान कला और साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने में योग देना। संघ का कार्य कलाकारों और साहित्यकारों का इस प्रकार संगठन करना होगा कि भावों और विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान के साथ साथ वे एक दूसरे से प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त करते रहें। और जन-जीवन का अधिकाधिक प्रतिनिधित्व करते हुए वे उसे सौन्दर्य और आनन्द से ओत-प्रोत कर सकें।

काशी —शम्भूनाथसिंह

३१ दिसम्बर ४८ एम० ए०

* * *

धोने के लिये।

५०१ साबुन;

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

सफेद बाल काला

हमारे आयुर्वेदिक "कामिनीरंजन" तैल के इस्तेमाल से बाल पकना रुककर पका बाल जड़ से काला होकर काला ही उगता है। यह तैल आँखों की रोशनी को बढ़ाता, शिरदर्द को आराम करता, दिमागी काम करनेवालों के लिए अकसीर है और स्मरण-शक्ति बढ़ाने में अद्वितीय है। मूल्य कम पके के लिए ३॥) इससे ज्यादा के लिए ५)। गुणहीन होने पर कीमत वापस की शर्त।

श्वेत कुष्ट की दवा

इस दवा के व्यवहार से सभी तरह का सफेद कुष्ट जड़ से आराम हो जाता है अगर आप तमाम की दवा कराकर निराश हो चुके हों तो एक बार जरूर अजमाकर इस रोग से मुक्ति पावें। मूल्य ४) १५ दिन का।

हिमालय आयुर्वेदिक फारमेसी

पो० कटनी सी० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयपुर-कांग्रेस-अधिवेशन

राष्ट्रपति, स्वागतकारिणी समिति के अध्यक्ष, प्रधान मंत्री तथा अन्यान्य समितियों के अधिकारी और कार्यकर्ता

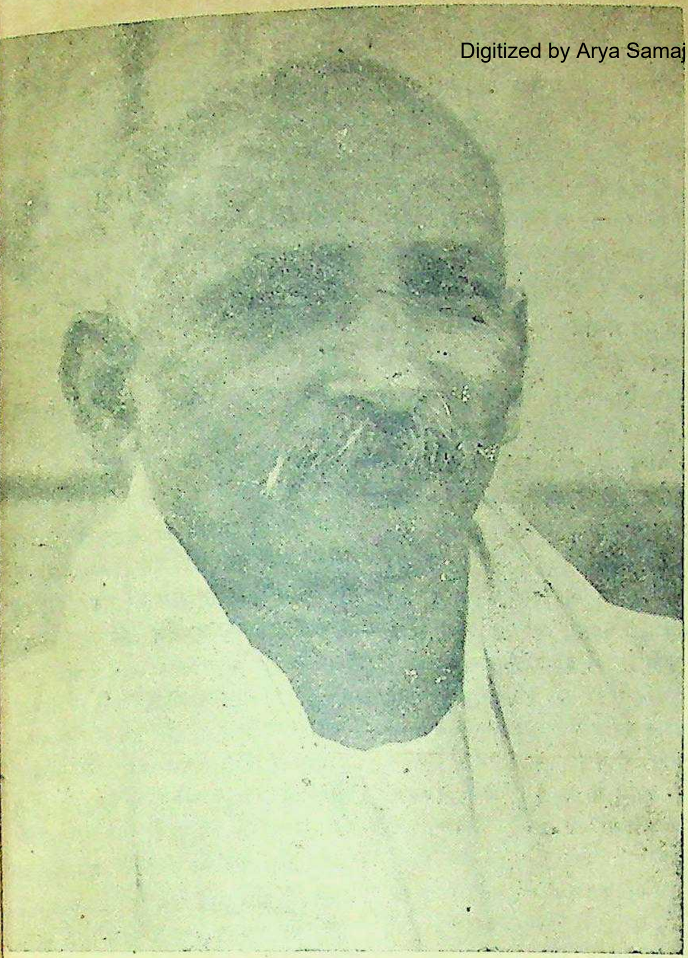

जयपुर में होनेवाली कांग्रेस के ५५ वें अधिवेशन के प्रेसीडेंट डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया

(बाईं ओर से दाहनी ओर)—श्री टी० एन० सेठ इंजीनियर, श्री देशपांडे प्रदर्शनी के प्रधान मन्त्री, श्री आर० डी० अग्रवाल भोजन-समिति के इन्चार्ज।

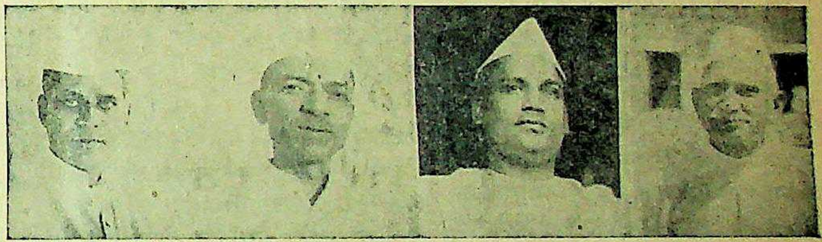

(बाईं ओर से)—श्री वी० सी० जैन, संगठन-समिति के प्रधान, श्री एस० आर० ढड्ढा संयुक्त मन्त्री स्वागत-समिति, श्री जी० सी० कासलीवाल यातायात समिति, श्री के० एन० बजाज कोषाध्यक्ष स्वागत-समिति।

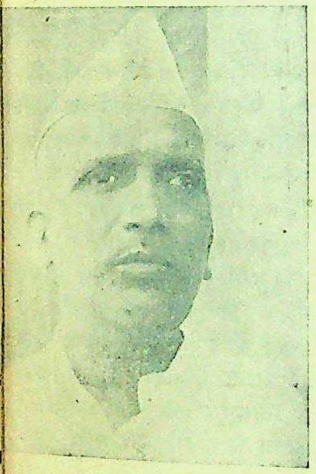

जयपुर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष श्री गोकुलभाई भट्ट जो राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के भी अध्यक्ष हैं।

जयपुर कांग्रेस की स्वागतकारिणी के प्रधान मन्त्री श्री हीरालाल शास्त्री, जो जयपुर राज्य के प्रधान मन्त्री भी हैं।

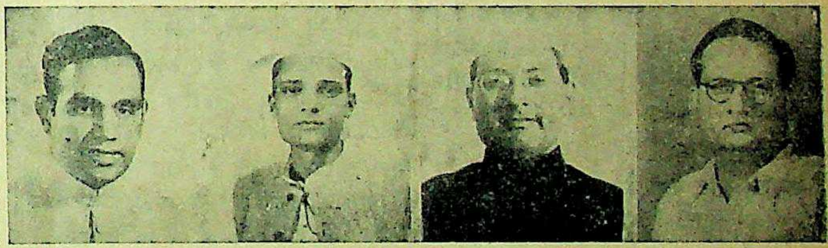

(बाईं ओर से)—श्री जे० एन० व्यास स्वयंसेवक दल के प्रधान, श्री सी० जी० वार्ष्णेय प्रकाशन-विभाग के प्रधान, श्री डी० भंडारी निर्माण-समिति के प्रधान, श्री एस० के० जाजू अध्यक्ष प्रदर्शिनी समिति।

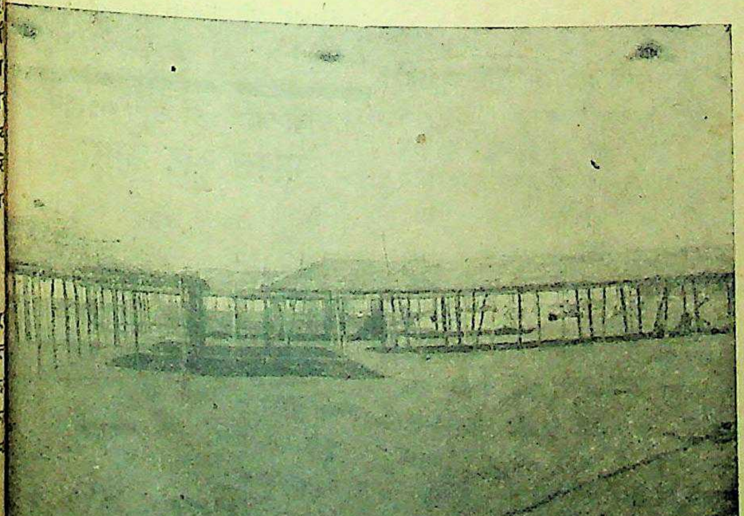

जयपुर कांग्रेस के अवसर पर कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों के ठहरने के लिए विशेष झोपड़ियाँ।

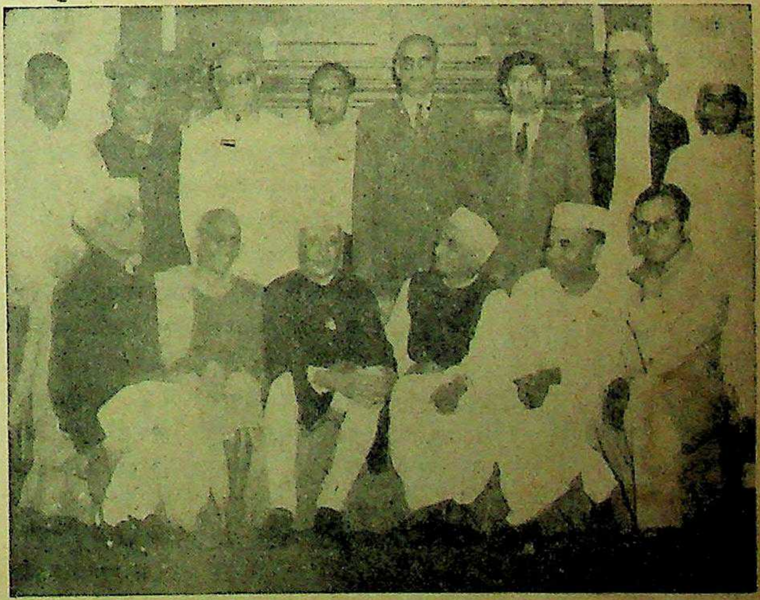

भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू, देशीराज्य लोक परिषद् के नेताओं तथा सार्वजनिक कार्यकर्ताओं के साथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी जन-क्रांति और एशिया

(पेज ७ का शेष)

बाद में काट दिया जाता है, यही उनकी स्थिति बाद में होगी; पर अपने प्रतियोगी और पड़ोसी को देखकर, जो इन बातों को अपने ध्यान में नहीं लाते और समृद्ध हो रहे हैं; वे भी सबके साथ चलने को उद्यत हो जाते हैं।

होनान के वू एन काउण्टी में ६६ बड़े फर्मों में से ५३ को निजू हाथों में दे दिया गया। जो कुछ नहीं दिया गया उसके बदले वर्तमान बाजार दर से मुआवजा दिया गया। फलतः कम्युनिस्ट अधिकृत प्रदेशों में पुनः समृद्धि लौट आई है। दूकानें सजी हुई हैं, दूकानों पर नया रोगन किया गया है, माल सुन्दरता और ढंग से सजाकर रखा गया है, और प्रसन्नता-सूचक झंडियाँ लगी हुई हैं। दूकानों पर यह भी लिखा मिलता है—लोकतन्त्री गवर्नमेंट को धन्यवाद, माओ-से-तुंग के नेतृत्व को धन्यवाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की नीति को धन्यवाद! शहरी मध्यम वर्ग को साथ लेने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की औद्योगिक नीति में परिवर्तन किया गया है। कम्युनिस्ट अनुभव करते हैं कि एक दिन में या एक रात में कम्युनिज्म स्थापित नहीं किया जा सकता। इसके दरम्यान आंशिक या नियन्त्रित पूंजीवाद काल का आना अनिवार्य है। भारत-सरकार की औद्योगिक नीति भी इसी के समान है यह यहाँ सहसा याद आए बगैर नहीं रहता। कम्युनिस्टों की नीति का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। तीनसीन के दक्षिण में स्थित एक बड़े कस्बे शिहकिआच में से एक विदेशी यात्री गुजरा। वह दूकानों को माल से भरा देखकर चकित हो गया। उद्योग और व्यवाय पूर्ण रूप से पहले के समान चल रहा है।

समृद्धि लौट रही है

कम्युनिस्टों की इस खेती और औद्योगिक नीति के कारण चीन के गाँवों में पुनः समृद्धि लौट रही है। जमीन खेती और सिंचाई तथा औजार साज-सज्जा, और जानवरों के किसानों में वितरण कर दिए जाने के कारण किसानों के हाथ में सम्पत्ति आ गई है। मेलों में अब खूब भीड़ रहती है। हाण्टन और लिचिंग के मेलों में कुमिंग्टांग चीन के व्यापारी भी बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए थे। पर कम्युनिस्ट पार्टी का विशेष ध्यान उद्योग और व्यवसाय पर है। ४०-५० हजार आबादी के शहर छोटी मशीनें और अन्य औद्योगिक वस्तुएँ बना रहे हैं। लोहे के कई सामान और वस्त्र-उद्योग की अन्य मैशीनरी बनाई जा रही है। ये मैशीनें बनाकर बड़ी संख्या में गाँवों में भेजी जा रही हैं। औद्योगीकरण की सफलता के लिए टूलों और मशीन बनानेवाली मशीनों का होना आवश्यक है। ये भी बनाए जा रहे हैं।

होनान, होपी, शांसी, शांटुंग और चोहर की सीमायें जहाँ मिलती हैं, वह सीमान्त प्रदेश बार्डर रीजन कहलाता है। इस प्रदेश में कोयले की खानें हैं। ये खानें भी खोदी जा रही हैं। एक खान में अधिक से अधिक काम करनेवालों की संख्या अभी २००० है। एक खान में ८०० मजदूर और कर्मचारी थे। प्रतिदिन २८० टन कोयला उत्पन्न होता है। माँग पर ज्यादा है।

* * *

सामूहिक उत्पादन के आधार पर वेतन-पद्धति आधारित है। ११४ जनों की एक शिफ्ट आ चली है। ७०० हण्डर-वेट से ऊपर प्रत्येक कोयले की टोकरी पर बोनस दिया जाता है। बोनस पोलिटिकल डाइरेक्टर और शिफ्ट के मुखिया के सामने सारी शिफ्ट की एक बैठक में बाँटा जाता है। कुमिंग्टांग और जापानी मील में हड़ताल——धीरे धीरे काम करना, तोड़-फोड़ करना, आदि रोज की बात थी। पर अब मजदूरों में नवीन राजनीतिक चेतना उत्पन्न की गई है। मजदूरों का वेतन बढ़ा दिया गया है, काम करने की अवस्था में सुधार किया गया है और उनको नागरिक अधिकार दिए गए हैं। फलतः न केवल कम्युनिस्टों ने मजदूरों में से चोरी का अन्त कर दिया है, बल्कि उत्पादन बढ़ाने के लिए नया उत्साह उत्पन्न कर दिया है। मजदूरों द्वारा उत्पादन को बढ़ाने के लिए किए गए मैशीनरी में किए गए सुधारों की प्रेस और सार्वजनिक रूप से प्रशंसा की जाती है। शांति-कार्य, उत्पादन बोनस और लाभ में भाग वेतन देने के साधारण तरीके हैं।

कर-नीति का उद्देश्य है मुनाफा बना रहे और उत्पादन बढ़े। इसलिए उन्मुक्त चीन में खेती, व्यवसाय और उद्योग एक समान कर है। व्यवसायों की अपेक्षा उद्योगों पर हल्का कर है। टूल और मैशीनरी बनानेवाले उद्योगों को विशेष सुविधा दी गई है। उन पर कर कम है। कहीं कहीं तो वे कर-मुक्त भी कर दिये गए हैं। प्रश्न यह है कि कम्युनिस्टों की यह नीति सामयिक आवश्यता के कारण या बाद में भी पूँजीवाद को जीवित रहने दिया जायगा जैसा कि माओ-से-तुंग ने कहा है—क्रांति से देशव्यापी विजय के बाद भी बहुत समय तक पूँजीवाद को बने रहने दिया जायगा, क्योंकि यह सम्पूर्ण राष्ट्रीय आर्थिक तन्त्र का एक अनिवार्य भाग है। बात यह है कि कम्युनिस्ट पहले सामन्तवाद का जड़-मूल से अन्त कर देना चाहते हैं। भूमि-सुधार कानून को उन्मुक्त प्रदेशों में ही लागू करने में कम से कम दो-तीन साल लगेंगे। इस अर्से में नारा होगा–उत्पादन की सतह बढ़ाओ। सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन के लिये यह एक आवश्यक शर्म है। कम्युनिस्ट स्वीकार करते हैं कि पूँजीवाद का और कुछ साल विकास हुए बगैर चीन में मार्क्सवाद की स्थापना संभव नहीं है। माओ-से-तुन्ग या कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बदली है, क्योंकि मार्शल टीटो की निन्दा करने में माओ-से-तुन्ग सबसे आगे रहा है। इसलिए स्वभावतः प्रश्न होता है कि चीनी जन-क्रान्ति का एशिया पर क्या प्रभाव पड़ेगा। जयपुर कांग्रेस पर कम्युनिज्म का आतंक मँडरा रहा था। भारत के लोह पुरुष निडर सरदार पटेल तक ने इस खतरे की ओर संकेत किया, इसलिये देखना चाहिए कि चीनी जन-क्रान्ति का एशिया पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

महत्त्वपूर्ण प्रभाव

स्याम के प्रधान मन्त्री विपुल संग्राम का कहना है—"यदि चीन कम्युनिस्ट हो गया, तो आग्नेय एशिया पर इसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा। इस सारे प्रदेश में चीनी फैले हुए हैं और उनमें बहुत बड़ा आन्दोलन होगा। मैं सतर्क नजर रख रहाहूं कि क्या होता है।" स्याम की सीमा हिन्द चीन और बर्मा के समान चीन को स्पर्श नहीं करती, पर स्याम की १८५ लाख आबादी में ३० लाख चीनी हैं। आग्नेय एशिया की कुल १५ करोड़ आबादी में चीनी १ करोड़ हैं। छोटे व्यवसाय सब इनके हाथ में हैं। मलाया में ये मजदूर भी हैं। स्याम में पहले प्रतिवर्ष २००० चीनी प्रवासियों को आने दिया जाता था। अब वह घटाकर ५०० कर दिया गया है। चीनी राजदूत उसको बढ़ाकर १०,००० करने के लिए कह रहा है। धनी चीनी वहाँ आकर बसना चाहते हैं। स्याम का आथिक तंत्र पहले भी अल्प संख्यक चीनियों के हाथ में है।

यदि समस्त चीन पर कम्युनिस्टों का राज्य हो जाय तो यूनान सीमा को पार कर हिन्द चीन के नेशनलिस्टों की वे सक्रिय मदद कर सकेंगे। बर्मा और चीन के बीच पहाड़ अधिक ऊँचे हैं। दूसरे काचिन। कबीले कम्युनिस्ट विरोधी हैं। पर मलाया में ५,००० चीनी कम्युगुरिल्ला हैं। ब्रिटेन इससे चिन्तित है। सिंगापुर में इस स्थिति पर विचार करने के लिए कुछ दिन पहले एक कन्फरेंस हुई थी। ब्रिटेन का भय अकारण नहीं है। क्योंकि टीन और रबड़ को मलाया से निर्यात ब्रिटेन के कुल डालर-आया का एक चतुर्थ भाग प्रदान करता है। कम्युनिस्टों की विजय से डालर-आप का यह स्रोत सूख जायगा। ब्रिटेन इसलिए अन्य औपनिवेशिक शक्तियों से सहयोग करने की फिक्र में है।

* * *

'फ्री कम्बोडिया' (स्वाधीन कम्बोज) के नेता 'प्रापीसेट' का कहना है कि चीनी युद्ध का परिणाम आग्नेय एशिया के लिए मुख्य प्रश्न है। प्रापीसेट के पास हजारों की संख्या में गुरिल्ला सैनिक है। ये फ्रेंचों के विरुद्ध हैं और बीर नामियों के साथ हैं। पर इनमें कोई कम्युनिस्ट नहीं है। इसलिए प्रापीसेट की राय ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। 'प्रापीसेट' का कहना है—हमारे लिए केवल एक प्रश्न है—स्वाधीनता। यदि कम्युनिस्ट यूनान सीमा पर पहुँच जायँ और अल्प परिमाण में ही होकिंची-सिंह को हथियार प्रदान कर दे, तो मेरे विचार से वह मीन-पास में फ्रेंचों को हिन्द चीन से बाहर खदेड़ देगा। पर इसका अर्थ है कि होकिंची-सिंह की गवर्नमेंट पूर्णतया लाल-कम्युनिस्ट होगी। यदि फ्रेंचों को निकालने के लि[ए] हमें हथियार देंगे, हम उसको स्वीक[ार] करेंगे, चाहे इसका अर्थ लाल-कम्युनि[स्ट] होता ही क्यों न हो, क्योंकि वर्षों से अँग्रेज[ों] अमरीकनों और स्यामियोंसे सहायता मां[ग] रहा हूँ और कहता रहा हूँ कि स्वतन्त्र[ता] की लड़ाई में मदद करो, पर कोई परि[णा]णाम नहीं हुआ। हम जनतंत्रों की सहाय[ता] अधिक पसन्द करेंगे, पर उन्होंने हमा[री] उपेक्षा की है। फ्रेंचों के विरुद्ध जो को[ई] मदद देगा। हम उसको स्वीकार करें[गे] और उसके प्रति कृतज्ञ होंगे।"

लाओस में हिन्दचीन के गुरिल्[ला] नेता थाओ ओचून का भी यही मत है[।] थाओ ओचून का मत है—अमरीक[ा] हमें कम्युनिस्टों के हाथ में धक्का दे र[हा] हैं। लड़ाई के दर्म्यान हम सब मिलक[र] स्वाधीनता के लिए लड़े और ह[में] वचन दिया गया कि फ्रेंचों से हमें स्वाधीन[ता] दिलाई जायेगी। पर इसको अमरीक[ा] भूल गया। यूरोपियन नीति को बचा[ने] और उसकी रक्षा करने के लिए मार्श[ल] योजना अमल में आई, पर एशिया [को] भुला दिया गया कि उसके प्रति हमारा क[्या] कर्त्तव्य है और वहाँ क्या करना चाहिए[।] फ्रांस की सहायता करके अमरीका हिन्[द] चीन में फ्रांस के औपनिवेशिक युद्ध क[ा] समर्थन कर रहा है और हमसे लड़ रह[ा] है। हमारी दिलचस्पी केवल फ्रेंचों [के] विरुद्ध दी गई सहायता में है।

अमरीका इस बात को जानता हुआ भी नहीं मानता। भारतस्थित अमरीक[ी] राजदूत मि० हैंडरसन ने यद्यपि इस बात क[ा] खंडन किया है कि मार्शल-योजना यूरो[प] के एशियाई साम्राज्य की रक्षा के लि[ए] नहीं है। पर वस्तुतः शक यही है। हिन्दे[ए]शिया में डचों के आक्रमण का उद्देश्[य] भी यही है कि चीनी जन-क्रान्ति दे[श] के आग्नेय एशिया तक पहुँचने से पह[ले] ही वहाँ अपना साम्राज्य दृढ़ कर लि[या] जाय। इसलिए तीसरी चीनी जन-क्रान्[ति] की सफलता का अर्थ है, एशिया से यूरो[]पियन साम्राज्यवाद का अन्त। यह[ी] कारण है कि यूरोप की राजधानियों में—नानकिंग के सन्निकट पतन से घबराह[ट] फैल रही है। पर वस्तुतः एशिया [के] भाग्योदय और विजय की यह अग्नि[]दूत है।

फोटो खींचने का अपूर्व साधन!

बाक्स प्लेट केमरा

सुन्दर, मजबूत, सस्ता। इ[स] केमरे से आप आसानी [से] चाहे जिस दिलपसन्द ची[ज] का मनोहर फोटो २॥×३[॥] इंच साइज के प्लेट पर खींच सकते हैं[।] बढ़िया फोटो न खिंचे तो दाम वापस[।] केमरे के साथ प्लेट, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त, मूल्य ८॥ पैकिंग पोस्टेज १॥) रु०।

ओरियन्टल केमरा हाऊस, (एल० १)
अलीगढ़ सिटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

स्त्रियों को क्या करना चाहिए पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ लोक-सेवा कर सकती हैं।

लेखिका, श्री ज्ञानवती तिवारी

स्त्रियाँ लोक-सेवा में उतनी ही उपयोगी हैं जितने पुरुष। पुरुष संसार के सभी क्षेत्र में भयानक रूप से भाग ले सकता है क्या वह कौशल और कार्यक्षमता स्त्रियों में भी हो सकती है? इसका उत्तर सभी स्त्रियाँ चाहे न दें, पर उत्साही स्त्रियाँ गर्व से गरज कर कह सकती हैं—क्यों नहीं? स्त्रियों को पाश्चात्य ढंग से सोचना या करना कोई पाप नहीं है पर उसमें नवीनता के साथ वास्तविकता का होना अत्यंतावश्यक है। जहाँ वास्तविक नहीं, वहाँ केवल शब्दाडम्बर या वाह्याडम्बर से न तो दूसरों का लाभ हो सकता है और न अपना। इँगलैंड आदि पश्चिम देशीय स्त्रियों की अपनी अलग की कार्यपद्धति है। इसका भी कारण है।

पश्चिमी देश अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रहे हैं। जिस प्रकार भारतवर्ष में अछूतपन को घृणा की दृष्टि से देखा जाता रहा है उसी प्रकार पश्चिमी देश जिनमें अधिकतर साम्राज्यवादी अथवा पूँजीवादी भावना का स्रोत प्रवाहित हो रहा है एशिया और अफ्रीका की काली जातियों को अकेले रंग भेद के कारण ही नहीं, वरन् अपने वैभव और शक्ति के कारण घृणा कर रहे हैं। कहीं कहीं तो अब इतने कठोर बन्धन लगाये जा रहे हैं कि गौरांग देशों की रमणियाँ गोरों के अतिरिक्त अन्य से विवाह-शादी नहीं कर सकतीं। यह क्या वास्तविकता है? यदि नहीं तो भारतीय नारियाँ उनके आदर्शों के पीछे क्यों पड़ी हैं। अधिकांश नारियाँ पश्चिमी देशों की यात्रा और शिक्षा को लालायित हैं। वहाँ जाने पर देश का लाखों रुपये नष्ट करेंगी, शिक्षा भी जो मिलेगी छोटों के प्रति घृणा। यदि पाश्चात्य सांस्कृतिक धरातल यही है तो फिर भारतीय नारियों के लिए वह उपयुक्त नहीं। यदि उनकी शिक्षा से मानव-समाज का कल्याण नहीं होता तो फिर ऐसी शिक्षा भारत जैसे शान्तिप्रिय और समदर्शी राष्ट्र के लिए लाभदायक नहीं हो सकती। शिक्षा और संस्कृति ही मनुष्य को ऊँचा उठाती है। भारतीय संस्कृति संसार में बिलकुल अनूठी है। इसके अन्दर कोई भी राष्ट्र अपने स्वरूप और मंगल की भावना का चित्र पा सकता है। सभ्यता के आदि से आज तक विश्व को जब कभी शान्ति-स्थापना की आवश्यकता पड़ी है, भारत ने महान् योग दिया है। भगवान राम और कृष्ण उस युग के महापुरुष हैं जिस समय वास्तविकता का मूल्य अधिक था। लोग स्पष्टता को अधिक पसन्द करते थे। उस समय में भी जब यथार्थ की अवहेलना होने लगी, लोग परेशान होने लगे तो भगवान् राम और कृष्ण जैसे युगपुरुष और उनकी संगिनी नारियाँ सीता, सावित्री और राधा, कुन्ती और द्रौपदी आदि ने संसार का मंगल किया था जब कि संसार में सभ्यता का क्षेत्र केवल एशिया ही तक सीमित था।

जयपुर की वर्तमान महारानी।

संसार में ज्यों ज्यों सभ्यता का प्रादुर्भाव होने लगा, संसार के अन्य राष्ट्र भी ज्ञान का प्रकाश फैलाने लगे, उस समय संसार में ऐसा युग आया जिसमें संसार को भारत की आवश्यकता हुई। भारत ने भगवान् बुद्ध को जन्म दिया। अशोक ने संसार को शान्त रखने के लिए अपने पुत्र और पुत्री को विदेशों में भेजा। न वे शासक होकर गये थे और न आमोद-प्रमोद के लिए। उनका उद्देश्य था इस नश्वर संसार में प्रेममय जीवन बिताना, उनका प्रभाव भी वैसा ही पड़ा। उन देशों में शान्ति का एक प्रवाह फैल गया, जन-जन में मानवता के प्रति प्रेम उमड़ा। परन्तु उस मानव-प्रेम का पश्चिमी देशों ने बेजा लाभ उठाया। सारे देश जिनमें बौद्ध-धर्म शान्ति के लिए स्थापित किया गया था, पश्चिमी साम्राज्यवादी और पूँजीवादी राष्ट्रों ने अपने सुख का क्रीड़ा-स्थल बनाया। आज वे गुलाम राष्ट्रों की संज्ञा में अशान्ति के दिन गिन रहे हैं। आज वैसे ही अशोक की आवश्यकता है जिससे संसार में शान्ति स्थापित हो। हमारे राष्ट्रपिता ने शान्ति-उद्देश्य के लिए श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और पंडित नेहरू जैसे भाई-बहन को विदेशों में शान्तिदूत बनाकर समय समय पर भेजा है। यह कहा जा सकता है कि जवाहरलाल नेहरू विश्व के लिए आज वही कार्य कर रहे हैं जो अशोक ने पूर्वकाल में किया था।

पंडित नेहरू की बहन संयुक्त राष्ट्र-संघ में शांतिदूतिका का कार्य करती हैं। अन्य देश में हमारे जो दूत भेजे जा रहे हैं उन्हें भी शांति स्थापना के लिए भेजा जाता है। विश्व में शांति-स्थापना के लिए आज स्त्रियों को भेजने का प्रश्न है। यह कार्य स्त्रियाँ सरलता से कर सकती हैं। वायुयान चलाने, मोटर चलाने अथवा रणक्षेत्र में शस्त्रास्त्र चलाने की कार्यक्षमता रखती हैं। परन्तु उनके हृदय में कुछ ऐसे तत्त्व प्राकृतिक रूप से मौजूद रहते हैं जिनमें दयालुता, नम्रता और सेवा के गुण अधिक होते हैं। मिस फ्लोरेन्स नाइटिंगेल उन स्त्रियों में हैं जिन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि रमणियाँ दयालु अधिक होती हैं। वे सेवा-कार्य में जितनी अधिक सफलता प्राप्त कर सकती हैं उतना रण-कौशल में वे दक्ष नहीं हो सकतीं। यह कहा जा सकता है कि वे अपने बच्चे की रक्षार्थ हत्यारे या मारनेवाले का खून कर डालती हैं। यह संभव है, परन्तु यह भी संभव है कि वे मारनेवाले के ऊपर भी दयावान बनकर उसे मारने के बजाय डाँट फटकार ही से काम चला लेती हैं।

स्त्रियों के अनुरूप कैसे कार्य हैं अथवा यह कि स्त्रियाँ कैसा कार्य करें जिससे उनका और समाज दोनों का कल्याण हो। इस पर विभिन्न राएं तो हो सकती हैं, पर, यह निर्विवाद है कि स्त्रियों को घृणा और हत्या की अपेक्षा प्रेम और सेवा अधिक उपयुक्त होगी। पश्चिमी अथवा विदेशों में स्त्रियाँ रणक्षेत्रों में शस्त्रास्त्रों से लड़ी हैं। भारत इसके प्रतिकूल रहा है। यहाँ भारतीय स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलनकारी नारियों ने सर्वदा संयम और अहिंसा के आधार पर प्रेम से उन चीजों का बहिष्कार किया है जिनका मनुष्य के दैनिक जीवन से सम्बन्ध है। उन्होंने किसी मनुष्य से शत्रुता नहीं रक्खी। शत्रु की भी उन्होंने सेवा की है। हमारे राष्ट्रपिता का आश्रम महिलाओं के लिए आदर्श शिक्षा की विज्ञानशाला थी। उनसे शिक्षाप्राप्त नारियों में मीरा बहन जैसी विदुषी और सेविका नारियाँ विश्व-कल्याण में जुटी हैं। भारतीय नारियाँ जगत् में विश्वबन्धुत्व और मातृत्व के लिए ही अधिक उपयुक्त हैं, उन्हें राष्ट्रीयता की आड़ में द्वेष और घृणा सिखला कर ईश्वर की सृष्टि के प्रति अन्याय करना है।

नारियों का जीवन दुखमय न बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वे सर्वप्रथम ऐसी शिक्षा प्राप्त करें जिनमें मानवता के प्रति प्रेम और समाज की वह सेवा हो जिनमें उनके मातृत्व का सदुपयोग किया जा सके। हम इँगलैण्ड अथवा पश्चिमी देशों की नकल कर यदि अपनी नारी-संगठन की शिक्षा शान्तिप्रियता के अनुकूल नहीं बनाते तो स्त्रियों की वास्तविक सेवा संसार को न प्राप्त हो सकेगी। इसके अतिरिक्त हमारे नारी समाज का भी यह कर्तव्य है कि वे बालपन से ही लड़कियों को ऐसा पाठ पढ़ायें जो मातृत्व के अनुकूल हो। केवल दफ्तरों में कलम रगड़ने अथवा वायुयानचालक या शस्त्रास्त्र में पारंगत होने से नारियाँ समाज का कल्याण नहीं कर सकतीं। वे तभी समाज की सच्ची सेविका होंगी या अनुभव करेंगी जब वे मातृत्व की शिक्षा ग्रहण करेंगी और उसके अनुरूप आचरण भी करेंगी।

१०,०००) रुपये की असली घड़ियाँ मुफ्त इनाम

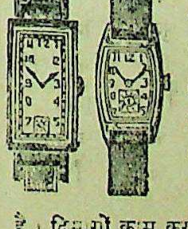

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, उनको लम्बे घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न उगते हों वहाँ फिर से पैदा करता है। आँखों की रोशनी को तेज करता है। दिमाग को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। दिमागी काम करनेवालों के लिए अकसीर है। शौकीनों के लिए उमदा तोहफा है। कीमत एक शीशा २।) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६।।) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी प्रत्येक शीशी के ग्राहक को एक अँगूठी सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और एक असली अमरीकन रिस्टवाच जिसकी गारण्टी १२ साल है मुफ्त।

नोट—तीन शीशी के खरीदार को छः अँगूठियाँ सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और तीन अमरीकन रिस्ट घड़ियाँ मुफ्त इनाम दी जाती हैं। आज ही आर्डर भिजवाएँ क्योंकि यह अवसर केवल चन्द दिनों के लिए है। नापसन्द होने पर कीमत वापस की गारण्टी।

सरयासा आयुर्वेदिक फारमेसी, (D. A.) हल्का नं० २२, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'रामबाण'

प्राचीन संस्कृति का विकृत चित्रण

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

प्रकाश पिक्चर के यशस्वी निर्देशक-निर्माता श्री विजयशंकर जी भट्ट ने 'भरत मिलाप' तथा 'रामराज्य' बहुत पहले प्रदर्शित किया था। 'भरतमिलाप' के पश्चात् उनकी द्वितीय कृति 'रामराज्य' दिग्दर्शित हुई, जिसमें उन्होंने 'भरत-मिलाप' से अत्यधिक लोकप्रियता और सफलता प्राप्त की। आज श्री विजय भट्ट ने ही निर्धारित "रामबाण" का प्रदर्शन किया है।

"शंकर-पार्वती", "जय हनुमान", आदि की भाँति भारतीय इतिहास एवं हिन्दू संस्कृति का ध्वंस होते हुए "रामबाण" का कथानक वहाँ से प्रारम्भ होती है, जब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी, सीता एवं लक्ष्मण सहित पंचवटी में निवास करते है। सूर्पणखा लंकेश की राजसभा में अपने योग्य वर न प्राप्त कर सकने के कारण रूठकर पंचवटी आती है! वहाँ स्वयं को लक्ष्मण के उपयुक्त जान, नाक कटवा, अपने भ्राता को अपनी दुर्गति का ताना मारती हुई वृत्तान्त सुनाती है। अभिमानी रावण सीता-हरण के प्रयास में सफल होता है। लक्ष्मण के साथ श्री रामचन्द्र जी विरह में घूमते हुए पम्पापुर आते हैं, जहाँ उनकी भक्तिमयी शबरी एवं वानर सेना से भेंट होती है। कतार में खड़े सातों वृक्ष रामबाण द्वारा बिंधते हैं। बालि की मृत्यु होती है और पवनकुमार श्री हनुमान जी को शक्ति प्राप्त होती है। हनुमान जी लंका प्रस्थान करते हैं। लंकादहन के पश्चात् अंगद जी का हास्यपद संवाद होता है और उसके पश्चात् राम-रावण-युद्ध घोषणा में मेघनाद, कुम्भकरण आदि वीरों की मृत्यु तथा दशानन की पराजय (मृत्यु) के साथ श्री रामचन्द्र जी की विजय होती है। भ्राता लक्ष्मण एवं जननी सीता के साथ रघुनाथ जी अयोध्या नगरी पधारते हैं और एक बार पुनः रामराज्य की स्थापना होती है।

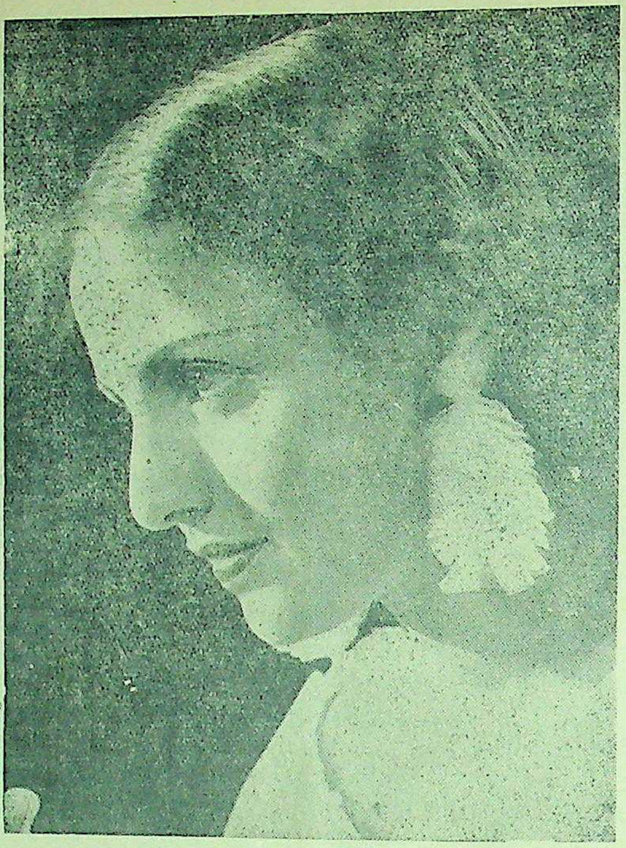

'रामबाण' फिल्म की प्रमुख अभिनेत्री शोभनासमर्थ।

भारतीय छायालोक के महान्-पौराणिक कथा-लेखक श्री मोहनलाल जी दुबे द्वारा लिखित कथानक 'रामबाण' उस महाकाव्य के रस एवं हृदयस्पर्शिता को नाम के हेतु भी न स्पर्श करने के कारण पूर्ण चित्र 'बच्चों के खेल' सा प्रतीत होता है। अतः पौराणिकता के साथ धर्म की भी हत्या की गई है, जिसके कारणवश पूर्ण चित्र में भगवान् राम तो 'मजनूं' और जगत्जननी सीता का सदैव 'राम-राम' रटना उनके 'लैला' होने का ज्वलंत उदाहरण है। सीता के विरह में राम का इतना भोंडा विलाप, हनुमान जी की जादूगरी, (सीता जी को रावण के राजमहल में न प्राप्त कर सहसा अशोक वाटिका में पहुँच जाना, इतने वृहत् पर्वत को लघु रूप में लाना, मार्ग में त्रिजटा, भरत, खड़िया ऋषि आदि से बिना किसी घटना के सुरक्षित रहना, इत्यादि) आदि ऐसे दृश्य चित्रित किये गये हैं, जो कहानीकार के दिवालियेपन के द्योतक हैं।

इसके अतिरिक्त कितने ही दृश्य लेखक महोदय यों ही निगल गये हैं। आकाश-मार्ग में जटायू-युद्ध की कौन कहे लेखक ने बालि-मृत्यु, हनुमान जी को दी हुई काष्ठ की (लोहे की नहीं) मुद्रिका, हरण के समय सीता जी का अपने कंगन, पैंजनियाँ, आदि एक पोटली में बाँधकर कपिराजों के समीप फेंकना, इत्यादि का दिग्दर्शन उसी भाँति प्रतीत होता है, जिस भाँति एक बार श्री रामचन्द्र जी को भट्ट जी ने घड़ी पहने हुए प्रदर्शित किया था। कहने का तात्पर्य यह है कि पूर्ण चित्र की कहानी 'अपवादों' से परिपूर्ण है। क्योंकि—"मैं कौन? रावण......!" पं० गिरीश जी द्वारा लिखित संवाद अत्यन्त कुरुचिपूर्ण एवं निम्न कोटि के हैं। भाषा के साथ तो [illegible] है कि जिसे सुनते-सुनते कान पक जाते हैं! उदाहरणार्थ—'साहस जवानी का धर्म है', 'इस रूप और जवानी को क्यों बरबाद करते हो?', 'सुबह', 'हैसियत', 'हवाले', 'खुशामदी', 'गजब', 'बर्ताव', 'हजारों', 'लाखों का खून', 'बहादुरी', 'मौका', 'वाकया', 'मौजूद', 'मुताबिक', 'तारीफ', 'खानदान', 'मौका', 'हालत', 'दिल' 'जनाब', 'बेशक', 'बेहद सुन्दर', 'गुजरता है', 'वगैरह', आदि इसमें आश्चर्य की क्या बात है? सुरा-सुन्दरी और वासना से खेलनेवाले इसी प्रकार ही तो अपने साहित्य की महान् सेवा किया करते हैं। 'शाहजादा अशोक' तक जब उच्चारण हो चुका है तो एक दिन वह भी आयेगा जब बादशाह राम और बेगम सीता का प्रदर्शन होगा। आप केवल इस बलात्कार को देखते ही जाइए! पं० इन्द्र, श्री मोती बी० ए० तथा श्री नीलकंठ तिवारी द्वारा लिखित गीत तृतीय श्रेणी के हैं। प्रथम नृत्य के अतिरिक्त समस्त गीतों की ध्वनियों में कोई नवीनता नहीं है। चित्रालेखन साधारण है। रूप-सज्जा अत्यन्त निकृष्ट कोटि की है। ऐसा प्रतीत होता है मानों सीता जी के जर्जर कपोलों पर खड़िया मिट्टी पोत दी गई है और सूर्पणखा की नाक पर कोई शहद की मक्खी बैठा दी गई हो। कला-निर्देशक श्री कनु देसाई ने केवल दुस्साहस मात्र का ही परिचय दिया है। वेशभूषा-परिवर्तन भी तृतीय श्रेणी का हुआ है।

रावण के रूप में चन्द्रमोहन तो स्पष्ट रूप से संवादों का उच्चारण भी नहीं कर पाता। भगवान् राम, लक्ष्मण तथा माता सीता की भूमिकाओं में प्रेम अदीब, उमाकान्त एवं शोभना सामर्थ अत्यन्त शिथिल हैं। शबरी की काया में अमीर बाई कर्नाटकी ने अत्यन्त असफल अभिनय प्रदर्शित किया है। शेष पात्रों का कार्य उल्लेखनीय नहीं है।

यद्यपि विजय भट्ट जी ने महान् यश एवं कीर्ति प्राप्त की है, फिर भी वह भूल जाते हैं कि सेतु बाँधने के प्रथम रामेश्वरम् की स्थापना हुई थी, जो आज भी कुमारी अन्तरीप के तट पर स्थापित इतिहास का एक ज्वलंत उदाहरण है, जिसको भी दिग्दर्शक भूल जाता है। दिग्दर्शन की दृष्टि से पूर्ण चित्र में रामबाण की कहीं भी उच्चता प्रकट नहीं होती। रामबाण की मर्यादा राक्षसों के दलन के लिये थी—जादूगरी के प्रदर्शन के लिये नहीं। जब राम और रावण के मुखों पर मक्खियाँ भिनकती हैं और रावण एक मुख का था तो उनका रामबाण कितना ओजमय होगा—इसका कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

* * *

सुप्रसिद्ध अभिनेता प्रेमअदीब।

सुप्रसिद्ध अभिनेता चन्द्रमोहन।

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक भमेले में बड़ी मारकाट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ़ार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीजें बनाकर या नये काम करके क्या आदमी दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सब बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

नागपुर रेडियो में हिन्दी का कवि-सम्मेलन

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

मध्यप्रांत की राजधानी नागपुर में रेडियो स्टेशन खुल जाने से प्रांत के गौरव में एक अभिवृद्धि हुई है। उसने थोड़े से ही समय में बहुत ही लोकप्रियता प्राप्त की है। प्रांत के साहित्यकारों व कवियों का उसे यथेष्ट सहयोग प्राप्त हो रहा है।

नागपुर रेडियो ने अब तक तीन कवि-सम्मेलन अपने यहाँ किये हैं। पहला तो हुआ था दो अक्टूबर को जिसमें प्रांत के प्रमुख कवि बुलाए गए थे। उक्त कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष 'कर्मवीर' संपादक तथा हिन्दी के धुरन्धर विद्वान पं० माखनलाल चतुर्वेदी थे और उसमें सर्वश्री अंचल, नर्मदाप्रसाद खरे, विनयमोहन शर्मा, भवानीप्रसाद मिश्र, प्रभुदयाल अग्निहोत्री, लहरी, ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, डा० रामकुमार वर्मा सम्मिलित हुए थे। उक्त कवि-सम्मेलन में प्रांत के गवर्नर श्री मंगलदास पकवासा तथा प्रांत के गृह-मन्त्री पं० द्वारिकाप्रसाद जी मिश्र उपस्थित हुये थे। कवि-सम्मेलन का अच्छा रंग रहा।

यों देखा जाय तो मध्यप्रांत में उत्कृष्ट लेखकों और कवियों की कमी नहीं है— पर उन्हें दूसरे प्रांतवाले पहचानने में भूल कर देते हैं। डा० रामकुमार वर्मा, कविवर अंचल तथा रसीले कवि श्री नर्मदाप्रसाद खरे पर किसे गर्व न होगा? पं० माखनलाल जी तो सबके गुरु ही हैं। प्रांत में काव्य-सरिता की जो पुनीत धारा प्रवाहित हो रही है उसे गति देने का कार्य पं० माखनलाल जी ने ही किया है। उनके साप्ताहिक 'कर्मवीर' ने इस दिशा में जो कुछ किया है, उसे भुलाया नहीं जा सकता।

* * *

दूसरा कवि-सम्मेलन हुआ था २८ नवम्बर को। उसमें छत्तीसगढ़ के सुकवियों ने भाग लिया था। भाग लेनेवालों में से प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं सर्वश्री केदारनाथ झा 'चन्द्र', घनश्यामप्रसाद 'श्याम', स्वराज्यप्रसाद त्रिवेदी आदि। यह कवि-सम्मेलन अपने ढंग का रहा—पर जो दो अक्टूबर को कवि-सम्मेलन हुआ था—उससे जरा उन्नीस ही रहा। और हो भी क्यों न—क्योंकि उसमें तो पूरे प्रांत के ही, कवि आए थे।

मध्यप्रांत में महाकोशल में नागपुर प्रांत की अपेक्षा हिन्दी के अधिक कवि हैं। यों श्री भवानीप्रसाद मिश्र, प्रभुदयाल अग्निहोत्री, श्रीरामपुजारी 'राम', विनयमोहन शर्मा, भृङ्ग तुपकरी आदि अच्छे कवि हैं—फिर भी अभी महाकोशल के अंचल व खरे नागपुर प्रान्त में नहीं हैं। अस्तु।

* * *

तीसरा कवि-सम्मेलन २६ दिसम्बर को हुआ। कहने का मतलब यह कि नागपुर रेडियो ने हर मास एक एक कवि-सम्मेलन अपने यहाँ से प्रसारित किया। इस अन्तिम कविसम्मेलन के अध्यक्ष थे ८२ वर्षीय वृद्ध कवि पं० सुखराम चौबे 'गुणाकार'। अधिकांश कवि जबलपुर के ही थे। सबने खूब रस बरसाया। उसमें नई पीढ़ी के कवियों में से सिर्फ एक ही दो थे—बाकी सब पुराने। जिन दस कवियों ने भाग लिया था वे हैं सर्वश्री मातादीन शुक्ल, गंगाविष्णु पांडे, कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर', मुरलीधर दीक्षित, 'भ्रांत' राजेश्वर गुरु, कमलाकांत पाठक, चन्द्रप्रकाश वर्मा, झलकनलाल वर्मा 'छैल' गोपाल शर्मा और स्वयं अध्यक्ष। श्री गंगाचरण दीक्षित स्वयं उपस्थित न हुये थे, इसलिए उनकी कविता पढ़कर सुनाई गई।

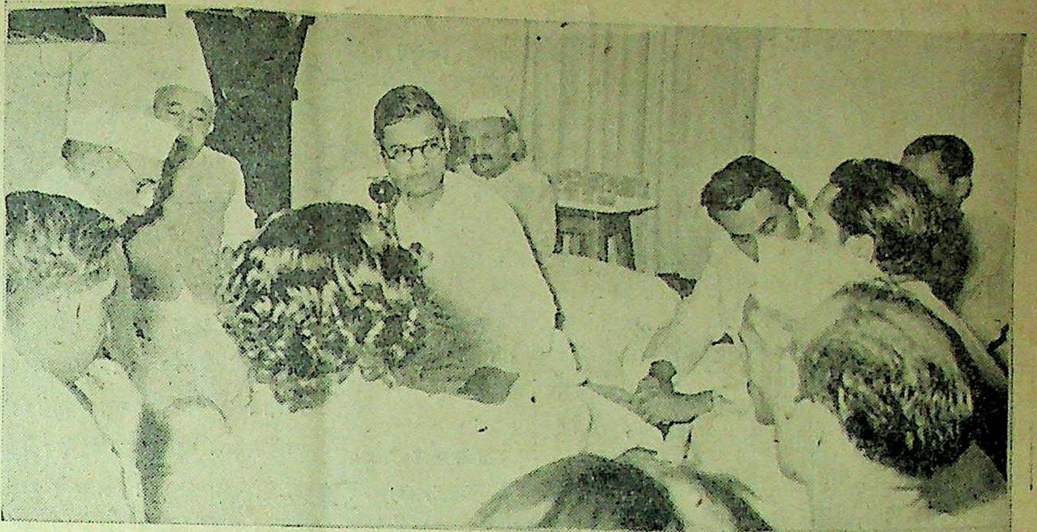

नागपुर (मध्यप्रांत) रेडियों में हिन्दी कवि-सम्मेलन—श्री नर्मदाप्रसाद खरे कविता पाठ कर रहे हैं। उनके पीछे मध्यप्रांत के गृह-मंत्री माननीय पंडित द्वारकाप्रसाद मिश्र तथा श्री अंचल जी बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं। बाईं ओर कोने में मध्यप्रांत के गवर्नर मानीय श्री मंगलदास पकवासा तथा उन्हीं के पास कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष पंडित माखनलाल चतुर्वेदी चश्मा लगाये बैठे दिखाई दे रहे हैं।

श्री गोपाल शर्मा की 'काली सड़क, लम्बी सड़क' वाली कविता नई कल्पनायुक्त थी। उनके कहने का अपना ढंग था। उपमाओं का उनका अपना चुनाव था।

श्री चन्द्रप्रकाश वर्मा ने खाँसते हुए गाया था—

देख चुका सागर का गरजना
देख चुका लहरों का मचलना......

नई चीज थी—नये भाव थे—व नया रंग था, इसलिए उनकी कविता खूब पसन्द की गई।

श्री राजेश्वर गुरु प्रांत की प्रतिमा हैं। उनकी कविताओं में हम विद्रोहाग्नि की लपटें देखते हैं। उनकी कविताओं में हम जीवन की करुण पुकार देखते हैं। 'शहीदों' के सम्बन्ध में उन्होंने जो कविता सुनाई वह अच्छी रही।

पं० कालिकाप्रसाद दीक्षित 'कुसुमाकर' ने 'मातृ भू तुमको बुलाती जागरण का पर्व भारी' कविता सुनाई। अलंकारयुक्त कविता होने के कारण उसका उतार-चढ़ाव अच्छा लगा। अगर दीक्षित जी जरा राग से गाते तो फिर उनकी कविता में पर लग जाते—जी हाँ!

"गा रहा हूँ, मीत बढ़ता जा रहा हूँ,
गीत गढ़ता जा रहा हूँ"

कविता जब श्री मुरलीधर दीक्षित 'भ्रांत' ने सुनाई तो 'फिर कहिए, फिर कहिए' की आवाजें रेडियो में ही आने लगीं। और उन्हें फिर कहना ही पड़ा। न कहते तो जाते कहाँ?

पं० मातादीन शुक्ल ने 'वीर रस' की कविता 'राजपथ है' सुनाई। बहुत जोरदार चीज थी। रेडियो सुननेवाले 'वाह वाह' कर उठे। मैंने तो पंडित जी के मुख से इतनी जोरदार कविता पहली ही बार सुनी थी।

अन्त में कवि-सम्मेलन के अध्यक्ष ने तो खूब ही कमाल किया। किसी ने वहीं कह भी तो दिया कि पुराने चावल हैं। कवि-सम्मेलन एक घंटा बीस मिनट तक चलता रहा।

* * *

नागपुर रेडियो ने तीनों कवि-सम्मेलनों को सफल बनाने में बहुत कुछ किया है। आशा है निकट भविष्य में ऐसे ही कवि-सम्मेलनों का आयोजन वह करता रहेगा।

शहीद स्मारक भवन की स्थापना के अवसर पर जबलपुर में एक कवि-सम्मेलन हुआ था, उसे नागपुर रेडियो ने रिले किया था।

हमें उस समय यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मध्यप्रांत में इतने अधिक कवि होते हुए भी मेरठ के हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर होनेवाले कवि-सम्मेलन में प्रांत से सिर्फ एक कवि ही आमंत्रित किए गए थे और वे थे कविवर अंचल। पता नहीं श्री नर्मदाप्रसाद खरे, रामकुमार वर्मा, भवानीप्रसाद मिश्र आदि को आमंत्रित क्यों नहीं किया गया?

* * *

नागपुर रेडियो के व्यवस्थापकों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे नागपुर रेडियो में 'बाल कवियों' का भी एक सम्मेलन बुलवायें। बाल कवियों से मेरा मतलब बच्चों से नहीं है, किन्तु जो बच्चों के लिए कविता लिखते हैं उनसे है। बालक साहित्य का भी हमारे साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान है। अपने प्रांत में बाल कवियों में से सर्वश्री स्वर्ण सहोदर, सुन्दरलाल शिकंकेवाल, श्रीकृष्ण मौजी, अशोक बी० ए०, रामेश्वरदयाल दुबे, आशुतोष, आशाकांत बी० आचार्य, इंद्रबहादुर खरे, लक्ष्मीदेवी वर्मा, 'चंद्रिका' आदि मुख्य हैं।

नागपुर रेडियो दिनोंदिन प्रगति पथ पर अग्रसर हो—यह शुभ कामना है।

[भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा]

* * *

सरदार शहर (बीकानेर) में समाज-सुधार के तत्त्वाधान में पर्दा-निवारण महा-सम्मेलन का आयोजन समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। माताजी जानकी देवी बजाज, श्री सीताराम जी सेक्सरिया, तुलसीराम जी सरावगी भँवरमल सिंघी, सुशीला देवीसिंघी, मदालसा देवी अग्रवाल आदि अग्रगण्य नेताओं का स्टेशन पर धूमधाम से स्वागत किया गया। नेताओं को स्टेशन पर गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और स्टेशन से गांधी चौक तक विशाल जुलूस निकाला गया जिसमें ५ हजार से अधिक जनता ने सम्मिलित होकर सामाजिक क्रान्ति की विजय-यात्रा को सफल बनाया। गांधी चौक में श्री सीताराम जी सेक्सरिया ने झण्डातोलन तथा राष्ट्रीय पताका की गौरव-गरिमा का वर्णन करते हुए एक भावपूर्ण भाषण दिया। स्वागताध्यक्ष आचार्य गौरीशंकर जी, भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री ने आगत सज्जनों का स्वागत करते हुए सरदार शहर की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और साहित्यिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिभाषिक शब्दावली

(पेज ४ का शेष)

शब्द का प्रयोग करेगा एक अर्थ में, परीक्षार्थी उसे समझेगा दूसरे अर्थ में। ऐसी स्थिति में हमारे शिक्षा और ज्ञान के क्षेत्र में एक बड़ा भारी विप्लव उपस्थित होगा; और पारिभाषिक शब्दों के निर्माण तथा उसके आधार पर ग्रंथ-रचना में हमारे लेखकों द्वारा किया गया परिश्रम व्यर्थ सिद्ध हो जायेगा। पर यदि हमारी सरकार चाहे तो अब भी समय है कि हम उस भयावह परिस्थिति से बच सकें। केन्द्रीय सरकार का कर्तव्य है कि वह अविलम्ब पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के लिये एक केन्द्रीय समिति की नियुक्ति करे। इस समिति का संगठन निम्नांकित वर्गों से होना चाहिये—

(१) प्रत्येक भारतीय भाषा के विशेषज्ञ;
(२) विविध विषयों के विशेषज्ञ;
(३) विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि;
(४) अन्य ऐसी साहित्यिक अथवा शिक्षा-संस्थाओं के प्रतिनिधि जो इस कार्य में रुचि रखते हों।

केन्द्रीय समिति यदि चाहे तो अपनी सुविधा के लिये अलग-अलग विषयों के शब्द-निर्माण के लिये अलग-अलग उपसमितियाँ भी बना सकती है। इस समिति को चाहिये वह शब्द-संकलन के संबंध में भिन्न भिन्न व्यक्तियों द्वारा दिये गये परामर्शों पर उचित ध्यान दे। सब भारतीय भाषाओं के लिये एक ही पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता इस पर भी समिति को गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिये। यदि सरकार का यह विश्वास हो कि अँगरेजी के शब्दों को ज्यों का त्यों लेने से ही काम चल सकता है, तो इस बात का निर्णय भी यही समिति कर सकती है। इस सुझाव पर विचार करते हुए समिति को देखना चाहिये कि चीन और जापान जैसे दूसरे देशों में इस संबंध में क्या परिस्थिति है, तथा हमारे देश को इस सुझाव को मान लेने से आगे चलकर कितनी सुविधा होगी और कितनी असुविधा।

यद्यपि अपनी कार्य करने की प्रक्रिया का निश्चय, यदि इस प्रकार की किसी समिति का संगठन हुआ तो वह स्वयं ही करेगी, फिर भी इस संबंध में दो आवश्यक बातों की ओर संकेत करना अनुचित न होगा। पहली बात तो यह है कि हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत से पारिभाषिक शब्द पहले से ही प्रचलित हैं। उदाहरण के लिये पोजिटिव एवं नेगेटिव वायर के लिये गरम और ठंडा तार। इस प्रकार के समस्त प्रचलित शब्दों का संकलन किया जाना चाहिये और यथासंभव उनको नवीन शब्दावली में ग्रहण भी करना चाहिये। दूसरी बात यह है कि जिन विषयों के ग्रंथ संस्कृत में उपलब्ध हैं, उन विषयों के पारिभाषिक शब्द पहले उन्हीं ग्रंथों में ढूँढने चाहिये।

मुझे आशा है कि केन्द्रीय सरकार का शिक्षा-विभाग इस विषय की गंभीरता को समझेगा और पारिभाषिक शब्दों के निर्माण के इस आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य को विशृंखलता से बचाकर उसे एक सुसंगठित एवं सर्वमान्य रूप में सम्पादित कराने की ओर ध्यान देगा।

सामाजिक बीमा और मजदूर

(पेज ६ का शेष)

बारह आने प्रतिदिन के हिसाब से पैसे दिये जाएँगे जिससे गर्भकाल में भी पेट भरने के लिये उनको मेहनत न करनी पड़े जिसके कारण अनन्य बीमारियाँ जान को लग जाती हैं। आकस्मिक दुर्घटनाओं के लिये पेन्शन इत्यादि का भी एक्ट में प्रबन्ध कर दिया गया है।

कोष का प्रबन्ध

सामाजिक बीमा कोष का प्रबन्ध ३१ आदमियों की एक समिति, जिसको 'सरकारी बीमा कारपोरेशन' के नाम से पुकारा जायगा, करेगी।

इस समिति में केन्द्रीय और प्रांतीय सरकार, मिल-मालिक, मजदूर, डाक्टरी पेशे, केन्द्रीय लेजिसलेचर के प्रतिनिधि रहेंगे। इस कारपोरेशन की एक कार्य्यकारणी समिति १३ आदमियों की बनाई जायेगी जो दिन-प्रतिदिन का कार्य्य सँभालेगी। डाक्टरी समस्याओं के सुलझाव के लिए २१ सदस्यों की एक डाक्टरी-लाभ समिति भी बनाई जायेगी जो कारपोरेशन को डाक्टरी मसलों पर सलाह दिया करेगी जिसमें प्रांतीय सरकार, मिल-मालिक, मजदूर और डाक्टरी पेशे के प्रतिनिधि रहेंगे। इस प्रकार व्यवस्थित प्रबन्ध के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की उपसमितियाँ बना दी गई हैं। यह समितियाँ अपने अपने सुझाव और सलाहों को कारपोरेशन के सामने रखकर उसके काम में सहयोग देंगी।

सरकार पीछे क्यों ?

यह कहना, कि इस नए कानून से भारतवर्ष के मजदूर को एक बहुत बड़ा सहारा मिल जायगा, तो केवल एक बात को फिर से दुहराना ही होगा। परन्तु एक समस्या हमारे सामने अब भी है। भारतीय सरकार ने रुपये-पैसे के मामले में अपना हाथ काफी खींच रखता है। भारतवर्ष की गरीबी और यहाँ के मजदूरों की भूखी और नंगी शक्लें देखकर तो यह कहना अनिवार्य हो जाता है कि देश में सामाजिक बीमा-योजना को सफल बनाने के लिए सरकारी रुपयों की काफी आवश्यकता है। इससे यह अभिप्राय नहीं कि जनता पर नए कर लगा कर इस कोष में सरकार रुपया दे। यह तो केवल नाक को बजाय सीधे पकड़ने के उल्टा पकड़ना हो जायेगा। आवश्यकता तो इस चीज की है कि स्थित सरकारी आय में से ही कुछ अंश इस योजना को सफल बनाने के लिए दिया जाना चाहिये। विदेशी मजदूर अपनी आय का कुछ अंश बड़ी आसानी से इस लाभदायक योजना के लिए दे सकता है। परन्तु भारतवर्ष के मजदूर की दशा तो बिलकुल विपरीत है। उसके लिए इतना भी देना एक बहुत बड़ी कठिनाई का सामना करना है।

सरकारी सहायता के अतिरिक्त हमारे मिल-मालिक भी कुछ और आगे बढ़ें। अगर मजदूर बीमार कम रहता है और हृष्ट-पुष्ट रहता है तो स्वाभाविक मिल-मालिकों का उत्पादन बढ़ेगा जिससे उनका लाभ भी बढ़ेगा। अतः यह आवश्यक है कि मिल-मालिकों को अधिकांश भार अपने ही कंधों पर लेना चाहिये।

आज हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है। स्वतन्त्र देश को स्वतन्त्र बनाए रखने के लिए औद्योगिक उन्नति अत्यन्त आवश्यक है। औद्योगिक उन्नति में मजदूर का एक बहुत महत्त्वपूर्ण पार्ट है। अगर मजदूर सन्तुष्ट है, हृष्ट-पुष्ट है, आर्थिक चिन्ताओं से दूर है और अपनी नौकरी की तरफ से निश्चिन्त है तो यह स्वाभाविक है कि देश की औद्योगिक उन्नति दिन-दूनी और रात चौगुनी होगी। जब संसार के प्रत्येक स्वतन्त्र देश में मजदूरों की दशा सुधारने के लिये नए नए कानून लागू किये जा रहे हैं तो भारतवर्ष—जिस पर समस्त एशिया आँखें गड़ाये है और संसार टकटकी बाँधे है—क्यों पीछे रहे ?

* * *

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

दो भाग

भारत के इतिहास में गुप्त-सम्राटों का समय सुवर्ण युग नाम से प्रसिद्ध है। उस समय हमारी सभ्यता उच्च शिखर पर थी। बृहत्तर भारत में हमारी सभ्यता का प्रचलन था। इसमें गुप्त-पूर्व-भारत, नागवंश, भारशिव और वाकाटक-वंश आदि का वर्णन है। फिर गुप्त-सम्राटों के शासन आदि का ब्योरेवार विशद वर्णन है। यह विषय हिन्दी में इतने ब्योंरे से अन्यत्र दुर्लभ है। इतिहास-प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य लेना चाहिये। पुस्तक बड़े आकार में छोटे टाइप में, अच्छे कागज पर छपी है, सुन्दर जिल्द है। सचित्र है। मूल्य प्रथम खण्ड ४) चार रुपये; द्वितीय खण्ड ५॥) पाँच रुपये आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कालेज की एकाकी बालिका

अब लोक प्रिय एवं पारितोषिक विजेत्री क्रूशन को धन्यवाद

कालेज जीवन में एक ही वर्ष के अन्दर सीता ने अपनी अच्छी शक्ल एवं सहेलियों को खो दिया। वह थकी सी रहने लगी। उसका चर्म मोटा हो गया। प्रत्येक व्यक्ति उसको सुस्त एवं चिड़चिड़ा मिजाज का समझने लगा। एक दिन तंग आकर जब उसने अपनी माँ से कालेज छोड़ने की बात कही तो उसकी माँ ने उसे नेक सलाह दी कि प्रत्येक दिन प्रातःकाल जलपान के पूर्व क्रूशन साल्ट लेने की कोशिश करे।

एक वर्ष बाद ही सीता को इन्टर परीक्षा में पारितोषिक मिला। उसकी सहेलियों ने कहा—तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो, तुम्हारे पास सौंदर्य एवं मस्तिष्क दोनों ही हैं। सीता ने मुस्कराते हुए अपनी माँ के उपदेश को स्मरण किया। मनुष्य को जितनी बीमारियाँ तंग करती हैं उनमें से आधी का कारण आन्तरिक गन्दगी है। प्रतिदिन पेट की सफाई का पक्का साधन 'क्रूशन साल्ट' का सेवन है। यह छः खनिज नमकों का सम्मिश्रण है। यह मल प्रवाहित करने वाली अँतड़ियों को साफ रखता है। बाहर निकाल फेंकने योग्य सड़े पदार्थ को अँतड़ियों में एकत्र होकर रक्त को विषाक्त बनाने से रोकता है। क्रूशन स्वस्थ एवं सुन्दर बनाता है।

आज ही क्रूशन खरीदें। सर्वत्र प्रत्येक दवा विक्रेता के यहाँ मिलता है। पीले कागज की तख्ती के डिब्बे के अन्दर मूल्य १॥=)

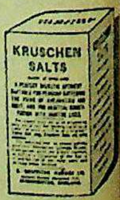

आप भी

क्रूशन से लाभ उठाइये।...

Ad. No. KSID. 4 Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ़्त असली रिस्टवाच

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५५५ डी लक्स के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है और उनको लम्बे व घुँघरवाले और चमकदार बनाता है, जहाँ बाल न आते हों वहाँ फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी को तेज करता है और सिर को ठंडक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥), तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए एक शीशी के साथ एक फैंसी रिस्टवाच जिसकी सुन्दरता व दृढ़ता की गारन्टी दस साल है और एक अँगूठी सोना (न्यू गोल्ड लण्डन) बिलकुल मुफ़्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक-खर्च बिलकुल माफ और चार अँगूठी (लण्डन न्यू गोल्ड) और चार घड़ियाँ बिल्कुल मुफ़्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ नहीं आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

हिमालय औषधालय (D. A)
हलका नं० २२ अमृतसर

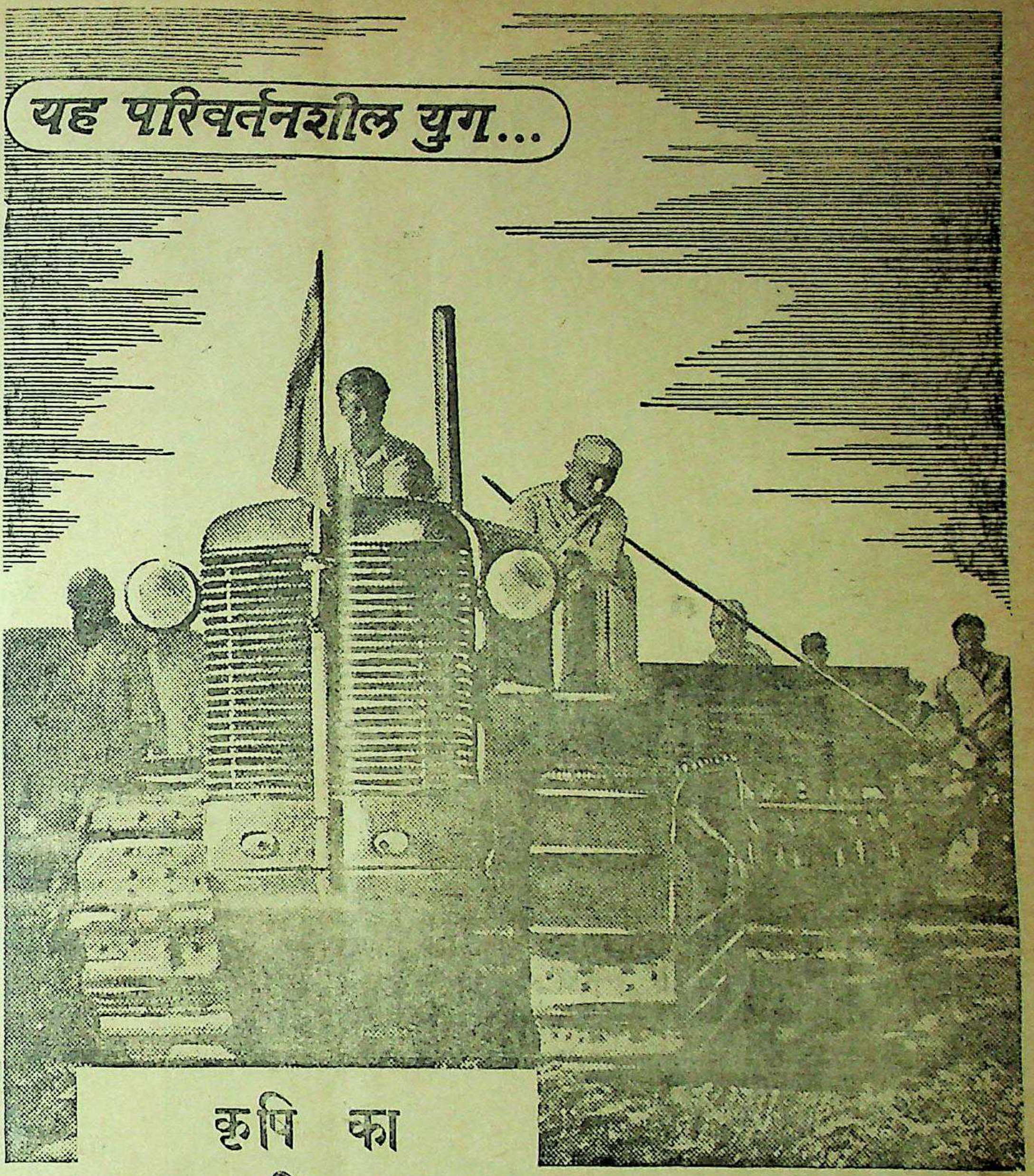

कृषि का यन्त्रीकरण

भारतवर्ष में धीरे-धीरे खेती-बाड़ी के काम में आधुनिक यन्त्रों का उपयोग होने लगा है। पुराने हल का स्थान ट्रैक्टर और नये ढंग के औज़ार ले रहे हैं।

खाद के साधनों और सिंचाई की योजनाओं से खेती की पैदावार बढ़ेगी।

कृषि के यन्त्रीकरण में इस्पात का महत्त्वपूर्ण भाग रहता है।

पंडित नेहरू एक चलते हुए ट्रैक्टर का निरीक्षण कर रहे हैं।

टाटा इस्पात

टाटा-आयर्न ऐण्ड स्टील कं० लि०
प्रधान बिक्री कार्यालय:
२३बी नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता

दाद, खुजली और हरेक मेलका चमड़ीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नक्कालों से सावधान

सपट लोशन

सपट एन्ड' को डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकैमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।
टर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

मुफ़्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ़्त करके अपना जीवन सुधार लें।

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो -) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

डोंगरे बालामृत से कमज़ोर बच्चे ताक़तवर बनते हैं।

'देशदूत' में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ धार्मिक ग्रन्थ

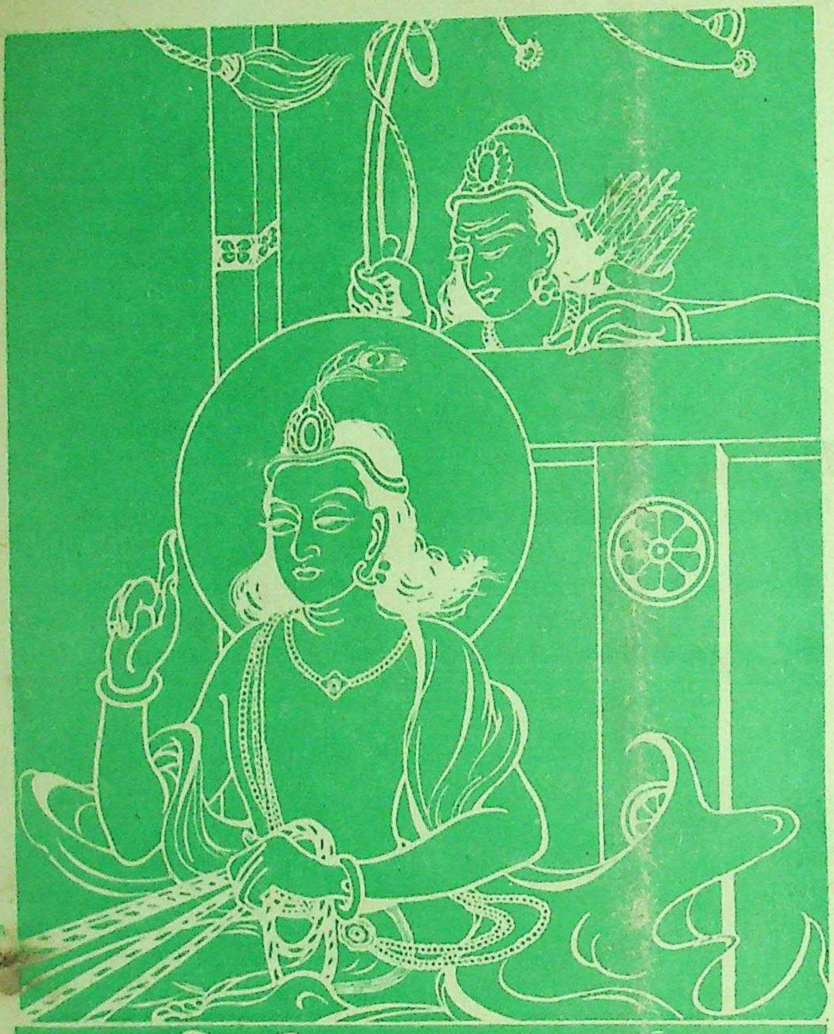

हिन्दी-महाभारत

महर्षि वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। बढ़िया पक्की जिल्द है।

इस ग्रंथरत्न का बड़ा आदर है। इसकी प्रति प्रत्येक भारतवासी के घर में होनी चाहिये। इसके पठन-पाठन से सभी का उपकार होता है। ग्रन्थ दस खण्डों में समाप्त हुआ है।

मूल्य ८०) अस्सी रुपये

महात्मा तुलसीदास जी का

राम-चरित-मानस

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्षों से अप्राप्य था। इसके टीकाकार राय बहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास हैं। यह हाल ही में छप कर तैयार हुआ है। बड़े अक्षरों में मूल ग्रन्थ है और छोटे अक्षरों में सुन्दर सरल भाषा में अर्थ है। बालक, बूढ़े और स्त्रियाँ सभी इस संस्करण से लाभ उठा सकते हैं। इस ग्रन्थ से घर की शोभा बढ़ती है।

ग्राहक शीघ्रता करें। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। बढ़िया मजबूत जिल्द [illegible] प्रति का मूल्य १२) रुपये

हिन्दी-महाभारत

आचार्य द्विवेदी जी ने इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सुन्दर सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सुबोध भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

वाल्मीकीय रामायण

(सचित्र) दो भाग

महर्षि वाल्मीकि का रामायण हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है। यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥) छः रुपये आठ आने प्रतिभाग।

प्राणायाम-विज्ञान और कला

पाश्चात्य मनीषी डाक्टर शोजावुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

आचार्य द्विवेदी जी ने इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मत का सार खींचकर रख दिया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह

इसमें देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। इसका मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ॥) आठ आने।

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रधान सम्पादक—एस० पी० बोस [के० मित्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लि०, १४ [illegible] रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित।]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...क मूल्य ७।)
...तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

...र, १६ जनवरी, १९४९ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 16th January, 1949

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

२ आना

प्रकाशक = इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी
इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया। कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुये प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किये बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविता-प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्या बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी क किया है कृतविद्य श्री सूर्यकान्त 'निराला' ने। "विषवृक्ष सभी के आँगन में लगा हुआ है। चेत्र विषवृक्ष में रोग, शोक आदि ना फल लगते हैं।" इस उपन्यास में विषवृ है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्थ अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही फिर सत्रह साल की उम्र में विध गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे कि उसके साथ विधवा-विवाह कर उपन्यास में वर्णित उलझनों में पाठक चकरा जाते हैं। भाषा कथानक सभी विचित्र है। मूल्य दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की बेटी उसका विवाह करने की चिन्ता में और बेटी तीनों घर से कलकत्ते चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में करने के लिए ठहर गये। वहाँ के अम्बिकाचरण पुरी ने नवदुर्गा को करने के लिए जो जाल रचा उसका पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता अन्त में महन्त का चपट चाकर अधर मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और का सिर' की कहावत के अनुसार जी से खासी रकम ऐंठकर और नव को विधि से पत्नी बनाकर चलता हुआ लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति में लाकर कराई है उससे पाठक वि और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० व्र वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने देहाती लुहार की अल्पवयस्क बे घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहा महराजगंज की रानी पृथाकुँवरि आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ की कृपा से इस लड़की ने विद्या फिर इसमें उन गुणों का विकास जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान है। इसने असहयोग आन्दोलन में स भाग लिया और अन्त में कलकत्ता नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लि विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँअर प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उप की घटनावली, विचारों का संघर्ष चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहने है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या १९] [रविवार, १६ जनवरी, १९४९

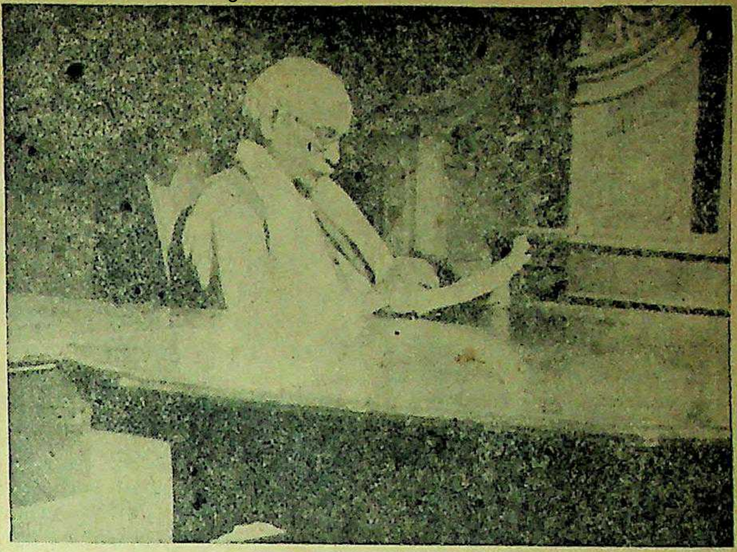

कांग्रेस प्रेसिडेंट डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया विधान-परिषद् की लाइब्रेरी में अपने भाषण को अंतिम रूप दे रहे हैं।

भारत के प्रथम भारतीय कमांडर-इन-चीफ़ लेफ्टिनेंट-जनरल के० एम० किरप्पा।

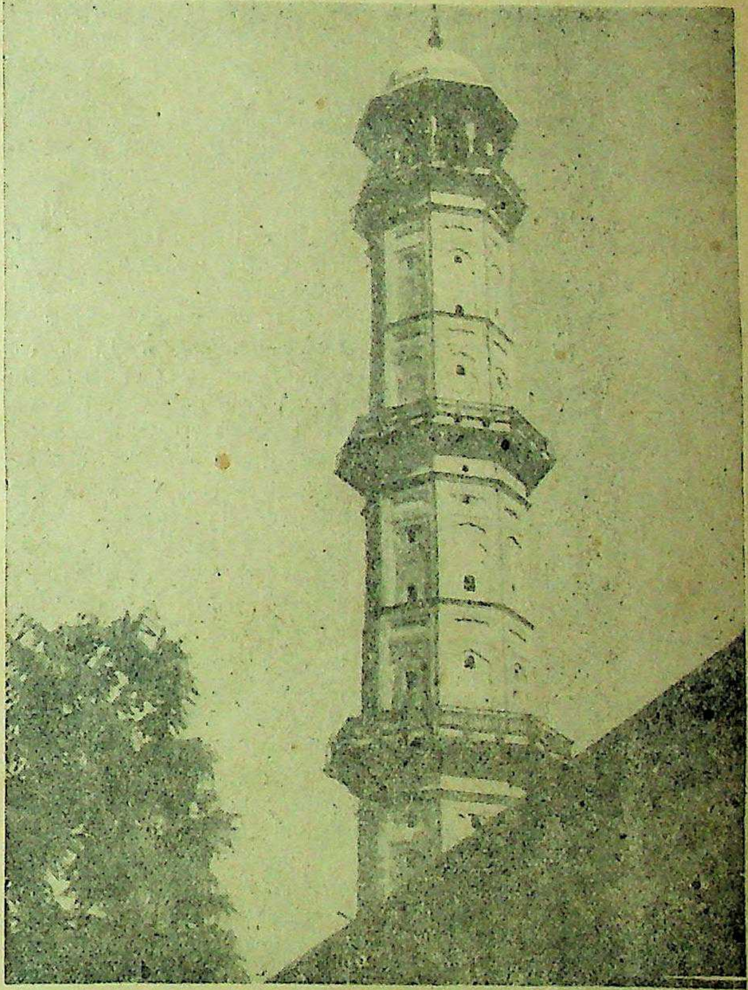

जयपुर शहर का सुप्रसिद्ध गुंबज, जो अपना गौरव प्रगट कर रहा है।

जयपुर कांग्रेस अधिवेशन में सम्मलित होने के बाद पंडित नेहरू दिल्ली की ओर।

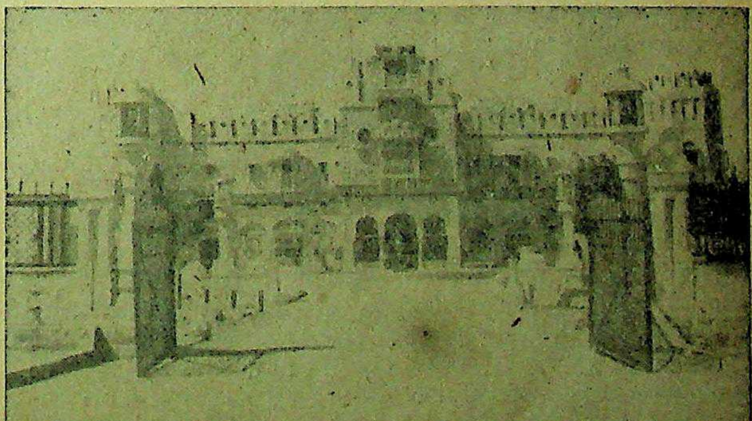

जयपुर विश्वविद्यालय के भवन का विहंग दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

पूँजी और श्रम का द्वन्द्व

मजदूरों तथा नौकरी पेशावालों को अपनी माँग पूरी करने के लिये 'हड़ताल' का सहारा लेना पड़ता है। यह कार्य एक प्रकार का विरोध प्रदर्शन का चिह्न है। सरकार तथा अन्य व्यापारिक संस्थाओं में काम करनेवाले जब किसी भी रूप में असंतुष्ट होते हैं तो वह 'हड़ताल' के रूप में अपनी मनोभावना का प्रदर्शन करते हैं। इस समय देश में हड़तालों का प्राबल्य है। रेलवे हड़ताल भी होनेवाली थी किन्तु अब संभवतः वह रुक गई है, संयुक्तप्रांत में ग्रामीण अध्यापकों की हड़ताल चल रही है। अध्यापकों की माँग है कि उनके वेतन में वृद्धि होना चाहिए। सरकार की ओर से आश्वासन अवश्य दिया गया है, किंतु आशा निराशा में परिणित हुई है। अन्याय व्यवसायिक संस्थाओं के मजदूरों की हड़ताल का रवैया भी आये दिन की एक प्रधान कार्य-पद्धति बन बैठी है।

भारत के लिये 'हड़ताल' कोई नई बात नहीं है, यह तो सर्वभौमिक स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। जब तक संसार में व्यापार, पूँजी, मजदूर तथा कमकर रहेंगे तब तक 'हड़ताल' की भी स्थिति दृढ़तर होती जायेगी जब तक पूँजीवाद और श्रमवाद का अस्तित्व कायम रहेगा तब तक असंतोष की भावना का स्थिर रहना अनिवार्य है। किसी भी राष्ट्र में जहाँ शासन में कुव्यवस्था होती है, मुद्रास्फीति पर नियंत्रण नहीं होता, श्रम और पूँजी का संतुलन नहीं होता, वस्तुओं के क्रय-विक्रय तथा यातायात में गड़बड़ी होती है साथ ही वस्तुओं के मूल्य पर नियंत्रण नहीं होता, चोरबाजार तथा भ्रष्टाचार की व्यापकता बढ़ती जाती है, वहाँ समाज में उत्पन्न होनेवाले असन्तोष, प्रतिक्रियावादी भावनाओं पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता। 'हड़ताल' उन्हीं भावनाओं के प्रदर्शन का नये युग के अनुसार एक सभ्य रूप है। ब्रिटिश शासनकाल में भी कांग्रेस स्वयं 'हड़ताल' ऐसे सभ्य कार्य को प्रोत्साहन देती रही है, आज कांग्रेस शासन का युग है, इसलिये समाजवादियों ने उस सभ्य कार्य को अपना लिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि शक्ति का विरोध सदा हुआ है। प्रजातंत्र की यही सबसे बड़ी देन है।

प्रजातंत्रवाद तथा तानाशाही में यही अंतर है। प्रजातंत्रवादी अमरीका तथा ब्रिटेन में भी 'हड़ताल' की व्यापकता कम नहीं है, किन्तु तानाशाही सोवियट रूस में हड़ताल की गंध का कहीं अनुभव भी नहीं होता। ऐसी दशा में कोई भी प्रजातंत्रवादी राष्ट्र न तो हड़ताल से घबराता है और न वहाँ पूँजीवाद ही समाप्त हो जाता है। हाँ, आवश्यकता होती है, चरित्र की, शांतिमय उपायों की, पारस्परिक सद्व्यवहार की तथा श्रम और पूँजी में एक संतुलन की।

भारतीय राष्ट्र भी इस समय संक्रांति काल से गुजर रहा है। अँगरेजों के चले जाने के बाद, भारत के विभाजन तथा पिछले महायुद्ध का जो व्यापक प्रभाव इस देश की समाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थिति पर पड़ी उसी का कुफल आज हमारे सामने है। राष्ट्र स्वतंत्र तो अवश्य हो गया किन्तु उसे युद्ध के पूर्व की स्थिति में लाना असंभव हो गया। कांग्रेस सरकार सम्पूर्ण राष्ट्र की राजनैतिक समस्या को सुलझावे अथवा यहाँ की आर्थिक समस्या को। पूँजीपतियों को देखे अथवा मजदूरों को, भविष्य के लिये अपनी शक्ति को और भी दृढ़ करे अथवा जनता में उत्पन्न होनेवाले नये संघर्ष का सामना करे?

इसी प्रकार अन्य समस्याएं हैं जिनसे राष्ट्र का आर्थिक ढाँचा निर्बल हो गया है। सरकार ऐसी नोचाचोथन में पड़ी है। वह राष्ट्र की मूल समस्याओं को सुलझाने तथा विदेशी राष्ट्रों में अपने सम्मान की रक्षा के लिए तेजी से कदम बढ़ाये या आंतरिक समस्याओं को निबटाये यही कारण है कि असन्तोष की व्यापकता बढ़ती जा रही है। सरकार चाहती अवश्य है कि गरीबी दूर हो, क्रांति से राष्ट्र की रक्षा हो, असंतोष की मात्रा कम हो किन्तु वह करे क्या? व्यापारी तथा व्यापार पर भी राष्ट्र के आर्थिक ह्रास का प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। तात्पर्य यह है कि पूँजी और श्रम दोनों के लिए यह युग खतरे का है। क्योंकि सरकार प्रजातन्त्रवादी है इसलिए उसे श्रम और पूँजी में संतुलन बनाये रखना अनिवार्य है। वह पूँजी को भी सुरक्षित रखना चाहती है और श्रम का वास्तविक मूल्य भी चुकाना चाहती है, इन्हीं दोनों भावनाओं तथा विचारधाराओं के बीच संघर्ष व्याप्त है। इसीलिये आवश्यक है कि इस प्रकार के संघर्ष की इतिश्री की जाये।

आवश्यकता है राष्ट्र को अधिक से अधिक व्यावसायिक बनाने की। यह देश कृषिप्रधान है। हजारों वर्गमील भूमि बंजर पड़ी है। खेती को अधिक से अधिक और व्यापक व्यवस्था होनी चाहिए। जिस राष्ट्र में ऊँचा तथा छोटा बड़ा व्यवसाय पनपता नहीं है, वहाँ की आर्थिक स्थिति सदा डाँवाडोल रहेगी। सरकार ने देश को अधिक उद्योग-धन्धे से पूर्ण बनाने के लिये अनेकानेक समितियों की स्थापना कर रखी है किन्तु कितनी समितियाँ अभी अधर में लटक रही हैं। तात्पर्य यह है कि कांग्रेस सरकार को ब्रिटिश नीति तथा परंपरा को कम से कम शासन संचालन में—त्याग करना चाहिए। प्रत्येक दिशा में सक्रिय कदम उठाना चाहिए। कागज की नाव बहुत दिन नहीं चलती। केवल आश्वासन के बल पर राष्ट्र की आर्थिक नाव का बेड़ा पार न लगेगा। आर्थिक ढाँचा यहाँ का इतना निर्बल हो गया है कि उसे शक्तिवान् बनाना सरकार का कर्तव्य है। अपनी शक्ति संचित रखना आवश्यक अवश्य है किन्तु जनता के असंतोष को दूर करना पुष्ट शासन का कर्तव्य भी है।

पूँजी और श्रम का संतुलन सरकार का कर्तव्य है। श्रम तथा श्रमिक पर शासक की कटुता तथा दमननीति की प्रतिक्रिया भयावह सिद्ध होगी। आज का श्रमिक तुरन्त दान महाकल्याण की कामना रखता है। वह तर्क तथा विवाद पसंद नहीं करता। कांग्रेस सरकार भी अपनी ब्रिटिश नीति तत्काल छोड़ दे और असंतोष के वास्तविक हल पारस्परिक सहयोग तथा समझौते की ओर कदम बढ़ाने की ओर अग्रसर हो। यह अवश्य है कि बिना पूँजी के राष्ट्र की औद्योगिक प्रवृत्ति विकास की ओर नहीं बढ़ सकती, किंतु उस पूँजी की वृद्धि के सहायकों की समस्या भी हल करना सरकार का तुरंत और प्रथम कर्तव्य है। हड़ताल तथा असंतोष को दूर करने में ही शासक तथा शासन को लोकप्रियता प्राप्त हो सकती है। प्रजातंत्रीय सरकार की प्रामाणिकता का यही आधार है।

रेखा चित्र

ब्रिगेडियर उस्मान

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

बीसवीं सदी में पुरुषत्व एक नाम रखकर प्रकट हुआ और वह नाम है—ब्रिगेडियर उस्मान। विधि जब मानवों की सृष्टि कर रहा था तब एक मानव में भूल से उसने पंचतत्त्वों में से अग्नि का तत्त्व अनुपात से अधिक भर दिया। जब विधि उस तत्त्व को कम करने लगा तब वह जीव बोला—मुझे इसी प्रकार संसार में जाने दीजिए। विधि बोला—पर इतनी आग लेकर अधिक दिन जिएगा कैसे? तेरी आग स्वयं तुझे जला देगी। जीव बोला—जीवन कम हो यह स्वीकार है पर आग कम हो यह स्वीकार नहीं। और मेरी कल्पना के ऐसे जीव का नाम संसार ने रखा—उस्मान। जिस दिन उस्मान का जन्म हुआ उस दिन हिमालय को अपना भार, सिंधु को अपना विस्तार और आकाश को अपना प्रसार कम लगा। उस रात तारक-दीप अधिक जले। विश्व में प्रकाश अधिक ठहरा। काश्मीर की घाटियों में ऋतु ने उत्सव मनाया।

उस्मान का त्याग? उसके त्याग के सम्मुख सरिताओं का जल-दान, तरुओं का फल-दान, फूलों का सुरभि-दान और चन्द्रमा का ज्योति-दान लज्जित हुआ। त्याग अपनी महिमा से स्वयं चमत्कृत हो गया। उसने देश के चरणों पर चुपचाप चढ़ा दी एक सुखी गृह की कल्पना, एक सुन्दर पत्नी की कल्पना, एक सुन्दर शिशु की कल्पना। उसने देश के चरणों पर चुपचाप चढ़ा दी एक गृहस्थी, एक दुनिया, एक आशा-भरी आयु। वह गृहस्थ न बना, पति न बना, पिता न बना, कलाकार न बना। वह सिपाही बना। उसने गोलियों की आंधी बौछार में छाती खोली और उसे देख मौत ने कहा—यह जिन्दगी है।

वह मुसलमान न था, हिन्दू न था, सिक्ख न था, ईसाई न था। उसके धर्म को धर्म विशेष के बंधन में बाँधना उसे विधर्मी बनाना है। वह मनुष्य था—पूर्ण मनुष्य। उसे पैगम्बर या देवता भी कहो जिससे ये दोनों शब्द और भी पवित्र बन जावें।

काश्मीर की ठंडी घाटियों के पीछे दिन भर का थका सूरज डूब चुका था। निशा के श्याम-जाल में दुनिया फँसती जा रही थी। आसमान के रंग-कलियों और फूलों में समा चुके थे। काश्मीर के स्वर्ग की रक्षा करनेवाले सिपाही तम्बुओं में पहुँच चुके थे। जख्म धुले, पट्टियाँ बँधी, बिखरे बालों में कंघियाँ हुईं, अँगीठियाँ दहकीं, खाना हुआ, कुशलता और प्यार की चिट्ठियाँ लिखी गईं, भजन हुए, गीत हुए, चाँद निकला, घाटियों ने रेशमी कपड़े पहने, लता थिरकी, फूल ने ताल दी। मरण की अध्यक्षता में जीवन का उत्सव प्रारम्भ हुआ।

चाँद छिप चला, हिम-छटा संकोच में थी, सुगंध ठिठक गई। उसने इन्हें देखा तक नहीं। वह तो भौंहें चढ़ाए चिता-मग्न, कुहनी के सहारे हथेली पर माथा टिकाए, विचारलीन है। वह फटे तम्बू में काठ की कड़ी टेबिल के सामने स्टूल पर बैठा, लैम्प की धुँधली रोशनी में कल के समर की बात सोचता है। चाँद कब छिपा उसने देखा नहीं। रात कितनी भीगी उसे पता नहीं। कब बादल घिर आए, कब अंधकार छाया, कब तूफान उठा, उसे यह भी ज्ञात नहीं। उसकी आँखों में तो कल का रक्त है। जीवन की समस्त सुकुमारताएँ उसके आसपास आहत पड़ी हैं।

उससे दूर—बहुत दूर, देश में रेडियो बजे। उसके देशवासियों ने रेडियो पर उसकी चिता सुनी। सारे देश में सराहना और आशीर्वाद का ज्वार उठा और फिर विश्व-वेणु सदा की तरह बजने लगी। उससे दूर—बहुत दूर, देश में उसके गाँव में, उसके बचपन का साथी दूल्हा बना, शहनाई बजी, बारात सजी, आतशबाजी छूटी, नकली बम का गोला फूटा। ओह!...यहाँ सचमुच गोला फूटा। उस्मान ने फटे हुए तम्बू में से बाहर फैले हुए अंधकार को देखा, दुश्मन के निर्लज्ज प्रहार को देखा। वह आवेश से भरा तम्बू के द्वार पर आया। तूफान के घिरते हुए अंधकार में छिपती हुई मौत भी चुपचाप द्वार पर आकर खड़ी हो गई। उस्मान ने उसे कहाँ देखा अंधकार के सागर में कूदने के लिए। उसने भुजाएँ फैला दीं। दूर गाँव में बचपन के साथी के हाथ में गाँव की एक सुंदर लड़की ने अपना कोमल हाथ दे दिया—पाणिग्रहण। यहाँ द्वार पर जो मुँह छिपाए खड़ी थी उसने सुअवसर पाया। उन फैली हुई भुजाओं में श्यामा मृत्यु ने अपनी बाँहें उलझा दीं। उस्मान ने तावीज की तरह तूफान को अपनी भुजाओं में बाँध लिया और इस तरह आगे बढ़ा कि तूफान शरमा गया। वह इस तरह आगे बढ़ा कि एक-दो बार मृत्यु डरी कि कहीं वह जिन्दगी तो नहीं! बर्फ के कण गिर रहे थे। उसके बाल बिखर रहे थे। बिखरे श्याम केशों में श्वेत हिम-कण! मृत्यु भी मुग्ध हो गई। खन्दकें गरजीं, गोलियाँ सनसनाईं, संगीनें चमकीं। तूफान ने जोर पकड़ा। दूर गाँव में बचपन के साथी की बारात लौटी—मधुयामिनी! उस्मान चल रहा था, दौड़ रहा था, हाँफ रहा था, गिर रहा था, उठ रहा था, बढ़ रहा था, आ रहा था, जा रहा था, दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे, चक्र की भाँति अविराम गति से घूम रहा था। एक उन्माद, एक आवेश, एक उत्सर्ग, एक बिजली, एक ज्वाला, एक जलन, एक............वह गोला फटा............उस्मान कहाँ हो! कहाँ हो! धूल—गर्द—धुन्ध! कोई स्वर नहीं, कोई प्रत्युत्तर नहीं......मौत......मधुयामिनी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय समाजवादी दल

क्या भविष्य में राजनैतिक दृष्टि से कांग्रेस और समाजवादी दल संयुक्त मोर्चा स्थापित करेंगे ?

लेखक, डाक्टर एन० बी० राजकुमार

(मन्त्री, वैदेशिक विभाग, अ० भा० कांग्रेस कमेटी)

भारतीय समाजवादी दल के नेता
श्री जयप्रकाश नारायण।

भारतीय समाजवादी दल के नेता
आचार्य नरेन्द्रदेव।

कांग्रेस के अतिरिक्त भारत में जितने राजनैतिक, साम्प्रदायिक तथा गैर साम्प्रदायिक दल हैं, उनमें से समाजवादी दल का प्रमुख स्थान है। यह दल पहले कांग्रेस के साथ था, किन्तु अब उससे पृथक् है। इस लेख में डाक्टर राजकुमार ने समाजवादी दल पर एक विहंगम प्रकाश डाला है, जो जानकारी से पूर्ण तथा पठनीय है। आपने अभी हाल में भारतीय तथा विदेशी पार्टियों के संबंध में एक पुस्तक भी प्रकाशित की है, जो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी से प्रकाशित हुई है।

भारतीय कांग्रेस भारतीय स्वाधीनता संग्राम में कन्धा से कन्धा भिड़ाकर भाग लेनेवाले विभिन्न राजनैतिक दलों का एक संघ है। इन सबमें महत्त्वपूर्ण समाजवादी हैं जिन्होंने हाल में ही कांग्रेस से सम्बन्ध-विच्छेद किया है। उन्होंने अपना नाम भारतीय समाजवादी दल रख अपना द्वार गैर कांग्रेसियों के लिये भी खोल दिया। परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि आज भी इसका संगठन एवं संचालन भूतपूर्व कांग्रेसी ही कर रहे हैं।

कांग्रेस में समाजवादी दल का सर्वप्रथम सूत्रपात १९३४ में नवयुवक कांग्रेसियों द्वारा हुआ जो समाजवादी व्यवस्था में विश्वास रखते थे। इनका विश्वास था कि महात्मा गांधी की अहिंसा एवं सत्याग्रह से हमारे उद्देश्य की सिद्धि नहीं हो सकती। इसलिये भारतीय स्वाधीनता-संग्राम में कोई और साधन व्यवहार में लाया जाय जिससे हमें सफलता प्राप्त हो सके। ये देश की आर्थिक नीति पर पर्याप्त बल न देने की वजह से ही कांग्रेसी नेतृत्व से असन्तुष्ट थे। इन सब कारणों के अतिरिक्त ये कांग्रेस के सिद्धान्तों में समाजवादी सिद्धान्त को घुसाना चाहते थे।

समाजवादी दल का स्वरूपनिर्माण नासिक जेल में हुआ। जहाँ जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्द्धन, अशोक मेहता तथा अन्य संस्थापक बन्द थे। जहाँ तहाँ समाजवादी दल गठित हो गये और सार्वजनिक कार्य करने लगे। मई १९३४ में इसका अखिल भारतीय आधार पर संगठन हुआ और जयप्रकाश बाबू इसके संगठन-मंत्री नियुक्त किये गये। इसका कार्य-क्षेत्र कांग्रेस के भीतर ही सीमित रखा गया। पार्टी के संस्थापकों ने यह अनुभव किया कि कांग्रेस के साथ काम करने से एक जनप्रिय प्लेटफार्म मिल जायेगा और समाजवादी उद्देश्य सुगमता से फैल सकेगा। उनकी अभिलाषा कांग्रेस को जन समुदाय की संस्था बनाने और उचित समय के भीतर कांग्रेस को समाजवादी सिद्धांत पर लाने की थी। इन्होंने अपने कार्यों से कांग्रेस की नीति एवं कार्यों पर प्रभाव डालना प्रारम्भ किया। और कांग्रेस संगठन के वाम पक्षीय दल में बने रहे।

कांग्रेस समाजवादी दल की शाखायें भारत के विभिन्न प्रान्तों में खुल गईं और दल-कार्यक्रम बनाने के लिये इसके नेताओं का सम्मेलन प्रतिवर्ष होने लगे। प्रारम्भ में इन्होंने भारत की श्रमिक समस्याओं की ओर ध्यान दिया। समाजवादियों ने अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की

सहायता की ओर इसके साथ पूर्ण सहयोग किया। एक थोड़े समय में ही इन्होंने ट्रेड यूनियन पर अधिकार कर लिया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि ट्रेड यूनियन कांग्रेस का अध्यक्ष समाजवादी दल द्वारा नामजद व्यक्ति ही होता है। इसके बाद इन्होंने किसानों की समस्याओं को लिया। इस क्षेत्र में इन्होंने किसान का संगठन किया। कुछ समय बाद विद्यार्थी संगठन भी समाजवाद से प्रभावित हुये और इस प्रकार समाजवादियों ने कांग्रेस के भीतर भी एक वर्ग बना लिया जो समाजवादी सिद्धान्त एवं आदर्शों को मानता था। इसकी सदस्यता कांग्रेसियों में भी नियमित कार्यकर्त्ताओं तक सीमित थी। इस दल का कांग्रेस महा-समिति एवं कार्य-समिति पर काफी प्रभाव पड़ा।

प्रारम्भ में समाजवादी दल ने लाचार होकर कांग्रेस की अधिकृत नीति की आलोचना की, लेकिन १९३५ के इण्डिया ऐक्ट के लगने एवं कांग्रेस द्वारा मन्त्रिमण्डलों में प्रवेश पर इन्होंने अनुभव किया कि कांग्रेस एक विधानवादी संस्था होती जा रही है। इस प्रकार कांग्रेस एवं समाजवादी दल के बीच मतभेद की खाई चौड़ी होती गई। समाजवादियों ने मन्त्रिमण्डल के प्रवेश का घोर विरोध किया। १९४२ के आन्दोलन में समस्त वाम एवं दक्षिणी पक्षी नेता जेलों में बन्द कर दिये गये। दल के प्रमुख सदस्य छिपकर 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय एवं प्रमुख भाग लिया। सरकार द्वारा गैर कानूनी घोषित किये जाने पर दल गुप्तरूप से कार्य करने लगा। जब कांग्रेसी सरकार ने १९४६ में प्रतिबन्ध हटाया, उस समय समाजवादियों ने कांग्रेस के साथ एक वर्ग के तौर पर कार्य करने में पूर्ण असमर्थता अनुभव की और कांग्रेस से अलग हो अपना एक अलग संगठन किया। १९४२ से ४५ तक नौकरशाही के गुलाम समाजवादियों के खिलाफ थे और अन्य अपराधियों की तरह इनका पीछा करते थे। पर अत्याचारों एवं कष्टों के सहन की क्षमता ने इन्हें बहुत अधिक जनप्रिय बना दिया। गत १२ वर्षों में दल प्रतिष्ठा एवं सदस्यता में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। मार्च १९४७ में समाजवादी दल का एक सम्मेलन कानपुर में हुआ जिसमें नीति-सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण निर्णय किये गये।

* * *

समाजवादी दल के इतिहास में कानपुर सम्मेलन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। देश के राजनैतिक जीवन पर प्रभाव डालनेवाले अनेक महत्त्वपूर्ण फैसले किये गये। दल के नाम से 'कांग्रेस' शब्द हटाकर सिर्फ 'समाजवादी दल' रखा गया। इसने अनुभव किया कि कांग्रेस से एकता की अपेक्षा समाजवाद की बुनियाद डालना अधिक आवश्यक है। यह पितृ-संगठन से सम्बन्ध-विच्छेद की दशा में तत्परता का द्योतक है।

कानपुर सम्मेलन ने दल के नये उद्देश्य निर्धारित करते हुये जनतन्त्रीय समाजवाद एवं सामयिक साम्यवाद में अच्छा भेद किया है। भारत में जनतन्त्रीय समाजवाद के निर्माण के साधनों पर भी विचार किया गया है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रजातन्त्रीय साधनों के अभाव में समाजवादी दल ने क्रान्तिकारी संग्राम अथवा कुछ समय के लिए तानाशाही जैसे साधनों को काम में लाने की छूट दी जिससे भारत जैसे नये राष्ट्र में प्रजातन्त्र सुरक्षित हो सके। सम्मेलन के प्रस्ताव में कहा गया है कि हमारी धारणाओं का प्रत्येक व्यक्ति अर्थात् श्रमिक समाज में स्वतन्त्र है। सरकार किसी भी नागरिक को इन अधिकारों से वञ्चित नहीं कर सकती। ट्रेड यूनियन एक स्वतन्त्र संस्था है आवश्यकता पड़ने पर हड़ताल जैसे साधनों को भी काम में ला सकती है। इस दृष्टि से श्रमिकों में कार्य करनेवाले समस्त संगठन स्वतन्त्र हैं और अपनी नीति और कार्यक्रम स्वतन्त्रतापूर्वक बना सकते हैं। समाचार-पत्र, रेडियो जैसे प्रचार के साधनों पर सरकार का एकाधिपत्य नहीं होगा। सामूहिक उत्पादन, श्रमिस्थिति का निर्णय, मूल्य और राष्ट्रीय उत्पादन के 'विभाजन' आदि आर्थिक शक्ति सरकार के पास न होकर समाज की होंगी और इनकी व्यवस्था में ट्रेडयूनियन, सहकारी शाख जैसी श्रमिकों एवं कृषकों की संस्थाएँ भाग लेंगी।

कानपुर सम्मेलन के पश्चात् भारतीय राजनीति में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। भारत की राजनीतिक स्थिति एकदम बदल गई, शासन शक्ति अँगरेजों के हाथों से जनता के हाथों में आ गई, इससे उक्त आदर्श पर समाजवादियों को कार्य करने उपयुक्त अवसर प्राप्त हो गया।

समाजवादी नीति के रूप में भी अहिंसा को नहीं स्वीकार करते। उनकी दृष्टि में परिस्थितियों के अनुसार संगठित हिंसा भी काम में लाना उचित है। उनका विश्वास है कि परिस्थितियों के अनुसार सब कुछ काम में लाया जा सकता है। यहीं पर कांग्रेस एवं समाजवादियों में मौलिक मतभेद है।

संगठन की दृष्टि से समाजवादी दल को बहुत अधिक प्रगति करनी पड़ेगी। दल के संगठन में बहुत अधिक सुधार की आवश्यकता है। दल का ढाँचा निम्न प्रकार है :—

समाजवाद एवं समाजवादी दल के विस्तृत सिद्धान्तों एवं आदर्शों में विश्वास रखनेवाला प्रत्येक १८वर्षीय युवक इसकी सदस्यता के लिये प्रार्थना पत्र भेज सकता है। इसके लिए कुछ मासिक सदस्यता शुल्क भी देना आवश्यक है। सदस्य के लिए यह आवश्यक है कि वह जातीय बन्धन में न रखे और प्रति सप्ताह कम से कम १४ घण्टे दल के कार्यों में लगावे। प्रार्थना-पत्र दल के सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया जाय एवं उस पर एक सदस्य का समर्थन अत्यन्त आवश्यक है। उन्हें दल की कार्यकारिणी ही परीक्षा-काल के पश्चात् सन्तोष होने पर सदस्य बना सकती है।

सदस्यों का वर्ष में एक बार वार्षिक सम्मेलन होता है जिसमें कार्यकारिणी की वार्षिक रिपोर्ट विचार हिसाब की जाँच, नई कार्यकारिणी का चुनाव और प्रस्तुत प्रस्तावों पर विचार-विमर्श के पश्चात् मत लिये जाते हैं;

समाजवादी दल की जनरल कौंसिल की बैठक साल में तीन या चार बार होती है। इसमें कार्यकारिणी के रिक्त स्थानों की पूर्ति एव कार्य कारिणी द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों पर विचार होता है।

कार्यकारिणी में वार्षिक साधारण अधिवेशन द्वारा निर्वाचित १५ सदस्य होते हैं। यह दल के उचित एवं नियमित गति-विधि के लिये उत्तरदायी है, और इसे दल के सदस्यों के सुपुर्द कार्यों की जाँच निरीक्षण तथा निर्देश आदि देने का सीधा अधिकार प्राप्त है। कार्यकारिणी के चार सदस्यों अथवा दल के ५७ सदस्यों की प्रार्थना पर इसकी विशेष बैठक ४८ घंटे की सूचना पर बुलाई जा सकती है। यह मंत्री एवं कोषाध्यक्ष का चुनाव करती है। यदि कार्य-समिति के किसी सदस्यों के खिलाफ ५० सदस्यों से हस्ताक्षर सहित वापिसी की सूचना मंत्री को मिलती है तो वह इसे जनरल कौंसिल अग्रिम बैठक के विचारणीय विषयों में रखता है।

कार्यकारिणी जनरल कौंसिल, साधारण सभा, एवं विशेष अधिवेशनों के अध्यक्ष की नामजदगी करती है।

विधान में परिवर्तन कार्यकारिणी द्वारा अथवा दल के सदस्यों के सुझाव पर हो सकता है और इस पर विचार करने के लिये विशेषतः आयोजित साधारण सभा विचार कर मत-गणना करेगी।

शेष पृष्ठ १५ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तलाक' समाज के लिये घातक

पति और पत्नी दोनों को दूसरे विवाह के लिये समानाधिकार मिलना चाहिए

लेखिका, डाक्टर किरनकुमारी गुप्त, एम० ए०, पी० एच-डी०

तलाक समाज के लिये घातक है, तलाक की जगह यदि पति और पत्नी दोनों को आवश्यकता पड़ने पर दूसरे विवाह के लिये समानाधिकार प्राप्त हो तो यह समाज के लिये अधिक कल्याणकारी है, इस विचारधारा की पुष्टि डाक्टर किरनकुमारी गुप्त ने इस लेख में बड़ी योग्यतापूर्वक किया है। डाक्टर किरनकुमारी गुप्त हिन्दी-संसार में प्रथम महिला हैं जिन्हें आगरा विश्वविद्यालय ने डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

भारत की स्वास्थ्य-मंत्रिणी राजकुमारी अमृतकौर।

आधुनिक काल में तलाक का प्रश्न शिक्षित और अशिक्षित प्रत्येक व्यक्ति के लिये अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण हो गया है जहाँ भी दो मनुष्यों को कुछ अवकाश मिलता है वे इस प्रश्न को लेकर वाद-विवाद पर उतारू हो जाते हैं। आज का हमारा जन-समाज दो भागों में विभक्त है—एक तो वह जो आदर्शवादी है और तलाक का विरोधी है और दूसरा वह जो विज्ञान का भक्त है, प्राकृतिक सत्य का पुजारी है, जो केवल मस्तिष्क और शरीर का सम्बन्ध मानता है और तलाक का पक्षपाती है।

आदर्शवादी व्यक्ति हिन्दू-धर्म की दुहाई देता है; वह कुरुक्षेत्र के रणस्थल में ज्ञानोपदेश देनेवाले श्रीकृष्ण की भाँति कानों पर हाथ रखकर गंभीर गर्जन करता है—'तलाक से स्त्रियाँ दुराचारिणी हो जायँगी, समाज में पाप-वृद्धि होगी और हमारा देश, हमारी संस्कृति रसातल को चली जायगी।'

विज्ञानवादी केवल प्राकृतिक नियम और शारीरिक आवश्यकता को ही महत्त्व देता है, वह आदर्श का पल्ला पकड़कर प्रकृति के नियमों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहता और अपने इस विचार को मानव की प्रगति का साधक मानता है, आदर्शवाद उसकी प्रगति का बाधक है।

मुझे तो आदर्शवादी और विज्ञान के भक्त दोनों की ही उक्तियाँ अर्थशून्य-सी प्रतीत होती हैं। आर्शवादी एक चट्टान पर चढ़ने के लिये इङ्गित करता है जहाँ प्रतिक्षण फिसल पड़ने का भय लगा रहता है—विज्ञानवादी मरुस्थल में लाकर खड़ा कर देता है जहाँ कभी हृदय की प्यास नहीं बुझती। क्या दोनों की उक्तियों के समन्वय से ऐसा समतल मार्ग नहीं निर्मित किया जा सकता जहाँ न तो निराशा हो और न मृग-मरीचिका में भटककर चिर अशांतिमय जीवन बिताना पड़े।

अब हमें तलाक के विषय में विचार करना है। क्या तलाक हमारे समाज के लिये कल्याणकारी है? समाज—पुरुष और स्त्री से समन्वित है। तो क्या तलाक से नर और नारी दोनों का कल्याण होगा? यह मैं मानती हूँ कि तलाक पुरुष के लिये बहुत अधिक कल्याणकारी है। पुरुष नवीनता का प्रेमी है। तलाक के अनन्तर वह चिर-नवीन लोक में स्वतन्त्रता-पूर्वक विहार कर सकेगा। पर क्या पुरुष के लिये इस नियम की नितान्त आवश्यकता है? पुरुष के जीवन में इस प्रकार के कानून के न रहने पर भी किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। हमारे समाज का पुरुष मुक्त है, वह एक पत्नी के जीवित रहते दूसरा विवाह कर सकता है। पत्नी के वंध्या होने, रोगिणी रहने और झगड़ालू होने पर वह तुरन्त नई वह ले आता है। पत्नी में किसी प्रकार की त्रुटि न रहने पर भी आज का अधिकांशतः पुरुष-समाज एक-पत्नी-व्रत नहीं होता, कहीं वह वेश्याओं के हाव-भावों और नूपुरों की झंकारों में अपने हृदय के तार मिला देता है, कहीं दूसरे घर में रखैल रखकर अपनी पत्नी की भर्त्सना करता रहता है और कहीं चपल-बालिकाओं के साथ प्रेमाभिनय करने में व्यस्त रहता है। उसकी पत्नी 'एक भरोसो एक बल एक आस विश्वास' के साथ घर की चहारदीवारी में बैठी रह जाती है। जब पुरुष न्याय से मुक्त है, कानून से मुक्त है, स्वतंत्र है, स्वच्छंद है तो फिर उसके लिये तलाक की क्या आवश्यकता है? पुरुष तलाक के लिये इतना लालायित क्यों है? वह प्रातःकाल से अर्ध रात्रि तक मनमाना विहार कर सकता है—नारी उसके मनोरंजन में बाधक नहीं होती; फिर उसके लिये तलाक के कानून की आवश्यकता ही क्या है? कानून केवल निर्बल और निःसहाय के लिये होता है। कानून ने अब तक असहाय नारी पर अत्याचार करनेवाले कितने नृशंस पुरुषों को दंड दिया है?

हमारे समाज का दूसरा अङ्ग नारी है। नारी-समाज के लिये तलाक की प्रथा अत्यन्त घातक है। हमारा अधिकांशतः नारी समाज अशिक्षित है। इस प्रकार की नारी की दिनचर्या है—गृह-कार्य कर लेना और पति की डाँट-फटकार सुन लेना। उसका अपना निजी अस्तित्व कुछ भी नहीं है। वह पुरुष की आज्ञाकारिणी सेविका है, उसके हाथों की कठपुतली है। वह पति-भक्ति के पुरातन आदर्श को रखकर आत्म-संतुष्टि का अनुभव करती है, वह अकेली कहीं जा नहीं सकती, घर से निकलने में उसको डर लगता है—इस प्रकार की नारी यदि पति से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेती है तब भी उसके जीवन-निर्वाह में कोई अन्तर नहीं आता। पति से अलग होकर उसके लिये दो मार्ग रह जाते हैं या तो वह माँ के घर जीवन-यापन करे अथवा दूसरा विवाह करे। हमारे परिवारों में संकुचितता की कमी नहीं है। बाहर लम्बे-चौड़े व्याख्यान देने-वाले समाजसुधारकों को मैंने अपनी विधवा बहनों का अपमान करते देखा है। भाभियों को ताना देते सुना है। अतः माँ के घर रहने में भी उसे भाई-भावज की झिड़कियाँ सुननी ही पड़ेंगी। यदि वह दूसरा विवाह करती है तो क्या यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दूसरा पति उसका जीवन सुखमय बनाएगा? वह तो जिस किसी भी पुरुष के घर जायेगी उसको दासता की ही शृंखलाओं में बद्ध होना पड़ेगा, इसके अतिरिक्त अभी हमारे विचार इतने संकीर्ण हैं कि कोई भी नवयुवक इस प्रकार की नारी से विवाह नहीं करेगा जब कुमारी कन्याओं के लिये ही नवयुवकों का नीलाम होता है तो इस प्रकार पति से सम्बन्ध-विच्छेद करनेवाली नारी अपार धनराशि कहाँ से लायेगी। ऐसी अवस्था में उसका विवाह किसी अधेड़ अथवा वृद्ध से ही होगा और कुछ वर्षों के अनन्तर उसको वैधव्य की चिता में भस्मीभूत होकर उसी प्रकार का अपमानपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा।

नारी-समाज के अल्पांश अर्थात् शिक्षित वर्ग के लिये तलाक उपयोगी हो सकता है। शिक्षित नारी निर्भय होकर बाहर आ-जा सकती है—आर्थिक दृष्टि से भी वह स्वतन्त्र है एक पति से सम्बन्ध विच्छेद करने के अनन्तर सम्भव है दूसरे पति के साथ उसका जीवन सुखी हो। यही कारण है कि अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की शिक्षित महिलाओं के मत से तलाक के पक्ष में प्रस्ताव पास हो गया है। किन्तु क्या व्यक्ति के लिये समष्टि का बलिदान किया जा सकता है? दो प्रतिशत शिक्षित महिलाओं के हित के लिये ९८ प्रतिशत अशिक्षिता नारियों की अवहेलना किस प्रकार की जा सकती है। गिनी-चुनी शिक्षिता नारियों के सुखी जीवन अगणित असहाय अबलाओं के करुण-क्रंदन को अनसुना करके प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकेंगे।

प्रत्येक कार्य की सफलता देश, काल और परिस्थिति पर निर्भर होती है। आज-कल देश में नारी-जाति की अवस्था तलाक के अनुकूल नहीं है, पहले नारी को अपने

सोवियट रूस की भारतीय राजदूत श्री विजयलक्ष्मी पंडित।

पाँवों पर खड़ा होना है तब उसे पुरु[ष से] अपने अधिकारों की माँग करनी है। [पाँवों] पर खड़े होने से मेरा तात्पर्य केवल आ[र्थिक] रूप में ही नहीं है, वरन् नैतिक रूप में भी है। नैतिकता नारी का सबसे बड़ा [हथि]यार है। इस नैतिक बल पर कितनी विधवा बहनों ने आटा पीसकर [अपने] दुधमुँहे बालकों का पालन करते [हुए] गुदड़ी में से लाल प्रकट किये हैं। [नैतिक] बल के सम्मुख विश्व की समस्त श[क्तियाँ] परास्त हो जाती हैं। अपने चार[ित्रिक] बल से सावित्री ने यम पर विजय प्रा[प्त की] थी, अनसूया ने त्रिदेवों को गोद [में] खिलाया था और सीता ने पृथ्वी की गो[द में] आश्रय पाकर अपने आत्म-सम्मान की [रक्षा] की थी। खेद है कि आजकल की शि[क्षित] नारी में अशिक्षित नारी से भी अ[धिक] नैतिकता का अभाव है, पुरुष के श[ासन] से वह भी मुक्त नहीं है। वह पाउ[डर] लिपस्टिक से स्वयं को सुसज्जित [करती] है—किसलिये?—केवल पुरुष को आ[क]र्षित करने के लिये। वह अपने [शारीरिक] सौंदर्य को बनाये रखने में अधि[क से] अधिक सतर्क रहती है। इस प्रकार आज की शिक्षित नारी भी पुरु[ष के] विलास की सामग्री नहीं बन गई है!

आजकल के नर-नारी उ[स] दिवस की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब [...]

शेष पेज १६ पर दे[खिये]

सफेद बाल काला

हमारे आयुर्वेदिक "कामिनी" तैल के इस्तेमाल से बाल पकना [बन्द,] पका बाल जड़ से काला होकर का[ला] उगता है। यह तैल आँखों की [रोशनी] को बढ़ाता, शिरदर्द को आराम [देता,] दिमागी काम करनेवालों के लिए अ[मृत] है और स्मरण-शक्ति बढ़ाने में अ[द्वितीय] है। मूल्य कम पके के लिए २॥) ज्यादा के लिए ३॥)। सब प्रकार के ५)गुणहीन होने पर कीमत वापस की [जायगी।]

श्वेद कुष्ट की दवा

इस दवा के व्यवहार से सभी का सफेद कुष्ट जड़ से आराम हो[ता] है अगर आप तमाम की दवा [करके] निराश हो चुके हों तो एक बार आजमाकर इस रोग से मुक्ति [पाइए।] मूल्य ४)।

हिमालय आयुर्वेदिक फारमेसी
(दे) पो० कटनी सी० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या काश्मीर-विभाजन होगा ?

युद्ध-बन्दी के आदेश के बाद किस प्रकार की संभावना है ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

काश्मीर में युद्ध बन्दी का आदेश घोषित कर दिया गया है । हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान की फौजी कार्यवाहियाँ बंद हो गई हैं । इसके बाद काश्मीर की समस्या किस प्रकार हल की जायेगी इस ओर प्रत्येक राजनीतिज्ञ की दृष्टि लगी हुई है । इस लेख में लेखक ने इसी समस्या पर प्रकाश डाला है जो सामयिक और पठनीय है ।

काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला ।

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मियाँ लियाकत अली ।

गत प्रथम जनवरी को भारत-सरकार प्रधान मंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू संध्या ५ बजे इलाहाबाद में लगभग ... लाख व्यक्तियों की एक सार्वजनिक सभा में दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ कीं । पण्डित नेहरू ने लगभग १०० मिनट तक भाषण दिए । इस भाषण में उन्होंने देश की वर्तमान अनेक राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं का स्पर्श किया । इन समस्याओं के सार पर प्रकाश डालने का उनका ढंग अत्यन्त हृदयग्राही था और एक विदेशी पत्रकार के शब्दों में "वह (नेहरू) स्वतंत्र भारत के नवजात शिशु को सांसारिक जीवन का पाठ पढ़ा रहे थे ।" नेहरू जी ने यह स्वीकार किया कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से अब तक किसी भी प्रकार देशवासियों को वह सुख नहीं मिल पाया है जिसकी कल्पना हम लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान में की थी । उन्होंने मुद्रास्फीति की भी चर्चा की और यह माना कि महँगाई के कारण अल्प वेतनभोगी मध्यवर्गीय परिवारों का कष्ट बहुत बढ़ गया है, किन्तु साथ ही उन्होंने हड़ताल के मार्ग को भी गलत बतलाया, क्योंकि इससे महँगाई दूर करने के मूल उपाय उत्पादन-वृद्धि को चोट लगती है । हिन्द-एशिया की चर्चा करने के बाद उन्होंने घोषणा की कि निकट भविष्य में ही दिल्ली में एक एशियाई देशों का सम्मेलन होने जा रहा है जिसमें हिन्द-एशिया के प्रश्न पर विचार किया जायगा और डच-आक्रमण के प्रतिरोध की एक सामूहिक कार्रवाई पर विचार किया जायगा ।

पण्डित नेहरू ने लगभग १० मिनट में यह बतलाया कि गत २ अक्टूबर, सन् १९४७ के प्रारंभ में किस प्रकार काश्मीर शत्रु उसमें प्रविष्ट हो गए थे और भारतीय सेना ने वहाँ पहुँचकर किस प्रकार उस सुन्दर घाटी की रक्षा की । इस सिलसिले में उन्होंने बतलाया कि भारत-सरकार ने यह मामला सुरक्षा-परिषद् के सामने भी रखा था, किन्तु सुरक्षा-परिषद् से भारत को अत्यन्त निराशा हुई, यद्यपि भारत की संयुक्तराष्ट्र-संघ की उपयोगिता में आस्था तनिक भी कम नहीं हुई है । काश्मीर-कमीशन भारत आया । उसने भी ३-४ मास तक पाकिस्तान और भारत-सरकार के प्रतिनिधियों से अनेक बार मुलाकातें कीं और काश्मीर के मोर्चों का निरीक्षण किया । इस निरीक्षण के परिणामस्वरूप एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात खुल गई ।

एक झूठा मामला

सर जफरुल्ला खाँ, जो पाकिस्तान सरकार के विदेश मंत्री हैं, उन्होंने संयुक्त-राष्ट्र संघ की सुरक्षा-परिषद् के समक्ष हर बार यही कहा था कि काश्मीर की घाटी पर जो हमले किए गये हैं उनमें पाकिस्तान सरकार का कोई हाथ नहीं है । उस पर अफरीदी तथा कबाइली आदि नाम की पहाड़ी जातियाँ हमला कर रही हैं । इसके विपरीत भारत-सरकार के तत्कालीन अविभागीय मंत्री और वर्तमान यातायात मंत्री श्री गोपालास्वामी आयंगर का कहना था कि यह आक्रमण पाकिस्तान द्वारा संचालित सेनाओं द्वारा हो रहे हैं और उनमें अन्य पहाड़ी आक्रमणकारी भी भाग ले रहे हैं । एक प्रकार से काश्मीर पर जो हमला किया जा रहा है वह लुटेरों और डाकुओं की जाति अफरीदियों द्वारा ही नहीं हो रहा है, प्रत्युत उन लुटेरे और डाकू अफरीदियों के साथ पाकिस्तानी फौजें काश्मीर पर सुव्यवस्थित रीति से हमले कर रही हैं ।

काश्मीर-कमीशन ने जब मोर्चों का निरीक्षण किया और स्वयं अपनी आँखों से पाकिस्तानी फौजों को लड़ते देखा तो पाकिस्तान ने जुलाई में यह स्वीकार किया कि काश्मीर के हमले में पाकिस्तान सरकार का हाथ है ।

समझौते का आधार

इस स्वीकारोक्ति से दो बातें स्पष्ट हो गईं । पहली बात तो यह कि पाकिस्तान सुरक्षा-परिषद् के सामने सरासर झूठ बोल रहा था । उसका अभिप्राय अपने मिथ्या कथनों द्वारा यह था, कि वह इस प्रकार झूठ बोलकर दुनिया की आँखों में धूल झोंकने में समर्थ हो सकेगा । इस स्वीकारोक्ति के फलस्वरूप यह बात खुल गई कि पाकिस्तान का सारा मामला धोखेधड़ी और असत्य भाषण पर आधारित था । दूसरे, अब काश्मीर-कमीशन को कुछ करने का भी अवसर मिला । कुछ करने के अवसर का आशय यह है कि अफरीदियों और कबाइलियों तथा अन्य लुटेरी जातियों की तो कोई सरकार थी नहीं और न वह जातियाँ ही संयुक्तराष्ट्र संघ की अधिकार सीमा के अन्तर्गत आती थीं, क्योंकि वह संघ की सदस्य नहीं थीं । इसलिये कमीशन । कोई भी प्रस्ताव उन आक्रमणकारियों पर लागू किया जाना संभव नहीं था । पाकिस्तान अवश्य संघ का सदस्य था, किन्तु वह कहता था कि उसका काश्मीर-घाटी के आक्रमण में कोई हाथ ही नहीं है । अस्तु पाकिस्तान सरकार की स्वीकारोक्ति से काश्मीर-कमीशन का यह कार्य सरल हो गया कि वह कोई ऐसा प्रस्ताव तैयार करे जिसे पाकिस्तान और भारत दोनों उपनिवेशों की सरकारें स्वीकार कर लें । तदनुसार गत १३ अगस्त को काश्मीर-कमीशन ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया ।

कमीशन का प्रस्ताव

काश्मीर-कमीशन का प्रस्ताव ४ भागों में विभक्त किया जा सकता है । पहला भाग प्रस्ताव के शेषांश को कार्यान्वित करने की भूमिका अथवा आधार है । यह आधार इस प्रकार है कि काश्मीर और जम्मू के समस्त मोर्चों पर तत्काल युद्ध बन्द कर दिया जाय । युद्ध बन्द होने के पश्चात् दूसरा भाग पाकिस्तान से सम्बन्धित है और वह यह है कि पाकिस्तान शीघ्रातिशीघ्र काश्मीर और जम्मूराज्य की सीमा में से समस्त पाकिस्तानी फौजों तथा अन्य आक्रमणकारियों को हटा लेगा । जब समस्त पाकिस्तानी फौजें हट जायँगी तब प्रस्ताव के तीसरे भाग के अनुसार भारत-सरकार भी अपनी अनावश्यक सेनाओं को काश्मीर से हटा लेगी और भारत की केवल उतनी ही फौजें काश्मीर में रहेंगी जितनी सेनाओं की आवश्यकता वहाँ की शांति और व्यवस्था कायम रखने के लिए होगी । इस प्रकार काश्मीर जब समस्त सैनिक-प्रभाव से मुक्त हो जायगा उस समय प्रस्ताव का चौथा भाग कार्यान्वित किया जायगा । इस भाग के अनुसार समस्त काश्मीर की जनता का आह्वान किया जायगा, कि वह निष्पक्ष रूप से अपना यह मत प्रकट करे कि वह भारतीय संघ के साथ रहना चाहती है अथवा पाकिस्तान के साथ । यही जनमत संग्रह काश्मीर के भाग्य का अंतिम फैसला करेगा ।

पाकिस्तान द्वारा अस्वीकृत

यदि देखा जाय तो काश्मीर-कमीशन का यह प्रस्ताव अत्यन्त न्यायसंगत है और प्रजातान्त्रिक सिद्धांतों पर आधारित है और संभवतः कोई भी न्यायप्रिय सरकार, जो प्रजातन्त्रवाद और लोकतन्त्र की समर्थक होगी, उक्त प्रस्ताव को मानने में तनिक भी न हिचकिचायेगी । भारत-सरकार यद्यपि सुरक्षा-परिषद् की लम्बी, कानूनी और बेकार की कार्रवाइयों से तंग आ चुकी थी, किन्तु उसने फिर भी

शेष पेज १४ पर देखिए

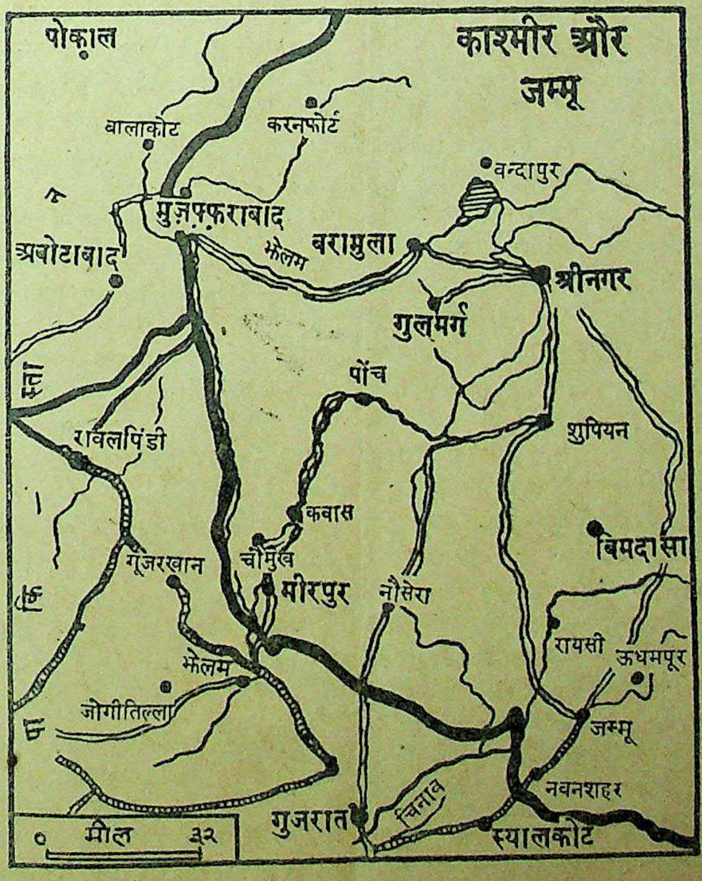

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य रघुवीर का परिभाषा-निर्माण

लेखक, डाक्टर सिद्धेश्वर वर्मा, एम० ए० डी० लिट्० (लन्दन)
प्रोफेसर इन्द्रदेवसिंह आर्य, एम० एस-सी०, एल्-एल० बी०

'देशदूत' गत दीपावली अंक में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का एक लेख 'आचार्य रघुवीर का परिभाषा निर्माण' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ था। राहुल जी ने डाक्टर रघुवीर द्वारा नये विधान के अनुवाद की अनुपयोगिता प्रमाणित की थी। इस लेख में भाषा शास्त्र के दो विद्वानों ने राहुल जी के लेख का उत्तर देते हुए डाक्टर रघुवीर पारिभाषा-निर्माण को उचित बतलाया गया है। लेख पठनीय तथा विचारणीय हैं।

महापण्डित श्री राहुल सांकृत्यायन।

अँगरेजों के राजनैतिक आधिपत्य की समाप्ति के साथ ही देश के नेता अनुभव कर रहे हैं कि भारत से अँगरेजी भाषा का आधिपत्य भी यथासंभव शीघ्र समाप्त होना आवश्यक है। शासन एवं अन्तः-प्रांतीय संपर्क के क्षेत्रों के समान ही उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी यह आवश्यक है कि अखिल भारत में विश्वविद्यालयों की शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा हो। अतः राष्ट्रभाषा हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में यथा-शीघ्र वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण की आवश्यकता है। इस दृष्टि से देश के कई विद्वानों ने शब्द-निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया है।

भारत के प्रमुख भाषा-विज्ञ आचार्य रघुवीर जी इस क्षेत्र में लगभग १७ वर्ष से कार्य करते चले आ रहे हैं। उनके आंग्ल भारतीय महाकोष के रसायन शास्त्र विषयक खंड के भाग १, २ और ३ आज से लगभग तीन वर्ष पूर्व प्रकाशित हुए थे। देश के अन्य विद्वान् भी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। प्रयाग में श्री डा० सत्यप्रकाश जी वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण कर रहे हैं। प्रांतीय विधान सभाओं में भारतीय शब्दावली की आवश्यकता अनुभव करते हुए संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत और बंगाल ने भी कुछ वैज्ञानिक एवं शासन-सम्बन्धी शब्दावली का निर्माण कराया है। श्री राहुल सांकृत्यायन ने भी शब्द-निर्माण के क्षेत्र में अपने "शासन शब्द संग्रह" के साथ पदार्पण किया है। हमारा पूर्ण विश्वास है कि शब्द-निर्माण और भारतीय भाषाओं में साहित्यिक एवं वैज्ञानिक ग्रंथों के निर्माण का कार्य इतना व्यापक है कि इस क्षेत्र में देश के जितने अधिक विद्वानों का सहयोग मिले उतना ही अधिक श्रेयस्कर है। अन्ततोगत्वा विविध शब्दावलियों एवं ग्रंथों में जो श्रेष्ठ सिद्ध होंगे वे स्वयमेव सर्वमान्य हो जायगे।

जैसे किसी भाषा में साहित्य के निर्माण के लिये साहित्यालोचन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार शब्द-निर्माण के साथ ही अब हिन्दी-जगत में शब्द-निर्माण, सम्बन्धी आलोचनाओं का प्रादुर्भाव होता दिखाई देता है। हम इनका स्वागत करते हैं। महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन ने "आचार्य रघुवीर का "परिभाषा-निर्माण" नामक लेख लिखकर हिन्दी-जगत् का ध्यान शब्द-निर्माण के क्षेत्र में किये गये आचार्य रघुवीर के कार्य की ओर आकर्षित किया है। श्री राहुल जी ने इस लेख में जो विचार हिन्दी में वैज्ञानिक शब्दावली के विषय में प्रकट किये हैं, उससे हिन्दी जगत् में पर्याप्त भ्रम फैलने की सम्भावना है। अतः इस लेख में हम वस्तुस्थिति को स्पष्ट करते हुए श्री राहुल के कतिपय मंतव्यों की विवेचना करेंगे।

इस सम्बन्ध में सर्वप्रथम यह कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि आचार्य रघुवीर की शब्दावली हिन्दी-जगत् के समक्ष विगत चार-पाँच वर्षों से विद्यमान है। इस काल में आचार्य रघुवीर के आंग्ल भारतीय महाकोष का भारतीय वैज्ञानिक क्षेत्रों में सर्वत्र स्वागत हुआ। ता० २४ अगस्त १९४६ के एक प्रस्ताव द्वारा बम्बई विश्वविद्यालय ने मैट्रिक की परीक्षा के लिये आचार्य रघुवीर जी की शब्दावली को स्वीकृत किया है। धनबाद के स्कूल आफ माइनिंग एवं अखिल भारतीय माइनिंग असोसियेशन ने आपकी शब्दावली को स्वीकार किया है। विगत बम्बई हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की विज्ञान-परिषद् के अध्यक्ष डा० ब्रजमोहन वर्मा गणिताध्यक्ष हिन्दू विश्वविद्यालय काशी ने आचार्य जी की शब्दावली का अपने कई ग्रंथों में प्रयोग किया है। ये शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रांगारिक (आर्गेनिक) रसायन शास्त्र के प्राध्यापक श्री फूलदेवसहाय जी वर्मा ने अपनी हिन्दी पाठ्य पुस्तक "प्रांगारिक रसायन" और "सामान्य रसायन" में आचार्य रघुवीर जी की शब्दावली का प्रयोग किया है और ये ग्रंथ प्रकाशित भी हो चुके हैं। तीन वर्ष हुए काशी विश्व-विद्यालय ने आचार्य रघुवीर जी को आमंत्रित कर वैज्ञानिक शब्दावली पर अनेक भाषण कराये थे। पूना के सुप्रसिद्ध प्रिन्सिपल डा० दि० धो० कर्वे जी द्वारा लिखी "प्रांगारिक रासायन" में भी इसी शब्दावली का उपयोग किया गया है, एवं मराठी भाषा की एक मासपत्रिका "सृष्टिज्ञान" में आचार्य जी की शब्दावली का प्रयोग विगत लगभग दो वर्ष से हो रहा है। अगस्त १९४७ में पूना की समस्त साहित्यिक एवं वैज्ञानिक संस्थाओं की ओर से मराठी भाषा के महान् लेखक नृसिंह चिंतामण केलकर जी के सभा-पतित्व में आचार्य रघुवीर की शब्दावली के स्वागतार्थ उनका अभिनंदन ससारोह मनाया गया था। यद्यपि श्री राहुल जी मध्यप्रांतीय शासन के आचार्य रघुवीर जी द्वारा हिन्दी-साहित्य के प्रणयन के कार्य से कुछ अप्रसन्न प्रतीत होते हैं, फिर भी यह कहना अनुचित न होगा कि हिन्दी-जगत् मध्यप्रांतीय शासन की हिन्दी एवं राष्ट्र-सेवा के इस कार्य से सदा कृतज्ञ रहेगा।

मध्यप्रांत ने इस विषय में भारत का जो पथ-प्रदर्शन किया है वह न केवल प्रांत के लिये अपितु सारे हिंदी भाषियों के लिए गौरव का विषय है। अस्तु। माननीय श्री द्वारकाप्रसाद जी मिश्र जी गृहमंत्री, मध्य-प्रांत की अध्यक्षता में हुए मध्यप्रांत के शिक्षा-विशेषज्ञों के एक सम्मेलन ने जिसमें नागपुर एवं सागर विश्वविद्यालयों के सभी विषयों के डीन (Dean) एवं सभी कालेजों के प्रिन्सिपल उपस्थित थे, सर्व सम्मति के आचार्य रघुवीर जी की शब्दा-वली का प्रयोग करने का निश्चय किया है।

श्री राहुल जी हिंदी-जगत् के महा-पंडित हैं। आपके उपर्युक्त लेख से ज्ञात होता है कि वे बड़े रसिक भी हैं। आपने इस लेख द्वारा हिंदी-जगत् को आचार्य रघुवीर के कोष के "चमत्कारों का रसा-स्वादन" कराने का आश्वासन दिया है, परन्तु वे स्वयं ही उक्त कोष के संक्षिप्त संस्करण से ही इतने चमत्कृत हो गये हैं कि उसके बृहत् संस्करण के प्रकाशन के समाचार ने उन्हें भयाकुल कर दिया है। कोष में हजार पृष्ठ होंगे या सवा हजार और उसके प्रकाशन में एक लाख व्यय होगा या सवा लाख, इसकी चिंता कदा-चित् ही हिंदी के विज्ञ पाठकों को हो परंतु राहुल जी अवश्य ही इन विषयों के कारण चिंतित प्रतीत होते हैं।

आज वैज्ञानिक उन्नति के युग में श्री राहुल जी का कथन है कि इस कोष के ६०-७० हजार हिंदी की आवश्यकताओं को अनन्त पीढ़ियों तक पूरा कर सकते हैं। जहाँ तक हमें ज्ञात है कि आचार्य रघुवीर जी ने ऐसा दावा कभी नहीं किया। फिर आज वैज्ञानिक उन्नति के युग में यह कहना कि केवल ६०-७० हजार शब्द विज्ञान की समस्त शाखाओं के लिये अनन्त पीढ़ियों तक पर्याप्त होंगे, विज्ञान के विस्तार से सर्वथा अपरिचित व्यक्ति के लिये ही संभव है। केवल प्रांगारिक (आर्गे-निक) रसायन में कई लाख पदार्थ हैं। आधुनिक विज्ञान की भि[न्न] शाखाओं में प्रयुक्त होनेवाले श[ब्दों की] संख्या लगभग १५ लाख है, भ[विष्य में] इसमें कितनी वृद्धि होगी इसकी [कल्पना] विज्ञ पाठक स्वयं लगा सकते हैं।

महापंडित राहुल सांकृत्याय[न का] इस लेख में मुख्य आक्षेप यह है कि [आचार्य] रघुवीर के शब्द-निर्माण में क[ई] धातुओं और शब्दों के रूढ़ि अर्थ [की अव]हेलना की गई है। हम यह मानते [हैं कि] सभी लोग भाषा के संबंध में रू[ढ़िवादी] होते हैं। यदि ऐसा न हो तो [भाषा का] व्यवहार ही रुक जाय, परंतु इसका [अर्थ] यह नहीं है कि शब्द-निर्माण के [लिये] धातुओं या शब्दों के मूल रूपों का [प्रयोग] न किया जाय। वैज्ञानिक शब्द-निर्[माण के] लिये विश्व के सभी देशों में [प्राचीन] भाषाओं के धातुओं, प्रत्ययों, उपसर्[गों का] प्रयोग होता है। यूरोप की प्रायः [सभी] भाषाओं में वैज्ञानिक शब्द ग्रीक [और] लैटिन से बनाये जाते हैं। यह तो स्[पष्ट है] कि ग्रीक और लैटिन भाषाओं के [तत्सम] शब्दों का यूरोप की आधुनिक भ[ाषाओं] में उतना भी प्रयोग नहीं होता [जितना] संस्कृत के तत्सम शब्दों का हिन्दी, [बंगला,] मराठी, आदि आधुनिक भारतीय भ[ाषाओं] में होता है। यूरोप की आधुनिक भ[ाषाओं] में लैटिन और ग्रीक के तत्सम श[ब्दों का] प्रयोग तो नहीं के तुल्य है, जब [कि] आधुनिक भारतीय भाषाओं में संस्[कृत के] तत्सम शब्दों की संख्या ७०-८० प्र[तिशत] तक पहुँच जाती है। यह होने [पर भी] यूरोप की वैज्ञानिक शब्दावली में [नवीन] शब्द-निर्माण के लिये अधिकांशतः [ग्रीक] और लैटिन के रूपों को क्यों ढूँढा [जाता] है? इसका कारण यह है कि यूरो[प के] वैज्ञानिक यही चाहते हैं कि उनके [शब्द] यथासंभव यूरोप के सभी देशों को [समान] रूप से ग्राह्य हों, अतः यदि अँगरेज [कोई] विद्वान् अपनी आधुनिक भाषा के श[ब्दों के] आधार पर नवीन वैज्ञानिक शब्द [बनाने] के लिये प्रयत्न करता है तो वह केवल [उसी] ही देश को ग्राह्य होता है। इसके वि[परीत] यदि वह ग्रीक और लैटिन का [प्रयोग] करता है तो यूरोप के अधिकांश देश [उसे] अपना लेते हैं। उदाहरणार्थ—जब [यह] ज्ञात हुआ कि एक तत्त्व वायुमं[डल में] जलकर जल उत्पन्न करता है, तो [उसका] नाम प्रचलित रूढ़ि शब्दों के आधा[र पर] "वाटर प्रोड्यूसर" नहीं अपितु "[हाइ]ड्रोजन" रखा गया। इस शब्द के दोनों अंश 'हाइड्रो' और 'जन' आ[धुनिक] यूरोपीय भाषाओं में इस अर्थ में [प्रयुक्त] नहीं होते; परन्तु फिर भी उनका प्र[योग] यूरोपीय शब्दावली में किया गया। [इसी] प्रकार आक्सीजन हैलोजन, आ[र्गन,] हेलियम, क्रिप्टान, आदि शब्दों [में] (आक्सी) खट्टा, हेलो (लवण), आ[र्गन] (अक्रिय), हेलास (सूर्य), क्रिप्टास ([छिपा] हुआ) शब्द ग्रीक या लेटिन भाषाओं [से] लिये गये हैं, इनमें से एक भी [शब्द] आधुनिक यूरोपीय भाषाओं में प्रच[लित] नहीं है। फिर भी वे सभी यूरोपीय वैज्ञा[निक] शब्दावलियों में प्रयुक्त किये गये हैं।

शेष पेज १८ पर देखि[ये]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

चोर बाजार

लेखक, श्री रुद्रदत्त मिश्र, एम० ए० 'साहित्यरत्न'

कण्ट्रोल ने देश में एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जिससे ईमानदारी कोसों दूर हो गई है। ब्रिटिश शासन काल में हम जिन सरकारी कर्मचारियों को कोसा करते थे, आज वही भाव हमारे देश भक्तों में भी अधिकांश आ गया है। खादी के जिस पवित्र वस्तु में देशसेवक का दर्शन होता था वही खादी की पोशाक आज चोर बाजारी करने वाले, धूर्त और छलिया तथा रिश्वतखोरों की हो रही है। कहानी में कण्ट्रोल को लेकर वर्तमान स्थिति का सुन्दर चित्रण किया है। कहानी सुन्दर सामयिक और पठनीय है।

नोटों के बल पर वोट प्राप्त करके आज श्री चौधरी चुनाव में विजयी हुए थे। महीनों की तिकड़म व दौड़-धूप की नींव में भाड़े के कनवेसरों की सिर-तोड़ कोशिश के कंकड़-पत्थर डालकर रङ्गीन आश्वासनों के गारे से बनाई हुई मेम्बरी की दीवारों पर जैसे तैसे यश का छप्पर डाल पाया था। आठ-दस हजार के नीचे आ चुके थे। घर में नित्य श्रीमती जी के वाक्य-बाणों की मार से बचने के लिए मौन का कवच धारण कर लिया करते थे।

'क्यों जी तुम बोलते क्यों नहीं। अब तो 'मेमबर' कहलाते हुए महीना भर हो गया पर साहबी ठाठ तो कहीं दिखाई नहीं पड़े। तुमने कहा था—ज त तो जाने दो, फिर मोहरों का कठुला गले में डलवा दूँगा।'

'मैं देखती हूँ, इस लोभ में मेरी हँसली भी गई, अब वह नहीं लौटने की। बोलते क्यों नहीं?'

'बोलूँ क्या, तेल देखो तेल की धार देखो। अभी महात्मा जी को मरे महीना भर भी नहीं हुआ, सारे कण्ट्रोल टूट गये। जब पंख ही टूट जायँ तो पक्षी क्या करे! तुम्हारे भाग्य ही निकम्मे हैं। न महात्मा जी मरते न ये दिन देखने को मिलते। सब झगड़े ही शान्त हो गये। हाथ में कुछ काम ही नहीं रहा। कार-गुजारी क्या दिखाऊँ!

महात्मा जी तो मर गये। यह तो मैं भी जानती हूँ पर तुम तो जिन्दा हो! क्यों नहीं हाथ-पाँव हिलाते? जब रुतबा मिला है तो हुकूमत में भी हाथ डालो। समुद्र में घुसोगे तो मोती मिल ही जायँगे!'

'और अगर डूब गया तो?'

'डूबने के तुम्हीं अकेले हो? सारी दुनिया तो तैर रही है।'

अच्छा भई, सबर करो। मौका आने दो। मय ब्याज के तुम्हारा हिसाब कर दूँगा।

*　　　*　　　*

धीरे धीरे महात्म गांधी के प्रवचनों की ध्वनि का प्रभाव लुब्ध व्यवसाइयों के हृदयों पर से हटने लगा। काले बाजार और मुनाफाखोरी की लपटों में देशभक्ति और कर्त्तव्य-भावना झुलस गई। सरकार ने तङ्ग आकर फिर कंट्रोल स्थापित किये। दूकानें बँटने लगीं। चौधरी जी भी कपड़ा वितरण-समिति के सदस्य बनाये गये। घर आकर उन्होंने चौधराइन से कहा—'आज 'सत्यनारायण' की कथा होगी, भला?' चौधराइन जली-भुनी तो बैठी ही थीं, तेंदू की लकड़ी जिस प्रकार चूल्हे में चटचटाकर चिनगारियाँ फेंकती है—कहने लगीं 'अब सत्यनारायण की कथा के लिए मेरे पास क्या धरा है। ये तन के लत्ते चाहो तो बेच आओ!'

'तुम्हारे इस पुराने लँहगे को अब कौन खरीदेगा लम्बी मूँछों में से हुक्के के धुएँ से मैले हुए दाँत दिखाते हुए चौधरी ने व्यंग किया। चौधरान एटम बम छोड़ने ही वाली थीं कि चौधरी जी ने आत्मसमर्पण के लिए हाथ उठा दिये—'अजी सुनो तो! आज मैं 'कपड़ा दिवाऊ' कमेटी का मेम्बर बन गया! अब तुम्हारी कथा पर ही सिद्धि निर्भर है।'

मेम्बरी के समाचार ने चौधराइन के लहँगे में लटकते हुए चाबियों के गुच्छे में हलचल उत्पन्न कर दी! सायंकाल होते न होते केले के लम्बे लम्बे मखमल से पत्ते आ गये। झाँकी सज गई। शंख-झावर, पोथी-पत्रा लटकाये पंडित जी भी दृष्टिगोचर हुए। कलावती, लीलावती, लकड़हारे और नाव के वणिक पुत्र के साथ साथ जो है सो—अध्याय पर अध्याय समाप्त होने लगे। शंख-झावर और झाँझ की तुमुल ध्वनि के पश्चात् पंडित जी की थाली में दक्षिणा का खनाका भी हुआ और प्रसाद की फंकी से श्रोताओं के कंठ भी ठस गये!

*　　　*　　　*

'सेठ जी, यदि आपको 'एण्ड शॉप नम्बर दो' दिला दी जाय तो कैसी?' चौधरी जी ने इतमीनान के साथ हुक्के की नाली से मुँह अलग करते हुए कहा!

'मगर जहाँ तक हो नम्बर एक ही अधिक अच्छी है। बिक्री भी ठाक होती है और बचत ब्लेक से बेच देने का भी सुभीता रहता है। शिकायत भी नहीं होती। गिरे दरजे नम्बर दो भी बुरी नहीं। मगर नम्बर दो के लिए केवल आठ हजार ही भेंट किये जा सकेंगे!'

'दस से कौड़ी कम पर हम ईमान न बेचेंगे! आठ हजार पर कौन धूल फाँके?'

'तो नम्बर एक का वायदा कीजिए।'

चौधरी जी ने खद्दर के कुरते में से वेस्ट एंड वाच निकालकर देखते हुए कहा—तो, हाँ करो या जैसी कहो। मीटिंग का समय हो गया। आज ही फैसला है फिर मुझे बुरा न कहना कि पुश्तैनी मेल-जोल पर लात मार दी। एक दूकान दिलाना मेरे ही हाथ में है। समझे?'

'अच्छा पक्की रही। आप मुझे ही दिला दीजिए। रकम आपकी दूध पीती समझिए।'

चौधराइन ने बैठक के किवाड़ की दराज में मुँह लगाकर कहा कि 'पक्की-बक्की कुछ नहीं। ना मा अभी रख जाओ लाइसेंस शाम को लेना।' चौधरी जी चुप थे। साहस नहीं होता था कि श्रीमती जी का समर्थन करें। बोले—'तुम किवाड़ पर नाक गड़ाये क्या कर रही हो? जो कुछ होना होगा कायदे से हो जायगा।'

सेठ जी ने दोनों के बीच का मार्ग पकड़ा। कुरते के नीचे से निकालकर नोटों का बंडल फर्श पर डालकर बोले—ये लीजिए पाँच हजार पेशगी, और बाकी पाँच हजार शाम को दूकान की मंजूरी होने पर।

चौधरी जी देर तक हुक्के की नली को होठों के बायें कोने से दबाये गुड़-गुड़ करते रहे और नोटों के बंडल का रस लेते रहे। आँखें नोटों के हरे नीले रंगों पर तैर रही थीं। चेहरे से गम्भीरता टपका रहे थे मानो उन्हें नोटों से कोई रिश्ता नहीं—कोई प्रसन्नता नहीं!

'तो अब मैं चला' की ध्वनि से हुक्के का तार टूटा और चौधरी जी ने सेठ जी से आँखें मिलाईं जिनमें सहानुभूति और आश्वासन का रंग था।

'अच्छा देखिये, मैं जा रहा हूँ। शाम को चार बजे अवश्य मिल लीजियेगा।'

अन्दर से आवाज आई—'और बाकी पाँच हजार भी'......'वह सब हो जायगा! तुम भुस में पयार न मिलाओ अपना चौका सँभालो'......चौधरी जी ने रुआब से कहा।

चौधरी जी ने अपने पक्ष के दूकान-दार—सेठ जी की हैसियत, ईमानदारी, पुरानेपन और देश-सेवा-सम्बन्धी उदाहरण देकर अन्त में कमेटी को राजी कर ही लिया। दूकान नम्बर दो उनके लिये स्वीकृत हो गई।

चार बजे चौधरी जी बिना चाय पिये उठ दिये। जल्दी जल्दी घर की ओर डगें मारने लगे। बैठक के द्वार पहले ही से खुले थे। शायद चौधरानी जी ने अगवानी के लिए सफाई कर रखी थी। चौधरी जी के आते ही अन्दर से भरा हुआ हुक्का भी आ गया।

'पाँच बज चुके पर अभी तक मरदूद नहीं आया' चौधरी जी बड़बड़ाये।

'अब क्यों आयगा! तुमने दस हजार सवेरे ही गिन लिये होते!' चौधराइन ने आलोचना की।

'खैर, जायगा कहाँ साला। लाइसेंस कैंसल करा दूँगा बच्चू का?'

'मगर रकम तो हाथ न लगेगी?'

'न लगे ससुरी? फिर कहीं भगवान् देगा।'

'भगवान ने तो हँस के दी थी मगर जब तुम सरीखे भोंदू लात मार दें तब भगवान् बेचारे क्या करें!'

'अच्छा अच्छा! बड़ा यश किया था तुमने, जो दस हजार मिल जाते। जैसा सूखा प्रसाद बाँटा था उसे याद कर लोग अभी तक तुम्हें गाली देते हैं। डाक्टर सिनहा का तो कंठ ही रुक गया होता। ऐसा ठसा लगा कि नाक से भी बुकनी निकल पड़ी!'

शेष पेज ११ पर देखिए

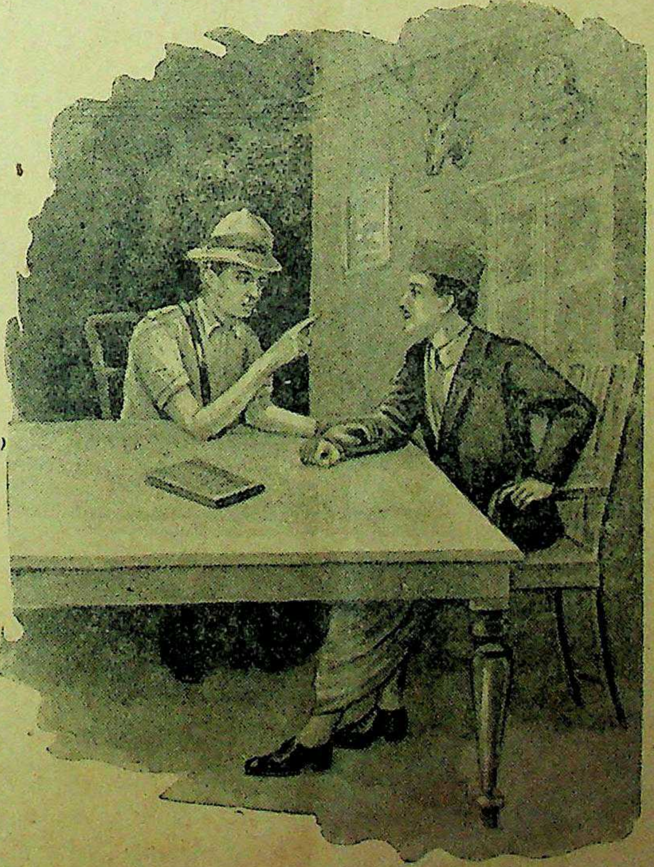

एंटी करेप्शन डिपार्टमेंट के इंसपेक्टर ने कहा कि आपके पास ५ हजार कहाँ से निकले?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

विवाह की निरर्थकता क्या आज का दम्पति सुखी है ?

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम

विभिन्न व्यक्ति विवाह की विभिन्न परिभाषाएँ देते हैं। हिन्दू दृष्टिकोण जो भारत में सर्वप्रधान है विवाह को एक धार्मिक संस्कार और बंधन मानता है। सुशिक्षित और उन्नत पश्चिम विवाह को एक सामाजिक बंधन समझता है। एक क्रान्तिकारी विचार के अनुसार विवाह "न्यायसंगत वैश्यवृत्ति" है। जो भी हो, इस सबका सार यही है कि विवाह अपने लिये दूसरी सेक्स का साथी ढूँढ़ने और जीवन के समस्त क्षेत्रों का आनन्द उठाने के लिये है। विवाह का अर्थ सुखी गृहस्थ, स्वस्थ समाज; अच्छी नागरिकता और विश्व शांति होनी चाहिये। समाज की वर्तमान व्यवस्था में जब स्त्री पुरुषों के लिये पृथक् पृथक् नैतिक आचरण-सम्बन्धी नियम हैं, सैकड़ों सामाजिक अन्याय हो रहे हैं और दकियानूसी विचार और प्रथाओं का बोलबाला है। उपरोक्त आदर्श बलिवेदी पर चढ़ गये हैं और विवाह, निरर्थक, व्यर्थ की वस्तु हो गई है।

इस विषय पर हमें सच्चे हृदय से विचार करने की आवश्यकता है। हम सभी किसी न किसी अभाव से पीड़ित और दुखी हैं। हमारे हृदय असन्तुष्ट हैं। असन्तोष उनमें से फूटा पड़ रहा है। हमारी आत्माएँ या तो पूर्णरूपेण भूखी हैं अथवा उन्हें यथेष्ट भोजन नहीं मिला है। हमारे विवाहित जीवनों में वह हँसी-खुशी, वह आमोद प्रमोद, वह प्रसन्नता और आह्लाद नहीं है जो होना चाहिये। श्री कैलाशचन्द्र द्वारा लिखित "दलित आत्माएं" नामक पुस्तक में जिसमें उन्होंने आधी मनुष्य जाति—शोषित स्त्रियों—की मुक्ति के लिये पुकार की है, हमारे जीवन स्रोतों के शुष्क होने के कारण मिलते हैं। स्त्री-पुरुषों में और अब मानताओं के साथ आर्थिक असमानता भी है। यह स्त्रियों को पुरुषों के आधीन बना देती है, उन्हें पुरुषों से निम्न स्थान देती है और इसका अर्थ यह होता है कि स्त्री-पुरुष के मध्य 'सम्बन्ध मालिक और नौकर' से उत्तम नहीं होता। स्त्रियों को सदैव पति के इशारों पर नाचना होता है। वे अपने स्वामियों की सुविधा के लिये अपना सर्वस्व निछावर कर देती हैं। पूर्ण आज्ञा-पालन, चिरस्थायी भय, स्वतन्त्रता का ह्रास स्त्रियों के जीवन के अंग बन जाते हैं। फल यह होता है कि स्त्रियों और पुरुषों का विवाहित जीवन कटु, दुखमय और असहनीय हो जाता है। पुरुष का विचार स्त्री को गढ़े में ले जाता है और उसका सर्वथा पतन होता है। इन अर्थों में विवाह की पद्धति समय के अनुकूल नहीं, उससे अब कोई लाभ नहीं और न वह समाज में चलने देने योग्य है।

सैनिक शिक्षा पानेवाली अमृतसर (पंजाब) की लड़कियाँ डोंगरा फौज के कर्नल प्रतापसिंह का स्वागत कर रही हैं।

इस भौतिक संसार में न यह सम्भव है और न उचित है कि मनुष्य राम और सीता के रूप में रहें और उनके आदर्शों को निभायें। कहना और करना भिन्न बातें हैं और जब हम, जो कहते हैं नहीं कर सकते, तो हमें कहना भी न चाहिये। एक स्त्री भी उसी प्रकार अपना पुरुष साथी पसन्द करना चाहती है जिस प्रकार कि पुरुष। सच्चा साथ सच्चे प्रेम से चलता है और इसके लिये यह आवश्यक है कि स्त्री और पुरुष दोनों समान स्तर पर चलें। यह हमारी परम भूल है कि हम अपनी स्त्रियों से खाने और कपड़े के बदले में यह आशा करें कि वे हमारी दास होकर रहें। मनुष्य होने के नाते उनके भी कोमल हृदय हैं और वे काम शांति से कहीं अधिक चाहती हैं। वे प्रेम, सच्चा प्रेम चाहती हैं जिसके लिये तलाक की सम्पूर्ण सहज विधि उपलब्ध हो। यह अति असन्तोष की बात है कि भारत में पुरुषों को किसी भी आयु पर और कई विवाह करने की स्वतन्त्रता हो और स्त्रियों पर बलात् वैधव्य लादा जाय जिससे उन्हें प्रेम की प्रेरणा को मूक रखना पड़े। यह मनुष्य का पतन है कि प्रेम और मोहब्बत पग पग पर बेची और खरीदी जाती है।

भारतीय संघ के प्रधान मंत्री श्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने अपनी प्रिय पुत्री इंदिरा तथा फीरोज गांधी के साथ विवाह-बंधन के समय निम्नलिखित वक्तव्य दिया था :—

"विवाह एक व्यक्तिगत और घरेलू मामला है जो कि स्त्री-पुरुष, दो पार्टियों से सम्बन्ध रखता है.... मेरा सदैव यह विचार रहा है कि यद्यपि माता-पिता इस विषय में सलाह दे सकते हैं और उन्हें सलाह देनी चाहिये, तदापि लड़के लड़कियों की पसन्द और अन्तिम निर्णय को यदि उन्होंने समझ-बूझ कर किया है, कार्यान्वित करना चाहिये और यह माता-पिता का कर्तव्य नहीं कि अनावश्यक रूप से टाँग अड़ायें।

जिस किसी को मेरी पुत्री पसन्द करती हो उसे ही मैं भी मान लेता, अन्यथा अपने सिद्धान्तों को झूठा सिद्ध होता। मैं आशा और विश्वास करता हूँ कि यह विवाह जीवन को और हमारे प्रिय हितों का सच्चा साथ होगा।" पण्डित जी के विचार आदरणीय हैं। वास्तव में उनमें स्वतन्त्र भारत के नागरिकों के लिये नेक सलाह है।

एक दूसरे को पूरी तरह जानने के पश्चात् किया हुआ विवाह ही स्थायी और सफल हो सकता है। "प्रेम" एक स्वर्गीय वस्तु है। प्रगाढ़ प्रेम स्त्री और पुरुष को एक सूत्र में बाँध देता है और उनके जीवन को रूखा-सूखा होने से बचा देता है।

हमारा व्यक्तिगत जीवन कैसा ही क्यों न हो, हमें हताश नहीं होना चाहिये। हमारे सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी उत्पन्न होने चाहिये। विवाहित जीवन जो कुछ ही वर्षों में निरानंद हो जाता है सदैव रसयुक्त होना चाहिये। वास्तविक आनन्द के लिए, असुखी विवाहित जीवन से मुक्ति पाने के लिये, आपसी प्रेम के लिए आदान-प्रदान के, समानता के, स्वतन्त्रता के, स्पष्टता के, सच्चाई के और ईमानदारी के मार्ग से कोई अच्छा मार्ग नहीं। स्त्री और पुरुष दोनों मनुष्य हैं। न उनके "काम" से प्रपीड़ित होने का प्रश्न है, न अवैध प्रेम को इस प्रकार बढ़ावा मिलता है। यह कहा जा सकता है कि स्त्री के साथ सद्व्यवहार करना पुरुष के हाथ की बात है। पुरुष अपने स्वभाव के कारण विवश है। विवाह-प्रथा का अंत इसलिए होना अनिवार्य है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में विवाह एक पाप है और कोई कारण नहीं कि हम उस पाप को करते ही चले जायें।

विवाह से मानसिक और शारीरिक पतन होता है। उससे हृदय संतप्त होता है। उससे किसी प्रकार का चिरस्थायी सुख नहीं प्राप्त किया जा सकता है। असामाजिक ही दृष्टिकोण क्यों न हो वह बहुत से मनुष्यों को भायेगा। विवाह की सार्थकता नहीं निरर्थकता निश्चय और स्पष्ट है और हमें उसके दुष्परिणामों से बचने के लिए इस रूप में समझना चाहिये।

मुफ्त सुन्दर रिस्टवाच

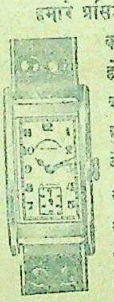

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है और उनको बेस्ल, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिरको ठण्डक पहुंचाता है। सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २।) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६।।) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक ... रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और ... अंगूठी सोना (लन्डन न्यु गोल्ड। बिलकुल ... भेजी जाती हैं।

जरूरी नोटः—माल पसन्द न होने पर ... शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवा ... खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ और ... अंगूठी लन्डन न्यु गोल्ड. और चार घड़ियां ... मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि ... समय बार-बार हाथ न आयेगा।

आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ ...

लन्डन कमर्शियल कम्पनी

(D.D.A.) पी० बी० २ अमृतसर

डोंगरे बालामृत
कमजोर बच्चे ताकतवर बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजक चुटकुले

पाकिस्तान समाचार पत्रों पर भारत में कहीं-कहीं रोक लगा दी गई है। पाकिस्तानी नेता परेशान हैं! पर क्या वे यह नहीं सोचते कि उनके प्रांतों में ही उनके अखबारों पर रोक क्यों? क्या सिंध डान का विरोध नहीं करता? करना चाहिए। डान (प्रभात) तो सभ्य के लिए है फिर सिंधी मुसलमानों को सिंधी सरकार क्यों कष्ट दे रही है।

* * *

काश्मीर में भारत और पाकिस्तान की सेनाओं ने युद्ध बन्द कर दिया। देखिए दोनों का फैसला क्या होता है।

* * *

जम्मू में पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी सेनाओं का एक सम्मिलित सम्मेलन होने जा रहा है। अभी तक दोनों देशों की सेनायें लड़ती थीं और अब प्रदर्शन! भगवान् ही इनकी प्रगति जाने! क्या होगा? अँधेरा है। क्या स्वराज्य सूर्य का प्रभाव नहीं पड़ेगा? अनुमान तो नहीं है पर, चोर-चोर मौसेरे भाई! देखिये क्या होता है आगे?

* * *

दक्षिण अफ्रीका ने भारत और पाकिस्तान के विमानों को अपने देश पर उड़ने से रोक दिया है। ठीक ही किया। अछूतों और रंगभेदों की चमड़ी और रंग ही नहीं खराब होते वरन् उनके घोड़े, गधे, ऊँट, खच्चर और अन्य आवश्यक सामग्रियाँ भी जिनके द्वारा छूत का रोग प्रसरित होता है।

* * *

हिन्देशिया की लड़ाई अभी बन्द न हो सकी। इजिप्ट (मिस्र) और इजरायल भी जुड़ गये। लड़ाई को लोग बन्द करा रहे हैं। पर उन्हें चाहिए कि वे चुप बैठ जायें। एक ही नाम वाले देश जल्दी चुप नहीं होते। हिन्देशिया और हालैंण्ड, इजिप्ट और इजरायल एक ही वर्णाक्षर से आरम्भ होते हैं। फिर कौन बखेड़ा मोल ले!

* * *

कच्छ में भारत-सरकार बन्दरगाह बनवायेगी। अच्छा ही हुआ अभी तक बगीचों में बन्दरगाह (बन्दरों की जगह) थी अब कच्छ में होगा क्या अन्तर?

* * *

भारत की लोक सभा में ५०० सदस्य होंगे। स्वतंत्रा मिलन पर भारत का मान सौगुना हो गया। पर भाग्य में अभी और कुछ है—भारत को अभी उपनिवेशक ही स्वराज्य प्राप्त है। ख्याल रहे कहीं अँगरेज इस गुलछर्रें पर पानी न फेर दें।

* * *

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥) मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

फिर अेक दफ़ा मालूम हो गया कि हमारी सुरक्षाकी चीज़ोंमेंसे सबसे छोटी चीज़भी—हमारा ताला—निपुण डाकुओंके कसेहुअे हमलोंका मुकाबला कर सकती है। अिसी खास घटनामें जहाँ हरबार दूसरे मार्कोंके ताले टूट गये वहाँ हमारा ताला तीन दफ़ा अटूट रहा। जहाँ हमारा ताला—जो अटूट होनेका हम दावा नहीं करते—वही अगर अैसे हमलोंमे बचा सकता है, वहाँ हमारी तिजोरी, 'सेफ डिपॉझिट'... बैंकके 'स्ट्रॉंग रूम' कितने प्रमाणमें सुरक्षित होंगे असकी सहजही कल्पना हो सकती है।

SHAH ABHECHAND KALYANJI & Co.
શા. અભેચંદ કલ્યાણજીની કું.
MOTISHA JAIN PARK, LOVE LANE, BOMBAY

(मूल प्रति का सही अनुवाद)

बम्बअी, १२ नवेंबर, १९४८.

मेसर्स गोदरेज अॅण्ड बॉईस मॅन्यु० कं०, लि०
लालबाग, परेल, बम्बअी.

मान्यवर,

हमारी दूकानके लिये आठ बरस पहले खरीद किये हुअे आपके तालेने हमारी जो सेवा की असके लिये हम आपके पूर्णरूपसे उऋणी नहीं हो सकते। १९४४ में और फिर गये सितंबरमें हमारी दूकानपर सुसज्ज डाकुओंने हमला किया था। आखिरी वक्त दरवाज़ेको तीन ताले लगाये गये थे। अिनमेंसे दूसरे मार्कोंके दो ताले डाकुओंने खोले लेकिन आपके तालेपर उनका ज़रा भी परिणाम नहीं हुआ।

कल रातमें तीसरा हमला हुआ। उस वक्त आपके तालेनें फिर अेक दफ़ा हमारी दूकानको बचाया। बार बार हम हजारों रुपयोंके नुकसानसे बच गये क्योंकि आपके बनाये तालेका चोर कुछ न बिगाड़ सके।

आपका,
(सही) अभेचंद कल्याणजी.

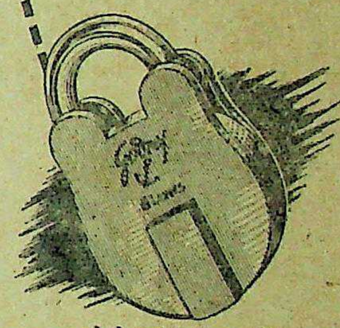

गोदरेज लंगर छाप ताले

Godrej

गोदरेज याने सुरक्षा

हमारे ताले, अलमारी, खाने और दरवाज़े के कलके ताले (नाअिट-लॅच) तैयार मिलते हैं।

गोदरेज अॅण्ड बॉईस मॅन्यु० कं०, लि०
सुरक्षा और निपुणता के धातुके सामान, अस्पताल के फर्नीचर, ताले... बनानेवाले।

कानपुर : नौगेज बिल्डिंग, दी माल; लखनऊ : दी मजदा इलेक्ट्रिक स्टोर्स, कैसरबाग सर्कस।

...और अपनी चर्मकी स्वास्थ्य और सुन्दरता की रक्षा के लिये Godrej गोदरेज टायलेट (नहानेके) साबुनो पर निर्भर रहिये।

गोदरेज सोप्स, लि. — टायलेट (नहाने के) और शेविंग (हजामत के) साबुन, ग्लेसरीन ... बनाने वाले।

कहानी—चोर बाजार

(पेज १० का शेष)

'चलो चुप रहो, भगवान् के परसाद में नुक्स न निकालो वरना रोओगे!'

इतने में सेठ जी हँसते हुए आ गये। 'आओ भाई, बड़ी देर लगाई। लो हाथ मिलाओ। मैदान तुम्हारे हाथ रहा। ऐसा पाँसा फेंका कि चारों खाने चित्त! अन्दर से चाबियों की झनझनाहट का शब्द हुआ। चौधराइन शायद किवाड़ों से चिपटी खड़ी थीं। 'लीजिये ये पाँच हजार के पाँच नोट' कहते हुए सेठ जी ने यज्ञ में अन्तिम आहुति झोंकी और चल दिये। मुझे देर हो रही है।' चौधरी जी भी यही चाहते थे। नोटों को उठाकर कुरते की जेब में रखा। चौधराइन ने अन्दर से किवाड़ खोल दिये। 'लाओ इधर दो।'

'जय हिन्द चौधरी जी' के शब्द से दोनों चौंक पड़े। चौधराइन ने फड़ाक से किवाड़ बन्द कर लिये। सामने एंटीकरप्शन विभाग के इन्सेक्टर खड़े थे। चौधरी जी का रंग टेसू की तरह उड़ गया। तलाशी ली गई तो पाँच हजार के नोट प्रधान मंत्री जी के हस्ताक्षरोंवाले उनकी जेब से निकले। चौधराइन शायद सबेरे के नोटों को हिल्जे लगाने जा चुकी थीं। दूसरे दिन एक दैनिक में छपा—'देश-सेवक चौधरी भ्रष्टाचार में रँगे हाथों गिरफ़ार। प्रधान मंत्री के हस्ताक्षरोंवाले पाँच हजार के नोट उनकी जेब से निकले!'

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

सम्मेलन और परीक्षार्थी

इधर विगत कई वर्षों से, विशेषतः द्वितीय महासमर से कागज के बाजार में आग-सी लगी हुई है। परिणामस्वरूप सम्मेलन के परीक्षार्थियों का उत्तमा, मध्यमा, प्रथमादि परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्देशित पुस्तकों का अभाव प्रतिवर्ष से खटकता आता रहा है।

इस वर्ष मैंने स्वतः परीक्षार्थी के रूप में अनुभव किया है कि आगरा, इन्दौर, बनारस, प्रयाग प्रभृति स्थानों को दो-दो बार पत्र प्रेषित करने पर भी नियत पाठ्य-पुस्तकें, पुस्तक-विक्रेताओं से प्राप्त नहीं हुईं। मेरा अनुभव है कि गत वर्ष दस प्रतिशत विद्यार्थियों को पुस्तकें अनुपलब्ध रहीं तो, इस वर्ष पच्चीस प्रतिशत छात्र समय पर पुस्तकें नहीं पा सके। कई पुस्तकें तो परीक्षा की तिथि तक तथा उसके पश्चात् भी नहीं मिलीं।

प्रतिवर्ष सम्मेलन की परीक्षाओं में सहस्रों परीक्षार्थी सम्मिलित होते हैं। इस कार्य में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है, परन्तु पुस्तकों के उचित परिमाण में प्राप्त हो सकने का अभाव दूर नहीं हो रहा है! कुछ विषय की पुस्तकें तो हिन्दी में प्राप्त ही नहीं हैं क्योंकि इनका अनुवाद अँगरेजी से हिन्दी में किसी ने किया ही नहीं है। अँगरेजी से हिन्दी-अनुवाद करने की क्षमता हमारे साहित्यिकों में न हो, यह बात नहीं मानी जा सकती और न इसका दोष साहित्य-सम्मेलन पर ही छोड़ा जा सकता है वरन् मुख्य कारण तो यह है कि हम अपने साहित्योन्नति के कार्य में आवश्यक द्रव्य व्यय करने की मनोवृत्ति ही नहीं रखते। अस्तु।

परीक्षार्थियों की बढ़ती हुई संख्या और दूसरी ओर पाठ्य-पुस्तकों की अप्राप्ति, इस दशा में यह निश्चय कर सकना असंभव नहीं है कि परीक्षा देनेवालों पर क्या बीतती होगी। योग्य तैयारी के अभाव में अधिकतर आशावान, परीक्षा-शुल्क और तत्सम्बन्धी मानसिक श्रम को प्रत्येक वर्ष व्यर्थ खोते रहते हैं।

इस विषय में हमारी धारणा है कि सम्मेलन के सुयोग्य संचालकगण यदि सतर्कता एवं सक्रियता से कुछ करने के लिए आरूढ़ हो जायँ तो, यह समस्या सरलता से हल हो सकती है। हमारी हिन्दी, राष्ट्र-भाषा के पद को निकट भविष्य में ही सुशोभित करनेवाली है। अभी तक तो मातृ-भूमि भारत को स्वतंत्र बनाने में उसके अनन्य सेवक अपने को न्यौछावर करते रहे परन्तु अब समय आ गया है कि भारत-जननी की वाणी को भी उन्मुक्त कराकर उसे राष्ट्र-भाषा के योग्य पद पर हम मातृ-सेवी प्रतिष्ठित करा देने में उपयुक्त उत्सर्ग करें। हमारा विश्वास है कि इस दिशा में उचित आन्दोलन करने पर सैकड़ों हिन्दी-भक्त इस क्षेत्र में उतर सकते हैं। परम सौभाग्य की बात हम हिन्दी-आराधकों के लिए यह है कि इस वर्ष हि० सा०-सम्मेलन के सभापति त्याग-वीर सेठ गोविन्ददास जी स्वीकृत हुए हैं, जिनसे अधिकांश आशाएं पूर्ण हो सकने की आशा है।

सम्मेलन को चाहिए कि जिस प्रकार वह राष्ट्र-भाषा को विधान-परिषद्-द्वारा राष्ट्र-भाषा और राष्ट्र-लिपी के रूप में स्वीकृत कराने के लिए उद्योगशील है; उसी प्रकार वह पुस्तक-प्रकाशन-कार्य को भी अपने हाथ में लेकर इस दायित्वपूर्ण समस्या को हल करने में तत्पर हो जाय। सम्मेलन को चाहिए कि वह धनिक वर्ग से और अपनी संयुक्तप्रान्तीय सरकार से योग्य द्रव्य उपलब्ध करे। इसके साथ ही परीक्षार्थियों से भी इस कार्य में हाथ बँटाने की व्यवस्था करे। अर्थात् प्रत्येक परीक्षार्थी से प्रतिवर्ष 'साहित्यिक कोष' के रूप में परीक्षाओं के मानानुसार कुछ विशिष्ट मुद्रा लेना आरंभ कर दे। प्रतिवर्ष इस आय को परीक्षा-संबन्धी साहित्य के प्रकाशन में व्यय भी कर दे।

अच्छा तो यह होगा कि परीक्षा-संबंधी निर्धारित पाठ्य-क्रम, सम्मेलन स्वयं ही एक 'सीरीज' के रूप में परीक्षार्थियों के हितार्थ उपस्थित करे। प्रत्येक परीक्षा के, प्रत्येक प्रश्न पत्र में, सम्मिलित होनेवाली पुस्तकें, अलग-अलग जिल्दों में प्रकाशित करने का आयोजन कर लिया जाय तो, जो आज के परीक्षार्थियों को पुस्तकें प्राप्त करने के लिए विभिन्न पुस्तक-विक्रेताओं के घर-घर की धूल छाननी पड़ती है, वह न करना पड़े। एक ही स्थान पर, थोड़े ही समय में, उपयुक्त शैली की उपादेय सामग्री, परीक्षार्थियों को सुलभ हो जाना कितना हितकारी होगा; यह प्रकट करने विशेष आवश्यकता नहीं है। इस कार्य का इतना ही महत्त्व नहीं होगा वरन् ठोस अध्ययन सामग्री के आधार पर सम्मेलन परीक्षार्थियों की योग्यता का सापेक्ष्य मानदण्ड भी जैसा न रहेगा। जिल्दाकार में पुस्तक-प्रकाशन से मूल्य में अवश्य वृद्धि हो जायगी। ऐसी दशा में किसी भी केन्द्र के परीक्षार्थियों को अपनी सुविधानुसार यह व्यवस्था कर लेना आवश्यक होगा कि वे अपने केन्द्र में एक ऐसी आर्थिक-निधि प्रत्येक वर्ष संग्रह करते जायँ जिसके द्वारा वे परीक्षा संबन्धी एक पुस्तकालय ही अपने केन्द्र में प्रस्थापित कर सकें। इस भाँति इसी पुस्तकालय से निकटस्थ समस्त परीक्षार्थी, पुस्तकें प्राप्त कर अपना अभ्यास पूर्ण कर सकते हैं।

प्रायः देखा जाता है कि अच्छे-अच्छे साहित्यिक केन्द्रों के परीक्षार्थी, अपने स्थानीय विद्वत्-समाज से उपयुक्त परीक्षा-सामग्री उपलब्ध कर लेते हैं परन्तु अन्य स्थानों के आशावान, विद्वानों के अभाव से और अपेक्षित पुस्तकों के दुर्लभ होने से, यथोचित तैयारी करने में असमर्थ रहते हैं।

सम्मेलन-संबन्धी परीक्षाओं की लोक, प्रियता और उपयुक्तता को दृष्टि में रखते हुए, उपर्युक्त सुझावों को सम्मेलन अपने और राष्ट्र-हित के कार्य में सहायक मानकर इधर ध्यानाकर्षित करेगा तो, परीक्षार्थी अपना अहोभाग्य समझेंगे।

आलमपुर —भगवानसिंह चन्देल, 'विशारद'

* * *

राष्ट्रभाषा हिन्दी को ही अपनाइये

देश अब पूर्ण स्वाधीन हो चुका है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने देश को शक्तिशाली और प्राणवान् बनायें। इसमें संदेह नहीं कि राष्ट्र को सुगठित करने के लिए आर्थिक कार्यक्रम अत्यावश्यक हुआ करता है, पर राष्ट्र की आत्मा के भीतर जिसके द्वारा सजीवनी शक्ति का संचार हुआ करता है, वह है उस राष्ट्र की भाषा और उसकी संस्कृति। इस समय हमारे राष्ट्र के भीतर जो अव्यवस्था और दुर्बलता दृष्टिगोचर हो रही है वह राष्ट्रभाषा और संस्कृति के प्रचार से ही दूर हो सकती है। अतः इस समय हमारा और आपका यही कर्त्तव्य होना चाहिए, कि हम और आप शीघ्र से शीघ्र राष्ट्रभाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तत्पर हो जायँ।

कुछ प्रान्त विचारधारी राजनीतिज्ञों के कारण इस समय राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर अवश्य विवाद उठ खड़ा हुआ है, पर यह तो निर्विवाद और सत्य है कि हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा और भारतीय संस्कृति ही हमारी संस्कृति है। हिन्दी में ही हमारा राष्ट्र बोलता और हुंकार करता है। दूसरे शब्दों में हिन्दी हमारे राष्ट्र की आत्मा है। राष्ट्र के भीतर जितना ही अधिक हिन्दी का प्रचार और प्रसार होगा उतना ही अधिक प्राप्त स्वाधीनता राष्ट्र से अपना सम्बन्ध सुस्थिर और सुदृढ़ बनायेगी। राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के इसी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त को दृष्टि में रखकर हमारे देश की आठ-नौ प्रान्तीय सरकारों ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है, और अँगरेजी तथा उर्दू के स्थान पर हिन्दी को स्थान देने के लिए शासनाधिकारियों के पास आदेश भी प्रचारित किया है।

किन्तु अभी सर्वसाधारण ने राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की इस महत्ता पर उतना ध्यान नहीं दिया है, जितना उसे देना चाहिए। यही कारण है, कि सरकारी आदेश होते हुए भी अभी तक राष्ट्रभाषा हिन्दी को समुचित स्थान नहीं प्राप्त हो सका है। राष्ट्र के कल्याण के लिए हमारी सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि वह अब इस ओर समुचित रूप से ध्यान दे। इस ओर समुचित रूप से ध्यान देना राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा होगी। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार में सर्वसाधारण को क्या करना चाहिये, इसके लिए हम एक कर्त्तव्य सूची सामने उपस्थित कर रहे हैं और साथ ही प्रत्येक नागरिक से आग्रहपूर्वक अनुरोध कर रहे हैं कि वह राष्ट्र के कल्याण के लिए इस कर्त्तव्य सूची के पालन करने और कराने में तत्पर हों।

क—आप अपना दैनिक काम-काज हिन्दी में ही करें।

ख—यथासाध्य हिन्दी के ही समाचार पत्र और पुस्तकें पढ़ें।

ग—बैंकों और डाकखानों से व्यवहार हिन्दी में ही करें।

घ—अपने भोजन कार्ड हिन्दी में ही बनवायें।

च—हिन्दी में ही अपनी दूकान पर विज्ञापक पट्ट में साइनबोर्ड लगवाइये।

छ—सरकारी आदेश हिन्दी में ही ग्रहण कीजिए।

ज—अपना बहीखाता हिन्दी में ही लिखिए।

झ—हिन्दी में ही बात-चीत करने का अभ्यास बढ़ाइये।

ञ—यदि आप शासनाधिकारी हैं, तो हिन्दी में ही अपना मन्तव्य प्रकट कीजिए।

—श्री व्यथित हृदय
प्रचार-मन्त्री

* * *

इलाहाबाद में रेडियो स्टेशन

आगामी फरवरी महीने से इलाहाबाद के रेडियो स्टेशन का विस्तार हो रहा है। संभवतः इलाहाबाद में एक स्वतन्त्र स्टूडियो स्थापित किया जायगा जिसका लखनऊ से कोई सम्बन्ध न होगा। ऐसे समय में भारत-सरकार के ब्राडकास्टिंग विभाग का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि वह यहाँ की व्यवस्था अत्यन्त कुशल हाथों में सौंपने का प्रबन्ध करे। उसे स्मरण रखना चाहिए कि यह इलाहाबाद है। यहाँ के रोडियो स्टेशन पर दोरंगे व्यक्तियों की नियुक्ति से कार्य न चलेगा और न ऐसे व्यक्तियों की नियुक्ति से लाभ उठाया जा सकेगा जिसकी सेवा हिन्दी-साहित्य में नगण्य है। जो केवल खुशामद और तेल लगाने के बल पर हिन्दी-साहित्य सेवी होने को सेहरा बाँधे हुए हैं और वर्तमान समय में दिल्ली अथवा विभिन्न रेडियो स्टेशनों पर दोरंगी चाल चलते हुए हिन्दी-साहित्यिक बनने का दावा कर रहे हैं मेरा निवेदन कि हिन्दी के नाम पर ऐसे पथ भ्रष्ट कार्यकर्ताओं को जिम्मेदार पदों पर इलाहाबाद रेडियो स्टेशन स्टूडियों में नियुक्त नहीं होना चाहिए। हमने सुना है कि इस समय रेडियो स्टेशनों पर काम करनेवाले कई बड़े बड़े मूर्ख जो अपने को हिन्दी-संसार का आका समझे हुए हैं इलाहाबाद रेडियो स्टेशन के स्टूडियों में नियुक्ति के लिए जोड़ तोड़ लगा रहे हैं। सच तो यह है कि ऐसे लोगों की न तो कोई साहित्य-सेवा है और न हिन्दी-संसार में ही उनकी कोई गति है। हम भारत-सरकार के ब्राडकास्टिंग विभाग से अनुरोध करेंगे कि वह इस सम्बन्ध में बहुत सोच-समझकर इलाहाबाद रेडियो स्टेशन की नियुक्तियों का हल करे। यदि कोई कर्मचारी दिल्ली रेडियो स्टेशन पर अपनी फितरत खुशामद और दोरंगी नीति के कारण हिन्दी का धनीधोरी समझा जा सकता है तो वही प्रयाग ऐसे हिन्दी के सांस्कृतिक केन्द्र के लिए भी उपयुक्त होगा इस पर सही तौर पर विचार कर लेना चाहिए। यहाँ हिन्दी के ऐसे विद्वान् और योग्य व्यक्ति की आवश्यकता है जो निःस्पृह हो, मिलनसार हो, हिन्दी का वास्तविक प्रेमी और सेवी हो राजनैतिक दाँव-पेंचों से परे हो, पार्टीबाज और धूर्त न हो। यदि ऐसा हुआ तो सचमुच इलाहाबाद रेडियो स्टेशन को जिस उद्देश्य से निर्मित हो रहा है, सफलता और लोक-प्रियता प्राप्त होगी।

काशी —शिवशंकरसिंह, एम० ए०
६-१-४९

जीवन में नई उमङ्ग लाने के लिए खोई जवानी पाना चाहें तो
"स्त्री प्रेम रहस्य" मुफ्त
मँगावें। पता—पी० बी० ३७२, देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'सोहागरात'

क्या काश्मीरी वातावरण का सफल चित्रण हुआ है?

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

किसी स्थान पर एक पुरुष ने कहा था—"आप में इतना साहस है?" तात्पर्य क्रान्ति-मूर्ति नारी से था और दिग्दर्शक को सम्भवत: रुचिकर प्रतीत हुआ। उसने पर्वत की ऊँची ऊँची चोटियों के मध्य छिपे हुए नारी-जीवन एवं उसके हृदय की सार्थक भावनाओं को 'स्नेह' की आहुति भेंट करने के लिये शीतल रमणीय काश्मीर की उन सौन्दर्यमयी घाटियों की एक शुष्क-सी कहानी प्रस्तुत करने का उपक्रम किया, जहाँ की नारियाँ आज अपनी स्वतंत्रता के रक्षार्थ अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित, अपने हृदय में स्वाभिमान की मूर्ति स्थापित करके शत्रुओं के वक्षस्थलों पर टूट पड़ी हैं। इसी वातावरण का सम्पूर्ण समाधान, श्री केदार शर्मा ने ओरिएन्टल पिक्चर्स, के नवीन सृजन "सोहागरात" में प्रदर्शित किया है।

प्रस्तुत चित्र की कथावस्तु के प्रारम्भ पर दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता है कि कहानी षड्यन्त्र-प्रधान होगी तथा नवीनता के संग्राम में सफल होगी, परन्तु दुर्भाग्य-वश यह भी भारतीय चल-चित्रों के प्रेम—का बेसुरा राग अलापने लगती है। माँ, लाजो की मृत्यु के पश्चात् उसका सौतेला लोभी एवं क्रूर पुत्र, राहू अपने भोले सौतेले भ्राता, बेली को मृत्यु की मीठी नींद सुला देने के लिये एक वृद्ध पुरुष, जग्गू को लोभ देकर उस ग्राम के समीप के वन में भेजता है। यद्यपि मार्ग में जग्गू बेली को ......, परन्तु व्यर्थ। वह पागल की नाईं बेली को त्याग, कर राहू से भेंट करने पर यह कह देता है कि उसने बेली को......। सत्यता का ज्ञान होते ही राहू, बेली और जग्गू को चट्टान से सरोवर में फेंककर गोली मार देता है। पीड़ित जग्गू अपने गृह जाता है, जहाँ उससे उसकी तरुण पुत्री, कम्मो से भेंट होती है और दूसरी ओर पिता की आज्ञानुसार वह मूर्च्छित बेली को सरोवर के किनारे से उठा लाती है। एक घटनावश, बेली कम्मो की जमींदारिन की पुत्री, पार्वती से ...... और कम्मो के प्रति शून्य रहता है। एक ओर उनकी प्रणय-लीला पूर्ण यौवन पर आसीन होती है; और दूसरी ओर राहू, पार्वती का विवाह बनावटी बेली से निश्चित कर देता है।

एक दिन पार्वती और बेली को प्रत्यक्ष प्रणय-लीला करते देखकर पार्वती की माँ उसे 'मुंशी' के पद से च्युत कर कोड़ों से पिटवाती है। कम्मो को उनके प्रेम का अवश्य ज्ञान होता है, परन्तु वह उनसे प्रतिकार लेने के स्थान पर ठीक पार्वती के विवाह की रात्रि उनके भाग

फिल्म संसार की प्रसिद्ध अभिनेत्री बेगमपारा।

जाने में सहायता कर एक नौका द्वारा अपने गृह की ओर जाती है। जमींदारिन के समस्त सेवक पार्वती को ढूँढने निकलते हैं। दुर्भाग्यवश राहू की गोली कम्मो के लगती है। इसी समय राहू के कुचक्रों का उद्घाटन होता है और वह...।

कम्मो जिस स्थान से बेली को ले गई थी, वहाँ से आज उसे उसकी पत्नी सहित विदा कर अपने घर आती है। कम्मो के अनुग्रह करने पर उसका पिता विदा-गीत सुनाता है। गीत सुनते-सुनते वह भूखी ही सदैव के लये मृत्यु-देवी की गोद में...। पिता पुत्री को उठाने का प्रयत्न करता है, परन्तु खुले अधरों और तीर के समान तने नेत्रों को देखकर वह पुत्री के शव पर फूट-फूटकर रोने लगता है। पार्वती के साथ बेली का पाणि-ग्रहण हो जाने के पश्चात् वह कंगन सहित शान्त मूर्ति चिता के समीप आता है। पिता निर्जीव (परन्तु अमर) कम्मो को कंगन पहनाकर उसके कपोल पर टीका लगा देता है—कहीं किसी की कुदृष्टि न पड़ जाय और...।

इधर कुछ दिनों से हमारे चल-चित्र के कथाकारों एवं निर्देशकों पर आडम्बर-मय एवं कामुक नामकरण करने के भूत ने विशेषरूप से कृपा की है, जो देश के प्रति विश्वासघात है। उदाहरणस्वरूप 'साजन', 'शहीद', आदि को ही ले लीजिये। केदार शर्मा ने अपने चित्र का नाम "सोहागरात" रखना उचित समझा। यद्यपि प्रस्तुत चित्र की कहानी को अत्यन्त सुन्दर ढंग से एवं लघु रूप में प्रदर्शित किया जा सकता था, परन्तु कहानीकारों ने अपनी अयोग्यता का परिचय देना अत्यन्त आवश्यक समझा, जिसके कारण चित्र में अनेक त्रुटियाँ उपस्थित हो गई हैं। उदाहरणार्थ—पार्वती और बेली का पुन: लौटकर आना, उनका विवाह होना, कम्मो का इतना अधिक अल्हड़ होना, बेली का शून्य रहना, इन घटनाओं में जमींदार के सम्बन्धियों का कोई अभिनय न होना, जग्गू का इतने शीघ्र अपना घर तथा अपनी पुत्री को पहचान लेना, आदि।

साथ ही दृश्य-दृश्यावलियाँ लेखन में शर्मा जी ने माँ और पुत्री के साथ निकृष्ट हास-परिहास, कम्मो का अपने पिता से इतना स्वतन्त्र रहना तथा बेली द्वारा पार्वती के चरणों का चुम्बन और कम्मों द्वारा बेली के तलवे का चुम्बन, आदि का चित्रण कर पतन का ज्वलंत उदाहरण उपस्थित किया है। संवादकार श्री केदार शर्मा ने यद्यपि कई स्थानों पर अत्यधिक मार्मिक संवाद की रचना की है, परन्तु अनेक स्थानों पर 'जवानी...जवानी' की रट तथा पिता-पुत्री व माँ-पुत्री के मध्य संवादों ने मजा किरकिरा कर दिया है। यद्यपि दिग्दशक महोदय ने पर्वतीय भूमि की कहानी का सहारा लिया है, परन्तु भाषा पूर्णतया हिन्दुस्तानी! केवल एक स्थान पर काश्मीर के एक वृक्ष का नाम लेकर पूर्ण देश की ओर संकेत किया है। कुछ गीतों की ध्वनियाँ अत्यन्त घिसी एवं पुरानी होने के कारण अत्यन्त नाटकीय एवं गतिहीन दृष्टिगोचर होती हैं।

यद्यपि इसमें सन्देह नहीं है कि श्री केदार शर्मा जी की नवीन भेंट गीताबाली ने कम्मो की भूमिका में प्रशंसनीय अभिनय किया है, परन्तु उसे इतना अधिक स्वतंत्र प्रदर्शित कर उन्होंने समुद्र की मर्यादा त्याग देने के लिये बाध्य किया है। नायक बेली की छाया में भरत भूषण ने असफल कार्य किया है। साथ ही रहस्य-मय संगीत ने आपके अभिनय पर कीचड़ उछालने का प्रयत्न भी किया है। तरुणी पार्वती के आवरण में वृद्धा बेगम पारा ने असुन्दरता का ही परिचय दिया है। पार्वती की माँ की कल्पना में राधा ने अत्यधिक रसहीन अभिनय अभिभूत किया है। राहू की काया में एस० नजीर ने उल्लेखनीय कार्य किया है। जग्गू के अभिनयकार ने सराहनीय कार्य किया है।

श्री केदार शर्मा जी ने अपना एवं दर्शकों का मनोरंजन करने के लिये ही गीताबाली को सिनेमा-जगत् को भेंट किया है। क्योंकि उन्होंने उसे इस रूप में प्रदर्शित किया, जिसमें अन्य निर्देशकों को सबक मिले। वास्तव में दिग्दर्शक ने बेगम पारा को पार्वती के रूप में प्रदर्शित कर बासी कढ़ी में उबाल लाने का प्रयत्न किया है। दिग्दर्शक ने काश्मीर की कहानी का अवश्य चयन किया है, परन्तु वहाँ की भाषा, बर्फीली चोटियों, वहाँ के व्यवहारों, आदि को बिना पानी के ही निगल गये हैं।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज (गया)

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या काश्मीर-विभाजन होगा ?

(पेज ७ का शेष)

काश्मीर-कमीशन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और इस प्रकार अपनी शांतिप्रियता का परिचय दिया। पाकिस्तान-सरकार ने यह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। पाकिस्तान-सरकार को जनता में विश्वास न था। वह अपनी फौजें काश्मीर से नहीं हटानी चाहती थी और उसने अत्यन्त निर्लज्जतापूर्वक काश्मीर-कमीशन का शांति-स्थापना-सम्बन्धी प्रस्ताव ठुकरा दिया।

अन्त में झुकना ही पड़ा

काश्मीर-कमीशन के सभी सदस्यों को पाकिस्तान-सरकार की इस अस्वीकारोक्ति से बड़ा खेद हुआ। उधर सितम्बर में पेरिस में संयुक्तराष्ट्र-संघ का खुला अधिवेशन होनेवाला था। उस अधिवेशन में कमीशन अपने कार्य की रिपोर्ट संघ के समक्ष रखनेवाला था अस्तु रिपोर्ट तैयार करने के लिए वह जेनेवा चला गया। सितम्बर और अक्टूबर भर संयुक्तराष्ट्र संघ का अधिवेशन चला किन्तु काश्मीर कमीशन की कोई रिपोर्ट सामने नहीं आई। ३ या ४ नवम्बर को जब अधिवेशन समाप्त हो गया तो उसके कुछ दिन बाद अत्यन्त नाटकीय रीति से रायटर ने पेरिस से यह समाचार समुद्री तार भेजा कि सर गिरिजाशंकर वाजपेयी और सर जफरुल्ला खां में काश्मीर के सम्बन्ध में कोई समझौता हुआ है। अब तक काश्मीर में युद्ध बराबर चल रहा था और भारतीय सेना विमान-वाहिनी के वीरतापूर्ण सहयोग द्वारा बराबर रण स्थलों में विजय प्राप्त करती जा रही थी। विशेषकर ह्रास आदि की घटनाएं तो उल्लेखनीय हैं। पाकिस्तानी सेना का नैतिक ह्रास हो रहा था। पराजय हो रही थी। इन्हीं सब तत्वों ने मिलकर पाकिस्तान सरकार को उसकी दुर्बलताओं और अनैतिक पक्ष से परिचित कराया। परिणामस्वरूप, सुरक्षा-परिषद् में काफी चिल्ल-पों करने के बाद भी जब सर जफरुल्ला के हाथ कुछ न पड़ा तो अन्त तोगत्वा वाजपेयी-जफरुल्ला समझौता हुआ। इसी समझौते के फलस्वरूप गत पहली जनवरी की आधी रात को जब बारह बजने में केवल एक मिनट रह गया था उस समय समस्त पाकिस्तानी मोर्चे और भारतीय सेनाओं के मोर्चे शांत हो गए। युद्ध बन्द हो गया।

युद्धबन्दी के बाद

युद्धबन्दी काश्मीर-कमीशन के प्रस्ताव की भूमिका मात्र है। अभी तक जो समाचार मिले हैं उनके अनुसार दोनों सेनाओं के मोर्चे बिलकुल शान्त हैं। इसका अर्थ यह है कि पाकिस्तान की सेना में लुटेरे अफरीदी और डाकू कबाइली जैसे अनुशासनहीन तत्व नहीं हैं और यह सभी पूर्ण सैनिक अनुशासन में हैं, अर्थात् इन सबको हटाने में पाकिस्तान सरकार को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। किन्तु युद्ध स्थगित हो जाने के बाद कौन सरकार पहले कदम उठाएगी, इसकी घोषणा न तो भारत-सरकार की ही ओर से की गई है और न पाकिस्तान की ही ओर से, और काश्मीर-कमीशन भी अब तक मौन है। नेहरू जी भी अपने भाषण में युद्ध-बन्दी के बाद क्या होगा, इस विषय को टाल गए और पाकिस्तान ने भी अपनी प्रेस-विज्ञप्ति में यह नहीं कहा है कि उसने किन आधारों पर युद्ध बन्द करना स्वीकार किया है ? अथवा वह अब अपनी फौजें काश्मीर से हटावेगा भी या नहीं ?

वस्तुस्थिति क्या है ?

वस्तुस्थिति यह है कि इस समय काश्मीर के एक भाग पर पाकिस्तान का अधिकार है और शेष स्थान पर काश्मीरी जनता के नेता शेख अब्दुल्ला का शासन है। शेख-अब्दुल्ला द्वारा शासित प्रदेश की रक्षा के लिये भारतीय सेना तैनात है। जहाँ तक शेख अब्दुल्ला द्वारा शासित प्रदेश का सम्बन्ध है काश्मीर की नेशनल कान्फ्रेंस इस बात की घोषणा कर चुकी है कि वह काश्मीर का विलयन भारतीय संघ में ही चाहती है। शेख अब्दुल्ला ने अभी हाल ही में जम्मू नगर में जो भाषण दिया था उसमें उन्होंने कहा था कि "भारत एक असाम्प्रदायिक राज है। हम काश्मीरी जिन्ना के दो राष्ट्रों के सिद्धान्त में विश्वास नहीं करते। हमारा प्रजातन्त्र पर विश्वास है, क्योंकि प्रजातन्त्र द्वारा ही हमारी स्वतन्त्रता का अस्तित्व सुरक्षित रह सकता है। हम अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करना चाहते हैं और यह अनुभव करते हैं कि भारत के साथ रहकर हमारी स्वतन्त्रता सुरक्षित रहेगी, इसीलिए हम भारत में विलयित होने का निश्चय कर चुके हैं।" इसलिए यह तो स्पष्ट है कि शेख अब्दुल्ला जिस जनता के विश्वासपात्र प्रतिनिधि हैं वह क्या चाहती है, किन्तु काश्मीरी के कुछ शेख अब्दुल्ला विरोधी और साम्प्रदायिक तत्वों पाकिस्तान द्वारा हड़पे गए प्रदेश में शरण ग्रहण की है। इन लोगों का पाकिस्तानी प्रदेश में बहुमत हो सकता है। अस्तु, यदि जनमत संग्रह के पूर्व काश्मीर-कमीशन के प्रस्ताव का दूसरा भाग कार्यान्वित न हुआ तो काश्मीर के टुकड़े होने की सम्भावना है। इसलिए पाकिस्तान की फौजों का हटाया जाना बड़ा आवश्यक है। हमारा विश्वास है कि भारत-सरकार इस मामले में दबेगी नहीं और सख्ती के साथ काश्मीर-कमीशन का प्रस्ताव कार्यान्वित करवाएगी।

काश्मीर-समस्या यदि शान्तिपूर्वक निपट गई तो इससे न केवल पाकिस्तान और भारत को ही लाभ होगा, प्रत्युत एशिया की एकता में वृद्धि होगी और समस्त एशियाई राष्ट्र एक होकर डच साम्राज्यवादियों तथा डचों के अन्य समर्थकों और हिमायतियों का विरोध कर हिन्दएशिया की ही नहीं बल्कि आत्मरक्षा करने में भी समर्थ होंगे।

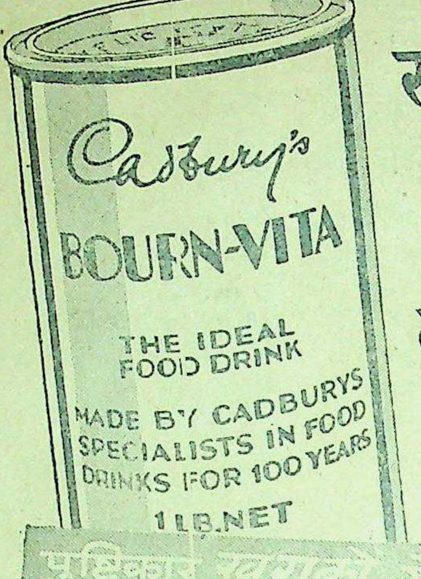

स्वादिष्ट है बढ़िया है!

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादान ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मज़ेदार होता है कि इससे हाजमा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

केडबरी का

बोर्न-विटा

केल्शियम और ग्लूकोज से भरपूर

K. B. I

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मंगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय विहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पद परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—अ० परिवारिक १।). बायोकेमिक १॥) मेटे मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) रेड सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जाएँगी डा० ख० माफ। अमे दवाइयां ३०-=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित शीशो का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।

(१) बृ० इजेक्सन चिकित्सा ३)। बृ० अ० परिवारिक चिकित्सा ६)।

नोट: —बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—

संरक्षक—राय साहब डा० यदुवीरसिंह एम० डी० एस० (U.S.A.)

विज्ञापन ही व्यापार का सर्वोत्तम साधन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

काश्मीर में युद्ध बंद कर दिया गया है। इँगलैंड में सुना कि चर्चिल ने दूसरी जनवरी को भोजन नहीं किया।

* * *

विधान-परिषद् में कुछ लोगों ने यह प्रस्ताव किया कि दो सभाओं की आवश्यकता नहीं है। ठीक ही कहा जब एक पत्नी के लिये नियम बन रहा है तब दो सभाओं के अधीन कैसे कोई रह सकता है?

* *

अम्बेडकर महोदय पुराने विचार के आदमी ठहरे। पुरानी अवस्था में उन्होंने विवाह भी किया है; इसलिए उन्होंने कहा कि अभी भारत में पुरानी ही प्रथा रहेगी।

* * *

बिहार की केन्द्रीय सरकार ने दो करोड़ चालीस लाख सहायता प्रदान की है। इससे अधिक अन्न उपजाया जायगा। आशा है इसके द्वारा छीपा इत्यादि वितरण करने में कठिनाई न होगी।

—अगड़धत्त शर्मा

ने कब विकसित की। बाहर के लोग वहाँ जाकर यह कृत्य करें इस पर तो आश्चर्य ही हो सकता है।

* * *

पंडित जवाहरलाल का कहना है कि जनता जो भाषा बोलती है वही राष्ट्रभाषा होगी। वहाँ की जनता कटक की कि अटक की; कैलाश की कि कन्याकुमारी की।

* * *

हरदोई के पास २५ बोरा रुई किसी ने रेलगाड़ी से गायब कर दी। अवश्य ही यह खबर झूठ जान पड़ती है क्योंकि सरकारी किसी विभाग का व्यक्ति ऐसा निकम्मा नहीं है कि वह चोरी होने दे या चोरी करे।

* * *

कुछ लोगों का कहना है कि फिल्मों में देवताओं का अभिनय न किया जाय। सम्भवतः इसलिये कि देवियों की बहुतायत में देवताओं का क्या स्थान हो सकता है।

* * *

पंडित भोपटकर कहते हैं कि हिन्दू सभा साम्प्रदायिक संस्था है किन्तु साम्प्रदायिकता का प्रचार नहीं करती। ठीक कहा उन्होंने। अफीम में नशा होता है किन्तु उसके बीज पोस्ते में नहीं होता।

* * *

'ब्लिज' को पता चला है कि अस्वस्थता के कारण श्रीमती सरोजिनी नायडू गवरनरी छोड़ेंगी। यदि उन्हें किसी विदेश में राजदूतिका बनाकर भेज दिया जाय तो स्वास्थ्य भी सुधर जाय और एक पुरानी देश-सेविका का सहयोग भी मिलता रहे।

* * *

एक समाचार है कि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति चिंताजनक है। कोई महान् व्यक्ति यह बता देते तो बड़ी दया होती कि कहाँ भारतीय चिंता से मुक्त हैं?

* * *

बलिया में आजकल चोरी बहुत होने लगी है। सबको इस पर आश्चर्य हो रहा है। पता नहीं यह कला वहाँ के लोगों

नहीं

लेखक श्री 'बेढब' बनारसी

कोना कोना मैंने ढूंढा रहने को कहीं मकान नहीं,
हो गई भीड़ इतनी प्रियतम के दिल में भी स्थान नहीं,
उड़कर तुम तक आ जाता, पङ्ख नहीं हैं, पास विमान नहीं,
कोई सरकारी मित्र नहीं, है सरकारी बरदान नहीं;
जीवन चरित्र पढ़कर जग में होता कोई विद्वान नहीं,
महिला चरित्र अध्ययन करो वे पढ़े इसे कुछ ज्ञान नहीं,
किसका भय मत संकोच करो यह हृदय-हृदय का सौदा है,
यह तो चोरी की बात नहीं होगा इस पर चालान नहीं;
अधरों को लाल अगर करना है रगड़ो लिप-इसटिक इस पर,
गन्दी आदत है बकरी सी तुम प्रिये चबाओ पान नहीं,
कल पाँच बजे से आठ बजे तक खड़ा तुम्हारे द्वार रहा,
इतना तो ध्यान रहे प्रियतम, मैं प्रेमी हूँ दरबान नहीं,
यदि युग का साथी बनना है छोड़ो संध्या, पूजा, वंदन,
इस युग की यही पुकार सखे भगवान नहीं, भगवान नहीं,
अधरों को लाल नहीं रंगा, है पाउडर नहीं कपोलों पर,
छूरी तो तुम हो राजिस की, है लेकिन उस पर शान नहीं;
देवता चमकता चाँदी का सोने की सुंदर देवी हो,
इसके अतिरिक्त किसी पर अब लग सकता बेढब ध्यान नहीं।

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो –) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

भारतीय समाजवादी दल
(पेज ५ का शेष)

समाजवादी दल का लघुतम तत्त्व सेल हैं। ये वार्डों में काम करते हुए वार्ड समितियों का चुनाव करते हैं और वार्ड समितियाँ प्रान्तीय कमेटियों के लिये प्रतिनिधि चुनती हैं। परन्तु कार्यकारिणी का चुनाव दल की साधारण सभा द्वारा होता है।

कांग्रेस एवं समाजवादी दल का सम्बन्ध आपस में कभी भी समन्वयात्मक नहीं रहा। इन्होंने मुस्लिम लीग को खुश करने की कांग्रेसी नीति का तीव्र विरोध किया और वयस्क चुनाव पद्धति से निर्वाचित विधान परिषद् एवं भारत में समाजवादी लोकतन्त्र की अविलम्ब स्थापना की माँग की। लेकिन यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि समाजवादियों ने प्रान्तीय व केन्द्रीय सरकारों में जरा भी उत्तरदायित्व नहीं लिया बल्कि उनकी तीव्र आलोचना जारी रखी। फलस्वरूप कांग्रेस के उच्च अधिकारियों ने समाजवादियों की इस नीति का कठोर शब्दों में विरोध किया। कांग्रेस की अधिकृत नीति यह थी कि यदि समाजवादी दल कांग्रेस के साथ सहयोग बनाये रखना चाहता है तो सर्वप्रथम कांग्रेस की नीति की इस प्रकार की अननुशासनात्मक आलोचनाओं का परित्याग करे। अपने दल के लिये अलग धन संग्रह न कर कांग्रेस के फण्ड से ही काम चलाये। इस प्रकार समाजवादी दल एवं उसके पितृ संगठन के सम्बन्ध निरन्तर गिरते गये। नासिक सम्मेलन ने कांग्रेस से सम्बन्ध विच्छेद कर सब प्रकार की कल्पनाओं का अन्त कर दिया और समाजवादी आज एक अलग राजनैतिक दल संगठन में व्यस्त हैं। इन्होंने म्युनिसिपल एवं धारासभा के चुनावों में कांग्रेस के विरुद्ध संघर्ष करते हुए इस दिशा में कार्य शुरू कर दिया है।

यह अत्यन्त सौभाग्य की बात होगी यदि कांग्रेस एवं समाजवादी दल कम से कम कुछ समय के लिये मिलकर इस शिशु राष्ट्र भारत का निर्माण एवं परिवर्द्धन करें। यह अभी भी कठिन नहीं है। दोनों भिन्न भिन्न मार्गों के अनुयायी हैं। सर्व प्रथम कौन दूरदर्शिता, संगठन शक्ति एवं प्रतिभा का परिचय देता है यह देखना अभी शेष रह गया है।

पत्नी भोजन बनाने में असमर्थ थी।

क्रूशन ने उसके स्वास्थ्य एवं उत्साह को पुनः प्रदान किया।

सरला बहुत थकी रहती थी। वह सायंकाल भोजन भी नहीं बना सकती थी। उसका पति जब शाम को कार्यालय से वापस आता था तो उसकी सुस्ती के लिए खरी खोटी सुनाया करता था। एक दिन शाम को उसने अपनी एक सहेली को अपनी दुःखगाथा सुनाई। उसकी सहेली ने उसको सलाह दी—जलपान के पूर्व प्रातःकाल क्रूशन का सेवन करो। तीन सप्ताह के अन्दर ही सरला बिल्कुल बदल गई। मौन और दुःखी रहने के बजाय अब वह प्रसन्न एवं संजीदा थी और घर के सभी काम काज करने में समर्थ बन गई। सायंकाल भोजन का समय दिन का सबसे अधिक सुखदायक समय बन गया।

क्रूशन का मधुर एवं प्रभावपूर्ण कार्य रक्त-शोधन की सीमा से भी आगे आगे जाता है। यह रक्त स्रोत के जरिये आपके रक्त में बलवर्द्धक प्रभाव डालता है। और शरीर की प्रत्येक नस मजबूत बनती है। साथ ही साथ यह शक्ति एवं स्वास्थ्य का संचार करता है। लाखों व्यक्ति जानते हैं कि क्रूशन वह असीम आनन्द एवं स्वास्थ्य प्रदान करता है जो जीवन को भार मानने और आनन्दमय जीवन के महान् अन्तर को स्पष्ट करता है।

आज ही क्रूशन खरीदिये। सर्वत्र प्रत्येक दवाई की दूकान पर पीले कागज की तख्ती के डिब्बे में मिलता है। मूल्य १||=)

आप भी
क्रूशन से लाभ उठाइये

Ad. No. KsID. 5 Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'तलाक' समाज के लिये घातक

(पेज ६ का शेष)

का कानून बन जायगा और वह गार्हस्थ्य-जीवन की शृंखलाओं को तोड़कर उन्मुक्त विहार करेंगे पर प्रत्येक जाज्वल्यमान वस्तु सोना नहीं होती (All that glitters is hot gold) यदि इसमें शाश्वत सुख होता, चिर शान्ति होती तो यूरोप में ऐसी परिस्थिति न होती कि आज विवाह हुआ और कल तलाक। एक सज्जन ने मुझसे कहा था, "तलाक में जीवन की प्रगति निहित है। यदि तलाक के अनन्तर दूसरा विवाह करने पर भी मनुष्य का जीवन सुखी नहीं है तो तीन, चार, पाँच, छः.........विवाह कर लेने चाहिये।" तो क्या मानव-जीवन केवल विवाह करने और तलाक देने के ही लिये है। मैं नहीं समझ पाती कि इस प्रकार विवाह और विच्छेद में संलग्न रहनेवाले व्यक्ति का जीवन प्रगतिशील कैसे हो सकता है? उसके जीवन में सदा प्रेमाभिनय होता ही रहेगा। जीवन में प्रेम के नाटक के एक अङ्क के समाप्त होने पर दूसरे, तीसरे, चौथे का क्रम चलता ही रहेगा। दिन प्रेम-पत्र लिखने में व्यतीत होंगे और रात तारे गिनने तथा दीर्घ निःश्वास लेने में। ऐसे व्यक्ति को जीवन की प्रगति के लिये अवसर कहाँ मिलेगा?

एक मासिक पत्र में मैंने पढ़ा था, 'तलाक का कानून बन जाने पर भ्रूण-हत्या और दुराचार की कमी हो जायगी।' विवाहिता स्त्री के विषय में तो भ्रूण-हत्या का प्रश्न ही नहीं उठता, केवल कुमारी और विधवायें ही भ्रूण-हत्या की पाप-भागिनी बन सकती हैं—इसमें तो उनकी अपनी दुर्बलता है। विधवा-विवाह तो अब समाज में प्रचलित है ही विधवाओं को अवश्य ही दूसरा विवाह कर लेना चाहिये। यदि प्रत्येक विधुर विधवा से ही विवाह करने की शपथ ले ले तब तो विधवा-विवाह की समस्या ही हल हो जाये और भ्रूण-हत्या जैसे दुष्कृत्यों का अवसर ही न आये। कुमारियों के जीवन में यदि भ्रूण-हत्या का अवसर आता है तो इससे अधिक गर्हित कर्म ही क्या हो सकता है। कौमार्य की दुर्बलता का निराकरण तो तलाक नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त दुराचार की बात तलाक के पक्षपातियों को नहीं करनी चाहिये क्योंकि जहाँ सुख की खोज में विवाह और विच्छेद का क्रम चलता रहे, वहाँ भौतिक सुख और वासना-तृप्ति में ही जीवन की सफलता हो, वहाँ दुराचार नाम की कोई वस्तु नहीं रह जाती। उसके लिये तो केवल वैज्ञानिक सत्य ही वास्तविक सत्य होता है।

तलाक का मैं घोर विरोध नहीं करती। तलाक का प्रस्ताव पास होना चाहिए किन्तु उसमें संशोधन की आवश्यकता है। पुरुष को तो किसी भी कानून की आवश्यकता नहीं है—वह मुक्त है। नारी के लिये भी कुछ इस प्रकार की शर्तें होनी चाहिये कि जिस प्रकार पुरुष पत्नी के बंध्या होने और रोगिणी आदि रहने पर दूसरा विवाह कर सकता है उसी प्रकार नारी भी पति के कोढ़ी, पर स्त्री-गामी आदि होने पर दूसरा विवाह कर सके। इस प्रकार के नियम हमारी मनुस्मृति में हैं। उसमें पति और पत्नी दोनों को दूसरे विवाह के लिये समानाधिकार हैं। इस प्रकार का नियम-बद्ध कानून ही नारी-जाति और समाज के लिये कल्याणकारी हो सकता है।

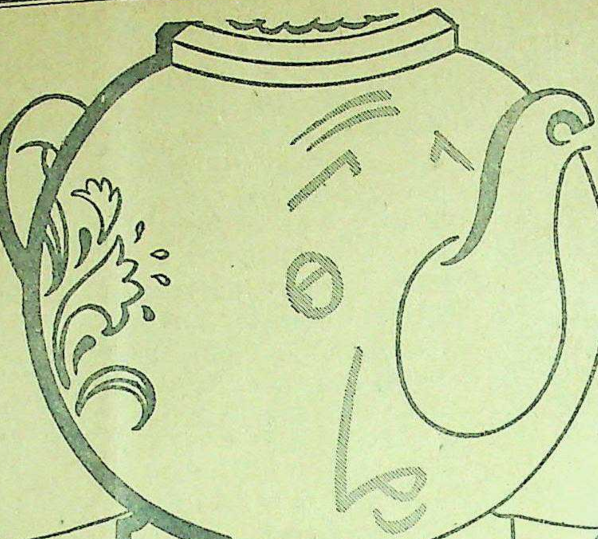

"उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और प्यालों में ढाले जाने के पहले ही चाय को खराब कर देते हैं। अच्छी चाय बनाने के लिये प्यालों में दूध डालना चाहिये, बर्तन में नहीं।"

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन् खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीमने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

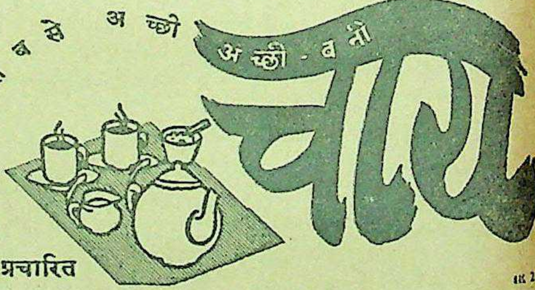

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

जयपुर सरकार ने निश्चय किया है कि रियासत में अब और शरणार्थी न आने दिये जायँ। सरकार की ओर से शरणार्थियों से भी अनुरोध किया गया है कि वे अब रियासत में आने की कोशिश न करें नहीं उन्हें यहाँ से वापस भेजने को विवश किया जा सकेगा। ऐसा इसलिये किया गया है कि जयपुर रियासत में शरणार्थियों की संख्या बहुत अधिक हो गई है।

* * *

जयपुर में ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियों के रजिस्ट्रार ने अपनी एक विज्ञप्ति में बताया है कि कुछ ऐसी कम्पनियाँ जो जयपुर राज्य के बाहर संगठित हुई हैं अपनी शाखाएँ और व्यवसाय केन्द्र बिना जयपुर-सरकार से पूछे जयपुर में खोल रही हैं। उनका ऐसा करना कानून के विरुद्ध है और उन्हें अपनी शाखाएँ और दुकानें खोलने के पहले जयपुर सरकार से आज्ञा प्राप्त कर लेना चाहिये, अन्यथा उनके विरुद्ध कार्रवाई की जा सकेगी।

* * *

सीकर इलाके के काश्तकारों की ओर से कुछ समय से राजस्व सचिव के पास इस आशय के आवेदन प्राप्त हुए हैं कि अच्छी वर्षा न होने की वजह से वहाँ पर अकाल पड़ गया है अतएव उन्हें लगान में छूट दी जाना आवश्यक है। सीकर इलाके के गाँवों की फसल की हालत तथा वहाँ के लगान की दरों को ध्यान में रखते हुए सीकर एडमिनिस्ट्रेशन को आज्ञा दी जा चुकी है कि लगान में छूट की जावे। इसके अनुसार जिन गाँवों में पैदावार नहीं हुई है, वहाँ पर लगान में छूट दी जा रही है।

* * *

एक सरकारी आज्ञा में कहा गया है कि जिस किसी को कोढ़ रोग हो रहा है वह जयपुर शहर में बिकने के लिये कोई खाने पीने या पहनने का सामान तैयार न करे, किसी सार्वजनिक कुएँ या तालाब में न तो स्नान करे न वहाँ कपड़े धोये और न वहाँ से पानी निकाले, इसके अतिरिक्त किसी भी सार्वजनिक सवारी में न चढ़े और न उसे चलाये। सरकार ने जयपुर से ४ मील दूर पुराने घाट के आगे एक कोढ़ विश्रान्ति-गृह खोला है। जयपूर शहर से कोढ़ी वहीं भेजे जाया करेंगे। जयपुर सरकार ने अपने मेडिकल विभाग के ४ अधिकारियों को इस संस्था का निरीक्षक नियुक्त किया है।

* * *

लेपर असाइलन में एक मृतक का माल गवन करने के अपराध में जयपुर सरकार ने वहाँ के एक मेडिकल अफसर, एक कम्पाउन्डर, एक गार्ड, एक वार्ड बॉय और एक हरिजन को नौकरी से अलग कर दिया है।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर राजस्थान विश्व विद्यापीठ के वाइस चांसलर तथा प्रसिद्ध सेठ श्री लाल मोहता ने अपनी मुलाकात में बताया कि उन्होंने राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री गोकुल भाई भट्ट को एक विस्तृत पत्र लिखकर कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। श्री मोहता जी ने लिखा कि राजपूताना प्रांत की जो सरकार बने, उस पर कांग्रेस का नियन्त्रण रहना चाहिये। इसके लिए राजपूताना के बड़े और प्रभावशाली नेताओं का सरकार से बाहर रहकर मन्त्रिमंडल का मार्ग प्रदर्शन करते रहना चाहिये। साथ ही साथ प्रांतीय भावी सरकार को अपने लिए एक सलाहकार समिति का निर्माण करना चाहिये। इसमें राजपूताने के विभिन्न वर्गों के १०० के आसपास प्रतिनिधि मनोनीत किये जा सकते हैं। कांग्रेस इनको नियुक्त कर दे। यह सलाहकार समिति तब तक काम करती रहे, जब तक राजपूताना में एसेम्बली न बन जाय। मन्त्रिमंडल के ऊपर एक आई० सी० एस० व्यक्तियों की शासन-परिषद् बनाये जाने की जो चर्चा चल रही है, उसका श्री मोहता जी ने विरोध करते हुए कांग्रेस के शासन के विरुद्ध बताया है। श्री मोहता जी इस सम्बन्ध में श्री भट्ट से मिलेंगे भी सही।

विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि संयुक्त राजस्थान की सरकार ने उदयपुर की प्रसिद्ध संस्थाओं को निम्न प्रकार से सहायता दी है

राजस्थान विश्व विद्यापीठ २४०००) वार्षिक विद्याभवन ५०,०००) महिलामंडल २०,०००) रा० म० विद्यालय १३,५००) इस प्रकार इन संस्थाओं की जो रकम वार्षिक सहायतास्वरूप स्वीकार की है, वह बहुत ही कम है।

विश्वस्त रूप से मालूम हुआ कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गिरफ्तार हड़तालियों ने आठ दिन से भूख-हड़ताल कर रखी है। भूख हड़ताल जेल में दुर्व्यवहार के विरोधस्वरूप की जा रही है। अभी तक सरकार से कोई कदम नहीं उठाया गया है।

संयुक्त राजस्थान संघ के कर्मचारी संघ की एक जनरल बैठक ता० ३ जनवरी को उदयपुर में हुई। इसमें सरकार की नीति की आलोचना की गई तथा असन्तोष प्रकट किया गया एवं कर्मचारी संघ की माँगों को स्वीकार करने की जोरदार शब्दों में माँग की गई है।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर समस्त भारत के हस्तलिखित पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों एवं कुमार पत्रकारों की गति-विधियों को एक सूत्र में पिरोने हेतु भारत के कई प्रांतों के उत्साही कार्यकर्त्ताओं ने अ० भा० ह० पत्रकार संघ की स्थापना की है। अस्थायी चुनाव इस प्रकार से हुआ है--सभापति--श्री फतहचन्द्र शर्मा 'अराधक' (दिल्ली) उपाध्यक्ष—श्री घनश्याम अस्थाना (आगरा) सहेली सगठन उपाध्यक्षा—सुश्री पुष्पा सक्सेना 'पुष्प' (कानपुर) प्रधान मन्त्री—श्री नेमिचन्द्र जैन 'भावुक' (जोधपुर) संयुक्त मन्त्री—श्री गोवर्धन सोनी (सादड़ी) प्रचार-मन्त्री—श्री केशरीचन्द वैद्य (फलोदी) शेष कार्यकारिणी में अलग अलग प्रांतों से लिये गए हैं। पञ्जाब, उड़ीसा और मद्रास प्रांत के साथी व बहिन कार्यकारिणी के लिए अपने आपको स्वयंसेवक रूप में प्रस्तुत करें। सम्पादकगण शीघ्रता से विधान मँगवाकर सदस्य बनें।

पता—प्रधान कर्यालय, मिरची बाजार जोधपुर। --संवाददाता

* * *

हरिद्वार में एक व्यक्ति छः बोतल शराब लिये विष्णुघाट की ओर जा रहा था कि आबकारीवाले ने उसे पकड़ लिया परन्तु उसने दाँतों से आबकारी के सिपाही का हाथ काट उसे लोहू-लुहान कर भगने की कोशिश की; परन्तु थाने के दीवान के अचानक वहाँ आ जाने पर उसे वहीं गिरफ्तार कर लिया गया।

कनखल में दो मकानों पर आबकारीवालों ने छापा मारा जिनमें से एक मकान में आठ बोतल शराब और दूसरे से बाइस तोले चरस मिली। शराब को बरामदगी के समय कोतवाल साहब हरिद्वार भी मौजूद थे।

प्रताप नामी रिफ्यूजी लड़के को रेलवे स्टेशन हरिद्वार पर आबकारीवालों ने गिरफ्तार किया जिसकी तलाशी में १८ बोतल कच्ची शराब मिली। कहा जाता है कि यह लड़का देहरादून की ओर से बिना टिकट शराब लाया था।

--संवाददाता

* * *

पचमढ़ी - में श्री भोलाप्रसाद जी साहू, व श्री मोतीलाल जी जैन के प्रयत्नों द्वारा नगरी में एक पुस्तकालय खोला जा रहा है। जिसका नाम "जनता-पुस्तकालय" रखा गया है। पुस्तकालय की एक अस्थायी कमेटी ता० ६-११-४८ को मजदूर दफ्तर में बनाई गई। जिसको शीघ्र पुस्तकालय का विधान बनाने का कार्य सौंपा गया। "जनता पुस्तकालय" को एक सभा धनीराम बिल्डिंग में साथी श्री बालारामजी गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। सभापति जी प्रारम्भिक भाषण के उपरांत जनता पुस्तकालय के अस्थायी समिति के मन्त्री श्री मोतीलाल जी जैन ने पुस्तकालयों व जनता पुस्तकालय के प्रारम्भिक विकास पर प्रकाश डाला।

--मन्त्री

* * *

वर्धा के प्रभात सिंडीकेट की ओर से प्रो० दयाशंकर नाग, सहसम्पादक 'अर्थ-सन्देश' तथा अर्थवाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर के उप-आचार्य के आगमन पर एक जलपान का (पार्टी का) आयोजन किया गया। प्रो० नाग ने सिंडीकेट के कार्य की सराहना की। आपने कहा कि हिन्दी में इस प्रकार की संस्था की आवश्यकता है। हिन्दी के पत्र-पत्रिकाओं को तथा लेखकों को इस प्रकार के प्रयास में सहयोग देना चाहिए। डा० शहा, प्रो० गुप्ता०, प्रो० चांदु कर श्री० बटू, श्री बाबूलाल जैन तथा अन्य सज्जन उपस्थित थे। अन्त में प्रभात सिंडीकेट के सम्पादक श्री अयोध्याप्रसाद ने आभार प्रदर्शन किया।

—संवाददाता

* * *

कलकत्ता में ता० ६ जनवरी की सायं सम्मेलन कार्यालय में श्री काशीप्रसाद जी वैद्य के सभापतित्व में एक सभा हुई जिसमें सम्मेलन के तृतीय महाधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्रीअद्भुत शास्त्री ने अपनी स्वागत कारिणी घोषित कर दी—स्वागताध्यक्ष श्री अद्भुत शास्त्री स्वगत-मंत्री पं० कुमार शर्मा, प्रचार-मंत्री श्री हरि, हिसाब परीक्षक श्री महावीर कुमार जैन कार्य समिति श्री काशीप्रसाद जी वैद्य, श्री दौलतराम जी छाजेड़, श्री केशरदेव जी मुरारका, श्री श्यामसुन्दर जी प्रहलादका, श्री शुभकरण जी नाहटा, श्री विजयनारायण जी शुक्ल, श्री भैरवप्रसाद जी वैद्य।

संवाददाता

फोटो खींचने का अपूर्व साधन!

बाक्स प्लेट केमरा

सुन्दर, मजबूत, सस्ता। इस केमरे से आप आसानी से चाहे जिस दिलपसन्द चीज का मनोहर फोटो २।।×३।। इंच साइज के प्लेट पर खींच सकते हैं। बढ़िया फोटो न खिचे तो दाम वापस। केमरे के साथ प्लेट, कार्ड, मसाला और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त, मूल्य ८।) पैकिंग पोस्टेज १।।) रु०।

ओरियन्टल केमरा हाऊस, (एल० १), अलीगढ़ सिटी

नया चालान, नई डिजाइन

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर कम्पनियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई हैं। देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीवर मशीन। प्रत्येक घड़ी की गारंटी ५ साल।

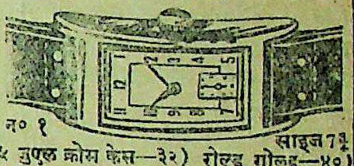

नं० १ साइज 7½

५ जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड—४०)

७ „ „ फेस—३५) रोल्ड गोल्ड—४५)

१५ „ „ फेस—५२) रोल्ड गोल्ड ६२)

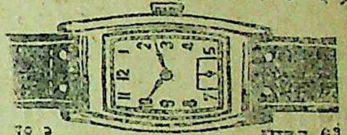

नं० २ साइज 6¾

५ जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड—४२)

७ „ „ —३८) रोल्ड गोल्ड—४७)

१५ „ „ —५५ रोल्ड गोल्ड—६५)

नं० ३ साइज 10½

५ जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३०)

१५ „ „ „ —४८) रोल्ड गोल्ड—६०)

१५ वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड—८५)

नं० ४ साइज 11½

क्रोम केस—१६) सेकण्ड कांटा की—१८)

सेण्टर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर—२२)

१५ जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५)

एलार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर—२०) बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से १२।।) प्रति सैकड़ा कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को. पो० ब० ११४२४ कलकत्ता

जनता से अपील

चित्रकूट की बूटी चित्रकूट ही से मँगाइये

स्वाँस (दमा) की प्राचीन जड़ी बूटी

१५० वर्ष की विश्वविख्यात (चित्रकूट दमा बूटी) की एक ही खुराक पूस पूर्णिमा ता० १७-१-४६ को रात्रि के समय खीर के साथ सेवन करने से नया व पुराना पाँचों प्रकार के (स्वाँस) दमा खाँसी सदैव के लिए जड़ से नष्ट हो जाता है। घर बैठे मँगाकर सेवन करिये। यहाँ आने पर दवा मुफ्त खिलाई जाती है।

पता—स्वामी दर्शनानन्द,
आयुर्वेदाश्रम,
पो० चित्रकूट (जि० बाँदा) यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य रघुवीर का परिभाषा-निर्माण

(पेज ८ का शेष)

अतः आज जब अखिल भारत के लिए वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण का प्रश्न है तब समस्त आर्य भाषाओं की जननी संस्कृत की शरण लेना उपयुक्त ही है। भारत जैसे विशाल देश के भिन्न-भिन्न प्रांतों की भाषाओं को एक शब्दावली के सूत्र से बाँधना अत्यावश्यक है। अन्यथा कुछ ही समय उपरांत भारत के वैज्ञानिक जो आज परस्पर सरलता से संपर्क में आ रहे हैं, और एक दूसरे के ग्रंथों, लेखों और खोजों से लाभ उठा सकते हैं, इन लाभों से न केवल वञ्चित ही हो जायेंगे। परन्तु भारत के वैज्ञानिक उन्नति के मार्ग में गहरी खाई बन जायगी। अतएव यह अत्यन्त आवश्यक है कि भारतीय शब्दावली के निर्माण में समस्त भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत के शब्दों और धातुओं का प्रयोग किया जाय। अतः श्री राहुल का यह कथन कि आचार्य रघुवीर जो पारिभाषिक शब्द बना रहे हैं वे हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती को सामने रख-कर नहीं बना रहे हैं, पूर्णतः भ्रांत है। आचार्य रघुवीर की शब्दावली का उद्देश्य भारतीय भाषाओं को भुलाना या उन्हें हीन समझना नहीं अपितु उनके वैज्ञानिक एवं साहित्यिक ग्रन्थों में एक सूत्रता लाना है। संस्कृत शब्दों के प्रयोग में भारतीय भाषाओं को तुच्छ दृष्टि से देखने की कल्पना श्री राहुल जी की मनगढ़न्त है। आचार्य रघुवीर जी ने ऐसा कभी नहीं कहा, वे तो भाषाओं के ही नहीं, किन्तु ग्रामीण बोलियों के भी बड़े प्रेमी हैं।

इस लेख में महापंडित राहुल सांकृत्यायन स्वयं कहते हैं कि "१२वीं सदी तक लोक भाषाओं में अपभ्रंश रूप की ओर प्रवृत्ति देखी जाती थी, उसके बाद फिर से शुद्ध संस्कृत के शब्द लिए जाने लगे और पिछले ३० वर्षों में हमारी भाषाओं ने इस दिशा में और भी प्रगति की है। यदि पिछली सात शताब्दियों में साहित्य ने ऐसी प्रगति की है तो उसका उत्तरदायित्व आचार्य रघुवीर के सिर मढ़ना कहाँ तक बुद्धिमत्तापूर्ण कहा जा सकता है?

राहुल जी का दूसरा कथन है कि आचार्य रघुवीर धातुओं और उपसर्गों के प्रयोग से ऐसे शब्द बना रहे हैं जिनका अर्थ पहले के प्रचलित अर्थ से भिन्न है। क्या संस्कृत-साहित्य में एक ही शब्द का अर्थ विज्ञान और साहित्य में एक दूसरे से भिन्न नहीं होता, उदाहरणार्थ निम्न शब्दों पर विचार कीजिये—

उच्चारण—(रूढ़ि अर्थ) शब्द का उच्चारण आयुर्वेद शास्त्र (सुश्रुत) में—पुरीपोत्सर्ग करना।

आलीढ—चाटा हुआ। अस्त्रशास्त्र में—वह स्थिति जिसमें बाण छोड़ने के समय दक्षिण पद आगे हो और वाम पद पीछे।

पूरण—पूरा करनेवाला, पूरक। गणित-शास्त्र में—क्रमिक संख्या।

आसुर—असुरविषयक। ज्योतिष शास्त्र में—दक्षिण दिशा स्थित तारागणों के समूह का नाम।

सैंधव—लवण। अश्वशास्त्र में घोड़ा।

उपर्युक्त उदाहरणों में रूढ़ि अर्थ, शब्द के शास्त्रीय अर्थ से सर्वथा भिन्न हैं। किसी भी भाषा में ऐसे अनेक शब्द होते हैं जिनका सामान्य और शास्त्रीय अर्थ भिन्न भिन्न होता है यहाँ तक कि एक ही शब्द से भिन्न भिन्न शास्त्रों में भिन्न अर्थ अभिप्रेत होते हैं। अतः यदि वशीकरण का साहित्य में प्रेमी को वशीभूत करने के अर्थ में प्रयोग होता है, तो वशीकरण का विज्ञान में किसी यन्त्र आदि को वश में करने के लिए प्रयोग में करने में क्या आपत्ति है, यह हम समझ नहीं सके। दूसरे यहाँ धातु के मूल अर्थ में परिवर्तन नहीं हुआ है—प्रसंग से सरलता से समझा जा सकता है कि कौन सा अर्थ अभिप्रेत है, उदाहरणार्थ महाकोष में-विद्युत की भट्ठी के ताप को ठीक ठीक रखनेवाले "टेम्परेचर कंट्रोलर" को "तापवशी" कहा गया है। दूसरे यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि दो समानार्थी शब्दों के लिए विज्ञान में भिन्न भिन्न शब्द भी प्रयोग करना आवश्यक होता है, यथा यह आवश्यक था कि कन्ट्रोल और रेग्युलेट में भेद किया जाय, अतः आचार्य रघुवीर जी के महाकोष में कन्ट्रोल को वशीकरण कहा है, परन्तु रेग्युलेट के लिए "नियमन" शब्द रखा गया है। वास्तव में जिस भ्रम की कल्पना राहुल जी ने की है उसकी कोई संभावना है ही नहीं। यद्यपि विज्ञान में ताप आदि के कन्ट्रोल के लिए वशीकरण शब्द का प्रयोग किया है; परन्तु शासन एवं अर्थशास्त्र में कन्ट्रोल के लिये नियन्त्रण शब्द का प्रयोग किया है। अतः कन्ट्रोल अफसर आचार्य रघुवीर जी की शब्दावली में—नियन्त्रण अधिकारी होगा, न कि वशीकरण अधिकारी। यहाँ पर कन्ट्रोल शब्द का विज्ञान और अर्थशास्त्र में भेद करना आवश्यक था, क्योंकि दोनों स्थानों में भिन्न भिन्न अर्थ अभिप्रेत हैं। इसी प्रकार यद्यपि उच्चाटन शब्द साहित्य में जादू टोने के अर्थ में आता है; परन्तु भागवत पुराण जैसे प्रामाणिक ग्रंथों में शकटोच्चाटन (गाड़ी को उल्टा देना) प्रयोग आया है। अतः आचार्य जी का शब्द उच्चाटन "ओवर टर्न" के लिए रूढ़ि के अनुकूल ही है।

अँगरेजी भाषा से ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जहाँ शब्दों के सामान्य या रूढ़ि अर्थ में आकाश-पाताल का अन्तर है, एवं एक ही शब्द विज्ञान की भिन्न भिन्न शाखाओं में भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे आंग्ल भाषा में फिक्सेशन (fixation) का सामान्य अर्थ है—act of fixing किन्तु रसायन शास्त्र में—" 'to render non-volatile', 'to combine a gas' " वाणिज्य में—to charter or provide freight for a vessel' धातु शास्त्र में—'to tine the hearth of a furnace with felting' शरीर विज्ञान में—'to kill, harden and preserve for microscopic study इत्यादि इत्यादि।

एक और सामान्य शब्द मोशन (motion) लीजिये। विधान सभा में इसका अर्थ "प्रस्ताव" (a formal proposal) किन्तु वैद्यक में दस्त (evacuation of bowls) है।

राहुल जी आचार्य द्वारा किये गये उपसर्गों एवं प्रत्ययों के उपयोग से बड़े खिन्न हैं, परंतु यह उनका दुराग्रह मात्र है। जहाँ साहित्य में २०-२५ हजार अधिक शब्दों का भी प्रयोग नहीं होता वहाँ विज्ञान में लाखों शब्दों की आवश्यकता होती है। इन लाखों शब्दों के निर्माण की समस्या प्रत्येक भाषा के समक्ष आती है और इस क्षेत्र में शब्द-निर्माण की रीति साहित्य से कहीं अधिक विस्तृत होती है। उदाहरणार्थ यूरोपीय भाषाओं में शब्द-निर्माण के लिये जो उपसर्ग, प्रत्यय और पद काम में लाये जाते हैं, उनमें से कई रूढ़ियों से सर्वथा स्वतन्त्र और विशेष प्रयोग के लिये ही निर्माण किये जाते हैं। विज्ञान के अतिरिक्त इन उपसर्गों, प्रत्ययों और पदों का साहित्य में कोई स्थान नहीं होता। उदाहरण के लिये हम अँगरेजी भाषा के कुछ वैज्ञानिक उपसर्गादि पर विचार करेंगे।

एट (ate) रसायन शास्त्र में लवणों और प्रलवणों के लिये प्रयुक्त प्रत्यय यथा—(Sulphate) सल्फेट, कार्बोनेट, (carbonate) आदि।

आइड (ide)—एक प्रत्यय जो रसायन शास्त्र में द्वयि संयोगों (binary compounds) के लिये प्रयुक्त होता है।

ईमिया—ग्रीक शब्द हैमा (रक्त) से रक्त की स्थिति यथा—फॉस्फेटेमिया, अनीमिया।

ओसिस—ग्रीक शब्द ओसिस से। स्थिति द्योतक प्रत्यय यथा—साइकोसिस, न्यूरोसिस।

बायो—ग्रीक शब्द बायो (जीवन) से। जीवन संबन्धी यथा—बायोलाजी, बायोकेमिस्ट्री।

लाइपो—ग्रीक लाइपोस (चर्बी) से, यथा—लाइपोइड, लाइपोकोम।

ग्राफ—ग्रीक—ग्राफीन (लिखना) से, यथा—फोटोग्राफ, ओटोग्राफ।

उपर्युक्त उदाहरणों में दिये गये प्रत्यय उपसर्ग और संयोजक रूप सर्वथा रूढ़ि निरपेक्ष हैं और सामान्य भाषा में प्रयोग में नहीं आते। परन्तु वैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये इन प्रत्यय-उपसर्गादिकों की रचना ग्रीक और लैटिन भाषाओं के आधार पर की गई है। अतः भारतीय भाषाओं में भी वैज्ञानिक शब्दों के निर्माण के लिए संस्कृत के प्राचीन उपसर्ग, प्रत्यय एवं संयोजक रूपों का प्रयोग अपरिहार्य हैं। यदि पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि प्रवर्तित मार्ग का अवलंबन—भारतीय भाषाओं के भंडार की वृद्धि करने में आज सहायक हो रहा है, तो इससे अधिक गौरव की वस्तु हमारे पूर्वजों के लिये क्या हो सकती है। यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जहाँ तक संस्कृत के प्राचीन धातु, उपसर्ग प्रत्ययादि का संबन्ध है, उनके प्राचीन आधारभूत अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है, अतः उनके अर्थ समझने में पाठकों को अत्यंत सुविधा होती है। साथ ही साथ यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि संपूर्ण महाकोष की रचना में संस्कृत की केवल ६०० धातुएँ प्रयुक्त की गई हैं जिनके संबंध में भाषा शास्त्रियों ने विग[त] १५० वर्षों की खोज के पश्चात्, य[ह] निश्चय किया है कि ये धातु भारत की सभी आधुनिक भाषाओं में सामान्यतः प्रयोग में आनेवाले सभी शब्दों में किसी न किसी रूप में आती रहती हैं, जिससे हाई स्कूल की योग्यता रखनेवाला एक विद्यार्थी लगभग इन सारे धातुओं के किसी न किसी अर्थ और प्रयोग से परिचित हो चुका होता है।

पाश्चात्य भाषाओं के उपर्युक्त उदाहरणों से एक और बात भी स्पष्ट है कि भारतीय और पाश्चात्य भाषाओं के प्रचलित सभी प्रत्ययों, पदादिकों का प्रयोग करने से भी विज्ञान के सब शब्दों का निर्माण नहीं हो सकता, अतः कुछ अभिनव प्रत्ययों की रचना भी आवश्यक होती है, उदाहरणार्थ रसायन के—ऐट, (सल्फेट, फास्फेट), आइट (सल्फाइट) (फास्फाइट),—आइड (सल्फाइड, फास्फाइड),— ऐन (मीथेन, इथेन, बूटेन), और —ईन (इथीलिन, मेथीलिन) आदि प्रत्ययों के समानार्थ भारतीय प्रत्यय निश्चय ही निर्माण करने पड़ेंगे। इन अर्थों में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्यय हमारी भाषाओं में अभी त[क] नहीं हैं।

यहाँ पर यह कहना अनुचित न होगा कि आचार्य रघुवीर की शब्दावली के संबंध में कठिन होने का जो आक्षेप है व[ह] सर्वथा निराधार है। अधिकांश भारतीय शब्दों को आंग्ल भाषा के शब्दों से यथा-संभव छोटा और सरल रखने का प्रयत्न किया गया है। उच्चारण में भी वे अधिकांश अँगरेजी शब्दों से सरल और सुगम हैं। परन्तु उनकी सर्वोपरि श्रेष्टता यह है कि वे सार्थक या अन्वर्थक हैं, जिससे विज्ञान का विद्यार्थी अत्यन्त अल्प समय में बहुत अधिक विद्या और विज्ञान का उपार्जन कर सकेगा। उदाहरणार्थ—पाश्चात्य भाषाओं में वृक्षों के जातियों के लिये निम्न शब्द प्रयुक्त होते हैं—यथा—Amaryllidaceae, Ampilid[ae], Ranunculacae, Euphorbiace[ae] आदि शब्दों के लिए आंग्ल भारतीय म[हा]कोष में सुदर्शनकुल, द्राक्षाकुल, जीरकुल, एरंडकुल दिये हैं। ये शब्द अँगरेजी शब्दों की अपेक्षा लम्बाई, उच्चारण की सरलता में भारतीय विद्यार्थी के लि[ए] बहुत सरल हैं। इसी प्रकार Acantho-cephala, acrodant, arachno[id] आदि के लिए कंटकपाल, कूटदंत, अष्टपाद शब्द प्रयुक्त हैं। इनके स्प[ष्टी]करण की आवश्यकता तक नहीं।

शेष अगले अंक में

मृगी (हिस्टीरिया) फिट की

विश्व-विख्यात अनुभव सिद्ध जड़ी

इस जड़ी को केवल एक ही बार ... के समय रोगी को सुघाने से छींक के ... ही काले रङ्ग का कीड़ा मर कर नि[कल] आवेगा और रोगी सदैव के लिए नि[रोग] हो जावेगा।

मिलने का पता :—

महात्मा-एस-के-दास

पो० चित्रकूट, (बाँदा)

रवि
यह
हमाम
HA
हम
दी टाटा
आप औ
यदि

चिन्ता नहीं
कीजिए
नेशनल फिर
१३, (

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
113450

राष्ट्रीय सम्पत्ति (३) चीन

७वीं, ८वीं और ९वीं शताब्दियों में चीन सम्पत्ति और वैभव के उच्चतम शिखर पर था। उस समय चीन एक प्रभावशाली और संगठित देश था। इस देश के निवासी सुखी थे और उन्होंने कला और संस्कृति के उत्थान में भरसक सहयोग दिया था। तत्व ज्ञान, धर्म और साहित्य में यह देश उच्च कोटि को प्राप्त था। काग़ज़ और लकड़ी के ब्लॉक से छपाई का देश की उन्नति में आवश्यक भाग था। चाय का पहली बार यहाँ आविष्कार हुआ था, रेशम बहुतायत से पाया जाता था और शिल्पकला तथा उद्योग-धन्धों ने बहुत उन्नति की थी।

आज एक सौभाग्यशाली हिन्द का निर्माण किया जा रहा है। किसी भी राष्ट्र के निर्माण के लिये धन की आवश्यकता होती है। यदि आप घरेलू कम-ख़र्ची और मित-व्ययिता द्वारा बचत करें और इस बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक सरकारी सिक्योरिटियों में लगाएँ तो आप ऐसी आवश्यक सम्पत्ति स्थापित करने में सहयोग देंगे। याद रखिये, राष्ट्रीय सम्पत्ति का संकलन देशवासियों की बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाई हुई बचत पर ही निर्भर है। ऐसा करने से आप अपनी भी सहायता करेंगे : बुद्धिमत्ता पूर्वक लगाई हुई बचत पर आप को अधिक ब्याज प्राप्त होगा और आप की यह पूँजी आप के बच्चों की पढ़ाई के लिये, और आप की तथा आप के कुटुम्ब की वृद्धावस्था को सुखद बनाने में सहायक होगी।

अपनी बचत को बुद्धिमत्ता पूर्वक लगा कर सुरक्षित बनाइए

नैशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।

अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकख़ानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए

जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित। AC.415

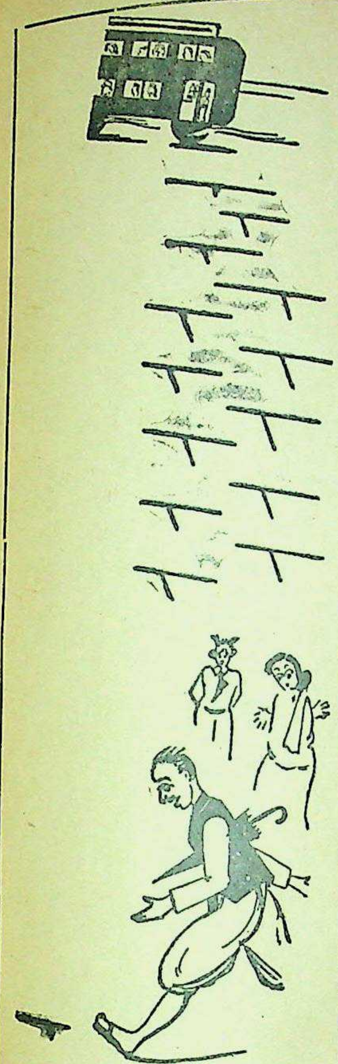

यह उतावली क्यों ?
हमाम साबुन से शीतल स्नान के लिये

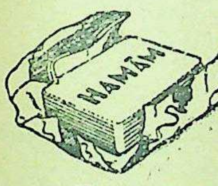

HAMAM
हमाम साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

आप अभिनेता हो सकते हैं

यदि आप सिनेमा में अभिनेता अथवा अभिनेत्री होना चाहें, और १००) से १५००) प्रतिमास पैदा करना चाहें, तो आज ही लिखिये। आप कम पढ़े हैं इसकी कुछ चिन्ता नहीं। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

डाइरेक्टर
नेशनल फिल्म कारपोरेशन, हल्का नं० १३, (D. A.) जलन्धर सिटी

रुका हुआ मासिक धर्म

मासिक धर्म में हर प्रकार की रुकावट "कुमारी" (की गोलियों) के सेवन से दूर हो गई है और फिर भविष्य में किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। औसतन शक्ति के लिए ३) तीन रुपए, विशेष ५) पाँच रुपए, और अत्यन्त अच्छी ८) आठ रुपया, वी० पी० खर्च अतिरिक्त।

श्रीमती पी० देवी, एफ० जी० एस० (डी० डी०) टोलीगंज (रूसा) कलकत्ता।

T. B.
टी० बी०

"तपेदिक" रोग के हताश रोगियो—

जबरी (jabri) का नाम नोट कर लो, यही इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली शक्तिशाली औषधि है। एक बार परीक्षा करके देख लो, परीक्षार्थ ही नमूना रखा गया है, जिसमें तसल्ली हो सके। मूल्य नं० १ (स्पेशल) पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु०। 'जबरी' नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना १० दिन ६) रु० महसूल आदि अलग है। आज ही आर्डर देकर रोगी की जान बचायें। तार का पता "jabri" jagadhri काफी है।

पता :—रायसाहब के० एल० शर्मा, रईस (D) 'जगाधरी' (E.P.)

'देशदूत' में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे कुछ धार्मिक ग्रन्थ

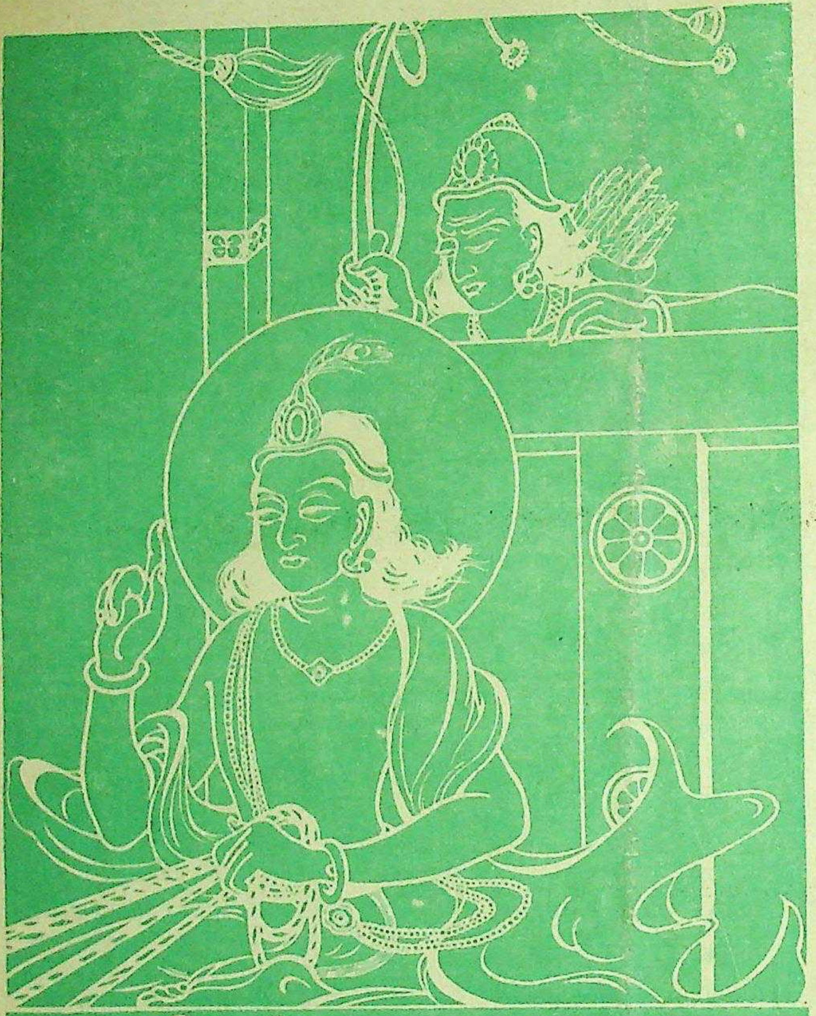

हिन्दी-महाभारत

महर्षि वेदव्यास के महाभारत का अक्षरशः अनुवाद। अगणित रंगीन और सादे चित्रों के कारण महाभारत का यह संस्करण जैसे बहुत ही नयनाभिराम है वैसे ही सीधी और सरल भाषा में लिखा हुआ होने के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक के लिए उपयोगी है। बढ़िया पक्की जिल्द है।

इस ग्रंथरत्न का बड़ा आदर है। इसकी प्रति प्रत्येक भारतवासी के घर में होनी चाहिये। इसके पठन-पाठन से सभी का उपकार होता है। ग्रन्थ दस खण्डों में समाप्त हुआ है।

मूल्य ८०) अस्सी रुपये

महात्मा तुलसीदास जी का,

राम-चरित-मानस

'मानस' का महत्त्व किसी से छिपा नहीं है। भारतवर्ष में तो इसका मान है ही, अन्य देशों में भी इस अमर काव्य का आदर है। यह प्रामाणिक संस्करण इधर कई वर्ष से अप्राप्य था। इसके टीकाकार राय बहादुर बाबू श्यामसुन्दर दास हैं। यह हाल ही में छप कर तैयार हुआ है। बड़े अक्षरों में मूल ग्रन्थ है और छोटे अक्षरों में सुन्दर सरल भाषा में अर्थ है। बालक, बूढ़े और स्त्रियाँ सभी इस संस्करण से लाभ उठा सकते हैं। इस ग्रन्थ से घर की शोभा बढ़ती है।

ग्राहक शीघ्रता करें। अधिक प्रतियाँ नहीं छापी गई हैं।

बड़े आकार के १२०० पृष्ठ रंग-बिरंगे दर्जनों चित्र। बढ़िया मजबूत ...की प्रति का मूल्य १२) रुपये

हिन्दी-महाभारत

आचार्य द्विवेदी जी ने इसमें महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा बहुत ही मधुर और सरल भाषा में लिखी है। मूल्य ६) छः रुपये।

श्रीमद्भागवत

सुन्दर सरल भाषा में किया गया अविकल अनुवाद। महाभारत की तरह इसमें भी सादे और रंगीन चित्रों की भरमार है और सुबोध भाषा में लिखा हुआ होने के कारण आबाल-वृद्ध-वनिता सभी के लिए उपयोगी है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

वाल्मीकीय रामायण

(सचित्र) दो भाग

महर्षि वाल्मीकि का रामायण हिन्दू-संस्कृति का इतिहास है। यह महाभारत से भी प्राचीन है। संसार भर में कोई भी ऐसी सभ्य भाषा नहीं है जिसमें इस ग्रन्थ का अनुवाद प्रकाशित न हुआ हो। हिन्दी में इसका बढ़िया अनुवाद नहीं था, उसी कमी को पूरा करने के लिए हमने इसका अनुवाद सरल भाषा में प्रकाशित किया है। सारी पुस्तक उपन्यास की तरह पढ़ते जाइए, समझने में कहीं जरा भी कठिनाई नहीं पड़ेगी। मूल्य ६॥) छः रुपये आठ आने प्रतिभाग।

जहाँ पर हमारी ब्रांच या एजेंसी है वहाँ खरीदने पर डाकखर्च की बचत होगी।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

प्राणायाम-विज्ञान और कला

पाश्चात्य मनीषी डाक्टर जोजे बुरो ओटेव नामक सुप्रसिद्ध चिकित्सक के प्राणायाम-सम्बन्धी लगातार कई वर्ष के अनुभव का वर्णन। मूल्य १) एक रुपया।

आध्यात्मिकी

आचार्य द्विवेदी जी ने इस पुस्तक में हमारे ऋषि-मुनियों से लेकर नये से नये देशी और विदेशी आस्तिक और नास्तिक हर तरह के विद्वानों के मतों का सार खींचकर रख दिया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सदुपदेश-संग्रह

इसमें देश-विदेश के महात्माओं के उत्तमोत्तम उपदेशों का सुन्दर संग्रह है। इसका मनन करके हम अपने जीवन को सार्थक तथा सुखमय बना सकते हैं। मूल्य ।।) आठ आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, ६ फरवरी, १९४९ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 6th February, 1949

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

प्रकाशक = इन्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

२ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस लिमिटेड इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुये प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किये बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस्-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविता-प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता रा[illegible] बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय [illegible] बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्[illegible] किया है कृतविद्य श्री सूर्यकान्त त्रिपा[illegible] 'निराला' ने। "विषवृक्ष सभी के घर [illegible] आँगन में लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद [illegible] विषवृक्ष में रोग, शोक आदि नाना[illegible] फल लगते हैं।" इस उपन्यास में विष[illegible] है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्था [illegible] अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का आ[illegible] पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही गं[illegible] फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा [illegible] गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे [illegible] कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया [illegible] उपन्यास में वर्णित उलझनों में पड़[illegible] पाठक चकरा जाते हैं। भाषा [illegible] कथानक सभी विचित्र है। मूल्य [illegible] दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की बेटी थी [illegible] उसका विवाह करने की चिन्ता में माँ-[illegible] और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के लि[illegible] चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में द[illegible] करने के लिए ठहर गये। वहाँ के मह[illegible] अम्बिकाचरण पुरी ने नवदुर्गा को प्र[illegible] करने के लिए जो जाल रचा उसका व[illegible] पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता [illegible] अन्त में महन्त का चण्ट चाकर अधरच[illegible] मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और मि[illegible] का सिर' की कहावत के अनुसार मह[illegible] जी से खासी रकम ऐंठकर और नवदु[illegible] को विधि से पत्नी बनाकर चलता हुआ [illegible] लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति क[illegible] में लाकर कराई है उससे पाठक विस्[illegible] और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य [illegible] एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० ब्रजे[illegible] वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने [illegible] देहाती लुहार की अल्पवयस्क बेटी [illegible] घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहात [illegible] महराजगंज की रानी पृथाकुँवरि [illegible] आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ [illegible] की कृपा से इस लड़की ने विद्या प[illegible] फिर इसमें उन गुणों का विकास [illegible] जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान [illegible] है। इसने असहयोग आन्दोलन में [illegible] भाग लिया और अन्त में कलकत्ता [illegible] नौकरी कर ली। कई पुस्तकें लि[illegible] विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँअर [illegible] प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उप[illegible] की घटनावली, विचारों का संघर्ष [illegible] चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहने [illegible] है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २२] [रविवार, ६ फरवरी, १९४९

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

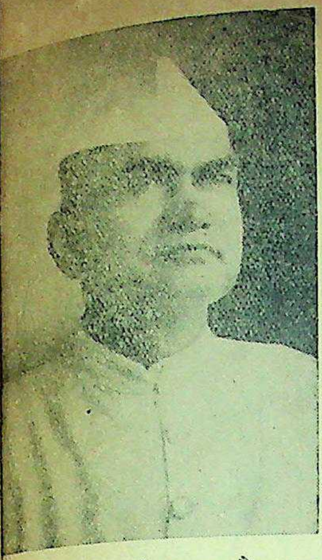

पूर्वी बंगाल के गवर्नर डाक्टर कैलाशनाथ काटजू ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने के लिये जोर दिया है।

हैदराबाद गया, जूनागढ़ गया, अब भोपाल की बारी है। भोपाल का नया मन्त्रिमण्डल भंग हो गया। अब नवाब भोपाल ने शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली है। देखना है कि नवाब साहब कितने दिनों तक प्रजातन्त्र के नाम पर अपनी डिक्टेटरी कायम किये रहते हैं? सारा भारत स्वतन्त्र हो गया, जमाना बदलता जा रहा है। अँगरेज यहाँ से कब के चलते बने, अँगरेजियत भी अपना बिस्तर लपेट रही है, बड़ी से बड़ी रियासतों में कायापलट हो रही है। बड़ौदा और जूनागढ़ बम्बई प्रान्त में मिला दिये गये। कई रियासतों ने मिलकर अपना अलग संघ काम यकिया, परन्तु मध्य-भारत में भोपाल जो एक नवाबी रियासत है त्रिशंकु की भाँति लटकी हुई है। यह रियासत अभी तक न तो किसी रियासती संघ में शामिल हुई है और न प्रजातन्त्र का चोगा पहनकर परम स्वतन्त्र हुई है। अपने राम की समझ में आता है कि भोपाल यदि अपना रवैया नहीं बदलता तो उसे भी वही दिन देखना पड़ेगा जो हैदराबाद और जूनागढ़ को देखना पड़ा है।

* * *

यूरोप के बड़े बड़े राष्ट्र इस समय संसार में शान्ति-स्थापना का राग अलाप रहे हैं। पता नहीं यह दिल से हो रहा है या केवल मुख से? बड़ी परेशानियों के बाद अब खबर मिली है कि सोवियट रूस के विधाता स्टालिन और अमरीका के प्रेसीडेन्ट ट्रूमन का मेल-मिलाप इसलिए होने जा रहा है कि संसार में लड़ाई न हो और शान्ति की स्थापना हो। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि संसार की भावी शान्ति के लिए रूस और अमरीका की बड़ी भारी जिम्मेदारी है। एक है—कम्युनिस्ट और दूसरा है—कैप्टलिस्ट। एक है पूरब तो दूसरा है पश्चिम। एक है उत्तर तो दूसरा है दक्षिण और एक है जमीन तो दूसरा है आसमान। मेल-मिलाप होना और सन्धि की वार्ता होना तथा एक निश्चय पर पहुँचना तो कुछ कठिन नहीं है, लेकिन पूरब और पश्चिम का मेल कैसे होगा? यही समझना जरा टेढ़ी खीर है। फिर भी अगर कुछ दिनों के लिए लड़ाई रुक जाय और शान्ति की स्थापना से सहयोग न प्राप्त हो तो सम्भव है पिछले महायुद्ध के बाद की लड़खड़ाती दुनिया कुछ सँभल जाय। लेकिन अन्त में युद्ध तो होगा ही। जब तक इन दोनों राष्ट्रों के पास हथियारों और फौजों का बाहुल्य है तब तक वास्तविक शान्ति की कल्पना करना बिलकुल गलत है। मेल-मिलाप का फल तत्काल हो सकता है किन्तु दस वर्ष के बाद के समय के लिए नहीं।

* * *

अँगरेजी काल से सिन्ध ने जो अपनी राजनैतिक परम्परा कायम की है उसका पालन वहाँ आज तक होता जा रहा है। पाकिस्तान में आने के बाद भी सिन्ध की राजनीति तथा शासन में बड़े बड़े परिवर्तन होते आ रहे है। कितने ही मंत्रिमंडल बिगड़ते और बनते रहे और परम्परा ज्यों की त्यों जारी है। अविश्वास का प्रस्ताव तो यहाँ के प्रत्येक मंत्रिमंडल की जन्म-कुण्डली अंकित है। अभी अभी ताजी खबर है कि सिन्ध मुस्लिम लीग पार्टी ने सिन्ध की प्रान्तीय सरकार के ऊपर अविश्वास का प्रस्ताव पास किया है, देखना है सरकार मैदान छोड़ भागती है या डटी रहती है? पाकिस्तान के गवर्नर सर नाजिमुद्दीन और प्रधान मंत्री लियाकतअलीखाँ देखना है इस गपड़चौथ में किस प्रकार का अभिनय करते हैं?

* * *

लखनऊ विश्वविद्यालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर सुप्रसिद्ध दार्शनिक सर राधाकृष्णन ने 'सर्कुलर डेमोक्रेटिक स्टेट' की अच्छी खिल्ली उड़ाई है। सर राधाकृष्णन ने यह चुनौती दी कि सर्कुलर डेमोक्रेटिक स्टेट तथा साम्प्रदायिकता का अर्थ वास्तव में आजकल के धुरन्धर राजनीतिज्ञ समझते ही नहीं। अपने राम की समझ में भी यही आता है कि आजकल की प्रजातन्त्र और उसकी व्याख्या आँधी के आम की तरह है। जो कुछ भी जिसकी समझ में आता है वह उसे कह गुजरता है ब्रह्मवाक्य की भाँति। कहा जाता है—कुछ बड़े बड़े नेता तो बड़े जोर से घोषणा भी करते हैं कि 'भारत एक अधार्मिक और असम्प्रदायिक राष्ट्र होगा। कहने में तो और यूरोप के मूर्खों को दिखाने के लिए यह घोषणा बहुत अच्छी है, लेकिन भारत में मन्दिर, मसजिद और गिरजाघर बदस्तूर पूर्वकाल से स्थापित हैं और नये नये की स्थापना भी होती जा रही है। भारत के बड़े बड़े नेताओं ने भी आज तक यह घोषणा नहीं की कि मैं न हिन्दू हूँ और न मुसलमान और न किसी ने अपने धर्म की तिलांजलि ही दी। हिन्दू नेता भले ही मन्दिरों में न जायँ, लेकिन मुसलमान नेता बिना मसजिद में गाये चैन नहीं पाते। तब यह कैसा असाम्प्रदायिक और अधार्मिक राष्ट्र है? क्यों नहीं भारतीय विधान-परिषद् ऐसा कानून बनाती जिससे मंदिर, मसजिद और गिरजाघर एकदम साफ हो जायँ। सर राधाकृष्णान ने जो कुछ कहा है सचमुच उसमें तथ्य है। हाथी के दाँत खाने के और होते हैं और दिखाने के और।

सर राधाकृष्णन् ने गत सप्ताह लखनऊ विश्वविद्यालय के पदवीदान समारोह का सभापतित्व किया था।

* * *

सुना जाता है कि विधान-परिषद् के आगामी अधिवेशन में राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर विचार होना पुनः स्थगित कर दिया जायगा। अपने राम की समझ में यदि यह समाचार सच है तो आखिरकार स्थगित कब तक किया जाता रहेगा? विधान तो किसी न किसी दिन अन्तिम रूप से स्वीकृत तो होगा ही तब तो यह नौबत आयेगी ही कि राष्ट्रभाषा का निर्णय हो जाय। बकरे की माँ कितने दिन तक खैर मनायेगी। हिन्दुस्तानी उर्फ उर्दू को बचाने के लिए कब तक दाँव-पेच चलते रहेंगे? राष्ट्र का नाम तथा राष्ट्र की भाषा तथा लिपि क्या हो? इसका निर्णय हुए बिना किसी भी राष्ट्र का विधान सम्पूर्ण हो ही नहीं सकता टाल-टूल से समस्या का हल न होगा। आन्दोलन बढ़ता जायगा और फैसला अन्त में करना ही पड़ेगा।

* * *

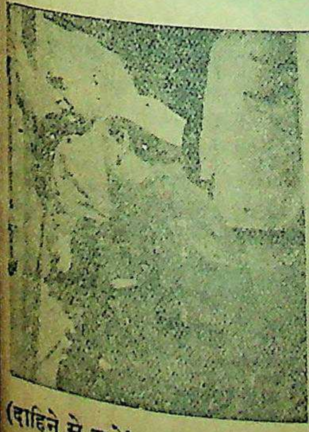

(दाहिने से बायें) १—राजेन्द्र जयंती का सभापतित्व करने के लिये, माननीय श्री रफीअहमद किदवई छपरा स्टेशन पर रेल से उतर रहे हैं। २—कटक में होनेवाले अखिल भारतीय गृह उद्योग सम्मेलन के अवसर पर डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी तथा अन्य कार्यकर्ता। ३—सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर वाई० एम० सी० ए० कार्निवल का उद्घाटन कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार बड़े राष्ट्र कहाँ हैं ?

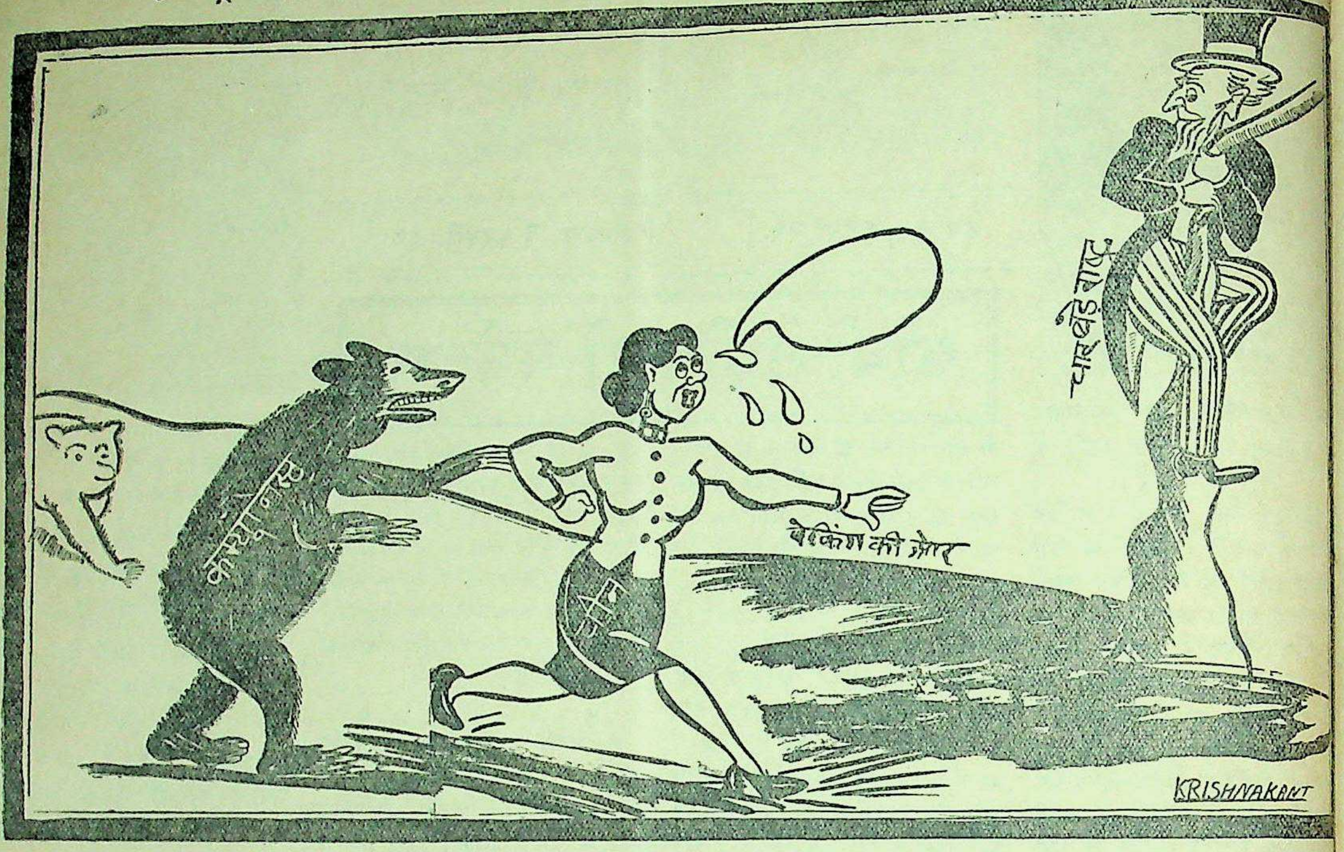

एशियाई सम्मेलन और डच

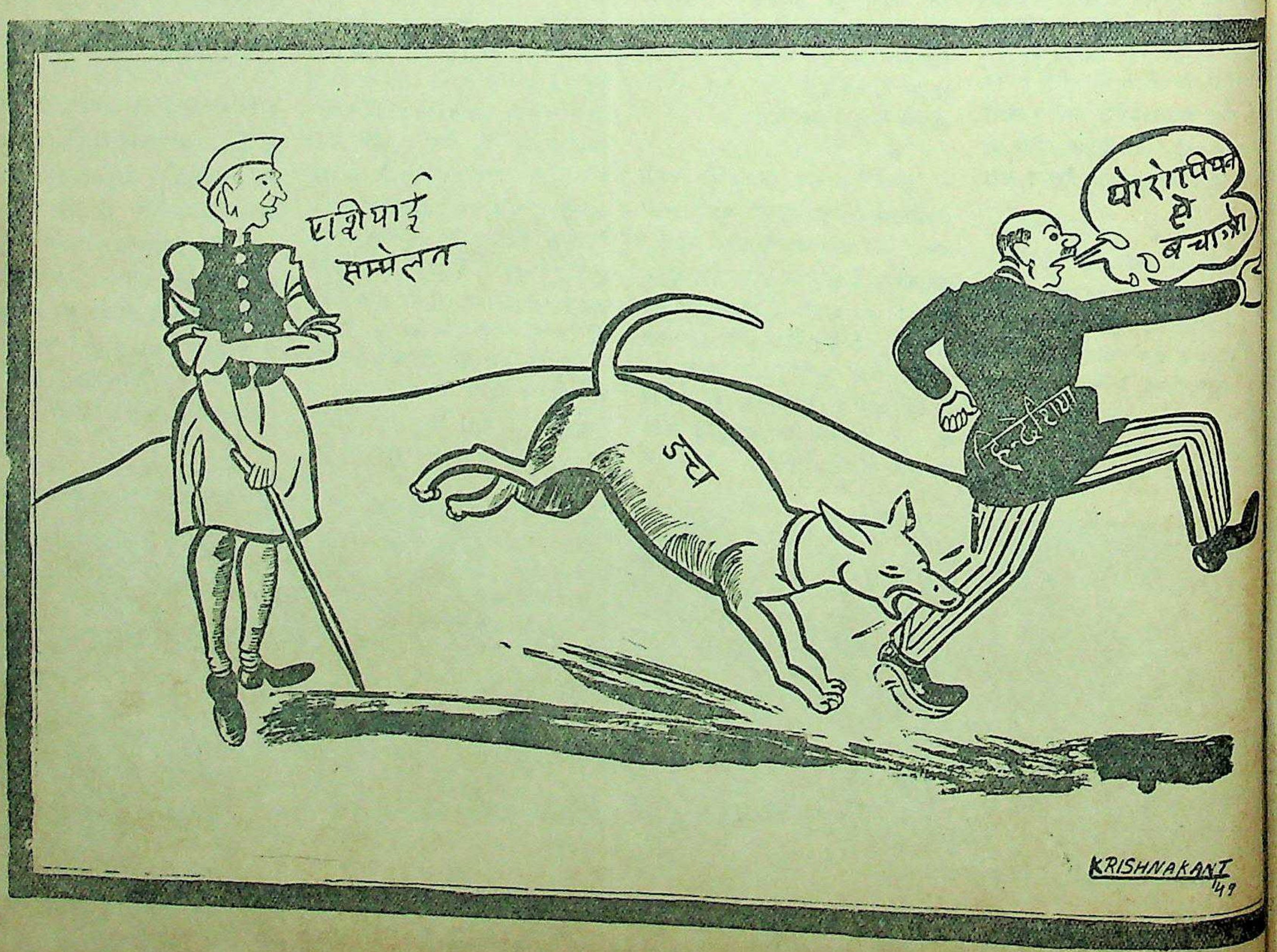

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर, भारत और पाकिस्तान

क्या जनमत-संग्रह में काश्मीर अपना वोट भारत को ही देगा ?

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालङ्कार

> काश्मीर में युद्धबन्दी हो गई है। इस समय संयुक्त राष्ट्रसंघ की ओर से नियुक्त कमीशन, इस निश्चय की ओर लगा है कि काश्मीर की समस्या का हल क्या हो सकता है ? मत-गणना के अनुसार होने का भी उपाय है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने काश्मीर की राजनीति पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि काश्मीर भारत के पक्ष में ही अपना मत देगा। लेख सामयिक और विचारणीय है।

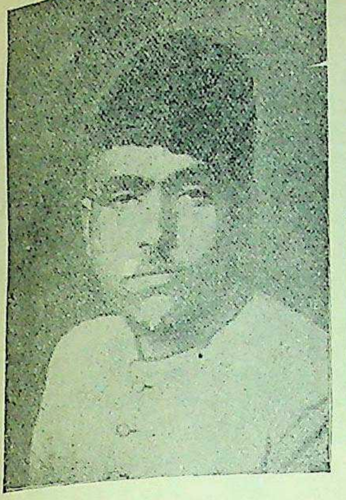

काश्मीर के प्रधान मन्त्री शेख अब्दुल्ला

भारत और पाकिस्तान ने काश्मीर में युद्ध बन्द कर दिया है। काश्मीर-कमीशन के निर्णय के अनुसार अब वहाँ जनमत लिया जायगा। रियासत की जनता को यह निर्णय करना होगा कि क्या काश्मीर व जम्मू भारत के साथ रहे अथवा पाकिस्तान के साथ। काश्मीर-कमीशन की जनमत घोषणा को अमल में लाने में काफी समय लगेगा। राजनैतिक क्षेत्रों में तो यहाँ तक सन्देह प्रकट किया जा रहा है कि क्या जनमत होने की नौबत भी आ पाएगी ? ऐसे सन्दिग्ध वातावरण में अभी से यह बता सकना सचमुच कठिन होगा कि भावी जनमत में काश्मीर की जनता किधर जायगी ? क्या वह भारत का साथ देगा या पाकिस्तान का ? फिर भी यदि हम थोड़ी देर के लिए यह मान लें कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की देख-रेख में जनमत शुरू होता है, तो काश्मीर की जनता अपने कीमती वोट किधर डालेगी ? यद्यपि इस सम्बन्ध में कोई भी भविष्यवाणी कर सकना कठिन है, फिर भी काश्मीर की वर्त्तमान स्थिति और नेशनल कान्फरेन्स की गति-विधि को देखते हुए भविष्य का कुछ आभास तो हो सकता है। इस दृष्टि से देखने पर हमें कुछ कुछ ऐसा लगता है कि शायद काश्मीर की जनता भारत के पक्ष में वोट देगी। काश्मीर का मुसलमान सच्चा भारतीय और गांधी जी की गैर-मजहबी राष्ट्रीयता का कट्टर अनुयायी साबित होगा।

लीगी प्रचार का बहिष्कार

शेख अब्दुल्ला के अनुयायियों को भली भाँति मालूम है कि मुस्लिम जनता की धार्मिक भावनाओं को भड़काना आसान है। वे जानते हैं कि जनमत के दिनों मुस्लिम लीगी लोग 'इस्लाम खतरे में है' की दुहाई देंगे। वे मुसलमानों से पूछेंगे—'क्या तुम लोग अपना कीमती वोट काफिर को दोगे या कुरान को ?' उन्होंने इस प्रकार के जहरीले प्रचार को उदासीन करने के लिए कई उपाय कर लिए हैं। उन्हें मालूम है कि उत्तर-पश्चिमी सीमा-प्रान्त में कांग्रेस ने और अविभक्त पञ्जाब में यूनियनिष्ट पार्टी ने किस तरह आर्थिक प्रोग्राम के जरिये सर्व-साधारण मुस्लिम जनता को अवसरवादी और प्रतिगामी नेताओं के चंगुल से बचाया था।

भारत व पाकिस्तान में फर्क

शेख साहब के अनुयायियों ने काश्मीरी भाषा भाषियों, मल्लाहों, कोचवानों और किसानों को भली भाँति समझा दिया है कि एक गैर-मजहबी और मजहबी मुल्क में क्या फर्क है। उन्होंने उन्हें बताया है कि पाकिस्तान एक मजहबी

फा० ३

मुल्क है। वहाँ सिर्फ इस्लाम धर्म को माननेवाले रह सकते हैं, दूसरे लोग नहीं। इसीलिए आज पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान में एक भी गैर-मुस्लिम नहीं रहा। जो रह गये हैं वे भी थर थर काँपते रहते हैं। उन्हें भय है कि पता नहीं उन्हें कब बलि का बकरा बना दिया जाय। यह मजहबी मुल्क कभी कभी इतना दिवाना भी हो सकता है कि अपने भाई-बन्दों तक को दबोच ले। काश्मीर में उसने ऐसा ही किया। उसने इस्लाम को माननेवाले अपने भाइयों, अपनी बहिनों और छोटे छोटे बच्चों की बेइज्जती करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मन्दिर, गुरुद्वारा, गिर्जा और मस्जिद सभी को उसने तहस-नहस कराया।

इसके विपरीत भारत एक गैर-मजहबी राष्ट्र है। उसमें सब धर्मों के माननेवाले रह सकते हैं। सबके धर्म-स्थान सुरक्षित हैं। जो मुसलमान पाकिस्तान चले गए हैं, उनके पीछे उनके तमाम धर्मस्थान सही-सलामत हैं। जिन मस्जिदों में शरणार्थी शरण ले रहे थे, वे अब खाली पड़ी हैं। निस्सन्देह कभी कभी हिन्दुत्व का नारा बुलन्द हो जाता है। किन्तु बापू की हत्या के बाद अब भारतीय जनता सतर्क हो चुकी है। वह साम्प्रदायिकता और मजहबी दिवानेपन से कोसों दूर रहने लगी है। उसे गांधी जी की गैर-मजहबी राष्ट्रीयता की खूबियाँ समझ में आने लगी हैं। हम काश्मीरी मुसलमान किसी समय पूर्वी पञ्जाब के निवासियों से डरा करते थे। हमारे नेता भारत में होनेवाली बड़ी बड़ी सभाओं में कहा करते थे—"काश्मीर भारत के साथ रहेगा या नहीं ? यह प्रश्न काश्मीरियों से मत पूछो। इसका उत्तर आप लोग ही दो। क्या आप यह जानते हैं कि आज पूर्वी पञ्जाब में एक भी काश्मीरी मुसलमान को आने की हिम्मत नहीं होती ? तो क्या ऐसी सूरत में काश्मीर भारत के साथ रह सकता है ?" किन्तु आज अवस्था बदल चुकी है। आज काश्मीरी मुसलमान को यह सोचने की आवश्यकता नहीं—"काश ! हमारी सीमा संयुक्तप्रांत के साथ लगी होती। हम आँख मूँद करके भारत के साथ शामिल हो जाते। पूर्वी पञ्जाब के रहते हुए हम भारत के साथ मिलने का स्वप्न भी नहीं देख सकते।

काश्मीर के भविष्य की कुञ्जी हमारे हाथ में अथवा भारतीय फौजों के हाथ में नहीं। यह तो पूर्वी पञ्जाब के सिक्खों के हाथ में है।" आज का पूर्वी पञ्जाब एकदम बदल चुका है। काश्मीरी मुसलमान अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना और अम्बाला के बाजारों में आजादी से घूम सकता है। रेल में, मोटर में, लारी में, लोगों में या साईकल पर सवार होकर वह पूर्वी पञ्जाब के एक छोर से दूसरे छोर तक आ जा सकता है। अमृतसर की मंडी काश्मीर के मुस्लिम सौदागरों से पटी पड़ी है। इसे केन्द्र बनाकर वे तिजारती माल अपनी रियासत से ले आते हैं और भारत का माल अपने यहाँ ले जाते हैं। स्थान स्थान की कांग्रेस कमेटियाँ काश्मीरी मुसलमान की जान की जामिन हैं। क्या मजाल कि उसकी तरफ कोई आँख उठाकर भी देख जाय।

लाल पीलाशाही समाप्त

काश्मीरी जनता की ठोस सेवा करने के लिए शेख साहब के मंत्रिमंडल ने सरकारी दफ्तरों में लाल पीलाशाही को उड़ा दिया है। छोटे से छोटे काश्मीरी के लिये भी अपने मंत्रियों तक पहुँचना सुलभ है। मान लीजिए एक किसान को अपने इलाके के तहसीलदार के खिलाफ कोई शिकायत है। वह माल मंत्री के दफ्तर जा पहुँचेगा। वह जाकर रिपोर्ट करेगा कि मैंने अपना आबियाना तहसील में जमा करा दिया है; मगर अभी तक रसीद नहीं मिली माल मंत्री फौरन फोन उठायेगा और तहसीलदार से पूछेगा कि यह क्या मामला है। तहसीलदार सूचित कर देगा कि वस्तुतः उस किसान ने आबियाना अदा कर दिया है। उसे भेज दीजिए। रसीद फौरन दे दी जायगी। इसी तरह सब मंत्रियों का हाल है। वे जनता के कष्टों को रफा करने का तुरत प्रबन्ध करते हैं। उन्हें जो हुक्म देना होता है उसे स्वयं लिखकर देते हैं। अपने कर्मचारियों अथवा क्लर्कों पर बहुत अधिक निर्भर नहीं करते।

चिनानी को जम्मू के साथ मिला दिया गया

शेख अब्दुल्ला के मंत्रिमंडल ने किसानों में विश्वास उत्पन्न करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। उसने चिनानी की एक छोटी सी रियासत को जम्मू के साथ मिला दिया है। इसका क्षेत्रफल ९० वर्गमील है। यह एक राजा के आधिपत्य में थी। इस राजा को सैशन्स-जज और इंस्पेक्टर जनरल पुलिस के अधिकार प्राप्त थे। वह काफी जंगल और जमीन का मालिक था। पुलिस अफसर होने से वह जिसे चाहता था, गिरफ्तार कर लेता था और फिर जज होने से वह गिरफ्तार व्यक्ति को मनचाही सजा दे सकता था, लेकिन अब उसकी रियासत छीन ली गई है। अब वह पहले की भाँति अधिकार-सम्पन्न नहीं रहा। अब वह किसी किसान का बाल भी बाँका नहीं कर सकता। अब उसे अपने गुजारे के लिए बँधी हुई रकम मिल जायगी।

जागीरदारी खत्म

चिनानी के बाद वर्तमान काश्मीर सरकार ने जम्मू व काश्मीर के करीब ३९६ जागीरदारों को करीब १ लाख एकड़ जागीरों से वंचित कर दिया है। प्रायः सभी जागीरदारों को अपनी जागीरों से हर

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मियाँ लियाकत अली खाँ

साल १० हजार रु० से ३० हजार रु० तक आय हुआ करती थी। इस तरह जागीरदारी को उड़ा देने से रियासत सरकार को करीब ८ लाख रु० की आमदनी होने लग जायगी। पहले काश्मीर, जम्मू और सरहदी प्रान्तों के जमींदारों को ५,०६,८६३ रु० की आय हुआ करती थी। अब वे इस आय से वंचित कर दिए गए हैं। जागीरदारों की जागीरें अब काश्तकारों के काम आयेंगी। अब काश्तकारों को अपनी आय का एक निश्चित हिस्सा जागीरदारों को न देना होगा। अब वे अपना कर सीधा सरकारी खजाने में जमा करायेंगे। अब इन जागीरदारों को असमर्थ होने पर बँधी हुई रकम मिल जाया करेगी।

जमींदारी प्रथा की छीछालेदर

जागीरदारी को उड़ा देने से सिर्फ १ लाख एकड़ भूमि पर खेती करने वाले काश्तकार मुक्त हुए हैं। शेष २१ लाख एकड़ भूमि के काश्तकार क्या जमींदारी की चक्की में पिसते रहेंगे ? नहीं। काश्मीर सरकार भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकती थी। निस्सन्देह उसने जमींदारी प्रथा को उड़ा देने के लिए फिलहाल कोई कानून नहीं बनाया। किन्तु अमली तौर से वहाँ जमींदारी प्रथा समाप्त ही समझनी चाहिए। नेशनल-कान्फरेन्स के प्रचार के कारण प्रायः सभी किसानों ने अपने अपने जमींदारों को उपज का हिस्सा देना बन्द कर दिया है। यदि कोई जमींदार अपने किसी किसान के खिलाफ शिकायत करने के लिए थाने में जाता है तो पुलिस उसकी रपट दर्ज नहीं करती। यदि बहुत कहने-सुनने पर कहीं पुलिस ने किसी जमींदार की रपट दर्ज कर भी ली तो आगे मजिस्ट्रेट के यहाँ उसकी दाल नहीं गलती। वह किसान के खिलाफ डिगरी देते ही नहीं। नेशनल कान्फरेन्स के लाल झंडे में हल का चित्र भी अंकित है। इसलिए कान्फरेन्स किसानों की हितचिन्तक है। इसलिए फिलहाल उसने मुआवजा दिए बिना

शेष पेज १८ पर देखिए

डोंगरे बालामृत से कमजोर बच्चे ताक़तवर बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी क्रान्ति की प्रेरणाभूमि

चीन की काया-पलट से क्या एशिया में शांति स्थापित होगी ?

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदी

चीनी क्रांति की प्रेरणाभूमि क्या है ? आज चीन में काया पलट हो रही है, यद्यपि इसका प्रारंभ वर्षों पूर्व हो चुका था किंतु उसकी पूर्ति अब होने जा रही है। इस लेख में इसी समस्या पर रोचक प्रकाश डाला गया है, जो पठनीय तथा सामयिक है।

चीन के प्रधान जनरल च्यांगकाई शेक, अमरीकन जनरल से वार्ता करते हुए हँस रहे हैं।

गृहयुद्ध से जर्जर, अपने देशवासियों के रक्त से लथपथ चीन के सम्बन्ध में जब यह कहा जाय कि एक नूतन राष्ट्र का जन्म हो रहा है, तब वह सचमुच एक विचित्र विरोधाभास सा प्रतीत होता है। यह विरोधाभास ठीक उसी प्रकार का है जिस प्रकार स्वर्गवासी चीनी नेता डा० सुन ने कहा था कि "किसी काम को करना बड़ा आसान किन्तु उसे समझना बड़ा कठिन है।" यद्यपि हम सब जानते हैं कि दूसरों को सिखाने में हम बड़े पटु हैं किन्तु यदि स्वतः कुछ करना पड़े तो शत-शत असुविधाओं, आपत्तियों और कठिनाताओं की तालिका बता अपने को कार्यभार से उत्तरदायित्व मुक्त कराने की चेष्टा करते हैं।

चीन का गृह-युद्ध एक क्रांति 'था' कहना चाहिए, क्योंकि अब तो वह लगभग समाप्तप्राय ही है। इस क्रांति में दो तत्व संघर्षग्रस्त थे। प्रथम तत्व में चीन-राष्ट्र स्थित वह प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ थीं जिसका पृष्ठ पोषण पूँजीवादी साम्राज्याकांक्षी राष्ट्रदल के नेता रूप में अमेरिका कर रहा था और दूसरी ओर वह देशी, राष्ट्रभक्त, निर्माणकारी शक्तियाँ थीं जिन्हें युग-युग की दासता असह्य थी, जो विदेशी शासन-शोषण का किसी भी—मित्र या शत्रु—रूप में स्वागत करने को प्रस्तुत न थीं।

संघर्षकारी उभय तत्व अत्यन्त शक्तिवान् थे। एक की सुविधा पर आधुनिक-युग के समस्त शोषण और दमन उपादान उपलब्ध थे। साम्राज्यवादी लिप्सा-शक्ति उसकी पृष्ठपोषक थी। संसार के नवीनतम वैज्ञानिक आविष्कार, यातायात और संवादवाहन की गतिवान् प्रणालियाँ एवं धन की शक्ति से प्राप्त हो सकनेवाले प्रत्येक सुख एक शक्ति का समर्थक था।

दूसरी शक्ति राष्ट्रभक्तों की थी। इनके पास भोजन-वसन का चरम अभाव, सिर पर आर्थिक शोषण और राजनीतिक-दमन का कठोर चक्र था। ईसा के जन्म की इस बीसवीं सदी के निवास-स्थानों की सुविधा इनके यथार्थ जीवन के संसार की परिधि से परे थी, लेकिन एक शक्ति थी और वह थी नैतिकता, दृढ़ता और स्थितपरिवर्तन की दृढ़ आकांक्षा।

क्रांति, परिवर्तन, विनाश और इसके बाद निर्माण की आकांक्षायुक्त नैतिकता की दृढ़ एवं स्थायी भावना ने अणुबम शक्तिसम्पन्न राष्ट्र द्वारा समर्थित प्रतिक्रियावादी शक्ति को पराजित कर दिया। आज पराजय से विकल चीन के निर्मम। दयाहीन व निष्ठुर तत्व "त्राहिमाम्, त्राहिमाम्" की पुकार करते हुए अत्यन्त आर्त अवस्था में जन-शक्ति की शरण प्राप्त करने के लिए आकुल हैं। नाश, सर्वनाश के निठुर-निनाद ने उन्हें आकाश के तारे सूर्य के प्रकाश में ही दिखला दिये हैं।

चीन की वर्तमान-क्रान्ति का यह चित्र एक सुनहला पृष्ठ है। इस स्वर्णिम-दिवस के निर्माण में न तो अलाउद्दीन के चमत्कारिक चिराग का हाथ है और न यह सब भावुकतापूर्ण उत्तेजना के कारण एक दिन में हो गया है। जन-शक्ति की इस सफलता की प्रेरणाभूमि वह जन-जागरण है जो सदियों और विशेषकर पिछले पचासों बरसों के प्रगतिशील क्रमिक एवं स्वाभाविक विकास का परिणाम है। यह विकास अनुभव व साध्य है। समय की देन है।

चीन की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्रांति के स्वप्नद्रष्टा—कृपि डा० सुनयात-सेन थे। डा० सुनयात-सेन ने क्रांति-सैनिक क्रांति, हिंसात्मक विनाशक क्रान्ति के लिए जन-शक्ति का आह्वान किया था। इस क्रांति द्वारा वह शोषण, एकाधिकार तथा दमन के आधार पर खड़े राजवंशी महल को चूर-चूर कर देना चाहते थे। जन-दमनात्मक एवं शोषणात्मक शक्तियों के भग्नावशेषों की कल्पना के आधार पर शक्तिशाली चीन-राष्ट्र के पुनर्निर्माण की रूपरेखा उन्होंने तयार की थी।

डा० सुनयात-सेन का मत था कि क्रांति केवल जन-शोषण और जनता का दमन करनेवाली राजनीतिक शक्ति का ही सैनिक-शक्ति द्वारा हनन कर सकती है। क्रांति द्वारा नष्ट होनेवाला पहलू क्रांति का निषेधात्मक अंग है। क्रान्ति का विधेयात्मक अंग पुनर्निर्माण है। जब तक निषेधात्मक एवं विधेयात्मक पहलुओं के लक्ष्य की पूर्ति नहीं होती उस समय तक क्रांति की उद्देश्य-सिद्धि भी असंभव है। अस्तु, जब सैनिक-क्रांति शोषणकारी दमनात्मक राजनीतिक संस्था का नाश कर देती है तो वह एक निषेधात्मक कार्य अंग की पूर्ति करती है क्योंकि बिना निषेधात्मक को सिद्ध किए सृजन और निर्माण के विधेयात्मक लक्ष्यों की सिद्धि नहीं हो सकती। निषेधात्मक अंग की पूर्ति होते ही निर्माण आरंभ हो जाना चाहिये। राजनीतिक सत्ता का जैसे ही दमन हो वैसे ही उसका स्थान जन-सत्ता को ग्रहण कर लेना चाहिये। जब जन-शक्ति अपने हाथ में राजसत्ता ग्रहण कर लेगी तभी आर्थिक और सामाजिक क्रांति के निषेध और विधेयात्मक अंगों को कार्यान्वित करने का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

चीन ने क्रांति के राजनीतिक निषेधात्मक अंग की सिद्धि की। सन् १९१२ में मंचूवंश का तख्त उलट दिया गया। साम्राज्ञी डोवागर ने १२ फरवरी सन् १९१२ को एक घोषणापत्रक प्रकाशित किया। इस पत्रक में राष्ट्रीय जनमत के समक्ष राजतन्त्रवाद, एकतन्त्रवाद तथा स्वार्थवाद ने "सत्यं, शिवम् सुन्दरम्" के निर्माण हेतु आत्मसमर्पण कर दिया था। साम्राज्ञी ने जो घोषणा प्रकाशित की थी उसका कुछ अंश इस प्रकार है—"समस्त राष्ट्र आज एक प्रजातान्त्रिक शासन की स्थापना का आकांक्षी है। सर्वप्रथम लोकतांत्रिक-शासन की स्थापना-हेतु दक्षिणी और केन्द्रीय प्रांतों ने अपनी इच्छा प्रगट की और अब उत्तरी प्रांतों के सेनापतियों ने भी शेष जनमत के साथ क्रांति में सहयोग देने का आश्वासन प्रदान कर दिया है। हम जनमत के समक्ष मस्तक नत करके ईश्वर की इच्छा का सम्मान कर रहे हैं। यह उचित नहीं जान पड़ता कि केवल अपने घर में घी के दिये जलाने के लिए हम राष्ट्र की महत्त्वाकांक्षाओं का दमन करें। हमने युग के चिह्न स्वीकार कर लिए हैं और जनमत की प्रवृत्तियों की भी परीक्षा कर ली है और अब हम सम्राट् की इच्छा से प्रभुत्व सत्ता राष्ट्र के हाथों में सौंपते हैं और इस पत्रक द्वारा प्रजातान्त्रिक सरकार की स्थापना की आधार-शिला रोपित करते हैं। हमारा यह निश्चय केवल जनता की आत्म-सान्त्वना हेतु ही नहीं है, प्रत्युत वह युग-युग से चली आनेवाली सन्त-मत की इस परम्परा का भी समर्थन है कि राजसत्ता की निर्णयात्मक और अन्तिम शक्ति जनता के ही हाथ में होती है।" मंचू सरकार इस घोषणा के बाद उत्तरदायित्व के भार से मुक्त हो गई।

डाक्टर सुनयात-सेन के मतानुसार सैनिक क्रान्ति पूरी हो चुकी थी। अब प्रजातंत्र और लोकसत्ता की स्थापना की तीन दशाएँ थीं। पहली तो सैनिक शासन की। दूसरी अवस्था में सैनिक-शासन को अपने अधिकार अस्थायी राष्ट्रीय सरकार को सौंप देने होते और अन्त में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार विधान-निर्मित प्रजातांत्रिक शासन को कार्यभार सौंप भारमुक्त हो जाती। सैनिक-शासन की अवस्था में समस्त प्रजातंत्रवादी विरोधी शक्तियों का दमन कर दिया जाता, अस्थायी सरकार स्थानीय शासन वयस्क-मताधिकार तथा प्रजातांत्रिक विधान-निर्माण की व्यवस्था करती और जब विधान बन जाता तो अस्थायी सरकार अपने समस्त अधिकारों को स्थायी और वैधानिक सरकार को सौंप देती। वैधानिक सरकार का यह काम होता कि वह आर्थिक और सामाजिक विषमताओं, अशुद्धियों और त्रुटियों का निवारण करती और इस प्रकार शक्तिशाली, सम्पन्न और सब भाँति सुखी चीन राष्ट्र के निर्माण की कल्पना को साकार रूप देती।

किन्तु डा० सुनयात-सेन के उत्तराधिकारियों ने राष्ट्र-निर्माण की रूपरेखा के कलाकार द्वारा निर्धारित राजमार्ग का अवलम्बन नहीं किया। नैतिकता का परित्याग कर च्यांग और उनके साथ का पूँजीवादी दल स्वार्थसिद्धि के फेर में पड़ गया। उसने जनहित को तिलांजलि देकर देश के सामान्य हितों को विदेशी स्वार्थों के हाथ बेचना आरंभ कर दिया। क्रान्ति के निषेधात्मक अंग को सिद्ध करने के बाद पुनर्निर्माण और सर्जनात्मक शक्तियों के उपयोग की व्यावहारिक अवहेलना की गई। इस बीच जापान आदि के आक्रमण ने समस्या को और भी जटिल बना दिया।

किन्तु, क्रान्ति का मार्ग अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। जब जनता ने देखा कि हमारे क्रान्तिकारी नेता निन्यानवे के फेर में पड़ गये हैं, लोभ, अर्थलिप्सा और सत्तामद से विक्षिप्त हो उठे हैं तो उसने दूसरे मार्ग का अवलम्बन किया। वह दूसरा मार्ग तथा कथित कम्यूनिस्ट आन्दोलन था। इसका रूस आदि जैसे विदेशी राष्ट्र से कोई संबंध न था। नैतिकता के आधार मानकर आर्थिक और सामाजिक सामंजस्य की स्थापना इस आन्दोलन का प्रमुख लक्ष्य था। इसे जनता का सहयोग प्राप्त था और च्यांग को स्वार्थी राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय तत्वों का समर्थन था।

च्यांग ने सत्ता-रक्षा के लिए अनैतिक शक्ति का प्रयोग द्वारा दमन आरंभ किया। जनता पर कड़े टैक्स लगा दिए गए। मुद्रास्फीति द्वारा लोगों का शोषण होने लगा। जीवन के रहन-सहन का ढंग और भी अधिक गिर गया। आर्थिक विषमता दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी। इसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर भी पड़ा। मद्यपान, चोरी, डाके तथा अन्य प्रकार के अपराधों की संख्या बहुत अधिक हो गई। राजनीतिक दलों का घनघोर शा…

शेष पेज १८ पर देखिए

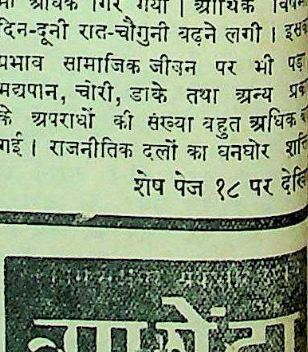

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी

क्या भारतीय विश्वविद्यालयों के संचालक अफ़गानों से शिक्षा लेंगे !

लेखक, सम्पादकाचार्य, पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

भारत की राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्र का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न है। भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद राष्ट्रभाषा का निर्णय अनिवार्य है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ने इस लेख में राष्ट्रभाषा के प्रश्न को सुलझाया है जो पठनीय तथा महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति सेठ गोविन्ददास, मेरठ अधिवेशन में सम्मिलित होते समय।

भारत की राष्ट्रभाषा पर देश में लोग अपने अपने विचार प्रकट कर रहे हैं और ऐसा करना उचित भी है क्योंकि यह प्रश्न शीघ्र ही विधान-परिषद् के सामने निर्णय के लिये उपस्थित किया जायगा। वास्तव में यह प्रश्न है भी बड़े महत्त्व का, क्योंकि उससे हमारे स्वाभिमान का, हमारी साक्षरता का और हमारे राष्ट्र की एकता का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इतने बड़े देश की कोई एक भाषा न होना बड़ी लज्जा की बात है। मुगल साम्राज्य के दिनों में सरकारी भाषा फारसी थी और उसमें केवल राजकाज ही नहीं होता था, वरन् एक प्रदेश के लोग अपने विचार दूसरे प्रदेशवालों को फारसी के द्वारा ही समझाते थे, मुगल साम्राज्य नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर भी बहुत समय तक फारसी राष्ट्रभाषा रूप से वैसे ही व्यवहृत होती थी, जैसे आज अँगरेजी होती है। परन्तु फारसी पढ़े-लिखे लोग देश में बहुत कम थे और उसकी जड़ भी इस देश में नहीं थी, इसलिए अँगरेजी राज्य की स्थापना के साथ ही फारसी भी कलाहीन हो गई।

बंगाल में सबसे पहले अँगरेजी राज्य स्थापित हुआ था, इसलिए वहीं से सबसे पहले फारसी हटी, क्योंकि अँगरेजों को यह मालूम हो गया था कि फारसी देश की भाषा नहीं है। वहाँ तो फारसी क स्थान बँगला ने ले लिया, पर बँगाल के अन्तर्गत ही उस समय बिहार और उड़ीसा प्रदेश भी थे, इसलिए इन्हें भी लोकभाषा का प्रसाद मिला। अनन्तर पश्चिमोत्तर प्रदेश की बारी आई। उस समय मुमालिक मगरबी व शुमाली कहाता था। पहले इसे आगरा प्रांत कहते थे। यहाँ १८३६ तक सरकारी कारोबार फारसी से ही चलता था। ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारियों ने जब जाना कि फारसी यहाँ की भी भाषा नहीं है, तब उन्हें देशभाषा की याद आई। परन्तु उस समय यहाँ फारसी उर्दू-वालों का जोर था। ब्राह्मण भी जीविका के लिये अपने लड़कों को फारसी पढ़ाते थे। इसलिए लोगों ने फारसी के बदले उर्दू को अदालती भाषा बनाने की सिफारिश की। कुछ लोग जो या तो फारसी नहीं जानते थे या समझते थे कि उर्दू देश भाषा नहीं है और वह फारसी लिपि में भी लिखी जाती है, हिन्दी के पक्षपाती थे। पर नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह अधिकारियों के कानों में या तो यह बात नहीं पड़ी या पड़ी तो उन्होंने सुनी-अनसुनी कर दी। इस प्रकार उर्दू इस युक्तप्रदेश की भाषा बन गई।

अकबर के शासन के पूर्वार्द्ध में यह राजकाज हिन्दी में ही होता था, यद्यपि मुगलों की भाषा फारसी थी, परन्तु अकबर के अर्थ-मन्त्री टोडरमल ने हिन्दी की जगह फारसी कर दी और जो दस्तूर उल अमल उस समय हिन्दी में थे, फारसी में कर दिये गये। इस समय से हिन्दी उपेक्षित और तिरस्कृत भाषा हो गई। यद्यपि अकबर, बीरबल, अब्दुर्रहीम खानखाना इत्यादि भी हिन्दी में कविता करते थे। राजभाषा के पद से च्युत हिन्दी अपने कवियों और लेखकों के बीच दिन काटने लगी। पर उसमें गुण तो थे ही, इसलिए उनकी बदौलत आज ३०० वर्ष बाद वह भारत की राष्ट्रभाषा के सिंहासन पर बैठने की तैयारी कर रही है। हिन्दी मध्य-देश की भाषा है, इसलिए वह कुमायूँ से दक्षिण कन्या-कुमारी तक और अटक से कटक तक थोड़ी बहुत समझी जाती है। कलकत्ता, बम्बई जैसे बड़े शहरों में भी हिन्दी बोलकर आप अपना काम निकाल सकते हैं। मोक्ष देनेवाली सात पुरियों में पाँच हिन्दी भाषा प्रदेश में है, और जो बाहर हैं, उनमें भी व्यवहार और यात्रियों से बोलचाल में हिन्दी का ही प्रयोग होता है। कांचीपुरी मद्रास में है जहाँ की भाषा तमिल है। परन्तु राय हरीन्द्रनाथ चौधरी, जो आज पश्चिम बँगाल के शिक्षा-मन्त्री हैं, बताते हैं कि वहाँ भी हिन्दी बोलकर आदमी काम चला सकता है। गया जहाँ पिंडदान करके हिंदू अपने पितरों का उद्धार करते हैं, हिन्दी भाषी प्रदेश में है।

इन सब कारणों से तीन बड़े विद्वानों की राष्ट्रभाषा की योग्यता हिन्दी में दिखाई दी। स्वामी दयानन्द सरस्वती की भाषा गुजराती थी, पर उन्हें हिन्दी की व्यापकता का जब पता चला, तब से वे हिन्दी के बड़े हिमायती बन गये, उसे आर्यभाषा कहने लगे और अपने सब ग्रन्थ हिन्दी में प्रकाशित करना उन्हें उचित जान पड़ा। तदनुसार आर्यसमाज का सब साहित्य हिन्दी में ही प्रकाशित हुआ। दूसरे विद्वान् बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जी थे। उन्होंने बँगला भाषा में अनेक उपन्यास लिखें, जिनमें आनन्द-मठ उपन्यास अपने वन्दे मातरम् गीत के कारण बहुत प्रसिद्ध हुआ है। यही वन्दे मातरम् हमारा राष्ट्रीय गीत स्वीकृत होनेवाला है। १८७२ में आज से कोई ७१ वर्ष पहले बंकिम बाबू ने अपने बंग दर्शन नामक मासिकपत्र में हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकृत किया था। उन्होंने लिखा था, "हिन्दी भाषा में पुस्तक और वक्तृता द्वारा भारत के अधिकांश स्थान का मंगल साधन कीजिये केवल बँगल और अँगरेजी की चर्चा से काम न चलेगा। भारत के अधिवासियों की तुलना करने पर बँगला और अँगरेजी कितने लोग बोल और समझ सकते हैं?" ४० वर्ष पूर्व भी बँगला पत्र हिन्दी के राष्ट्रभाषात्व के समर्थक थे। श्री अरविन्द घोष ने भी अपने कर्मयोगिन् और धर्म-पत्रों द्वारा हिंदी का समर्थन किया था। परन्तु आज बंगाली विद्वान् बँगला को राष्ट्रभाषा बनाने का आग्रह करते हैं।

जिस समय बंकिम बाबू ने हिंदी का पक्ष लिया था, उस समय बँगला कम से कम ५ करोड़ की भाषा थी और जिस समय अरविन्द बाबू ने उसका समर्थन किया था उस समय बँगला ७ करोड़ की भाषा थी। पर आज पाकिस्तान के बाद वह दो करोड़ की भाषा रह गई है। यदि बंगाली विद्वानों की बात मान ली जाय तो ३१॥ करोड़ भारतवासियों को बँगला सीखनी पड़ेगी। फिर बँगला की लिपि अलग है और उसका उच्चारण भी भारतीय अन्य भाषाओं से विलक्षण है। अवश्य ही बँगला का अधुनिक साहित्य उन्नत है, पर इसके सिवा उसमें राष्ट्रभाषा होने की कोई और योग्यता नहीं है। इसलिये बंगला कैसे राष्ट्रभाषा हो सकती है। अन्य प्रादेशिक भाषाओं में कोई राष्ट्र-भाषा पद का दावा नहीं करती यह संतोष की बात है।

परन्तु एक भाषा और भी है जिसके हिमायती इसे राष्ट्रभाषा बनाने के इच्छुक हैं। यह भाषा उर्दू है। मुसलमान इसे अपनी भाषा कहते हैं। उर्दू का प्रचार दिल्ली के आस-पास से लेकर युक्तप्रदेश तक है। युक्तप्रदेश की प्रायः ५॥ करोड़ की बस्ती में फी सैकड़े १४ अर्थात् ७७ लाख मुसलमान हैं। बिहार में ६ फी सैकड़े और मध्यप्रदेश में फी सैकड़े पाँच से भी कम मुसलमान हैं। यदि उर्दू मुसलमानों की भाषा है, तो अधिक से अधिक वह दो करोड़ की भाषा हो सकती है, क्योंकि बंगाली मुसलमान बँगला, गुजराती मुसलमान गुजराती, महाराष्ट्र के मुसलमान मराठी और इसी प्रकार अन्य प्रदेश के मुसलमान अपने अपने प्रदेश की भाषा काम में लाते हैं। अब यदि उर्दू मुसलमानों की भाषा है, तो वह युक्तप्रदेश के मुसलमानों की ही हो सकती है। परंतु इसमें भी एक कसर है। युक्तप्रदेश के गाँवों और कहीं कहीं छोटे रोजगार करनेवाले शहरों के दूसरी ओर मुसलमान भी गाँवों के हिन्दुओं की तरह गाँवों की बोलियाँ ही बोलते हैं और जनता गाँवों में ही रहती है, इसलिए उर्दू गाँवों के मुसलमानों की भाषा नहीं है; परन्तु यह मानकर कि कुछ हिन्दू भी उर्दू के हामी हैं, हमने उर्दूवालों की संख्या दो करोड़ की मान ली है। जो बात बँगला के सम्बन्ध में है वही उर्दू के विषय में भी है। ३१॥ करोड़ पर दो करोड़ की भाषा नहीं लादी जा सकती। फिर इसकी लिपि विलक्षण है जिसमें जो लिखा जाता है, वही नहीं पढ़ा जाता और कहीं कहीं अर्थ का अनर्थ भी हो जाता है। इसके सिवा भाषा का आधार हिन्दी होने पर भी इसके साहित्य का आधार फारसी है। इसलिये इसे राष्ट्रभाषा का पद नहीं दिया जा सकता।

पादरी एथरिंगटन ने १८७३ में अँगरेजी में "स्टूडेंट्स ग्रामर आव दि हिन्दी लैंगुएज" की भूमिका में लिखा था, "ऐसा ही भारत-व्यापी होने का दावा मुसलमानों की भाषा उर्दू के लिये भी किया जाता है, मुसलमान अपेक्षाकृत छोटा समुदाय है, परन्तु यद्यपि उत्तरी भारत के शहरों और बहुत से बड़े बड़े कस्बों में भी दूसरी भाषा के रूप में बहुतेरे हिन्दू भी उसे बोलते हैं, तथापि उर्दू का प्राधान्य भारत के किसी भी प्रदेश पर भी नहीं है—और अवस्था ऐसी है कि यह मुसलमानों के सिवा किसी श्रेणी के लोगों की भाषा हो भी नहीं सकती।" इस प्रकार उर्दू को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना राष्ट्रीयता की हत्या करना है, क्योंकि भीतर से भारतीय भाषा होने पर भी अपने वेश-भूषा से वह अभारतीय बन गई है। और भी, उत्तरवाले तो थोड़े-बहुत उर्दू समझ भी लेंगे, परन्तु दक्षिण में तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम भाषियों के लिये यह बड़ी कठिन होगी, क्योंकि एक तो वे आर्य भाषाएँ नहीं हैं और दूसरे आर्य भाषाओं से उनको मिलानेवाली संस्कृत भाषा का उर्दू से संबन्ध नहीं है। अब रह गई हिन्दी; परन्तु कुछ समय से इसकी सौत हिन्दुस्तानी खड़ी हो गई है। फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के समय से इसकी हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग हिन्दी के लिए होता था। इसका प्रमाण उस हिन्दी-अँगरेजी कोष से मिलता है जो आज

शेष पेज १७ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलों की उत्पादन-समस्या

उत्पादन-वृद्धि से ही भारत अराजकता से बच सकता है

लेखक, श्री कैलाशचन्द्र दुबे एम० काम०
रिसर्च स्कालर, प्रयाग विश्व वद्यालय

आर्थिक दृष्टि से भारत का यह संकटकाल है। गरीबी, वस्तुओं की महँगी तथा दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं के अभाव से राष्ट्र में अराजकता के उत्पन्न होने का भय है, इसलिए आवश्यक है उत्पत्ति बढ़ाई जाये और आर्थिक आधार दृढ़ किया जाये। इस लेख में लेखक ने मिलों की उत्पादन समस्या के हल का उपाय बताया है। लेख सामयिक और विचारणीय है।

भारत-सरकार के उद्योग मंत्री डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी।

दिनोंदिन उत्पादन-समस्या जटिल होती जा रही है। प्रायः कोई भी सप्ताह नहीं जाता जब कि उत्पादन बढ़ाने के लिए कोई न कोई कार्यक्रम न बनाया जाता हो। पर इन सबका विपरीत ही फल हो रहा है और उत्पादन बढ़ाने के बदले घटता ही चला जा रहा है। इस लेख से हम उत्पादन की समस्या का कारण और उसके बढ़ाने का उपाय दोनों का वर्णन करेंगे।

सन् १९४४ तक उत्पादन काफी तेजी के साथ बढ़ता गया। लड़ाई के समय हर मिलों ने काफी लाभ उठाया और कच्ची धातु के न मिलने पर व मजदूरों के बढ़ते हुई वेतन पर ध्यान देते हुये भी उत्पादन डेढ़ गुना हो गया। १९४५ प्रथम उत्पादन घटा। सन् १९४६ व १९४७ में तो उत्पादन इतना तेजी के साथ घटा कि अर्थशास्त्रियों, सरकार एवं जनता सबका ध्यान इधर ही केन्द्रीत हो गया। मिल-कपड़े का उत्पादन सन् १९-४३, ४४ में ४८,२६० लाख गज था परन्तु सन् १९४७ में घटकर ३८,००० लाख गज हो गया। हाथ के बुने हुये कपड़े का उत्पादन भी सन् १९४७ में घट-कर अनुमानतः १२,००० लाख गज ही रह गया। इस्पात का उत्पादन जिसकी उत्पा-दन-शक्ति १२,६४,००० टन है और जिसका उत्पादन ११,६०,००० टन सन् १९४३ में हुआ, सन् १९४७ में घटकर ८,७५,००० टन रह गया। सीमेंट का उत्पादन जो सन् १९४५ में १,००,००० टन मासिक था वह सन् १९४७ में घटकर ८०,००० टन रह गया। इस प्रकार मिल-कपड़ों का उत्पाद २१ प्रतिशत से इस्पात २५ प्रतिशत से, और सीमेंट का ३० प्रति-शत से घट गया। इस प्रकार यह भली भाँति सिद्ध होत है कि हर उद्योग व धंधों का उत्पादन तेजी के साथ घटता जा रहा है और यदि शीघ्र ही कोई उपाय कार्य-रूप में न परिणत किया गया तो एक आर्थिक क्रान्ति हो जायगी। यही कारण है कि सन १९४५ के बाद मुद्रा का फैलाव न बढ़ने पर भी बनी हुई चीजों का दाम काफी तेजी के साथ बढ़ रहा है और रहन-सहन का स्तर नीचा हो रहा है। श्रमियों के वेतन की समस्या जटिल होती जा रही है और उत्पादन व्यय भी बढ़ता जा रहा है इस प्रकार एक आर्थिक समस्या कितनी आर्थिक समस्याओं का रूप से परिणत हो रही है।

उत्पादन कम होने का कारण यह है। उत्पादन व्यय, श्रमियों का वेतन वृद्धि नये श्रम-कानूनों का प्रचलन, कच्चे धातु के दाम एवं कोयले व बिजली मशीन इत्यादि पर व्यय के कारण, काफी बढ़ गया है। पर उत्पादित चीजों का दाम उतनी तेजी से नहीं बढ़ा जितनी तेजी के साथ उत्पादन-व्यय बढ़ गया है। इसलिये पूँजीपतियों एवं मिल-मालिकों का काम कम हो गया है और वे कम लाभ पर जोखिम लेने को तैयार नहीं हैं। यही कारण है कि पूंजीपति लोग अपना व्यवसाय बढ़ाने के बदले घटाने की कोशिश कर रहे हैं। प्रत्येक मिल की वार्षिक रिपोर्ट से पता चलता है कि उनके लाभ प्रतिवर्ष घटते जा रहे हैं। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने केन्द्रीय एसेम्बली के सामने भाषण देते हुये स्वयं इस बात को माना था कि लाभ घट रहे हैं। कपड़ों के मिलों के लाभ जो सन १९४३ में २१ करोड़ रुपया था घटकर सन् १९४६ में ९ करोड़ रूपया रह गया। इसी प्रकार इंडियन शुगर सिन्डीकेट ने यह अनुमान लगाया कि सन् ४४, ४५ में युक्तप्रान्त व बिहार की ९४ मिलों में से ५९ मिलों ने इनकम टैक्स देने के पश्चात् सिर्फ ५·४ प्रतिसैकड़े का लाभ उठाया। इसलिये यह आवश्यक है कि एक जांच कमेटी शीघ्र ही बैठाई जाये और वह सब उद्योगों का उत्पादन-व्यय निर्धारित करे एवं बनी हुई चीजों का दाम ऐसा नियत करे कि कम से कम व्यवसायियों को ८ प्रतिशत का लाभ हो।

दूसरा मुख्य कारण औद्योगिक झगड़ा एवं श्रमिकों का कम काम करने की नीति है। श्रमिक लोगों ने लड़ाई के समय अपनी ताकत को समझ लिया और अपनी इस ताकत का दुरुपयोग कर रहे हैं। वे छोटे से छोटे कारण पर भी हड़ताल करने की धमकी देते हैं नीचे लिखे आँकड़े इस बात को स्पष्ट करते हैं कि हड़तालों द्वारा उत्पादन का कितना नुकसान हुआ।

सन्	झगड़ों की संख्ता	श्रमियों की संख्या	श्रम दिन व्यर्थ गया
१९३९	४०६	४,०९,१८९	४९,९२,७९५
१९४२	६९४	७,७७,६५०	५७,७९,९६४
१९४६	१६,२९	१९६१,९४२	१२३१७,७६२

साथ ही साथ श्रमिकों के काम करने के घंटे सन् १९४६ में ९ घंटे प्रतिदिन अर्थात् ५४ घंटे प्रतिसप्ताह से घटाकर ४८ घंटे प्रतिसप्ताह ८ घंटे प्रतिदिन कर दिया गया। इस काम की अवधि घटने के कारण उत्पादन अनुमानत साढ़े बारह प्रतिशत घट गया। श्रमिकों ने इधर काम करने की नीति भी इस्तेमाल की है जो उत्पादन घटने का एक कारण है। श्रमिक प्रायः अपने काम के समय बाहर मित्रों से बातें करते, पान दबाते, या बीड़ी पीते हुये दिखलाई पड़ते हैं।

तीसरा मुख्य कारण कच्ची धातु के मिलने की कठिनाई कोयले का न मिलना, मशीन के कल-पुर्जों का बेकार हो जाना मिलवालों को कच्ची धातुओं एवं कोे वगैरह के लिये काफी कठिनाई उठा पड़ती है। यदि कोयले का परमिट मि गया तो समय पर माल पहुँच नहीं पा जिसके कारण मिल-मालिकों को अप मिल बन्द कर देनी पड़ती है। मशी लड़ाई के समय में ही प्रायः काम व्यर्थ हो गई थीं। अब उनके पुर्जे बदल कर किसी प्रकार से काम चलाया जा है। बहुत सो मशीनें तो कूड़े में बिक के लायक हो गई हैं। पर नई मशीनों न मिलने के कारण मिल-मालिकों विगड़ी मशीनें किसी प्रकार से चला पड़ता है।

चौथा कारण यातायात की कठि है। रेलवे-मंत्री के आश्वासन देने पर यातायात की सुविधा में कोई अन्तर पड़ा। बहुत सी मिलों में यातायात सुविधा न मिलने के कारण गोदामों माल भर जाता है और गोदाम न के कारण एवं आर्थिक समस्या होने कारण माल बनाना रोक देना पड़ता है।

पाँचवां कारण हमारी सरकार औद्योगिक नीति है। रोज विज्ञाि निकलती रहती हैं। कानूनों में अदल बदलो होती रहती है फिर मंत्री लोग प्र जनता के सामने सरकार द्वारा मिलों ले लेने की नीति बतलाते इन सब से मिल-मालिकों में एक भय छा गया वे व्यापार धीरे धीरे अपना कम कर हैं। सरकार की नीति सिर्फ कागजों पर लिख कर फाइलों में रखने के लिये है है। सरकार ने कई बार कमेटियाँ बन तोड़ीं, फिर बनाईं पर असफल रही।

उत्पादन बढ़ाने के लिये नीचे लि बातों का रहना आवश्यक है।

१—मिलों की बनी हुई चीजों का बढ़ाया जावे एवं पूँजीपतियों को लाभ का विश्वास दिलाया जावे और जितन जोखिम लेते हैं।

२—मजदूरों का वेतन ठीक ढंग नियत हो। उनकी भलाई के लिये स्थापित किये जाय और उनमें भा लाई जाय कि उनकी और मिल-मालि का लाभ इसी में है कि अधिक उत्पा हो, क्योंकि अधिक उत्पादन होने से अधिक होगा और लाभ श्रमिकों को के स्वरूप में मिलेगा।

३—सरकार अपनी औद्योगिक स्पष्ट करदे। मिल-मालिकों का मजदूरों एवं सरकारी अफसरों एवं अर्थशास्त्रि का औद्योगिक सम्मेलन इस प्रान्त बनाया जाय और उस सम्मेलन की टियाँ बनाई जायँ। यह कमेटियाँ उद्यो प्रमुख विभागों की योजना, उत्पादन, कच्चे धातु का वितरण और यातायात कार्य देखें। जो मिले इस पर भी कोई मिल अपना उत्पादन बढ़ा सके उस मिल औद्योगिक सम्मेलन-द्वारा प्रबन्धक कमेटी नियुक्त कर उसके अधि में दे देना चाहिये। यह कमेटी उस के उत्पादन की जिम्मेदार होगी प्रान्तीय सम्मेलन का एक केन्द्रीय सम्मे बनाया जाय जिसके अन्दर यो विभाग, श्रम-विभाग, उत्पादन-वि बनाये जायं और वे प्रांतीय सम्मेलन ऊपर निरीक्षण करें।

हमारा ध्येय उत्पादन बढ़ाना चाहये, क्योंकि सच्ची स्वतंत्रता सिद्ध होगी जब हर मनुष्य को जीवन आवश्यक चीजें बहुत संख्या मिलने लगेगी।

अनुवारण—गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम' एम० ए०

न यह ऋण सह सकूँगा मैं, लुटाओ प्रिय न यों मोती।
अकिंचन जीव जगती का, न अपना है रहा कुछ बल,
तुम्हीं ने दे दिये कुछ स्वप्न, उनका ही रहा संबल,
न तुम-सा वह सकूँगा मैं, बहाओ प्रिय न यों मोती॥
तुम्हीं से मिल गये जो स्वर, उन्हीं को गा रही साँसें,
जगत की वंचना को स्वप्निमा से छा रही साँसे,
न अब कुछ कह सकूँगा मैं, गिराओ प्रिय न यों मोती॥
नयन की आरती में स्निग्ध सुधि की तुम जगा बाती,
न दो यह देवता का भाग, मुझको लाज-सी आती,
न यों हद रह सकूँगा मैं, चढ़ाओ प्रिय न यों मोती॥
लुटाती जा रही आभा तिमिर के पंथ पर अनुपल,
प्रिये, चल विश्व-जीवन में तुम्हारी साधना अविचल,
न पर यों दह सकूँगा मैं, बढ़ाओ प्रिय न यों मोती॥
नयन के क्षुब्ध सागर को, मधुर मुसकान में भरभर,
निछावर कर रही हो विश्व पर वरदान के शुचि स्वर,
न तुम-सा दह सकूँगा मैं, ढहाओ प्रिय न यों मोती॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपहार

गरीब नव विवाहित दम्पति में विशुद्ध होना स्वाभाविक है। वह पति-पत्नी दोनों एक दूसरे को कितना प्रेम करते हैं, यह उनके उपहार से प्रगट होता है। दोनों अपनी गरीबी के कारण प्रिय वस्तु की परवाह न करके प्रेम के पीछे उन्हें बेच देते हैं, जिनका मनोवैज्ञानिक प्रभाव एक दूसरे पर संकटमय पड़ता है साथ ही उसमें आनन्दातिरेक रहता है। कथाकार ने इस घटना के चित्रण में चमत्कार प्रकट किया है। कहानी रोचक, मार्मिक और पठनीय है।

दो रुपये सवा तेरह आने! सब के सब पैसे!! कुल एक सौइक्यासी पैसे!!! गरीबिनी डीला ने विवाह के पश्चात् बड़ी कठिनता से यह धन एक मास में एकत्रित किया था, अपनी इस पूँजी के जमा करने में उसे न जाने कितनी बार तरकारीवाले कुँजड़ों और अन्य दूकानदारों से झगड़ा करना पड़ा था और न जाने कितने शब्द और समय खर्च करने के पश्चात् इन पैसों की सूरत देखना नसीब हुई थी, 'डीला' ने दो-तीन बार पैसा-पैसा करके सारी पूँजी को गिना, हर बार जोड़ दो रुपये सवा तेरह आने ही हुआ। अगले दिन बड़ा दिन था, विवाह के पश्चात् पहला बड़ा दिन और इस अवसर पर दिल के अरमान निकालने के लिए केवल दो रुपये सवा तेरह आने! डीला ने उदास होकर सिर झुका लिया।

* * *

डीला के पति जेम्स ने कभी अच्छे दिन भी देखे थे, परन्तु —अब तो—अब वह एक आफिस में मामूली क्लर्क था, आय की यह दशा थी कि बड़ी कठिनता से घर का खर्च चलता था, दो कमरों का एक छोटा सा मकान किराये पर ले रखा था, एक मास विवाह को हुआ था, उस समय से इसी धुन में था कि किसी प्रकार अपनी आय बढ़ाये और पत्नी के साथ आनन्दमय जीवन व्यतीत करे।

* * *

विवाह के पश्चात् कल पहला 'बड़ा दिन' आनेवाला था, और यदि सच पूछिए तो विवाह के पश्चात् 'डीला' पहली बार ही उदास हुई थी। पहला बड़ा दिन आये और डीला की ओर से पति को कुछ भी उपहार न दिया जाये, यह कैसे सम्भव हो सकता था? चित्त किसी प्रकार शान्त न होता था, वह कुर्सी से उठकर खिड़की पर जा खड़ी हुई और बाहर की ओर देखने लगी। चिड़ियाँ चहचहा रही थीं, एक बिल्ली पड़ोसी की दीवार पर मटक-मटककर चल रही थी, डीला के चित्त पर कुछ चोट सी लगी और वह खिड़की के पास से लौटकर मेज के पास आई। उपहार! दो रुपये सवा तेरह आने!! यही दो विचार उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे, इतने दामों में भला वह जेम्स को उपहार में देने के लिए क्या वस्तु ले सकती थी?

* * *

मेज पर एक पुराना शीशा रखा हुआ था, डीला ने सिर उठाया, शीशे में अपना मुँह देखा, देर तक चुपचाप अपने रूप को निहारती रही। उसने अपने लम्बे लम्बे घने सुनहरी केश खोले, वह कमर तक नर्म-नर्म, बिखरे हुए सुनहरी बालों में छिप गई, बहुत देर तक उनकी लटें हाथों में उठाकर उन्हें आशापूर्ण दृष्टि से देखती रही। 'जेम्स' इस केश-राशि की कितनी प्रशंसा किया करता है! इनसे कितना प्रेम करता है? परन्तु आज यह यों ही बिखरे पड़े हैं! वह कभी कभी कहा करता है, मैं अपने आपको उस दिन धन्य समझूँगा, जिस दिन तुम्हारे बालों—हाँ, सुनहरी बालों—के सजाने का सामान ला सकूँ। डीला के नेत्र अश्रु-पूर्ण हो गये।

* * *

तनिक देर के पश्चात् उसने फिर बालों का जूड़ा बाँध लिया, सिर पर टोपी रखी, कोट पहना और घर से चल खड़ी हुई। वह एक दूकान के सामने जाकर खड़ी हो गई, जिसके बोर्ड पर लिखा था—"बालों से बनी हुई चीजें।" वह तनिक देर दूकान के सामने रुकी और फिर दरवाजा खोलकर भीतर चली गई, दूकान की मालिक एक बुढ़िया स्त्री थी, उससे कहा—"मेरे बाल मोल ले सकोगी?"

बुढ़िया ने कहा—"यदि पसन्द आयेंगे, तो खरीद लूँगी, जरा टोपी उतारो और बाल खोलकर मुझे दिखाओ।"

डीला ने अपनी सुनहरी केश-राशि बिखेर दी।

बुढ़िया ने आशापूर्ण नेत्रों से बालों की लटें हाथ में लेकर उन्हें भली प्रकार परखा और बोली—"बीस रुपये दूँगी।"

उसने कहा—"स्वीकार है।"

* * *

डीला के दो घण्टे व्यतीत हो गये, वह रुपये बटुए में डाले बिसातियों की दूकानों पर फिर रही है, और अपने पति के लिये, कोई अच्छा, ढङ्ग का उपहार मोल लेना चाहती है। बड़ी बड़ी दूकानों की समस्त वस्तुएँ देख डालीं और अन्त में बहुत सोच विचार के पश्चात् उसने एक वस्तु उपहार के लिए पसन्द की।

जेम्स के पास एक पुरानी घड़ी थी, जो उसे बड़ी प्रिय थी, जब उससे कोई समय पूछता, तो बड़ी शान से उसे जेब से निकाल कर, मुस्कराकर समय बताता। परन्तु उसके पास, पिता की मृत्यु के पश्चात् मिली हुई एकमात्र पैतृक—सम्पत्ति—इस घड़ी की जञ्जीर न थी!

डीला ने एक जञ्जीर पसन्द की। जो न केवल सुन्दर, बल्कि मजबूत भी थी। उसने इसका मूल्य मालूम कर इसे खरीद लिया, और २१) का बिल चुका दिया।

* * *

डीला घर पहुँची, वह प्रसन्न थी, परन्तु जब शीशे सामने पहुँची और उसने अपनी टोपी उतारी, तब उसका प्रसन्न मुखमण्डल शोकाकुल हो गया। जेम्स मेरे बालों को कटा हुआ देखकर क्या कहेगा? कितना दुखी होगा? परन्तु फिर? फिर मैं क्या करती? दो रुपये सवा तेरह आने में तो कुछ भी नहीं आ सकता था।

उसने शीघ्रता से बालों में घूँघर डालनेवाली कैंची निकाली और उसकी सहायता से बालों के सिरों को मोड़कर जितना सुन्दर बनाया जा सकता था, बना लिया।

उसने पति के लिये चाय तैयार की और फिर कुर्सी लेकर दर्वाजे के पास बैठ गई और जेम्स के आने की प्रतीक्षा करने लगी। वह सोच रही थी कि मेरी यह कृति कहीं जेम्स की दृष्टि में मुझे अप्रिय न बना दे।

* * *

दवाजा खुला और जेम्स भीतर आया। वह कुछ घबराया-सा दृष्टिगोचर हो रहा था।

जेम्स ने दर्वाजा बन्द कर 'डीला' पर दृष्टि डाली। डीला घबरा गई। धीरे-धीरे उठकर जेम्स के पास गई और बोली—यह किस प्रकार आप मुझे देख रहे हैं? क्या हुआ! मेरे बालों को कटा हुआ देखकर क्यों शोकाकुल होते हो। मैंने स्वयं ही अपने बाल बेच दिये हैं, बताओ फिर क्या करती? तुम्हें बड़े दिन पर उपहार जो देना चाहती थी। फिर बढ़ जायेंगे, चिन्ता न कीजिये, मेरे बाल बड़ी शीघ्रता से बढ़ते हैं। सत्य बताओ, तुम मुझ पर अप्रसन्न तो नहीं हुए भला तब जानूँ, जब बता दो, मैं बाल बेचकर तुम्हारे लिये क्या उपहार लाई हूँ!

जेम्स ने कहा—क्या वास्तव में तुमने अपने बाल कटवा दिये हैं?

ऐसा प्रतीत होता था कि वह इतनी विस्तृत बातचीत हो जाने पर भी कुछ न समझ सका है।

डीला बोली—क्यों? क्या मेरा सौन्दर्य नष्ट हो गया? नहीं, नहीं, मैं तो वही हूँ।

जेम्स ने इस चिन्तित दशा में कमरे में चारों ओर देखा और विक्षिप्तों की भाँति घूमता हुआ बोला—"तुमने बाल कटवा दिये हैं?"

डीला बोली—कमरे में क्या देख रहे हो? मैंने बाल कटवाकर बेच दिये हैं।

शेष ११ पर देखिए

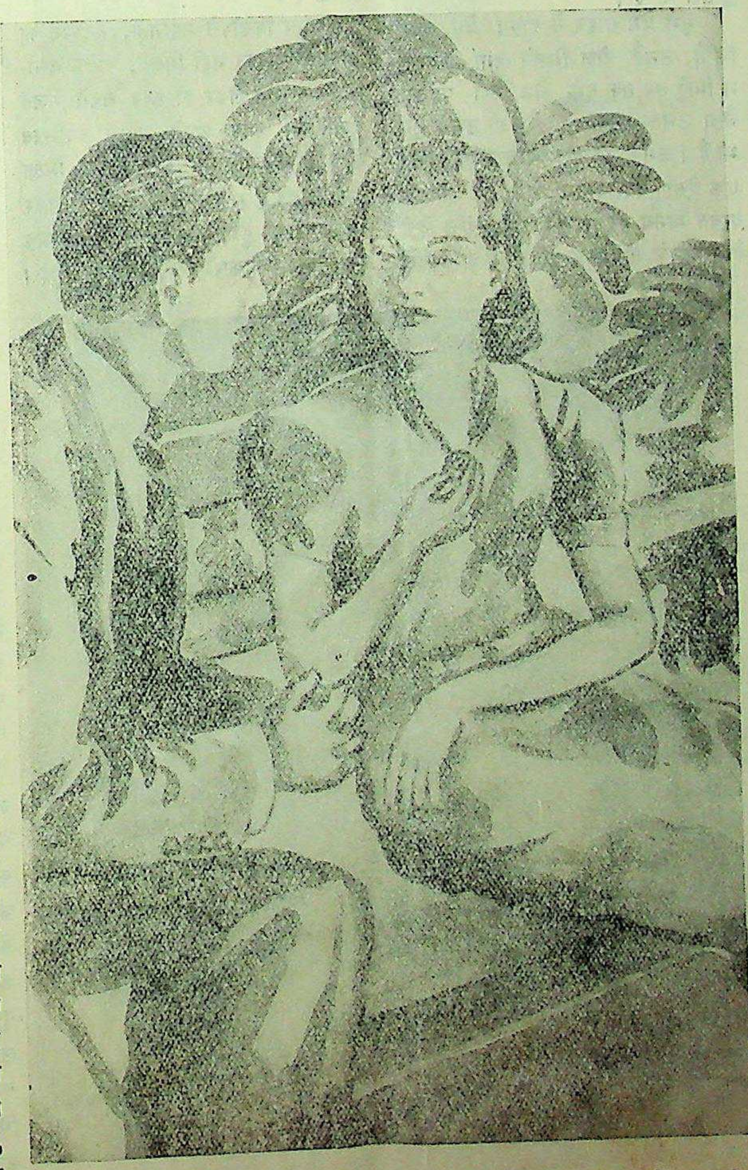

जेम्स कुछ देर पश्चात् बोला—'डीला इस समय हम दोनों ही बेकार हैं। तुम्हारे बालों को सजाने के लिए मैंने अपनी घड़ी बेच दी है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by देशदूत ... Chennai and eGangotri

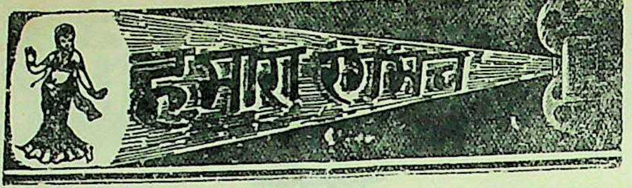

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता प्रेम अदीब से एक भेंट

जीवन में मनोरंजन का स्तर सांस्कृतिक आधार पर निर्मित होना चाहिए

लेखक, श्री उमेश जोशी

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता प्रेम अदीब।

मैं प्रेम अदीब से मिलने के लिये उनके निवासस्थान पर गया। वह अँधेरे में रहते हैं। ज्यों ही मैं उनके ड्राइंग रूम में पहुँचा, उसके पाँच मिनट बाद ही उनके दर्शन हुए। उनके दर्शनों के लिये मुझे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। बड़ी नम्रता के साथ मुस्कराते हुए उन्होंने पूछा—"कहिये जनाब आपने कैसे इस गरीबखाने पर कष्ट किया?" मैं इस प्रश्न को सुनकर दंग रह गया। वह इसलिये कि मैंने स्वप्न में भी यह आशा नहीं की थी कि प्रेम अदीब इतने नम्र, इतने सौजन्य, इतने सौम्य एवं इतने सरल होंगे। मैंने प्रायः कलाकारों को थोथी शान की चट्टान पर ही बैठे हुए देखा है। मैंने कहा—"सिर्फ आपके दर्शन करने चला आया, आप तो एक महान कलाकार हैं आपका "राम" का रूप अभी दुनिया की आँखों में छाया हुआ है, वास्तव में आपने "राम" की भूमिका में सजीव, स्फूर्तिमय, प्राणमय काम किया है।" "अरे भई अभी तो मैं कला को सीख रहा हूँ, कला के स्कूल का एक छोटा-सा विद्यार्थी हूँ। मैं कला के महासागर के किनारे खड़ा हूँ, अभी मेरा अस्तित्व ही क्या? अभी मुझे बहुत कुछ सीखना है। मेरे सामने सीखने के लिये कला का विशाल क्षेत्र पड़ा है।" प्रेम अदीब ने मेरी तरफ देखते हुए कहा। "जो कुछ भी हो, फिर भी आप कला की दुनिया में बहुत आगे बढ़ चुके हैं, आपकी कला बहुत परिष्कृत हो चुकी है। आपकी नम्रता में, आपकी लघुता में ही आपकी कला की विशालता व्यापकता प्रच्छन्न है।

हम दोनों में आपसी परिचय हुआ और दिल खोलकर हुआ। प्रेम साहब बड़े जिन्दादिल कलाकार हैं। उनके अन्दर अहंकार तो बिलकुल है ही नहीं। सबसे सरलता से मुस्कराते बातें करना आपकी सबसे बड़ी विशेषता है। आपसे वार्ता करने में बड़ा मजा, बड़ा आनन्द आता है, दिल यही चाहता है कि आपसे बातें करता ही जाये। बातों का सिलसिला कभी न टूटे। कभी उनको यह ख्याल नहीं आता कि मैं एक महान् कलाकार हूँ। प्रेम साहब से मिलने के लिए कोई कठिनाई नहीं, कोई बनावट की दीवाल आपके बीच नहीं। आपका दरवाजा सभी के लिये खुला हुआ है। छोटे व्यक्ति से लेकर बड़े व्यक्ति तक आप एक ही ढंग से वार्ता कर रहे हैं, और एक ही दिलचस्पी के साथ। प्रेम साहब किसी व्यक्ति को नाराज नहीं करते। जहाँ तक होता है हर योग्य व्यक्ति की आप सहायता करते हैं जो भी आपके पास पहुँचता है। प्रतिभा का आदर करना वह जानते हैं। आप बहुत दयावान् हैं। दूसरों के कष्ट सुनकर, दूसरों की दर्दभरी कहानियाँ सुनकर आपका हृदय बहुत जल्दी पिघल जाता है। आप मनुष्यता के दायरे में बहुत आगे हैं। कलाकार के साथ साथ आप एक महान् व्यक्ति भी हैं। आपके अन्दर इन्सानियत कूट-कूटकर भरी हुई है। आप कलाकार के साथ साथ व्यवहार-कुशल भी हैं।

मुझे प्रेम साहब से इतना प्रेम हुआ कि मैं उनसे रोज मिलने लगा, जब तक न मिलूँ तब तक मुझे चैन नहीं पड़ता। जैसा उनका नाम है वैसे ही उनमें गुण भी हैं। उनके उज्ज्वल व्यक्तित्व के अन्दर एक ऐसी देदीप्यमान शक्ति है जो कि बरबस मानव को अपनी ओर खींच लेती है। उनके जीवन के इर्द गिर्द आडम्बरों का परकोटा नहीं खिंचा हुआ है उनको कृत्रिमता से सख्त नफरत है। वह उच्च आदर्श और सादा जीवन पसन्द करते हैं। उनके जीवन की बुनियाद स्वाभाविकता के पावन उसूलों की पृष्ठभूमि पर रक्खी हुई है। ख्याति की दुनिया में इतना आगे बढ़ जाने पर भी उन्होंने सज्जनता और विनय को नहीं छोड़ा। उनके कलात्मक व्यक्तित्व के यही दो आधार हैं। सिनेमा की दुनिया में आज प्रेम साहब ही एक ऐसे कलाकार हैं जिनकी बुराई कोई नहीं करता, जिनसे सभी खुश रहते हैं। प्रायः सभी निर्माता एवं निर्देशक उनको अपने सम्पर्क में रखना चाहते हैं। सबके साथ मिल-जुल कर काम करना आपको अच्छा लगता है।

आप किसी से महानता, बड़प्पन का दृष्टिकोण लेकर नहीं मिलते, बल्कि समानता का भाव लेकर ही आप सबसे मिलते जुलते हैं। आप अपने महान् व्यक्तित्व को प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व में मिला देना चाहते हैं। मुझे प्रेम जी से मिलकर जितनी खुशी हुई, उतनी खुशी मुझे अब तक कम कलाकारों से मिलने पर हुई। उन्होंने अपनी सुन्दर छाया मेरे हृदय [पर] छोड़ दी। उनके व्यक्तित्व की विशेषता[ओं] के सम्बन्ध में जितना भी लिखा [जाय] उतना थोड़ा है।

अब तक प्रेम जी के कई रूप ह[मारे] सामने आ चुके हैं। महान् कलाकार [तो] वह हैं ही—इसके साथ साथ सफल निर्दे[शक] तथा सफल निर्माता भी हैं। अब [तक] उन्होंने दो चित्र दिये "कसम" [और] "देहाती" और अब "राम विवाह" [का] निर्माण करने जा रहे हैं। इस चि[त्र] के निर्माण में आप बहुत दिलच[स्पी] ले रहे हैं। बड़े जोरों के साथ आ[ज] कल "राम विवाह" का कार्य च[ल] रहा है। बड़े उत्साह के साथ रा[म] विवाह सम्बन्धी साहित्य की खोज हो र[ही] है। प्रेम साहब का यह चित्र रजतपट [की] दुनिया में एक नई हलचल पैदा कर दे[गा]। अब तक के बने हुए सभी पौराणि[क] चित्रों को आप भूल जायेंगे इस चित्र [की] सरसता में, इस चित्र की अच्छाई में। "राम विवाह" को लोकप्रिय एवं प्राण[] मय बनाने के लिए प्रेम जी बड़ी मेहनत और लगन के साथ काम कर रहे हैं। राम के पावन जीवन का वास्तविक चि[त्र] आपको राम विवाह में मिलेगा। "रा[म] विवाह" की तीन कला की स्वाभाविकता, कला की सुन्दरता एवं कला की सत्यता की सतह पर डाली गई है। राम के चरि[त्र] को संकीर्णता के दायरे में बन्द नहीं कि[या] जायेगा और न उनके दिव्य जीवन [को] अनैतिकता की डगर में प्रवेश करा[या] जायेगा। राम विवाह आपको बतलायेगा [कि] सच्चरित्रता नैतिकला और लोक-मर्यादा [के] लिए एक व्यक्ति को क्या करना चाहिये, उसका क्या कर्त्तव्य है। संघर्षों की दुनि[या] में पड़कर क्या कर्त्तव्य की गली से भाग जाय। कदापि नहीं। साहस के साथ जीवन से जूझते रहना। कर्त्तव्य करते रहना बिना प्रतिफल की आशा लगाये हुए। "राम विवाह" में वही रामराज्य वाली टीम काम कर रही है। राम की भूमिका स्वयं प्रेम साहब कर रहे हैं। सीता की भूमिका में शोभना समर्थ उत[र] रही हैं। लक्ष्मण की भूमिका में उमाकान्त। संगीत श्री शंकरराव व्यास जी दे रहे हैं जिनकी मधुर ध्वनियों ने आपको रामराज्य में आत्मविभोर कर दिया था। इस चित्र के गीत सुप्रसिद्ध गीतकार श्री मोती बी० ए० ने लिखे हैं, जिन्होंने आपको "साजन" "सिन्दूर", "नदिया के पार", "रामबाण" "भक्त ध्रुव" में मनोहर गीत दिये। मोती जी ने बड़े परिश्रम के साथ राम विवाह के गीत लिखे हैं। इस चित्र के गीत, गीत की दुनिया में एक नई क्रान्ति का सृजन करेंगे, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है। प्रेम अदीब के बड़े भाई श्री राज अदीब भी कला और साहित्य से बड़ा स्नेह रखते हैं। वह पूर्ण लगन के साथ कला को सीख रहे हैं। उन्होंने अब तक "शहीद", "देहाती", "उपाहरण" "खिड़की" आदि चित्रों में काम किया है। "राम विवाह" में भी वह काम कर रहे हैं। वह जीवन की प्रत्येक भूमिका में काम करने को तत्पर रहते हैं। इ[स]

शेष पेज १४ पर देखिए

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री शोभना समर्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी—उपहार

(पेज ९ का शेष)

तुम्हारे प्रेम के सामने यह बाल तुच्छ थे। समझे, बताओ, क्या तुम्हें मेरे बाल मुझसे अधिक प्रिय हैं?

जेम्स ने अपने कोट की जेब से डिब्बा निकाला और डीला के हाथ में देकर कहने लगा—तुम कैसी बातें करती हो, तुम मेरे लिये अपने बाल बेचो, और मेरा प्रेम कम हो जावे? मैं किसी और ही विचार से चिन्तित था, इस डिब्बे को तो खोलो।

डीला ने काँपते हुए हाथों से जल्दी जल्दी डिब्बे के तागे तोड़े और उसका कागज खोल डाला, खोलते ही प्रसन्नता के कारण वह अर्द्धमूर्छित सी हो गई।

सामने कंघे, बालों में लगाने के काँटे, पिनें और फीते पड़े थे और डीला अश्रुपूर्ण नेत्रों से उन्हें निहार रही थी। इन वस्तुओं के लिए वह कितनी तरसा करती थी; परन्तु यह वस्तुएँ पाईं, तो कब? जब केश-राशि नष्ट हो गई थी।

उसने डिब्बे को उठाकर प्रेमपूर्वक छाती से लगा लिया, और अश्रुपूर्ण नेत्रों से जेम्स की ओर देखा, मुस्कराने का उद्योग किया और कहा—मेरे बाल बहुत शीघ्र बढ़ जाते हैं।

* * *

वह शीघ्र अपनी जगह से उठी और बोली—अरे, मैं अपना उपहार देना तो भूल ही गई।

उसने अपने कोट की जेब से घड़ी की जंजीर निकाली और उसे अपने कोमल हाथों में लेकर कहा—

"मैं तुम्हारी घड़ी के लिये जंजीर लाई हूँ। देखो, तो कितनी सुन्दर है। शहर की समस्त दूकानें देखकर मैंने इसे पसन्द किया है। इसे घड़ी में लगाकर कम से कम सौ बार घड़ी का टाइम देखना होगा। समझ गये, लाओ मुझे घड़ी दो, इसे लगाकर देखूँ तो, भला कैसी सजती है?

घड़ी निकालने के बजाय 'जेम्स' धम् से गिर पड़ा, और कुछ देर पश्चात् बोला—'डीला' आओ, हम-तुम, दोनों अपने अपने ये उपहार अगले वर्ष के बड़े दिन के लिये उठा रखें; इस समय यह दोनों ही बेकार हैं। तुम्हारे बालों को सजाने के सामान खरीदने के लिये मैंने अपनी घड़ी बेच दी है। इस 'बड़े दिन' पर हम एक दूसरे को प्रेम ही उपहार-स्वरूप अर्पित करते हैं। आओ, दोनों प्रेमपूर्वक चाय पियें।*

* सुप्रसिद्ध अमरीकन कथाकार ओ० हेनरी की एक कहानी। अनुवादक, श्री. आनन्दीप्रसाद मिश्र 'निर्द्वन्द्व'।

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

विवाह की सार्थकता

क्या विवाह-प्रथा का अन्त ही करना होगा ?

लेखक, चौधरी कृष्णमाधव एम० ए० (फाइनल)

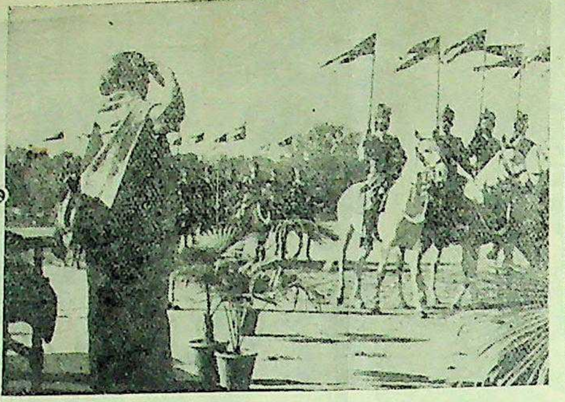

संयुक्तप्रांत की गवर्नर श्रीमती सरोजिनी नायडू, पुलिस की वार्षिक परेड के अवसर पर अभिवादन स्वीकार कर रही हैं।

दिल्ली में अखिल भारतीय विश्वविद्यालय के अध्यापक सम्मेलन की स्त्री प्रतिनिधियों का दल।

मानव आज इतना उत्पीड़ित, दुखी एवं अशांत क्यों है ? एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से जो सम्बन्ध है वह इतना कृत्रिम, विषाक्त एवं खोखला क्यों होता जा रहा है ? क्या कारण है कि हमारी इस दुर्दशा में कमी तथा सुधार के स्थान पर दिनों-दिन वृद्धि होती जा रही है ? एक सच्चे भारतीय की भाँति यदि इन प्रश्नों का उत्तर दिया जाय तो इसके अतिरिक्त क्या हो सकता है कि अपने पतन के लिए स्वयं हमी उत्तरदायी हैं। हमने जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल दिया है। हम नाना प्रकार की सभ्यताओं एवं आदर्शों के पीछे बौखलाये हुए भटक रहे हैं। शताब्दियों की दासता ने हमें जर्जर एवं निर्जीव बना दिया है। हमारे कुछ निश्चित सिद्धांत नहीं और हम जीवन को विदेशों से किराये पर लिये हुए उद्घोषों तथा आदर्शों के प्रकाश में देखने का दयनीय प्रयास कर रहे हैं—अपनी प्राचीन संस्कृति एवं महान् आदर्शों की लाश पर हम क्रान्ति, परिवर्तन और नवयुग का निर्माण करने जा रहे हैं—पर हो कुछ भी नहीं रहा है।

यही नित नवीन विचारधारायें हमारे सामाजिक जीवन को क्लेषपूर्ण बना रही हैं। हम 'उपायों' को 'लक्ष्य' समझ कर ही आपदाएँ स्वयं मोल ले रहे हैं। आज भारत का ही नहीं सम्पूर्ण विश्व का पारिवारिक जीवन अत्यन्त कटु एवं क्लेशयुक्त हो रहा है इसकी जड़ में भी मानव की घोर स्वार्थी नियति एवं थोथे कल्पित आदर्शों की सड़ी गन्दगी है। अपने में कोई सन्तुष्ट नहीं। जो कुछ दूसरे पर है वही श्रेष्ठ है वही सुन्दर है यही भावना आज स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध को कलहपूर्ण बना रही है—अधिकारों और स्वार्थों की इस छीना-झपटी में हम प्रतिक्षण सुख और शांति से कोसों दूर हटते जा रहे हैं और आज हमारे सामने यह प्रश्न तक आने लगा है कि क्या समाज की समस्त प्रथाओं का अन्त ही कर देना चाहिये ? जिनमें विवाह-प्रथा भी एक है।

"देशदूत" के गत १६ जनवरी के अङ्क में 'विवाह की निरर्थकता' नामक लेख में कुछ ऐसे ही विचारों का प्रस्फुटन हुआ है। इस लेख में लेखक ने वैवाहिक जीवन की कलह और कटुता की ओर इंगित करते हुए स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध को विवाह द्वारा नहीं वरन् 'समानता' स्वतंत्रता, सचाई व ईमानदारी—के—'प्रेम' द्वारा स्थापित करने की घोषणा की है। लेखक के मतानुसार 'विवाह-प्रथा का अन्त इसलिए होना अनिवार्य है, क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में विवाह एक पाप है और कोई कारण नहीं है कि हम उस पाप को करते ही चले जायँ।' लेखक ने संभवतः यह समझा है कि मनुष्य, मनुष्य न होकर पशु है। 'पाप' शब्द के अर्थ को भी समझाने का प्रयास नहीं किया गया है।

श्रीमती सत्यवती वर्मा, बी० ए० आप जबलपुर के प्रांतीय महाविद्यालय की छात्रा हैं। हिन्दी की उदीयमान कहानी लेखिका तथा समाज-सेविका हैं।

आपने लिखा है कि 'एक दूसरे को पूरी तरह जानने के पश्चात् किया हुआ विवाह ही स्थायी और सफल हो सकता है।' मैं इस बात को मानता हूँ कि जिन दो प्राणियों को एक सूत्र में बाँधा जाय उनके विचार, रहन-सहन, रुचि स्वभाव, पसंदगी—का ध्यान अवश्य रखना चाहिए परन्तु यह 'प्रगाढ़' एवं 'स्वर्गीय प्रेम' कौन सी वस्तु है और कैसे इसकी अनुपस्थिति में विवाह असम्भव है यह मैं आज तक नहीं समझ पाया। आज तक जितने भी प्रेम-विवाह हुए हैं उनकी घृणित एवं करुण दुःखान्त कहानियाँ सभी को ज्ञात हैं। 'विवाह के पूर्व प्रेम' का आदर्श पश्चिम का है जहाँ विवाह एक ठेका है एक वैधानिक-वेश्यावृत्ति है, क्योंकि इस प्रेम का आधार केवल रूप और इंद्रिय-जन्य सुख ही होता है और फिर यह भी निश्चय नहीं कि इस 'कोर्टशिप' के बीच ही में पुरुष अपना मतलब बनाकर चंपत न हो जायें और बेचारी स्त्री का जीवन भ्रष्ट हो जाये। दूसरे, प्रेम के इस गरमागरम बाजार में असुन्दर स्त्री-पुरुषों का क्या स्थान होगा, यह भी कोई बता सकता है ? इसलिए सामाजिक परम्पराओं एवं मान्यताओं द्वारा जोड़े जानेवाले स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध के अतिरिक्त अन्य सभी योजनायें मुझे अनर्गल बकवाद ही प्रतीत होती हैं। मनुष्य बिना समाज के जीवित नहीं रह सकता इसलिए उसे कुछ नियम, कुछ आदर्श बनाकर ही जीवन यापन करना होगा। हो सकता है कि बहुत सी पुरानी परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा मान्यताओं में आज जीवन न रहा हो, वे निरर्थक तथा दोषपूर्ण हों; उनमें परिवर्तन किया जाय। विवाह-प्रथा जो कि सार्वभौम एवं शाश्वत है उसे नष्ट नहीं किया जा सकता। यदि स्त्री तथा पुरुष की सदैव बढ़ती हुई इच्छाओं को, बलवती इंद्रिय-लिप्साओं को किन्हीं नियमों तथा सीमाओं में बाँध कर नहीं रखा जायेगा तो हम उन्हें दानव एवं पशु बनने से बचा नहीं सकते—विवाह एक इसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था है।

लेखक ने लिखा है कि 'इस भौतिक संसार में न यह संभव है और न उचित है कि मनुष्य राम और सीता की तरह रहें और उनके आदर्शों को निभायें।' क्या मैं पूछ सकता हूँ कि श्री राम के जीवन चरित्र में कौन सी ऐसी अमानवीय-अलौकिकता है और कौन सी ऐसी भयंकर त्रुटियाँ हैं जो शाश्वत मानव-जीवन के मूल सिद्धान्तों को स्पर्श नहीं करतीं। शायद यहाँ पर लेखक मर्यादा पुरुषोत्तम के सहज जीवन तथा श्री सीता के स्वाभाविक चरित्र का साधारण मानव-जीवन से सामंजस्य स्थापित करने में असमर्थ हुआ है। सबसे विचित्र और हास्यास्पद बात तो यह है कि राम और सीता का आदर्श लेखक के लिये असंभव होने के साथ साथ अनुचित भी है।

स्वतंत्र भारत के समाज के सजीव एवं ठोस निर्माण का मार्ग-प्रदर्शन करना तथा एक लेख लिखकर अपरिपक्व विचारों द्वारा खंडन-मंडन करना, दो भिन्न बातें हैं। मैं यह मानता हूँ आज का दाम्पत्य जीवन बड़ा कलहपूर्ण एवं विषाक्त है; परन्तु इसका कारण विवाह-प्रथा को बताना मूर्खता है। इसका कारण वही बातें हैं जिनका निर्देशन इस लेख के आरंभ ही में कर दिया गया है। आधुनिक सिद्धान्तों तथा पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रँगी शिक्षा से हमारे मस्तिष्क आक्रांत हैं और हम जीवन में अपना स्थान बना पाने में असमर्थ हैं। हमारे कोई निश्चित आदर्श नहीं—मौलिक विचार-धारा का हममें सर्वथा अभाव है हम उधार ली हुई बुद्धि द्वारा संसार में अपना मार्ग निर्धारित कर रहे हैं। स्त्रियाँ आज घर को तिलांजलि देकर पुरुषों से समानता करने, बराबरी के अधिकार पाने को उतावली हो रही हैं, क्योंकि पश्चिम की चमक को उनकी दुर्बल आँखें नहीं सह सकतीं और आज की शिक्षा उन्हें स्वच्छन्दता एवं विलासिता की ओर लिये जा रही है। उनके नैतिक और सामाजिक आदर्शों का स्थान पश्चिमी देशों की विचर-प्रणाली ले रही हैं। पुरुष और विशेषकर नवयुवक-समाज आज खुलेआम अराजकताप्रिय, उच्छृंखल एवं नैतिक दृष्टि से घोर पतित होता जा रहा है--क्यों है ऐसा ? इसीलिये कि हम अपनी संस्कृति के पवित्र सिद्धान्तों को दकियानूसी एवं निरर्थक समझने लगे हैं किन्हीं भी नियमों का पालन करना, संयम का प्रयोग करना, गुलामी समझा जा रहा है। आज जब तक हम अपने में भीतर और बाहर दोनों ओर से आमूल परिवर्तन नहीं करते; अपनी विचार-प्रणाली, अपने आदर्श, अपना रहन-सहन सभी कुछ भारतीय संस्कृति के पुनीत सिद्धान्तों पर अवलम्बित नहीं करते तब तक हमें अपने राष्ट्र और समाज के भविष्य को सर्वथा अंधकारपूर्ण समझना चाहिये।

मानव-जीवन के दो पहलू हैं एक कठोर, वीरता-पूर्ण, पुरुषार्थी दूसरा कोमल, सहानुभूतिपूर्ण एवं स्निग्ध प्रेममय—एक का क्षेत्र है बाहर और दूसरे का घर। एक का अधिनायक है पुरुष और दूसरे की अधिष्ठात्री है स्त्री। स्त्री का चरम उत्कर्ष है मातृत्व – परन्तु उसे आज वह भूल रही है। सतीत्व को वह ढोंग समझने का प्रयत्न कर रही है। यदि पुरुष अपना कर्तव्य भूल जाय अथवा पतित हो जाय तो उसे सुधारने का भार स्त्री पर—सार्वभौम एवं शाश्वत जननी पर है। यह कोई सिद्धांत नहीं वरन् कुछ सत्य है। मानव-जीवन को सफल बनाने का समस्त भार नियंता ने इस दुर्बल हृदय, दयावान् एवं निस्वार्थ प्राणी ही पर छोड़ दिया है। परन्तु आज वह भी घृणित स्वार्थयुक्त सांसारिकता के गंदे कीच में उतर रही है—उसे अधिकार चाहिये, पद चाहिये, ऐश्वर्य चाहिये। यही

शेष पेज १८ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और आराम

अदरक की खेती

पेट के लिये उपयोगी पदार्थ

लेखक, श्री रामेश वेदी आयुर्वेदालंकार,
हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट

दुनिया के सब प्रदेशों में अदरक की खेती की जाती है। भारत में यह नमीदार गरम प्रदेशों में सब जगह बड़े पैमाने पर पाई जाती है; परन्तु मुख्यतया मैदानों में बोई जाती है। मद्रास, कोचीन तथा त्रावन्कोर में विशेषत: और कुछ हद तक बंगाल और पंजाब में खेती की जा रही है।

आलू के बाद अदरक की खेती अच्छी होती है। सामान्यतया किसी भी दाल की फसल लेने के बाद उस जमीन में अदरक बोना अच्छा रहता है। पौदा छाया में अच्छा पनपता है इसलिए आम आदि बड़े वृक्षों के पड़ोस की भूमि का इसके लिए अच्छा उपयोग किया जा सकता है। इससे फलों के वृक्षों को भी एक लाभ यह है कि हानि पहुँचानेवाले कीड़ों से यह उनकी रक्षा करता है।

* * *

कठोर चिकनी भूमि किसी भी कन्द-वाली फसल के लिए अनुकूल नहीं होती। पथरीली और मट्टानि भूमि भी इस फसलों के लिए अच्छी नहीं। गहरी, उपजाऊ और स्वभावत: पानी के अच्छे निकासवाली भूमि को यह पौदा अधिक पसन्द करता है। गहरी नदियों से बनाई गई, रेतीली जगहों पर, जैसे बड़ौदा और कायरा की मुरमुट जमीन है; यह पूर्ण सन्तोषप्रद आता है।

* * *

अदरक की खेती के लिए जमीन चुन ली गई है तब सबसे पहले यह अभीष्ट होता है कि वर्षाऋतु की ठीक समाप्ति पर हल चला दिया जाय क्योंकि उस समय हल चलाने के लिए भूमि ठीक हो गई होती है। सुहागे के खेत के डले तोड़ डाले जाने चाहिए। आनेवाली एप्रिल में पहली बारिश के बाद दुबारा हल चलाकर सुहागा फेर लेने से भूमि अदरक की गाँठें बोने के योग्य हो जाती है।

* * *

इस पौदे को खाद प्राय: नहीं दी जाती। परन्तु एक मन राख और दो या तीन मन खली का मिश्रण प्रतिएकड़ में डालने से फसल को और जिन वृक्षों के नीचे यह बोई गई है उनको भी लाभ होता है। खाद की उपेक्षा की गई हो तो जिन वृक्षों की छाया में अदरक बोई जा रही है, बार बार की कृषि के कारण उन्हें हानि पहुँचती है। खाद दो बार दी जानी चाहिए। पहली बार, गाँठों को बोने के ठीक बाद और दूसरी बार तब जब पौदों की जड़ों में मिट्टी चढ़ाई जाने लगे।

* * *

अदरक की छोटी-छोटी गाँठें, जिनमें प्रत्येक में दो या तीन आँखें हों, बीज कहलाते हैं। भूमि तैयार करने के बाद नियमित पंक्तियों में दो इंच गहराई में नौ-नौ इंच की दूरी पर बीज (गाँठें) बोने चाहिए। प्रत्येक पंक्ति का आपस में अन्तर भी नौ इंच होना चाहिए। एक एकड़ में बोने के लिए दो मन बीजों की आवश्यकता होती है। जब पौदे ऊपर आ जायं तो जड़ों पर, बरसात शुरू होने से पहले ही मिट्टी चढ़ा दी जानी चाहिए। मिट्टी इस तरह चढ़ाई जाती है कि बीच में सीधी नालियाँ या खाइयाँ बन जाती हैं। इन खाइयों का रुख खेत के ढलान की ओर होना चाहिए, जिससे बारिश का पानी पौदों के पास खड़ा न रहकर सीधा बाहर निकल जाय।

* * *

निराई सदा हाथों द्वारा सावधानी से की जानी चाहिये। खेत की अवस्था के अनुसार तीन से छः बार तक निराई की जा सकती है। प्रत्येक बार में घास-पात और विजातीय वनस्पतियाँ निकाल देनी चाहिये। नहीं तो विजातीय घास आदि के बढ़ जाने पर उनकी जड़ें अन्दर गहरी जाकर अदरक की गाँठों के साथ मिल जाती हैं। तब उनके साथ उलझी हुई जड़ों को निकालना कठिन होता है और इससे फसल को हानि भी बहुत पहुँचती है।

* * *

जब तक बारिश नहीं पड़ती हर छठे दिन पौदों को पानी दिया जाना चाहिये। उसके बाद यदि दस दिन से अधिक बीतजाने पर भी वर्षा नहीं हुई तो सिंचाई अवश्य कर दी जानी चाहिये। बारिश बन्द हो जाने पर सिंचाई हर छठे दिन जरूरी होती है। जब तक फसल पक न जाय सिंचाई उसी तरह जारी रखनी चाहिये। नवम्बर की समाप्ति या दिसम्बर के आरम्भ में फसल खोदने के लिए तैयार हो जाती है। फसल पकने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं कहा जा सकता है।

* * *

फूल निकलने बन्द हो जाने पर और पत्ते पूर्णतया सूख जाने पर जड़ें खुरपे से खोदकर बाजार में बेच दी जानी चाहिये। अथवा सुखाकर सोंठ बना ली जानी चाहिये।

फसल खोदते हुए कुछ गाँठें जमीन में ही छोड़ दी जायँ तो वे ही बीज का काम दे देती हैं। तब नया बीज नहीं बोना पड़ता। परन्तु इस तरह से प्राप्त फसल घटिया किस्म की होती है, गाँठे बहुत छोटी होती हैं और उनमें रेशे भी अधिक होते हैं।

* * *

सामान्यतया अच्छे बने हुए किसी भी घर का बीच का कमरा अपेक्षाकृत ठंडा होता है। इसलिए वह अदरक रखने के लिए बहुत अनुकूल होता है। ठंडा नमीदार वायुमण्डल जिसमें वायु का आवागमन स्वतन्त्रता से हो सके, इसके लिए अच्छा रहता है। रखने से पहले उसको भली भाँति देखकर उसमें से सड़े-गले टुकड़ों को फेंक देना चाहिये। कमरे के अन्दर मिट्टी के फर्श को दस बारह इंच खोदे और निकली हुई मिट्टी को पानी से गीला कर दे। आठ-दस दिन में मिट्टी पानी सोख लेती है और फर्श काफी सूख जाता है। अदरक को अब चार पाँच फीट ऊँची ढेरी में रखकर इसे अदरक के सूखे पत्तों से ढक दे। इस पर प्राय: पानी छिड़क दिया जाता है। ढेरियों की सप्ताह में एक बार परीक्षा कर ली जाय और यदि बीच का भाग शेष की अपेक्षा अधिक गरम है तो सारी अदरक कमरे से निकाल-कर सड़ी-गली गाँठों को चुनकर निकाल फेंक दे। ढेरी ठंडी रहे तो समझना चाहिये कि अदरक ठीक है।

प्रभात सिंडीकेट द्वारा

मुफ्त सुन्दर रिस्टवाच

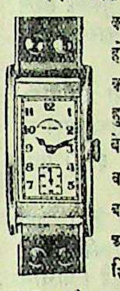

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है और उनको लम्बे, घूंघर वाले और चमकदार बनाता है। जहां बाल न आते हों वहां फिर से पैदा होने लगते हैं। आंखों की रोशनी तेज करता है और सिरको ठण्डक पहुंचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २।) तीन शीशी पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक फैंसी म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है और एक अंगूठी सोना (लन्डन न्यु गोल्ड) बिलकुल मुफ्त भेजी जाती हैं।

जरूरी नोट:—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ और चार अंगूठी लन्डन न्यु गोल्ड. और चार घड़ियां बिलकुल मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जलदी करें क्योंकि यह समय बार-बार हाथ न आयेगा।

आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

लन्डन कमर्शियल कम्पनी
(D.D.A.) पी० बी० २ अमृतसर

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो –) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

५००) नक़द इनाम

तावीज मुहब्बत

इस तावीज मुहब्बत को पास रखने से आधा घण्टे के अन्दर आप जिससे मुहब्बत करना चाहें, कैसा ही सख्त दिल क्यों न हो बेकरार हो जायगा और आपके क़दमों में आ गिरेगा। हर मुसीबत से निजात, हस्ब मन्शा शादी करें। हर काम गारण्टी से किया जाता है। ज्यादा तारीफ़ फजूल है। कीमत फी तावीज २) तीन तावीज ५) महसूल ६ आने।

श्री शङ्कर भण्डार
खारी, बावली देहली।

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना ३) रुपये तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको दस हजार रु० नकद इनाम। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। बा० ला० मुन्शीराम जी क्लाथ मर्चेन्ट धर्मशाला से लिखते हैं कि आपका सोना अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला, यह देखकर बहुत खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है।।१२ तोले सोना वापसी डाक से और भेज दें बाद में आपको और भी आर्डर दिया जायगा। यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है और असली सोने की तरह कूटा या पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिसको हुशियार से हुशियार शर्राफ मुश्किल से पहचान सकता है, मशहूर करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु०। ३ तोला का मूल्य ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला का २८) रु०।

जरूरी नोट :—हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त दी जावेगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी काँटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोला के खरीदार को एक लाकट विमय चैन, दो जोड़ी चूड़ी और दो बाम्बे फैशन अँगूठी और डाक-खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता—

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी (D. A.)
हलका नं० २२ अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-चर्चा

हिन्दी ही क्यों?

लेखिका, प्रो० कमला देवी गर्ग एम० ए०। प्रकाशक, वंगीय हिन्दी-परिषद्, कलकत्ता। मूल्य, पाँच रुपये

भारत सैकड़ों वर्षों के बाद आज स्वतंत्र हुआ है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि युगों तक तोड़े गये उसके विविध अंग और उपांग अपने आप सहसा जुड़ भी गये हैं। क्षत-विक्षत अंगों की मरम्मत आज की हमारी समस्याएँ हैं। विधान के अनुसार देश का शासक जनतंत्रता के आधार पर रखा जा रहा है। इसकी सफलता एवं सिद्धि बहुत अंशों में जन-शिक्षा पर निर्भर है। लेकिन, हमारी सी असीम निरक्षरता भी शायद आधुनिक संसार में कहीं न देख पड़ेगी। इतनी बड़ी जनता को आधुनिक ढंग से शिक्षित करना भी कोई छोटी समस्या नहीं, और शिक्षा के प्रश्न के साथ ही भाषा माध्यम का प्रश्न अटूट रूप से जुड़ा हुआ है। हमारी सदियों की गुलामी ने अन्य कुपाठों के साथ अपनी ढपली और अपना राग बजाते रहने की दूषित आदत भी तो पैदा कर दी है। ठीक और बेठीक के निर्णय का विवेक बहुत शिथिल पड़ गया है। ऐसे समय में इस भाषा-विषयक जटिल समस्या को सुलझाने के लिए देश को और जाति को किसी ऐसी पुस्तक की बड़ी आवश्यकता थी जिसमें किसी व्यक्ति-विशेष का मत या तर्क न हो वरन्, पक्ष, विपक्ष, द्वन्दी, प्रतिद्वन्दी, समर्थक और विरोधी सभी की बातें समान रूप से सामने रख दी जायँ और जनता स्वयं अपना निर्णय कर ले। 'हिन्दी ही क्यों' में सुयोग्य लेखिका ने अपनी पांडित्य एवं अकाट्य तर्कों से पूर्ण भूमिका के अतिरिक्त लगभग चालीस विशिष्ट विचारकों के मत इस विषय में एकत्रित कर दिए हैं। इनके द्वारा इस समस्या का प्रायः दो सौ वर्षों का इतिहास अनायास ही संग्रहीत हो गया है। अर्थात्, भाषा की इस समस्या का मूल वर्तमान में नहीं वरन् अतीत में है, और बराबर ही मनीषी विचारक क्या देशी क्या विदेशी क्या हिन्दी भाषाभाषी क्या अन्य भाषाभाषी इस प्रश्न पर विचार करते रहे हैं। उन्हीं के शब्दों में स्थलों के निर्देश-सहित बातें सामने रखी गई हैं। इससे पुस्तक की प्रमाणिकता विशेष रूप से सिद्ध हो गई है। जिन विचारकों के मतों का संग्रह किया गया है, सभी सम्मानित एवं प्रसिद्ध मनीषी हैं। सबकी सम्मतियों का अपना अपना मूल्य है। पुस्तक की भूमिका तथा उसका सम्पादन जिस योग्यता से किया गया है उसके द्वारा एक साधारण पाठक भी अपने लिए बिना किसी विशेष प्रयास के इस समस्या का हल निकाल सकता है। हम सुयोग्य लेखिका को एवं वंगीय हिन्दी परिषद् कलकत्ता को इस उपयोगी प्रकाशन के लिए बधाई देते हैं।

—संपादक

* * *

भारत की भाषा—लेखक, श्री स्वामीनाथ शर्मा, प्रकाशक नालन्दा प्रकाशन गृह, बम्बई, मूल्य १) पृष्ठ-संख्या ४५।

राष्ट्रभाषा का प्रश्न आज दिन दूना और रात चौगुना उग्र रूप ग्रहण करता जा रहा है। भारत के बहुसंख्यक निवासी इस बात के लिए अधीर हैं कि भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी घोषित कर दी जाय। प्रस्तुत विषय में इसी विषय का प्रतिपादन किया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है लिपि और भाषा के रूप में हिन्दुस्तानी अथवा उर्दू तथा फारसी लिपि को स्वीकार करना कितना अवैज्ञानिक और अदूरदर्शितापूर्ण कार्य होगा। पुस्तक में अनेक उपयोगी मानचित्र भी हैं: जिनमें नागरी लिपि का क्षेत्र, हिन्दी भाषा का प्रदेश और विश्व के मानचित्र में उन विदेशी स्थानों का निर्देश किया गया है, जहाँ जहाँ हिन्दी भाषा भाषी रहते हैं। पुस्तक सरल और सुबोध भाषा में होने के कारण और भी अधिक उपयोगी हो गई है।

ग्राम स्वराज्य—लेखक, श्री रामनारायण यादवेन्दु बी० ए०, प्रकाशक, नालन्दा प्रकाशन-गृह बम्बई। मूल्य ३।।) पृष्ठ-संख्या ९६।

भारत कृषिप्रधान देश है। यही कारण है कि इस देश में गाँवों की संख्या ७।। या ८ लाख से कम नहीं है। प्राचीन युग में हमारे देश के गाँव सर्वथा आत्म-निर्भर रहते थे किन्तु ब्रिटिश शासन के युग में राजनीतिक स्वार्थवश अँगरेज शासकों ने गाँवों की उपयोगिता और आत्म-निर्भरता नष्ट कर दी थी और गाँवों को सामाजिक, आर्थिक और नैतिक पतन के गर्त में भी ढकेल दिया था। बापू ने सर्वप्रथम स्वप्न देखा था कि यदि गाँवों को आत्मनिर्भर बना दिया जाय तो अँगरेजों का स्वार्थ ही समाप्त हो जाय और उन्हें तुरन्त यहाँ से खिसक जाना पड़ेगा। अब तो कांग्रेस सरकार स्थापित हो गई है, यद्यपि विदेशी शासक तो नहीं रहे हैं फिर भी कांग्रेस सरकार देशहित की दृष्टि से ग्रामोत्थान के काम में निरन्तर लगी हुई है। इस पुस्तक में गाँवों के पंचायती राज के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के प्रत्येक गाँव में रहने की आवश्यकता है, यद्यपि मूल्य ३।।) बहुत अधिक है।

शाह आलम की आँखें—लेखक, श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति; प्रकाशक, नालन्दा प्रकाशन-गृह, मूल्य ३।) पृष्ठ-संख्या १८४।

"शाह आलम की आँखें" एक ऐतिहासिक उपन्यास है। पुस्तक का कथानक एक राजपूत युवक और युवती का प्रेम है। मुगल काल में भारतीय राजपूत नारियों का सतीत्व जिस खतरे में सदैव रहता था, उन पर मुगल शासकों की जैसी कुदृष्टि रहती थी उसका वास्तविक विवरण इस पुस्तक में है। इतने पर भी राजपूत नारियाँ अपने चरित्र की दृढ़ता और बल के आधार पर अपने सतीत्व की रक्षा करती थीं और किसी प्रलोभन के आगे उसका परित्याग नहीं करती थीं। पुस्तक रोचक है।

जीवन में नई उमङ्ग लाने के लिए
खोई जवानी पाना चाहें तो
"श्री प्रेम रहस्य" मुफ्त
मँगावें। पता—पी० बी० ३७२, देहली

रङ्गमञ्च

(पेज १० का शेष)

चित्र की कहानी स्वयं प्रेमअदीब ने लिखी है और संवाद पं० अनुज ने लिखे हैं। पं० अनुज संवाद लिखने में बड़े सिद्ध हस्त हैं। इस चित्र का कला दिग्दर्शन सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री कनु देसाई कर रहे हैं, जिन्होंने "रामराज्य", "भरतमिलाप", "विक्रमादित्य" में अपनी अद्वितीय कला का प्रदर्शन किया था। वह स्वयं निर्माता भी हैं, जिन्होंने आपको "गीत गोविन्द" दिया। इस चित्र का दिग्दर्शन प्रेम अदीब जी कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इतनी बढ़िया टीम के बल पर राम विवाह अवश्य एक श्रेष्ठ चित्र बनेगा। इस चित्र को अच्छा एवं लोकप्रिय बनाने के लिये टीम का प्रत्येक व्यक्ति बड़े उत्साह के साथ काम कर रहा है।

प्रश्न—आपका जन्मस्थान कहाँ है?

उत्तर—मैं सुलतानपुर का रहनेवाला हूँ।

प्रश्न—आपकी हाबी क्या है?

उत्तर—मुझे साहित्यक पुस्तकें पढ़ने में बड़ा आनन्द आता है। मैं खाली समय में उपन्यास और कहानियाँ पढ़ता हूँ। अँगरेजी चित्र भी जब कभी मैं देख लिया करता हूँ क्रिकेट और टेनिस से भी मुझे प्रेम है। टेनिस को मैं अधिक पसन्द करता हूँ।

प्रश्न—आप किस आदर्श को लेकर फिल्म-जगत् में आये?

उत्तर—मैंने फिल्मी दुनिया में जब प्रवेश किया था उस वक्त फिल्मी-संसार में गन्दगी का बोलबाला था। प्रत्येक चित्र गन्दगी से युक्त रहता था। मैंने सोचा कि क्या कला को गन्दगी से ऊपर नहीं रक्खा जा सकता? क्या कला का रूप परिष्कृत करने पर जनता को पसन्द न आयेगा। क्या कला का वास्तविक रूप वही है जो कि हमारे भारतीय चित्रों में प्रदर्शित किया जाता है? यही सब प्रश्न मेरे दिमाग में चक्कर काटने लगे। मुझे अभिनय से प्रारम्भ ही से प्रेम रहा है, इसलिए ही मैं फिल्मी-दुनिया में आया, हाँ प्रवेश करने में मुझे रुकावटों, मुश्कलातों का अवश्य सामना करना पड़ा। मेरे मार्ग में जो भी कठिनाई आई, उसको मैंने बड़े उत्साह के साथ हटाया—कभी मैंने हिम्मत नहीं हारी अपने आदर्श के लिये बराबर आगे बढ़ता ही गया उलझनों के घने बादलों को फाड़ता हुआ। मेरी यह हार्दिक इच्छा रही है कि मैं कभी बुरे चित्रों में काम न करू। और जहाँ तक मुझसे बन पड़ा मैंने अपने आदर्श की रक्षा की। भारतीय संस्कृति से कला के रूप को सजाना मुझे प्रिय है, क्योंकि मैं समझता हूँ कि कला का वास्तविक रूप सत्यं शिवं सुन्दरम् होना चाहिये और जिस कला के अन्दर संस्कृति का रूप प्रतिबिम्बित नहीं करता, वह कला, कला नहीं।

प्रश्न—कला को प्राणमय किस प्रकार बनाया जाता है?

उत्तर—कला को प्राणमय बनाने के लिए हमें जिन्दगी की गहराइयों में प्रवेश करना पड़ेगा। जितना हम जिन्दगी की गहराई में उतर जायेंगे, उतनी ही हमारी कला प्राणमय बनती जायेगी। कला को सजीव बनाने के लिए हमें जिन्दगी से खूब परिचित होना चाहिये तभी हम मानव जीवन का वास्तविक रूप स्वाभाविकता के साथ अपनी कला में उतार सके और जब तक हम मानव जीवन के ठीक ठीक चित्र अपने अभिनय कला में नहीं उतार सकेंगे, तब तक हमारी कला में स्फूर्ति नहीं आ सकती। जिस कला के अन्दर उज्ज्वल एवं देदीप्यमान भावनाओं की रम्य तसवीर न होगी, वह कला जीवन को प्राणमय नहीं बना सकती। कलाकार को मानवता का पूर्ण अध्ययन होना चाहिये। जो कलाकार मानवता के अध्ययन में जितना बढ़ा होगा उस कलाकार की कला उतनी ही स्फूर्तिमय होगी। कला को प्राणमय बनाने के लिए हमें बड़ी तपस्या, साधना करनी पड़ती है। कोई कला बिना साधना के जिन्दा नहीं रह सकती। जिस कला का जन्म अनैतिकता की भूमि में होता है, वह कला शीघ्र खत्म हो जाती है, उससे विश्व को लाभ नहीं होता। इसलिए कला का सृजन करते वक्त हमें यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि इस कला के द्वारा पैसा तो मिले लेकिन साथ साथ कला अपने स्वरूप को न खो बैठे। यदि कला ने अपने जाज्वल्यमान स्वरूप को दफना कर हमें पैसा दिया तो फिर उस पैसे का आना निरर्थक है। कला को जिन्दा रखकर हमें उससे पैसा कमाना चाहिये। और कला को हम तभी जिन्दा रख सकते हैं जब कि हम मानव जीवन को स्वाभाविकता के साथ कला में उतार सकें। कला और जीवन मैं दो नहीं समझता, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं इसलिए कला और जीवन को साथ साथ रखना चाहिये। जब कला, जीवन से भाग जाती है तब कला मुर्दा बन जाती है फिर वह कला विश्व को नूतन सन्देश नहीं दे सकती।

प्रश्न—"देशदूत" के पाठकों के लिए आप अपना कोई सन्देश दीजिये?

उत्तर—मेरा सन्देश कुछ नहीं, [illegible] उनसे इतना ही कहना है कि वे [illegible] देखने के दृष्टिकोण को सांस्कृतिक बना [illegible] तभी निर्मातागण भी श्रेष्ठ से श्रेष्ठ चित्र [illegible] सकेंगे। जब तक हमारे दर्शकों का दृष्टि[illegible]कोण निम्नकोटि का रहेगा, तब [illegible] निर्माताओं से श्रेष्ठ चित्र की उम्मीद [illegible] की जाय, क्योंकि निर्माता को [illegible] बिजनेस का भी लालच होता है। देश[illegible] के पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि [illegible] वर्तमान मनोरंजन की रूप-रेखा को [illegible] दें। मनोरंजन का दायरा विशाल बना[illegible] मनोरंजन की बुनियाद हमें जीवन [illegible] सांस्कृतिक स्तर पर रखनी चाहिए। [illegible] तभी श्रेष्ठ चित्र आपको प्रदान कर [illegible] जब कि आपकी ओर से हमें अच्छे [illegible] के लिये उत्साह मिलेगा एक जबर[illegible] माँग मिलेगी। जब आप लोग ही [illegible] चित्रों की प्रशंसा करते रहेंगे तो फिर [illegible] कलात्मक चित्र किस प्रकार दे सकते [illegible] ऐसे चित्रों को आपको देखना ही [illegible] चाहिए जो कि आपको अनैतिक [illegible] उच्छृंखलता के खण्डहर में ले जाय। [illegible] पूर्ण विश्वास है कि आप लोग [illegible] अपने कर्तव्य का पालन करेंगे। अब [illegible] समय आ गया है जब आपको [illegible] सिकुड़ी दुनिया से ऊपर उठना है। [illegible] लोगों को राष्ट्र सम्बल बनना है [illegible] आप अपने जीवन को प्रत्येक तरह [illegible] उच्च बनाइये। अब आपका देश [illegible] हो गया है। आपको स्वतंत्र देश का [illegible] नागरिक बनना है। और सफल ना[illegible] बनने के लिये अपनी दृष्टि को परि[illegible] कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय मछली-बिल—३
क्या मछुओं के अधिकार का अपहरण होगा ?

[३]

लेखक, श्री रामनाथ निषाद

धारा नं० ३ की उपधारा नं० ३ के वाक्यखंड (क) के नं० १, २, ३ में लिखा है कि, "स्थिर इंजनों को लगाना और चलाना, स्थायी या अस्थायी बाड़े बनाने को निषिद्ध या नियमित करना और जालों का नाप प्रकार और जाल के फन्दे मछली पकड़ने के लिए अन्य उपकरण आकार और उनको उपयोग में लाने का ढंग बतलाया जायगा।

और परिशिष्ट में जहाँ अपराधों का विवरण है उसके पहले नम्बर में लिखा है कि, "कि ऐसे जाल से मछली मारना, जिसके फन्दे इस ऐक्ट के अन्तर्गत बनाये गये नियमों के अनुसार निर्धारित नाप से छोटे हों उसके लिए एक सौ रुपया दण्ड देना पड़ेगा।

इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि अब दूसरे किस्म के जाल रखने पड़ेंगे और पुराने किस्म के जाल जो हजारों रुपयों से तैयार किये गये हैं चूल्हे में झोंकने पड़ेंगे। अब नये किस्म के जालों को उपयोग में लाने के लिए मछुवों की ट्रेनिंग होगी। मालूम होता है, सरकार ने अमेरिका आदि देशों से ट्रेंड टीचर बुलवा लिये हैं। अभी तो मछुवों के जालों पर ऐसा प्रतिबन्ध लगाया गया है? विधान बाननेवाले व्यक्तियों ने मछुवों की वर्तमान दशा का अवलोकन जरा भी नहीं किया। उनकी दृष्टि में तो यही आता है कि जैसी मेरी दशा है वैसी ही मछुवों की भी है। तभी तो उनके हजारों रुपयों से तैयार किये गये जालों को बेकार बनाया जा रहा है। वास्तव में इस व्यवसाय को भी धनियों के हाथ में देने का यह एक बहाना है।

दुनिया के किसी देश ने ऐसा कानून नहीं बनाया जिससे गरीबों का घर गिरवा कर उनसे यह कहा जावे कि अब तुम इस जगह अपने खर्च से नया अलीशान मकान बनवाओ। विचारने की बात है कि वे रोज कमाते हैं, तब खाते हैं! उनके पास लाखों का बालाई माल नहीं है, या उनके हाथ में कुछ ऐसे अधिकार नहीं हैं, जिससे वे रुपया पैदा करते फिरते हों। वे तो रातभर जाड़े के दिनों में भी, जब कि लोग कम्बलों और रजाइयों के भीतर पड़े रहते हैं, नदियों के बीच में ऊपर से ओस और कुहरे की छत्रछाया में मछली मार किसी प्रकार अपना निर्वाह करते हैं। ऐसी दशा में उनसे यह आशा करना कि वे नये किस्म का जाल बनवाकर मछलियाँ मारें—सरासर अन्याय करना है।

इस विधान में एक भारी त्रुटि यह भी है कि इसके अनुसार नये किस्म के जाल से सिर्फ बड़ी मछलियाँ ही पकड़ी जा सकेंगी, जो बाजार में बहुत महँगी बिकेंगी। गरीब मनुष्य मछलियाँ न खा सकेगा। गरीब मनुष्य सस्ती मछलियाँ खाता है और सस्ती छोटी मछलियाँ ही होती हैं। जिन्हें मारना विधान के निषिद्ध है।

जहाँ पर जाल लगाने या बाड़े बनाने का प्रश्न है, वहाँ भ्रष्टाचार खूब बढ़ेगा। जो अधिक घूस दे सकेगा वही किसी स्थान पर जाल लगा सकेगा और बाड़ा बना सकेगा। धनहीन होने के कारण यह मछुवों की शक्ति के बाहर है। फिर तो इसके भीतर धनी व्यक्ति ही घुसेंगे और मछुवों को नौकर रखेंगे। इनसे मछली विभाग के अफसरों की भी बन आयेगी।

धारा नं० ३ की उपधारा नं० ३ के वाक्यखण्ड (ख) में लिखा है कि "बन्दूक, बर्छी, धनुष और बाण या उसी प्रकार के हथियारों द्वारा मछली मारना या मारने का प्रयत्न करना, जलाशय को विषैल्य करना या कारखानों इत्यादि के गन्दे पानी से जलाशय गन्दा करना विषिद्ध है।"

इस ऐक्ट का प्रभाव उन अन्य व्यक्तियों पर पड़ता है, जो अभी तक शिकार खेलते चले आये हैं। अब उनके शिकार में यह कानून बाधा डालेगा। अब वे मनुष्यों के शत्रु भयंकर घड़ियाल का भी शिकार नहीं कर सकते क्योंकि धारा नं० २ में मछली की परिभाषा में घड़ियाल शब्द भी आ गया है। पता नहीं कि ऐसा कानून बनाकर घड़ियाल पालने से हमारे विधान-कर्ताओं ने कौन सा लाभ सोचा है।

रही बात जलाशयों को विषैला और गन्दा करने की। अब तो सरकारी अफसर इसके द्वारा किसानों को बहुत तंग कर सकते हैं, क्योंकि तालाबों में सनई सड़ाई जाती है, बर्तन माँजकर धोये जाते हैं, लड़के आबदस्त लेते हैं जिससे तालाब गन्दा होता रहता है। किसान अनपढ़ हैं, उनको जरा जरा सी बात में तंग किया जा सकता है।

इस ऐक्ट में यह नियम छिपा हुआ मालूम पड़ता है कि कोई व्यक्ति तालाबों की मछलियों की उत्पादन शक्ति न मारे। यदि इसके भीतर यह भेद है तो किसानों में बड़ा असन्तोष उत्पन्न होगा क्योंकि किसान तालाबों से आबपाशी करते हैं और यह निश्चित है कि पानी निकल जाने से मछलियाँ मर जायँगी। ऐसी दशा में सरकारी अफसर पानी को न निकालने देंगे। इससे किसानों से संघर्ष होगा और साथ ही सरकार के प्रति उनमें दुर्भावना फैलेगी। इससे एक तरफ जहाँ मछली की थोड़ी वृद्धि होगी वहीं दूसरी तरफ अन्न की उपज मारी जायगी। अतएव ऐसे विधान न बनाने चाहिए।

आगे धारा नं० ३ की उपधारा नं० ३ के वाक्यखण्ड (ग) (ङ) (च) बिलकुल समझ के बाहर मालूम पड़ रहे हैं। उनमें लिखा है कि "हेल्सा के अतिरिक्त अन्य अण्डे-बच्चे जननेवाली नर और मादा मछलियों को अण्डे देने के दिनों में पकड़ने या पकड़ाने का उद्योग करने या मारने का निषेध करना।"

"ऋतुएँ निर्धारित करना जिनमें किसी विशेष प्रकार की छोटी या बड़ी मछली या उनके अण्डे पकड़ने या मारने का निषेध होगा।"

"कम से कम नाप या तौल निर्धारित करना जिससे कम की किसी निर्धारित प्रकार की कोई मछली मारी या बेची न जायगी।"

इसके पढ़ने से मालूम होता है कि मछली विधान-कर्तागण मछली मारने में बड़े दक्ष हैं, वे जल के भीतर दूरबीन से देखकर मछलियाँ मारते हैं और उनके नये जाल भी ऐसे बने हैं, जिनमें हेल्सा मछली ही आती है और अंडा-बच्चा देनेवाली मछली नहीं फँसती। अब तो उन्हें चाहिए कि इस ढङ्ग से मछली मारने के लिए ट्रेनिङ्ग क्लास भी खोल दें। अब तो इस विधान से अण्डा-बच्चा देनेवाली मछली की पहचान करने, ऋतुएँ निर्धारित करने और उसकी नाप-तौल बतलाने के लिए डाक्टरों की आवश्यकता पड़ेगी और उनका भी वेतन मछुवों से लिया जायगा। क्या पानी के भीतर देखकर कोई मछलियाँ मारता है जो अंडा-बच्चा जननेवाली नर या मादा मछली न पकड़ी जाय? क्या इस प्रकार का विधान बनाने से मछलियों का विकास हो सकता है? हाँ, इस लिहाज से मछलियाँ जरूर बढ़ जायँगी, जब वे मारी न जावें। इसका यह अर्थ तो नहीं कि मछलियाँ न मारी जावें, मछुवे भले ही भूखों मरें?

मछली न पकड़ने के लिए ऋतुएँ निर्धारित की गई हैं इसका अर्थ यही है कि उन दिनों में लोग मछलियाँ न खायें और खाना है तो दूसरे प्रान्तों में जाकर खायें, जहाँ इस तरह का विधान नहीं है। अथवा विलायती सूखी मछलियाँ मँगाकर खायँ।

जहाँ पर मछलियों की नाप और तौल का वर्णन है वहाँ मछुवे सदा अपराधी रहेंगे, क्योंकि उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं, जिससे वे नाप और तौलवाली मछलियाँ मार सकें। मछली-सम्बन्धी विषयों में प्रवीण होते हुए भी हमारे मछली-विधायकों को शायद यह नहीं मालुम कि बहुत सी मछलियाँ छोटी ही जाति की होती हैं। वे तीन-चार इञ्च से ज्यादा नहीं बढ़तीं और न तौल में एक छटाँक से अधिक होती हैं। इस विधान के अनुसार अब क्या वे न मारी जायँगी? फिर तो इसके उद्देश्य में जहाँ रायल कमीशन आन इण्डियन एग्रिकल्चर का जिक्र करके उसकी बात बतलाई है कि "कृषक के भोजन के पोषक तत्त्वों की वृद्धि का जिसकी अतीव आवश्यकता है सबसे अच्छा उपाय यह है कि उसमें मछली मिलाई जाय" उसके कथन की पूर्ति छोटी मछलियों के न मारने से कैसे हो सकती है, यह विचारणीय विषय है। सेलेक्ट कमेटी में भी न भेजकर जल्दी से विधान पास कर देना उचित नहीं था। इस विधान को बनाने के पूर्व इसमें जनता की राय लेना आवश्यक था। इस तरह का नादिरशाही कानून बनाना स्वतन्त्र भारत के लिए लज्जाजनक है। यह सत्य है कि इस तरह के सभी कानून, जिनमें सदस्यों की कोई दिलचस्पी नहीं होती, ज्यों के त्यों पास हो जाते हैं। यदि ऐसेम्बली में मछुवों का कोई प्रतिनिधि होता, तो उसको दिलचस्पी होती, वह अन्य सदस्यों को अपनी ओर आकर्षित करता और भरसक उसे पास होने न देता। यह तो एक तरह की चुनौती है कि मछुवे भी अपना संगठन मजबूत बनावें।

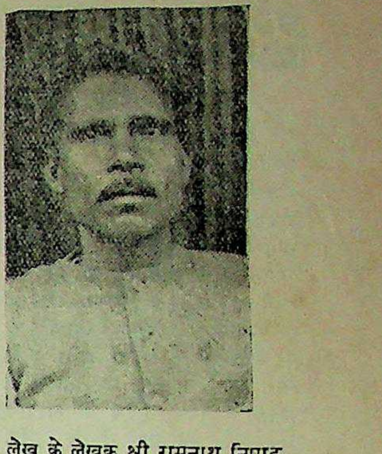

इस लेख के लेखक श्री रामनाथ निषाद

धारा नं० ३ की उपधारा नं० ३ के वाक्यखंड (घ) से तो मछुवों का जन्मसिद्ध अधिकार और जल पर की उनकी मौरूसी काश्तकारी छिन जाती है। उसमें लिखा है कि, "लाइसेन्स के बिना मछली पकड़ने का निषेध करना।" परिशिष्ट में जहाँ अपराधों का विवरण है, उसके छठे नम्बर में यह लिखा है कि "मछली मारते समय लाइसेन्सदारों का बिना लाइसेन्सवाले व्यक्तियों को अपने जालों सहित मछली पकड़ने में सहायता देने के लिए नियुक्त करना या काम पर लगाने में ५० रु० दण्ड दिया जायगा।"

सभी जानते हैं कि आदिकाल से अब तक मछुवों को मछली मारने में किसी प्रकार का लाइसेन्स नहीं लेना पड़ता था। यह ऐसा विकट कार्य है जो सभी नहीं कर सकते हैं। एक साधारण मजदूरीपेशा करनेवाले से भी यह कार्य भयंकर है। कठिन से कठिन जाड़ा और पानी में भी रात्रि के समय में भी ये इस काम को करते रहते हैं। यह मछुओं पर लाइसेन्स लगाना नहीं है किन्तु उनके कष्टों को बढ़ाना है। उन्होंने बड़ा भारी अपराध किया है जो मछली मारने का पेशा अपनाया है। तभी तो विदेशी सरकार नहीं, अपनी सरकार मछली मारने के अपराध के लिए लाइसेन्स की शर्त लगा रही है। एक तरफ तो वह मछलियों का विकास करना चाहती है और दूसरी तरफ मछुवों को मछली मारने के लिए रोक रही है। —क्रमशः

T. B. टी. बी. **तपेदिक के रोगियो**

यदि सब तरफ से हताश हो चुके हो तो एक बार 'जबरी' की परीक्षा करें। यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचानेवाली एक अद्भुत औषधि है, जिसका नाम आज भारत के कोने-कोने में फैल रहा है, मूल्य नं० १ स्पेशल पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन २०) रु० तथा नं० २ पूरा कोर्स २०) रु० नमूना ६) महसूल अलग है।

जबरी, आफिस (D) 'जगाधरी' E. P.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चीठियाँ

काश्मीर और भारत

आज भारत व काश्मीर दोनों के सम्मुख यह प्रश्न है कि भारत के साथ काश्मीर रहेगा या पाकिस्तान के साथ, भारत काश्मीर को अपने साथ रख सकेगा या नहीं। काश्मीर का प्रश्न बड़ा ही जटिल एवं दुविधाजनक हो रहा है। सभी लोग हृदय से उत्सुक हैं कि काश्मीर का क्या होगा, नेतागण काश्मीर के प्रश्न पर मौन नहीं हैं, बल्कि भारत के तो सभी लोग आज काश्मीर को भारत के साथ रखने के लिए हृदय से ललायित हैं। परन्तु सबसे बड़ा प्रश्न तो यह है कि क्या पाकिस्तान चुपचाप सारी कार्रवाई देखता रहेगा। आज पाकिस्तान जी-जान से जुटा हुआ है कि जिस प्रकार से हो काश्मीर पाकिस्तान में सम्मिलित हो जाय और उसे पाकिस्तान में सम्मिलित ही करने के लिए बेईमानी, धोखेबाजी से काश्मीर पर हमला कर काश्मीर को बलात् पाकिस्तान में सम्मिलित करने की इस चाल को क्या पाकिस्तान व्यर्थ जाने देगा?

अगर हम काश्मीर की घटना को शुरू से देखें और उस पर दृष्टिपात करें तो सारी बातें स्पष्ट होती जाएँगी। पाकिस्तान और भारत दोनों के लिए काश्मीर का महत्त्व कितना है यह बतलाने की कोई आवश्यकता नहीं। भारत या पाकिस्तान के ही लिए नहीं बल्कि अमेरिका व ब्रिटेन के लिए काश्मीर का प्रदेश अत्यधिक महत्त्व का है और ब्रिटेन अमेरिका यह भली भाँति सोच रहे हैं व समझ रहे हैं कि पाकिस्तान के साथ काश्मीर के रहने से हमारा मोर्चा वहाँ दृढ़ व शक्तिशाली होगा न कि भारत के साथ काश्मीर के रहने से। इसलिए आज ये भी गुप्त रूप से जी-जान से लगे हुए हैं कि काश्मीर पाकिस्तान में सम्मिलित हो जाय जिससे काश्मीर को रूस-विरोधी मोर्चा बनाने में हमें सहूलियत हो। इसीलिये तो आज येन-केन प्रकारेण काश्मीर को पाकिस्तान में सम्मिलत करने की चाल चली जा रही है।

प्रथम तो पाकिस्तान ने काश्मीर पर आक्रमण किया और बलात् उसे साम्प्रदायिकता के नाम पर हड़पने की पूरी कोशिश कर रहा था। काश्मीर की वीर जनता ने व काश्मीर के जननायक प्रिय नेता शेख अब्दुल्ला व महाराज काश्मीर ने भारत में ही सम्मिलित होने में काश्मीर की भलाई देखी और अपना निर्णय कर भारत-सरकार को सूचित कर दिया कि काश्मीर की जनता व हमने यह निर्णय कर लिया है कि हम भारत के साथ रहेंगे भारत ने काश्मीर को अपना अङ्ग समझकर उसके विरुद्ध लड़नेवाले पाकिस्तानियों के विरुद्ध भारतीय सेना को भेजा, जब काश्मीर का पाँसा भारत के पक्ष मे होता हुआ दृष्टिगोचर हुआ तो आज पाकिस्तान व सुरक्षा-परिषद् भी चुनाव का स्वाँग कर, इस बात की चेष्टा में लगे हैं कि चुनाव में किसी प्रकार विजय कर काश्मीर को अपने साथ रख लें। या काश्मीर का भी बँटवारा भारत की तरह कर दें। मैं दावे के साथ तो नहीं परन्तु अधिकांश शब्दों में लिखता हूँ कि पूरा का पूरा काश्मीर भारत के साथ नहीं रह सकेगा।

दो ही रास्ते होंगे या तो काश्मीर बाँट दिया जाय या तो पूरा का पूरा काश्मीर पाकिस्तान के हवाले कर दिया जाय, बहुत से हमारे पाठकों व विद्वानों को आश्चर्य होगा कि हम यह बात किस आधार पर लिख रहे हैं। परन्तु इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। आप ध्यान-पूर्वक सीमान्त का चुनाव देखें। जहाँ की आबादी सब की सब मुसलमानों की थी वहाँ पर सदा कांग्रेस की विजय होती थी, परन्तु जब पाकिस्तान या भारत में सम्मिलित होने का प्रश्न आया तो सारा का सारा सीमाप्रान्त पाकिस्तान में सम्मिलित हो गया और जहाँ कभी स्वप्न में भी आशा नहीं की जाती थी कि सीमाप्रान्त जिसे कांग्रेसी गढ़ कहा जाता था वहाँ पर चुनाव में यह फल प्रकाशित होगा जिसे देखकर हमारे नेता भी दङ्ग रह गये, उसी तरह आज काश्मीर में जन-गणना के प्रश्न पर शेरे काश्मीर व भारत के सभी प्रधान नेता यह डङ्का जोरों से पीट रहे हैं कि चुनाव में विजय भारत की निश्चित है परन्तु कहीं वही दशा न हो जो दशा सीमाप्रान्त निर्वाचन में हुई थी।

जो भी हो काश्मीर का महत्त्व भारत के लिए बहुत अधिक ही है। काश्मीर की सीमा तिब्बत, चीन व रूस से मिली हुई है। अगर काश्मीर भारत से निकल गया तो भारत की वही दशा होगी जैसे बिना मस्तक का शरीर। काश्मीर को भारत में सम्मिलित करने के लिए चुनाव का सहारा लेना कहीं व्यर्थ न चला जाय; अगर निष्पक्ष चुनाव हो तो भी ठीक है परन्तु चुनाव करेंगे कौन? उन्हीं लोगों की देख-रेख में चुनाव होगा जो अन्दर अन्दर काश्मीर को पाकिस्तान के हवाले कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं अगर पाकिस्तान के सुपुर्द काश्मीर कर दिया गया तो सदा भारत व पाकिस्तान का झगड़ा चलता रहेगा। एक प्रकार से नंगी तलवार भारत के सर पर सदा झूलती रहेगी इसलिए चाहे जिस प्रकार से हो भारत को काश्मीर को अपने साथ रखने के लिए कोई बात उठा न रखनी चाहिये। काश्मीर भारत का ही है प्राचीन ग्रंथों से प्रमाणित है व आज भी वहां की एक एक इञ्च भूमि पर वास्तविक में भारत का ही कब्जा होना चाहिये न कि अन्य किसी राष्ट्र का?

भारत का सबसे बड़ा काम है कि वह काश्मीर को अपने साथ सम्मिलित कर ले चाहे चुनाव द्वारा या अन्य किसी साधन द्वारा। परन्तु आज तक की भारत-सरकार की नीति देखते हुए यह शंका सभी को होने लगी है कि कहीं काश्मीर हाथ से चला न जाय। अगर हमें और भी कुर्बानी या बलिदान काश्मीर के लिए करना पड़े तो हमें सहर्ष तैयार रहकर काश्मीर को अपने साथ सम्मिलित कर लेना होगा।

काशी —चन्द्रभूषण शाह

* * *

बाल विवाह क्यों?

बाल विवाह निषेधक बिल की अवहेलना करके प्रत्यक्ष रूप के इस वर्ष नन्हें नन्हें बच्चों और बच्चियों का विवाह बीकानेर में होनेवाला है। आलमारियों में पड़ी कानून की पुस्तकों की शोभा बढ़ाने के लिये ही शायद इसकी रचना हुई है आज से २० वर्ष पूर्व जनमत के संघर्ष तथा आन्दोलन के कारण भारत-सरकार ने इस बिल को पास किया था। उस समय की अवहेलना की तुलना करके शर्म से शिर झुक जाता है। क्या हमारे आन्दोलन का चरम लक्ष्य राजनीति स्वतंत्रता प्राप्त करना ही है?

राजपूताने में इस वर्ष जो विवाह होंगे उनमें ६० प्रतिशत ऐसे विवाहों का समावेश है जो कि सर्वदा शारदा बिल के प्रतिक्रियामात्र है। इस अपराध को क्या यहाँ की जनता नहीं जानती? या सरकार समाज की उच्छृङ्खलता में बाधा डालने से डरती है? इस कानून को तोड़ने से जनता के शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक स्वास्थ्य पर जो प्रभाव पड़ता है वह तो खराब ही है पर इस विषय में वर्तमान भारत-सरकार की ढिलाई उसकी बदनामी का कारण हो रही है। सरकार हमारी ही है। हम अपने को बुरा कैसे कहें? पर सरकार की वर्तमान दशा देखकर दुःख होता एक वेदना सी उठती है। आखिर समाज-सुधार देश का एक अवश्यक अंग क्या नहीं है?

भारत सरकार इस प्रश्न को महत्त्व दे या न दे पर हमें बालविवाह की नैतिकहीनता पर दृष्टिपात करके सोचना चाहिए कि बालविवाह विरोधक बिल हमारे हित के लिए है इसलिए हम अबोध बालक बालिकाओं का विवाह करके धर्म-समाज और देश पर कुठराघात नहीं करेंगे।

बीकानेर —सत्यनारायण व्यास
२३ जनवरी ४९

* * *

रेडियो में प्रान्तीयता क्यों?

ब्राडकास्टिंग की दिशा में आंध्र-निवासियों की "विशिष्ट स्थान" की माँग पूरी करके केन्द्रीय सरकार ने आंध्रदेश के "बेजवाड़ा" में एक रेडियो स्टेशन खोला है। इससे भली भाँति विदित होता है कि यह स्टेशन आंध्रनिवासियों के लिए ही केन्द्रित है। बम्बई, ट्रिवेण्ड्रम ट्रिची आदि स्टेशनों का भी यही हाल है। वास्तविकता यह है कि इस प्रकार स्वतन्त्र भारत में प्रादेशिकता के आधार पर रेडियो का विस्तार एक निर्दिष्ट प्रांत के निवासियों में सीमित रखना प्रांतीयता का बीज बोना है। इसके सिवा जब केन्द्रीय सरकार उसे "आल इण्डिया रेडियो" के घनिष्ठ संपर्क में रखता है तब उसका कर्तव्य है कि वह उसे अखिल भारतीय महत्व से गिरने न दे। रेडियो का ध्येय है कि वह निष्पक्षपात रीति से, प्रांतीयता एवं प्रादेशिकता के चंगुल से बचकर, सबको समानता का संदेश दे। समस्त कलाओं को समुचित प्रोत्साहन एवं उत्तेजना देना उसका कर्तव्य है। पर वर्तमान समय में रेडियो [illegible] की स्थापना उसके वास्तविक ध्येय [illegible] दिखाई देती है।

यदि केन्द्रीय सरकार की ऐसी [illegible] है कि वह स्वतन्त्र भारत के प्रत्येक [illegible] प्रांत में रेडियो स्टेशन खोलकर, उस [illegible] की जनता में परिमित रखे तो इससे [illegible] कारों की कला के प्रचार में अ[illegible] भारतीय दृष्टि से बाधा उत्पन्न होगी [illegible] इसलिए हम केन्द्रीय सरकार के [illegible] विभाग से अनुरोध करते हैं कि वह [illegible] रेडियो स्टेशनों में सारे प्रांतों के कला[illegible] को समान रूप से प्रसार करने का अ[illegible] दें और रेडियो के मुख्य ध्येय और [illegible] को सफल सार्थक करे। इससे रेडि[illegible] प्रगति "अमीर के प्रासाद से, अ[illegible] की कुटी" तक हो सकेगी। आ[illegible] केन्द्रीय सरकार का रेडियो-विभाग [illegible] आवश्यक सुझाव की ओर ध्यान [illegible] और इस मामले की जाँच-पड़ताल [illegible] भारत के प्रांतों में पारस्परिक सौहा[illegible] एक्य की संवृद्धि होने में अपना [illegible] सहयोग देगा।

बँगलौर —दोरै[illegible]
२७ जनवरी राष्ट्रभाषा-[illegible]

आप अभिनेता हो सक[illegible]

यदि आप सिनेमा में अ[illegible] अथवा अ[illegible] होना चाहें, १००) से [illegible] प्रतिमास पैदा [illegible] चाहें, तो अ[illegible] लिखिये। अ[illegible] पढ़े हैं इसकी चिन्ता नहीं। पत्र-व्यवहार अँग्रे[illegible] कीजिए।

डाइरेक्टर
नेशनल फिल्म कारपोरेशन, ह[illegible]
१३, (D. A.) जलन्धर [illegible]

५०००) मुफ्त इनाम !

अमृतसर में सोना २।।) तोला !

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको पाँच हजार रुपया मुफ्त दिया जावेगा।

जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। बा० ब्रह्मानन्द गत मैनेजर तेज नया बाजार देहली से लिखते हैं कि आपका [illegible] न्यू गोल्ड का पार्सल मिला धन्यवाद! यह देखकर खुशी हुई कि न्यू गो[illegible] असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनि[illegible] एक भारी जरूरत को पूरा किया है। ६ तोला सोना वापसी डाक से और बाद में और भी आर्डर दिया जावेगा।

यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है असली सोने की तर[illegible] और पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं [illegible] होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहिचान सकता है। मशहूरी [illegible] लिये मूल्य फी तोला केवल २।।) रु०, ३ तोला का मूल्य ७) रु०, ६ तोला [illegible] १५ तोला ३०) रु०, ४० तोला ७०) रु०।

जरूरी नोट :—माल पसन्द ना होने पर मूल्य शीघ्र वापस कर दिया [illegible] आर्डर देते समय अपना पता साफ साफ लिखें। जल्दी करें क्योंकि माँग ज्या[illegible] के कारण आपको मायूस न होना पड़े।

प्रधान कार्यालय पी. बी. ७५ (D. D. A.) अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

जयपुर प्रतिनिधि सभा और धारा सभा के अधिवेशन क्रमश: ७ और २१ फरवरी, १९४९ को होने वाले थे लेकिन राजपूताना की रियासतों के एकीकरण का सिद्धान्त स्वीकार हो जाने के कारण अब यह अधिवेशन नियत तारीखों के आरम्भ में न हो सकेगा इनके अधिवेशन अब कब होंगे, इस बारे में सूचना बाद में निकाली जायगी।

सरकार ने निश्चय किया है कि सर्व सेटिलमेन्ट का काम सारे खालसा व गैर खासा इलाके में किया जायेगा। सब भोमियान, अतियादारान और उनके कर्मचारियों को आज्ञा दी गई है कि वे सर्वे सेटिलमेन्ट के कर्मचारियों को हर तरह की सहायता दें। यदि कोई भोमिया अथवा अतियादार या उनके कर्मचारी सर्वेसेटिलमेन्ट के कार्य में कोई अड़चन, दिक्कत या देरी करते हुए मालूम होंगे तो उनके खिलाफ कानून के अनुसार कार्यवाही की जायेगी और उनकी भोम गाँव या जमीन जो देन सरकार है जब्त की जा सकेगी।

छोटे अतियादार के खुद कास्त जमीन का सवाल सरकार पर्चा जारी करने से पहले ही तय कर देगी।

श्री जयपुर नरेश और लावा चीफ सीप के चीफ के समझौते के अनुसार जिसे भारत-सरकार के रियासती सचिवालय ने स्वीकार कर लिया है। यह निश्चय हुआ है कि लावा जयपुर रियासत का ही भाग माना जाय और जयपुर राज्य के समस्त नियम उपनियम लावा पर भी लागू होंगे। हर मामले में लावा के चीफ का वही दर्जा माना जायगा जो अधिकार प्राप्त ठिकानों के ठिकानदारों का होता है।

जयपुर सरकार के भेड़ और ऊन उन्नति विभाग ने राजपूताना में भेड़ों की किस्म और ऊन की पैदावार के बारे में जाँच करने के लिये एक योजना भारतीय कृषि-अनुसंधानशाला की सलाहकार समिति के सामने रखी थी। समिति ने यह योजना स्वीकार कर ली है। योजना का एक भाग अनुसंधानशाला की ओर से और दूसरा जयपुर सरकार की ओर से पूरा किया जायगा।

समिति ने यह भी स्वीकार किया कि राजपूताना की ऊन की किस्म में सुधार करने के लिये एक योजना पर अगले वर्ष विचार किया जायगा। योजना इस वर्ष १ अप्रैल से लागू हो जायगी।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर में मारवाड़ कुमार-साहित्य परिषद् की नई शाखाएँ लाडनू और भीनमाल में स्थापित हो गई हैं। जोधपुर स्थित लाडनू के छात्र कार्यकर्ताओं में भाषण देते हुए लाडनू शाखा के संयोजक श्री० सागरमल जैन ने छात्रों से अपना कार्य-क्षेत्र ग्रामों को बनाने के लिए जोर दिया। उन्होंने भाषण के दौरान में कहा कि 'कला जीवन के लिये है' की भावना को प्रधानता देते हुए हमें गाँवों में हिन्दी का प्रचार-प्रसार और सृजन करना चाहिये। परिषद् की शाखा प्रत्येक गाँव गाँव में स्थापित कर हमें माँ भारती के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये। अंत में श्री० जैन ने गुटबन्दी और व्यक्तिगत स्वार्थसिद्धि की ओर सचेत रहने के लिये अपील की। श्री० सागरमल शीघ्र ही 'अधिवेशन की तैयारी आरम्भ करने के लिये कई परगनों का दौरा करेंगे।

—संवाददाता

* * *

होशंगाबाद चारुवा ग्राम में डाक्टर लक्ष्मीनारयण शाकल्य की अध्यक्षता में वैद्यों की सभा वयोवृद्ध वैद्य पं० जागेश्वर शुक्ल की अध्यक्षता में हुई। उज्जैन के वैद्यराज पं० काशीनाथ शर्मा शास्त्री आयुर्वेदालंकार का सार्वजनिक सम्मान किया गया। स्वागत का उत्तर देते हुए आपने अपने भाषण में आयुर्वेद विज्ञान की उपयोगिता वैद्यों के संगठन के महत्व पर प्रभावशाली भाषण दिया और परगना परिषद् एवं तहसील वैद्य परिषद् के आयोजन पर जोर दिया। हरदा सहसील के वैद्यों के संगठन करने का भी निश्चय किया गया। प्रान्तीय सरकार की ओर से चारुवा परगना में एक आयुर्वेदिक औषधालय की आवश्यकता बतलाते हुए उसकी व्यवस्था के लिये सरकार से प्रार्थना की गई। इस सम्बन्ध का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ। दूसरा प्रस्ताव वैद्य दगड्डूलाल वर्मा द्वारा सरकारी जंगलों में आयुर्वेदिक वनौषधियों से संरक्षक सम्बन्ध में प्रान्तीय सरकार से माँग की गई। व श्री वैद्य पं० भास्करदत्त ज्योतिषी डाक्टर लक्ष्मीनाराण शाकल्य, श्री वैद्य दगड्डूलाल वर्मा वैद्य लक्ष्मीनारायण भट्ट वैद्य के आयुवेद संगठन-सम्बन्धी भाषणों के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचार-मंत्री श्री व्यथित हृदय जी सूचित करते हैं कि—

प्रयाग नगर भोजन-विभाग के कार्याध्यक्ष ने मुझे एक पत्र के उत्तर में यह सूचित किया है कि उनके विभाग में सभी काम-काज हिन्दी में ही हो रहे हैं। हिन्दी प्रचार की दृष्टि से मैं नगर की सर्वसाधारण जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित कर रहा हूँ और लोगों से विनयानुरोध कर रहा हूँ कि अब लोग उक्त कार्यालय से हिन्दी में ही अपने आवश्यक कागज-पत्र प्राप्त करें।

हिन्दी में अपने भोजन-कार्ड बनवायें हिन्दी में रजिस्टर रखें। हिन्दी में लिखा पढ़ी करें और हिन्दी में ही कार्यालय को सूचनायें प्राप्त करें। यदि इस सूचना के होते हुए भी लोगों को हिन्दी में सरकारी सूचनायें न मिलें तो उन्हें सम्मेलन के प्रचार-विभाग को सूचित करना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

वर्धा के साहित्यिकों की ओर से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की कार्य-समिति में लिए जाने के कारण श्री उमाशंकर शुक्ल का अभिनंदन किया गया व उन्हें चाय-पार्टी दी गई। शहर के प्राय: सभी विशिष्ट साहित्यिक उपस्थित थे और श्री शुक्ल जी की हिन्दी सेवाओं का उल्लेख किया गया। पार्टी का आयोजन श्री श्रीराम टीबडीवाल तथा श्री पुरुषोत्तमदास जी मुरारका ने किया था। कई साहित्यिकों के भाषण हुए।

—संवाददाता

* * *

बीकानेर जिला कांग्रेस कमेटी के पास इस आशय के प्रार्थना-पत्र तथा नोटिसों की सूचना बराबर आ रही है कि जागीरदारों द्वारा खेत बेदखल कराये जा रहे हैं जब कि प्रधान मंत्री ने एक मुलाकात में यह आश्वासन दिया था कि तमाम मुकदमें बीकानेर मँगा लूँगा। भविस्य में ऐसा नहीं होगा। जागीरदार 'किसानों के साथ जा-बेजा हरकतें कर रहे हैं। यदि जल्द प्रबंध न किया गया तो वही गंभीर परिस्थिति उत्पन्न होने की आशंका हैं।

—संवाददाता

* * *

भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी

(पेज ७ का शेष)

भी कलकत्ते की वंगीय साहित्य-परिषद् के पुस्तकागार में देखा जा सकता है। परन्तु इसके बाद एक बेली साहब पहुँचे और उन्होंने हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग उर्दू के लिये आरम्भ किया और इसके पक्षपाती बन गये। इस समय से उर्दू के लिए हिन्दुस्तानी शब्द का प्रयोग होने लगा। फेलट आदि के उर्दू कवायत "हिन्दुस्तानी ग्रामर" नाम से ही प्रसिद्ध है। डा० फैलट ने अपनी हिन्दुस्तानी इँगलिश डिक्शनरी में हिन्दुस्तानी शब्द का यही अर्थ किया है और उर्दू हरूफ तहिज्जो से ही काम लिया है। यदि इसलिये हिन्दुस्तानी शब्द का लोग उर्दू का पर्यायवाची शब्द समझें तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। महात्मा गांधी ने देश के विभाजन के पहले हिन्दी हिन्दुस्तानी का पक्ष लिया था और कहा था कि वह नागरी और फारसी दोनों लिपियों में सीखी जानी चाहिये। परन्तु देश से पाकिस्तान निकल जाने के बाद लोगों का बहुमत नागरी के पक्ष में हो गया है। यह श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने बताया है और वे केवल नागरी लिपि के पक्षपाती रह गये हैं।

उर्दू-हिन्दी में जो वैषम्य है, उसका संबन्ध लिपि, फारसी की हिन्दी पढ़नेवाली शब्दावली और पारिभाषिक शब्दों से है। देश की भाषाएँ संस्कृतनिष्ठ हैं, चाहे आर्य भाषाएँ हों वा द्राविड़ भाषाएँ। आर्यभाषाओं और द्राविड़ भाषा के बीच में पुल का काम संस्कृति करती है। फारसी यद्यपि आर्यभाषा है, तथापि अरबी के प्रभाव के कारण उसकी अवस्था उर्दू की-सी हो गई है। अरबी और संस्कृति में घुणाक्षर न्याय से भी कोई संबंध नहीं है। परन्तु उर्दूवाले अपने पारिभाषिक शब्द संस्कृत से तो बनाते ही नहीं, फारसी से भी नहीं बनाते, अरबी से बनाते हैं। इसलिए उर्दू किसी भाव इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती और यही कारण है कि लोग हिन्दुस्तानी के विरोधी हैं। डा० राजेन्द्रप्रसाद ने "भारत की राज्यभाषा" शीर्षक जो दो लेख अँगरेजी के "हरिजन" में लिखे हैं, उनमें यह स्पष्ट कर दिया है कि पारिभाषिक शब्द संस्कृत से बनाये जायँ। हिन्दीवाले इस सुझाव का स्वागत करेंगे, इससे हिन्दुस्तानी के उर्दू बन जाने की आशंका न रह जायगी।

डा० राजेन्द्रप्रसाद ने विदेशी शब्दों के बहिष्कार का विरोध किय है। वास्तव में संस्कृत में भी विदेशी शब्दों का सर्वथा अभाव नहीं है। पिक, नेम, तामरस जैसे शब्द संस्कृत में प्रचलित ही नहीं हैं, बहुत कम संस्कृतज्ञ मिलेंगे जो बता सकेंगे कि ये संस्कृत के नहीं हैं। शब्द वास्तव में हलवाई की दूकान की मिठाई के समान है। जो चाहे उनका प्रयोग कर सकता है। तोप, तलवार, तमंचा, तमगा इत्यादि तुर्की शब्दों को कोई निकाल नहीं रहा है। अलमिरा, फालतू, गिरजा इत्यादि पोर्जुगीज शब्दों के सम्बन्ध में तो बहुतेरे लोगों को पता तक नहीं है कि ये किसी दूसरी भाषा के शब्द हैं। अरबी शब्द तूस को आज भी लो तूस ही कहते हैं। अब तक उसको ऊर्संवस्त्र कहने की आवश्यकता किसी ने नहीं समझी। फारसी के शाल, दोशाल ही नहीं अनेक ऐसे शब्द जिनसे खाने-पीने और पहनने की चीजों का बोध होता है हिन्दी में बे-रोक-टोक चल रहे हैं। हाँ, समन वगरज, इनफसाल मुकदमा इत्यादि शब्दों या वाक्यांशों का संशोधन अभीष्ट है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा होने योग्य इस लिये है कि ३३। करोड़ में २० करोड़ के लगभग इसे समझ लेते हैं और शुद्ध शुद्ध नहीं तो टूटे-फूटे रूप में बोल भी लेते हैं। इसके सिवाय एक ओर इसका उर्दू से संबंध है और दूसरी ओर आर्यभाषाओं से तो उसका बहनापा है ही और वह द्राविड़ भाषाओं के निकट भी संस्कृत के कारण पहुँच जाती है। इसकी लिपि नागरी है, जो भारत भर में पढ़ी और समझी जाती है, क्योंकि संस्कृत की भी वही लिपि है। उसका सीखना और जानना सहज है। थोड़े दिनों में मनुष्य उसे पढ़ने लिखने की योग्यता प्राप्त कर सकता है। उर्दू के विद्वान् यदि हिन्दी के शब्दों को चुन चुनकर अपनी भाषा से न निकाल देते तो आज उर्दू-हिन्दी की खाईं इतनी चौड़ी न होती। इसलिये देश की भाषा हिन्दी और लिपि नागरी होनी चाहिये। हिन्दी और हिन्दी नाम मुसलमानों के दिये हुए हैं यदि किसी को वे नापसंद हों तो देश का नाम भारत और देशभाषा का नाम "भारती" रख देना चाहिये।

हिन्दी जब तक प्रदेश-विशेष की भाषा थी, तब तक उस पर इसका अधिकार था और उसमें बोली जानेवाली भाषा पर आगे भी रह सकता है। परन्तु राष्ट्र-भाषा हिन्दी-राष्ट्र के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न रूप धारण करेगी। उसमें प्रादेशिक भाषाओं के शब्द तो मिले बिना रह नहीं सकते। पर अखिल भारतीय भाषा वह तभी बनेगी और बेरोक-टोक ठीक चलेगी, जब वह संस्कृतनिष्ठ होगी, क्योंकि संस्कृत ही आर्य द्राविड़ भाषाओं को मिलानेवाली कड़ी है। अब तो संस्कृत से दूर भागने का कोई कारण नहीं रहा, जब काबुल विश्वविद्यालय में संस्कृत शिक्षा अनिवार्य की जा रही है। अफगान लोग संस्कृत को पश्तू और फारसी की जननी मानते हैं और वह है भी; क्योंकि फारसी शब्दों की धातुएँ संस्कृत में ही मिलती हैं। पश्तू या पखतू पठानों की भाषा है। यह भारत और अफगानिस्तान के बीच के भूभाग में तो बोली जाती ही है, अफगानिस्तान में फारसी के साथ साथ इसका भी व्यवहार होता है, क्योंकि अफगान भी पठान ही हैं। अफगानों में अपने को हीन समझने की प्रवृत्ति नहीं है, इसी से वे इतना क्रान्तिकारी निश्चय कर सके हैं, आशा है हमारे देश के विश्वविद्यालय भी इस विषय में अफगानों से शिक्षा लेंगे।

फिल्म-एक्टर

यदि आप फिल्म एक्टर या एक्ट्रैस बनकर १००) रु० से १५००) रु० तक मासिक कमाना चाहते हैं तो आज ही लिखें। ज्यादा पढ़े लिखे होने की कोई जरूरत नहीं।

अपना पता साफ लिखें।

डाइरेक्टर
बाम्बे फिल्म सार्वेस (D. D. A.)
बाक्स नं० ५, जलन्धर शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काश्मीर, भारत और पाकिस्तान

(पेज ५ का शेष)

ही जमींदारी प्रथा को समाप्त कर दिया है। वह बखूबी समझती है कि आगामी जनमत में जमींदारों की अपेक्षा किसानों का वोट ज्यादा कीमती होगा।

रेशम के कारखानों पर कब्जा

जमींदारी प्रथा को उड़ाने के लिए काश्मीर सरकार ने अभी तक कोई कानून नहीं बनाया। लेकिन रेशम के कारखानों को कानून बनाकर सरकार ने अपने कब्जे में कर लिया है। कानून के अनुसार अब इन कारखानों के बुनकरों को मुनाफे का हिस्सेदार बना दिया गया है। अब प्रत्येक बुनकर को अपनी निश्चित पगार के अतिरिक्त कुल मुनाफे का ४० प्रतिशत भाग भी मिलेगा। उन्हें प्रतिवर्ष दो महीने का बोनस दिया जायगा। उनकी यूनियन को सरकार ने स्वीकृत कर लिया है।

रेशम के कारखानों में काम करनेवालों के लिए चीन और फ्रांस से रेशम के कीड़े मँगाने की बातचीत चल रही है। कुछ कीड़े आ भी चुके हैं। कच्चे रेशम का निर्यात एकदम रोक दिया गया है। अब यह रेशम स्थानीय जुलाहों को देकर रेशम के कुटी-व्यवसाय को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

देशभक्त व्यापारी समाज

किसानों और मजदूरों के अतिरिक्त काश्मीर व जम्मू के व्यापारी समाज का भी सरकार को काफी ख्याल है। कबायलियों के आक्रमण के साथ काश्मीर की सर्वसाधारण जनता को अन्न, चीनी और नमक का मिलना कठिन हो गया था। इन चीजों के व्यापारी निठल्ले हो गये थे। लेकिन रियासत की लोकप्रिय सरकार ने इन सब चीजों को मुहैया करने की व्यवस्था कर दी है। अब इन चीजों की वहाँ कमी नहीं है। भारत-सरकार की सहायता से काश्मीर-सरकार को ३०० से भी ज्यादा लारियाँ मिल गई हैं। वे पठानकोट-जम्मू सड़क से काश्मीर की जनता के लिए सारा सामान पहुँचा रही हैं। इन लारियों से काश्मीर के फल-व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिला है। विगत ६ महीनों में काश्मीर को इस व्यापार से ६० लाख की आय हुई है।

काश्मीर सरकार ने अपने यहाँ तमाम कच्चे माल का निर्यात बन्द कर दिया है। अब सारा कच्चा माल यहीं काम आएगा। रियासत सरकार ने देख लिया है कि विश्व की मंडियों में काश्मीरी माल की काफी माँग है। लन्दन, न्यूयार्क, पेरिस और इस्तम्बुल (तुर्की) से माँग की जा रही है कि काश्मीर सरकार उन अपने तैयार माल की दूकानें उक्त स्थानों में खोलने की व्यवस्था करें। इस तरह अब काश्मीर के व्यापारी अपनी रियासत का माल विदेशों में भी भेज सकेंगे।

काश्मीरी भाषा-भाषी लोग

काश्मीर के किसानों, मजदूरों और व्यापारियों की ठोस सेवा करने पर किसे विश्वास न होगा कि भावी जनमत में यह सब लोग भारत के पक्ष में वोट देंगे। काश्मीर की आबादी के आँकड़े भी यही साबित करते हैं। काश्मीर मुसलमानों और गैर-मुसलमानों से ही आबाद नहीं है। भाषा की दृष्टि से भी उसके दो भाग किये जा सकते हैं। एक भाग वह है, जिसमें पञ्जाबी भाषाभाषी लोग आबाद हैं और दूसरा भाग वह है, जहाँ काश्मीरी भाषाभाषी लोग बसे हुए हैं। भाषा का संस्कृति-निर्माण में बहुत बड़ा स्थान है। जिन लोगों की भाषा एक होती है, उनके विचारों में प्रायः साम्य होता है। इसीलिए काश्मीरी भाषाभाषी जनता की सभ्यता और संस्कृति पंजाबी-भाषाभाषी जनता की सभ्यता व संस्कृति से भिन्न है।

सबसे पहले हम काश्मीर घाटी का लेते हैं। इसमें मुजफ्फराबाद, बारामूला और अनन्तनाग नाम से तीन जिले शामिल हैं। इन तीनों जिलों में आबाद मुसलमानों की संख्या १६,२०,००० और है गैर-मुसलमानों की १,२०,००० है बारामूला और अनन्त नाग के गैर-मुसलमान और मुसलमान प्रायः काश्मीरी भाषाभाषी हैं। मुजफ्फराबाद जिले की सीमा उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत के हजारा जिले तथा पश्चिमी पञ्जाब की सीमा से लगी हुई है। यहाँ के लोग पञ्जाबी भाषा बोलते हैं। इसलिए मोटे तौर से इस जिले की गैर-मुस्लिम और मुस्लिम दोनों आबादियों को अलग कर दिया जाय तो बारामूला और अनन्तनाग की आबादी करीब १४,६०,००० रह जाती है। यदि जनमत हो तो यह सब वोट तो भारत के पक्ष में पड़ेंगे।

जम्बू प्रान्त की आबादी १९,६०,००० है। इसमें मुसलमानों की संख्या करीब १२,२०,००० है यहाँ रहनेवाले तमाम मुसलमानों और गैर-मुसलमानों की भाषा पंजाबी है इस प्रान्त के कुछ और मीरपुर जिलों में मुसलमानों की संख्या ६,८०,००० और गैर-मुसलमानों की १,००,००० है। थोड़ी देर के लिए यदि हम यह मान लें कि समूचे जम्बू प्रान्त के मुसलमानों के वोट पाकिस्तान के पक्ष में पड़ेंगे तो गैर मुसलमानों के ७,७०,००० वोट तो भारत के ही पक्ष में पड़ेंगे। इस तरह हमें यह आशा है कि काश्मीर और जम्बू में २२,३०,००० वोट निश्चित रूप से भारत के पक्ष में पड़ेंगे और यह भी तब जब कि अभी मुजफ्फराबाद की गैर-मुसलमि आबादी को गिनती में शामिल नही किया। २२,३०,००० वोट भारत के पक्ष में पड़ेंगे, जबकि समूचे काश्मीर और जम्बू की आबादी ४०,००,००० है।

इस तरह हमने देखा कि नेशनल कान्फरेन्स ने जमीन तो ऐसी तैयार कर रखी है कि काश्मीर और जम्बू भारत के साथ शामिल हो जायगा। वहाँ के कोचवान, मल्लाह, किसान, मजदूर और व्यापारी अपना कीमती वोट भारत को ही देंगे। दूसरे प्रान्तों में यों ही कहा जा सकता है कि काश्मीरी भाषा-भाषी लोग किसी भी अवस्था में पाकिस्तान का समर्थन करने को तैयार न होंगे। लेकिन फिर दिल में खयाल पैदा होता है कि जब यह निश्चित सा है कि काश्मीर भारत के साथ ही रहेगा, तो फिर जनमत का आयोजन क्यों किया जा रहा है? क्या पाकिस्तान को यह आशा है कि काश्मीरी भाषा लोगों के काफी वोट उसे मिल जायँगे? हो सकता है कि शायद उसे कुछ ऐसी ही आशा हो। लेकिन तथ्य उसकी आशा के विपरीत है। उनसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि जनमत में उस की पराजय निश्चित है।

त फिर यह जनमत क्यों? क्या जनमत के अतिरिक्त कोई और ऐसा उपाय नहीं, जिससे काश्मीरी जनता का मत जाना जा सके? भारत और काश्मीर के नेता इस पर अत्यन्त गम्भीरता के साथ विचार कर रहे हैं। स्वयं शेख अब्दुल्ला साहब इस जनमत के परम विरोधी हैं। उन्हें मालूम है कि आज काश्मीर को अतराष्ट्रीय शतरञ्ज में बाजी पर लगाया जा चुका है। काश्मीर भारत के साथ रहता है तो ऐंग्लो-अमरीकन गुट्ट पर घड़ों पानी पड़ जायगा। लेकिन भारत के आसपास चल इसी गुट्ट की रही है। समुद्री शक्तियाँ आज इसी के हाथ का खिलोना बन रही हैं। इसलिए शेख साहब इस गुट्ट की चालबाजियों से सशंकित हैं। यह गुट्ट इतिहास में अनेक जनमतों का आयोजन कर चुका है। अतएव इसे खूब मालूम है कि जनमत में अपना स्वार्थसाधन कैसे किया जाता है। शेख साहब को मालूम है कि ग्रीस में तथा हिन्देशिया में लिए गए जनमत का परिणाम क्या निकला था। दोनों देशों की जनता अखबारी प्रचार और प्रकट तथ्यों के आधार पर लोकतंत्र के पक्ष में थी। मगर जब जनमत का परिणाम निकला तो ऐंग्लो-अमरीकन गुट्ट की बाछें खिल गईं। ग्रीस में जनमत बादशाह के और हिन्देशिया में जनमत डच सरकार के पक्ष में आया। हो सकता है कि काश्मीर में भी प्रकट तथ्यों के बावजूद कुछ ऐसा ही परिणाम निकले। लेकिन दूध का जला छाछ फूँक फूँककर पीता है। उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त के जनमत में अनुभव प्राप्त करने के बाद आशा है कि भारत और काश्मीर के नेता बाजी नहीं हारने पायेंगे।

मातृमंदिर

(पेज १२ का शेष)

हमारे स्त्री समाज की सबसे बड़ी हार है। जिस वर्ग ने अब तक विश्व को दया, प्रेम, त्याग एवं शान्ति का संदेश दिया आज वही अधिकार-लोलुप एवं पतित हो रहा है। यह कैसी विडम्बना है।

अन्त में मैं केवल इतना ही कहूँगा कि जब तक इस संसार में मानव को मानव होकर जीवित रहना है, वह स्त्री-पुरुष के 'संयमित सम्बन्ध' (विवाह) को तिलांजलि नहीं दे सकता। विवाह का मानव-जीवन में वही स्थान है जो हमारे शरीर में हमारी आत्मा को प्राप्त है। इस महान् एवं महत्वपूर्ण समस्या पर हमें अत्यन्त मनोयोगपूर्वक विचार करना है। कहीं ऐसा न हो कि उन्नति तथा प्रगति के धोखे में हम पतन के भीषण खड्ड में जा गिरें और फिर भविष्य में हमारा कोई नामलेवा भी न रहे!!

चीनी क्रान्ति की प्रेरणाभूमि

(पेज ६ का शेष)

प्रयोग द्वारा सिर कुचल डाला गया। च्यांग और उनके साथियों ने असंख्य राजनी[illegible] कार्यकर्ताओं को गुपचुप मरवा डा[illegible] जो भी राजनीतिक कार्यकर्ता शासन [illegible] आलोचना करता उसके संबंध में [illegible] प्रकाशित होता कि वह नेता लापता [illegible] या तो फिर उसका पता नहीं चलता [illegible] चलता भी तो कहीं किसी सड़क, [illegible] नदी या तालाब के तट पर उसकी [illegible] मिलती। च्यांग के शासन ने जनता [illegible] जीवन भार बना दिया था। इन सब [illegible] नीतिक दमनों, आर्थिक विषमताओं [illegible] सामाजिक अपराधों द्वारा उत्पन्न अस[illegible] की अग्नि ने कम्यूनिस्ट आन्दोलन [illegible] यज्ञज्वाला में घृत का काम किया।

कम्यूनिस्ट आन्दोलन च्यांग से [illegible] सम्बन्ध-विच्छेद कर चीन के सुदूर [illegible] दिशावर्ती सीमान्त और पर्वतीय प्रान्त [illegible] चले गये। इस प्रदेश में न तो भूमि [illegible] न रहने के लिए कोई स्थान न भोजन [illegible] न वसन की व्यवस्था। यातायात के [illegible] तम साधनों का बिलकुल अभाव [illegible] समाचार आवागमन के लिए केवल [illegible] जैसी प्राकृतिक शक्ति थी। वनस्पति [illegible] कहीं न थी। ऐसे प्रदेश में कम्यूनिस्ट [illegible] अपनी राजधानी येनान की स्थापना [illegible] गुफाओं में रहे। अल्पाहार पर [illegible] जीवन बिताया। जन-शक्ति को सं[illegible] किया और जनता की सत्ता के सहारे [illegible] प्रजातंत्र की स्थापना की। अपने [illegible] प्रजातंत्र को सुशक्त और सुसं[illegible] करने के पश्चात् इन्हीं कथित कम्यू[illegible] ने पहले तो अकेले जापानियों से [illegible] लिया बाद में च्यांग के आंशिक स[illegible] द्वारा विदेशी आक्रमणकों के दांत [illegible] कर दिये।

जापान युद्ध की समाप्ति के बाद [illegible] को समझाने की बड़ी चेष्टा की गई। [illegible] तक कि अमेरिका जैसे देश ने भी [illegible] स्थता की किन्तु "विनाशकाले वि[illegible] बुद्धिः" की लोकोक्ति के अनुसार [illegible] के भाग्य में तो अपने पैर आप कु[illegible] मारना बदा था, समझौता कहाँ से [illegible] च्यांग लड़ने पर उतारू थे। यह सत्ता [illegible] मद था। सत्ता का मद प्रतिकार क[illegible] और आज इसी का फल है कि च[illegible] असंख्य वनवासियों की हत्या और र[illegible] हाथ धोने के बाद च्यांग को, यदि [illegible] चीन से ही भाग गए तो, उन्हें कम्यू[illegible] को गोलियों का शिकार बनना पड़े[illegible]

सन् १९२५ में चीन के राष्ट्रपिता [illegible] सुनयातसेन राष्ट्र-निर्माण की जो [illegible] छोड़ी थी वह अब पूरी होगी। चीन [illegible] सौभाग्य और सम्पन्नता के स्वर्ण[illegible] अब प्राप्त कर सकेगा। आज अ[illegible] चीन राष्ट्र उदय हो गया है। वह [illegible] है। इस नवजात शिशुराष्ट्र के [illegible] पर ही संसार की एक तिहाई जन[illegible] का भविष्य निर्भर है।

घर पर छापने के लिये जेबी प्रेस

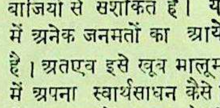

नाम, पता, पत्र, लेबुल एवं प्रोग्राम आदि घर पर ही अच्छी तरह इसकी मदद से छापे जा सकते हैं। मूल्य नं० ११, २) नं० १३, ३) स्पेशल ३॥) सर्वोत्तम ५) पैकिंग और पोस्टेज ॥।=)

ज्यूएल फिटेड रिस्ट वाचेज !

ठीक समय देनेवाली गारंटी ५ साल मजबूत क्रीमियम केस की ४ ज्वैल १३) अच्छा १४) सेंटर सेकेंड १५) रु० लेडी साइज २६) रु० चौकोर आकारवाली ५ ज्वैल १८), अच्छी २०) रोल्ड गोल्ड १० वर्ष की गारटी, ७ ज्वैल के साथ २५) अच्छी २७)। अलार्म टाइमपीस १४) रु० उत्तम १५) रुपया पैकिंग और पोस्टेज ॥।=)

पता—फ्रेंच कमर्शियल स्टोर्स (D.) पोस्ट बक्स नम्बर १२२१६ कलकत्ता(५)

स्वाँस (दमा) की प्राचीन जड़ी

१५० वर्ष की विश्व[illegible] (चित्रकूट दमा बूटी) की एक ही [illegible] माघ पूर्णिमा ता० १३-२-४९ को [illegible] के समय खीर के साथ सेवन करने [illegible] व पुराना पाँचों प्रकार के (स्वाँस) खाँसी सदैव के लिए जड से नष्ट [illegible] है। घर बैठे मँगाकर सेवन करिये [illegible] आने पर दवा मुफ्त खिलाई जाती [illegible]

पता—स्वामी दर्शनानन्द, आयुर्वेदाश्रम, पो० कर्वी (जि० बाँदा) यू०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया चलान, नई डिजाइन

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर कम्पनियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई हैं। देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीभर मशीन। प्रत्येक घड़ी को गारंटी ३ साल।

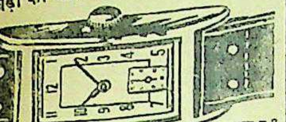

साइज 7¾
नं० १
जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड—४०)
" केस—३५) रोल्ड गोल्ड—४५)
१५ " " केस—५२) रोल्ड गोल्ड ६२)

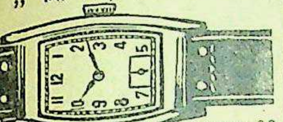

साइज 6¾
नं० २
९ जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड—४२)
" " —३८) रोल्ड गोल्ड—४७)
१५ " " ...५५ रोल्ड गोल्ड—६५)

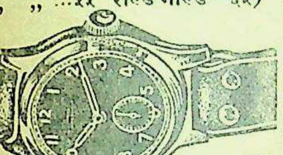

साइज 10½
नं० ३
जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३०)
" " " —४८) रोल्ड गोल्ड—६०)
वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड—८५)

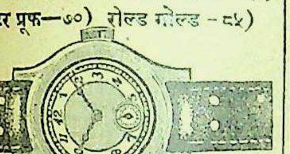

साइज 11½
नं० ४
क्रोम केस—१६) सेकण्ड कांटा की—१८)
सेंटर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर—२२)
जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५)
लार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर—२०)
ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से १२॥) प्रति सैकड़ा कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ११४२४
कलकत्ता

'बोर्न वाइटा' का कैल्सियम और खाद्योज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मांस को कड़क बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का ख़ज़ाना बख़्शता है।

केडबरीका
बोर्न-विटा
कैल्सियम और खाद्योज से भरपूर

केडबरी का अर्पण

K. B. 2

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

मुफ़ असली रिस्टवाच

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५५५ डी लक्स के सेवन करने से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है और उनको लम्बे व घुँघरवाले और चमकदार बनाता है, जहाँ बाल न आते हों वहाँ फिर से पैदा होने लगते हैं। आँखों की रोशनी को तेज करता है और सिर को ठंढक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥), तीन शीशी पूरा कोर्स ६॥)। इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए एक शीशी के साथ एक फैंसी रिस्टवाच जिसकी सुन्दरता व दृढ़ता की गारन्टी दस साल है और एक अँगूठी सोना (न्यू गोल्ड लण्डन) बिलकुल मुफ़्त भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने पर कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। तीन शीशी दवाई के खरीदार को डाक-खर्च बिलकुल माफ और चार अँगूठी (लण्डन न्यू गोल्ड) और चार घड़ियाँ बिल्कुल मुफ़्त इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें क्योंकि यह समय बार बार हाथ नहीं आयेगा। आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ लिखें।

हिमालय औषधालय (D. A)
हलका नं० २२ अमृतसर

बृहत्
अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा

(मूल ले०—महात्मा डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)

ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)
प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिटल
पो० लहेरियासराय (बिहार)

आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा जगत के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उत्तम चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया कि बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहिये। इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, तथा दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है जो इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी हैं, क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया है। सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६॥) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—
सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)
लहेरियासराय (बिहार)।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज (गया)

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नक्कालों से सावधान

सपट एन्ड, को डिपार्टमेंट U.P, DAI.
बम्बई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुप्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ

इनका आदर अन्य धर्मावलम्बियों तक में है

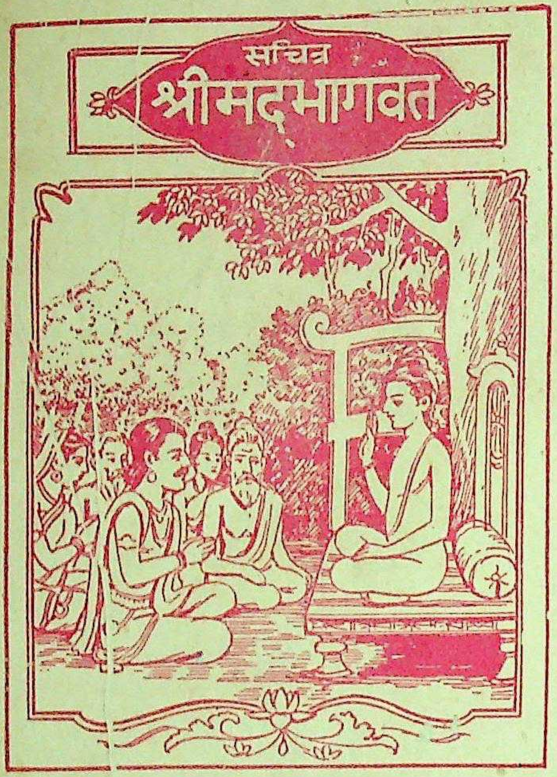

यह भक्तिशास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। भाषा सरल और सुबोध है। क्या पुरुष और क्या स्त्री सभी के लिए उपयुक्त है। रङ्गीन और सादे चित्रों को देखकर पाठक प्रसन्न होते हैं। ग्रन्थ दो खण्डों में सम्पूर्ण हुआ है। सुन्दर जिल्द है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

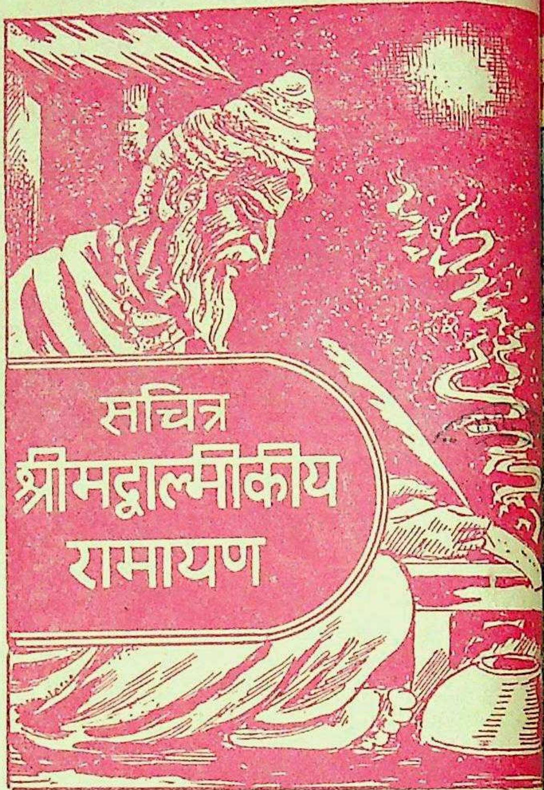

यह आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के ग्रन्थ का हिन्दी रूप इसे भारतीय संस्कृति का इतिहास समझिये। सरल सुबोध भाषा बीच-बीच में मनोहर चित्र हैं। बढ़िया जिल्द है। ग्रन्थ दो खण्डों समाप्त है। मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥) छः रुपये आठ आने।

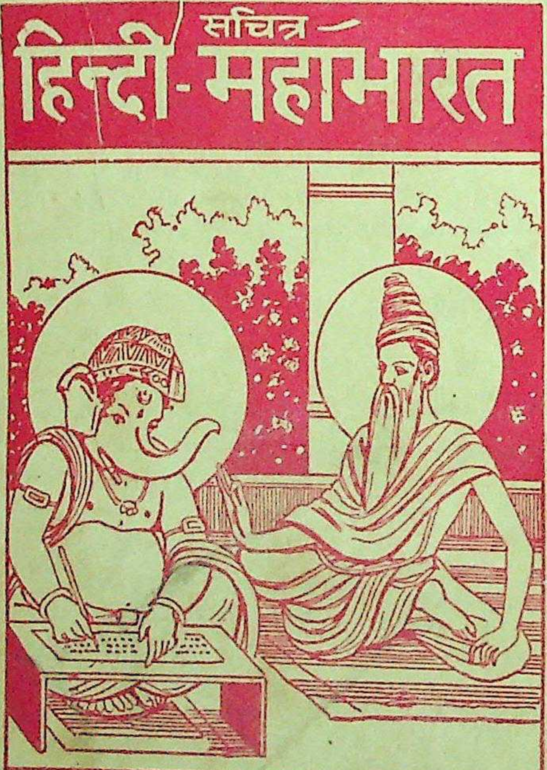

महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत का यह हिन्दी रूपान्तर है। अच्छा कागज, उत्कृष्ट छपाई। रङ्गीन और सादे चित्रों की भरमार। बढ़िया दस जिल्दों में ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। मूल्य ८०) अस्सी रुपये।

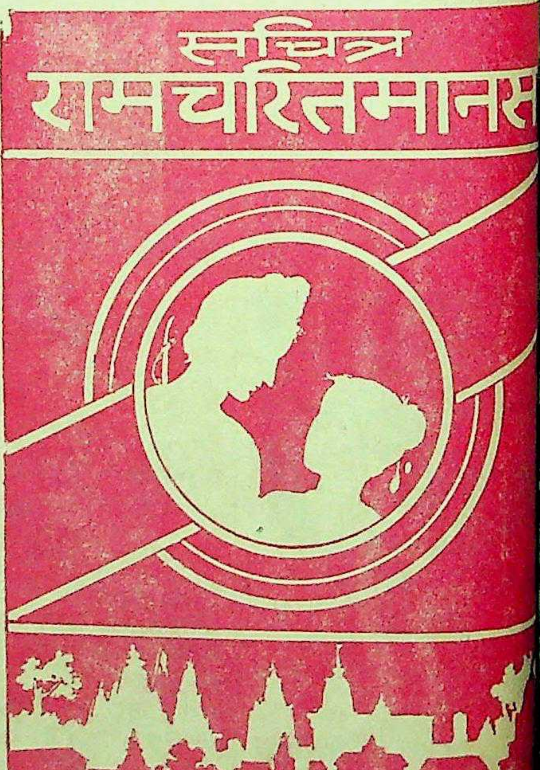

टीकाकार राय बहादुर डा० श्यामसुन्दरदास। बड़े प्रामाणिक पाठ है। सुबोध सरल भाषा में अर्थ है। रङ्गीन सादे चित्रों से शोभित सजिल्द प्रति का मूल्य १२) बारह रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र द्वारा इंडियन प्रेस, लि०, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, १३ फरवरी, १९४९ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 13th February, 1949

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन-री-हो

की बनाई हुई 'रेशमी मिठाई', 'फ्रूट ड्राप्स' और 'क्रीमोला' टाफी हाथ में पाते ही बच्चों की किलकारी और हँसी से घर गूँजने लगता है।

बच्चों को हँसाने और खुश करने के लिए 'इन-री-हो' की बनाई मिठाइयाँ बाजार में बिलकुल बेजोड़ हैं।

क्रीमोला टाफी
इन-री-हो ड्राप्स

इंडस्ट्रियल रिसर्च हाउस लिमिटेड
इलाहाबाद

मंजरी

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरंगा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गंभीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए।

'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध हो गया। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

तुलनात्मक भाषाशास्त्र

(भाषा-विज्ञान)

लेखक, डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए०, डी० फिल०

इसमें तुलनात्मक भाषाशास्त्र के सिद्धान्तों का प्रतिपादन तथा संसार की भिन्न-भिन्न भाषाओं के परस्पर सम्बन्ध की सरल और सुबोध व्याख्या है। प्रोफेसर ए० सी० वुलनर, डा० भगवानदास, म० म० गंगानाथ झा और श्री गोपीनाथ कविराज, डा० लक्ष्मणस्वरूप और धीरेन्द्र वर्मा आदि मनीषियों ने और अन्य नामी साहित्यिकों तथा पत्रों ने इसकी प्रशंसा की है। पृष्ठ-संख्या पौने तीन सौ से ऊपर; अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द; मूल्य केवल ५)।

हमारी नई पुस्तकें

संगति

आकाशरंजन मेहता नामी डाक्टर थे। उनकी खासी आमदनी थी। किन्तु उनकी अर्द्धांगिनी सुशिक्षित हेमप्रभा यह समझती थी कि डाक्टर मेहता सिर्फ आविष्कार की धुन में रहते हैं; मेरे पिता के दिये धन से ही गुजर होता है। इससे वह सिर-चढ़ी स्त्री बन गई थी। और डाक्टर मेहता उसकी फटकार सुनकर भी भीगी बिल्ली बने हुए अपने काम में लगे रहते थे। उनका मित्र प्रणयलाल जौहरी कई वर्ष विलायत में रहकर लौटा तो उनसे मिलने आया। उन्होंने हेमप्रभा से उसका परिचय करा दिया। परिचय इतना घनिष्ठ हो गया कि उससे बचने को डा० मेहता आँखों का इलाज कराने के बहाने दूसरे प्रान्त में चले गये। इधर प्रणयलाल का रंग गहरा होता गया कई महीने बाद डा० मेहता नकली अन्धे बनकर लौटे और इसी रूप में उन्होंने हेमप्रभा के खोये हुये प्रेम पर अधिकार किया। पुस्तक को हाथ में लेकर समाप्त किये बिना पाठक छोड़ना नहीं चाहते। लेखक ने विलक्षण कथानक की सृष्टि करके गिरते हुए चरित्र को समुन्नत बनाया है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

यात्री

श्रीयुत पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० ने इस पुस्तक में लिखा है कि हम सभी अनन्त पथ के यात्री हैं। यह जीवन-यात्रा कब आरम्भ हुई और कहाँ इसकी समाप्ति होगी। लेखक ने क्यों लिखूँ, जीवन-पथ पर, स्मृति और शिक्षक-जीवन आदि २० शीर्षकों में विभिन्न विषयों पर परिमार्जित भाषा में उच्च विचार प्रकट किये हैं। यात्री अपने ढंग की अनुपम पुस्तक है। सचित्र आवरण की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

अनातोले फ्रांस की चुनी हुई कहानियाँ

फ्रांस के इस नामी कहानी लेखक की प्रतिभा का अनुमान पाठकों को छाया-सुन्दरी, उसका पति, रूप की परी, मदारी, पेरिस की सुन्दरी और माल आदि कहानियों से लगेगा। प्रत्येक कहानी बेजोड़ है। सामाजिक चित्रण सजीव है। ये कहानियाँ पाठकों का मनोरंजन करने के साथ ही उपकार भी करेंगी। मूल्य १) एक रुपया।

अन्य महत्वपूर्ण प्रकाशन

वनवास

(खण्ड-काव्य)

कवि राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी०, वकील ने इस काव्य में मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्रजी के वनवास का वर्णन बड़ी सुन्दर कविता में किया है। पुस्तक कविता प्रेमियों को मुग्ध कर लेती है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

अद्भुत कथा

इस पुस्तक में ऐसी विचित्र हृदयाकर्षक ११ कहानियाँ हैं जिनको लड़के बड़े चाव से पढ़ेंगे और सुनेंगे। कहानियों से शिक्षा भी मिलेगी। पुस्तक सभी के काम की है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

विषवृक्ष

यह सुप्रसिद्ध उपन्यास-प्रणेता राय बहादुर बाबू बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का बढ़िया उपन्यास है। इसका हिन्दी रूपान्तर किया है कृतविद्य श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने। "विषवृक्ष सभी के घर के आँगन में लगा हुआ है। क्षेत्र-भेद से विषवृक्ष में रोग, शोक आदि नाना प्रकार के फल लगते हैं।" इस उपन्यास में विषवृक्ष है कुन्दनन्दिनी जो थोड़ी अवस्था में अनाथ हुई और नगेन्द्र बाबू का आश्रय पाकर उनके रिश्तेदार से ब्याही गई, फिर सत्रह साल की उम्र में विधवा हो गई। इसके रूप पर नगेन्द्र बाबू ऐसे रीझे कि उसके साथ विधवा-विवाह कर लिया। उपन्यास में वर्णित उलझनों में पड़कर पाठक चकरा जाते हैं। भाषा और कथानक सभी विचित्र हैं। मूल्य २) दो रुपये।

नवदुर्गा

नवदुर्गा बंगाली पंडित की बेटी थी। उसका विवाह करने की चिन्ता में माँ-बाप और बेटी तीनों घर से कलकत्ते के लिए चले। रास्ते में केदारेश्वर तीर्थ में दर्शन करने के लिए ठहर गये। वहाँ के महन्त अम्बिकाचरण पुरी ने नवदुर्गा को प्राप्त करने के लिए जो जाल रचा उसका वर्णन पढ़कर पाठकों को दंग हो जाना पड़ता है। अन्त में महन्त का चपट चाकर अधरचन्द्र मुखोपाध्याय 'मियाँ की जूती और मियाँ का सिर' की कहावत के अनुसार महन्त जी से खासी रकम ऐंठकर और नवदुर्गा को विधि से पत्नी बनाकर चलता हुआ। लेखक ने महन्त जी की जो दुर्गति करके में लाकर कराई है उससे पाठक विस्मित और खिन्न हुए बिना न रहेंगे। मूल्य १।) एक रुपया चार आने।

हार या जीत

इस उपन्यास में लेखक डा० [illegible] वर्मा एम० ए०, डी० फिल० ने देहाती लुहार की अल्पवयस्क बेटी को घटनाक्रम से, अनाथ दशा में, देहात के महराजगंज की रानी प्रभाकुँवरि के आश्रय में पहुँचा दिया है। वहाँ रानी की कृपा से इस लड़की ने विद्या पढ़ी, फिर इसमें उन गुणों का विकास हुआ जिससे मनुष्य सभ्य होकर सम्मान पाता है। इसने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और अन्त में कलकत्ता में नौकरी कर ली। कई पुस्तकें [illegible] विदेश-यात्रा के बाद रानी के कुँवर की प्रार्थना पर उससे विवाह किया। उपन्यास की घटनावली, विचारों का संघर्ष और चन्दा की नम्रतापूर्ण दृढ़ता सराहनीय है। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २३] [रविवार, १३ फरवरी, १९४९

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

पाकिस्तान अर्थात् मुसलमानों के लिये बहिश्त तो अँगरेजों ने बना दिया, किंतु बहिश्त का आनंद अँगरेज उठा रहे हैं मुसलमान नहीं। अँगरेजी राज्य में लीगी मुसलमान कहते थे कि पाकिस्तान ऐसा जनतंत्रीय शासन होगा जहाँ शेर और बकरे एक घाट पानी पीते नजर आयेंगे। लीगी बिरादरों का इस घोषणा का सुफल कम से कम अभी तो नजर नहीं आ रहा है, आगे की खुदा जाने। इस वक्त तो पश्चिमी पाकिस्तान में घोर हुल्लड़ मचा हुआ है। पश्चिमी पंजाब का मंत्रिमंडल गायब हो गया है। अब तो वहाँ की सारी बादशाही सर फ्रांसिस मुडी कर रहे हैं। मिस्टर मुडी को चाहे गवर्नर समझिये, चाहे प्रधान मंत्री और चाहे डिक्टेटर। लीगी एक ओर घूँसेबाजी कर रहे हैं और फ्रांसिस मुडी दूसरी ओर आनंद की बंशी बजा रहे हैं। पश्चिमी पंजाब ही का यह हाल नहीं है, बल्कि सिंध मंत्रिमंडल भी इसी मार्ग का पथिक बन रहा है। वहाँ भी पीर इलाहीबख्श प्रधान मंत्रित्व से भाग खड़े हुए हैं। अब जल्दी कोई दूसरे लीगी अपनी डफली बजानेवाले हैं। अपने राम की राय में बहिश्त ऐसा ही होता है। बहिश्त बन जाने पर लीगियों की यह दशा होगी, इसका कोई अनुमान भी नहीं कर सकता था। लेकिन अब तो सारी गपड़चौथ बिल्कुल सामने है। देखना है बहिश्त का और कितना आनन्द मिलता है।

* * *

काश्मीर कमीशन के सदस्य काश्मीर के भविष्य को अपने बिस्तरे में लपेटे हुए भारत में पुनः आ गये। अब वह फिर काश्मीर के भाग्य के निर्णय करने का नाटक बड़ी खूबी के साथ—हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान के नेताओं से घुलमिल कर—निर्णय करने की ओर बढ़ेंगे। काश्मीर का फैसला तो होगा ही यह तो निश्चय ही है, किन्तु क्या होगा इसके सम्बन्ध में अभी से भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है? काश्मीर इस समय सैनिक दृष्टि से तीन भागों में विभाजित है—एक भाग में भारतीय फौजों का अधिकार है, दूसरे भाग में पाकिस्तानी फौजों का और तीसरे भाग में आजाद काश्मीर नाम की सरकार का। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान नाम की सरकार की बात तो समझ में आती है, किन्तु यह आजाद काश्मीर नाम की सरकार कौन सी बला है? यह बात अपने राम की समझ में नहीं आई। समझ में नहीं आता कि काश्मीर की स्वतन्त्रता के परम पुजारी शेख अब्दुल्ला की सरकार के रहते यह आजाद सरकार कहाँ से बीच में कूद पड़ी? जान पड़ता है कि आजाद सरकार अँगरेजों की गुप्त सरकार है जो अन्ततोगत्वा काश्मीर के फैसले की केन्द्रभूमि बनेगी। बात यह है कि पश्चिमी पञ्जाब की हालत खराब है ही। सिन्ध की स्थिति भी डाँवाडोल है; ऐसी दशा में काश्मीर की यह आजाद सरकार ठीक उसी तरह से है जैसे पश्चिमी पञ्जाब में मूडी का राज्य। इसलिए देखना है कि आगे उनके क्या होता है। काश्मीर के निर्णय की ओर इस समय समस्त देश की आँख लगी हुई है।

* * *

चीन सरकार कम्युनिस्टों से शांतिपूर्ण समझौता करनेवाली थी। इसके लिए यह निर्णय किया गया कि यदि जनरल च्यांगकाई शेक को अध्यक्ष-पद से हटा दिया जाय तो सम्भव है, कम्युनिस्ट लोग समझौते की ओर आगे बढ़ें, किन्तु चीन के काफी हाथ-पैर पीटने के बाद भी कम्युनिस्टों के कान में समझौते की जूँ भी नहीं रेंग रही है और अपने राम की समझ में भविष्य में न रेंगने की कोई आशा ही है। कम्युनिस्टों के सामने मैदान खाली है अब वह लगे हाथों स्वतंत्र चीन का सर्वस्व हड़प कर जाना चाहते हैं। वे समझौता क्यों करें जब कि वह जानते हैं कि आज नहीं तो कल चीन पर उनका अधिकार हो जायगा। इसलिए चीन ने अब यह निश्चय किया है कि अन्त समय तक जनरल च्यांगकाई शेक बहादुरी के साथ अपने राष्ट्र की रक्षा करेंगे और कम्युनिस्टों के साथ समझौता करने से दूर रहेंगे। जहाँ एक ओर जनरल च्यांगकाई शेक राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व निछावर कर रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर मैडम च्यांग काई शेक अपना घर बसाने का उपाय रच रही हैं। यही नहीं वह अमरीका की वास्तविक निवासिनी बनने का सनद भी प्राप्त करने का प्रयत्न कर रही हैं। इसके साथ ही साथ जीविकोपार्जन के लिए अमरीका के किसी प्रसिद्ध गर्ल्स कालेज में अध्यापन-कार्य के लिए उद्योगशील हैं। यह खबर हवाई नहीं है, बल्कि कुछ अमरीकन पत्रों की है। चीन की क्या गति होगी? इसके लक्षण तो स्पष्ट हैं। लेकिन अमरीकनों का डालर भी उसे अन्त समय में न बचा पायेगा यही अफसोस की बात है।

* * *

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सत्याग्रही या संघ के कार्यों में भाग लेनेवाले विद्यार्थी अब जेलों से छोड़े जा रहे हैं। जान पड़ता है कि भारत-सरकार तथा संघियों में कुछ पारस्परिक वार्ता हुई है। यद्यपि सरकार की ओर से अभी इस संबन्ध में कोई स्पष्टीकरण नहीं किया गया है; किन्तु लिफाफा देखकर मजमून तो पहचाना ही जा सकता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गुरू जी ने भी शायद संघ के आन्दोलन को बन्द करने का आदेश दिया है, लेकिन आखिर संघी लोग भविष्य में क्या करेंगे? यह तो आगे आगे पता चलेगा, लेकिन यदि कांग्रेस और संघी एक होकर राष्ट्र की सुरक्षा की ओर बढ़ें तो लाभ होने की अधिक आशा है।

* * *

ज्यों ज्यों सन् ५० के चुनाव का दिन नजदीक आता जा रहा है त्यों त्यों प्रान्तीय सरकारों के मंत्री और भारत सरकार के अनेक मंत्री गल्ले और कपड़े की समस्या को सुलझाने की ओर आगे बढ़ रहे हैं इस समय देश में अन्न और कपड़े की मँहगी का जो हाहाकार मचा हुआ है उससे जनता की निगाह में कांग्रेसी सरकारों के नेता समय के विपरीत दिखाई दे रहे हैं। अपने राम की समझ में विधान-परिषद् ने बहुत बड़ा सुन्दर निर्णय किया कि सन् ५० में नये चुनाव का प्रबन्ध होना चाहिए यदि कहीं परिषद् ने चुनाव का कार्य दो एक साल के लिए और टाल दिया होता तो शायद कांग्रेस मंत्रियों के शरीर और मस्तिष्क में गल्ले और कपड़े के अभाव को दूर करने की स्फूर्ति न आती। पंडित जवाहरलाल नेहरू चाहते हैं कि आर्थिक दृष्टि से इस वर्ष अवश्य ही कुछ न कुछ किया जाय। नये चुनाव का ही परिणाम है कि भारत-सरकार अब सचमुच जनता के हित की ओर सक्रिय कदम बढ़ा रही है। इस वर्ष के समाप्त होते होते गल्ला कपड़ा तथा जीवन के उपयोग में आनेवाली वस्तुओं का मूल्य बहुत कम हो जायगा। ऐसी आशा है। यदि यह बात सही है तो अपने राम तो यही चाहेंगे कि चुनाव यदि प्रति वर्ष हुआ करे तो बहुत ही अच्छा है। कम से कम कपड़े और गल्ले की मँहगाई से जनता बची रहेगी।

* * *

भारत के प्रधान-मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सब सिर्फ वोट का फेर है

जनता की सरकार की सहायता क्यों नहीं की जाती ?

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

आवश्यक वस्तुओं की महँगाई प्रतिदिन बढ़ रही है। आज जो भी वस्तु दो आने की है वह कल नौ पैसे की हो जाती है। साधारण श्रेणी के आदमी की कौन कहे, औसत श्रेणीवालों को भी इसकी चोट पड़ती है। कुछ लोग इसका दोष सरकार पर लगाते हैं विशेष कर वे लोग जो देश की बागडोर अपने हाथ में लेना चाहते हैं, मगर सरकार बेचारी क्या करे, उसके सामने भी तो अनेकों कठिनाइयाँ हैं। माना आज ईंटा ३० रुपया हजार है, सरकार ने सोच-समझकर उसके दाम रखे हैं। पहले तो भट्ठेवाले उसे उस समय तक छिपाए रखते हैं जब तक कि कोई उन्हें चोर बाजार में खरीदनेवाला न मिले, जिससे वे ३० की जगह ३५ या ४० रुपया पा सकें। दूसरी तरकीब ढुलाई का मूल्य बढ़ा देना है जो कि २ रुपया की जगह १० या १२ रुपया हो गया है। मान लीजिए इन सब में आप पार पा भी गए, तो हमारे सोशलिस्ट और कम्यूनिस्ट भाई मजदूरी बढ़ाने का राग अलाप कर मजदूरी बढ़वाते हैं और उसका फल और मूल्य का बढ़ना होता है। यही हाल कपड़ों के कारखानों या रेलों के किराए में है। हमारे मिनिस्टर जब इनका जोर देखते हैं तो मजदूरी बढ़ाने पर मजबूर हो जाते हैं, क्योंकि न हों तो उनको आगे वोट कौन दे ? कौन नहीं जनता कि निम्बकर कमेटी की सिफारिश पर जो वेतन ४५ से ६० रुपया रखे गए हैं, उसका नतीजा यही है कि कपड़े के दाम दूने हो जायें, हड़ताल जो सी० पी० में चल रही है उससे ही कहा जाता है कि ४० लाख गज का नुकसान हो चुका है। यह उस नुकसान के अलावा है जो मजदूरी में मजदूरों को हुआ है।

आए दिन मजदूरी या वेतन बढ़ाने की माँग पेश की जाती है, रेल के कर्मचारी खासी अच्छी तनख्वाहें पाते हुए भी और बढ़ती की माँग पेश करते हैं, अनाज-पानी उन्हें यों ही सस्ता मिलता है, वेतन और लोगों से अधिक पाते हैं, मगर रोना पड़ा रहता है कि कम है। मानो सारी सरकारी आमदनी उन्हीं के वास्ते नामजद हो जानी चाहिए। डाक के महकमे के अदमियों ने हाल में ही बड़ी हड़ताल करके भरपेट वेतन बढ़वाए। डाकिए तक ५०, ६० व ७० रुपए तक पाने लगे मगर रोना न गया "और दो" की पुकार फिर जारी हो गई है जैसी रेल में या और सरकारी दफ्तरों में। दुर्भाग्य से हमारे कुछ शिक्षित सज्जन उन्हें भड़कानेवाले मिल गये, कोई सोशलिस्ट के नाम से, कोई कम्यूनिस्ट के नाम से और कोई यों ही वोट पाने के फेर में। वोट के फेर ने यह उपद्रव मचा रखा है तो सरकार करें भी क्या ? सिर्फ दुख यह है कि हमारे मिनिस्टर भी उसी चक्कर में पड़कर बहुत कुछ बढ़ती स्वीकार कर लेते हैं। कोई यह नहीं सोचता है कि इन माँगों के पूरा करने को पैसा कहाँ से आयेगा। देनेवाले तो वही इने-गिने टैक्स देनेवाले हैं। जब तब उनकी आमदनी न बढ़े तब तक इन बढ़ती माँगों की पूर्ति कैसे होगी ? जब तक देश की दौलत नहीं बढ़ेगी तब तक सरकार की आमदनी नहीं बढ़ेगी और वह दे भी न सकेगी।

आए दिन हड़तालों की धमकी कारखानेदारों के सिर पर तलवार का काम करती है। वे अपने स्वार्थ की अगर फिक्र करें तो कौन आश्चर्य की बात है ? मजदूर ने मजदूरी तो बढ़ा दी उसी के साथ काम करना कम कर दिया, मजदूरी देनेवालों का खर्चा आठगुना हो गया। अब जो चीज दो आने में बनती थी उसमें एक रुपया खर्चा हो गया। देनेवाली तो वही साधारण जनता है जो देश का राज्य करनेवाली समझी जाती है, वह कैसे दे, कहाँ से लाये ?

सरकार की इच्छा तो है कि प्रत्येक वस्तु सस्ती हो मगर हो कैसे ? हमारे दिलों में तो स्वार्थ भरा है। चाहे वे कांग्रेसी हों, चाहे सोशलिस्ट, चाहे कम्यूनिस्ट—हर एक वोट की दौड़ लगाए हैं, जो ही जितना अधिक भड़का सका, वही तो वोट पायेगा। मान लो सोशलिस्ट गवर्नमेंट आ गई। क्या वह इन सब बातों को कर दिखलावेगी जिसके वास्ते वह आज रो रही है और कांग्रेसी गवर्नमेंट पर इलजाम लगा रही है ? क्या उसके सामने वही दिक्कतें नहीं आयेंगी ? क्या वह सारी देश की आमदनी कर्मचारियों में बाँट देगी ? क्या उसके मुकाबले में कम्यूनिस्ट और कांग्रेसी वही प्रचार न करेंगे जो वे आज कर रहे हैं ? इस समय हमारी जरूरत यह है कि सब मिलकर देश की दौलत बढ़ावें। हमें दुख है कि भड़कानेवाले जोर पकड़ते जाते हैं, मजदूर अपना लाभ-हानि नहीं समझते।

वर्तमान शासक दल का यह दोष है कि वोट अपनी तरफ रखने को वे बहुत सी माँगें स्वीकार करते जाते हैं जिससे [illegible] और बढ़ती जाती हैं। वे यह भी भूल [illegible] हैं कि खाली सरकारी अफसरों की सुविधा [illegible] तो बढ़ा देते हैं और सर्वसाधारण पर उस[illegible] खर्चा लाद देते हैं। जैसे नाज-पानी सरका[illegible] अफसर तो कंट्रोल से ले सकता है, दू[illegible] कोई नहीं, क्या देश की सारी सुवि[illegible] सरकारी नौकरों के वास्ते हैं, सरकार [illegible] मालिकों के वास्ते खाली भुगतना ही है।

किसी न किसी जगह पर पहुँचकर [illegible] कार का मोर्चा लेना ही पड़ेगा। डाकवा[illegible] के साथ मोर्चा लेना तो आसान है [illegible] रेलवालों के साथ मुश्किल है, क्योंकि [illegible] काम का जाननेवाला मिलना मुश्किल [illegible] फिर भी कोई न कोई तरकीब सोचनी पड़ेगी। हमारी समझ में सर्वसाधारण [illegible] उचित है कि ऐसे हड़तालियों के [illegible] सहानुभूति न रखें, न किसी तरह उन[illegible] सहायता ही करें। वे जब हमें [illegible] पहुँचाने में कोई कसर उठा नहीं र[illegible] तो फिर सहानुभूति कैसी ? उन[illegible] हड़तालों से हमें कपड़ा मिलना कठिन [illegible] जाता है, रेलें बन्द होने से हमारे [illegible] काज बन्द हो जाते हैं, डाक न [illegible] से अपने इष्ट-मित्रों का हाल नहीं मा[illegible] होता, इन सब हड़तालों की चोट [illegible] सर्वसाधारण पर पड़ती है तब सहानु[illegible] कैसी ? बल्कि जहाँ तक हमारे बस में [illegible] हमें सरकार की सहायता करनी मुना[illegible] है। जो काम भी हम कर सकते हों [illegible] स्वयंसेवक बनकर उठा लें और सहा[illegible] करें, सहायता करें। योरोप या अम[illegible] में हड़ताली जितना पैसा बढ़वाते हैं, [illegible] हिसाब से काम बढ़ाते हैं। रूस में हड़[illegible] कोई कर ही नहीं सकता, वरना [illegible] पावे।

हमारा नया स्वतन्त्र देश कितने [illegible] स्वतन्त्र रह सकता है, जब आए [illegible] हड़तालें हों, पैदावार घटे और मह[illegible] बढ़े !!

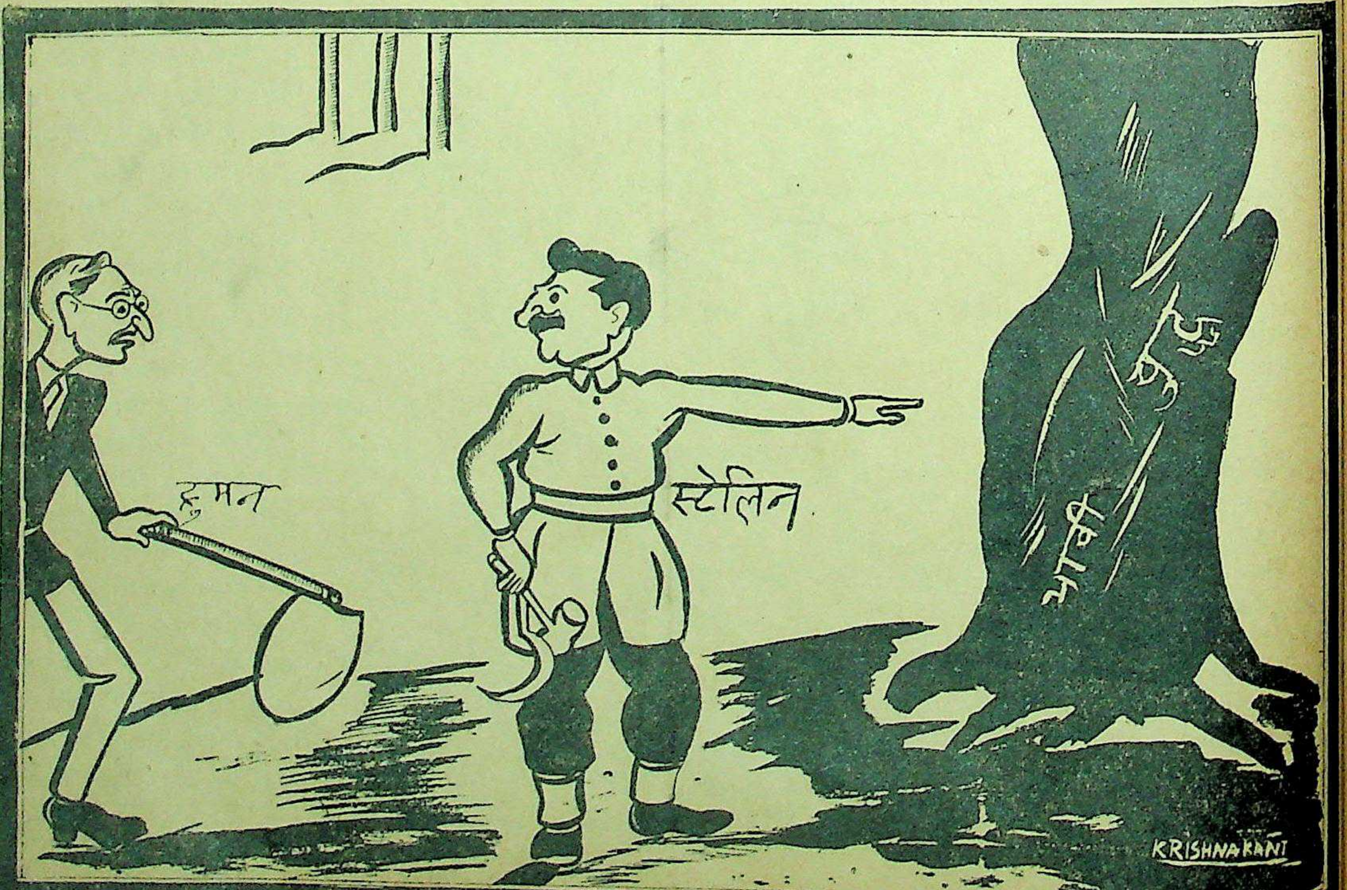

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

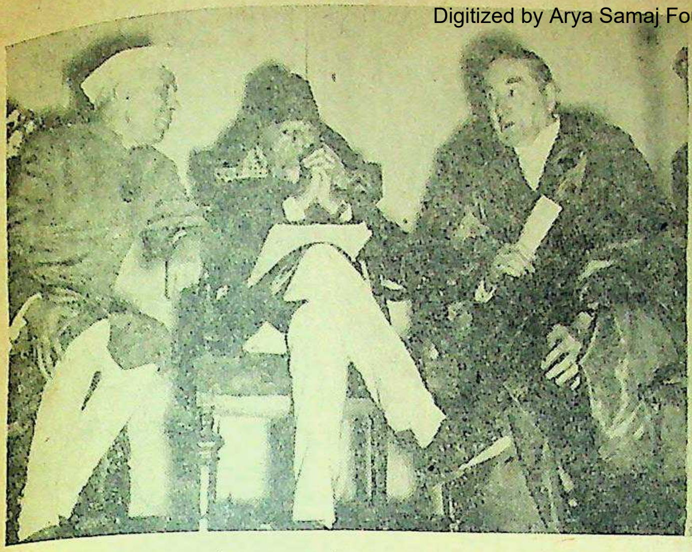

पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आज़ाद और सर मारिस ग्वायर भारतीय इतिहास रेकार्ड कमीशन के रजत-जयन्ती के अवसर पर दिल्ली में।

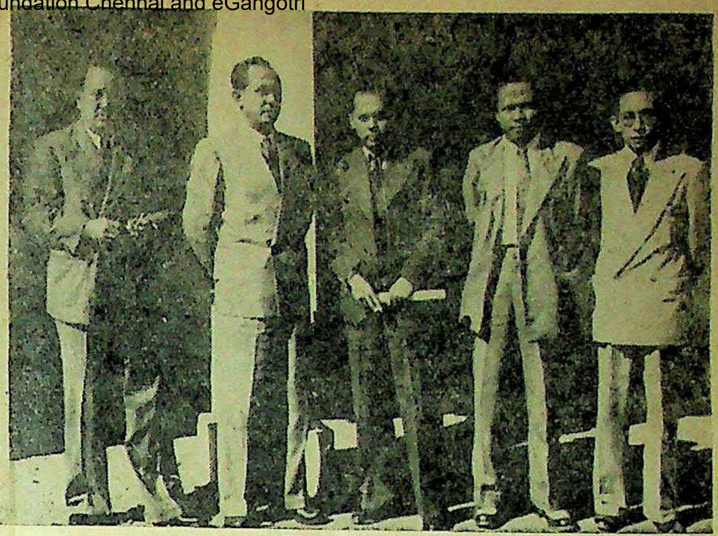

डच-आक्रमण के विरुद्ध एशियाई देशों के समर्थन के लिए विभिन्न देशों से आये हुए हिन्देशियाई राजदूतों का दिल्ली में लिया गया चित्र।

सचित्र 'देशदूत'

की

साप्ताहिक चित्रावली

भारत के नये प्रधान सेनापति जनरल के० एम० कैरिअप्पा का अवकाश प्राप्त प्रधान सेनापति जनरल बूचर और श्रीमती बूचर के साथ लिया गया चित्र।

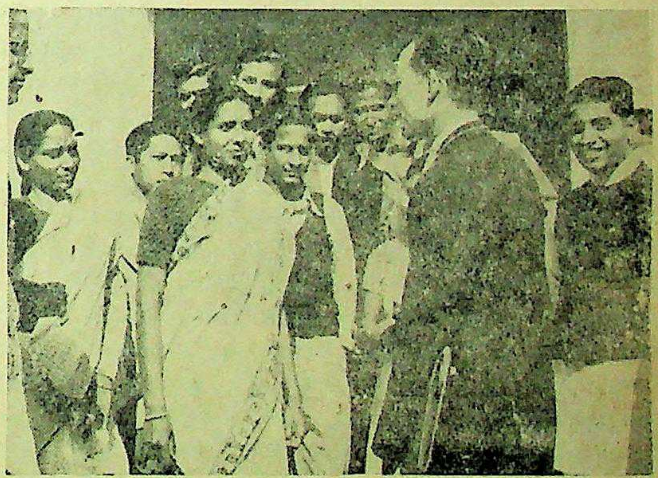

भारतीय छात्र दिल्ली की एक सभा में हिन्देशिया के लिए सहानुभूति और समर्थन प्रकट कर रहे हैं।

हैदराबाद में भारत के प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का लाखों की संख्या में जनता स्वागत कर रही है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू हिज हाइनेस बरार के शाहजादे के साथ बोलारम भवन में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीत किसकी और हार किसकी ?

काश्मीर की युद्धबंदी के बाद की राजनीति कैसे सुलझेगी ?

लेखक, श्री चंद्रोदय दीक्षित

काश्मीर के भाग्य का निर्णय अब होने वाला है। काश्मीर की युद्धबन्दी से किसकी जीत और किसकी हार हुई या होगी, इसका अंतिम स्वरूप तो प्रगट होगा ही; किंतु लेखक ने काश्मीर की जो उलझी समस्या है उसके सुलझाने की एक कल्पना की है साथ ही उसकी वर्तमान राजनीति पर प्रकाश भी डाला है, लेख सुन्दर तथा पठनीय है।

काश्मीर में सवा साल के युद्ध के बाद "युद्ध रोको" की क्षणिक सन्धि हो गई। स्पष्ट है किसी भी व्यक्ति को युद्ध युद्ध के लिये प्रिय नहीं है अतः प्रत्येक क्षेत्र में युद्धबन्दी का स्वागत किया गया। काश्मीर में युद्धबन्दी के सम्बन्ध में भारत-सरकार और पाकिस्तान सरकार दोनों की ओर से ही विरोधी मन्तव्यवाले वक्तव्य प्रकाशित किये गये हैं। काश्मीर में युद्ध-बन्दी से कुछ लोगों को क्या काफी लोगों को आश्चर्य हुआ है। ऐसा भी प्रतीत होता है कि इतनी जटिल समस्या का जिस प्रकार हल हुआ है, जिस प्रकार की मित्रता-भावना का एकाएक परिचय मिला है वह अपने अन्दर कुछ रहस्य लिये हुए है। आज साधारण जनता युद्ध बन्द हो जाने से संकटयुक्त होने की कल्पना करके सन्तोष की साँस तो ले लेती है, लेकिन उसमें आत्म-विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ है। आज भी साधारण जनता को ऐसा अनुभव होता है कि युद्ध-विग्रह-शान्ति और व्यापारिक समझौतों की सफलता के पीछे किसी रहस्यवादी शक्ति का हाथ है जिसे स्पष्ट रूप में साधारण लोग देख नहीं पाते हैं।

हमारा नम्र निवेदन है कि यदि इन सब बातों को हम उनकी ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि में देखें तो हमें ज्ञात होगा कि कोई राष्ट्र कितना भी स्वतंत्र रहने की घोषणा क्यों न करे, उसे कूटनीति के अखाड़े में बड़े पहलवानों की लातें ही खानी पड़ती हैं। ब्रिटेन ने भारत को स्वतन्त्र अवश्य कर दिया था, लेकिन उसका उस समय से ही यह निरन्तर षड्यन्त्र था कि भारत ब्रिटिश राष्ट्र परिवार में रहे, इतना ही नहीं वह अमरीका से सीधा सम्बन्ध स्थापित न करे और वह रूस की ओर न झुके। जिस समय तक भारत की स्थिति स्पष्ट नहीं थी हम देखते हैं कि भारत के ऊपर प्रत्येक कोने से आक्रमण किये गये। भारत की तुलना में पाकिस्तान की स्थिति पहले स्पष्ट हो चुकी थी, अतः ब्रिटेन का समर्थन भी उसे पहले मिला। यह तो स्पष्ट है कि काश्मीर का सामरिक दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। गिलगिट और पामीर का पठार एशिया का मस्तक है। जब तक किसी भी बड़ी शक्ति का इस पर अधिकार है वह एशिया में अपनी शक्ति पर भरोसा कर सकता है। स्वतंत्र भारत के प्रथम वर्ष में उसके स्वरूप का निर्णय करना मुश्किल था; यही कारण है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विभिन्न प्रश्नों पर उसको मित्रों का यथेष्ट सहयोग नहीं मिला। देश में राजाओं की स्वतंत्र सत्ता जिसे अँगरेजों ने जाते समय स्थापित कर दी थी उसके समाप्त हो जाने पर भारत अधिक संगठित हो गया, लेकिन इसके साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया कि राजाओं के अधिकारों और स्वार्थों को सुरक्षित रखा जायेगा। भारत की औद्योगिक नीति ने भी पूँजीपतियों को संरक्षण देने की नीति को स्पष्ट कर दिया इसके बाद ब्रिटेन को भारत पर विश्वास होने लगा। ब्रिटेन में होनेवाले राष्ट्र परिवार के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के पंडित पं० जवाहरलाल नेहरू के सामने अन्तर्राष्ट्रीय शतरंज रखी गई। यह स्पष्ट कर दिया गया कि भारत की स्वतंत्रता की रक्षा अलग रहकर नहीं की जा सकती। अमरीका की पूँजी और रूस का विप्लव-वाद भारत की स्वतन्त्रता के शत्रु हैं। यथार्थता भी यह है कि दोनों ही देश किसी भी देश की आवश्यकता के अनुसार सहायता करने के स्थान पर अपनी प्रसार नीति के अनुसार ही सन्धि और विग्रह करके सहायता अथवा आक्रमण करते हैं।

भारत स्वतन्त्र राष्ट्र है। एक वर्ष का स्वतन्त्र राष्ट्र है जिसे एक ओर अपनी आंतरिक व्यवस्था संगठित करनी है, विदेशी भय से अपनी रक्षा करनी है और दूसरी ओर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान पाने के लिये भी वह प्रयत्नशील है। रूस का अभी तक का यह इतिहास रहा है कि उसने किसी अन्य देश की जनता के संघर्ष को सक्रिय सहायता नहीं दी है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों में वह अत्यन्त संकुचित मनोवृत्ति का ही परिचय देता रहा है ऐसी स्थिति पर उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अमरीका रोटी से ही राष्ट्रों को खरीदना चाहता है। फिर आज के युग में कोई राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अकेले खड़ा भी तो नहीं हो सकता। भारत के पास शत्रुओं की कमी नहीं है उसके पास मित्रों का अभाव है। ब्रिटिश सरकार के शोषण-यंत्र के रूप में पूँजी समाप्त हो चुकी है। अधिक से अधिक वह व्यापारिक सम्बन्ध से कुछ लाभ उठा सकता है लेकिन आज कोई भी देश बिना व्यापारिक सम्बन्धों के जीवित भी तो नहीं रह सकता। फिर यदि दो देशों में उभयपक्षीय हितों की दृष्टि से व्यापारिक सम्बन्ध है उससे तो दो देशों का ही लाभ होता है। इन्हीं सब कारणों से लन्दन में ब्रिटिश राष्ट्र परिवार के देशों के सम्मेलन में सुरक्षा तथा आन्तरिक विकास में सहयोग पाने के हेतु भारत को भी ब्रिटिश राष्ट्र परिवार में रहने का अनुमोदन करना पड़ा।

जयपुर-अधिवेशन में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी इस निश्चय का समर्थन कर दिया है। भारत की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अब पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई है अतः ऐसी स्थिति में एक ही राष्ट्र परिवार के दो सदस्य अपनी शक्ति अब व्यय क्यों करें।

इसके साथ ही चीन में कम्युनिस्ट विजय से चारों ओर कम्युनिस्ट आन्दोलन में उफान सा आ गया है। एशियाई देशों में लाल देश का लाल संदेशा लेकर क्रांति का नारा दिया जाने लगा है। विभिन्न देशों को इस लाल रंग से भय मालूम होता है फिर वे इससे प्रभावित होने के स्थान पर आशंकित होने लगते हैं। बर्मा में कम्युनिस्ट प्रवेश और विद्रोह के संगठन का समाचार आये दिन आने लगा है। हिन्द एशिया और मलाया में कम्युनिस्टों ने विप्लव-मार्ग को अपनाया है। भारत और पाकिस्तान में भी इन लोगों ने खुले तौर से यह नीति अपना ली है। ऐसी स्थिति में स्वतन्त्रता ही रक्षा की दृष्टि से सभी देशों को संगठित रूप से अपनी रक्षा का उपाय करना है। अशान्ति, अराजकता, युद्ध और आर्थिक विषमता कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए उर्वर भूमि के समान होते हैं यही कारण है भारत और पाकिस्तान को अपनी जटिल समस्याओं को पारस्परिक समझौते के आधार पर हल करने के लिये ब्रिटिश कूटनीति ने बाध्य कर दिया है।

जहाँ तक कश्मीर का प्रश्न है उसमें भारत और पाकिस्तान किसी भी एक देश की विजय नहीं हुई है। दोनों ही देशों को अपनी मूल माँगों से पीछे जाना पड़ेगा। संयुक्तराष्ट्र संघ के काश्मीर कमीशन की मध्यस्थता और वह जनमत संग्रह के प्रबन्धक की सफलता में अभी देरी है। आज तथाकथित आजाद काश्मीर सरकार को अभी भंग नहीं किया है। युद्ध रुक जाने के बावजूद भी जिन प्रदेशों पर लुटेरों का अधिकार था वहाँ उनका अभी भी अधिकार है। पाकिस्तान ने जो रुख अपनाया है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी सेनायें भी काश्मीर को खाली करने नहीं जा रही हैं। यदि इस स्थि[ति] में जनमत लिया गया तो स्पष्ट है कि [वह] जनमत स्वतन्त्र नहीं होगा और काश्[मीर] आज की भाँति ही भारत और पाकिस्[तान] के बीच में विभाजित हो जायेगा।

काश्मीर का इस समय प्रधान प्र[श्न] नहीं रह गया है। मूल प्रश्न तो सम[स्त] राष्ट्र से जीवन क[ी] रक्षा का प्रश्न है [।] राष्ट्र के वर्तमान कर्णधार रूसी प्रभाव [व] समाजवादी व्यवस्था से दूर रहकर भा[रत] की वर्तमान व्यवस्था की रक्षा के लि[ये] दृढ़प्रतिज्ञ हैं। यही कारण है कि काश्मीर में युद्ध बन्द कर देने के लि[ये] तत्पर हो गये हैं। काश्मीर में युद्ध[बंदी] अभेद्य ब्रिटिश कूटनीति की युद्धो[त्तर]-कालीन महत्त्वपूर्ण विजय है। भारत [पर] यह कैसा प्रभाव करेगी, इसका निर्णय इतिहास ही करेगा।

१०,०००) रुपये की असली घड़ियाँ मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन [से] बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन [भर] काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर [से] लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता [है] उनको लम्बे घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ [बाल] न उगते हों वहाँ फिर से पैदा करता है। आँखों की रोशनी तेज करता है। दिमाग को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुग[न्धित] है। दिमागी काम करनेवालों के लिए अकसीर है। शौकीनों के लिए उमदा [तोहफा] है। कीमत एक शीशी २॥) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६॥) [।] तेल को प्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी प्रत्येक शीशी के ग्राहक को एक अँगूठी अमरीकन न्यू गोल्ड और एक असली अमरीकन रिस्टवाच जिसकी गारण्टी [...] साल है मुफ्त।

नोट—तीन शीशी के खरीदार को छः अँगूठियाँ सोना अमरीकन न्यू [गोल्ड] और तीन अमरीकन रिस्ट घड़ियाँ मुफ्त इनाम दी जाती हैं। आज ही आर्डर भि[जवायें] क्योंकि यह अवसर केवल चन्द दिनों के लिए है। नापसन्द होने पर कीमत [वापसी] की गारण्टी।

सरयासा आयुर्वेदिक फारमेसी, (D. A.) हल्का नं० २२, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार को मानवता का संदेश

सेवाग्राम में होनेवाली शांति-परिषद् की एक झाँकी

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

> भारत सदा संसार को शांति तथा मानवता का संदेश देता आया है, इसी भावना का सक्रिय रूप देने के लिये पिछले दिनों सेवाग्राम में देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की अध्यक्षता में शांति-परिषद् का अधिवेशन हुआ था। इस परिषद् का क्या उद्देश्य था तथा वहाँ क्या हुआ, इसका सुन्दर विवरण इस लेख में दिया गया है। लेख सामयिक तथा पठनीय है।

सेवाग्राम में होनेवाले शांति परिषद् के प्रतिनिधियों का अतिथ्य करनेवाले आचार्य आर्यनायकम्।

पूण्यभूमि सेवाग्राम में देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी की अध्यक्षता में जनवरी के अन्तिम सप्ताह में शांतिवादियों की एक परिषद् हुई। उस परिषद् में विदेशों के तथा भारत के प्रमुख शांतिदूत उपस्थित हुए थे। आज संसार में चारों ओर अशांति ही दृष्टिगोचर हो रही है और हर देश दूसरे देश को नीचा दिखाने के प्रयत्न में है। विश्व में शान्ति स्थापित हो—इसी प्रयत्न में सभी को व्यस्त देखा गया। राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने दुनिया को मानवता का संदेश दिया था और शांति के लिए उन्होंने सारे संसार को रास्ता बताया था। उन्हीं की कर्मभूमि सेवाग्राम में होनेवाली शांतिवादियों की परिषद् आज के युग में अपना विशेष महत्त्व रखती है।

* * *

परिषद् में जिन प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया था उनमें से उल्लेखनीय हैं सर्वश्री होरेस एलेक्जेन्डर, म्यूरिल लिस्टर, मिस ग्लैडिक ओवेन, एस० के० जार्ज, तान, सुधीर घोष, आचार्य किशोरलाल मश्रूवाला, दादा धर्माधिकारी, जैनेन्द्रकुमार, आचार्य श्रीमन्नारायण अग्रवाल, प्रो० जे० सी० कुमारप्पा, के० टी० कृष्ण स्वामी, भदंत आनन्द कौसल्यायन, शरणानन्द, रसवैया, वेंकटरमनी, वीरचन्द पानाचन्द जैन, टुचेन, आचार्य आर्यनायकम् आदि।

* * *

होरेस अलेक्जेन्डर ने अपने भाषण में बताया कि विश्व शान्ति-परिषद् की कल्पना कैसे आई। सन् १९४५ में राजकुमारी अमृतकौर विलायत गई थीं। उन्होंने वहाँ कहा कि शांति में जिन लोगों का विश्वास है, वे लोग अगर हिन्दुस्तान में आकर महात्मा गांधी के विचारों को समझें और शांति-सम्मेलन करायें तो बड़ा काम हो सकता है। तभी से वहाँ के शांतिवादियों में विश्वशांति-परिषद् की कल्पना ने जन्म लिया। पाश्चात्य राष्ट्रों के शांतिवादियों ने गांधी जी से प्रार्थना की कि वे इँगलैंड आयें और शांति का संदेश दें। गांधी जी ने उत्तर दिया था कि जब तक भारत के लोग मेरी बात नहीं मानते और उनके गले में अपनी बात नहीं उतार सकता—मेरा पश्चिम आना ठीक नहीं है। फिर पश्चिमवालों ने तय किया कि गांधी जी के पास जाकर उनकी कार्यप्रणाली का अध्ययन किया जाय। इस हेतु प्रथमतः होरेस अलेक्जेन्डर भारत आये और गांधी जी से मिले। शांति-परिषद् के बारे में बापू से चर्चा की गई। उन दिनों अँगरेज यहाँ से विदा हो रहे थे। गांधी जी नें कहा कि अभी परिस्थित अनुकूल नहीं है और एक साल के लिए परिषद् मुल्तवी की जाय। रसूलिया (होशंगाबाद) में कुछ शांतिवादी एकत्र हुए और उन्होंने तय किया कि परिषद् भारत में ही हो। उन दिनों गांधी जी का अंतिम उपवास चालू था। देश की स्थिति बदल गई थी। जगह जगह दंगे फैले हुए थे। हिन्दू-मुसलमानों का प्रश्न सुलझाने में गांधी जी लगे हुए थे। परिषद् कहाँ हो—इस सम्बन्ध में गांधी जी ने कहा था कि सेवाग्राम की अपेक्षा शांतिनिकेतन का अधिकार ज्यादा है। परिषद् वहीं हो और विभिन्न देशों के पचास प्रतिनिधि बुलाए जाएँ।

इसी बीच गांधी जी की हत्या हुई और विश्व ने एक महान् शांतिदूत को खो दिया। परिषद् का स्थान शान्तिनिकेतन निश्चित हो चुका था। वह स्थगित हो गई। गांधी जी के उठ जाने से भारत की जो महान् क्षति हुई—उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। राष्ट्र का प्रकाश बुझ गया, फिर भी उनकी दिव्यात्मा हमें प्रकाश-पथ बताती रहती है। उनके सिद्धान्तों के अनुसार यदि दुनियावाले चलें तो विश्व में शान्ति प्रस्थापित हो सकती है।

* * *

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टाइन ने शांतिवादियों की सभा के संबंध में एक संदेश देते हुए कहा है—संसार में महात्मा गांधी के आदर्श को फैलाने और उसका प्रचार करने के लिए हमें यथासाध्य प्रयत्न करना चाहिए। इस संबंध में भारत ने जो कदम उठाने का निश्चय किया है, उससे यह सिद्ध होता है कि भारत की जनता की विचार-धारा पर, महात्मा गांधी के महान् आदर्श का गहरा प्रभाव पड़ा है। हिंसा का मुकाबला हिंसा द्वारा कदापि नहीं किया जा सकता। उसके लिए आवश्यक है कि हिंसात्मक शक्ति के साथ असहयोग किया जाय। महात्मा गांधी ने इस सत्य को समझा था। हमें अपने भरसक यह प्रयत्न करना चाहिए कि विश्व के सभी राष्ट्र महात्मा गांधी के सिद्धांतों को समय रहते अपना लें।

* * *

शांतिवादी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने कहा कि अब भारत को घोषणा करनी है कि वह अहिंसा के क्षेत्र में महात्मा गांधी के नेतृत्व का पदानुसरण करने को तैयार है या नहीं? आज आवश्यकता है कि हम गांधी जी की शिक्षाओं को पूर्ण रूप में स्वीकार कर लें। गांधी जी ने दर्शन-शास्त्र की प्रणाली का परीक्षण ही नहीं किया; बल्कि उन्होंने खास समस्याओं के समाधान करने में अपने सिद्धांतों को कार्यान्वित किया। गांधी जी के इस प्रयोग से जीवन का मार्ग पूर्ण रूप से परिलक्षित हो गया। गांधी जी के सिद्धांत परस्पर पूरक तथा सुसंगत हैं। सत्य सच्ची अहिंसा का परिणाम है। आज तो हमारा गांधी जी के बताये हुए सिद्धांतों पर चलने में ही कल्याण है। आनंद तो आत्मा का विषय है। उसकी सिद्धि आधुनिक विज्ञान से नहीं हो सकती। एक कहावत है कि दस साधु एक कंबल के नीचे सो सकते हैं, किन्तु दो राजा एक देश में संतुष्ट नहीं रह सकते।

* * *

प्रो० जे० सी० कुमारप्पा तथा आचार्य किशोरलाल मश्रूवाला गांधीवाद के महा पुरस्कर्ता हैं। इन दोनों ने अपने मौलिक विचार परिषद् के सम्मुख प्रस्तुत किये और बताया कि गांधीवाद की शांति के लिए रामबाण उपाय है।

प्रो० कुमारप्पा ने बताया कि गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम में शांति की आत्मा फैली हुई है। प्राचीन काल के संतों ने शांति का मार्ग ढूँढ़ा था; किन्तु महात्मा गांधी ने समाज की समस्याओं को हल करने का अर्वाचीन मार्ग निर्धारित किया। रचनात्मक कार्य को अपनाने से विश्व में शांति प्रस्थापित हो सकती है। आर्थिक स्थिति सुधरने से ही मानव का कल्याण होता है। रचनात्मक कार्य को अपनाने से आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। आज गाँवों में क्या हो रहा है—उनकी स्थिति दयनीय है। कुछ ऐसे लोग आज भी हैं जो गोबर से दाने प्राप्त कर उन्हें धोते हैं और उन दानों से अपने बच्चों की भूख मिटाते हैं। किन्तु प्रश्न पूछा जा सकता है कि इसके लिए समाज ने क्या किया? क्या इस तरह भविष्य में भी चलता रहेगा। यदि सच्ची शांति हम पैदा करना चाहते हैं तो क्यों नहीं इस तरह की पद्धति बंद की जाती?

रचनात्मक कार्य की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए प्रो० जे० सी० कुमारप्पा जी ने बताया कि वह स्वावलंबन की ओर

शेष पेज १८ पर देखिए

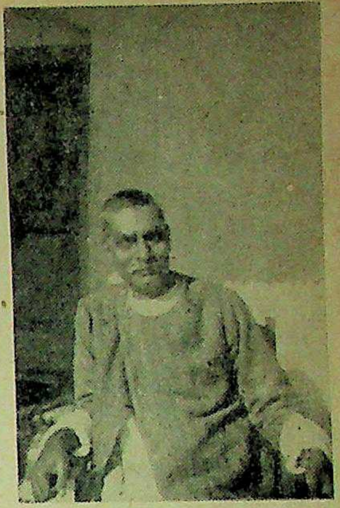

सेवाग्राम में होनेवाले शांति परिषद् के अध्यक्ष देशरत्न डाक्टर रजेन्द्रप्रसाद।

सेवाग्राम में होनेवाले शांति परिषद् में सम्मिलित होनेवाली कुछ महिला प्रतिनिधि बातें कर रही हैं।

फा० ४

इस लेख के लेखक श्री उमाशंकर शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांडा और वैन्डहम जलप्रपात

संयुक्तप्रांत मिर्जापुर की प्राकृतिक तथा रमणीय भूमि

लेखक, श्री विनयभूषण दत्त

संयुक्तप्रांत यद्यपि खेतिहर प्रांत है फिर भी उत्तरी जिलों तथा मिर्जापुर जिले की प्राकृतिक तथा रमणीय भूमि दर्शनीय है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने मिर्जापुर जिले के टांडा तथा वैन्डहम जलप्रपातों की यात्रा का सुंदर वर्णन किया है। साथ ही कुछ तथ्यपूर्ण ऐतिहासिक खोजों की ओर भी विद्वानों का ध्यान आकर्पित किया है। लेख सुंदर और पाठनीय है।

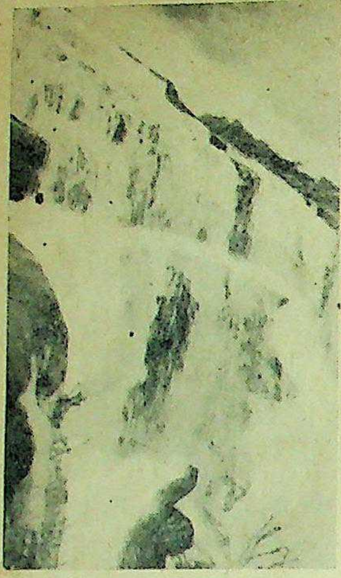

मिर्जापुर में टांडा के झरने का एक दृश्य।

पूर्वी संयुक्तप्रांत में टांडा के रमणीक जलप्रपात की चर्चा बहुत चलती है और बहुत से लोग उसे देखने भी जाते हैं। टांडा कोई सदा बहनेवाली नदी नहीं है, उसका अस्तित्व बरसाती पानी पर ही निर्भर रहता है। इस जलप्रपात का सबसे सुन्दर दृश्य भरपूर वर्षा के मौसम में लिया जा सकता है। हमने सितम्बर मास के प्रथम सप्ताह में इस दृश्य का आनन्द लिया। उपरिलिखित दोनों झरनों को देखने के लिए हमने सरकारी मोटरलारी किराए पर की, जिसमें कि पैंतीस सवारियों को स्थान था। मोटरलारी का किराया पूरे साठ रुपये लगे। मिर्जापुर स्टेशन से इक्का या रिक्शा से भी इन स्थानों पर पहुँच सकते हैं। सड़कें अच्छी हैं। टांडा प्रपात मिर्जापुर स्टेशन से ठीक आठ मील दूर है और वैन्डहम प्रपात टांडा प्रपात से १२ मील पर है। पहले हम टांडा प्रपात और फिर वहाँ से वैन्डहम प्रपात को गए तथा संध्या को मिर्जापुर स्टेशन पर वापस आ गए।

जहाँ ये प्रपात स्थित हैं, वहाँ की भौगोलिक स्थिति बड़ी मनोरम है तथा उसकी रमणीयता बड़ी चित्ताकर्षक है। बहुत से लोग बिना जाने हुए या भूल से इस हिस्से की पहाड़ियों को विंध्यश्रेणी कहते हैं। मिर्जापुर के पश्चिम में तीन मील की दूरी पर एक स्टेशन विंध्याचल स्टेशन के नाम से विख्यात है, जिससे अनुमान लगाया जाता है, कि विंध्याचल पर्वत इतनी दूर तक आ गया है। एक पहाड़ी की चोटी पर बने हुए मकान, जो कि रेलगाड़ी में से दिखाई देते हैं, उस पहाड़ी के सही नाम न विदित होने के कारण, विंध्याचल स्वास्थ्य-गृह के नाम से पुकारे जाते हैं।

मिर्जापुर के विंध्यादेवी के मंदिर को, जहाँ पर कहा जाता है कि सती के मृत शरीर का एक भाग गिरा था, दूर दूर से लोग देखने आते हैं, पर मंदिर का यह नाम ठीक नहीं है, क्योंकि उस श्रेणी का नाम विंध्यश्रेणी नहीं है, जिसके आधार पर बाद में देवी का नाम रक्खा गया है। चुनार में गंगा को छूनेवाली श्रेणियों को भी लोग विंध्या कहते हैं। छोटी कक्षाओं के स्कूली भूगोलों में यह लिखा जाता है कि विंध्याचल इतना लम्बा है कि उसका फैलाव चुनार में गंगा के तट तक पहुँच गया है। यह कुछ भी हो, पर सच यह है कि ये श्रेणियाँ विंध्याचल की नहीं हैं।

उनका क्या नाम है?

विंध्याचल मालवा के पठार तक ही सीमित है। विंध्याचल के पूर्व में भांडेर श्रेणियाँ हैं और इनके पूर्व में समुद्र-तल से १५०० फीट की ऊँचाई पर सोन नदी के पूर्व में कैमूर-श्रेणी है। यही वह कैमूर श्रेणी है, जो कि चुनार में गंगा को छूती है और मिर्जापुर नगर से दक्षिण में स्थित है। यदि सही नाम दिये जायें, तो विंध्याचल स्टेशन कैमूराचल स्टेशन कहा जाना चाहिए और मिर्जापुर के विंध्यादेवी के मंदिर को कैमूर देवी का मंदिर कहा जाये।

भारतीय साहित्य एवं परम्परा में विंध्य नाम बहुत अधिक प्रसिद्ध है। इसलिए कैमूर श्रेणी जो कि विंध्याचल से बिलकुल अलग है, लोगों के विश्वास में अभी तक विंध्याचल के नाम से पुकारी जाती है। झाँसी का दक्षिण बुन्देलखण्ड है, जहाँ पर ओरछा पन्ना आदि रियासतें हैं और इलाहाबाद के दक्षिण में बघेलखण्ड है, जहाँ पर रीवाँ आदि रियासतें हैं। कैमूर श्रेणी भी साधारणतः बघेलखण्ड की चोटी के पठार हैं, जिसे विंध्याचल का गलत नाम दिया गया है। (विंध्याचल और कैमूर के अंतर के लिए चित्र नं० १ देखिए।)

अब मैं टांडा प्रपात का वर्णन करना चाहता हूँ। अतीत में किसी समय वह चट्टान टूटी और ऊँची घाटी बनी; तथा टांडा प्रपात भी बना, जिसको कि हम देखने गए थे। वह घाटी लगभग दो फर्लांग लम्बी है। धीरे धीरे प्रपात पीछे हटता जा रहा है। आरम्भ प्रपात घाटी के उत्तरी छोर पर था। प्रपात के पीछे हटने के कारण अब उसके सामने ही चट्टान में एक बहुत बड़ी दरार हो गई है। डाक बँगला प्रपात के दूसरी ओर एक फर्लांग की दूरी पर टीले के किनारे पर बना है, जहाँ से टांडा नदी बहती है। दृश्य आकर्षक है। डाक बँगला के बरामदे से कई दिनों तक प्रपात के मनोरम दृश्य को देखकर अपनी आँखें तृप्त कर सकते हैं। यह देखकर मुझे दिवाली डाक बँगला के नीचे पिंडारी नदी में काफनीधार के मिलने का दृश्य याद आता है, जो कि अलमोड़ा जिले में पिंडारी बर्फीली नदी (ग्लेशियर) से आठ मील दूर है।

पर इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर है, क्योंकि कफानी का पानी सुन्दर हिम सदृश श्वेत और स्वादिष्ट है, जब कि टांडा का पानी मटमैला और फीका है। टांडा प्रपात का पानी करीब ५० फीट की ऊँचाई से गिरता है। नर्वदा प्रपात केवल ३० फीट ऊँचा है। नर्वदा प्रपात टांडा प्रपात से कहीं अधिक सुन्दर है। वर्षा की ऋतु में भी टांडा में पानी का बहाव अधिक नहीं रहता, जब कि इस समय खूब वर्षा का मौसम था। साथ ही जैसे यह वर्षा में खूब भर जाता है, गर्मी के मौसम में यह बिलकुल साधारण हो जाता है। इस समय सरकार पानी को एकत्र करने के लिए प्रपात के बिलकुल ऊपर टांडा के वार-पार एक जलद्वार के साथ दस फीट ऊँचा बाँध बना रही है, ताकि नहरों के द्वारा आस-पास के भूभाग में खेती के लिए पानी लाया जा सके।

उत्पादन-सम्बन्धी विधियाँ

यह भूभाग ज्वार, बाजरा आदि स्थानीय अनाजों को पैदा कर सकता है। जब योजना पूर्ण को जावेगी, तो आस-पास के प्रदेश की जनसंख्या और खेती बढ़ेगी। सरकार देश की उपज बढ़ानेवाली इन क्रियात्मक योजनाओं के लिए प्रशंसा की पात्र है। टांडा गंगा में जाकर मि[...] और अभी तक उसका पानी [...] नष्ट हो रहा था, पर एक या कु[...] बाद ही आस-पास की खेती के लि[...] लिए इस पानी का प्रयोग होगा।

अब मैं एक दूसरी उपयो[...] विचारसंगत योजना की चर्चा [...] जो कि मिर्जापुर नगर में पानी [...] लिए टांडा प्रपात के निकट ही [...] गई है। पूर्व से आकर दो छोटी नदियाँ पहले से भी टांडा में मिल [...] डेढ़ मील लम्बे बाँध के बनने से [...] की दो छोटी छोटी नदियों का पानी बहुत बड़े तालाब को बनाने के [...] रोककर इकट्ठा किया गया है, जो [...] मील लम्बा और आध मील चौड़ा [...] बाँध का एक छोर, जो करीब दो [...] तक फैला है, कुछ कम ऊँचाई [...] पर पत्थर से मजबूत बनाया गया है, [...] वर्षा ऋतु में अतिरिक्त जल पत्थ[...] दीवाल पर से बहकर नहर बनाता [...] टांडा में जा मिले। (मानचित्र नं[...] को देखो, जिसमें तालाब और [...] पानी को टांडा में आता हुआ दि[...] है)। तालाब का पानी बहुत सा[...] स्वच्छ है। वहाँ पर पहरेदार रखे [...] ताकि कोई आदमी या जानवर उसे [...] न करे। बड़े बड़े नल इस तालाब से [...] मिर्जापुर के पानीघरों को ले जाते हैं। वैन्डहम जो कि १३ वर्ष तक १९[...] १९१३ तक मिर्जापुर के योग्य [...] रहे हैं, इस योजना तथा जिले के [...] बहुत से उपयोगी कार्यों के लिए [...] के पात्र हैं।

टांडा प्रपात को देखने के [...] यहाँ बारह मील की दूरी पर [...] मिर्जापुर के लोकप्रिय कलक्टर [...] विख्यात वैन्डहम प्रपात को [...] वहाँ तक का रास्ता और [...] शिक•भाग देखने योग्य है और [...] निर्देशकों के लिए यहाँ अत्युत्त[...] मिलेंगे; तथा मनोहर सुन्दर पठार [...] लम्बी सड़कें और भूभाग मिलेंगे, [...] कि वे खोजा करते हैं। महाशय [...] की स्मृति में तथा उनकी नौकरी [...] पाने के अवसर पर मिर्जापुर [...] किए हुए धन के सदुपयोग के लिए [...] के समीप स्वास्थ्य-गृह के रूप [...] डाल बँगला बनवाया गया है [...] रहने के लिए डिस्ट्रिक्ट बोर्ड [...] कारियों से आज्ञा लेनी पड़ती है। प्रपात के जल में पाचन शक्ति [...]

शेष पेज १६ पर

वैन्डहम जलप्रपात का एक प्राकृतिक दृश्य।

मिर्जापुर के रिहन्द बाँध का एक दृश्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

कच्चा धागा

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

संसार में मानव-मात्र ही नहीं वरन् प्राणीमात्र तक स्वार्थी है। अपना कोई भी प्रिय वस्तु तब तक प्यारी रहती है जब तक उससे अपना स्वार्थ पूरा होता रहता है या अपनी हानि नहीं होती। जिस दिन हानि की सम्भावना होती है उसी दिन से हम तिरस्कार करने लगते हैं; उससे अपना पीछा छुड़ाने का प्रयत्न करते हैं। रेणुका को उसके माँ बाप और भाई बड़े प्यार से रखते हैं; उसके थोड़े दिन के बिछोह को भी वे बड़ा दुख समझते हैं। रेणुका उन सबके लिए अपने पति के हजारों रुपये का खून कर देती है, परन्तु समय के फेर से उसे भी दुखमय दिन देखने पड़ते हैं। उस समय भाई और भाभी उसका जो तिरस्कार करते हैं कथाकार ने कहानी में बड़े ही मार्मिक और रोचक ढंग से वर्णन किया है। कहानी सुन्दर और पठनीय है।

जिस दिन रेणुका ससुराल चली, तो उसने उद्वेग भरी आँखों से भैया की ओर देखा। विनय स्वयं रेणुका को जाती देख, भरी आँखों को बार-बार पी जाने की चेष्टा कर रहा था। कैसा कारुणिक और हृदय दहला देनेवाला दृश्य था वह! बहन रो रही थी, भैया रो रहा था। माता-पिता रो रहे थे। नाते-रिश्तेदारों की आँखों में भी आँसू भर आये थे। पड़ोसी भी अपनी आँखें पोंछ रहे थे। उसी समय रेणुका ने विनय के कन्धे पर मुँह रखकर कहा--'मेरे भैया!'

'मेरी बहन!' विनय ने रेणुका के सिर पर हाथ रखा और कहा—'ससुराल रोकर नहीं जाया करते, रेणुका!'

किन्तु रेणुका ने जैसे आहत स्वर में कहा--भैया, तुम...यह घर....मा, बाबू जी ......।'

अरे, इस दुनिया में ऐसा ही चलता है, पगली! तू जहाँ जा रही है, वही है, तेरा घर! वहीं है, तेरी ममता...तेरे जीवन की व्यापकता, रेणुका बहन! हँस-कर जा! ईश्वर-कामना के साथ!'

बाहर द्वार पर पालकी खड़ी थी। विदाई के स्वर में बैण्ड की मधुर गत बज रही थी। उसी समय बाबू जी बोले--'चलो रेणुका! बेटी!'

सुनते ही रेणुका तड़प गई--बाबू जी!'

'हाँ, मेरी बच्ची! अब जा तू! विनय जल्दी ही जायेगा, और तुझे ले आयेगा।'

तब उन्होंने जामाता के पिता से कहा--'बड़े ही लाड़-प्यार से पाली मैंने यह रेणुका! लड़का समझकर!'

जामाता के पिता अभिप्राय समझ गये। वह तुरन्त ही बोल दिये--'विश्वास रखिये, मेरे रहते बेटी रेणुका को कोई कष्ट नहीं होगा। नौकर, घर सभी मेरी बहू के इशारों पर चलेगा।'

रेणुका पालकी में बैठा दी गई। वह विदा भी कर दी गई। तभी घर में आ, पत्नी, पुत्र तथा अन्य सम्बन्धियों को ओर देख, उन्होंने कटी हुई डाल की तरह अपने आपको कुर्सी पर डालते हुए कहा--'ओह, रे जीवन...यह संसार!' वह सभी को लक्ष्य करके बोले—'देखा आपने, दो घड़ी पहले कैसी मौज थी, कितनी रौनक, कितनी चहल-पहल; पर एक रेणुका क्या गई, घर भर में उदासी छा गई। मेरी तो जैसे आत्मा चली गई।' और वह कुर्सी पर पीछे को गर्दन डालकर बोले—'लड़की आते भी रुलाती है, जाते भी रुलाती है।'

एक सम्बन्धी बोले—'यह जात ही ऐसी है। जहाँ जाती है, वहीं पर ममता और मोह का साम्राज्य फैला देती है।'

आर्द्र स्वर में बाबू जी बोले—'अब नये घर में जाकर बैठेगी। सभी को अपरि-चित पायेगी। यों, एकाएक तो किसी से अपने मन की बात भी न कह सकेगी।'

रेणुका की मा ने कहा —'भूखी रह-कर भी मुँह न खोल सकेगी, पगली! जब यह यहीं पर शर्माती, थी तो वहाँ क्या किसी से कह-सुन सकेगी।'

बाबू जी बोले— लड़की भाग्यवान् थी। पगली, जब बच्ची थी, तो काँव काँव करती

मेरी छाती पर आ चढ़ती थी। अब भी वह मेरा घर भर में सबसे अधिक ध्यान रखती थी।

मा बोली—'पार साल की बात है, विनय घर नहीं आया, तो रात भर भूखी पड़ी रही। जागती भी रही। आँसू का बहाव तो सदा ही उसकी आँखों पर टिका रहता। रेणुका से कड़ुवा नहीं सुना जाता।'

अजीब स्वाभिमानिनी थी, रेणुका!—

"बाबू जी ने कहा— 'पर देखो, नया घर, नये आदमी हैं, वहाँ क्या कुछ उसे देखना पड़ेगा।'

मा बोली--'लड़का शरीफ है। समझ-दार भी है।'

रिश्ते में एक मौसी लगती थीं रेणुका की। वह बोली--'वहाँ कोई कष्ट नहीं होगा। लखपती घर है। हाथ से सींक उठाने के लिए भी रेणुका से नहीं कहा जायेगा।'

बाबूजी बोले—'मैंने भी औकात से अधिक खर्च किया। मेरी रेणुका सुखी रहे, इसीलिए तो लड़के के बाप का सभी कुछ कहा हुआ पूरा किया। मेरा पैंतीस हजार रुपया खर्च हो गया। एक महीना हो रहा है कि न ठीक से रात को सोया, न चैन पाया।'

भाभी कुर्सी पर बैठी है, रेणुका घर के सारे काम-काज कर रही है।

'चलो अब सोना, अब आराम करना।' मौसी ने आँखों से हँसते हुए कह दिया।

दूसरे दिन सम्बन्धी भी चले गये। विनय एक दिन गया और रेणुका को उसकी ससुराल से लिवा लाया। वह प्रसन्न थी। वह सुन्दर तो थी, पर ससुराल क्या गई, जैसे वहाँ पर और अधिक निखार आ गया। यौवन जो शान्त और समतल दीखता था, अब चंचल बन गया। जैसे वह छेड़ दियो गया। आह्लाद आँखों में आ गया।

मा ने पूछा—अरी, वहाँ ठीक से खाया तो!

रेणुका ने हँसकर कह दिया--खूब खाया, मा!

चल, झूठी! जानती नहीं क्या मैं, तुझसे न खाया गया होगा, न बोला गया होगा।

सुनकर, रेणुका ने जोर से हँस दिया। उसने मा के गले में अपनी बाँहें डाल दीं और आलोड़ित होकर कहा—मेरी मा!

मा ने कहा—'मैं न याद आई हूँगी। न विनय!'

'मा, भैया तो सदा ही मेरी आँखों के सामने रहा। जब गया, देखा, तो जी में जी आया।

'पर अब भूल जाना होगा। अब तुझे उसी घर में मन, काया के साथ मिल जाना होगा, रेणुका!'

रेणुका ने इसका जवाब नहीं दिया। उसने मा को छोड़ दिया।

दूसरे दिन रेणुका के पति की चिट्ठी. आई कि वह दीवाना बन गया है वह खो गया है।

रेणुका ने उत्तर लिख दिया—सोते-जागते, उठते-बैठते, मेरी आखों में, मन और आत्मा में कुछ और नहीं दिखाई देता सिवा तुम्हारे! लगता है, शरीर चला आया है मेरा प्राण-पुञ्ज तुम्हारे चरणों में ही पड़ा रह गया है।

चौथे दिन रेणुका का पति आया और वह पत्नी को विदा कराकर ले गया।

बड़ा घर है, बड़े काम हैं, इसलिए अब रेणुका को अपने पति के साथ ही रहते अच्छा लगता है। पूरा वर्ष नया कदम उठा रहा था कि रेणुका की कोख से सुन्दर, सलोना, सुकुमार पैदा हो गया। नाम रखा गया, रञ्जीत! उस अवसर पर रेणुका की मा ने बहुत-सा उपहार दिया। विनय कभी भी जा पहुँचता। एक तो उसे रेणुका से दूर रहना अधिक पसन्द न था और रेणुका को भी जैसे सप्ताह में दो बार अपने भैया को देख लेना अभीष्ट बन गया था। विनय जब-जब जाता, तो कुछ न कुछ उपहार अवश्य ले जाता। कभी रेणुका के लिए, कभी रञ्जीत के लिए। रेणुका के पति बाबू श्यामबिहारी से भी विनय का अतिशय स्नेह बन गया था। जब विनय का विवाह हुआ, तब उसकी पत्नी को जितने उपहार मिले, उनमें अधिक कीमती उपहार बाबू श्याम-बिहारी का था। रेणुका ने अपनी भाभी के लिए जो साड़ी खरीदी, तो उसके लिए वह कई दिन तक बाजार के चक्कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा चुकी थी। वह साड़ी उसने नया आर्डर देकर बनारस से मँगवाई थी। भैया और भाभी की सुहागरात कैसे बने, कमरा किस प्रकार सजाया जाये, इस काम का समस्त भार रेणुका ने अपने ऊपर लिया था और जब वह विनय की पत्नी को उस कमरे तक ले गई, तो बोली थी—भाभी, शरमाओ नहीं। भैया देवता हैं। खिलौना। तुम तो उनके पास जाकर ही समझ जाओगी और मन में कहोगी कि खिलौना अच्छा है, खेलते बनता है।' और वह भाभी को उस कमरे में भेज, तब ज़ोर से खिल-खिलाकर हँस भी पड़ी।

बाद में, रञ्जीत अपनी भाभी के पास रहने लगा। वहीं उसका मन भी लगने लगा। रेणुका ने सोचा, चलो भाभी को एक और खिलौना चाहिए। उसे अपनी भाभी का मन लगाना अभीष्ट था।

एक बार विनय ने बाबू श्यामबिहारी से कहा—'आप बनावटीपन दिखाते हैं। पैसे से खेलते हैं।'—वह बोला—'कल चार बार फोन किया, पर हर बार कह दिया कि आ नहीं सकता। काम अधिक है।' उसने कहा—'इस स्नेह के व्यापार में सोने-चाँदी का व्यापार नहीं चला करता, श्याम बाबू।'

सुनकर, श्याम बाबू हँस दिये—'जो दण्ड दोगे, वह स्वीकार है।'

मेरे साथ मसूरी चलो। गर्मी अधिक है। दो मास रहेंगे। बँगला ले लिया है। यह रञ्जीत भी दुर्बल हो चला है।'

श्याम बाबू ने बात सुनी और विनय की पत्नी की ओर देखकर हँसते हुए कहा—'हमारी सलज साहिबा का मन भी यहाँ नहीं लग रहा है। गर्मी अधिक है, यह मैंने पहले ही इनके मुँह से सुन लिया है।

विनय ने कहा—'इनके भाई साहब ने ही तार दिया है। उनका परिवार यहाँ पहुँच चुका है।

श्याम बाबू ने मंसूरी चलना स्वीकार कर लिया।

* * *

किन्तु समय बह रहा था। उसका वेग अपनी सीधी दिशा की ओर जाये, यह भी जैसे विधि के विधान की तरह, संगत और सरल नहीं था। विनय पूरा व्यावसायिक बन गया था। उसने अपनी फर्म में कई लाख रुपया उपार्जित किया था। ब्लैक मार्केट का जोर था, तो उस फर्म ने भी आँधी के उन आमों को बटोरने में अतिशय चातुर्य और दक्षता का सबूत दिया। किन्तु समय आया, देश के ऊपर विपत्ति के गहरे बादल छाये, आसमान काला-काला बन गया। व्यक्ति निराश, उद्वेलित और उन्मन! विद्वेष फैला। जातियाँ लड़ीं। खून, मारकाट का शोर ही चारों ओर फैल गया। नगर उजड़े, गाँव बिखरे; लाखों व्यक्तियों का समुदाय यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ पहुँच गया। विनय चतुर था, वह अपना कारबार समेट कर दिल्ली आ गया। किन्तु बाबू श्यामबिहारी तब आये, जब कि उनका सभी कुछ चला गया था। उनके पिता भी मारे गये। किसी घातक ने मा के कलेजे में भी छुरा भोंक दिया। रुपया, जायदाद सभी से हाथ धोना पड़ा। विनय के माता-पिता का उस शोकप्रद घड़ी के आने स पूर्व ही देहावसान हो चुका था।

जान बचाकर, भटकते हुए श्यामबिहारी अपने दो बच्चों और रेणुका को साथ ले दिल्ली आये और कहीं अन्यत्र स्थान न पा, विनय के पास आ ठहरे। उनके पास भोजन का भी आधार नहीं था। जब वहाँ पहुँचे, तो रेणुका ने भाभी के गले लग रोते हुए कहा 'भाभी, मेरा तो सभी-कुछ चला गया।'

भाभी ने सान्त्वना दी और साँस भर-कर कहा—बीबी जी, तुम्हारे प्राण बच गये, बच्चे बच गये, चलो यही तुम्हें सब कुछ मिल गया।

विनय ने कहा —'हवा आई और लाखों को बहाकर ले गई। पुश्तैनी कमाई गई, प्राण गये।'

महीने से ऊपर हो गया था। काम चल रहा था! मकान बड़ा तो नहीं था, परन्तु दो परिवारों का गुजारा हो सकता था। विनय ने अपना काम चालू कर दिया था। उसके पास पैसा था, परन्तु जिससे मिलता वह अपने को भूखा, और धनहीन कहता। यही उसने श्यामबिहारी से कहा था। किन्तु श्यमबिहारी क्या करे, अब कौन-से रास्ते का निर्माण करे, वह नहीं सोच पाता था। रात को घर पहुँचता, तो रेणुका पूछती, तो वह नकार में ही जवाब दे देता; और रेणुका सोच रही थी,—कहीं काम मिल जाये तो अच्छा। भैया और भाभी के ऊपर बोझ डालना क्या अच्छा है। पैसा इनके भी पास नहीं। इनका भी खर्चा है। बच्चे हैं। किन्तु भैया और भाभी के खर्चों में कोई अन्तर नहीं, यह जानकर उसे भी अचम्भा होता। कभी उसे यह देखकर भी अचरज होता कि भाभी का मिजाज कुछ गरम बन गया है। बच्चों को डाँटती है, गाली-गलौज देती है। मर जाने और मिट जाने की भी बात कहती है। उसके सिर पर बोझ आ गया है, उसके प्राणों को जकड़ दिया है, ऐसा भी जब मन में आये, कह डालती। बार-बार रेणुका सोचती, क्यों? किस लिए? क्या भाभी मुझे कहती है? मेरे बच्चों को? पर हाय! रेणुका विश्वास नहीं करती। उसे अपने भैया का मिजाज भी चिड़चिड़ा लगने लगा।

घर में दूध आता है, विनय के बच्चों के लिए! पर जब रेणुका आई, तो उसके बच्चों को भी दूध चाहिए। रेणुका ने कहा भी कि इन्हें दूध नहीं चाहिए, परन्तु विनय की पत्नी इतनी नासमझ नहीं थी, वह उसी दूध में से उन्हें भी देने लगी। किन्तु जब देर होने लगी और श्यामबिहारी को कोई काम मिलता नहीं दीख पड़ा, तो वह दूध अपने आप विलीन हो गया। दो चार दिन बहाने किये गये, बच्चा भूखा है, रोटी नहीं खाता है और अन्त में वह दूध विनय के बच्चों के ही पेट में समाने लगा। रेणुका सुबह से शाम तक घर में पिलती है, भाभी को बैठे रहने को कहती है पर फिर भी भाभी के मिजाज में जाने क्या आ गया है कि उसे बैठे भी चैन नहीं मिलता।

परन्तु उस दिन एकाएक ही रेणुका की आँखों का पर्दा हट गया कि जब रात में विनय की पत्नी पति से कह रही थी–'देखती हूँ, तुमसे नहीं कहा जायगा; और तुम्हारी बहन और बहनोई तो सोचें ही क्यों कि मकान में जगह नहीं; महँगाई इतनी; कि अपना बोझ भी हमारे ऊपर डाल दिया है। कम्बख्त बच्चे भी इतना खाते हैं कि बड़े क्या खायेंगे।'

उस समय रेणुका पानी लेने नल पर आई थी। वह दूसरे कमरे में लौट रही थी। रात का सन्नाटा था। शहर सो रहा था। उसने जो कमरे से 'बहन' शब्द सुना, तो वह चौंक गई। बात सुनी, तो काँप गई। रात चाँदनी थी। पर उसकी आँखों में मानो जमाने भर की अँधेरी छा गई थी।

तभी विनय ने कहा—'तो मैं क्या करूँ। कैसे कहूँ। उन्हें सोचना चाहिए! रिश्ता जहाँ था, वहाँ था। यहाँ नहीं चलेगा। यहाँ तो अपनी अपनी समेटते बनेगा। पर अब कहना ही होगा। श्यामबिहारी तो चाहते हैं कि मैं उन्हें रुपया दूँ। यहाँ बैङ्क में चार लाख भेज दिये, तो रह गये, नहीं तो—

'चार लाख!' एकाएक रेणुका के ... फड़फड़ाये। पैर भी डगमगाये। तभी ... सुना—'सभी मतलबी हैं, बहन भी, ... नोई भी—

लेकिन रेणुका में इतनी क्षमता ... थी कि वह खड़ी रहती। अभी भी ... वह भागी। दौड़ी। कमरे में गई। ... बिहारी को जगाकर बोली— ... सँभालो। तुम—तुम—और वह ... बिहारी की छाती पर मुँह रख ... फफककर रो पड़ी।

प्रातः होते ही, जब विनय दूकान जाने लगा, तो अपना सामान ... रेणुका आगे बढ़ी और विनय के ... झुककर बोली—'मैं जाती हूँ, तुम्हें ... कष्ट दिया भैया!' और वह बच्चे ... साथ श्यामबिहारी के पीछे पीछे मका... निकल सड़क पर हो गई।

विनय खड़ा देख रहा था, शांत, बना हुआ।

मुफ्त सुन्दर रिस्टवा...

हमारे प्रसिद्ध काला तेल रजिस्टर्ड के ...

करने से बाल हमेशा के लिए ... हो जाते हैं और फिर ... काले पैदा होते हैं। यह तेल ... हुए बालों को रोकता है और ... बेस्ल, घूंघर वाले और ... बनाता है। जहां बाल न ... वहां फिर से पैदा होने लगते ... आंखों की रोशनी तेज करता ... सिरको ठण्डक पहुंचाता है। ... सुगन्धित है। कीमत एक शीशी २॥) तीन ... पूरा कोरस की रियायती कीमत ६॥) इस ... प्रसिद्ध करने के लिए हर शीशी के साथ एक ... म्यूट रिस्टवाच जो कि अति सुन्दर है ... अंगूठी सोना (लन्दन न्यु गोल्ड) बिलकुल ... भेजी जाती हैं।

जरूरी नोट:—माल पसन्द न होने पर ... शीघ्र वापस करदी जाती है। तीन शीशी ... खरीदार को डाक खर्च बिलकुल माफ ... अंगूठी लन्दन न्यु गोल्ड, और चार घड़ियां ... मुफ्त इनाम दी जाती हैं। जलदी करें क्यों ... समय बार-बार हाथ न आयेगा। ... आर्डर देते समय अपना नाम और पता साफ ...

लन्डन कमर्शियल कम्पनी

(D.D.A.) पी० बी० २ अमृ...

T. B. टी. बी. "तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम ...
मामूली ज्वर, खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत ... भयंकर जर्मों ... इधर-उधर फै...
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

अनेक प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट ... से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषि ... के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि ... आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० ... का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये ... होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और ... द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (Jabri Jagadhri) काफी है। तार में अपना पूरा पता ... मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में ... पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां ... पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या २ तथा पत्र का ह... जरूर दें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैङ्कर्स (D) 'जगाधरी' (पूर्व पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री रेहाना का संदेश

आँधी तूफान का सामना करते हुए आगे बढ़े चलिये

लेखक, श्री उमेश जोशी

छाया-चित्र की विख्यात अभिनेत्री रिहाना के संदेश को आपके सामने प्रस्तुत करने से पूर्व यदि इसके व्यक्तित्व का मनोहर नक्शा खींच दिया जाये तो कोई अनुचित न होगा। फिल्मी दुनिया के आसमान पर आज रिहाना सूरज और चाँद बनकर छा रही है। चारों तरफ उसकी खुशनुमा रोशनी फैल रही है। हर एक के लब पर उसी के गीत हैं। आज जिसको भी देखिए वही रिहाना के जाज्वल्यमान व्यक्तित्व से प्रभावित है। वास्तव में उसके व्यक्तित्व में एक ऐसी चारुता है, एक ऐसी विकलता है, एक ऐसा आकर्षण है जो कि मानव-हृदय को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। ठीक उसी प्रकार जिस तरह चाँद चाँदनी को खींच लेता है। आजफिल्मी संसार में रिहाना के नाम की धूम मची हुई है। प्रत्येक निर्माता उसको अपने चित्र में लेने के लिए लालायित है। उसके अभिनय में महासागर की अथाह गहराई है, हिमालय पर्वत की ऊँचाई भी उसके अभिनय की पृष्ठभूमि पर निहित है। तथा भावों की उत्कृष्टता का सम्बल भी आपके अभिनय में पाया जाता है और पाया जाता है आत्मा को प्रशस्त करनेवाले निरूपम उपकरणों का नैवेद्य। यदि आप रिहाना के अभिनय का विश्लेषण करें तो आपको मालूम होगा कि उसके प्रत्येक पर्त में सरसता, मधुरता, सुन्दरता, स्निग्धता एवं सजगता कूट कूटकर भरी है। इसीलिए उसके अभिनय की लोल-लहरों पर दर्शक मस्त होकर झूमने लगते हैं।

रिहाना में सबसे अच्छी बात यह है कि वह बड़ी सहृदय है। सबके साथ मिलकर चलना उसकी आदत में शामिल है। कभी किसी से बिगड़ना तो उसको आता ही नहीं। उसके इस सरल स्वभाव से आज फिल्मी संसार का प्रत्येक मानव प्रभावित है। उसके प्रत्येक चित्र की भूमिका में होती है जिन्दादिली की शबनम, नफासत का माधुर्य, नजाकत की बारीकियों का झुरमुट, लचक-मचक के दिल लुभावनेवाले चढ़ाव-उतार, रपटते हुये अरमानों को सहारा देनेवाले सुदृढ़ पतवार तथा बुझती हुई रोशनी को बढ़ा देनेवाली अदम्य शक्ति।

रिहाना आज जिस ख्याति की चोटी पर खड़ी हुई है उस तक पहुँचने के लिए उसको बहुत संघर्ष करने पड़े। बड़ी बड़ी आँधियों, तूफानों का मुकाबला उसको करना पड़ा। उसने अपना रास्ता ऊबड़-खाबड़, बीहड़, टेढ़ी-मेढ़ी घाटियों में से होकर बनाया है। वह कभी ऊँची-नीची घाटियों की बीहड़ता को देखकर डरी नहीं और न उसने कभी हिम्मत पस्ती की, बल्कि बड़े साहस के साथ उमंगों की लहरों पर बैठती हुई आगे बढ़ती चली गई। उसने कभी अपने पैर लड़खड़ाये नहीं, डगमगाये नहीं। मायूसी, निराशा, रंजोगम के घने कुहरे को फाड़ते हुए रिहाना ने अपनी नई दुनिया का निर्माण किया—ऐसी दुनिया का कि जिसके अन्दर कला और सौंदर्य का पवित्रतम् रूप बनाया गया है कि जिसके अन्दर पाशविक भावों की होली जला दी गई है। उसने अपनी दृढ़ता की चट्टान से रुकावटों, कठिनाइयों की उच्चतम पीड़ा को मकड़ी के जाले की तरह चूर चूर कर दिया। आज उसकी दृष्टि के सामने वह आसमान है जिसके ऊपर रुकावटों का एक भी बादल नहीं, कि जिसके ऊपर गम का फिसाना का एक भी तारा नहीं चमक रहा—हाँ उस आसमान पर छिटक रहे हैं मानव-हृदय को विकसित करनेवाले ख्वाबों के तारागण। उन ख्वाबों के वातायन से झाँक रही है आशा की नव ज्योति जोकि इन्सान को शक्ति देती है, बल देती है। उसी ज्योति के सहारे आज रिहाना अपनी दुनिया में नये नये रंग के मनोहर नक्शे अंकित कर रही है।

देखिए रिहाना के सम्बन्ध में लन्दन का "मोर्डनस्टार" क्या कहता है—"भारतीय अभिनेत्री रिहाना में वह चार्म है कि जिससे वह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री बन सकती है। उसके परिष्कृत अभिनय में एक ऐसा आकर्षण पाया जाता है जो कि मानव की शक्तियों का प्रसार एवं फैलाव जिन्दगी की पेचीदी गलियों से निकालकर स्वच्छ एवं रम्य धरातल पर होता है। रिहाना का चेहरा बड़ा कलात्मक है। उसका अभिनय लौरेटा यंग से मिलता है। भावों के आवर्त पर जब उसका अभिनय पहुँचता है तब अभिनय के मोड़ों एवं घुमावों में एक स्वर्गिक एवं स्वप्निल मनोहरता की दीप्त आभा छिटकती है जो कि प्रेक्षकों पर जादू सा प्रभाव डालती है। प्रेक्षक बेसुध होकर अपनी पीड़ा को कब्र के दामन में सुलाकर अपनी अरमानों की नगरी में उल्लास के शुभ्र प्रसूनों को प्रस्फुटित करता है जिसकी पराग से उसका रोम रोम सुवासित हो जाता है। भारतीय अभिनेत्रियों में रिहाना का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली है।"

* * *

रिहाना का सन्देश

आज मुझे रंगभूमि के पाठकों से चन्द बातें कहनी हैं, वह इसलिये कि ताकि उनके दृष्टिकोण के क्षितिज के इद-गिर्द जो गलतफहमियों का घना कुहरा फैला हुआ है, उसको आप लोग विनष्ट करिये, नहीं तो आप कला और साहित्य को अपने जीवन की गहराई में न उतार सकेंगे। श्री उमेश जोशी जी के द्वारा मैं अपनी चन्द बातें आप तक पहुँचा रही

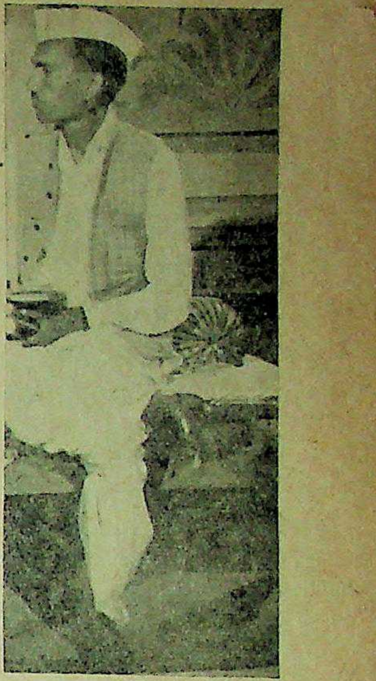

इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी

हूँ। उन्होंने ही मुझे चन्द बातें आप लोगों से करने के लिये प्रभावित किया है। वैसे तो मैं "देशदूत" से भी अपरिचित नहीं हूँ, जोशी जी ने कई प्रतियाँ मुझे दी हैं। मैं "देशदूत" को पसन्द करती हूँ, उसको चाहती हूँ। वास्तव में देशदूत ने अपना एक क्षेत्र सिनेमा-जगत् तथा साहित्य-जगत् में बना लिया है। देशदूत मुझे हिन्दी के सभी साप्ताहिकों से सर्वश्रेष्ठ लगता है। उसकी सामग्री में एक ऐसी शक्ति रहती है जो कि मानव को स्फूर्ति देती रहती है। हाँ, तो मैं कह रही थी कि जो कुहरा आप लोगों की दृष्टि के घेरे में आ गया है उसको दफन कीजिये। किसी भी चीज को दूर से देखकर अपना गलत दृष्टिकोण न बनाइये, बल्कि वस्तु-स्थिति को समझने की कोशिश कीजिये। आप लोग वस्तुस्थिति से दूर भागते हैं, इतनी दूर भागते हैं कि आप लोग गलतफहमियों के विशाल खण्डहर में पड़ जाते हैं। फिर आप प्रत्येक चीज को अनैतिकता, असंयमता की दृष्टि से देखने लग जाते हैं, देखते ही नहीं बल्कि, आप लोग स्वयं भी अपने जीवन के इर्द-गिर्द असंयमता, उच्छृंखलता की दुनिया बसा लेते हैं और उस दुनिया से आगे आप कुछ सोच ही नहीं सकते,। आपकी दृष्टि फिर उस संकीर्ण दुनिया से बाहर नहीं जा पाती। फिर आप लोग हम लोगों को एक अजीब दुनिया का प्राणी समझने लग जाते हैं। हमारे और आप लोगों के बीच का जो मधुर सम्बन्ध होता है वह फिर टूट जाता है।

देखिये अमेरिका में हालीवुड के कलाकारों का उतना ही समाज में सम्मान एवं आदर है जितना कि किसी भी समाज के उच्चकोटि के व्यक्ति का होता है—वहाँ कलाकार को बहुत ऊँची दृष्टि से देखते हैं, बल्कि वे लोग कलाकार को भगवान् के समान ही आदर-सत्कार करते हैं। समय समय पर वे कलाकारों को निमंत्रित करते हैं। उनसे कला और साहित्य के सम्बन्ध में उत्कृष्ट बातें सुनते

सुप्रसिद्ध-फिल्म निर्माता तथा निर्देशक संतोषी, प्रसिद्ध फिल्मस्टार रेहाना तथा निर्देशक एम० हवावाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। उनके जीवन की रहस्यभरी बातों के जानने के लिये वे हमेशा उत्सुक रहते हैं, लेकिन मैं अपने भारतीय समाज में इसका उल्टा देखती हूँ। जो कलाकार आप लोगों का मनोरंजन करते हैं, जो कलाकार आप लोगों की दृष्टि के विशाल स्तर पर कला और सौन्दर्य की दिव्य दुनिया का निर्माण करते हैं, जो कलाकार आपकी वृत्तियों की मायूसी, उदासीनता को निकालकर बहुत नीचे दफन कर देते हैं, उन्हीं कलाकारों को आप लोग हेय दृष्टि से देखते हैं। क्या यह ठीक है। क्या आप लोगों का फर्ज हम लोगों के प्रति यही है?

देखिये, आप अपने दृष्टिकोण पर जो गर्द गुबार है उसको झाड़िये, उसको झकझोरिये ताकि आपका दृष्टिकोण स्वच्छ एवं निर्मल हो जाये। आप प्रत्येक चीज को सुन्दर एवं स्वाभाविक रूप में देख सकें जब तक आप अपनी दृष्टि को उज्ज्वल नहीं बनायेंगे तब तक आप "कला" के वास्तविक स्वरूप को भी नहीं समझ सकेंगे। कला स्वयं दृष्टि को परिष्कृत करती है। आप कला को अपने जीवन में उतारिये ताकि आपकी बिखरी हुई दृष्टि एवं बिखरा हुआ जीवन कलात्मक बन सके। जब आप लोगों का जीवन कलात्मक बन जायेगा, तब आप पशुता की दुनिया से भी ऊपर उठ सकेंगे। अभी तो आप लोग पशुता की दुनिया में ही घूम रहे हैं। हम लोग आपके सामने समाज की बुराइयाँ, खामियाँ रखते हैं इसलिए ताकि आप अपनी बुराइयों से, अपनी कमजोरियों से परिचित होकर उनसे दूर भागने की कोशिश करें, लेकिन आप लोग इसका उल्टा करते हैं। आप उन बुराइयों को देखकर उन्हीं से चिपट जाने की कोशिश करते हैं, यह कहाँ की अक्लमन्दी।

देखिये, अब जमाना बदल गया है और इस बदले हुए जमाने की हर चीज बदल रही है फिर आप लोग क्यों दकियानूसी ख्यालातों को पकड़े हुए हैं, क्यों आप अपनी पुरानी दुनिया से चिपके हुए हैं। आप लोगों को साहस के साथ नई दुनिया में आना चाहिए, जिसके कि जमीन आसमान के नीचे कला और सौंदर्य का खुशनुमा नज्जारा है, जहाँ आपको बनावट की दुनिया नहीं मिलेगी। डगमगाती भावनाओं को बहुत गहरा गाड़ दीजिये तभी आप लोग विकास की मंजिल तक पहुँच सकेंगे। अब आप लोग आगे बढ़िये, उस दुनिया से जिसकी कि नींव लड़खड़ाती भावनाओं की ईंटों से बनाई गई है, उस दुनिया से जहाँ कि लाचारियों, मजबूरियों, विवशताओं की संकीर्ण परिधि में इन्सान का गला घोंटा जाता है, उस दुनिया से जहाँ कि दौलत की सुनहली ईंटों से मानवता को दबोचा जाता है, उस दुनिया से जिसमें कि मजलूमों को कुत्ते-बिल्ली की तरह बरता जाता है, उस दुनिया से जिसमें कि गरीबों की एक एक उठती हुई आकांक्षा को पद-लोलुपता की प्रतिस्पर्धा की ज्वाला में जला दिया जाता है। उस दुनिया। जिसमें कि चीत्कार, हाहाकार का ताण्डव नृत्य होता रहता है। उस दुनिया से जिसने कि हमारे राष्ट्रपिता पूज्य बापू की हत्या कर डाली। तुमको आगे बढ़ना है उस दकियानूसी, रूढ़िवादी, तङ्गदिली दुनिया से। तुम्हें ऐसे जमीन-आसमान के नीचे अपनी दुनिया बसानी है, जिसमें कि मानव के विराट स्वरूप का दिव्य आलोक हो, जिसमें कि ऐसा प्रकाश हो कि जिससे दानवता का घना अन्धकार विनष्ट हो सके। उस नई दुनिया में सुख-शांति, समृद्धि और ऐश्वर्य के मनोहर प्रसून प्रस्फुटित हो रहे हों जिसकी रम्य सुगन्ध से विषमताओं की गन्दगी दूर हो सके। तुम्हें उस दुनिया का निर्माण करना है जिसमें कि नारियों की अस्मत दौलत से कहीं अधिक बेशकीमती समझी जाती है। जिसमें कि नारीत्व के साथ खिलवाड़ नहीं किया जाती, जिसमें कि नारी पैर की जूती नहीं समझी जाती हो, कि वासना के धुँधले प्रकाश में इन्सानियत, नैतिकता, सच्चरित्रता एवं उज्ज्वलता का मजार न बनाया जाता हो।

बढ़े चलिये संघर्षों की चट्टानों को तोड़ते हुए, रुकावटों के नुकीले काँटों को कुचलते हुए। बढ़े चलिए, क्योंकि बढ़ना ही जीवन है, रुकना ही मृत्यु है। आँधी तूफानों को पार करते हुए चले चलिये घबड़ाइये नहीं, हिम्मत न हारिये, धैर्य की पतवार को न छोड़िए—बस चलते रहिये—यही आपके जीवन का आदर्श हो। यही मेरा नये साल का नया सन्देश आप लोगों के लिए है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरी इन चन्द बातों पर अवश्य ध्यान देंगे। अच्छा अब विदा—लेकिन जाने से पूर्व मैं एक बार पुनः यह कह देना चाहता हूँ कि देशदूत के पाठक कभी तङ्ग व सिकुड़े हुए दृष्टि-कोण की दुनिया में प्रवेश न करें। मुझे पूर्ण आशा कि देशदूत के पाठकों का पूर्ण स्नेह, पूर्ण सहयोग मुझे हमेशा मिलता रहेगा।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

५००) नक़द इनाम

तावीज मुहब्बत

इस तावीज मुहब्बत को पास रखने से आधा घण्टे के अन्दर आप जिससे मुहब्बत करना चाहें, कैसा ही सङ्ग दिल क्यों न हो बेकरार हो जायगा और आपके क़दमों में आ गिरेगा। हर मुसीबत से निजात, हस्व मन्शा शादी करें। हर काम गारण्टी से किया जाता है। ज्यादा तारीफ़ फजूल है। कीमत फी तावीज २) तीन तावीज ५) महसूल ६ आने।

श्री शङ्कर भण्डार
खारी, बावली देहली।

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

ंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

साहित्य-चर्चा

शार्ट स्टोरीज आफ प्रेमचन्द—अनुवादक श्री गुरुदयाल मलिक, प्रकाशक नालन्दा प्रकाशन गृह, बम्बई; मूल्य ४॥=), पृष्ठ-संख्या १६६।

हिन्दी-संसार के लिए प्रेमचन्द (श्री धनपतिराय श्रीवास्तव) के उपन्यास, उनकी कहानियाँ तथा अन्य साहित्यिक कृतियाँ उसी प्रकार एक अभिमान की वस्तु हैं जिस प्रकार अँगरेजी साहित्य के लिए शेक्सपियर की कविताएँ, एच० जी० वेल्स की कहानियाँ, रूसी साहित्य के लिए चेखव के उपन्यास और फ्रेंच साहित्य के लिए अलेक्जेण्डर ड्यूमा की कृतियाँ। शेक्सपियर, वेल्स, चेखव और ड्यूमा का साहित्य आज किसी देश या राष्ट्र-विशेष की सम्पत्ति नहीं है, उस पर समस्त विश्व का समान अधिकार है। यह साहित्य मानवता की सम्पत्ति है। इसी प्रकार प्रेमचन्द जी का भी साहित्य अन्तर्राष्ट्रीय जगत् की सम्पत्ति है। वह भाषा, प्रदेश और क्षेत्रों की सीमा में बाँधकर नहीं रखा जा सकता। प्रस्तुत अनुवाद हमारे इस मत का ज्वलन्त प्रमाण है। श्री गुरुदयाल मलिक ने इस संग्रह में भी प्रेमचन्द की ११ कहानियाँ दी हैं। अनुवाद अत्यन्त मनोहर ओजपूर्ण और प्रतिभासम्पन्न रीति से हुआ है। अनुवादों में वही स्वाभाविकता है जो श्री प्रेमचन्द की मौलिक कृतियों में है।

* * *

सोवियत एटीट्यूड टुवर्ड्स चाईना (अँगरेजी)—लेखक स्टेनली पावेल, प्रकाशक, नालन्द प्रकाशन बम्बई; मूल्य ३) रुपया, पृष्ठ-संख्या ९९।

आज चीन के भाग्य का फैसला हो चुका है। विजयी कम्यूनिस्ट फौजें नानकिंग तथा पीपिंग जैसे नगरों पर भी अधिकार कर चुकी हैं अथवा करनेवाली हैं। वह दिन दूर नहीं है जब कि समस्त दक्षिणी चीन में भी कम्यूनिस्ट फैल जायँगे और चीन का वास्तविक शासन उन्हीं के हाथ में आ जायगा। इस संग्राम में रूस की सोवियत चीन के प्रति क्या नीति रही है, विद्वान् लेखक ने अपनी इस पुस्तक में इसी बात पर प्रकाश डाला है। यह पुस्तक रूस-विरोधी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक दृष्टिकोण का अध्ययन ईमानदार निर्णय करने के लिए आवश्यक होता है। इस दृष्टि से इस पुस्तक का पढ़ना अत्यावश्यक है। विशेष कर हम भारतीयों के लिए जिनका चीन से इतना घनिष्ट संबंध रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

* * *

'फ्रीडम कम' (अँगरेजी कविता)—श्री हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, प्रकाशक नालन्दा प्रकाशन गृह, मूल्य ।॥)

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत को सत्ता हस्तान्तरित की गई थी उस समय यह कविता पुस्तक प्रकाशित हुई थी। यद्यपि समय के अनुसार पुस्तक का महत्त्व तो चला गया है किन्तु यदि यह सत्य है कि "साहित्य सदैव मनोरंजक और नवीन रहता है" तो इस दो बरस पहले की कविता में भी आप वही बात पायेंगे। इसमें तो सन्देह नहीं कि श्रीमती सरोजिनी नायडू के अनुज होने के का[रण] श्री चट्टोपाध्याय ने भी वही कवि[त्व] शक्ति पाई है जो श्रीमती नायडू में है।

* * *

वेस्ट आफ स्वेज—श्री एस० न[ट]राजन् प्रकाशक, नालन्दा प्रकाशन [गृह] बम्बई, मूल्य ४॥) रुपया, पृष्ठ-संख्या ३०[...]

श्री नटराजन् अँगरेजी के एक [...] सुयोग्य पत्रकार और सम्पादक हैं। [...] कुछ बरस पूर्व यूरोप भ्रमण करने गये [...] इस पुस्तक में उसी भ्रमण का [...] मनोरंजक वृत्तान्त उन्होंने अँगरेजी [...] लिखा है। अँगरेजी भाषा में ऐसी पुस्त[कों] का अभाव नहीं है, किन्तु हिन्दी में [...] इस प्रकार की पुस्तकें मिलती ही नहीं। चूँकि नालन्दा प्रकाशन हिन्दी में भी प्रका[...]शन करता है इसलिए यदि वह चाहे [...] अत्यन्त सुविधापूर्वक हिन्दी के [...] अभाव को पूर्णतः नहीं तो अंशतः दूर क[रने] में तो अवश्य ही सहायक सिद्ध हो सक[ता] है। पुस्तक शुरू से आखीर तक [...] रोचक है।

—दीनबन्धु पाठ[क]

* * *

झुरमुट (कहानी-संग्रह)—लेख[क] श्री जयनाथ 'नलिन', प्रकाशक नाल[न्दा] प्रकाशन गृह, बम्बई; मूल्य ४) पृ[ष्ठ-]संख्या १७२।

श्री 'नलिन' की ११ कहानि[यों] का यह संग्रह है। इनमें से कुछ क[हा]नियाँ नई हैं और कुछ उत्तर भ[ारत] की कहानी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रका[शित] हो चुकी हैं। प्रारंभ की दो तीन कहानि[यों] को छोड़कर जिनमें अश्लीलता सीमा [...] बाहर जाती प्रतीत होती है, शेष कहानि[याँ] मनोरंजक और अच्छी पाठ्य सामग्री [...] हैं। विशेषतः "प्रकाश-पथ" और "[...] तट पर" शीर्षक कहानियों का आ[...] यथार्थवादी भी है और इस कारण [...] आकर्षण से भी परिपूर्ण है।

दो फूल (कहानी-संग्रह)—लेखि[का] श्रीमती सत्यवती देवी मलिक, प्रका[शक] नालन्दा प्रकाशन गृह, बम्बई। मूल्य [...] पृष्ठ-संख्या १२६।

'दो फूल' श्रीमती सत्यवती देवी म[लिक] की कहानियों तथा शब्द-चित्रों का [...] प्रथम संग्रह है। प्रत्येक कथा नारी[...] माधुर्य और रस से ओतप्रोत है। [...] स्थलों पर माँ के हृदय की कमनी[यता] और स्नेह अद्भुत रीति से छलकता प्र[तीत] होता है। कहानियाँ पढ़कर श्रीमती [सत्य]वती देवी की कलात्मक सुरुचि सम्प[न्नता] का पता चलता है। ऐसा लगता है [...] इस नवीन लेखिका में योग्य कला[कार] बनने की पर्याप्त अन्तर्शक्ति निहित [है।] यह कथन सत्य है कि "नारी माता [...] साहित्य सर्जिका श्रीमती मलिक की [...] कथाएँ गृहणी के उत्तरदायित्व माता [...] ममता और संवेदनशील आत्मा [...] कसक के फल हैं।" कहानी-संग्रह [...]णीय है।

—अरविन्द

जीवन में नई उमङ्ग लाने के [...] खोई जवानी पाना चाहें तो

"श्री प्रेम रहस्य" मुफ्त

मँगावें। पता—पी० बी० ३७२, [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तीय मछली-बिल—४

क्या मछुओं के अधिकार का अपहरण होगा ?

[४]

लेखक, श्री रामनाथ निषाद

जब म्युनिसिपैलिटियाँ मछली की बिक्री पर टैक्स लेती हैं तो मछली मारने पर टैक्स लगाना बिलकुल अनियमित है। क्योंकि किसी पर दोहरा टैक्स लगाना कानून की मर्यादा को भंग करना है।

इस विधान में खूबी तो यह है कि मछली मारनेवाला अपने नौकर या सहायता देनेवाले का भी लाइसेन्स ले, नहीं तो अपराधी समझा जायेगा। बड़े बड़े कलकारखाने हैं, बड़ी बड़ी दूकानें हैं, उनमें हजारों नौकर हैं, परन्तु उन नौकरों पर किसी प्रकार का लाइसेन्स नहीं है।

धारा नं० ३ की उपधारा नं० ३ के वाक्यखंड (ज) और (ञ) में ऐसी बातें हैं जिनसे मछुवों का व्यवसाय उनके हाथ से निकल जायगा और किसी व्यक्ति विशेष के हाथ में चला जायगा। उसमें लिखा है कि "किसी क्षेत्र या क्षेत्रों के बाहर मछलियों के निर्यात और उस मूल्य की व्यवस्था करना जिस पर सब या विशेष प्रकार की मछलियाँ निर्दिष्ट मण्डियों में खरीदी या बेची जा सकती हैं।" "मछली व्यवसाय की उन्नति और मछुवों के उत्थान के लिए संघ या समिति स्थापित करने और इसके लिए चन्दा एकत्रित करने के सम्बन्ध में नियम बनाना।"

इसमें तो और भ्रष्टाचार बढ़ेगा। जो अफसरों की जेब गर्म करेगा उसी को मछलियों के निर्यात की आज्ञा मिलेगी। जैसा कहा जाता है कि कन्ट्रोल के समय में मछली विभाग के आफसरान मछलियों के निर्यात में मालामाल हो गये। इस तरह का व्यवसाय करनेवाले भारी भारी ठीकेदार हैं। कन्ट्रोल के समय से वे इतने बढ़ गये हैं कि कितने मछुवे अब भी उनके ऋणी बने हुए हैं और सदा उनकी हाँ में हाँ मिलाने को तैयार रहते हैं।

हमारी प्रान्तीय सरकार मछुवों पर बड़ी दयालु है। उनकी दशा देखकर वह उनका उत्थान करना चाहती है। तभी तो उनसे चंदा लेकर सरकारी संघ और समिति स्थापित करने की बात कही है। इसमें भी अफसरों के रिश्तेदारों का पौ बारह है। क्योंकि ये ही इसके सर्वेसर्वा होंगे और मछुवे अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट काट-काटकर चन्दा देते रहेंगे। वास्तव में विधान सरकारी समिति का न होना चाहिए किन्तु मछुवों का संघ होना चाहिए और उसी को मछलियों के निर्यात का पूर्ण अधिकार होना चाहिए ताकि उनको ही अपने सारे परिश्रम का फल मिल सके।

बिल में एक जगह मूल्य की व्यवस्था आई है। वास्तव में मूल्य उसका निर्धारित किया जाता है जिसकी आमदरफ्त एक सी रहे, सड़े-गले नहीं। मछलियाँ तो बाजार में कभी कम आती हैं और कभी ज़्यादा। ऐसी दशा में मछलियों के मूल्य निश्चित करने से कोई लाभ नहीं। मूल्य तो अन्न पर निर्धारित करना चाहिए जो दिन पर दिन महँगा होता चला जा रहा है, जिसे खाकर लोग जीवित रह रहे हैं। मछलियाँ सबका खाद्य पदार्थ नहीं हैं जो उसका मूल्य निर्धारित किया जाय।

धारा नं० ४ की उपधारा नं० (क) (ख) (ग) से तो उनका माल ही जब्त कर लिया जाता है। उसमें लिखा है कि "किसी ऐसे उपकरण को छीन लेना, हटा देना और जब्त कर लेना, जो नियमों के विरुद्ध मछली पकड़ने के लिए उपयोग में लाया गया हो और उसके द्वारा पकड़ी हुई मछली को भी जब्त कर लेना मछलियों की किसी ऐसी पेटी को जब्त कर लेना जो नियमों का उल्लंघन करके कहीं भेजी जा रही हो।"

इसके अनुसार संयोगवश कहीं पुराने जाल उपयोग में लाये गये तो वे जब्त कर लिये जायेंगे और साथ ही धारा नं० ५ के दण्ड-विधान के अनुसार उसको दो मास का कारावास या दो सौ रुपये तक का दण्ड या दोनों ही दण्ड और बाद को प्रत्येक बार दण्डनीय घोषित होने पर बारह मास का कारावास या पाँच सौ रुपया अर्थदण्ड या दोनों ही दण्ड दिया जा सकता है।"

यह तो मछुवों का व्यवसाय छीनने का बहुत उत्तम ढंग है। बेचारे मछुवा मछली मारने और खाने के आदी हैं। बिना इसके रह नहीं सकते। उनसे बार बार अपराध होगा और वे दण्डित होंगे। सीधे नहीं तो दण्ड भोगते-भोगते वे इस व्यवसाय को छोड़ने पर विवश हो जायँगे। इसके बाद मछलियों का विकास खूब हो जायगा, क्योंकि जब कोई मछलियाँ ही न मारेगा तो आखिर उनका विकास आप से आप ही हो जयेगा। हाँ, खानेवाले मछलियों के लिए तरस जायँगे। क्योंकि बाजार में मछलियों का अभाव हो जायगा।

धारा नं० ४ में मछली बेचनेवालों पर कृपा की गई है। उसमें लिखा है कि, "निर्दिष्ट क्षेत्रों में नियम-विरुद्ध मछली की बिक्री या अदलाबदली न की जाय। अन्यथा उसको भी उपरोक्त सजाएँ मिलेंगी।"

अब इससे यह लाभ हुआ कि चोरी से मछलियाँ नहीं मारी जा सकतीं। अब तो कोई भला आदमी नियम-विरुद्ध मछली खाने को भी लिये जाता होगा तो वह भी अपराधी समझा जायगा। मछली-विधान सबके पढ़ने की चीज है। इस विधान से छोटी मछलियों की जान बच गई अब वे इतनी ज्यादा बढ़ेंगी कि स्नान करते समय कपड़ों में लिपट आयेंगी और बाहर आने पर जब वे मर जायँगी और संयोगवश किसी अफसर ने देख लिया तो उसकी बन आयेगी।

धारा नं० ६ की उपधारा नं० १ से सरकारी अफसर किसी भी मछुवे को परेशान करने के लिए किसी समय भी गिरफ्तार कर सकते हैं। उसमें लिखा है कि, "कोई मछली पदाधिकारी या पुलिस हेड कांस्टेबिल किसी व्यक्ति को जो उसके विचार में मछली पकड़ने का कोई अपराध कर रहा हो या करने की चेष्टा कर रहा हो बिला वारण्ट के गिरफ्तार कर सकता है।"

इस कानून से भ्रष्टाचार की वृद्धि हो जायगी और मछुवों को पग पग पर कठिनाई झेलनी पड़ेगी अब तो वे उनके बे-पैसे के गुलाम बन जायँगे। किस ने भी पुलिस से जरा सा भी कानून बघारा तहाँ उसने चट उसको गिरफ्तार कर लिया क्योंकि वह उसको साबित कर देगा कि उसके विचार से वह मछली पकड़ने की चेष्टा कर रहा था। किसी भी देश में ऐसा विधान देखने में नहीं आ रहा है।

इसी प्रकार धारा नं० ६ में जितनी उपधाराएँ हैं सभी मछुवों को परेशान और गुलाम बनानेवाली हैं। उसमें पुलिस उनको हिरासत में ले सकती है, तलाशी ले सकती है और उनको कष्ट पहुँचा सकती है।

धारा नं० ८ की सारी उपधाराएँ और वाक्य-खण्ड मछुवों को निर्धन, निस्सहाय और बे घर-बार के बनानेवाले हैं। उसमें लिखा है कि "जिसने मछली पकड़ने का कोई अपराध किया है, उसकी किसी ऐसी सम्पत्ति को जो जब्ती के योग्य होने के कारण जब्त कर ली गई हो वह दण्डानुसार मुआवजा देने बाद मुक्त की जा सकती है।"

विचारने की बात है कि जितने कानून हैं उनकी अक्षरशः पाबन्दी करना मछुवों के लिए असम्भव सी बात है। कानून तोड़ने पर मुआवजा देते देते उनके जाल, घर-द्वार सभी बिक जायेंगे और फिर वे भिखारी बन जायँगे और मुआवजा लेकर समझौता करनेवाले अधिकारियों की जेब गरम होती रहेगी।

खेद की बात है कि आज जनता की सरकार हो जाने पर मछुवों का परम्परा प्राप्त अधिकार उनसे छीना जा रहा है। हालाँ कि सन् १९३१ ई० में जब प्रयाग की निषाद सभा ने आनन्दभवन में पूज्य पं० जवाहरलाल नेहरू के सम्मुख महात्मा गांधी को मानपत्र दिया था जिसमें नौका-व्यवसाय के नष्ट होने का जिक्र किया गया था उस पर महात्मा जी के ये ही शब्द हैं कि, "भाई, अभी हमारा देश गुलाम है, आजाद होने पर आपके व्यवसायों की आजादी व तरक्की पर ध्यान दिया जायगा।" खेद की बात है कि देश स्वतन्त्र होने पर महात्मा जी की इच्छा के विपरीत व्यवहार हो रहा है।

पहले इनके नौका-व्यवसाय पर भी किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं था, परन्तु नदर्न इण्डिया फेरीज ऐक्ट ने इस व्यवसाय को ऐसा चौपट किया कि इसका नामोनिशान मिट गया। इसी तरह से यह भी ऐक्ट शुरू शुरू में नाववालों की तरक्की के लिए बनाया गया था, परन्तु अब जितने पार उतरने के घाट हैं सब दूसरी दूसरी जाति के धनाढ्यों के हाथ में हैं। उनके यहाँ नाव चलानेवाले नौकर की तरह हैं। तारीफ तो यह है कि न उनकी नाव होती है और न अपने पास से उनको नौकरी देते हैं, बल्कि आमदनी करते हैं। ठीकेदार पब्लिक से पार उतराई और सलवाही दोनों वसूल करता है और बाद में कुछ पैसा नाववाले को दे देता है। इस तरह से फेरीज ऐक्ट द्वारा नौका-व्यवसाय चौपट किया गया। देश के स्वतन्त्र होने पर यह आशा थी कि अब नदर्न इण्डिया फेरीज ऐक्ट भी रद्द कर दिया जायगा और नाववालों को नौका व्यवसाय में स्वतन्त्रता मिलेगी, परन्तु अब तो उनके ऊपर एक और ऐसा ऐक्ट लाद दिया गया जिससे उनका उभरना कठिन प्रतीत हो रहा है।

इस लेख के लेखक श्री रामनाथ निषाद

आखिर मछुवे भी तो भारत के निवासी हैं और आदि निवासी हैं। उनको और उनके बच्चों को तो सब प्रकार की सुविधा देनी चाहिये थी, शिक्षा और पद में उनको विशेषाधिकार देना चाहिये था, परन्तु न जाने क्यों उनके साथ ऐसा अत्याचार किया जा रहा है और उनकी उन्नति करने के बजाय उनको और अधिक पददलित करने के लिए ऐसा विधान बनाया गया है, जो केन्द्रीय सरकार के अधीन है। वास्तव में नदियाँ एक ही प्रांत में नहीं बहतीं, वे कई प्रांतों में होकर बहती हैं। ऐसी दशा में नदियों पर पूर्ण अधिकार केन्द्रीय सरकार को है। प्रांतीय सरकार को तो नदियों पर कोई विधान बनाना अनियमित है। केन्द्रीय सरकार का कर्तव्य है कि वह ऐसे अनियमित और मछुवों को कुचलनेवाले विधान को रद्द करवा दे।

जन सरकार का कर्तव्य था कि वह मछली की उत्पादन-शक्ति बढ़ाने के लिए मछुवों के बच्चों में शिक्षा का प्रचार करती और सरकारी व्यय से उनको उच्चतम शिक्षा दिलाती, फिर उनको विदेशों में भेजकर मछली की उत्पादन-शक्ति की वृद्धि के उपायों का अध्ययन कराती, न कि किसी कानून की आड़ से उनका शिकार करती।

ऐसी दशा में प्रान्तीय सरकार इस बिल पर पुनः विचार कर इसे रद्द कर दे तथा मछुवों और उनसे सम्पर्क रखनेवालों की सलाह से कोई ऐसी स्कीम निकाले जिससे मछली की उत्पादन-शक्ति बढ़ जाये।

(समाप्त)

डोंगरे बालामृत से
कमजोर बच्चे
ताक़तवर बनते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

प्राकृतिक चिकित्सा

आचार्य विनोबा भावे का क्या कहना है ?

लेखक, श्री सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग

पिछले १४ दिसम्बर को गांधी नगर (जयपुर) में प्राकृतिक चिकित्सकों ने आचार्य विनोबा भावे से भेंट की थी और आपके प्राकृतिक चिकित्सा के सम्बन्ध में विचार जानने चाहे थे ।

आचार्य विनोबा जी ने कहा कि देश में मैले के सम्बन्ध में बड़ी अव्यवस्था फैली हुई है । प्राकृतिक चिकित्सकों को चाहिए कि इस सम्बन्ध में देश की सेवा करें । इस पर प्राकृतिक जीवन प्रेमी सम्मेलन के सभापति डाक्टर के० लक्ष्मण शर्मा महोदय ने निवेदन किया कि सफाई दो प्रकार की होती है—

प्राकृतिक चिकित्सक आन्तरिक सफाई में अधिक विश्वास रखता है । इस पर विनोबा जी ने सहमत होना स्वीकार किया ।

विनोबा जी ने प्रवचन करते हुए कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा-पद्धति है । इसे महँगा नहीं बनना चाहिए गांव गाँवों में इसके आश्रम खोले जायें और वहीं पर कृषि की जावे । फलों आदि के लिए दूसरों पर निर्भर रहना उचित नहीं । स्थानीय शाक, फल, मेवा काम में लाना चाहिये । यदि इस प्रकार काम न चल सके, तब ही बाहर से आनेवाली खाद्य सामग्री का उपयोग किया जाय । मैं भी कृत्रिम शोधों, तथा मशीन के उपयोग के विरुद्ध हूँ । अप्राकृतिक खाद्यों की सहायता से उत्पन्न होनेवाली खाद्य सामग्री अनेक गुणों से विहीन होती है । मशीनों से पौष्टिक तत्त्व मर जाते हैं ।

सद् वैद्य के गुण बतलाते हुए आपने कहा कि वैद्य को सदाचारी, मिताहारी और मधुरभाषी होना चाहिये । चिकित्सक का कर्तव्य है कि रोगी में श्रद्धा जागृत करे । वस्तुतः श्रद्धा से रोगी, यदि उसे दवा के रूप में हानिकारक विष न दिये जायँ, तो जल्दी ठीक होता है । 'स्वल्पमपि अस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' [के अनुसार यह आवश्यक नहीं है कि रोग-मुक्ति के लिए रोगी सम्पूर्ण चिकित्सा-क्रम का ही पालन करे । वह जितना साधन साध सके, उतना ही उसको लाभ हो सकेगा ।

आचार्य विनोबा भावे ने यह भी बतलाया कि महात्मा गांधी प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली के प्रबल समर्थक एवं उपासक थे । वे स्वयं कोढ़ी जैसे रोगी की अपने हाथ से परिचर्या करते थे । जीवाणु-वाद में उनका विश्वास नहीं था । वे इन्जेक्शनों, सिरमस, टीका आदि को अनावश्यक समझते थे ।

अन्त में आपने आश्वासन दिया कि प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार एवं प्रसार के लिए मैं यथाशक्ति प्रयत्न करूँगा ।

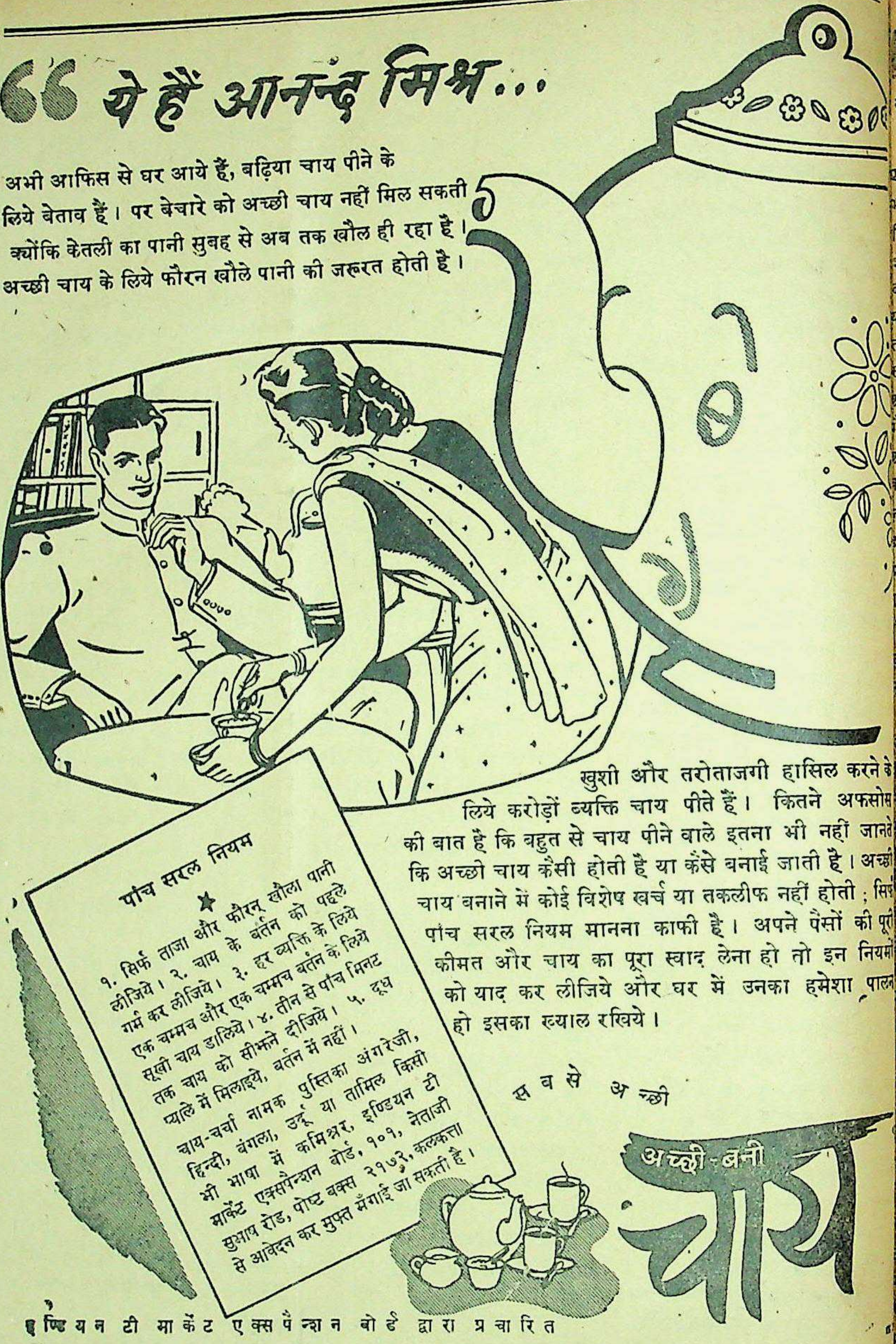

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

काश्मीर-मतगणना और भारत

काश्मीर की समस्या भारत के लिए एक गम्भीर विषय है। वहाँ शीघ्र ही भारत या पाकिस्तान में सम्मलित होने के लिए मतगणना होगी। शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला ने भी बम्बई में भारत की दब्बू नीति की कड़ी आलोचना की है। यद्यपि मैं उनके वक्तव्य से सहमत नहीं हूँ तथापि कुछ कारणों को देखते हुए मैं ऐसे समय भारत के कड़े रुख धारण करने या अपनी गलतियाँ सुधारने के पक्ष में हूँ। मैं अब तक आश्चर्य में हूँ कि देश का अपना कोई नाम नहीं है। इंडिया विदेशों की देन है। 'हिंदुस्तान' का शब्द ऐसे लगता है मानो भारतीय राजनीतिज्ञों की डायरी में है ही नहीं। कांग्रेस अथवा अन्य राष्ट्रीय आन्दोलनों में 'भारत' का नाम सर्वदा लिया जाता रहा है। राष्ट्रीय गीत भी चाहे वह हिन्दू के मुख से निकले चाहे मुसलमान अथवा ईसाई सभी 'भारत' नाम के संस्मरण से गाये जाते हैं।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'जय भारत भाग्य विधाता' को राष्ट्र गीत का स्थान मिलने जा रहा है। बङ्किम बाबू ने जिन शब्दों में वन्दना की है वे भी भारत की ओर लक्षित हैं। आजाद हिन्द सेना जिसमें हिन्दू, मुसलमान सिक्ख तथा ईसाई सभी थे, सबने 'भारत भाग है जागा' और 'जग में चमके भारत नाम हमारा' से स्पष्ट है कि सारे हिन्दू-मुसलमान भारत नाम की प्रधानता देते हैं फिर अभी तक देश के नाम को खटाई में डाले रखना देश और जाति के लिए कितना घातक है। मैं अपनी सरकार से निवेदन करूँगा कि वह देश का नाम 'भारत' रखे। काश्मीर की मतगणना के सिलसिले में भी भारत नाम की प्रधानता देने का सुझाव पेश करता हूँ। भारत नाम से हमारी जीत होगी, ऐसा हमारे एक ज्योतिषी की भविष्यवाणी है! मुझे जब कभी शङ्काओं के समाधान की आवश्यकता पड़ी है उनके पास पहुँचा हूँ, उनके प्रश्नोत्तर बिलकुल सत्य उतरे हैं। काश्मीर में भारत का भाग्य अजमाने के लिए मैंने उनसे प्रश्न भी किया। उन्होंने मुझसे मतगणना के सिलसिले में उत्तर दिया कि यदि राष्ट्र काश्मीर की मतगणना में इण्डिया नाम से लड़ता है तो हार जायगा और यदि हिन्दुस्तान नाम से लड़ता है तो वह पाकिस्तान के बराबर ही रहेगा। परन्तु 'भारत' नाम से लड़ने पर काश्मीर-मतगणना में राष्ट्र अवश्य विजयी होगा। उपर्युक्त मन्तव्य एक सच्चे ज्योतिषी का है। ज्योतिषी जी ने दो-तीन ऐसी शंकाओं का समाधान किया है जिससे हम निश्चित हो चुके हैं कि इस शंका का समाधान भी ठीक ही होगा।

ज्योतिषी जी श्री सत्यनारायण मिश्र एक ६० वर्षीय धार्मिक वृद्ध पुरुष हैं। उन्होंने कितने ही चुनाव का फल बहुत पहले ही बतलाया है जिसका उत्तर बिलकुल सत्य हुआ है। अतः हम भारत सरकार से यह निवेदन करेंगे कि वह देश का नाम शीघ्र ही भारत घोषित कर दे और काश्मीर मतगणना में 'भारत' नाम से चुनाव लड़े। देश के ज्योतिष पर विश्वास रखनेवाले तथा सच्ची राष्ट्रीयतावाले महानुभावों को भी चाहिए कि वह भारत सरकार को प्रेरित करे कि वह देश का नाम भारत रखे और चुनाव भी इसी नाम से लड़े। इसमें न तो प्रांतीयता है और न धार्मिकता। इसका विवरण तो ऊपर हो ही चुका है कि आजाद हिंद सेना के सैनिक और कार्यकर्तागण जिन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता के स्वच्छन्द वातावरण में चाहे काल्पनिक ही आनन्द उठाया हो 'भारत' नाम की प्रधानता दी थी। यद्यपि यह कहा जा सकता है कि उसमें भी हिंद नाम जुड़ा था, वह हिन्द का संकेत करती थी। परन्तु उसके राष्ट्रीय गीत में हिंद को गौण और भारत को प्रधान स्थान है। अतः अब जब कि देश ऐसे लक्ष्य को प्राप्त करने जा रहा हो जिसमें संसार के सामने कुछ दिखलाना है तो देश ऐसा पथ क्यों न ग्रहण करे जिसमें देश और जाति का संसार के सामने मस्तक ऊँचा रहे। मैं उसी तथ्य और सिद्धांत को लेकर देशवासियों और सरकार से निवेदन करता हूँ कि काश्मीर मतगणना के पहले ही राष्ट्र का नाम भारत घोषित हो जाय।

दुबहा, बारा,
प्रयाग

—शिवशंकर दुबे

* * *

राष्ट्रभाषा-प्रचारक-सम्मेलन

स्वतंत्र भारत में जहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी का महत्त्व दिनोंदिन बढ़ रहा है वहाँ उसके प्रचार-कार्य के सामने अनेक नई समस्यायें भी पैदा हो रही हैं। भारत संघ की विधान-परिषद् राष्ट्रभाषा के प्रश्न को अब भी अनिश्चित स्थिति में रखे हुए है, जिससे राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-मार्ग में रोड़े अटकानेवालों की बन आई है। ऐसी सब समस्याओं पर गहराई के साथ विचार–विनिमय करने तथा राष्ट्रभाषा-प्रचार पथ को प्रशस्त बनाने की दृष्टि से इस वर्ष राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा देश के समस्त अहिन्दीभाषी क्षेत्रों, अर्थात् आसाम, बंगाल, उड़ीसा, बम्बई, गुजरात, महाराष्ट्र, विदर्भ, नागपुर, आंध्र, कर्नाटक, हैदराबाद आदि प्रान्तों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार में लगे कर्मठ प्रचारकों का एक बृहत् सम्मेलन बुला रही है।

यह सम्मेलन अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वर्तमान सभापति, महाकोशल कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष, भारतीय विधान-परिषद् के अन्यतम प्रभावशाली सदस्य तथा हिन्दी-जगत् के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी सेठ श्री गोविंददास जी की अध्यक्षता में आगामी २६, २७ फरवरी १९४९ को राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति, वर्धा के केंद्रीय कार्यालय के अपने अहाते में होगा। सम्मेलन का उद्घाटन मध्यप्रांत सरकार के गृह एवं शिक्षा-सचिव तथा कृष्णायन के प्रसिद्ध प्रणेता माननीय पं० द्वारकाप्रसाद जी मिश्र करेंगे।

इस अवसर पर राष्ट्रभाषा-प्रचार-संबन्धी अन्य गंभीर समस्याओं पर विचार-विनिमय के अतिरिक्त कवि-सम्मेलन, नृत्य एवं नाटक आदि साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया है।

राष्ट्रभाषा-प्रेमी सज्जनों का सहयोग प्रार्थित है।

वर्धा

—आनन्द कौसल्यायन

* * *

बङ्गाल राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति

वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की प्रादेशिक शाखा बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति गत चार वर्ष से विश्वविख्यात भाषाशास्त्रज्ञ डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या की अध्यक्षता में बड़ी सफलता से कार्य कर रही है। न्यूनतः दस हजार बंगला मातृभाषी इस संस्था के द्वारा संचालित अवैतनिक शिक्षण केन्द्रों में पढ़ कर हिन्दी सीख चुके हैं। इसके प्रायः सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता बंगाली ही हैं अतएव इसका प्रभाव प्रांत में बड़ा अच्छा पड़ रहा है। इसके पदवीदान समावर्त्तनोत्सवों की अध्यक्षता डाक्टर प्रफुल्लचन्द्र घोष, माननीय शिक्षामन्त्री राय हरेन्द्रनाथ चौधरी कर चुके हैं। इस समय कलकत्ते में ११ तथा मुफस्सिल में २७ शिक्षण-केन्द्र चल रहे हैं जिनमें प्रायः ८०० छात्र-छात्रायें हिन्दी सीख रही हैं। आगामी अप्रैल की परीक्षा में आशा की जाती है प्रायः सहस्राधिक परीक्षार्थी प्रविष्ट होंगे। कार्यालय—४२।१ हालदारपाड़ा रोड, कलकत्ता २६।

—रेवतीरञ्जन सिनहा
अवैतनिक मन्त्री

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो –) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

नया चलान, नई डिजाइन

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर कम्पनियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई हैं। देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीभर मशीन। प्रत्येक घड़ी को गारंटी ३ साल।

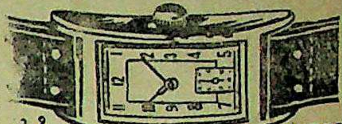

नं० १ — साइज 7¾
जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड—४०)
,, ,, केस—३५) रोल्ड गोल्ड—४५)
,, ,, केस—५२) रोल्ड गोल्ड ६२)

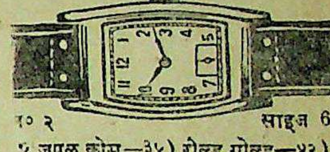

नं० २ — साइज 6¾
जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड—४२)
,, ,, —३८) रोल्ड गोल्ड—४७)
,, ,, ..५५ रोल्ड गोल्ड—६५)

नं० ३ — साइज 10½
जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३०)
,, ,, ,, —४८) रोल्ड गोल्ड—६०)
वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड—८५)

नं० ४ — साइज 11½
क्रोम केस—१६) सेकण्ड कांटा की—१८)
सेण्टर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर—२२)
जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५)
अलार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर—२०)
पोस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से १२॥) प्रति सैकड़ा कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ११४२४
कलकत्ता

फिल्म-एक्टर

यदि आप फिल्म एक्टर या एक्ट्रैस बनकर १००) रु० से १५००) रु० तक मासिक कमाना चाहते हैं तो आज ही लिखें। ज्यादा पढ़े लिखे होने की कोई जरूरत नहीं।

अपना पता साफ लिखें।

डाइरेक्टर
बाम्बे फिल्म सर्विस (D. D. A.)
बाक्स नं० ५, जलन्धर शहर

परीदेश

यह पुस्तक खास कर छोटे बच्चों के लिए है। इसमें ऐसी एक भी बात नहीं जिसको समझने के लिए माथापच्ची करनी पड़े। इसमें रोजमर्रा की बातें बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। बड़े आकार की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों और फूल-पत्तियों की सुन्दरता मनोहर है। मूल्य ॥)

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांडा और वैन्डहम जलप्रपात

(पेज ८ का शेष)

मात्रा है। हमने टांडा प्रपात पर दालदा घी की बनी हुई खूब पूरी (पूड़ी) खा ली थी, और पेट में भारीपन तथा बेचैनी सी मालूम हो रही थी; परन्तु वैन्डहम प्रपात का पानी पी लेने पर थोड़े ही समय में हम सबके पेट की बेचेनी रफूचक्कर हो गई। धातुपूर्ण जल जब पिया जाता है, तब पेट को बहुत साफ करता है। इस कारण पाश्चात्य देशों में यह पानी बोतल में बन्द करके दवाखानों में ग्राहकों के खरीदने के लिए रखा जाता है, विंध्याचल स्वस्थ्यगृह, टांडा और वैन्डहम प्रपात कुपच के रोगियों के जलवायु परिवर्तन के अच्छे स्थान हैं। चूँकि कैमूर साधारणतः एक पठारी भाग है। व्यायाम के लिए मीलों तक स्वच्छन्दता से घूमना यहाँ संभव है, पर विशेष पहाड़ी भागों की नीची ऊँची धरती में घूमना सम्भव नहीं।

रिहन्द बाँध

वैन्डहम नदी जो कि सदा बहती रहती है, रौबर्टगञ्ज नामक स्थान तक नलों द्वारा पहुँच जाती है; परन्तु रिहन्द पर एक बृहत् बिजलीउत्पादक कार्यालय के लिए रिहन्द तक का मार्ग बहुत अच्छा बन गया है। रिहन्द मिर्जापुर से ३६ मील दूर है। मिर्जापुर के दक्षिण में रिहन्द नाम की एक छोटी नदी सोन नदी में गिरती है; और रिहन्द के आर-पार सरकार बाँध बनवाकर वहाँ बिजली-उत्पादन कार्यालय चला रही है, जो बनारस, मिर्जापुर और इलाहाबाद के जिलों को बिजली देगा। जो पञ्जाब के जोगेन्द्र नगर बिजली-उत्पादन कार्यालय से क्षेत्रफल और महत्त्व में बहुत अधिक बढ़ जायेगा। जब बाँध पूरा हो जायेगा, तब वह उन जिलों को बिजली देकर उनके केवल व्यापार में ही सहायता नहीं करेगा, बल्कि मिर्जापुर के पठार और बुंदेलखण्ड की खेती को सहायक होगा, तथा प्रान्त की खाद्य वस्तुओं को बढ़ायेगा।

दोनों प्रपातों के विवरण को समाप्त करके, मिर्जापुर जिले के आर्थिक साधनों का थोड़ा सा परिचय देकर इस लेख को समाप्त करना चाहता हूँ। इलाहाबाद की अपेक्षा मिर्जापुर अपने यहाँ के व्यक्तिगत धनियों पर अभिमान करता है। लाख ने जिस के लिए मिर्जापुर बहुत प्रसिद्ध रहा है, इस जिले को बहुत समृद्ध बनाया है और यह अधिकतर रौबर्टगंज क्षेत्र के जङ्गल से प्राप्त किया जाता है; परन्तु अब लाख का व्यापार गिर रहा है, क्योंकि जिन वस्तुओं में पहले लाख का प्रयोग होता था, अब उनमें दूसरी चीजें काम में ली जाने लगी हैं। ग्रामोफोन, रेकार्ड और रँगाई में काफी लाख खर्च होती है। मिर्जापुर में दो तरह के पत्थर बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं। पहला चूना पत्थर और दूसरा बालुआ पत्थर। चक्की के पाटों और सिलों का तो इस नगर में एकाधिकार है। ये पाट और सिलें केवल इसी प्रांत के गृहस्थों में ही नहीं, बल्कि दूसरे स्थानों पर भी बेचे जाते हैं। ये वस्तुएँ चूना पत्थर की बनाई जाती हैं। मुलायम किस्म के बलुआ पत्थर की पहले बहुत माँग थी, क्योंकि छतों के बनाने में यह काम में आता था; परन्तु बढ़ती हुई लोहे की लाइनों से बनी हुई छतों की चलन से मिर्जापुर के पत्थर का व्यापार बहुत गिर गया है। अब भी बड़ी संख्या में इस जिले में यहाँ-वहाँ सड़कें, फुटपाथ तथा इमारतों का पत्थर निकालने का काम होता रहता है। पत्थर छाँटने की कारीगरी भी यहाँ एक मुख्य व्यापार है।

कालीन का व्यापार

गत युद्ध के पूर्व कुछ जर्मनों ने मिर्जापुर के कालीन के व्यापार को बहुत बढ़ा दिया था, परन्तु अब यह व्यापार मशीनों से बने हुए कालीनों की भयावह प्रतियोगिता के सामने बढ़ नहीं सकता। कैमूर पहाड़ से जलाऊ लकड़ी काफी मिल जाती है। सरकार ने निर्देशित भाग के पेड़ों को बिलकुल काट डालने की आज्ञा दी। इस भाग के आगे काटने का आदेश करीब आठ या नौ साल तक के लिए नहीं है, जब तक उस भाग में फिर से नए पेड़ उग आयें। कैमूर पहाड़ियों पर शिकारियों के लिए चीते और हिरन मिलते हैं।

जहाँ तक इस जिले की जन-संख्या का सम्बन्ध है, यह कहा जा सकता है कि भील प्रायः पठार पर बसते हैं और दूसरे लोग, जिन्हें हम साधारणतः प्रांत में देखते हैं, मैदान में रहा करते हैं। कलकत्ता के धनी मारवाड़ियों के घरों पर तेल में डूबी हुई श्यामदार लाठी को लिए हुए मिर्जापुरी दरबान का दृश्य अक्सर देखते

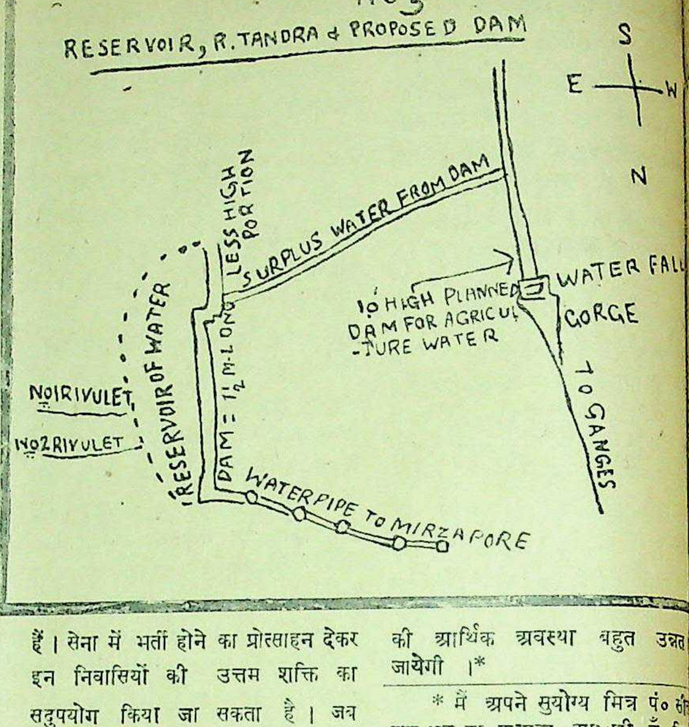

हैं। सेना में भर्ती होने का प्रोत्साहन देकर इन निवासियों की उत्तम शक्ति का सदुपयोग किया जा सकता है। जब रिहन्द में बिजली-उत्पादन का कारबार पूर्ण रूप से चलने लगेगा, तब इस जिले की आर्थिक अवस्था बहुत उन्नत जायेगी।*

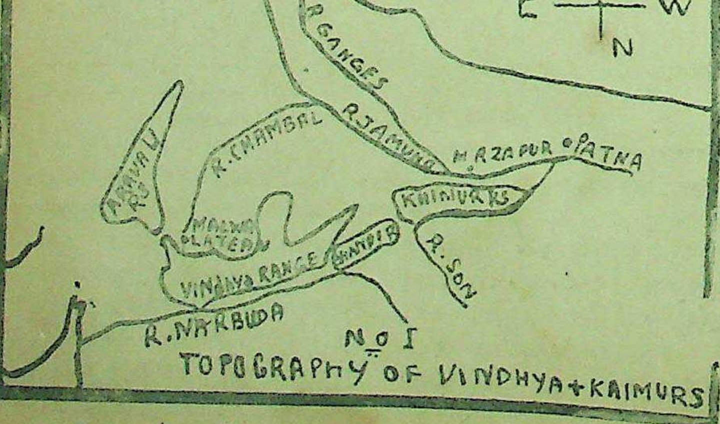

* मैं अपने सुयोग्य मित्र पं० [illegible] राम भट्ट का अत्यन्त आभारी हूँ, जिन [illegible] सहयोग से इस लेख का हिन्दी अनु[illegible] हुआ।

पुरुष

लेखिका, श्रीमती होमवती देवी

प्रकृति नटी के सुघर खिलौने, मानवता के ठेकेदार।
अबला के सौभाग्य तुम्हीं हो—व्यथा तुम्हीं तो हो साकार॥
देश जाति के संरक्षक हो नियम धर्म की थामे डोर।
दुर्बल नारी के क्रन्दन हो—कह उठने पर "नाहक शोर"॥
सभ्य जगत में बैठ सदा तुम—करते हो नितनया सुधार।
पर चुपचाप सुना करते हो—अपने घर का हाहाकर॥
बाहर के तुम मृदुल हास हो—अपने घर की मायूसी।
बाहर हो तुम सिंह शिकारी—घर में मगी पड़ी मूसी॥
अलियों का मधुगुंजन हो तुम-कलिकाओं का हो शृङ्गार।
पर पतझड़ भी हो तुम निर्मम कर देते मधुवन को छार॥
नारि हृदय की अतुल शक्ति हो—हो तुम ही जीवन का हास।
प्रणय पंथ के भ्रमते पंछी—दुखियाओं के उर की त्रास॥
आशा तुम्हीं निराशा तुम हो—हो तुम ही उजड़ा संसार।
हारे प्राणों का अवलम्बन सरल हृदय के हो संहार॥
सत्य प्रेम के मुग्ध तंतुओं—का—तुम हो विकृत उल्लास।
अंतस्तल के आर्त्तनाद के हो मादक! तुम ही उपहास॥
रूप हाट के ग्राहक हो तुम—छिप छिपकर करते हो मोल।
शुद्ध सात्विक शुचि आसव को—ठुकरा कर पी ले विष घोल॥
जो तुमसे ही जीता—उसकी बने मृत्यु के आवाहन।
जिन प्राणों में पीड़ा भरते उनके ही हो आश्वासन॥
फटे पुराने आंचल का तुम, अरे सौम्य बिखरा अनुराग।
माँग माँग कर हार गई जो—उसी माँग का सरस सुहाग॥
दीन हीन की निधि हो मादक। हृदय कुसुम के सौरभ हो।
जिनके अरमानों को कुचला—उनके ही तुम गौरव हो॥
जीवन गाथा के पृष्ठों पर—कभी न मिटनेवाले अंक।
माँ की गोदी की शोभा हो—नारी उर के पूर्ण मयंक॥
हृदय व्यथा का दुखता छाला—तुम ही तो हो रिसते घाव।
जड़ जीवन की चेतनता हो—मन मानस के मचले भाव॥
तुम ही हो अभिशाप सुहृदवर, तुम ही हो सुख का वरदान।
हो तुम ही उत्थान—पतन भी—तुम ही हो जीवन-अवसान॥
उठो—उठो—देखो यह किसकी आशाओं पर पड़ा तुषार।
कितनी माँ-बहिनें-पत्नी भी करतीं तुमसे करुण पुकार॥
उर घन उमड़ रहे वह देखो; बरस रहे हैं आकुल नैन।
किन्तु तुम्हें अवकाश न अब तक—हुआ सवेरा बीती रैन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर "कांग्रेस पर देश के अभ्युदय तथा सुरक्षा की जिम्मेदारी है और उसकी सच्चे तन्त्र का विकास करना चाहिये। कांग्रेस का सामान्य कार्यकर्ता आज सन्तुष्ट और उदासीन है। एवं नेता-वाद हावी होता दिखाई दे रहा है। इस तरह फासिज्म का खतरा पैदा हो सकता है ये शब्द श्री जनार्दन राय नागर ने महात्मा गांधी कार्यकर्ता विद्यालय द्वारा आयोजित २६ जनवरी के उत्सव में कहे। श्री जनार्दन राय नागर ने अपने भाषण को जारी रखते हुए कहा कि "आज कई लोग इस दिवस को मना रहे हैं, किन्तु हम देख रहे हैं कि आजादी प्राप्त करने के पश्चात् सरकार की ओर से आज का अवकाश रख दिया गया है और आज का दिन केवल ढर्रे में पड़ जाने का खतरा है। अब भी हमें निश्चिन्त नहीं बैठना है अपितु आज जो समस्त एशिया में परिवर्तन की लहर उठी है, उसके लिए राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रस्ताव के बावजूद भी सिरोही को बम्बई में मिला दिया है और ६ महीने चली आई आवाज को रियासती विभाग ने एकदम भुला दिया।" श्री नागर के बाद विद्याभवन हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री केशरीलाल जी बोर्दिया ने भाषण देते हुए बताया कि "२६ जनवरी का दिन बड़े महत्त्व का है, इसे ढर्रे में नहीं डालना है अपितु हमें जो आजादी मिली है, वह हमारे लिए सच्चा स्वराज्य प्राप्त करने का साधन तथा अवसर है।"

श्री बोर्दिया जी ने सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से अपील की कि "जनतन्त्र की स्थापना के लिए हमें विशेष परिश्रम करना है।" आपने इस बात पर खेद प्रकट किया कि हमारी जनप्रिय सरकारें आम जनता की दृष्टि से कोई कार्य नहीं कर रही हैं। आपने आर्थिक स्वराज्य पर जोर दिया। आपने कहा कि हमें अपनी आग को ठण्डी नहीं होने देना है। शिक्षण-संस्थाओं का कर्तव्य है कि जनता को योग्य और जिम्मेदार बनाये। आपके भाषण के बाद श्रीयुत सुधीन्द्र जी ने "स्वतन्त्रता दिवस" पर कविता-पाठ किया और संयोजक के धन्यवाद भाषण के बाद सभा विसर्जित हुई।

ता० २७ जनवरी से राजस्थान जनपद ब्राडकास्ट का कार्यक्रम फिर से आरम्भ कर दिया गया है। अब तक १४४ धारा के कारण कार्यक्रम डेढ़ मास से बन्द था। कल "एशिया सम्मेलन" पर एक महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुआ।

मालूम हुआ है कि राजस्थान विश्वविद्यापीठ प्राचीन साहित्य शोध संस्थान के मन्त्री श्री पुरुषोत्तम जी मेनारिया फरवरी के प्रथम सप्ताह में अपनी सामग्री के साथ कलकत्ता जा रहे हैं। आप वहाँ डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० कालीदास नाग, एवं अन्य विद्वानों तथा गण्यमान्य व्यक्तियों से विद्यापीठ के सम्बन्ध में मिलेंगे। इस समय प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान के अन्तर्गत काफी पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार हैं। श्री मेनारिया जी इस सम्बन्ध में लोगों से बातचीत करेंगे। श्री मेनारिया जी राजस्थान विश्वविद्यापीठ के कुलपति के साथ जा रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

मध्यप्रांतीय विदर्भ प्रांतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के लिए भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी अध्यक्ष चुने गये हैं।

अधिवेशन मई के प्रथम सप्ताह में राजनाद गाँव में हो रहा है।

—प्रधान मंत्री

* * *

जयपुर 'वे दिन चले गये जब पर्दा एक आवश्यकता थी', यह बात जयपुर की महारानी श्री गायत्रीदेवी जी ने कल शाम यहाँ सैनिकों के क्लब में भाषण देते हुए कही। क्लब कल से महिलाओं के लिए भी खोल दिया गया है। श्री महारानी साहिबा ने कहा कि यह आयोजन राज्य के सामाजिक इतिहास में क्रान्तिकारी महत्त्व रखता है, क्योंकि आज पर्दा-प्रथा को तोड़ा गया है। आपने कहा—'पहली बार महिलाओं को अब बराबरी से मिलने-जुलने का अवसर मिलेगा, वे आपस में जान-पहचान बढ़ा सकेंगी और अपने विचारों और अपनी कल्पनाओं का आदान-प्रदान कर सकेंगी। इससे उनका दृष्टिकोण और विचार-क्षेत्र विस्तार पायेगा और वे स्वतन्त्र भारत में क्रमशः अपना समुचित स्थान प्राप्त कर सकेंगी।'

यह प्रथा आज प्रगति के मार्ग में रोड़ा बन गई है,' आपने आगे कहा, और अब समय आ गया है जब हम राजपूतानेवाले यह अनुभव करें कि हमारी महिलाओं का सम्मान अब उनके एकान्तवास के कारण नहीं किया जाता—मुझे तो भय है कि अब इसके कारण उन पर तरस खाया जाता है। राजपूताने की महिलाओं पर लोगों को तरस खाते देखकर अनेक बार मुझे गुस्सा आया है, और अपने माने हुए सिद्धान्तों को दबाकर मैंने अपने यहाँ की महिलाओं की अवस्था का प्रतिपादन किया है, लेकिन इस प्रयत्न में सदा निष्फल रही हूँ। कारण यह है कि कोई कैसे गई-बीती शताब्दी की प्रथाओं और संस्थाओं के पक्ष का आज प्रतिपादन कर सकता है?'

श्री महारानी साहिबा ने राजपूताने के लोगों से समय के साथ चलने की अपील की। उन्होंने कहा—मैं पूरे आग्रह के साथ आपसे कहना चाहती हूँ कि अब आप अपनी पसंद-नापसंदगी और अपने अहंकार का खयाल न करें, बल्कि अब अपने राज्य और सम्पूर्ण देश की परिभाषा में सोचें। यह देश तब तक महान् राष्ट्र बन नहीं सकता जब तक इसका प्रत्येक सुयोग्य नागरिक इस दिशा में पूरा प्रयत्न नहीं करता और पर्दे के पीछे रहनेवाली हमारी महिलाओं को योग्य नागरिक नहीं माना जा सकता। प्राचीन युग में जब कि राजपूतों का यश पराकाष्ठा पर था, केवल-मात्र पुरुषही अपनी वीरता से इतिहास का निर्माण नहीं किया करते थे, महिलायें भी उस युग में नाम कमाती थीं और उनका आज तक उनकी वीरता और पवित्रता के लिए सम्मान किया जाता है और अब समय आ गया है कि महिलायें एक बार फिर समाज में अपना स्थान प्राप्त करें।

नवीन भारत सेना के महत्त्व पर जोर देते हुए आपने सैनिक अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा—आपका काम वास्तव में तो रचनात्मक है, यद्यपि इसे पूरा करते वक्त उन संकटों का सामना भी आपको करना पड़ता है जो विनाशकारी कार्यों के साथ लगे रहते हैं। आपके नियंत्रण में काम करनेवाले सैनिक वीर हैं और परिणाम की चिन्ता किये बिना वे अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। हम सबका, विशेषतः आपकी पत्नियों का, उन सैनिकों और उनके परिवारों के प्रति बड़ा दायित्व है। सेना में आपको दायित्वपूर्ण पद प्राप्त है और आपके हाथ में अधिकार होने के कारण सैनिक अपने कष्टों को लेकर आपके पास आ जाते हैं, लेकिन उनकी पत्नियाँ किसके पास जायें? जैसे कि सैनिक आपके पास आते हैं, उसी तरह उनके परिवार की महिलाओं को आपकी पत्नियों के पास आना चाहिये। हर सैनिक दल के प्रधान अधिकारी की पत्नी का पद भी बड़ा दायित्वपूर्ण है—उसका परिवार बहुत विशाल है। वह अन्य अधिकारियों की पत्नियों की सहायता से, अपने पति के नियंत्रण में काम करनेवाले सैनिकों और उनके परिवारवालों को जितना भी शारीरिक और मानसिक सुख और सुविधा पहुँचा सके, पहुँचाना चाहिये। मुझे पूरा विश्वास है कि हर एक अधिकारी ऐसे अवसरों का पूरा लाभ उठायेगा और अपने सैनिकों के प्रति अपनी पत्नी को उसके दायित्वों को पूरा करने देगा।'

अन्त में श्री महारानी साहिबा ने कहा—'मैं समझती हूँ कि हम सबको श्री महाराजा साहब के प्रति इस विषय में नेतृत्व देने और हमें मिलने-जुलने तथा जान-पहचान बढ़ाने का अवसर देने के लिए कृतज्ञ होना चाहिये। मुझे पूरी आशा है कि क्लब में प्रस्तुत सुविधाओं का पूरा उपयोग करके आप उनके उदार दृष्टिकोण को सार्थक करेंगे।'

इस अवसर पर श्री जयपुर-नरेश, श्रीमती कृष्णमाचार्य, मेजर-जनरल और श्रीमती पालिन तथा अन्य सम्माननीय अतिथि उपस्थित थे। महिलायें भी काफी संख्या में उत्सव में आई थीं।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद् का प्रथम अधिवेशन रविवार मिती सौर फाल्गुन ८ तदनुसार ता० २० फरवरी सन् १९४९ को १ बजे दिन से सम्मेलन के संग्रहालय में होगा। विचारणीय विषय है—

नियमावली के उपनियम २० के अनुसार परीक्षा समिति के १० सदस्यों का निर्वाचन। नियमावली के उपनियम १८ (छ) के अनुसार हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद् के लिए ५ विशेषज्ञ सदस्यों का निर्वाचन। नियमावली के उपनियम २२ (घ) के अनुसार प्रत्येक वर्ग के लिये पाँच पाँच सदस्यों का निर्वाचन। नियमावली के उपनियम २२ (ग) के अनुसार हिन्दी साहित्य परिषद् खुरजा के हिन्दी विद्यालय को सम्बन्द्ध करने के सम्बन्ध में विचार।

—रामचरण अग्रवाल
परीक्षा-मन्त्री

* * *

पचमढ़ी में 'गांधी बरषी दिवस' के उपलक्ष में ३० जनवरी को पूर्ण हड़ताल रही! उसी दिन रात्रि के ७ बजे कांग्रेस व समाजवादी पार्टी के सहयोग से एक आम सभा गांधीचौक में श्री गयाप्रसाद जी साहू की अध्यक्षता में हुई। राष्ट्रगीत के पश्चात् बापू का प्रिय भजन "रघुपति राघव राजाराम" गायन हुआ तत्पश्चात् सर्वप्रथम साथी भोलाप्रसाद जी, श्री मोतीलाल जैन, दुर्गाप्रसाद जायसवाल, श्री बालाराम गुप्ता, श्री गनेशप्रसाद 'विद्यार्थी', श्री वंशीधर चौरसिया, श्री प्रेमनारायण जी के भाषण के उपरान्त सभापति का व्याख्यान हुआ।

—संवाददाता

* * *

वन्दना

लेखिका, श्रीमती चंद्रमुखी ओझा 'सुधा'

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती चंद्रमुखी ओझा 'सुधा' के गीत तथा कविताएँ बड़ी लोकप्रिय हैं। इस संग्रह में आपकी ५२ सर्वोत्कृष्ट, सुमधुर तथा मर्मस्पर्शी कविताएँ संग्रहीत हैं। पुस्तक की भूमिका हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने लिखी है। कवर अत्यन्त आकर्षक तथा छपाई-सफाई नयनाभिराम है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का २) मात्र।

सफेद बाल काला !

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश सञ्जीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २) रु० बाल अधिक पक गया हो तो ४) रु० का तैल मँगावें। पता—

श्री प्रयागराम ६४ काजी डांगा लेन
पो० शिवपुर (हवड़ा)

अपराजिता

यह श्रीयुत रामेश्वर शुक्ल एम० ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्दर कविताओं का संग्रह है। कविताएँ नवीन युग की नूतन सांस्कृतिक रुचि और प्रगति के साथ हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं का आनन्द प्राप्त करने के लिए अपराजित को अवश्य देखिए। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार को मानवता का संदेश

(पेज ७ का शेष)

अग्रसर करता है। आज देखा जाता है कि पैदा तो बहुत कम करते हैं किन्तु उपभोग बहुत करते हैं, यह ठीक नहीं। सबको कार्य करना चाहिए। हर व्यक्ति को स्वयं अर्जित करना चाहिए। जब ऐसा होगा, हम सच्ची शांति के दर्शन करेंगे।

आचार्य मश्रूवाला ने भी रचनात्मक कार्य पर जोर दिया और गांधी जी के सिद्धान्तों पर चलने के लिए अपील की, क्योंकि शांति के लिए वही एक सच्चा रास्ता है।

* * *

परिषद् में कुछ प्रस्ताव पास हुए। उन प्रस्तावों में बताया गया है कि ता० १ से ८ दिसंबर ४६ में शांतिनिकेतन में विश्वशांति परिषद् हो और उसमें गांधी जी के सिद्धान्तों पर चलनेवाले लोग ही सम्मिलित हों। विदेशों के जो पचास प्रतिनिधि आयेंगे वे हिन्दुस्तान के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण करेंगे और संस्थाओं की गति-विधियों का निरीक्षण करेंगे जो गांधी जी के बताये हुए सिद्धांतों पर चलकर कार्य कर रही हैं। शांतिनिकेतन में परिषद् होने के बाद कुछ ही दिनों में गांधी जी की पुण्यभूमि सेवाग्राम के अंचल में जनवरी ५० में परिषद् होगी। उस परिषद् में दुनिया की सभी प्रमुख समस्याओं पर विचार होगा जिनको कि हल करने से शान्ति स्थापित हो।

* * *

शान्तिनिकेतन व सेवाग्राम की परिषदों में भाग लेने के लिए एशिया, अमेरिका, यूरोप, आस्ट्रेलिया व आफ्रिका खंडों के प्रतिनिधि पधारेंगे जिनका कि खर्च वे देश उठायेंगे जहाँ से प्रतिनिधि आयेंगे। फिर भी उन प्रतिनिधियों के इंतजाम व रहने के खर्च के लिए हिन्दुस्तान को जिम्मेवारी उठानी पड़ेगी। इसके लिए ढाई लाख रुपयों की अपील की गई है। परिषद् की उपयोगिता व महत्त्वाकांक्षा को देखते हुए आशा है कि भारत की जनता ढाई लाख रुपये दे देगी। यद्यपि कुछ प्रतिनिधियों ने चंदे उगाहने की बात का समर्थन नहीं किया, फिर भी उसे स्वीकार किया गया।

* * *

परिषद् हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के भवन में हुई थी। बहुत ही सादगी दृष्टिगोचर हो रही थी। सेवाग्राम तो भारतीय ग्रामों को स्फूर्ति व प्रेरणा देनेवाला एक आदर्श ग्राम है। वहाँ बिजली की चकाचौंध नहीं है और न रेडियो की मीठी आवाज वहाँ सुनाई देती है। वहाँ सरल हृदय व प्रेम प्राप्त होता है। भवन में न कुर्सी-टेबल के दर्शन हुए और न रंग-बिरंगी झंडियों के ही—जैसा कि अन्य परिषदों में होता है। वहाँ तो निर्मल व पवित्र वातावरण के दर्शन हुए और प्रतिनिधियों को बैठने के लिए ताड़ की चटाइयाँ बिछाई गई थीं। विदेशी प्रतिनिधि यह कहते सुने गये कि सेवाग्राम में हमने प्राचीन भारत की संस्कृति व सभ्यता के साक्षात् दर्शन किए।

* * *

आचार्य आर्यनायकम् तथा उनकी विदुषी पत्नी श्रीमती आशादेवी आर्यानयकम् ने आतिथ्य-सत्कार में कोई कमी नहीं की और सबका मुसकराते हुए स्वागत किया। परिषद् सफल हुई और हो भी क्यों न जहाँ कि सभी शांतिवादी इकट्ठे हुए थे। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की सादगी ने तो सबको हैरत में डाल दिया था। वे परिषद् की कारंवाई में इतने दत्तचित्त थे कि उन्हें इस बात का पता ही न रहता था कि उन्होंने अपनी टोपी सिर पर सीधी लगाई है या आड़ी लगाई है।

* * *

प्रतिनिधियों को ठहराने के लिए तंबू लगाये गये थे। प्रकाश के लिए लालटेनों का इंतजाम किया गया था। भोजन में हाथकुटे चावलों का भात, मूँग की दाल, गेहूँ की रोटी, मक्खन तथा खीर का समावेश था। तरकारियाँ तो कई किस्म की बनाई जाती थीं। भोजन बड़ा ही स्वादिष्ट रहता था, क्योंकि इन पंक्तियों के लेखक ने भी उस स्वाद का आनन्द एक दिन प्रतिनिधियों के साथ बैठकर लिया था।

परिषद् में जब जब महात्मा गांधी के नाम का उल्लेख किया जाता था, उपस्थित लोगों के हृदय भर आते थे। एक प्रतिनिधि ने कहा—"काश, आज बापू होते!"

श्री कमलनयन बजाज प्रतिनिधियों से अकसर विनोद किया करते थे। उनमें विनोद करने की एक आदत है और वे मौके की बात कह देते हैं। जिस समय प्रतिनिधियों का परिचय कराने का प्रस्ताव आचार्य श्रीमन्नारायण जी ने किया—तो प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि सबका परिचय कौन करा सकता है, क्योंकि कोई सबको तो जानता न था। यह तय हुआ कि हर प्रतिनिधि अपना अपना परिचय दे। चूँकि कुछ प्रतिनिधि विदेशों के थे—वे अँगरेजी के सिवा अन्य भाषा न जानते थे, इसलिए उनके परिचय के अनुवाद का कार्य श्री कमलनयन जी ने किया। श्री बजाज जी के अनुवाद करने का अपना ढंग था। खूब मनोविनोद हुआ।

जब श्री अजितप्रसाद जी जैन अपना परिचय देने लगे तो उन्होंने जैनधर्म की महत्ता पर ही प्रकाश डालना शुरू कर दिया। इस पर एक प्रतिनिधि ने कहा कि आप अपना परिचय दे रहे हैं या जैनधर्म की व्याख्या कर रहे हैं?

आचार्य मश्रूवाला व भदंत आनंद कौसल्यायन ने अपना परिचय बहुत ही संक्षिप्त में दिया। मश्रूवाला जी ने कहा—मेरा नाम किशोरलाल मश्रूवाला है। गांधी जी के साथ रहा हूँ और मैं प्रसिद्ध तो नहीं हूँ किन्तु 'हरिजन' ने मुझे प्रसिद्ध बना दिया है।

भदंत आनंद कौसल्यायन जी ने कहा कि—मेरा नाम आनंद कौसल्यायन है— राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार का कार्य करता हूँ। उनके पीले वस्त्र सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे।

* * *

सेवाग्राम की शांतिवादियों की परिषद् २६ जनवरी के शुभ मुहूर्त पर प्रारम्भ हुई थी। जिस दिन कि बीस वर्ष पूर्व रावी-तट पर भारत-हृदय सम्राट् पं० जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा ली थी और देश ने उस प्रतिज्ञा को दुहराया था। परिषद् तीन दिनों तक चलती रही। जनवरी मास में एशियाई सम्मेलन दिल्ली तथा सेवाग्राम की परिषद्— दोनों का अपना विशेष महत्त्व दुनिया की नजरों में है। भारत शांति स्थापित कराने में अपनी प्राचीन परंपरा की रक्षा करेगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है।

(भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा)

आप अभिनेता हो सकते हैं

यदि आप सिनेमा में अभिनेता अथवा अभिनेत्री होना चाहें, और १००) से १५००) प्रतिमास पैदा करना चाहें, तो आज ही लिखिये। आप कम पढ़े हैं इसकी कुछ चिन्ता नहीं। पत्र-व्यवहार अँगरेजी में कीजिए।

डाइरेक्टर
नेशनल फिल्म कारपोरेशन, हल्का नं० १३, (D. A.) जलन्धर सिटी

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज (गया)

इधर उधर की

इँगलैण्ड में बच्चों की मृत्यु-सं... प्रति एक हजार पर ५५ और हिन्दु... में १६७ है।

* * *

इँगलैण्ड में मनुष्य की औसत आ... ६० वर्ष और भारत में २३ वर्ष है।

* * *

पूर्वी पाकिस्तान में संसार से ... अधिक जूट पैदा होता है।

* * *

चाय भारतवर्ष में संसार से ... अधिक होती है। आसाम मुख्य प्रान... और दार्जिलिंग की चाय सबसे प्रसिद्ध... संयुक्तप्रांत में चाय सबसे अधिक देहरा... में होती है। लंका का स्थान दूसरा है।

* * *

ब्रिटेन में डाक ढोनेवाली एक ... रेल है जो पृथ्वी की अस्सी फीट गहरा... स्थिति पटरियों पर चलती है। इस ... की लम्बाई ६ मील है और ६ स्टे... हैं यदि यह रेल न होती तो डाक... की मोटर को साढ़े सात लाख मील ... दौड़ प्रतिवर्ष और लगानी पड़ती।

—राज...

* * *

ब्रिटेन के दक्षिणी भाग की रे... तीन नये ऐसे इंजिन बनाये हैं जि... गति १०० मील प्रतिघंटा है। ज... पिछली ग्रीष्म ऋतु में उपयोग किये ... तो उस समय वे ८५ मील प्रतिघं... हिसाब से दौड़े। इनमें प्रतिवर्ष २... टन कोयले की बचत हुई।

* * *

गठिया बुखार और उसके आन... बीमारियों के ऊपर गहरा अध्ययन... रहा है। अब तक इस पर जो अन्वेष... चुका है उससे सिद्ध हुआ है कि य... १६ वर्ष के भीतरवाले बच्चों ... अवस्था में देखा गया है। इसका ... यह कि यह आशा हो गई है कि इ... के दूर करने में काफी सहायता मिले...

* * *

ब्रिटेन में वागन यात्रा नियंत्र... एक नई पद्धति उपयोग होने जा रही... इस पद्धति से ब्रिटेन ने अपने दे... अन्दर बुरे मौसम में भी वायुयान ... की व्यवस्था कर ली है। सारे ब्रिटेन ... भागों में बाँट दिया गया है।

* *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपये पर फफूंदी

अवध के किसी क्षुद्रमति राजा के दरबारी उसे इस प्रकार धोखा दिया करते थे: वह कहते, "महाराज, कोष के रुपये पर फफूंदी लग गई है। यदि आज्ञा हो तो हम इसे बाहर धूप दिखा दें।" महाराज आज्ञा दे देते। रुपया धूप में रख दिया जाता परन्तु जब रुपया कोष में रखा जाता तो केवल आधा ही वापस लाया जाता था। राजा के इस कमी का कारण पूछने पर वह कहते, "महाराज, फफूंदी लगे कुछ रुपये तो सुकड़ गये और जो दूषित थे वह फेंक दिये गये।"

क्या यही दशा प्रति दिन आप के रुपये की भी नहीं हो रही है? आप चढ़े दामों पर विलास के पदार्थ खरीदते हैं और फिर कुछ ही दिनों पश्चात् आप अनुभव करते हैं कि उन के दाम गिर गये हैं। आप की खरीदी हुई चीज़ का मूल्य घट जाता है। यदि आप विवेक से काम लें तो आप अपनी खरीदारी स्थगित कर देंगे। और इस प्रकार चढ़े दामों को कम करने में सहायता देंगे। आप अपनी बचत को इस प्रकार लगाइए कि आप को इस रुपये पर अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो सके।

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स खरीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।
अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकखानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए
जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित। AC.418

क्रिकेट का खेलाड़ी गठिया के कारण हार गया।

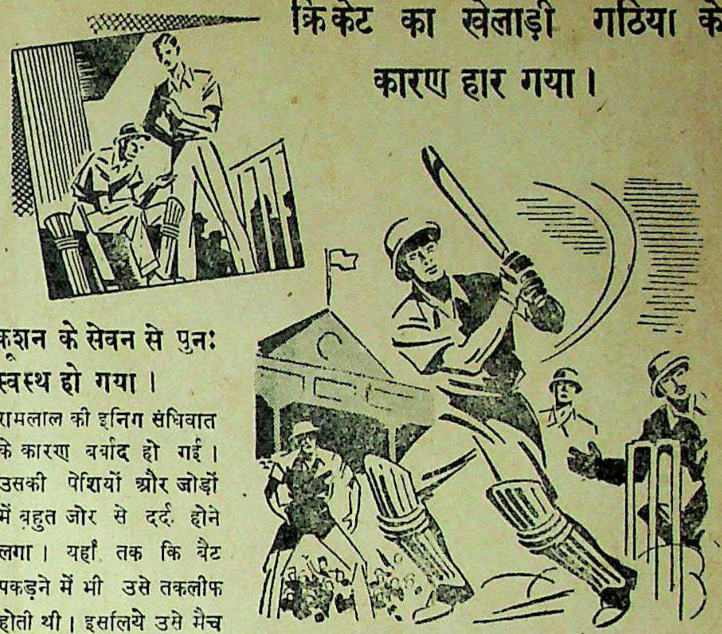

क्रूशन के सेवन से पुनः स्वस्थ हो गया।

रामलाल की इनिंग संधिवात के कारण बर्बाद हो गई। उसकी पेशियों और जोड़ों में बहुत जोर से दर्द होने लगा। यहाँ तक कि बैट पकड़ने में भी उसे तकलीफ होती थी। इसलिये उसे मैच से मुँह मोड़ना पड़ा। उसने सोचा-अब खेलाड़ी का मेरा जीवन समाप्त हो गया। उसके कैप्टन ने उसे सलाह दी कि वह प्रातःकाल जलपान के पूर्व क्रूशन का सेवन किया करे।

रामलाल ने वैसा ही किया। तीन सप्ताह के बाद ट्राफी मैच में उसने ६० रन बनाये। उसकी शकल पहले से बहुत अच्छी है—क्रूशन की बदौलत। किसी प्रकार की नसों की सूजन से भी दर्द क्यों न रहा हो उसका मुख्य कारण यही है कि पेशियों और जोड़ों में यूरिक एसिड जमा हो जाती है। आपके शरीर से निकालने का एक ही उपाय है और वह है आपके गुर्दे की सफाई। क्रूशन के रहस्य उसके दो काम है। यह एक साथ ही गुर्दे और अँतड़ियों पर असर करता है और जहाँ कहीं यूरिक एसिड जमा रहता है उसे निकाल फेंकता है। और उन्हें फिर एकत्र नहीं होने देता।

आज ही क्रूशन खरीदें। प्रत्येक दवा विक्रेता के यहाँ मिलता है।
पीले कागज के डिब्बे में बन्द। मूल्य १॥=)

आपको भी
क्रूशन की आवश्यकता महसूस हो सकता है।

Ad. No. KSID. 2, Hindi

५०००) मुफ्त इनाम !

अमृतसर में सोना २॥) तोला !

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको पाँच हजार रुपया मुफ्त दिया जावेगा।

जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। जनाब ला० ब्रह्मानन्द गत मैनेजर तेज नया बाजार देहली से लिखते हैं कि आपका (लंदन) न्यू गोल्ड का पार्सल मिला धन्यवाद! यह देखकर खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनियाँ की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। ६ तोला सोना वापसी डाक से और भेज दो बाद में और भी आर्डर दिया जावेगा।

यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है असली सोने की तरह कूटा और पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिन को होशियार से होशियार सराफ भी मुश्किल से पहिचान सकता है। मशहूरी करने के लिये मूल्य फी तोला केवल २॥) रु०, ३ तोला का मूल्य ७) रु०, ६ तोला १३) रु०, १५ तोला ३०) रु०, ४० तोला ७०) रु०।

जरूरी नोट :—माल पसन्द ना होने पर मूल्य शीघ्र वापस कर दिया जाता है। आर्डर देते समय अपना पता साफ साफ लिखें। जल्दी करें क्योंकि माँग ज्यादा होने के कारण आपको मायूस न होना पड़े।

प्रधान कार्यालय पी. बी. ७५ (D. D. A.) अमृतसर।

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्सन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तकें—अ० परिवारिक १।). बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) रेड लाईन सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०-=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशो का ८)। सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।

(१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३)। बृ० अ० परिवारिक चिकित्सा ६)।

नोट :—बृहत् सूची मुफ्त— सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—४)।

संरक्षक—राय साहब डा० यदुबीरसिंह एम० डी० एस० (U.S.A.)

देशदूत में विज्ञापन दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सुप्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ

इनका आदर अन्य धर्मावलम्बियों तक में है

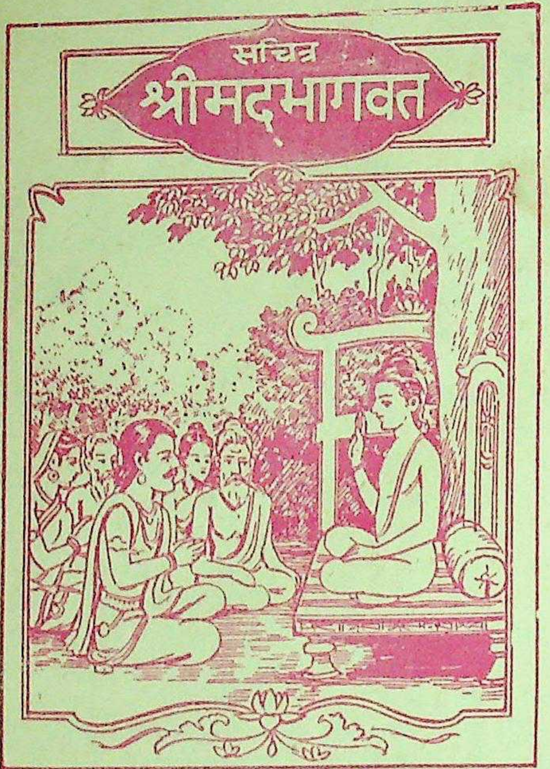

यह भक्तिशास्त्र का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। भाषा सरल और सुबोध है। क्या पुरुष और क्या स्त्री सभी के लिए उपयुक्त है। रङ्गीन और सादे चित्रों को देखकर पाठक प्रसन्न होते हैं। ग्रन्थ दो खण्डों में सम्पूर्ण हुआ है। सुन्दर जिल्द है। मूल्य १६) सोलह रुपये।

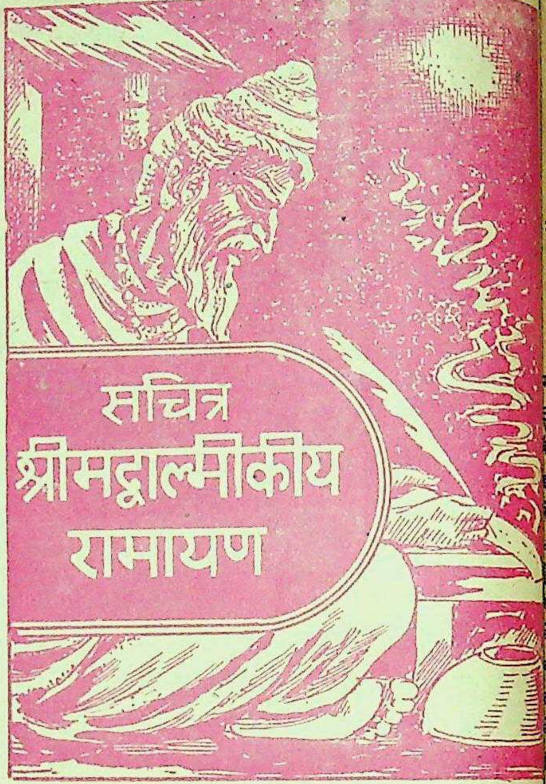

यह आदि कवि महर्षि वाल्मीकि के ग्रन्थ का हिन्दी रूप। इस भारतीय संस्कृति का इतिहास समझिये। सरल सुबोध भाषा। बीच-बीच में मनोहर चित्र हैं। बढ़ियां जिल्द है। ग्रन्थ दो खण्डों में समाप्त है। मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६।।) छः रुपये आठ आने।

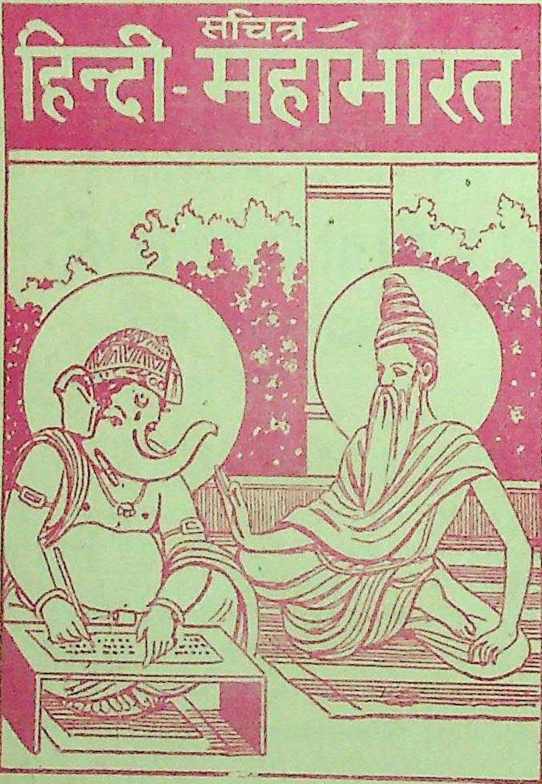

महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारत का यह हिन्दी रूपान्तर है। अच्छा कागज, उत्कृष्ट छपाई। रङ्गीन और सादे चित्रों की भरमार। बढ़िया दस जिल्दों में ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। मूल्य ८०) अस्सी रुपये।

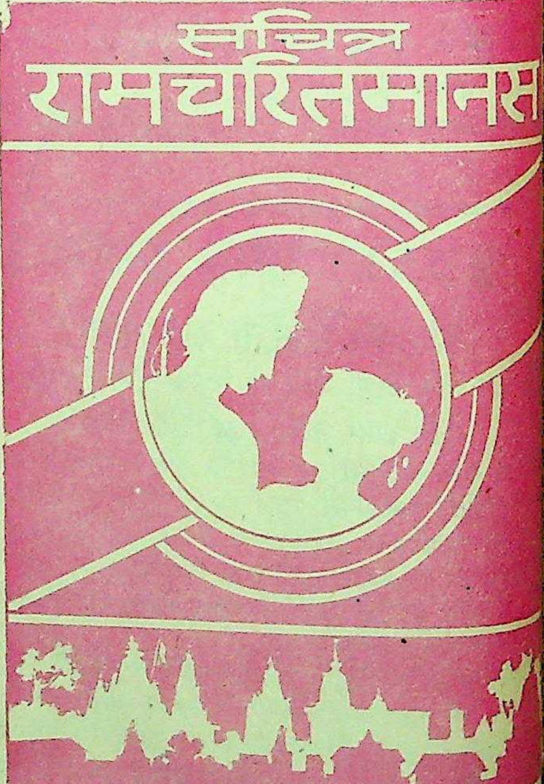

टीकाकार राय बहादुर डा० श्यामसुन्दरदास। बड़े अच्छे प्रामाणिक पाठ है। सुबोध सरल भाषा में अर्थ है। रङ्गीन व सादे चित्रों से शोभित सजिल्द प्रति का मूल्य १२) बारह रुपये।

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मिश्र-द्वारा इंडियन प्रेस, लि०, १४ पन्नालाल रोड प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] प्रधान सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २६] [रविवार, ६ मार्च, १९४९

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भारत के गवर्नर जनरल श्री राजगोपालाचारी, आपने प्रयाग में स्वर्गीया बेगम अबुल कलाम आजाद अस्पताल का १ मार्च को उद्घाटन किया।

भारत के भूतपूर्व वाइसराय लार्ड माउंटबेटेन की पत्नी लेडी माउंडबेटेन तथा उनकी पुत्री पेमेला माउण्डबेटेन आजकल भारत पधारी हैं। अपने राम को इससे बड़ी प्रसन्नता है। अँगरेज हिन्दुस्तान से चले गये किंतु भारत से मेल-मिलाप बढ़ाने में वह पहले से भी नम्बर बढ़ा रहे हैं, यह भी बड़े सौभाग्य की ही बात है। खास तौर से इस समय जब कि काश्मीर के भाग्य का निर्णय होने जा रहा है. कम्यूनिस्ट अपनी खतरे की घंटी बजाने लगे हैं और चीन तथा दक्षिण-पूर्वी एशिया के साथ बरमा में भी वह अपनी लीला दिखानेलगे हैं; साथ ही बंगाल में भी वह हिंसात्मक कार्यवाहियों पर आमादा हो रहे हैं. लेडी माउण्डबेटेन का हिन्दुस्तान में पधारना बड़े गजब की घटना है। भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू इस सामायिक राजनीति को अधिक समझ सकते हैं, बनिस्बत किसी भारतीय जनसाधारण के क्योंकि पंडित जी राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ हैं। लेडी माउण्डबेटेन के आने का रहस्य जो भी हो, लेकिन भारत के सैर करने का ही यदि रहस्य हो तो और भी अच्छा, माकूल और मुनासिब है।

* * *

संयुक्तप्रान्तीय धारासभा में प्रधान मंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त द्वारा प्रस्तावित 'जन सुरक्षा कानून' की अवधि बढ़ाने पर प्रस्ताव का विरोध करते हुए श्री जहूरुल हसन लारी ने अपनी देशभक्ति का बहुत अच्छा परिचय दिया। लारी साहब ने बड़े ऊँचे स्वर मे ऐसी बातें कही हैं, जिस तरह से कांग्रेसी लोग अँगरेजी राज्य में असेम्बलियों में कहा करते थे। इससे जान पड़ता है कि जैसे अँगरेजों के चले जाने के बाद कांग्रेसवालों ने शासन की बागडोर सँभाली है वैसे ही कांग्रेसवालों के चले जाने के बाद लारी एण्ड कम्पनी शासनभार लेने की इच्छुक जान पड़ती है। अपने राम की समझ में यह आता है कि लारी एण्ड कम्पनी को किसी न किसी तरह कांग्रेसी मंत्रिमंडल का विरोध करना चाहिए। भले ही वह कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट गिरोह में सम्मिलित दिखलाई दें। मिस्टर लारी ने विरोध करने में जिस प्रकार के अलाप की शिक्षा पाई है उसका क्रम आज तक चला जा रहा है। यद्यपि मुस्लिम लीग पार्टी शारीरिक रूप से प्रान्तीय एसेम्बली में फरार-सी हो गई है। किन्तु मौखिक रूप में अभी वह मौजूद है। एक कहावत मशहूर है कि कुत्ते की दुम को चाहे जितना भी सीधा किया जाये किन्तु वह टेढ़ी की टेढ़ी रहेगी। भारत का बटवारा भी हो गया। पाकिस्तान बन गया। हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए पाकिस्तान जाने का दरवाजा खुल गया, लेकिन कहीं कुछ नहीं जबानी कवायद के लिए लारी साहब बैठे हुए हैं और उनकी जबान भी ज्यों की त्यों टेढ़ी बनी हुई है। भारतीय स्वतंत्रता का प्रभाव उनकी जबान पर पड़ा है या नहीं? इसे तो खुदा जाने या स्वयं।

* * *

संयुक्तप्रान्तीय मजदूरों के महान् नेता पंडित शिब्बनलाल सक्सेना ने साथियोंसहित अपना अनशन भंग कर दिया क्योंकि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री शंकरराव देव ने लिखा और आश्वासन दिया है कि पंडित सक्सेना के माँगों की ओर ध्यान दिया जायगा और वह अपनी माँगों का स्पष्टीकरण कांग्रेस के प्रेसीडेंट के पास भेजें। अपने राम को प्रसन्नता हुई कि पंडित शिब्बनलाल सक्सेना ने अनशन तोड़ दिया और चीनी के मजदूरों की स्थिति के सुधार की ओर पुनः जुट गये हैं। मजदूरों की स्थिति सुधरेगी या नहीं, यह तो सरकार और उनके बीच की बात है, लेकिन, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि पंडित शिब्बनलाल सक्सेना एक ऐतिहासिक नेता हैं। आपने पिछले वर्षों में कई अवसरों पर ऐसे ऐसे क्रान्तिकारी अनशन किये हैं कि विरोधी लोग ताकते ही रह गये। हमें याद है कि सन् १९४६ के असेम्बली के चुनाव के अवसर पर आपने जेल में रहते हुए भी टाट उलटानेवाला एक ऐसा अनशन किया था जो उन दिनों के अखबारों की घपलों में जरूर मिल सकता है। यद्यपि पंडित नेहरू ने भी आपके उस अनशन का विरोध किया था, किन्तु पंडित सक्सेना अपनी बात पर जमे ही रह गये। ऐसे महापुरुष की एक सुन्दर जीवनी लिखी जानी चाहिए और यदि संयुक्तप्रान्तीय सूचना-विभाग उसे छापकर मुफ्त में वितरित कर दे तो यह काम बड़े पुण्य का होगा।

* * *

काश्मीर में मतगणना शीघ्र ही होने जा रही है। देखना है कि काश्मीर हिन्दुस्तान में आता है या पाकिस्तान में जाता है अथवा उसका विभाजन हो जाता है। काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला बड़े जोर-शोर से ऐलान करते हैं कि काश्मीर हिन्दुस्तान के साथ रहेगा। यही नहीं, उन्होंने यह भी कहा है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू काश्मीर और काश्मीर पंडित जवाहरलाल नेहरू। अपने राम की समझ में शेख साहब ने बात तो बड़े पते की कही है और यों भी पंडित जी काश्मीरी तो हैं ही, लेकिन काश्मीर पंडित नेहरू के साथ रहेगा कि नहीं, यह तो भविष्य की बात है। कहा नहीं जा सकता कि काश्मीर की मतगणना का ऊँट किस करवट बैठेगा? लेकिन यदि अँगरेजों की बात मानी गई और संयुक्तराष्ट्र द्वारा नियुक्त काश्मीर कमीशन के सदस्यों की बात सुनी गई तो काश्मीर जान पड़ता है कि पाकिस्तान के साथ हो जायगा। यदि ऐसा हुआ तो काश्मीर की राजनीति किस ओर पलटा खायगी कहा नहीं जा सकता और हिन्दुस्तान का करोड़ों रुपया जो अब तक काश्मीर में खर्च हुआ है बट्टे खाते में मिल जायगा। यही एक दुख की बात होगी। हाँ, यदि काश्मीर हिन्दुस्तान के साथ आया तो सब वसूल है। भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और काश्मीर के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला के हाथों में काश्मीर का भाग्य है।

* * *

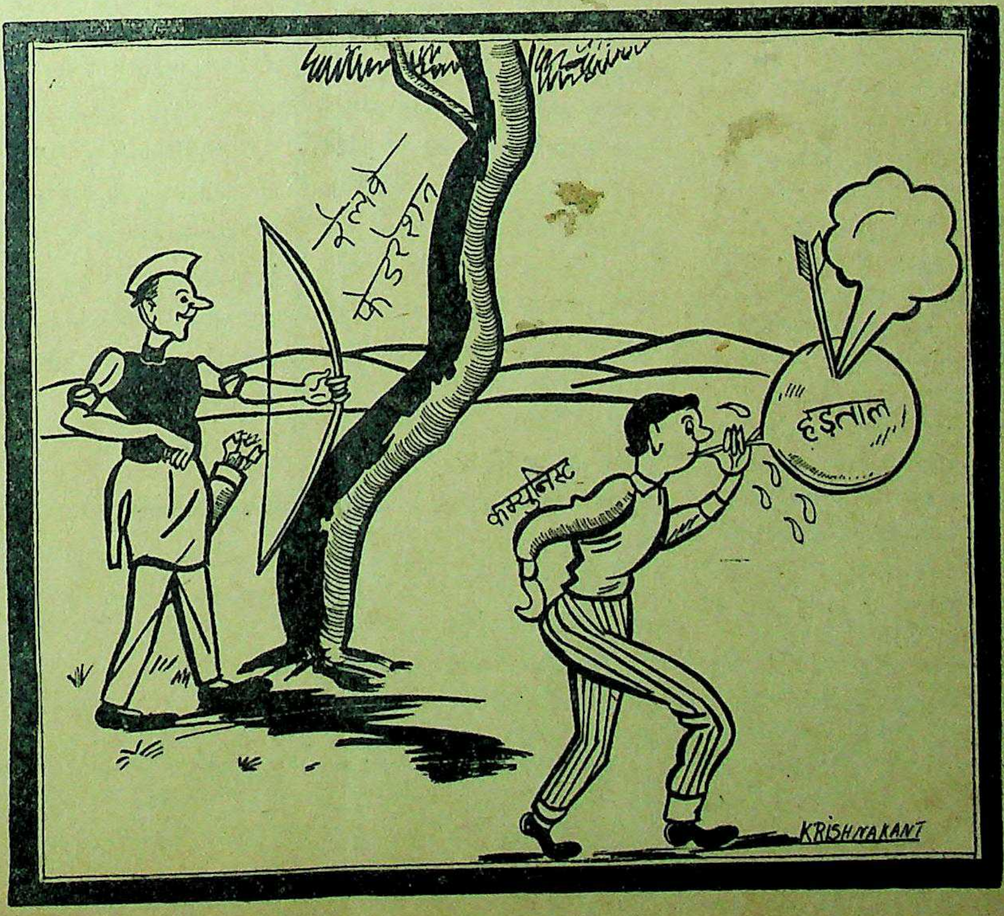

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

नया खतरा

भारत में संघर्ष का एक नया खतरा दिखाई दे रहा है। कम्यूनिज्म चीन में व्याप्त हो चुका है। प्रजातन्त्र चीन का कब पराभव हो जाये कुछ कहा नहीं जा सकता। दक्षिण-पूर्व एशिया में भी कम्यूनिज्म व्यापकता धारण करता जा रहा है। बरमा में भी कम्यूनिस्टों की प्रगति तीव्र हो रही है। हमारी समझ में दक्षिण-पूर्वी एशिया के समुद्री किनारे से लेकर बंगाल, मद्रास तथा बम्बई का समुद्री किनारों की ओर कम्यूनिस्टों का लक्ष्य दिखाई देता है। बरमा में कम्यूनिस्टों तथा राष्ट्रवादियों में संघर्ष प्रारम्भ गया है। बंगाल में अर्से से कम्यूनिस्टों की अधिकता है। दक्षिणी मद्रास प्रांत के इलाकों में कम्यूनिस्ट अपनी हरकतें समय समय पर दिखाते ही रहते हैं। बम्बई भी कम्यूनिस्ट पार्टी का गढ़ है ही, इसमें सन्देह नहीं है। तात्पर्य यह है कि कलकत्ता, बम्बई व्यावसायिक केन्द्र हैं, मजदूरों की वहाँ अधिकता है, इसलिये कम्यूनिस्ट भी ऐसे ही स्थानों पर विशेषरूप से दिखाई देते हैं। मजदूर आन्दोलन का संचालन राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के पूर्व प्रायः कम्यूनिस्ट पार्टी के ही हाथों में रहा है। इधर चीन, दक्षिण-पूर्वी एशिया में कम्यूनिस्टों की प्रगति अधिक होने से उसका प्रभाव बरमा पर व्यापक रूप में पड़ रहा है। इस प्रकार की परिस्थियों का प्रभाव भारत पर पड़ना भी अनिवार्य है।

यद्यपि हम सैद्धांतिक दृष्टि से कम्यूनिज्म तथा समाजवाद को किसी भी देश के किसानों तथा मजदूरों के लिये अहितकर नहीं समझते, क्योंकि समाजवादी आधार पर ही राष्ट्र का वास्तविक निर्माण संभव है। कम्यूनिज्म तथा समाजवाद में ऐसे अनेक गुण हैं जो किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिये मान्य हो सकते हैं किंतु भारत कम्यूनिस्ट जिस नीति को अपनाकर अग्रसर हो रहे हैं, वह राजद्वेष, तोड़-फोड़ तथा वर्गवाद की भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। भारत के कम्युनिस्ट भारतीय संस्कृति के स्थान पर रूसी संस्कृति की स्थापना के पक्षपाती हैं। भारतीय समाजवाद के जो आर्य-युग की देन है, विरोधी हैं। भारतीय समाजवादी आदर्श स्वयं मजदूरों, किसानों के राज्य का पक्षपाती रहा है तथा श्रम और पूंजी के संतुलन की एकरूपता के सिद्धान्तों को स्थापना की है ऐसी स्थिति रूसी आदर्शवाद की स्थापना, प्रचार तथा उसके आन्दोलन की भारत में आवश्यकता ही क्या है? भारतीय अपनी संस्कृति, धार्मिक गौरव तथा प्राचीन सामाजिक स्तर से अलग होकर कम्यूनिज्म के विदेशी जामे को क्यों स्वीकार करें? धोती और कुर्ते को छोड़कर टाई और सूट को अपनाने की क्या आवश्यकता है? वर्तमान सरकार की शासन-नीति में भले ही कमियाँ हों, किन्तु यह निश्चित है कि वह भारतीयों की सरकार है और उसका आदर्श भारतीय दृष्टिकोण से जनतंत्रपूर्ण शासन-व्यवस्था की स्थापना है। वह क्यों कम्यूनिस्टों के आदर्श को स्वीकार करें तथा उनकी नीति के प्रचार में सहायक बने?

जब भारतीय कम्यूनिस्ट केवल अशांति उत्पन्न करने में ही विश्वास करते हैं तो भारत-सरकार शांति तथा व्यवस्था की स्थापना के लिए उनके विरोध की अवहेलना क्यों करे? रेलवे हड़ताल को ही ले लीजिए। यह ठीक है कि मजदूरों तथा रेलवे-कर्मचारियों की माँगों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये लेकिन कम्यूनिस्ट चाहते हैं कि हड़ताल अवश्य होनी चाहिये। तब फिर पूर्व और पश्चिम का मेल कैसे हो सकता है? यही कारण है कि कम्यूनिस्टों की गिरफ्तारियाँ हुईं और उन पर प्रतिबन्ध लगाया गया। पिछले दिनों बंगाल में कम्यूनिस्टों ने जिस प्रकार का उत्पात मचाया, हथियारों के द्वारा जिस प्रकार की हिंसात्मक कार्यवाहियाँ कीं, उसे भारत-सरकार या कोई भी सरकार कैसे सहन कर सकती है? रेलवे हड़ताल के मामले को लेकर कम्यूनिस्टों के साथ भारत सरकार ने जिस प्रकार का व्यवहार किया है, उससे असंतुष्ट होकर कम्यूनिस्टों ने संभवतः कलकता के पास अपने हिंसात्मक कार्यों का प्रदर्शन किया है। किंतु इस प्रकार की कार्यवाहियों तथा वर्गवादी अशांति उत्पन्न करने की परिस्थितियों का सामना सरकार के लिये करना अनिवार्य है। कम्यूनिस्ट और भारतीय समाजवादी भी भारत-सरकार की शासन-नीति से थोड़ा बहुत मतभेद रखते हैं किंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि राष्ट्रीय सरकार इतिश्री कर दी जाये और सोवियट रूस की शासन-पद्धति स्थापित हो। इसलिये कम्यूनिस्टों की वर्तमान अशांति उत्पन्न करनेवाली नीति के घोर विरोधी हैं। भारत-सरकार इस संबंध में जो भी कार्यवाही कर रही है, शांति तथा व्यवस्था को बनाये रखने के लिये उचित ही है।

हाँ, एक बात अवश्य सरकार के लिये ध्यान देने की है। वह अपनी श्रमनीति में व्यापक सुधार करे जिससे मजदूरों की वर्तमान स्थिति में सुधार हो, उनकी आर्थिक स्थिति संतोषजनक हो, गल्ले और कपड़े की प्राप्ति में सुविधा ही नहीं, बल्कि उसके मूल्य में कमी हो जिससे जनता को गल्ले तथा कपड़े की न तो कमी हो और न मूल्य ही उन्हें अधिक देना पड़े। कम्यूनिस्टों का नारा जनता की उपयोगिता को लेकर होता है। इसलिये जन-साधारण, मजदूर किसान की सुविधाओं की दृष्टि से ही वह अपनी शासन-नीति में व्यापक सुधार करे, क्योंकि जनता की परेशानी से ही कम्यूनिस्ट अवसर का लाभ उठाते हैं। यदि सरकार अपनी श्रम-नीति अधिक से अधिक लोकप्रिय नहीं बनाती, वस्तुओं का मूल्य बढ़ता जाता है, रुपये का मूल्य बढ़ता जाता है, किसानों तथा मजदूरों की वर्तमान आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं होता भले ही भारत के कम्यूनिस्टों की हथियारों के बल से स्वाहा कर दें किन्तु वह कम्यूनिज्म को कदापि न[illegible] सकती। भारत की स्थिति भी [illegible] स्थिति को पहुँच सकती है। [illegible] भारत-सरकार तथा प्रान्तीय सर[illegible] व्यापक रूप से सक्रिय कदम [illegible] चाहिए।

* *

शुभमूर्ति श्रीमती नायडू का स्वर्गवास

मार्च की दूसरी तारीख युक्तप्रान्त के लिए ही नहीं, वरन् भारत के लिए [illegible] स्मरणीय तिथि रहेगी। हमारे प्रान्त की गवर्नर शुभमूर्ति श्रीमती सरोजनी नायडू [illegible] साढ़े तीन बजे इस असार संसार को छोड़ चली गईं। सत्तरवर्षीय वृद्धा [illegible] शासन के कार्य-भार से जितना कष्ट उठाना पड़ा है श्रीमती सरोजनी नायडू ने थोड़ा ही समझा था। पहली मार्च को कमला नेहरू स्मारक अस्पताल में बेगम [illegible] स्मारक समारोह में सम्मिलित होने के लिए वह तड़पती रह गईं। देश भर के [illegible] में माननीया सरोजनी नायडू ऐसी गवर्नर थीं जिनको भारत की जनता हृदय से [illegible] थी। आधुनिक काल में एक भारतीय महिला ने गवर्नर होकर संसार के इति[illegible] भारत का मस्तक ऊँचा उठाया है। ऐसी क्षमतावाली नारियाँ आधुनिक काल में [illegible] गिनी हैं। श्रीमती नायडू में राजनीति का गौड़ स्थान था, उनमें विद्वत्ता थी थी कवित्व-शक्ति—जिसके द्वारा वे संसार के सभ्य समाज को आनन्द-विभोर कर[illegible] थीं। महात्मा गांधी जी की शिष्या तथा परिचारिका के रूप में सरोजनी देवी ने [illegible] समाज को प्रयोगात्मक सेवा का पाठ पढ़ा था। सन् १९२५ ईसवी में कांग्रेस का [illegible] करके आपने दिखला दिया कि महिलायें भी समाज को आगे ले जा सकती हैं। [illegible] कारण है कि सरोजनी देवी युक्तप्रान्त जैसे बड़े प्रान्त की गवर्नर नियुक्त की गईं [illegible] अपनी मृत्युपर्यन्त उन्होंने उस कार्य-भार को बड़ी सफलता से निर्वाह किया। [illegible] नायडू का स्वर्गवास भारत ही नहीं, संसार के लिए बड़ी शोकग्रस्त घटना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या यह शान्ति का मार्ग है ?

रूस और अमरीका यदि समझौता कर लेंगे तो भी समस्या नहीं हल होगी

लेखक, श्री चन्द्रोदय दीक्षित

सोवियट रूस के डिक्टेटर स्टेलिन ने अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन से मिलने का तथा संसार में शांति स्थापना का प्रस्ताव किया था किंतु कुछ नहीं हुआ। इस लेख में विद्वान् लेखक ने इसी संबंध में प्रकाश डाला है और संसार में वास्तविक शांति की स्थापना के उपाय बताये हैं। लेख सामयिक और पठनीय है।

स्टालिन के शान्ति प्रस्ताव को यदि शान्ति आक्रमण कहा जाय तो बुरा न होगा, क्योंकि कोई भी शान्ति प्रस्ताव उस समय तक शान्ति प्रस्ताव का कार्य नहीं कर सकता जब तक सम्बन्धित दल एक दूसरे में शांति का विश्वास उत्पन्न न कर दें।

संसार की शांति की चिंता करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है क्योंकि युद्ध के पैशाचिक कृत्य आज की स्थिति में प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित देशों में ही प्रभाव नहीं डालते। आज संसार के एक कोने की अशान्ति सम्पूर्ण संसार को व्यग्र बना देती है। अतः आज यदि संसार में शान्ति स्थापना की समस्या पर हमें विचार करना है तो हमें उसे सम्पूर्ण संसार को प्रभावित करनेवाली एक समस्या के रूप में देखना चाहिये। आज साधारण व्यक्ति यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है कि संसार के महान् राजनीतिज्ञ शांति का नारा लगा कर युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। ट्रूमन और स्टालिन अपने अपने स्थान से शान्ति-प्रियता की घोषणायें कर रहे हैं फिर भी शांति हमारे निकट नहीं है। हमें आज की इस दुश्चक्र में फँसी हुई शान्ति की स्थिति पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये।

जहाँ तक शांति घोषणाओं का सम्बन्ध है उनसे इतना स्पष्ट हो जाता है कि संसार का अधिकांश जनमत शांति चाहता है और उसी को अपने प्रभाव में रखने के लिये विभिन्न राजनीतिज्ञ शान्ति की घोषणायें कर रहे हैं। इसके साथ ही साधारण जनता में युद्ध की सम्भावना में भी अविश्वास तथा शांति-स्थापना में विश्वास उत्पन्न हो जाता है। इन दोनों स्थितियों की चेतना संसार में शांति स्थापित करने के कार्य को सरल बनाने में सहायता देती है।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद रूस, अमरीका और ब्रिटेन में मोटे रूप में संसार के विभाजन के सम्बन्ध में समझौता सा हो गया था। उसके बाद एक ओर रूस और दूसरी ओर अमरीका के नेतृत्व में पश्चिमी योरोपीय शक्तियों का संगठन आरम्भ होने लगा। रूस ने अपने क्षेत्रों के अनेक देशों को अपने लौह-यन्त्र के अन्तर्गत छिपा लिया। अमरीका ने योरोप, एशिया, अटलांटिक और प्रशान्त महासागरों के क्षेत्रों में अपने डालर अधिनायकत्व को स्थापित किया। युद्ध की स्थिति की कल्पना करके रक्षा के अनेक उपाय किये गये। रूसी क्षेत्रों पर अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक प्रभाव डाला गया। रूस ने भी अनेक योरोपीय देशों में कम्युनिस्ट दलों के द्वारा राज्य शक्ति पर अपना अधिकार करने की अनेक असफल चालें चलीं। योरोप में असफल होने के बाद रूस ने एशियाई देशों में कम्युनिस्ट आन्दोलन को उग्र स्वरूप देना आरम्भ किया।

औद्योगिक रूप से अधिक विकसित योरोपीय देशों में जहाँ मजदूरवर्ग अधिक सजग और चेतनाशील है, जहाँ पूँजीवाद की निस्सारता प्रकट हो चुकी है वहाँ पर अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिज्म और पूँजीवाद के द्वन्द्व में कम्युनिज्म असफल हो गया और उस समय से वह पिछड़े हुए एशियाई देशों में नव स्थापित पूँजीवादी राष्ट्रीय सरकारों को पराजित करके वहाँ कम्युनिज्म लाने का षड्यन्त्र कर रहा है। यदि आज स्टालिन महोदय शान्ति का प्रस्ताव करके अमरीका को निश्शस्त्रीकरण करने तथा अन्य देशों में हस्तक्षेप न करने के लिये भी तैयार कर लेते हैं तो फिर उससे एशियाई देशों में कम्युनिस्ट आन्दोलनों को प्रसार की सुविधा मिल जाती है। अमरीका इस स्थिति को पहचानता नहीं है, सो बात नहीं है और यही कारण है कि अमरीका ने स्टालिन के ट्रूमन से मुलाकात करनेवाले प्रस्ताव का स्वागत नहीं किया है।

इसके साथ ही रूस ने अमरीका से सीधे और अकेले शांति प्रस्ताव को करके पश्चिमी योरोपीय राष्ट्रों के संगठन को छिन्न-भिन्न करने की चेष्टा की थी। यदि अमरीका रूस से संधि करने को तैयार हो जाता तो स्पष्ट है कि वह पश्चिमी राष्ट्रों का विश्वास खो देता। पश्चिमी योरोपीय राष्ट्रों में आज अमरीका के आर्थिक हित हैं जिन्हें वह किसी प्रकार भी छोड़ना न चाहेगा। पूर्वी योरोपीय देशों में रूस की स्थिति पूर्ण रूप से सुदृढ़ हो चुकी है। चीन में कम्युनिस्ट विजय की लहरें जापान हिन्दचीन, हिन्द एशिया, मलाया, श्याम, बर्मा, पाकिस्तान और भारत में कम्युनिस्ट आन्दोलनों में नवीन तरंगें उत्पन्न करने लगी हैं।

रूस जानता है कि यदि चीन में उसका प्रभाव स्थापित हो जाय तो बिना प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के ही वह समस्त एशिया पर अपने प्रभाव का प्रसार कर सकता है। अपने शांतिमय प्रसार के लिये वह यह अनिवार्य आवश्यकता समझता है कि अमरीका दूसरे देशों में हस्तक्षेप न करे।

स्टालिन का यह शांति प्रस्ताव वास्तव में एशियाई देशों पर रूस का अप्रत्यक्ष आक्रमण है। यह सोचना कि पूर्वी योरोपीय देशों में सामाजिक विकास कम्युनिज्म स्थापित करने की स्थिति में पहुँच गया है, नितान्त भ्रामक है।

एशियाई देशों में आज यदि तथाकथित कम्युनिस्ट क्रांति सफल भी हो जाय तो भी वह एशियाई देशों में समाजवाद की स्थापना नहीं कर सकती। उत्पादन के साधनों के विकास के लिए इन देशों में जिन बातों की आवश्यकता है उनके लिये हमें अभी अनेक बलिदान और कष्टमय कार्यों को पूरा करना है। स्वयं रूस के उत्पादन के साधनों को आधुनिक रूप से पूँजीवादी राष्ट्रों के समान आज भी पूर्ण रूप से नहीं किया जा सका है।

आज भी रूस की राष्ट्रीय आय अमरीका की राष्ट्रीय आय से एक तिहाई है। रूस के साधारण श्रमिक की स्थिति भी अमरीका के साधारण स्थिति के मजदूर की हालत से खराब है। जहाँ तक व्यक्ति और उसके शोषण का सम्बन्ध है यह कैसे कहा जाय कि उसकी स्थिति सन्तोषप्रद है जब कि उसकी साधारण स्थिति खराब है, उसका शोषण-क्रम जारी है। यह ठीक है कि वह पूँजीवादीवर्ग एक अलग शोषकवर्ग के रूप में नहीं रह गया है फिर भी वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी और शासन-प्रबन्ध में लगी हुई नौकरशाही का अपना एक अलग वर्ग सा बन गया है।

हम यह स्वीकार करते हैं कि पूर्वी एशियाई देशों की राष्ट्रीय सरकारों को अपनी समस्याओं का इस प्रकार हल करना चाहिये जिससे मनुष्य के शोषण का अंत किया जा सके। शोषण-रहित समाज की स्थापना वैदेशिक हस्तक्षेप के फलस्वरूप स्थापित नहीं की जा सकती। उसके लिये तो प्रत्येक देश के आर्थिक विकास की नितान्त आवश्यकता है। उसके लिये राष्ट्रीय शरीर के समस्त अंगों को प्रयत्नशील होना पड़ेगा।

विदेशों के हस्तक्षेप से न तो किसी व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है और न किसी व्यवस्था को लादा जा सकता है। दोनों ही स्थितियों के लिये राष्ट्रीय तत्त्व ही प्रधान स्थान रखते हैं। चीन का हमारे सामने सुन्दर उदाहरण है। अमरीका अपनी करोड़ों की सम्पत्ति का हवन करके भी च्यांगकाई शेक की गिरती दीवार को बचा नहीं सका है। इसके साथ ही अमरीका के प्रभाव में रहकर भी ब्रिटेन आज अनिवार्यतः समाजवादी पद्धति की ओर अग्रसर हो रहा है।

संसार के विभिन्न देशों के आर्थिक एवं सामाजिक विकास से आँखें बन्द करके दूसरों को धोखा देनेवाली घोषणाओं को हमें उनकी आर्थिक याथार्थता में विश्वास नहीं करना चाहिये।

रूस अथवा अमरीका दोनों की ओर से जो घोषणायें की गई हैं वे अपने एकदेशीय प्रभाव को बढ़ाने के लिये ही की गई हैं।

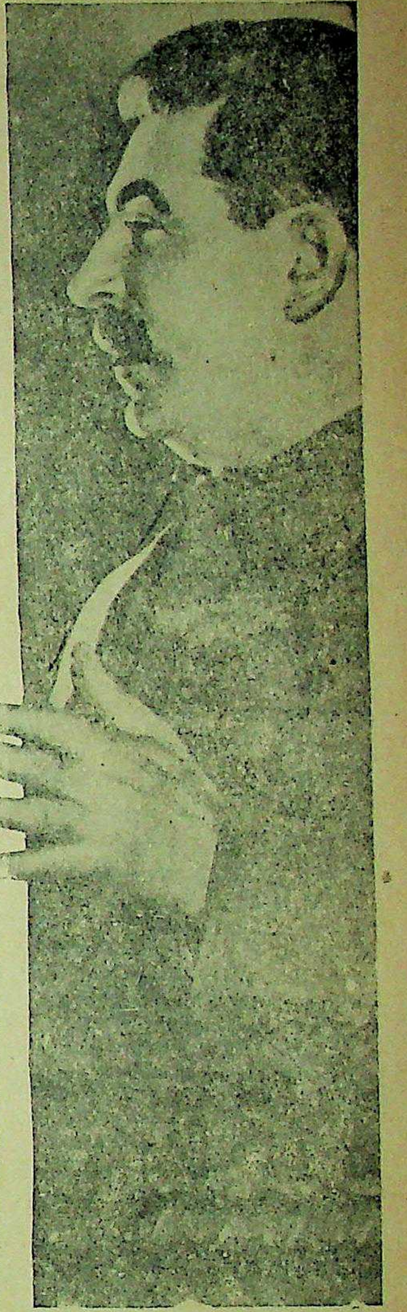

सोवियट रूस के सर्वेसर्वा। मोशियो स्टेलिन

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का यह मार्ग नहीं है। यदि कोई देश अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित करना चाहता है तो उसे ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिये जिसमें एक दूसरे पर विश्वास उत्पन्न किया जा सके। रूस और अमरीका दोनों ही जिस मार्ग को अपना रहे हैं वह शान्ति स्थापित करनेवाला मार्ग नहीं है।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की स्थापना तभी सम्भव है कि विभिन्न राष्ट्रों की सजग जनता इस चेतना के साथ शान्ति स्थापना के कार्य को आरम्भ करे कि सभी देश समान हैं, उनको अपनी राष्ट्रीय परिस्थिति के अनुसार विकास करना चाहिये और विभिन्न राष्ट्रों को रचनात्मक कार्यों में एक दूसरे के साथ पूर्ण सहयोग देना चाहिये।

५००) महीना कमाइये
हमारे फैन्सी माल के लिए ५० प्रतिशत तक कमीशन पर एजेन्ट चाहिये। एजेंसी की शर्तों के लिये लिखें। अंग्रेजी या हिन्दी में पत्र व्यवहार करें
फैन्सी गुड्स स्टोर्स पो० बक्स ४३, अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरे महासमर की तैयारी

जर्मनी और जापान को पुनः शक्तिशाली बनाने की योजनायें चल रही हैं

लेखक, पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी

यूरोप की वर्तमान परिस्थिति, साम्राज्यवादी राष्ट्रों की स्वार्थपरता तथा गुटबंदी देखकर यह अनुमान हो रहा है कि तीसरे महायुद्ध का अवसर समीप आता जा रहा है। तीसरा युद्ध सोवियट रूस के विरुद्ध होगा। ऐसे राष्ट्र जो पिछले महायुद्ध में पंगु बना दिये गये हैं, साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा पुनः मैदान में उतारे जायेंगे। हिन्दी के प्रसिद्ध पत्रकार वाजपेयी जी ने इस लेख में तीसरे महायुद्ध की भावी स्थिति का सुन्दर वर्णन किया है जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

जनरल स्टालिन के शान्ति सम्मेलन प्रस्ताव को प्रेसीडेंट ट्रूमन ने ठुकरा दिया

अभी दूसरे महासमर के विजेताओं और विजितों में सन्धियाँ भी नहीं हो पाईं कि तीसरे महासमर की चर्चा ही जोरों से चल पड़ी, प्रत्युत तैयारियाँ भी होने लगीं। इससे स्पष्ट हो गया कि पिछले दो महासमर व्यर्थ हुए और उनसे किसी समस्या का भी समाधान नहीं हुआ। हाँ, इतना अवश्य हुआ कि अमेरिकन संयुक्त-राज्य संसार का सर्वश्रेष्ठ राज्य बन गया और वह सार्वभौम (संसार भर का स्वामी) बनाने का यत्न करने लगा। पहला महासमर जर्मनी ने इस उद्देश्य से छेड़ा था कि उसे रहने के लिये जो स्थानाभाव है, वह दूर हो जाय। ब्रिटेन का राज्य संसार में फैला हुआ था और जर्मनी चाहता था कि यदि यूरोप के पूर्व-पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में उसका राज्य नहीं बढ़ाया जा सकता, तो उसे कुछ उपनिवेश ही मिल जायँ। उधर ब्रिटेन देखता था कि व्यापार में जर्मनी हमारा बड़ा प्रतिस्पर्धी है। यदि हम उसे हरा सकेंगे, तो हमारा व्यापार बे-रोक-टोक चलता रहेगा। जर्मनी का माल ब्रिटिश माल से सस्ता और अच्छा होता था, इसलिये ब्रिटिश साम्राज्य में भी यह इसके मुकाबले में खूब बिकता था।

ब्रिटेन का उद्देश्य किसी अंश में सफल हो गया, क्योंकि जर्मनी कुछ समय के लिये पस्त हो गया था। परन्तु उसके दो और प्रतिद्वन्द्वी निकल आये, एक जापान और दूसरा अमेरिका। जापान सस्ता माल तैयार करने में संसार में अद्वितीय है। वह बम्बई से रुई ले जाकर और उसका कपड़ा बनाकर बम्बई में ही बम्बई की मिलों से सस्ते दामों पर बेचने लगा। उसका रेशमी कपड़ा तो इतना सस्ता था कि भारत-सरकार ने उसका आना ही रोक दिया था। फिर भी फ्रेंच उपनिवेश चंद्रनगर से होकर जब जापानी कपड़ा कलकत्ते आने लगा, तब बंगाल सरकार ने उसे रोकने को चौकी बैठा दी। उसका फल यह हुआ कि चन्द्रनगर में रेशमी कपड़ा सिलाकर लोग कलकत्ते लाने लगे, क्योंकि सिले कपड़े की रोक न थी। ब्रिटिश घर्म घड़ी सैंट टामस और अमेरिकन अबसोनिया बड़ी महँगी थीं। इनसे चौथाई दामों पर जापानी घड़ियाँ धर्म घड़ी, जेब घड़ी और हाथ घड़ी आईं और खूब बिकीं। दस दस पैसे की फाउन्टेनपेनें—निर्भरिणियाँ आईं, जो गरीब से गरीब के हौसले पूरे करने लगीं। जापानी माल भारत के बाजार में भर पड़ा। तरह तरह की मशीनें आईं, जिनके सामने ब्रिटिश माल का प्रचार बन्द-सा हो गया। ब्रिटिश माल की कुछ जगह जापान ने और कुछ अमेरिका ने ले ली। जर्मनी को हरा कर भी अँगरेज अपने व्यापार की रक्षा न कर सके। इस व्यापार-युद्ध में हार गये।

रूस में कम्यूनिज्म व बोलशेविज्म हो जाने से पूँजीवादी राष्ट्रों को डर लगा कि कहीं सारा संसार बोलशेविक न हो जाय। इसलिये संसार के १४ देशों ने उस पर चढ़ाई की जिनमें अँगरेज और अमेरिकन भी शामिल थे। पर रूस ने अकेले ही सबका सामना करके मार ही नहीं भगाया, इनके कुछ शस्त्रास्त्र भी छीन लिये, जो वहाँ एक कौतुकागार में रखे हैं। इस तरह मुँह की खाने पर अँगरेजों और अमेरिकनों ने जर्मनी को फिर उठाने का यत्न किया और जर्मनी ने उठकर ऐण्टी-कोमिनटर्न ऐक्ट कम्यूनिज्म इंटर नेशनल के विरुद्ध जर्मनी, जापान और इटली का मोर्चा लगाया। इसे ब्रिटेन, अमेरिका आदि की सहानुभूति और मौन आशीर्वाद प्राप्त था, क्योंकि अपने भोलेपन में इन्होंने समझ लिया था कि यह गुट रूस के विरुद्ध है इसलिये अप्रत्यक्ष रूप से हमारा हितसाधन ही करेगा। यही कारण है कि जापान के मंचूरिया पर, इटली के अबीसीनिया पर और जर्मनी के राइनलैण्ड पर अधिकार करने तथा स्पेन में इन तीनों के जनरल फ्रांको की सहायता करने पर शांति के ठेकेदार शांत रहे। जर्मनी, जापान और इटली की संज्ञा धुरीराष्ट्र हुई और इन्होंने अपनी आकांक्षायें पूरी करनी चाहीं। जर्मनी लेबेन्सराम या रहने की जगह चाहता था, क्योंकि पहले महासमर के फलस्वरूप उसके उपनिवेश भी छीने गये थे। जापान समझता था कि प्रशान्त पर हमारा प्रभुत्व होना चाहिये, क्योंकि इसकी जनसंख्या तो बढ़ रही थी, पर उसे न तो रहने को जगह थी और न खाने के लिए अन्न उपजाने की भूमि। राजी-खुशी कोई कुछ देता नहीं, यह सोचकर उसने चीन के भागों पर किसी न किसी बहाने अधिकार करना शुरू किया। चीन चिल्लाता रहा, पर संसार में शांति रखने के लिए जन्मा राष्ट्रसंघ भी कानों में तेल डालकर सो रहा। जर्मनी ने जब देखा कि पश्चिमी राष्ट्र क्लीव हो रहे हैं, तब उसने पोलैण्ड पर चढ़ाई कर दी और इस प्रकार द्वितीय महासमर का सूत्रपात हुआ। फ्रांस का पतन होने ही वाला था कि इटली भी निम्बू निचोड़कर साथी बन गया। इस बीच में जापान की तैयारी ही नहीं जारी थी, वह अंगरेजों और फ्रेंचों की सहनशीलता की परीक्षा करने के लिए इनका अपमान करने में भी नहीं चूकता था। सवा दो साल तक चुपचाप तमाशा देखकर ७ दिसम्बर, १९४१ को जापान ने पर्ल हारबर पर आक्रमण करने के साथ ही ब्रिटेन और अमेरिकन संयुक्त राज्य दोनों से एक साथ युद्ध-घोषणा कर दी।

द्वितीय महासमर के फलस्वरूप जर्मनी और जापान तो तबाह हो गये, पर जिस रूस को कुचल डालने की ब्रिटेन और अमेरिका की अभिलाषा थी, वह प्रबल हो उठा। 'लिखत सुधाकर लिखि गा राहू' देखकर मित्रों को बड़ा परिताप हुआ। जर्मनी और जापान छब्बे बनने गये थे, पर दुबे ही रह गये। उपाय भी क्या था? परन्तु ब्रिटेन और अमेरिका रूस की बढ़ती से कुढ़ गये और हिटलर का यह वाक्य याद करने लगे कि इस महासमर में जीत या तो जर्मनी की होगी या रूस की। हिटलर ने चाहा था कि पश्चिम के सब राष्ट्र मिलकर रूस पर चढ़ आयें, पर उस समय ब्रिटेन और अमेरिका की समझ में यह बात नहीं आई और वे जर्मनी तथा जापान

प्रेसीडेंट ट्रूमन ने यूरोप से अम[illegible] सेनाओं को अमरीका वापस बुलाया [illegible] को नेस्तनाबूद करने में लग गये, जर[illegible] जो बड़े-बड़े जनरल और राजकार्य-धु[illegible] थे, उनका विचार करने को इन्होंने अ[illegible] र्राष्ट्रीय न्यायालय का ढोंग र[illegible] जापान के नागासाकी और हिरो[illegible] शहरों पर ऐटम बम चला कर अमेरि[illegible] जापानी धन-जन का नाश किया। [illegible] भी जब सन्तोष न हुआ, तब मंत्रियों [illegible] जनरलों पर मामले चलाये। जर्मनी [illegible] चार टुकड़े किये और जापान को अमे[illegible] जनरल मैकार्थर के शासनाधीन किया [illegible] पीछे समझ में आया कि यह नीति [illegible] नहीं है।

इसलिये अब जर्मनी और जापान [illegible] उठाये जा रहे हैं। गत महासमर के [illegible] जर्मनी उठाया गया था। उसका फल हुआ, संसार जानता है। इस [illegible] जर्मनी और जापान दोनों 'उठाये ज[illegible] हैं। क्यों? इसलिये कि वे सबल होकर [illegible] के सामने ताल ठोंककर खड़े हो [illegible] एशिया और यूरोप दोनों महादेशों [illegible] का आतंक है। चीन में कम्यूनिस्टों ने [illegible] के हौसले पस्त कर दिये। वहाँ कम्यू[illegible] शासन किसी के रोके नहीं रुकता [illegible] बुढ़िया मरने का नहीं, यम के पहुँचने [illegible] डर है। हिन्देशिया में जो कुछ हुआ या हो रहा है, उसे हालैंड की ही करतू[illegible] समझना चाहिये। उसमें ब्रिटेन, [illegible] हालैंड ही नहीं, अमेरिका का भी हाथ [illegible] मालय, वीतनाम और हिन्देशिया [illegible]

शेष पेज १८ पर दे[illegible]

मिस्टर डीन अचसन संयुक्तराज्य अमरीका के नये स्टेट मन्त्री नियुक्त हुए हैं।

ब्रिटेन के प्रधान-मन्त्री मेजर एटली [illegible] के हवाई अड्डों का निरीक्षण कर रहे [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रनिर्माण में सक्रियता

वास्तविक श्रम की प्रतिष्ठा और आर्थिक दृढ़ता कैसे हो ?

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

यहाँ के रहनेवालों में अपना कार्य स्वयं करने की भावना का अभी उदय नहीं हुआ। इससे बेकारी बढ़ी रहेगी, उत्पादन कम होगा; अतः राष्ट्र-निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि देश के शिक्षित नवयुवक लज्जा त्याग कर कार्यों में जुट पड़ें। उन्हें कौन-सा मार्ग ग्रहण करना चाहिए। इसका स्पष्ट चित्रण इस लेख में है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

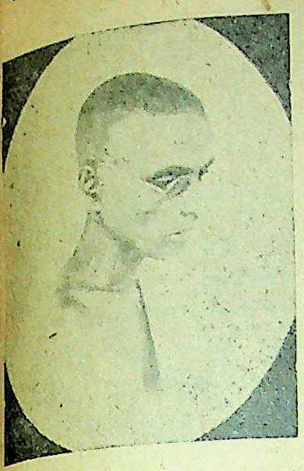

राष्ट्र-निर्माण की ओर सक्रिय कदम बढ़ाने वाले आचार्य विनोबा भावे।

वर्षों की अनवरत साधना व तपस्या के पश्चात् हमारा हिंदुस्तान आजाद हुआ। अब हमारे सामने मुख्य प्रश्न यह है कि इसे आगे कैसे बढ़ाया जाय। सभी चिंतित हैं। हमारे नेतागण अक्सर कहा करते हैं कि देश को राजनैतिक आजादी मिली है, पर अभी तो हमें आर्थिक व सामाजिक क्रांति इस देश में करना है। देखने में आता है कि हमारे देश में इस समय कुशल कारीगरों का बहुत ही अभाव हो गया है, क्योंकि बहुत से कारीगर पाकिस्तान चले गये हैं। प्रसन्नता की बात है कि भारत सरकार ने इस दिशा में प्रयत्न शुरू किया है कि देश में कारीगरों को तैयार किया जाय, उन्हें ट्रेनिंग दी जाय ताकि वे देश की औद्योगिक प्रगति में हमारे सहायक हों।

केन्द्रीय सरकार के श्रमिक मन्त्री माननीय जगजीवनराम ने हाल ही में बिलासपुर के निकट कोनी नामक स्थान में केन्द्रीय ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट का उद्घाटन किया जो कि स्वाधीन भारत में अपने ढंग की सर्वथा अनोखी व उपयोगी ट्रेनिंगशाला कही जायगी। देश के नवयुवकों को चाहिए कि वे बी० ए० या एम० ए० पास करने के पश्चात् क्लर्की न करें, किन्तु वे कोई ऐसा हुनर सीखें जिससे वे देश के कल-कारखानों में कार्य कर सकें। पता नहीं क्यों श्रम करने से हमारे पढ़े-लिखे बन्धु सकुचाते हैं। देखा जाय तो श्रम ही हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। श्रम करने से अगर हम दूर भागेंगे तो हमारा उद्धार कभी नहीं हो सकता। मिहनत करने में हम अपने को ओछा क्यों समझते हैं? जब तक हमारे देश के नवयुवकों में यह भावना रहेगी, हमारा देश किसी भी हालत में आगे न बढ़ सकेगा। इस समय देश में बेकारी बढ़ रही है। अनेकों बी० ए० पास युवक नौकरियों की तलाश में चक्कर काट रहे हैं—पर वे परिश्रम करना नहीं चाहते। वे कोई व्यापार करना नहीं चाहते—वे चाहते हैं किसी आफिस में क्लर्क बनना।

आज के विद्यार्थी

उस दि- कामर्स कालेज वर्धा के मैदान में विश्वविख्यात व्यायामपटु प्रो० नायडू के शारीरिक प्रयोग होनेवाले थे। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी आनेवाले थे। प्रो० नायडू मोटर रोकनेवाले थे। शारीरिक प्रयोग शुरू होने के पूर्व कुछ विद्यार्थी उस जगह आये जहाँ कि एक युवक मैली पेंट और सफेद हाफ शर्ट पहने खड़ा था। वह अपनी टूटी-फूटी मोटर सुधार रहा था। मोटर पुरानी थी। उस युवक को देखकर कुछ विद्यार्थियों ने कहा कि प्रो० नायडू क्या यही मोटर रोकेंगे और हँसने लगे। उनकी हँसी उस युवक को लक्ष्य कर थी जो मैली पेंट और सफेद हाफ शर्ट पहने हुए था। विद्यार्थी तो हँसते हुए चले गए किन्तु वह युवक वहीं खड़ा रहा। इन पंक्तियों का लेखक वहीं खड़ा था। उस युवक ने कहा कि कालेज के ये विद्यार्थी मुझे देखकर इसलिए हँसे कि मैं टूटी-फूटी मोटर सुधार रहा था और मेरे कपड़े उनके जैसे शुभ्र न थे। क्या ये हँसनेवाले देश का कुछ भला करेंगे? मैं तो बहुत कम पढ़ा-लिखा हूँ किन्तु मोटर सुधारना जानता हूँ और दिनरात परिश्रम करता हूँ। क्या परिश्रम करनेवाले लोग पढ़े-लिखे बाबुओं से कम दर्जे के हैं। उस युवक को अपने पर गर्व था कि वह कारीगर था। मैंने उस युवक से कहा कि कौन कहता है कि परिश्रम करना खराब है। श्रम की प्रतिष्ठा का अपना महत्त्व है। इन विद्यार्थियों को अभी कुछ नहीं सूझ रहा, क्योंकि इनके घर से इनके बूढ़े माँ-बाप अपना पेट काटकर हर मास रुपया भेजते हैं और यह मजा करते हैं।

श्रम देवता है

आचार्य विनोबा ने तो श्रम को देवता माना है। आज तो श्रम की प्रतिष्ठा केवल साहित्य में है इससे कोई फायदा नहीं। श्रम का अधिक मूल्य देना ही उसकी वास्तविक प्रतिष्ठा बढ़ाना है और इसका आरम्भ हम आप सबको मिलकर करना है। परिश्रम का महत्त्व प्राचीन काल में समझा जाता था। आचार्य विनोबा ने लिखा है कि हिन्दुस्तान में शरीरश्रम को जीवन में प्रथम स्थान दिया गया था और उसके साथ यह भी निश्चय किया गया था कि वह परिश्रम चाहे जिस प्रकार का हो—कातने का हो, बढ़ई का हो, रसोई बनाने का हो, सब का मूल्य एक ही है। भगवद्-गीता में यह बात साफ शब्दों में लिखी है। ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो या शूद्र हो, किसी को चाहे जितना छोटा या बड़ा काम मिला हो, पर अगर उसने उस काम को अच्छी तरह किया है तो उस व्यक्ति को संपूर्ण मोक्ष मिल जाता है। मतलब यह कि हर एक उपयुक्त परिश्रम का नैतिक, सामाजिक और आर्थिक मूल्य एक ही है। जो मजदूरी करते थे, उनको हमने शूद्र समझ लिया। हमने उनसे अधिक से अधिक मजदूरी करवाई और उनको कम से कम खाने को दिया। उनका सामाजिक दर्जा ही न समझा। उन्हें कुछ भी शिक्षा नहीं दी। वह मजदूरी ही करते रहे। आज क्या हो रहा है—आज बुद्धिजीवी लोग मजदूरों का शोषण कर रहे हैं। गांधी जी ने श्रम की प्रतिष्ठा समझी और उन्होंने मानव मानव के बीच जो छोटे बड़े के भेदभाव थे—उन्हें नष्ट कर दिया और वे स्वयं अपने हाथों पाखाना सफाई करते थे और नाली साफ करते थे। सेवाग्राम आश्रम में तो आज सभी आश्रमवासियों को पाखाना सफाई व नाली सफाई का काम करना पड़ता है।

दूसरों का भय क्यों ?

मेरे कहने का मतलब यह है कि इधर अँगरेजों के राज्यकाल में हम परिश्रम से दूर भागते रहे और अपनी प्राचीन संस्कृति व सभ्यता को भूल गये। जो परिश्रम करता था, उसे हम ओछा समझते थे, मैं अपना उदाहरण देता हूँ। सन् ३६ में मैं उन्नाव जिले के अपने गाँव में गया। उसी साल मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। एक बार मैंने अपने खेत से अपने ही हाथों से कड़बी काटी और बोझ सिर पर लादकर मैं घर आ रहा था। मेरी सफेद लम्बी धोती व धुला हुआ हाफ शर्ट देखकर गाँव के लोग कहने लगे कि यह देखो तमाशा—पढ़े फारसी और बेचें तेल। मैट्रिक पास करके वर्धा से कुछ दिन के लिए आये हैं और गाँव में कड़बी काटते हैं। मुझे गाँववालों की बातों से कुछ दुःख जरूर पहुँचा, किन्तु मैंने कहा कि क्या अपना कार्य करने में भी हमें लज्जा आनी चाहिए। मैं अगर कड़बी काटकर घर लाता हूँ तो इसमें बुरा क्या है? जब तक मैं गाँव में रहा बराबर कड़बी काटता रहा और गाँव के बाहर घूरे में कभी कभी घर की गायों व भैंसों का गोबर भी डाल आया करता था। बात दीखने में संभवतः छोटी दीखती हो—पर इसका अपना महत्त्व है। हम श्रम से क्यों घबड़ायें?

नवयुवक सोचें

देश में उद्योग-धन्धों में वृद्धि होने से देश का उत्पादन बढ़ेगा और उत्पादन बढ़ने से देश तरक्की करेगा। कोनी इंस्टिट्यूट के प्रिंसिपल मेजर डी० एल० देशपांडे ने बताया है कि आम तौर पर हम भारतीय बने-बनाये रास्ते पर चलना पसन्द करते हैं और यद्यपि हम जानते हैं कि पुराना रास्ता हमें किसी भी संतोषजनक वृत्ति की ओर नहीं ले जाता, फिर भी नये क्षेत्रों में जाने का साहस नहीं करते। हममें से प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षा सरकारी नौकरी प्राप्त करना है, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, और हममें से बहुत ही कम अनुपात में इस इच्छा की पूर्ति कर पाते हैं। चौगुने वेतन के साथ फिटर की अपेक्षा क्लर्क होना हम अधिक इज्जतदारी समझते हैं। हमारे नवयुवकों का पतन हो रहा है। यदि हमें आर्थिक तथा राजनैतिक तौर पर जीवित रहना है और अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपना स्थान बनाना है तो हमारे नवयुवकों को नये क्षेत्रों में साहसपूर्वक प्रवेश करना होगा तथा उत्पादक कार्य के लिए निपुणता हासिल करनी होगी।

'नेशनल एम्प्लायमेंट सर्विस' का कार्य अगर बढ़ता गया तो आजाद हिन्दुस्तान की रूप-रेखा ही बदल जायगी। डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने विश्वास प्रकट किया है कि "एम्प्लायमेंट सर्विस नवीन भारत के निर्माण में, जो कि हमारी नजरों के सामने बन रहा है, अपना पार्ट पूरी तरह से अदा करेगा।" तांत्रिक और औद्योगिक शिक्षण केन्द्र हमारे देश की रीढ़ के समान हैं। राष्ट्र की सामाजिक तथा आर्थिक सुरक्षा के लिए बेकारी एक खतरा है। कार्य के द्वारा अपनी आजीविका कमाना प्रत्येक व्यक्ति का स्वाभाविक अधिकार है और जहाँ तक संभव हो उसे काम देना समाज का कर्तव्य है।

दूसरों की कमाई पर जीनेवाले

हम अगर अपने देश में रहनेवालों पर नजर दौड़ावेंगे तो देखेंगे कि लाखों व्यक्ति बिना परिश्रम किये दूसरों की कमाई पर जी रहे हैं जब कि पाश्चात्य देशों में ऐसा नहीं होता। सब कमाते हैं और खाते हैं। देश के लाखों साधु-वेषधारी क्या देश

शेष पेज १६ पर देखिए

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और श्रम मंत्री माननीय श्री जगजीवन राम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहकारी आन्दोलन किधर ?

राजनीतिक दाँव-पेंचों से जनता की नैतिक शक्ति कमजोर ही होगी

लेखक, श्री केशव पांडेय

आज तक सहकारिता के जितने आन्दोलन चलाये गए हैं प्रायः असफल होते रहे हैं; क्योंकि ऐसे आन्दोलन को जनता की अभिरुचि के अनुसार चलाने से ही सफलता मिल सकती है। सहकारिता की आवश्यकता क्या है? उसे असफलता क्यों प्राप्त हुई और सफलता कैसे मिल सकती है? इन प्रश्नों पर लेखक ने बड़े ही विद्वत्तापूर्ण ढंग से प्रकाश डाला है। लेख सुन्दर और पठनीय है।

मिल-जुलकर काम करना आदमी की ही नहीं और भी कई जीवों की विशेषता है। सहयोग द्वारा काम करने में जो भारी सुविधा हो जाती है उसको देख पाने के लिए बहुत विकसित बुद्धि की आवश्यकता नहीं होती। हम दिन-प्रतिदिन यह देखते हैं कि बहुत से काम ऐसे हैं जिनको अकेले कर पाना आदमी की सामर्थ्य के बाहर की बात है लेकिन उन्हें दूसरों के साथ मिलकर पूरा करके बहुत सी जरूरतें पूरी की जा सकती हैं। इतना ही नहीं कभी कभी अकेले ही पूरा हो सकनेवाले कामों को भी अगर मिल-जुलकर किया जाता है तो उनसे प्राप्त होनेवाला फल अपेक्षतया बहुत अधिक होता है।

यह सहकारिता का सिद्धांत सामाजिक कामकाजों के किसी भी क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होता है—चाहे राजनीति हो अथवा अर्थनीति! लेकिन सहकारिता के लिए चलाए गए आन्दोलनों में समाज की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही सहकारिता की जरूरत पर अधिक जोर दिया जाता है। इस एकांगी दृष्टिकोण के कारण उस आन्दोलन की सफलता के मार्ग में बहुत सी बाधाएँ आ खड़ी होती हैं। आज आवश्यकता है 'सहकारिता' को सामाजिक कार्य-कलापों के प्रत्येक क्षेत्र में प्रधानता देने की। तभी हमारे विभिन्न सामाजिक आदर्श पूरे हो सकेंगे।

आज 'जनतन्त्र' जैसा सुन्दर राजनैतिक आदर्श इस 'सहकारिता' की भावना के अभाव के कारण ही प्राप्त नहीं किया जा सका है, जब कि 'आदमी आदमी को हर तरह से बराबर' बना देने की क्षमता समाज में उत्पन्न हो चुकी है। एक समय था जब मनुष्य की सृजनशीलता इतनी विकसित नहीं हो पाई थी कि समाज के हर सदस्य के लिए भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सारे साधन सुलभ बनाये जा सकें। और तब 'दुनिया का हर आदमी बराबर है' वाला आदर्श पूरा नहीं किया जा सकता था। तब ढाके की महीन मलमल के एक थान के बनने में इतना समय और श्रम लगता था कि उसको हर आदमी की पहुँच की अन्दर की चीज बना सकना असम्भव था।

लेकिन पिछले सौ वर्षों की यांत्रिक उन्नति में 'आर्थिक समानता' के आदर्श को (जो जनतन्त्र की एक आवश्यक शर्त है) व्यावहारिक रूप दे सकने की क्षमता आदमी में पैदा कर दी है।

आज संसार के हर काम कर सकनेवाले के कुछ ही घंटों (पाँच या छः) के श्रम द्वारा, मशीनों की सहायता से इतना उत्पादन किया जा सकता है जिससे सभी लोगों को जीवन-सुख की सारी सुविधायें प्रदान की जा सकें। अणुशक्ति का अनिश्चित भंडार पाकर तो आज मानव स्वर्ग की कल्पना तक को वास्तविकता का रूप देने में समर्थ हो चुका है! लेकिन......

लेकिन वह फिर भी अभाव-ग्रस्त है—भूखा है, नग्न है, उसकी छोटी सी छोटी लालसा भी पूरी नहीं हो पाती है! आखिर 'क्यों?'

उसका कारण है आदमी के अन्दर वह क्षुद्र संस्कार जो उसमें युगों से अभावमय जीवन बिताते बिताते आ गया है। उस क्षुद्र मनोवृत्ति के उत्पन्न होने के कारण, वास्तविक अभाव अथवा उसकी आशंका, दोनों ही रहे हैं। वह मनोवृत्ति क्या है? वह है जीवकोपार्जन के साधनों पर एकाधिकार कायम कर लेने की चाह। यही कारण है कि पिछली शताब्दी की वैज्ञानिक उन्नति और औद्योगिक विकास ने ऐसी धारा पकड़ ली जिससे सत्ता और सम्पत्ति दोनों के संकेन्द्रण—एकाधिकारण को प्रोत्साहन मिला। यन्त्र-चातुरी ने भौतिक अभावों को दूर करने की सम्भावना तो पैदा की, लेकिन आदमी के पुराने अभावजनित संस्कारों ने उसे सबके लिए सुलभ नहीं होने दिया। कल्पवृक्ष पाकर भी जैसे उसे सार्वजनिक हित के लिए छोड़, व्यक्तिगत अधिकार की वस्तु बना दिया गया; मानो आदमी को उस कल्पवृक्ष की 'सब कुछ दे सकनेवाली' क्षमता में विश्वास ही न हुआ हो!

जिन दिनों किसी साधन से प्राप्त होनेवाले फलों का परिमाण सीमित था—स्वल्प था—उन दिनों उस पर एकाधिकार जमाने की मनोवृत्ति स्वाभाविक थी, पर जब वह साधन ऐसा हो गया हो जिससे प्राप्त होनेवाले फलों का परिमाण असीम हो—अथवा सबके लिए पर्याप्त हो—उस समय उस पर एकाधिकार की मनोवृत्ति का अर्थ होता है उस साधन की शक्ति में विश्वास का अभाव। और आज के युग में यह विश्वास-हीनता एक बड़ी समस्या हो रही है। अगर हम आदमी को उसकी इस संकीर्ण मनोवृत्ति से छुटकारा दिला सकें—उसको अपनी असीम शक्ति और सृजनशीलता का विश्वास दिला सकें तो आज की अनेक समस्याएँ सुलझ जायें।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की ही बात लीजिये। आज जो युद्ध की इतनी बातें सुनने में आ रही हैं क्या उनके पीछे आदमी की शान्ति की भूख नहीं छिपी है? शान्ति—जो अपने 'रोटी कपड़े' का निश्चित प्रबन्ध हो जाने पर महसूस की जाती है! साम्राज्य बनाए रखने के प्रयत्न, दूसरे देशों पर अपना प्रभाव डालने का प्रयत्न और विरोधी देशों को नीचा दिखाने का प्रयत्न इन सबके पीछे 'अपनी रोटी का सवाल' छिपा है। आज जैसे लोग यह समझते हों कि बिना दूसरों को गुलाम बनाए, बिना दूसरों की 'रोटी' छीने वे स्वयं सुखी नहीं हो पाएँगे! पर क्या वे यह जानकर भी, कि उनके अन्दर ऐसी क्षमता आ गई है कि वे आपस में मिल-जुलकर थोड़े से समवेत श्रम द्वारा इतनी सम्पत्ति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे दुनिया के हर आदमी को ऐश्वर्य की सारी सामग्री दी जा सकती है, ऐसे ही युयुत्सु—जंग के भूखे—बने रहेंगे? धनहीनता के कारण कृपण बने हुए आदमी के सम्मुख कुबेर का खजाना खुल गया है फिर मानो उसे विश्वास नहीं हो सका है वह भंडार अक्षय है और शायद इसीलिये वह आज भी 'दमड़ी के पीछे चमड़ी' गँवाने को उद्यत है? पर क्या जिस दिन उसे अपने सामने खुले उस भण्डार की अक्षमता का विश्वास हो जायगा उस दिन भी वह ऐसा ही कृपण बना रहेगा? नहीं। वह उदार बनेगा—ऐसा उदार जैसा वह स्वयं न बन पाने के कारण ईश्वर को मानता आया है। मानव युद्ध नहीं ... का भूखा है। वह युद्ध भी शांति के ... ही करता है।

आज हमारे देश में चारों ओर ... न्तोष की आग भड़क रही है! ... राजनीतिक आन्दोलनों में सत्ता-प्राप्ति ... बाद ही सारी मुश्कलाहटें हल कर ... का जो आश्वासन विभिन्न राजनैतिक ... की ओर से मिलता आ रहा था ... फलस्वरूप सरकार पर ही अपने सब ... के लिये निर्भर रहने की वृत्ति लोगों ... उत्पन्न हो गई। लोग बच्चों की तरह ... कार को "माई-बाप" समझने लगे ... पर सरकार के लिये, चाहे उसमें ... ही ईमानदार और काबिल ... क्यों न हों; जनता की सारी आवश्यक... ताओं को पूरा कर सकना संभव नहीं ... आज मौजूदा सरकार के विरुद्ध अस... लोगों को भड़काकर स्वयं अपने ... राजनीतिक दलों को श्रेष्ठतर सिद्ध ... वाले लोग, ईमानदार होते हुए भी ... को धोखा देते हैं। कारण, वे यह ... समझते कि सरकार जनता के लिये ... काम नहीं कर सकती—यह सम्भव ... नहीं उसके लिये तो जनता को खुद ... ठित होना पड़ेगा—भिन्न भिन्न तरह ... सहकारिता के सिद्धान्त पर बनी ... समितियों में जिनके द्वारा उसके ... काम होंगे।

शिक्षा, मनोरंजन, उद्योग, (... या बड़े पैमाने का) उत्पादित सामग्री ... उसे भोग करनेवालों में वितरण, ... और शहरों की स्वास्थ्य-व्यवस्था ... ऐसे ऐसे अनेक काम हैं जिन्हें जनता ... अपनी समितियाँ सुन्दर ढंग से ... सकती हैं; और इस तरह होनेवाले ... कामों में कितनी सरलता रहेगी इ... कल्पना की जा सकती है।

पर इन सबके ऊपर एक जरूरी ... है। वह यह कि उन संगठनों की ... उनके प्रति एक विवेकशील आस्था ... रूप में होनी चाहिये, ऊपर से लादे ... कानूनी दबाव के रूप में नहीं।

और जनता का कल्याण उस "वि... शील आस्था" को उसमें उत्पन्न करने ... जिसके लिये राजसत्ता का लोभ छोड़ ... जनता की मानसिक उन्नति के लिये ... बद्ध होना पड़ेगा—वह काम उन्हें भ... कर, उपद्रव मचाकर तथाकथित 'क्रा... कराने से नहीं हो सकेगा। जनता को ... निर्भर बनाने के मार्ग में आनेवाले ... रोधों के खिलाफ लड़ना ही सचमुच ... राजनीति होगी क्या लम्बे लम्बे व्याख्यान ... झाड़कर 'वोट' माँगनेवाले राजनीतिक ... इस ओर ध्यान देंगे?

* * *

सहयोगी गोशालाओं द्वारा नागरिकों को शुद्ध दूध और मक्खन पहुँचाने की योजना।

जीवन में नई उमङ्ग लाने के लि...
खोई जवानी पाना चाहें तो
"स्त्री प्रेम रहस्य" मुफ्त
मँगावें। पता—पी० बी० ३७२, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

तमसोमा ज्योतिर्गमय

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

कभी कभी मानव-स्वभाव कठोर होकर इतना ज्ञानशून्य हो जाता है कि वह संयम और दयालुता का स्मरण नहीं रखता। संसार में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो विवेक-पूर्ण होकर अपनी भूल को भी सुधार लेता है। यही भूल अन्धकार है जो अज्ञानता के आवरण में ढकी है। कहानी में इसी तथ्य को चित्रित किया गया है। कहानी सुन्दर, मनोवैज्ञानिक और पठनीय है।

इस संसार के भोग्य पदार्थों में कौन-सा विशिष्ट है और कौन-सा अधिक सुखदायक, निःसन्देह, कल्लू भंगी ने इसका कभी भी अनुमान नहीं किया। बचपन बीता तो उसने अपने जिजमानों के यहाँ कमाने और सफाई करने के निमित्त झाड़ू और टोकरा उठा लिया। सुबह चार बजे कल्लू घर से निकलता और दोपहर बाद लौटता। उसकी स्त्री रमिया का भी यही हाल था। जाड़े हैं, बरसात हैं अथवा गर्मी; कल्लू और रमिया का काम नहीं रुकता। वह मानो प्रकृति के अमिट नियमों के अनुसार चले ही चलता किन्तु जब कल्लू यौवन की दहलीज से उतर चला, रमिया की जवानी ने भी उसे जवाब दे दिया, तो उस दम्पति को अपने में कोई भार, पीड़ा और उद्वेग का अनुभव होने लगा। वैसे बचपन से ही कल्लू कुछ सोचना और समझना पसन्द करता था। परन्तु जब जीवन के पैंतालीस वर्ष वह पार कर गया, दुनिया का बहुत सा दुःख-सुख, उतार-चढ़ाव उसकी आँखों में आ गया तो वह सोचता, कैसा है उसका जीवन...... नीरस, जैसे पत्थर! न हिला है, न चला है। बस, एक जगह पड़ा, तो पड़ा ही रह गया। यों धीरे-धीरे कल्लू में असन्तोष भर रहा था। कभी-कभी वह अपने-आपसे लड़ने के लिए भी प्रस्तुत हो जाता। झुँझला जाता। मानो अपने-आपको ही नोंच देना चाहता। चूँकि समाज था, वह अपनी अन्धी दुनिया से निकल नित्य ही प्रकाश में जाता, ऊँची-नीची हवेलियों में पहुँचता तो कभी सुन आता कि हिटलर आया और चला गया। कभी तूफान की कथा सुनता और यह समाचार पा लेता हजारों आदमी मर गये। अमेरिका ने अपने दो बम जापान के शहरों पर गिराये और वहाँ के हजारों आदमी एक ही पल में मौत के घाट उतर गये......सोचता कल्लू, ओह! अजीब बात है! स्वार्थ अन्धा है! आदमी क्रूर! किन्तु जब वह अपने जीवन की दुनिया में आँखें उतार कर देखता तो पाता, हाँ, वह भी अकेला है, वह भी दास है; वह भी मोहताज और दीन......

कल्लू की स्त्री रमिया अपने दो बच्चों की माँ बनी हुई इसलिए दुःखी थी कि उसका पति कल्लू समझदार नहीं, गतिमय नहीं! उसमें असंतोष था कि उसकी बिरादरी के पलटू ने फौज में नौकरी की और

फा० ५

रुपया पा लिया। चेता ने दूसरा रोजगार किया और नया पक्का मकान बनवा लिया। और वह है...कल्लू...कि सोचता नहीं, समझता नहीं कि इस तरह कुछ जिजमानों के भरोसे पड़ा रहना आज की दुनिया में नहीं फलता है.. उस रमिया को यह अच्छा भी नहीं लगता है, कि उसके बच्चे दुःखी रहें, ललचाये बने रहें। वह जब काम पर जाती, रईसों के बच्चों को साफ-सुथरे कपड़े पहने हलुवा-पूरी खाते हुए देखती, और अपने बच्चे को उस हलुवा-पूरी की ओर भूखी निगाह से देखता हुआ पाती, तो उसका मन ऐंठ जाता। काश, ऐसे अवसर पर वह पैसा पाती, बिक जाती, तो निःसन्देह, अपने बच्चे के गले में वह मीठा-मीठा हलुवा जरूर उतार पाती...किसी घर बारात आई है, और रमिया दरवाजे पर अपना टोकरा लिए जूठन पाने के निमित्त बैठी हुई है, तो तब उसके मन में बात उठती है, इन पत्तलों में क्या आया, न लड्डू, न पूरी! कम्बख्त बरातियों ने पत्तल पर साग भी नहीं छोड़ पाया। तब कभी-कभी जाने किस प्रेरणावश, उस अँधेरे में दीखते हुए धूमिल प्रकाश में अपनी आँखें गड़ाकर वह रमिया मानो शरमा जाती, तड़प भी जाती और इतना सोच पाती, हाय! मुझे भी क्या हुआ है? मैंने इन खानेवालों को ही बेस दिया है......इस जूठन के लिए!

यही कारण था कि कभी-कभी जब रमिया घर में होती, वह कल्लू को पास देख, अपने घरूजीवन के ऊपर तैरती हुई कुछ सोच पाती, तो तभी उससे कहती—'परमात्मा भी दया नहीं करता ...इस जिन्दगी से नहीं छुड़ा देता...यह झूठन...'

ऐसे अवसर पर कल्लू हँसता नहीं। वह गम्भीर बन जाता। वह जैसे अपने-आप में अधीर भी हो जाता। वह अपनी स्त्री के सामने ही मानो शर्मशार बन जाता।

रमिया फिर कहती—'यह भंगी की जात जूठन ही पाती है, आदमी का उतरा हुआ कपड़ा ही...'

उसी समय तड़पकर कल्लू कहता—'हाँ, रमिया! हमें जूठन ही मिलती है, आदमी की उतरन!'

'पर तुम भी नहीं सोचते! तुम और कुछ नहीं करते।'

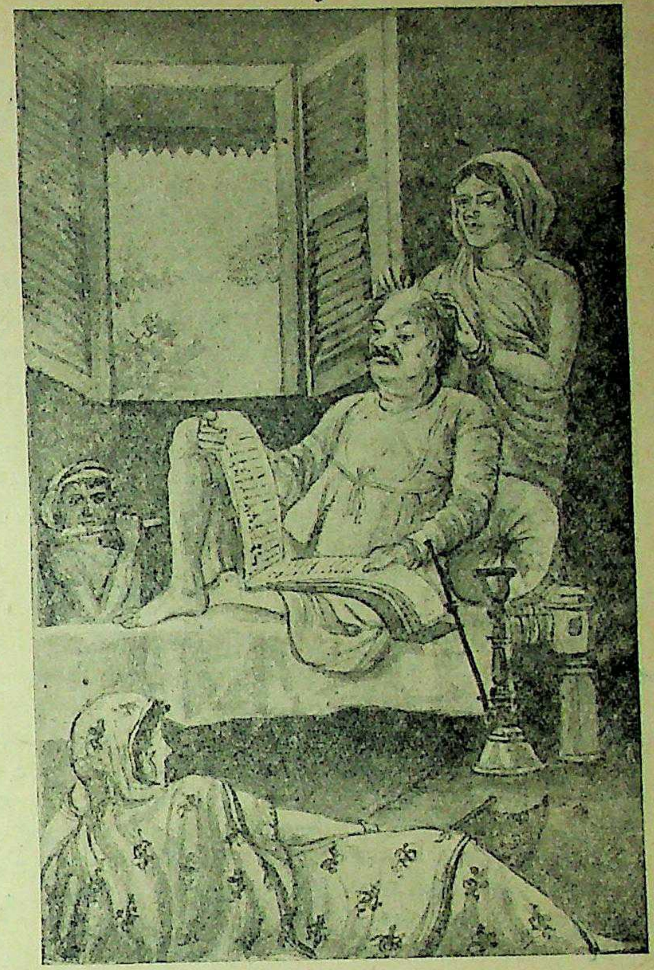
लाला जी, अभी क्या बताऊँ मैं तो परेशान हो गया हूँ।

उस समय, सदा की तरह तब भी कल्लू को एक वाक्य याद आ जाता। वह उसने एक संन्यासी से सुना था। वह संन्यासी भाषण दे रहा था। वह जनता से कह रहा था—'जातियाँ बनाई गई हैं, बनी-बनाई नहीं आई हैं। जो बड़ी जातियाँ हैं, पैसा उन्हीं के पास है, इसलिए उन्होंने पैसा और बड़ी जाति होने के कारण छोटी जातिवालों को दबाया है,...दास बनाया है भूखा......'

किन्तु उस बार, जब सर्दी में ठिठुरती और काँपती हुई रमिया एक लाला की बेंत से पिटकर मोहल्ले में बैठी रो रही थी, तो उसी समय हाथ में झाड़ू और टोकरा लिए हुए वह लम्बा-चौड़ा कल्लू वहाँ आया। उसने रमिया को रोती हुई देखा तो सहम गया। उसे एकाएक क्रोध भी आ गया। अन्यथा, कल्लू इस बात के लिए प्रसिद्ध था कि वह सीधा है, वह बोलता है तो गिड़गिड़ाता है, सदा 'माई-बाप' ही अपने जजिमानों को कहता है।

रोते हुए रमिया बोली—'कई बेंतें लाला ने मेरी कमर पर मार दीं। मैं सफाई कर रही थी, सर्दी में ठिठुर रही थी, तो कहा, 'काम नहीं करती, बदमाश! मैं बोली, 'जरा जबान सँभाल कर बोलो, लाला जी!' तो बोले 'अबे सुअर की बच्ची, जबान चलाती है, नमकहराम!' और लगे हाथ में ली हुई बेंत......'

काँपते हुए, जैसे अतिशय भिंचते हुए कल्लू बोला—'हूँ......अच्छा!' और उसने उस ऊँची हवेली के नीचे खड़े होकर आवाज दी 'लाला जी......'

लाला जी सुन रहे थे, 'बोले क्या है...क्या है रे कल्लू!'

'जरा नीचे आओ! आओ!'

सुनकर लाला चले, तो ललायन बोली—'कहाँ चले नीचे?' उसने कहा—'देखते नहीं, औरत ने कहा है, आँसुओं का जाल बिछाया है, तो कल्लू......'

गुस्से में लाला बोले—'हाँ, हाँ, मैं इन हरामजादों को जानता हूँ।'

ललायन बोली—'कांग्रेसियों ने दिमाग बिगाड़ दिये हैं। यह म्लेच्छ भी हरिजन बना दिये हैं।'

किन्तु लाला नीचे गये कड़ककर बोले—'क्या है!'

मुफ्त कलाई घड़ी

हमारे ब्लैक हेयर आयल नं० ५०१ (रजिस्टर्ड) तेल से हर प्रकार के बाल सर्वदा के लिए एकदम काले हो जाते हैं। यह तेल केशों को झरने से भी रोकता और उन्हें बढ़ाता, चमकीला करता और घुँघराले कर देता है। मूल्य २॥) प्रति-शीशी, तीन शीशी पूरे सेवन के लिए ६॥) साढ़े छः रुपये में। इस अद्भुत तेल को सर्वप्रिय बनाने के लिए हमने एक मूक अति सुन्दर कलाई घड़ी और सोने की नई अगूठी प्रत्येक शीशी के साथ देने को तय किया है। यदि असत्य प्रमाणित हो तो मूल्य वापस।

अमेरिकन ट्रेडिंग एजेन्सी
पी० बी० ७५ (डी० डी० ए०)
अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झपटकर कल्लू आगे बढ़ा और बिना कुछ कहे लाला को खींचकर अपने मजबूत हाथ से उनकी गर्दन पकड़ता हुआ बोला—'बोल, निकाल दूँ दम ! बोल !' और तभी उसने तड़ तड़ कई तमाचे लाला के मुँह पर मारकर कहा—'तुम आदमी नहीं जानवर हो...!'

मोहल्ले में आदमी इकट्ठे हो गये, कुछ कल्लू की तरफ बोले, कुछ लाला की तरफ। मामला तय करा दिया। कल्लू से कह दिया—'भाई, इनका यही इलाज है। इन्होंने तुम्हें इन्सान समझना भी छोड़ दिया है।' और कुछ लोग लाला से बोले—'आपने भी किससे मुँह लड़ाया। इनका दिमाग चढ़ गया है...दुनिया बदल रही है, आदमी का धर्म-कर्म ऊँच-नीच सभी लिप-पुत गया है...'

परन्तु उस मामले को छोड़कर भी, वहाँ से घर लौट, उस दिन कल्लू का दिमाग स्वस्थ और शांत नहीं रहा। वह दिन भर घर में पड़ा रहा। वह नीच है, वह छोटा है, यह बात तो उसने बचपन में ही सीख ली थी, परन्तु वह इतना पतित है, इतना क्षुद्र और ऐसा उच्छिष्ट पदार्थ कि कोई भी उसे फटकार दे, उसकी स्त्री को मार दे, यह मानो उसके अन्तर में शूल की तरह चुभ रहा था। वह रह-रहकर सिहर रहा था। उसका यौवन उतर गया है, परन्तु उसके हाथों में अभी इतना बल था कि वह उस लाला सरीखे दो-तीन को एक साथ ही जमीन दिखा सकता था। लेकिन, कल्लू के मन में जो बात थी, वह माना स्वयं उसी का मन्थन कर रही थी। लाला ने उसकी स्त्री पीट दी, तो उसने भी लाला को पीट दिया, पर सचमुच ही, दिन के बाद शाम तक भी कल्लू के मन को यह अच्छा नहीं लग रहा था। और आश्चर्य यह कि उसकी जो जाति-बिरादरीवाले थे उनमें से अधिकांश उस दिन कल्लू के पास आये, बैठे और बोले—'शाबाश, कल्लू ! तुमने ठीक किया। आज जिसने सुना उसी ने तुम्हें बहादुर और समझदार कहा। तुमने एक लखपति लाला को पीट दिया, उसने तुम्हारी स्त्री को पीटा, तुमने उसे तुरन्त ही सबक दे दिया।'

उन पुरुषों की तरह स्त्रियाँ भी रमिया के पास आकर कह गईं—'तेरे आदमी को यही करना था, उसे यही शोभता था। बहादुर है, तेरा आदमी...अब कोई हमारी बहू-बेटियों को मारने की हिम्मत नहीं करेगा, यही तो आज बड़ी कौमवालों को बता दिया गया....'

लेकिन, भले ही रमिया को इस बात का गर्व था, परन्तु अजीब समस्या थी यह उस कल्लू की कि उसे अपने कृत्य पर नाज और हर्ष नहीं हुआ। वह मानो और अधिक अँधेरे में घूम रहा था। वह भटक रहा था। उसे कहीं भी ऐसा कूल-किनारा नहीं मिल रहा था कि जहाँ वह टिके और सन्तोष की साँस ले।

रात आ गई थी, अँधेरी, काली-काली ! चारपाई पर पड़ा कल्लू करवटें ले रहा था। उसके मन में यही उठ रहा था कि आज उसने यह अच्छा नहीं किया। लाला को पीट दिया। वह कह रहा था—'हम तो छोटे हैं, पिटने के लिए बने हैं, भगवान ने ही ऐसे बना दिये हैं ? परन्तु तभी वह दूसरी करवट बदलता और कहता भगवान् ने बनाये हैं, हम ! ओह ! तब तो भगवान् भी कठोर है...पत्थर ! हाँ, पत्थर को ही लोग पूजते हैं। उस पत्थर में ही लोग दया-ममता खोजते हैं।" वह बोला—'भगवान् नहीं है। है तो, उसके पास हृदय नहीं है...ममता नहीं। त्याग नहीं। उसकी दृष्टि में भी एकता नहीं।' कोठरी में अँधेरा था और कल्लू अपनी चारपाई पर उठकर बैठ गया था। वह बाहर की ओर देख रहा था। आसमान काला था, सामने का समस्त आवरण भी काला था। परन्तु उसी अन्धकार में आँख गड़ाये हुए कल्लू कह रहा था—'न, कल्लू ! तूने कुछ नहीं किया ! तूने भी वही किया, जो लाला ने किया। उसके पास पैसा था, जाति का बल था, तो उन्होंने तेरी स्त्री को पीट दिया। पर तेरे हाथों में जो बल था, उसका भी तूने यों इस्तेमाल किया कि लाला को......'

निस्सन्देह कल्लू तड़प रहा था। वह धीरे-धीरे अतिशय अधीर बनता जा रहा था। उसे लग रहा था, पाप उसने भी किया......उसने भी अपने को जानवर और भेड़िया बना दिया। उसका मन कह रहा था, कि उसे लाला को मारना नहीं था। उन्हें समझाना था, उनसे कहना था, 'रमिया भी नारी है, रमिया भी किसी की मा और बहन है......औरत पर हाथ उठाना भला अच्छा है, क्या !'

उसी समय, जब कल्लू उठकर बैठा हुआ था, उसे किसी से सुनी शाम की बात याद आई कि लाला चारपाई पर पड़ा है। वह कल्लू के मजबूत हाथों के थप्पड़ खाकर डर गया है। ग्लानि और क्रोध ने उसे ग्रस लिया है। डाक्टर आया है। पर लाला चिल्ला रहा है—'वह कल्लू...... मेहतर......'

तभी रमिया ने जो करवट बदली, तो उसने कल्लू को बैठा देख, तड़पकर कहा—'ओह......ओह......!'

कल्लू ने कहा, 'क्या......?'

रमिया बोली—'बुरा हुआ...सच !'

अधीर होकर कल्लू बोला—'क्या हुआ...क्या...?'

'मैंने सोते में देखा कि लाला मर गया। लाला......'

तभी चौंककर, मानो तड़पकर कल्लू ने कहा—'हैं, हाय !'

रमिया ने कहा—'तुमने भी बहुत मारा। गला भी भींच दिया !'

इस प्रतारणा को पा, कल्लू लज्जित बन गया। परन्तु तभी उसने क्षुब्ध बनकर कहा—'तुझे भी तो नहीं सूझा। तूने क्यों मुझे आँसू दिखाये......सूझा नहीं, अपनी औरत के आँसू देखकर आदमी अन्धा बनता है। लाला मर गया, तो मैं जेल जाऊँगा।'

सुनकर रमिया ने साँस भरी और छोड़ दी।

तभी कल्लू खड़ा हो गया और बोला—'पर रमिया, मुझे जेल जाने का डर नहीं, मौत की भी चिन्ता नहीं, मुझे तो इस बात का डर है कि मैंने अच्छा नहीं किया। मैंने वही किया जो आदमी करता है..... जानवर करता है !'

चिढ़कर रमिया ने कहा—'तो तुम क्या करते....देवता का काम करते ! उसे माफ.......'

जल्दी से आतुर बनकर, कल्लू ने कहा—'अरी, रमिया !'

रमिया बोली—'तुम देवता नहीं बनोगे...तुम...'

अपनी वाणी पर जोर देकर कल्लू बोला—'मैं भी आदमी हूँ. मैं भी देवता बन सकता हूँ, रमिया !'

किन्तु इतनी-सी बात को सुनकर, रमिया ने क्या सोचा, उसके मुँह पर कैसा भाव आया, उस अँधेरे में कल्लू नहीं देख पाया.....नहीं। निदान, वह मौन रह गया।

* * *

प्रातः हुआ। कल्लू घर में नहीं था। रमिया के मन में खटका हुआ। वह जल्दी ही घर से निकली और लाला के मोहल्ले में जा पहुँची। किन्तु वहाँ उसने जो देखा, उसे देखकर वह चकित रह गई, जैसे मूर्त ! वहाँ मोहल्ला भर एकत्र था। लाला की आँखों में आँसू थे और कल्लू भी रो रहा था। लाला कह रहे थे, 'भैया कल्लू, मैंने अच्छा नहीं किया'....और कल्लू कह रहा था, 'लाला जी, मैंने भी बुरा किया। आदमी परमात्मा की मूरत है—उसी की जलती हुई जोत—मैंने उसी को बुझा देने का काम किया...'

उसी समय जब रमिया वहाँ पहुँची तो दोनों की आँखों के अटके हुए आँसू खुले और किसी टूटे हुए बाँध की तरह उनके गालों पर बह आये। लाला ने कहा—'अरी, रमिया...'

और मानो एक देवी के सदृश वह रमिया उन आदमियों की भीड़ के बीच में खड़ी हुई उन दोनों को प्यार और ममता की दृष्टि से देख रही थी और उनके मधुर तथा सलोने जीवन में तैरती जा रही थी, निर्बाध, गतिहीनता के साथ।

* * *

दाद, खुजली और हरेक मेलका चमडीका दर्दोंके लीए

गत ५० वर्षों से
जग विख्यात
कपड़े खराब नहीं करती।
नक्कालों से सावधान

सपट लोशन

सपट एन्ड, को डिपार्टमेंट U.P, DAI, बम्बई २

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपै... बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, ... चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकि... के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मु... मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अली...

फोटो खींचने का अपूर्व साधन !

बाक्स केमरा

सुन्दर, मजबूत, सस्ता। ... केमरे से आप आसानी ... चाहे जिस दिलपसन्द ... का मनोहर फोटो २॥×... इंच साइज के कट फिल्म पर खींच स... हैं। बढ़िया फोटो न खिचे तो दाम वापस। केमरे के साथ कट फिल्म, कार्ड, मसा... और फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त, मू... ८।) पैकिंग पोस्टेज १॥) रु०।

ओरियन्टल केमरा हाउस, (एल० ...) अलीगढ़ सिटी

नया चलान, नई डिजाइ...

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर क... नियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई... देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीभर ग... प्रत्येक घड़ी को गारंटी २ साल।

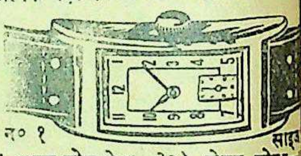

न० १ साइज
... जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड-...
... ,, केस—३५) रोल्ड गोल्ड-...
... ,, ,, केस—५२) रोल्ड गोल्ड

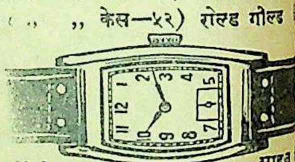

न० २ साइज
... जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड-...
,, ,, —३८) रोल्ड गोल्ड-...
... ,, ,, ..५५ रोल्ड गोल्ड-...

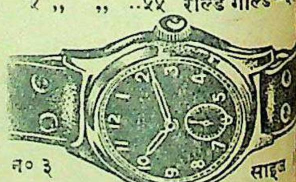

न० ३ साइज
... जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३...
... ,, ,, ,, —४८) रोल्ड गोल्ड-...
... वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड-...

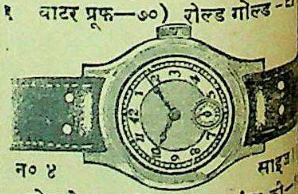

न० ४ साइज
क्रोम केस—१६) सेकण्ड कांटा की-... सेंटर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर-... १५ जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५) एलार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर-... बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी ... घड़ी एक साथ लेने से १२॥) प्रति ... कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ... कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृमंदिर

नारियाँ केवल ब्याह के लिये नहीं वरन्....

देश के लिये उन्हें आगे बढ़ना होगा!

लेखिका, 'कली'

भारतीय संस्कृति में कई जातियों का समावेश है। सबके अलग अलग आहार-व्यवहार की प्रणाली है। भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत आर्य और द्राविड़ सभ्यताएँ ही नहीं, वरन् उनके पश्चात् हिन्दू और मुसलमान संस्कृतियाँ भी उनमें जुड़ गई हैं, इन संस्कृतियों ने भारतीय साहित्य कला ही में नहीं, वरन् समाज के अंग-प्रत्यंग पर अपना प्रभाव डालने में कोर व कसर नहीं रक्खा। इधर यूरोपियनों के आने से एक नई सभ्यता का और समावेश हो गया है। सब कुछ होते हुए भी यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे बृहत् देश में अपनी पुरातन संस्कृति में कई प्राधान्य हैं।

मुसलमानों और ईसाई धर्मावलम्बियों में विवाह-सम्बन्धी बहुत कुछ सुधार कहे जा सकते हैं, पर वर-चयन में मुसलमान नारियों का जीवन वैसा ही है जैसे हिन्दू नारियों का। केवल ईसाई धर्मावलम्बी नारियाँ भले हो कुछ सुखी हों पर, उनकी संख्या अँगुलियों पर गिनी जा सकती है। इसलिए कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में अधिकतर नारियों को वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने में एकदम पीछे रक्खा जाता है। इन्हीं निराशा और अवहेलनाओं से ऊबकर नारियों की संगठित संस्थाओं ने समय समय पर नारी अधिकारों की माँग की है। भारतवर्ष में नारियों की तीन बड़ी बड़ी संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं में—अखिल भारतवर्षीय महिला सम्मेलन, महिला भारतीय सम्मेलन तथा भारत में महिलाओं की राष्ट्रीय समिति हैं इनके अँगरेजी नाम आल इण्डिया वीमेन कानफ्रेन्स, वीमेन इण्डियन एसोसियेशन और दि नेशनल कौंसिल आफ वीमेन इन इण्डिया। ये संस्थाएँ नारियों के अधिकारों के रक्षार्थ लड़ती रही हैं। नारियों के वोट के अधिकार प्राप्त करने के लिए इन संस्थाओं से एक प्रस्ताव आया था जिसके बहुत कुछ अंशों को मान्यता मिली है। उपरोक्त संस्थाओं के प्रस्ताव को भारत की समझदार नारियों ने स्वागत और समर्थन किया है। साथ ही नई विचारधारा का इतना वेग बढ़ रहा है कि अन्तरप्रान्तीयता और अन्तरजातीयता को घातक कहा जा रहा है।

अब अन्तरजातीय और अन्तरवंशीय विवाह-पद्धति भी चल पड़ी है। साथ ही अन्धपरम्परा को कितने ही परिवारों ने परित्याग कर दिया है। अभाग्यवश अब भी ऐसे प्रगतिशील वर्ग का अभाव है। नारियाँ अब भी पुरातन प्रथा का अनुसरण करने में अपना सौभाग्य समझती हैं। एक बूढ़ी दादी सारे परिवार को अपने शासन में रखती है। चाहे किसी को कष्ट क्यों न हो? उसके शासन में रहने-वाले लड़के-लड़कियाँ, पुत्रवधू और पौत्र-वधू, बूढ़ी दादी की आज्ञा का उल्लंघन करने में उतना ही डरते हैं जितना कि कोई महान् अपराधी अपने अपराध से डरता हो। इन सबके होते हुए भी नारियाँ अपने को इतना दबाकर रखती हैं मानो उन पर वर्तमान युग का कोई प्रभाव न हो।

कोई भी पौत्री या पौत्रवधू इतना साहस नहीं कर सकती कि वह बिना बूढ़ी दादी की आज्ञा के किसी नृत्य या संगीत में सम्मिलित हो। इसके प्रतिकूल यह कि जब उनकी इच्छा नहीं होती तो भी बूढ़ी दादी उन्हें नृत्य करने के लिए दबाव डालती हुई डाँटकर वैसा करने को तैयार करती हैं। इसके अतिरिक्त नव-युवती पुत्री अथवा पौत्री या पौत्र-वधू को किसी नवयुवक पुरुष के साथ बातें करते देखकर आग-बबूला हो जाती हैं। इस छोटी गलती का रूप हिमालय जैसा भयानक रूप धारण कर लेता है। बेचारी पौत्री या पौत्र-वधू मारे शर्म के दादी की डाँट-फटकार को सुनकर चुप रह जाती है।

कभी कभी बूढ़ी दादी और बूढ़ी माताएँ इतनी निर्दयता ग्रहण कर लेती हैं कि उनके विचारों में कठोरता ही का स्थान रह जाता है। अपनी छोटी सन्तान के प्रति उनके निर्मम व्यवहार देखते ही बनते हैं। अभी तक भारतवर्ष का यही मानचित्र रहा है, परन्तु अब कुछ जागरण प्रारम्भ हुआ है। इस जागरण के युग में अब भी भारतीय घरों में बूढ़ी दादियाँ ही प्रधानता रखती हैं। यह बुरा भी नहीं। परन्तु आवश्यक है कि नारियों को सोचने-विचारने और कार्य करने की उतना ही स्वच्छन्दता हो जितना बूढ़ी दादी या अन्य बूढ़ी माता को।

भारतवर्ष में अन्धविश्वासी परम्परा को पुरातन विचारशील पुरुष और नारियों ने अब तक जीवित रक्खा है। उनमें बाल-विवाह, विधवा-विवाह पर बन्धन तथा अन्य कठोरतायें जो नारियों के प्रति की जा रहीं हैं अधिक प्रसिद्ध हैं। इन्हीं की चर्चा भी समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और पुस्तकों में मिलती है। भाग्यवश अब इन परम्पराओं को तोड़ने और नये सुधारों के होने तथा देश की नारियों में नवजीवन लाने के सुसमाचार पढ़ने को मिल रहे हैं। नारियाँ भी उपयुक्त वायुमण्डल का लाभ उठाकर आगे बढ़ रही हैं। महात्मा जी ने नारियों के बहुत कुछ कंटकाकीर्ण मार्ग को साफ करने में अपनी नैतिक और वैयक्तिक सहायता दी है। उन्होंने कई बार अपने पत्र यंग इंडिया और 'हरिजन' में नारियों के अधिकारों का पूर्ण समर्थन किया है। एक जगह वे लिखते हैं "नारियों को अबला कहना पुरुष की महान् भूल है। यदि शक्ति में दोनों की तुलना की जाय तो नारी की शक्ति पुरुष से कम होते हुए भी बड़ी हो सकती है। यदि अहिंसा सबसे बड़ा अस्त्र हो जाय तो नारियाँ पुरुषों से कहीं अधिक बलवान् हो जायँगी।" ये वाक्य गांधी जी ने उन नारियों को कहे हैं जिनमें आत्म-शक्ति आ जायगी। बहुत से पुरुष भी तो नारियों से गये-गुजरे हैं, उनमें वह शक्ति नहीं जो एक वीर पुरुष या नारी में होनी चाहिए।

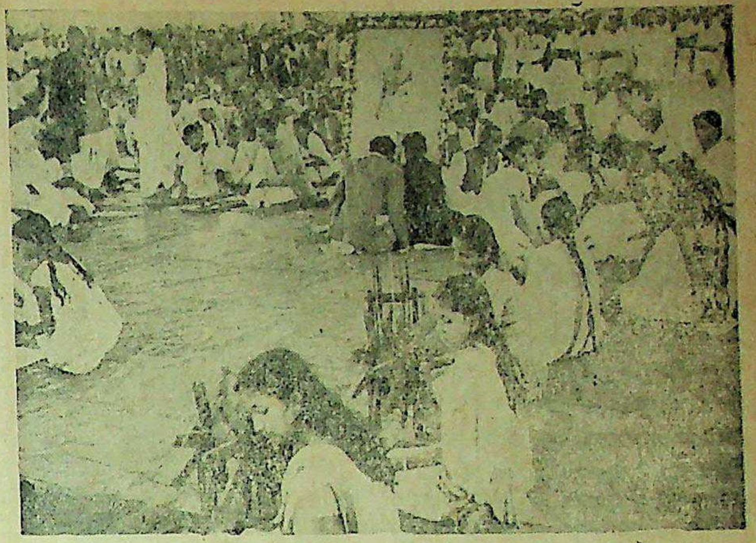

महात्मा जी के वार्षिक मृत्यु दिवस पर कलकत्ता में चर्खा अनुष्ठान!

एक भारतीय नारी का घर एक शिक्षालय है, जहाँ तक देखा जाता है कि भारतीय नारी एक संयुक्त परिवार की प्रधान रहती है। उसके सिर पर पूरे परिवार का खाना देना, कपड़े को ठीक रखना, घर की सफाई, घर को मरम्मत तथा बीमार की सेवा-शुश्रूषा आदि कार्य भार रहते हैं। इन कार्यों के बोझ से वह स्वयं ही लदी रहती है। उसके घर में बच्चे इन्हीं सब कार्यों की शिक्षा ले सकते हैं फिर वह संसार के अन्य विषय को सोचेगी। पुत्री या पौत्रियाँ अथवा पुत्र या पौत्र को अपनी खुशी से ब्याह का अधिकार नहीं। प्रथम तो घर का प्रधान पुरुष वर और कन्या को पसन्द करता है। इसके बाद घर की प्रधान बूढ़ी माँ या दादी। वर-कन्या को यह अधिकार नहीं दिया जाता कि वे स्वयं भी अपने सम्बन्ध में विचार कर लें अथवा प्रेम-द्वारा ब्याह करें। यह वर्तमान भारतीय परम्परा का महान् दोष है। यह भी नहीं कि यदि स्त्री-पुरुष में मतैक्य हो, एक दूसरे में असंतोष हो तो दोनों एक दूसरे को परित्याग कर दें। अब नये हिन्दू कोड बिल से बड़ी बड़ी आशा है देखना है वह पास होने पाता है या नहीं? स्त्रियों के लिए बन्धन बना दिया गया है। जब वे पिता के घर में रहती हैं तो पिता की आज्ञा मानें, पति के यहाँ आने पर पति की आज्ञा और पतिहीना होने पर पुत्र की। परन्तु यदि पति और पुत्रहीना दोनों रहें तो क्या करें इसका कोई भी उपाय स्पष्ट नहीं है।

भारतीय नारियों का सबसे बड़ा कार्य बच्चा पैदा करना, उनका पालन पोषण करना ही अभी तक रहा है। बच्चों को सँवारना और उनकी बीमारी में शुश्रूषा ही उनका मुख्य कार्य माना गया है। परन्तु आज वायुमण्डल बदल गया है। नारियाँ समाज के प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण कर रही हैं। राजनीति, साहित्य, कला और अन्य आवश्यक अंग जो समाज के लिए उपयोगी हैं, में प्रवेश पा चुकी है। श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती विजय-लक्ष्मी पंडित, राजकुमारी अमृतकौर तथा अन्य स्त्रियाँ राजनैतिक और साहित्यिक जगत् में ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। कितनी ही महिलाएँ धारा-सभाओं में सदस्या हैं, कितनी ही प्रधान और उप-प्रधान हैं। अतः अब स्त्रियों का कार्य केवल शिशु-पालन या उत्पादन ही नहीं रह गया बल्कि देश को उठाने के लिए उन्हें अपनी शक्ति लगानी होगी। वह शक्ति तभी लगेगी जब वे निर्भीक होकर लज्जा का परित्याग करती हुई मैदान में आगे बढ़ेंगी।

* * *

भारतीय विज्ञान कांग्रेस की महिला प्रतिनिधियाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा रंग-मंच

'चौदहवाँ ओलम्पियेड' पश्चिमी फिल्म-व्यवसाय का एक सफल फिल्म

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम

आज से अनेक वर्ष पूर्व, ७७६ बी० सी० में, यूनान में स्वास्थ्य और सौन्दर्य प्रसाधनार्थ और प्रदर्शनार्थ ओलम्पिक खेलों की शानदार परम्परा प्रारम्भ हुई। पहले ये खेल हर चार वर्ष बाद हुआ करते थे। एक अच्छी वस्तु का सदियों और सहस्रों वर्ष तक शृङ्खलाबद्ध होकर चलना उसके गुणों, लाभों और प्रचार का प्रमाण है। पश्चिमीय देशों में, खेलों को, मुख्यतया आधुनिक खेलों को, बड़ा महत्त्व दिया जाता है। गत वर्ष इंगलैण्ड में यही जगत्-विख्यात ओलम्पिक खेल हुए। इन्हीं का पाश्चात्य सिने-कला-विशारदों ने 'चौदहवाँ ओलम्पियेड' प्रस्तुत किया है जो स्थानीय रैलेस सिनेमा भवन में गत सप्ताह प्रदर्शित किया जा रहा था और जिसकी जनता भूरि भूरि प्रशंसा कर रही थी।

'चौदहवें ओलम्पियेड' को खेलों की प्रतिष्ठा कहा गया है। जिन्होंने उसे देखा वास्तव में उसे इसी रूप में लिया। उसे अन्यथा समझा ही नहीं जा सकता। खेल से अच्छी संसार में कौन सी वस्तु हो सकती है? फिर उन खेलों में भारत और पाकिस्तान सहित संसार के ५८ देश सम्मिलित थे, उन देशों के सर्वोत्तम खिलाड़ी भाग ले रहे थे और उन्होंने अनेक नये नये रिकार्ड स्थापित किये।

चित्र में सर्वप्रथम स्थान ओलम्पिक ज्योति को दिया गया है। यह ज्योति खेलों के प्रारम्भ होने के समय से चली आती है। 'चौदहवें ओलम्पियेड' में भी इसी ज्योति को जलाकर ज्योतिवाहक एक ओर से दूसरी ओर तक बड़े वेग से ले जाता है। तात्पर्य यही है कि ज्योति क्षीण न होकर निरन्तर आलोकित रहे और संसार भर के खिलाड़ियों को उत्साहित करे तथा प्रेरणा दे। इस प्रकार की ज्योति जीवन को जगमगाने के लिये एक प्रबल शक्ति है।

द्वितीय महत्त्वपूर्ण स्थान 'ओलम्पिक शपथ' को दिया जाना चाहिये जिसमें स्वस्थ प्रतियोगिता में भाग लेने, खेलों के नियमों का पालन करने, उनके उच्च आदर्शों को निबाहने तथा देश को सम्मान प्रदान करने का प्रण है। खेलों का उद्घाटन स्वयं इँगलैंड का राजा करता है। इस प्रकार शपथयुक्त और इंगलैंड के राजा द्वारा उद्घाटित खेल साधारण नहीं हो सकते। उनका सन्देश ले जाने के लिये ७,००० कबूतर कार्य करते हैं। ज्योति जलकर प्रसारित होते ही यह कबूतर अपने अपने गन्तव्य स्थान के लिये चल पड़ते हैं। कैसा सुन्दर वह दृश्य है! बिना देखे उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सर राल्फ रिचार्डसन, अँगरेजी फिल्म अन्ना कारेनिना में अभिनय करते समय।

खेलों का आदर्श, एक लम्बे-चौड़े तख्ते पर, स्पष्ट लिखा हुआ दिखलाई देता है। वह नोटिस-बोर्ड कहता है कि ओलम्पिक खेलों में विजय प्राप्त करना आवश्यक नहीं, आवश्यक है अपने प्रतिद्वन्द्वों से भली भाँति होड़ करना और खेल के आदर्शों को निबाहना। खेलों में, वी (V) भी मखमली हरी घास से लिखी देखी जा सकती है। खेलों का सचालक घोषणा करता है कि वी (V) की विजय का अर्थ युद्ध में विजय नहीं, धन पर विजय नहीं; परन्तु खिलाड़ीपन में विजय, विश्व-बन्धुत्व में विजय, शांति में विजय है। घृणा और हिंसा के वातावरण में खेल के मैदान में प्राप्त होनेवाली शिक्षा हमारे लिये बड़ी मूल्यवान् सिद्ध हो सकती है, वही हमें आज की परिस्थितियों में बचा सकती है।

यह इस युग की विशेषता है कि झंडे बिना कोई बात नहीं होती। उन खेलों में भी झंडा है। वह तिरङ्गा है न यूनियन जैक। उसमें ५ छल्ले हैं जिनसे पाँचों महाद्वीपों का बोध होता है, जो एक दूसरे के अन्दर पिरोये रहने से आपस में सम्बद्ध हैं और मनुष्यता का नाता रखते हैं। ऐक्य का ऐसा उदाहरण अन्यत्र मिलना असम्भव है।

२½ घंटे की लम्बी फिल्म में अनेक खेलों का प्रतियोगिताएं दिखाई गई हैं। युवक और प्रौढ़ सभी भाग लेते दीख पड़ते हैं। नवयुवतियाँ और स्त्रियाँ भी, बड़ी संख्या में, समान रूप में भाग लेती हैं। यह बड़े सन्तोष का कारण है कि पश्चिमीय देशों में खेलों का इतना व्यापक प्रचार है और प्रौढ़ भी खेलों में नवयुवकों से कम नहीं हैं।

भारत में अभी खेलों का इतना अधिक प्रचार नहीं है। स्त्रियों में तो वह भावना है ही नहीं, पुरुषों में है तो वह विद्यार्थी नवयुवकों तक ही मुख्यतया सीमित है। व्यवसायिक खिलाड़ी गिने-चुने हैं। अतएवं पाकिस्तान के खिलाड़ियों ने कोई महत्त्वपूर्ण भाग नहीं लिया। भारतीयों की हाँकी अति मनोरंजक रही। विदेशी उनके सम्मुख न ठहर सके और चार गोलों से पराजित हुए। उनका खेल अति सुन्दर था।

खेलों में, घोषणा करनेवाले के शब्द सदैव यही थे 'बहुत अच्छा नहीं' उतना अच्छा नहीं। वह प्रतियोगियों को उनका कार्य खराब बताकर निराश नहीं करता था। प्रयोजन यह रहता है कि वे दुबारा तन-मन से अधिक प्रयत्नशील हों और सर्वप्रथम आयें। यही खेलों से मिलनेवाली उपयोगी शिक्षा है। 'चौदहवें ओलम्पियेड' के अन्त में सन्देश है कि ओलम्पिक खेलों की भावना का सर्वत्र [illegible] हो और उसकी उन्नति हो। यह [illegible] इस फिल्म द्वारा पृथ्वी-तल पर चारों [illegible] अवश्य फैलेगा।

१६ फोटोग्राफरों द्वारा लिया [illegible] यह रंगीन चित्र दर्शकों को मनो[illegible] सिद्ध होकर उनका यथोचित मनोरं[illegible] कर सका है। कदाचित् वह शिक्षा[illegible] भी है। गायन चित्र में कार्य के अ[illegible] है। 'चौदहवाँ ओलम्पियेड' देखने[illegible] की करतल-ध्वनि से गुंजित है। पाश्चा[illegible] सिनेमा-व्यवसाय ने इस चित्र को [illegible] खेलों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने और [illegible] संदेश फैलाने में योगदान देकर [illegible] और मानवता का बड़ा लाभ किया जिसके लिये वे उसके कृतज्ञ हैं।

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो -) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

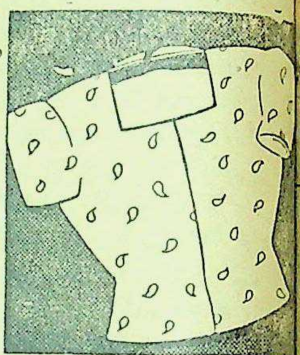

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमि[illegible]

डोंगरे बालामृत
कमजोर बच्चे ताक़तवर बनते हैं

T. B.
टी. बी. तपेदिक के रोगि[illegible]

यदि सब तरफ से हताश हो [illegible] तो एक बार 'जबरी' की परीक्षा [illegible] यही इस दुष्ट रोग से रोगी को बचाने[illegible] एक अद्भुत औषधि है, जिसका नाम [illegible] भारत के कोने-कोने में फैल रहा है। [illegible] नं० १ स्पेशल पूरा ४० दिन का कोर्स [illegible] रु०, नमूना १० दिन २०) रु० तथा नं० [illegible] पूरा कोर्स २०) रु० नमूना ६) [illegible] अलग है।

जबरी, आफिस (D) 'जगाधरी' E[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हास्यपरिहास

भङ्ग की तरङ्ग

केन्द्रीय असेम्ली में एक सदस्य ने कहा कि आसाम में एक रेल है जो बैल-गाड़ी के समान चलती है। ओ० टी० रेलवे को लज्जित होने का कोई कारण अब नहीं रह जाता।

* * *

आपने यह भी बताया कि कहीं कहीं यात्रियों को उतरकर इसे ढकेलना पड़ता है। इसके डब्बों को लेकर लोग भाग नहीं जाते यही क्या कम है। आजकल घरों की कमी के कारण कोठरी बनाने में यह काम आ सकते हैं।

* * *

पंचायत के चुनाव में कहीं कहीं लाठियाँ भी चली हैं। मुकदमों का फैसला करने के लिए पंचों को कुछ चाहिए। खाली कब तक बैठे रहेंगे ?

* * *

नेहरू जी कहते हैं उर्दू लिपि भी चलती रहे, रोमन भी। अंतर्राष्ट्रीय जागरण के लिए फ्रेंच और रूसी लिपि भी सीखना आवश्यक है। आशा है हमारे प्रिय प्रधान मंत्री महोदय विचार करके अपने लेख में संवर्धन करेंगे।

* * *

आगरा में एक अनाथालय में छापा मारा गया तो कुछ लोग पकड़े गये जो औरतें बेचा करते थे। आशा है उसमें ब्लैक मारकेटिंग नहीं होती होगी। व्यापार तो हुआ ही करता है। यह युग ही व्यापार का है।

* * *

पता लगा है कि अमरीकी परिवारों की आमदनी बीस गुनी बढ़ गई है। कोई हर्ज नहीं है। भारत में खर्च पाँच-छः गुना बढ़ गया है। कोई अधिक नहीं।

* * *

सरकारी आज्ञा है कि दावतों और पार्टियों में काली शेरवानी और पायजामा पहनकर जाना चाहिए। हिंदी भाषा के साथ साथ धोती भी स्वतंत्रता के अनुपयुक्त है। स्वतंत्रता तो पायजामे से ही मिली है।

* * *

सुना है हमारे प्रांत में कार्ड पत्र सब कार्यालयों में भेजा गया है कि निश्चित अवधि हिंदी सीखने की समाप्त हो गई फिर भी ध्यान नहीं दिया गया। फिर अवधि निश्चित की जाती है। हमारा निवेदन है कि इसी भाँत प्रत्येक साल के आरंभ में अवधि निश्चित करते चलिये जब तक वतमान कर्मचारी पेंशन न ले लें।

* * *

मौलाना आजाद की दया बनी रहे तो इस देश में हिंदुस्तानी को संजीवन बूटी मिल जाय। इतिहास में आपका नाम अमर हो जाय कि एक भाषा को आपने प्रश्रय दिया। मध्ययुग में राजे और महाराजे भाषाओं की सहायता करते रहे। इस युग के शासक ऐसा न करें, कैसे हो सकता है ?

* * *

महाकोशल के स्वनामधन्य वकील सर हरीसिंह गौड़ का कहना है कि अँगरेजी को नहीं हटाना चाहिए। अँगरेजों को भी नहीं हटाना चाहिए था। कितनी बड़ी भूल कांग्रेस ने की है।

* * *

कम्युनिस्ट लोग भारत को भी रूस बनाना चाहते हैं। वह शायद नहीं जानते कि कौवा हंस बनने गया किन्तु काला का काला ही रहा।

* * *

गेहूँ का भाव रुपये का एक सेर हो गया है। किसानों को चाहिए कि जितना अधिक गेहूँ छिपा सकें छिपा लें। यही लाभ का समय है। नहीं तो फिर पछताना पड़ेगा।

* * *

इससे दो लाभ होंगे। शदियों से गरीब किसान निर्धन थे। अब धनी होंगे और कुछ लोग खाने बिना मरेंगे तो देश की आबादी कम होगी। इससे देश का भी लाभ होगा।

* * *

कराची में विश्व मुस्लिम कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा है। वहाँ एक महोदय ने भाषण करते हुए कहा कि मुसलमानों को संकीर्णता का परित्याग करना चाहए। जो लोग ऐसा करेंगे वह फिर मुसलमान कैसे रह जायँगे ?

* * *

बर्लिन में एक अपराधी बहुत दिनों तक जज बनकर कितने लोगों के भाग्य का निर्णय करता रहा। अपराधी ही अपराधी को समझ सकता है। क्योंकि कदर उल्लू की उल्लू जानता है।

—भगवद्दत्त शर्मा

बेढब के दोहे

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

सुमनों ने दो दिन दिया, कुछ सौरभ पीयूख,
कलियाँ कितनी बे खिले, गईं बिचारी सूख।
नाम तुम्हारा जप रहा, लेकर कर में माल,
चिट्ठी जा सकती नहीं, हुई यहाँ हड़ताल।
क्यों घर के अन्दर छिपा, कर रक्खूँ मैं प्रेम,
मेम अगर बीबी बनी, इसमें क्या है शेम।
आज लाज युग में कहाँ, आई नई रवाज,
सिर पर पत्नी को चढ़ा शिव सब बना समाज।
त्यागी सारी शिष्टता, छोड़ी सारी लाज,
उन्हें प्रेम में मिल गया, बेढब आज स्वराज,
क्यों चिल्लाते आप हैं, बहुत अनाज अनाज,
त्याग नहीं कुछ कीजियेगा जब मिला स्वराज।

मनोरंजक चुटकुले

एशियाई देश दिल्ली में इकट्ठे होकर डचों के विरुद्ध बातें कर रहे हैं। बातें करने और प्रस्ताव पास करने से कहीं युद्ध बन्द होता है ? यदि ऐसा ही होता तो फिर संसार में युद्ध ही क्यों होता ? डच अथवा साम्राज्यवादी शक्ति इससे क्यों डरने लगी ? वे कहते हैं, कूकुर भूँकें लाख हजार, हाथी घूमै हाट बजार।

* * *

बर्मा के प्रधान मन्त्री श्री थाकिन नू ने पिछले माह एक वक्तव्य में कहा था—पण्डित जवाहरलाल नेहरू हिन्देशिया के मामले को सुलझाने के लिए एशियाई सम्मेलन बुलायें। बर्मा उसमें अपनी शक्ति भर सहायता करेगा। सम्मेलन तो बुलाया और हिन्देशिया की सहायता के लिए वार्ता भी शुरू हो गई परन्तु थाकिन नू महोदय का मन्त्रिमण्डल ही भंग हो गया। अच्छा हुआ डचों को एक दुश्मन से छुटकारा मिला, न रहा बाँस न बजी बाँसुरी।

* * *

संघ का सत्याग्रह बन्द हो गया। पर संघ के संघी अब भी बन्द हैं। गुरू गोलवल्कर उन संघियों की क्या सहायता करेंगे जिन्होंने भारी रकमों को जुर्माना में अदा किया है। गुरू जी चाहे सहायता कर सकें पर वह प्रभु जिसकी शरण में वे गये हैं। 'सब अपराध बिसार' कर अवश्य सहायता करेंगे।

* * *

समाचार-पत्र में एक समाचार प्रकाशित हुआ है—आस्ट्रेलिया और भारत में हवाई सर्विस शुरू होगी। समाचार तो सुन्दर है पर सिडनी काटन जैसे उड़ाके न आ जायँ कि नया हैदराबाद बना दें।

* * *

एशियाई सम्मेलन में लंका के प्रतिनिधि श्री बन्दरनायक ने कहा—'लंका ने सर्वप्रथम डचों के विरुद्ध प्रत्यक्ष कार्रवाई की है—उसने अपने आकाश पर डच वायुयानों का उड़ना सर्वप्रथम बन्द किया है।' यह कोई नई बात थोड़े ही है। लंका सर्वदा प्रत्यक्ष कार्रवाई करता रहा है। रावण ने राम की स्त्री हरण करने में सर्वप्रथम कार्रवाई की थी। फिर आज की नई बात क्या ?

* * *

युक्तप्रान्तीय सरकार ने 'गुण्डा कानून' में संशोधन करके एक नया कानून बनाया है जिसमें किसी भी व्यक्ति को जिलाधीश बिना जमानत के बन्द कर सकता है। भगवान ही बचाये इस काले कानून से। पुलिस के दिन फिरे, मनमानी वह लोगों को बन्द करेगी। गुण्डे तो रुपये देकर छूटेंगे और फँसेंगे भले आदमी।

—राजकली

* * *

फोटो खींचने का अपूर्व साधन
फोटो कैमरा

सुन्दर मजबूत और विश्वसनीय इस कैमरे से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का अत्यन्त ही मनोहर फोटो नं० १२० के कट फिल्म पर २॥ × ३॥ इंच साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य ७॥।≶) फोलडिंग कैमरा नं० १००० मूल्य १५) पोस्टेज पैकिंग १॥) पसन्द न होने पर कीमतें शीघ्र वापस होंगी।

इम्पीरियल कैमरा स्टोर
पी० बी० ६१ (D. D. A.) अमृतसर

सफेद बाल काला !

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश सञ्जीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २) रु० बाल अधिक पक गया हो तो ४) रु० का तैल मँगावें। पता—

श्री प्रयागराम ६४ काजी डांगा लेन
पो० शिवपुर (हबड़ा)

अनाज की दूकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

खटमल–आपके खून का प्यासा जीव

इनके दूर करने के क्या उपाय हैं ?

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार, (हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

खटमल गन्दे घरों में रहते हैं। सामान्यतया रात को निकलते हैं और दिन में चारपाई या फर्नीचर की दरारों के अन्दर छिपे रहते हैं। भूखे खटमल दिन में भी हमला करते हैं। रात को चारपाई पर लेटने के बाद आपने जब बत्ती बुझा दी तो कुछ ही मिनटों बाद गरदन और दूसरी जगहों पर खटमलों ने काटना शुरू कर दिया है। बत्ती जलाने पर आप देखेंगे कि सफेद चादर पर छोटे-छोटे लाल जीवों की फौज भागी चली जा रही है। आपका लहू पी-पीकर यह लाल सेना पुष्ट हुई है। नींद उचाट करनेवाले इन जीवों के संहार के उपायों को मालूम करना आपके लिए स्वाभाविक है। परन्तु यह अचरज की बात है कि खटमलों को भोजन मिल सकने के इरादे से जैनी धन देकर मनुष्यों को खटमलवाली चारपाइयों पर सुलाया करते हैं। एक रात भी जिसे खटमलवाली चारपाई पर बितानी पड़ी हो, मुझे आश्चर्य है कि वह ऐसा करने को तैयार कैसे होगा ?

अण्डे-बच्चे

फर्नीचर और कमरे की दीवारों की दरारों में तथा छिपने के अन्य स्थानों में मादा गर्मियों में अण्डे देती है। अण्डे समूहों में दिये जाते हैं। लार्वे छोटे, सफेद और अर्द्ध पारदर्शक होते हैं। प्रायः दस दिन में इनमें से बच्चे निकल आते हैं। बच्चे अपने माँ-बाप से मिलते हैं। ये पाँच बार त्वचा बदलते हैं। करीब एक दर्जन सप्ताहों में ये जवान हो जाते हैं। जवान होने में समय कितना लगता है, यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि इन्हें भोजन कितना मिलता रहा है और इन्हें किस तापमान पर रहना पड़ रहा है। कहते हैं कि बिना कुछ खाये खटमल एक साल तक जीवित रह सकता है।

खटमल का मुख तीन सन्धियोंवाला प्रोबोसिस होता है। शरीर चपटा होने से इसे दरारों में छिपने में आसानी रहती है। खटमल की लम्बाई करीब $\frac{3}{16}$ इंच होती है। शरीर की ग्रन्थियों से यह दुर्गन्ध देनेवाला एक पदार्थ स्रवित करता है। जब इसे छुआ जाय तो यह झट दुर्गन्ध छोड़ने लगता है।

गलत विश्वास

जैनियों के विश्वास के अनुसार वह मल से पैदा होनेवाला सम्मूर्छन जीव है। हिन्दी विश्वकोष (१९२२, पृष्ठ ६८८) के अनुसार, 'यह नपुंसक ही होता है और अधिक से अधिक उनचास दिन तक जीवित रहता है। इसके स्पर्श, रसना और नासिका ये तीन इन्द्रियाँ होती हैं; आँख व कान नहीं होते।'

रोगों को फैलाता है

यह रक्त चूसनेवाला प्राणी है और मुख्यतः मनुष्य के खून पर जीवन-निर्वाह करता है। काला आजार, और प्रत्यावर्तित ज्वर (रिलेप्सिंग फीवर) को खटमल एक मनुष्य से दूसरे तक पहुँचाता है।

मारने के उपाय

गन्धक की धूनी कमरे में भरकर इसे नष्ट किया जा सकता है। दीवारों और दरारों में पैराफीन चुपड़ने से ये मर जाते हैं। खटमलों को भगाने के उपायों में मरुए की पत्तियों के रस को चारपाई के छिद्रों में डालना राघव ने बताया है। इसकी गन्ध उन्हें भगाती है। डी० डी० टी० इन्हें मारने में बहुत प्रभावकारी है। परन्तु गाँवों में और शहरों में भी सर्वसाधारण के लिए इसका उपयोग करना सम्भव नहीं। यहाँ मैं इन्हें नष्ट करने के सरल उपायों का उल्लेख करूँगा।

गरम पानी से

धूप में चारपाइयों को डालकर उनकी सन्धियों में उबलता पानी डालिये। यदि बड़े कड़ाहे या टब में पानी उबालने का प्रबन्ध हो सके तो बहुत अच्छा रहता है। चारपाई के पैरवाले सिरे को पहले उसमें पाँच मिनट डुबो दीजिये, फिर दूसरे सिरे को। बाहों पर और बीच के बान पर भी उबलते पानी की धाराएँ छोड़िये। सर-दियों के आरम्भ (अक्टूबर) में पाबों की सन्धियों के दरारों में इनके सैकड़ों ... अंडे दीख पड़ते हैं। इन, पर उबलता ... छोड़ने से वे नष्ट हो जायँगे। इन्हें ... देने की सावधानी न की गई तो इनसे निकलनेवाले बच्चे सारा साल परेशान ... रहेंगे। एक बार उबलते पानी से चारपाइयों को सींचने से यद्यपि प्रायः सब खटमल और उनके अंडे-बच्चे मर जाते हैं, ... उसके बाद भी कुछ खटमल शेष रह ... हैं जो रात को बिस्तरे की सफेद चादर ... घूमते नजर आ जाते हैं। इसलिए ... पूर्ण नाश के लिये अगले सप्ताह ... पाइयों को दुबारा उबलते पानी में ...

शेष पेज १८ पर

कोमल, सुन्दर
चेहरे का रहस्य...
...पांड्स के दो क्रीम

सुन्दर आकर्षक चेहरे के लिये आपको दोहरे सौन्दर्यसाधन की आवश्यकता है, रात को और सवेरे। रात को आपको चाहिये तेलों को उत्तम रूप से मिलाकर बनाया गया पांड्स कोल्ड क्रीम—अपने चेहरे को स्वच्छ करने के लिये। दिन को, शीतल और हलका पांड्स वेनिशिंग क्रीम—शरीर को काला करनेवाली सूर्यकिरणों से चेहरे को सुरक्षित रखने के लिये।

यह है आपकी दोहरी सौंदर्यचर्या: प्रति रात्रि, अपने चेहरे पर पांड्स कोल्ड क्रीम लगाइये और उसे भलीभांति रमाइये जिससे यह सघन चिकना क्रीम छिद्रों में प्रविष्ट हो जावे और विकारों का निराकरण कर दे। उसे पोंछ डालिये—अब देखिये आपके चेहरे पर कैसा सुन्दर, ताज़ा आलोक है !

प्रति सवेरे, अपने चेहरे पर पांड्स वेनिशिंग क्रीम की एक हल्की झिल्ली लगाइये। वह आसानी से रम, जाता है और आपके सौन्दर्य को दिन भर सुरक्षित रखने के लिये एक अदृश्य पर्त छोड़ कर गायब हो जाता है।

चेहरे के अधिकांश धब्बों के कारण हैं: छिद्रों की गहराई में धूल और मैल के सूक्ष्म कण जिनको दूर करने के लिये पांड्स कोल्ड क्रीम के सघन सुमिश्रित तेलों की आवश्यकता है। प्रज्वलित सूर्य किरणें जो शरीर मे काला रंग पैदा कर देती हैं इन किरणों से सुरक्षित रहने के लिये आपको पांड्स वेनिशिंग क्रीम की आवश्यकता है।

पांड्स

व्यापारिक विवरण के लिये : एल. डी. सेमूर एंड कं० (इंडिया) लि०
बम्बई, कलकत्ता, देहली, मदरास, नोवा गोवा, कराची, कोलम्बो, रंगून.

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र 'देशदूत' की साप्ताहिक चित्रावली

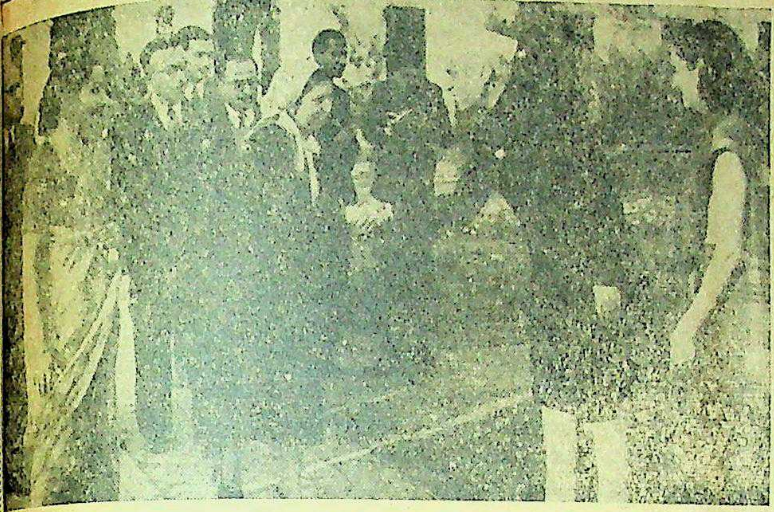

जवाहरलाल नेहरू, अपने निवास-स्थान पर एशियाई सम्मेलन के प्रतिनिधियों का स्वागत कर रहे हैं।

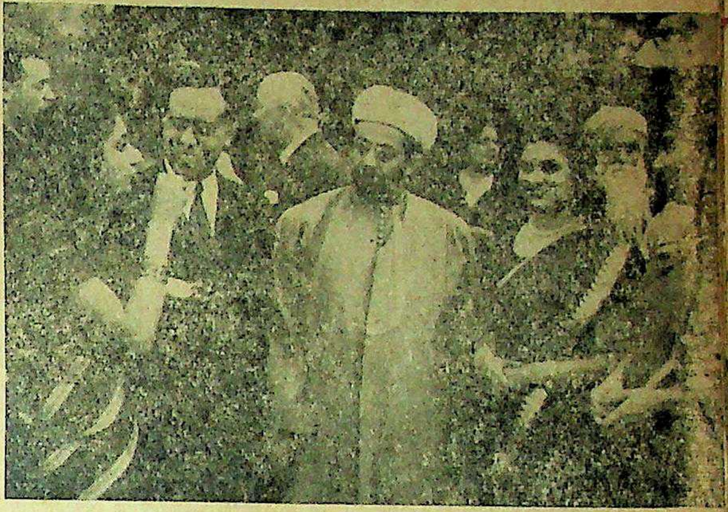

विजयलक्ष्मी की लड़कियाँ रीता और चन्द्रलेखा यमन प्रतिनिधि से बातें कर रही हैं।

दिल्ली में होनेवाली एशियाई कान्फ्रेंस

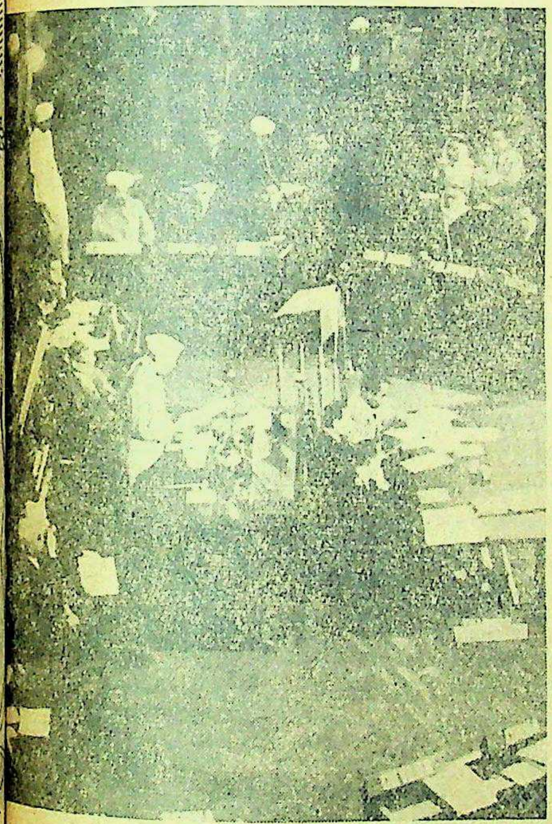

के प्रधान मंत्री पंडित नेहरू, एशियाई सम्मेलन के प्रतिनिधियों के सम्मुख भाषण कर रहे हैं।

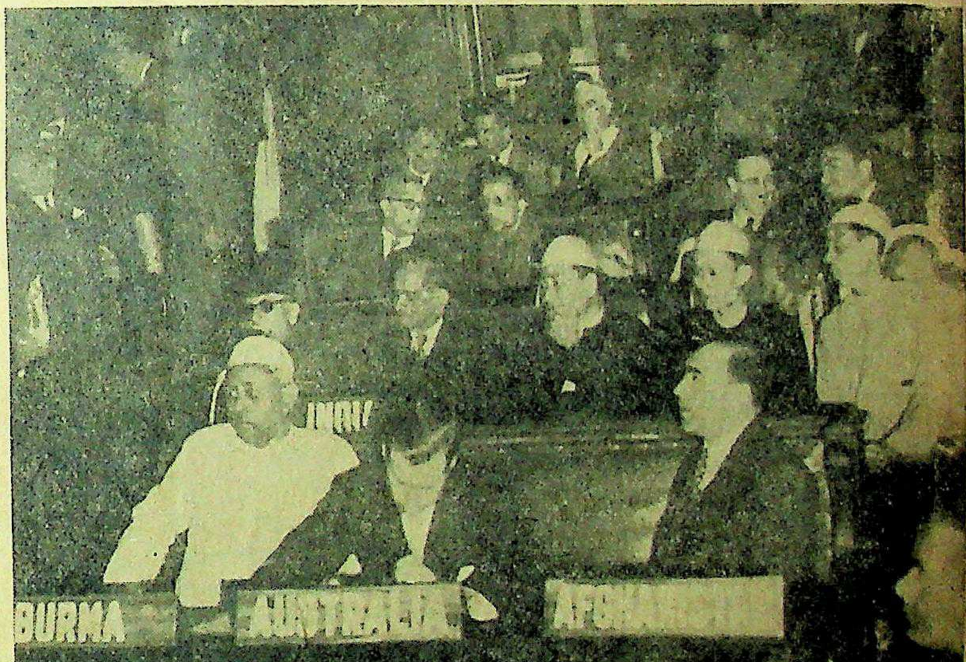

एशियाई सम्मेलन की बैठक का एक दृश्य।

सरकार की अनुसंधानशाला के प्रधान सर एस० एस० भटनागर।

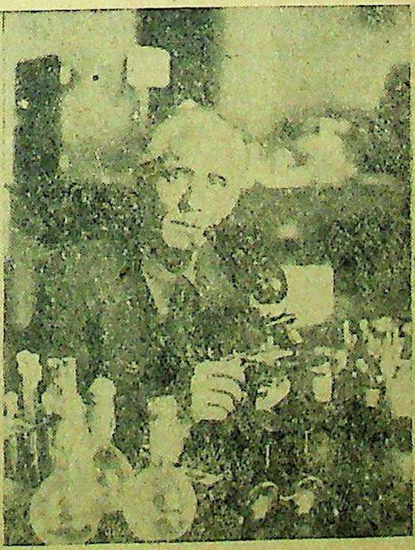

भारतीय विज्ञान कांग्रेस में डा० बी० बी० सरकार।

प्रो० चैपमैन, ब्रिटेन के वैज्ञानिक भारतीय विज्ञान कांग्रेस में।

जमशेदपुर की विज्ञानशाला के प्रधान डा० शाशा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

सारिपुत्त और महामोग्गल्लान

विगत १३ और १४ जनवरी को जो महोत्सव कलकत्ते में सम्पन्न हुआ, वह वास्तव में भारतीय राष्ट्र के उस महान् गौरव का प्रतीक था, जिसे स्वतंत्रता-प्राप्ति के साथ ही साथ उसने प्राप्त किया है। इस समारोह ने उन दिनों के आध्यात्मिक उत्तराधिकार की सुप्त स्मृतियों को फिर से जाग्रत कर दिया, जिन दिनों हमारे देश की इस पवित्र भूमि पर तथागत भगवान् बुद्धदेव विचरण करते थे। तथागत के दो प्रधान शिष्य—सारिपुत्त और महामोग्गल्लान के अस्थि-अवशेष हमारी परतंत्रता के दिनों में इँगलैंड ले जाये गये थे। वही अस्थि-अवशेष अब हमें लौटाये गये और हमारे प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल जी ने हमारी जनता की ओर से उनका स्वागत किया। और लद्दाख से लेकर जापान तक फैले हुए बौद्ध संसार ने फिर एक अपने उस आध्यात्मिक उत्तराधिकार को पहचाना, जिसका दो हजार वर्षों के बाद आज भी वह उत्तराधिकारी है। यद्यपि इन शताब्दियों में भी इन अभारतीय बौद्धों ने अपने आध्यात्मिक निवास स्थान से सम्पर्क बनाये रक्खा, तथापि इस उत्सव ने ९० करोड़ नर-नारियों के आध्यात्मिक सम्बन्ध को फिर एक बार स्पष्ट से स्पष्टतर कर दिया।

तथागत के जिन शिष्यों ने उनकी मैत्री, प्रीति, करुणा और महामानवता की वाणी का एशिया के दिक्-दिगान्तरों में प्रचार किया; तथा उनके सत्य-धर्म को प्राप्त कर स्वयं अपनी जीवनोपलब्धि को सफलीभूत किया, उनमें सारिपुत्त और महामोग्गल्लान का स्थान सर्वोच्च है। स्वयं भगवान बुद्ध ने उनकी प्रशंसा जिन शब्दों में की है, वे एक विभंग सुत्त में यों लिखे हैं—"हे शिष्यो! सारिपुत्त माता और महामोग्गल्लान करुणामयी धात्री के समान हैं।" ये दोनों महापुरुष बुद्धदेव से वयोज्येष्ठ थे, दोनों ही को स्वयं उन्होंने ही प्रधान शिष्यत्व का पद प्रदान किया था, दोनों ही उन्हीं के जीवन-काल में महाप्रयाण-पथ के पथिक हो गये थे और उन्होंने ही फिर राजगृह के पास स्तूप-निर्माण कर उनके अस्थि-अवशेषों के संरक्षणार्थ प्रबन्ध किया था। संभवतः वहीं से उन अवशेषों के कुछ अंश को लेकर सम्राट् अशोक ने साँची में स्तूप-निर्माण किया था। उसी स्तूप के खंडहर को सन् १८५१ ई० में भारतीय पुरातत्त्व-विभाग के तत्कालीन कमिश्नर जनरल कनिंघम ने खुदवाया और उसमें यत्नपूर्वक रक्खे दो प्रस्तर-सन्दूकों में बन्द इन दो महापुरुषों के अस्थि-अवशेषों का उद्धार किया। उन दोनों सन्दूकों पर ब्राह्मी लिपि में सारिपुत्त और महामोग्गल्लान के नाम खुदे हुए थे। जनरल ने इन सन्दूकों को लंदन के विक्टोरिया अलबर्ट मिमोरियल म्युजियम में संरक्षणार्थ इँगलैंड भेज दिया। इँगलैंड ने हमें अपनी स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद उन्हीं अवशेषों का प्रत्यार्पण किया है। १४ जनवरी को कलकत्ते में उस समारोह के रूप में उन्हीं पवित्रास्थियों का ग्रहण-अनुष्ठान सम्पन्न हुआ। ये पवित्रास्थियाँ साँची में स्तूप-निर्माण कर संरक्षित की जायँगी। बुद्धदेव के दो प्रधान अग्र श्रावक–सारिपुत्त और महामोग्गल्लान की पवित्रास्थियों का प्रतिग्रहण भारत की अति प्रचीन महामानवीय वाणी के पुनर्जीवित होने का प्रतीक है, क्योंकि भारत ने बुद्धदेव के महामानवता के मंत्र के रूप में उस राष्ट्रीयता की वाणी को ग्रहण किया था, जो राष्ट्र और व्यक्ति को विरोध के संकीर्ण पथ से हटाकर महत्तर महामानवता के विस्तृत पथ पर अग्रसर कराती है।

सारिपुत्त और महामोग्गल्लान—दोनों का जन्म एक दिन राजगृह के सन्निकट एक ग्राम के दो ब्राह्मण परिवारों के घर में हुआ था। सारिपुत्त का पूर्व नाम उपतिष्य था और महामोग्गल्लान का कोलित। पीछे सारिपुत्त अपनी माता सारी और महामोग्गल्लान अपनी माता मोग्गली के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन दोनों परिवारों में पहले से ही घनिष्ठता थी। दोनों पुत्रों में भी इस लिये प्रगाढ़ प्रेम पैदा हो गया। दोनों ने संजय नामक एक ही आचार्य के पास विद्याध्ययन किया। एक दिन एक नाट्याभिनय के समय दोनों के मन में आध्यात्मिक-सम्पद्-प्राप्ति की आकांक्षा जाग्रत् हुई। फिर क्या था, दोनों एक ही साथ गुरु की खोज में घर से निकल पड़े। उन्हीं दिनों बुद्धदेव के एक शिष्य, अश्वजित् राजगृह में आये हुए थे। वहीं उनका साक्षात् सारिपुत्त से हुआ। उन्होंने सारिपुत्त को बुद्धदेव की वाणी सुनाई—

"ये धम्मा हेतु प्पभवा,
तेसं हेतुं तथागत-आह,
तेसं च यो निरोधो
एवं वादी महासमणोति।"

"सभी वस्तुओं का इस संसार में उत्पन्न होने का कारण है। भगवान् बुद्ध ने उस कारण की खोज की है और यह भी पता लगाया है कि किस प्रकार इस कारण-कार्य की शृङ्खला से निवृत्ति हो सकती है।"

इस श्लोक को श्रवण कर सारिपुत्त निर्वाण-सोतपन्न (श्रोतापन्न) हो गये—उनके मन में निर्वाण-लाभ की आकांक्षा जाग्रत् हो गई। मोग्गल्लान ने भी इस श्लोक को सारिपुत्त से सुना और वे भी 'निर्वाण-सोतपन्न' हो गये। फिर दोनों ने वेलुवन में जाकर बुद्धदेव का साक्षात् किया और उनसे अपने शिष्यत्व स्वीकार करने के लिये प्रार्थना की। शिष्य होने के थोड़े ही दिन बाद दोनों ने बौद्ध-धर्म-साधना का सर्वोच्च स्तर अर्हत्व को प्राप्त कर लिया। स्वयं भगवान् बुद्धदेव ने उन्हें सर्वप्रधान शिष्य के पद से अभिषिक्त किया। उन्होंने सारिपुत्त को श्रेष्ठ ज्ञानी और मोग्गल्लान को श्रेष्ठ इद्धि (सिद्ध) घोषित किया। बौद्ध संघ में इन दोनों महापुरुषों का स्थान सर्वोच्च था। उन दिनों परिव्राजकत्व ग्रहण कर श्रमणों का जो दल बौद्ध-धर्म-प्रचारार्थ दिक्-दिगान्तरों में जाता था, वह दल इन्हीं महापुरुषों की शिक्षा-दीक्षा एवं प्रेरणा से उद्दीपित होता था। सारिपुत्त और महामोग्गल्लान भगवान् बुद्ध की वाणी के परम आधार थे, परम प्रचारक थे। आज उनकी पवित्रास्थियों की पुनः प्रतिष्ठा कर भारत तथागत की महामानवता की एक बार पुनः प्रतिष्ठा करने का संकल्प करता है। भारत ने बहुत दिनों तक आध्यात्मिकता की भित्ति पर खड़ा हो जगत्-कल्याण की महत्-वाणी सुनाकर संसार के एक बृहत्तर अंश को अपने साथ परमआत्मीयता, मैत्री, एवं प्रीति के बन्धन में बाँध रक्खा था। यदि हिंसा से उन्मत्त पृथ्वी आज उसकी वही वाणी सुनने को व्याकुल है तो भारत फिर उसे महामानवता की वही वाणी सुनायेगा। भारतीय संस्कृति की वाणी में बुद्धदेव की साम्य, प्रीति, मैत्री, करुणा, एवं महामानवता की वाणी फिर एक बार गुञ्जित हो उठेगी। आज हमारी यही कामना है कि सारिपुत्त और महामोग्गल्लान की पवित्रास्थियों को अपने वक्षःस्थल पर धारण किये भारत की सांस्कृतिक वाणी दिक्-दिगान्तरों में परिस्फुटित हो सम्पूर्ण हो जाय।

छिवकी
प्रयाग

—गोरखनाथसिंह

राष्ट्र-निर्माण में सक्रियता

(पेज ७ का शेष)

के दुश्मन नहीं हैं—हमारे तीर्थों के पंडे क्यों मुफ्त का माल उड़ावें। आज गरीब किसानों को जो कि दिन-रात बेचारे परिश्रम करते हैं—भूखों मरते हैं—ऐसा क्यों? हर भारतीय का आज यह परम कर्तव्य है कि वह उत्पादन करे और देश को आगे बढ़ाये। आज देश की स्थिति खराब क्यों है—इसका स्पष्ट कारण है कि हमारे देश के लाखों लोग दूसरों की मिहनत पर जीते हैं और स्वयं मिहनत करने से जी चुराते हैं।

कोनी ट्रेनिंग केन्द्र का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय श्रम-मंत्री माननीय जगजीवनराम ने कहा कि एक ओर देश में लाखों व्यक्ति बेकार हैं और दूसरी ओर उद्योगों के लिए योग्य व्यक्ति नहीं प्राप्त हो रहे हैं। इससे एक गम्भीर समस्या उत्पन्न हो गई है। न तो हम बेकारी की समस्या ही हल कर सकते हैं और न औद्योगीकरण को ही सफल बना सकते हैं। यह ट्रेनिंग केन्द्र उत्तम कारीगरों को तैयार करेगा जो कि देश को आगे बढ़ाने में मदद करेंगे।

औद्योगिक कार्य

भारत-सरकार ने भूतपूर्व फौजियों और निकाले गये युद्ध के कर्मचारियों को नागरिक जीवन में बस जाने में सहायता देने के लिये, डायरेक्टोरेट जनरल आफ रिसेटिलमेंट एंड एम्प्लायमेंट नामक एक संस्था संगठित की है। इस संस्था के अंतर्गत मध्यप्रांत में तथा अन्य प्रांत में एम्प्लायमेंट एक्सचेञ्ज नामक विशेष कार्यालय है जो आवेदनकर्ताओं को उपयुक्त नौकरियाँ दिलवाने में मदद करता है। इसके अन्तर्गत ऐसी योजनायें हैं जिनमें भूतपूर्व फौजियों को निःशुल्क शिक्षण भी दिया जाता है। पर अब तो सबके लिये यह संस्था नौकरियाँ ढूंढ़ने में मदद करती है। लोगों को ट्रेनिंग भी दी जाती है। इंजीनियरिंग कार्यों की ट्रेनिंग के अतिरिक्त अन्य कामों की ट्रेनिङ्ग दी जाती है—जैसे खराद का ... बढ़ई, सीमेंट का काम करनेवाला, ... ड्राइवर, मोटर आदि मशीन सुधारनेवा... मोल्डर, टीन व पीतल के काम करनेवा... मशीन काम आदि। संयुक्त शिक्षण के... कोनी तथा बरार विक्टोरिया मेमोरि... टेकनिकल इन्स्टिट्यूट अमरावती ... प्रांत के दो बड़े शिक्षण-केन्द्र हैं... केन्द्रों में जो शिक्षा दी जाती है ... कुछ महत्त्वपूर्ण व्यापारों की तालिका ... प्रकार है—

(१) हाथ से सूती कपड़े तथा ... रेशमी कपड़े की बुनाई।

(२) साड़ियों की किनारियों ... बुनाई।

(३) सूती धागे की कताई, ... तथा बुनाई।

(४) हाथ-मशीन से सूत बुनाई।

(५) दरियों की बुनाई।

(६) जूते-चप्पलों का बनाना।

(७) साबुन बनाना।

(८) कटाई और सिलाई।

(९) फलों का संरक्षण जिसमें अ... मुरब्बे, तथा शर्बत बनाना शामिल है।

इसी तरह के अन्य कई उ... चलाये जा सकते हैं।

हिन्दुस्तान में आज जो ... फैली हुई है, उसका हमें नाश करना ... देश को सुदृढ़ बनाना हम सबका ... कर्त्तव्य है। क्या देश के नवयुवक ... क्षेत्र में कूदकर राष्ट्र-निर्माण में सह... होंगे। हर भारतीय आज देश के ... की ओर आशा-भरी दृष्टि से देख रह...

(भारतेंदु हिन्दी सिंडीकेट ...

आप अभिनेता हो सकते

यदि आप सिनेमा में अभि... अथवा अभि... होना चाहें, ... १००) से १५... प्रतिमास पैदा ... चाहें, तो आज ... लिखिये। आप ... पढ़े हैं इसकी ...

चिन्ता नहीं। पत्र-व्यवहार अँगरेजी ... कीजिए।

डाइरेक्टर
नेशनल फिल्म कारपोरेशन, हल्का
१३, (D. A.) जलन्धर सि...

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयु... सुगन्धित तैल से बाल का पकना ... सफेद बाल जड़ से काला हो जा... यह तैल दिमागी ताकत और आँ... रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्... हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा... मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ... और कुल पका हो तो ५) का ... मँगवा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज (...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर में राजस्थान विश्वविद्यापीठ कला-केन्द्र द्वारा आयोजित वसन्त पंचमी के उत्सव पर भाषण देते हुए पं० जनार्दनराय जी नागर ने कहा कि कला-केन्द्र का यह आयोजन सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। सांस्कृतिक कलात्मक दृष्टि आज के राजनैतिक उथल-पुथल के कारण कम होती जा रही है। आवश्यकता है, सांस्कृतिक जीवन के पुनर्निर्माण की। वसन्तपंचमी का यह अवसर उल्लासमय वातावरण उत्पन्न करता है और ऋतु-परिवर्तन के साथ-साथ हमारे मानस को भी नई चेतना और कल्पना से विभोर कर देता है। कला के सम्बन्ध में भी अब हमारी दृष्टि बदलनी चाहिए। कला केवल मनोरंजन की वस्तु ही न रहे, लेकिन उसे धरती के भीतर अपनी जड़ जमानी चाहिए; अर्थात् जीवन के प्रति हमारी कलात्मक दृष्टि होनी चाहिए। कला का पुराना मापदण्ड अब बदल गया है, उसे सामान्य जन के जीवन से अपना तादात्म्य स्थापित करना पड़ेगा, यदि उसे सजीव बने रहना है तो।

श्री नगर के बाद सभापति पद से प्रसिद्ध पत्रकार तथा पुराने कार्यकर्ता श्री रामनारायण जी चौधरी ने अपने वक्तव्य में कहा कि "इस विद्यापीठ द्वारा आयोजित उत्सव में सजीवता और उत्साह मैं देख रहा हूँ। यद्यपि जनता का समूह नहीं है, लेकिन समूह की अपेक्षा इस छोटी सी टोली के द्वारा बहुत कार्य किया जा सकता है। शायद आपको मालूम न हो राजस्थान में राजनैतिक आन्दोलन का श्रीगणेश करनेवाले केवल तीन व्यक्ति थे। श्री विजयसिंह जी "पथिक", श्री रामनारायण जी चौधरी तथा श्री माणिक्यलाल जी वर्मा। तीन ने जिस स्वदेश भक्ति की प्रेरणा से कार्य किया था, उसी तरह आप यदि यह तय कर लें कि आप तन-मन से विश्वविद्यापीठ को विकसित करेंगे तो, कोई कारण नहीं कि विद्यापीठ आगे न बढ़े। कला तो जीवन की कला होनी चाहिए। महात्मा जी इस युग के सबसे बड़े कलाकार थे, उन्होंने कला को समझाया और प्रत्येक व्यक्ति को उस कला को अपनाने की बात कही है। जिस कला का जनता के सुख-दुःख से कोई सम्बन्ध न हो, उस कला का कोई मूल्य मैं तो नहीं समझता।"

राजस्थान विश्वविद्यापीठ महात्मा गांधी कार्यकर्ता विद्यालय में सार्वजनिक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया और उसमें विभिन्न कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस तथा राजस्थान की स्थिति पर श्री रामनारायण चौधरी से प्रश्न किये। श्री चौधरी जी ने राजस्थान के जीवन पर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला तथा प्रश्नों के उत्तर दिये।

विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि संयुक्त राजस्थान राज्य के अधिकांश कार्यकर्ता, मन्त्रीगण तथा नागरिक सभा अजमेर को राजस्थान की राजधानी के लिए उपयुक्त समझते हैं—और अब आशा की जाती है कि राजधानी अजमेर ही होगी।

राजस्थान के प्रभावशाली मन्त्री ने अनाधिकृत रूप से बताया कि अजमेर को राजस्थान में मिलाने के लिए सरदार पटेल मंजूर हो गए हैं। अब प्रश्न यह रह गया है कि किस स्थिति में उसे किस प्रकार मिलाया जाय। सिरोही के सम्बन्ध में आपने कहा कि "सिरोही को भाषा के आधार पर बाँट देने की आजकल चर्चा चल रही है; इसमें आबू राजस्थान के अन्तर्गत आ जायगा। श्री के० एम० मुंशी ने भी इसी तरह के विचार एक व्यक्तिगत मुलाकात में व्यक्त किये हैं।"

संयुक्त राजस्थान की राजधानी उदयपुर के बिजलीघर की मजदूर यूनियन के आठ सदस्य तथा स्थानीय समाजवादी पार्टी के मन्त्री को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया है। अनाधिकृत सरकारी सूत्रों से मालूम हुआ है कि इनकी गिरफ्तारी का कारण राजनैतिक नहीं है। समाजवादी पार्टी के एक प्रमुख पदाधिकारी ने इस सम्बन्ध में बताया कि कोई क्रिमीनल कारण नहीं है, अपितु सरकार ने जबरदस्ती यह बहाना बनाया है; क्योंकि समाजवादी पार्टी के सदस्य को राजनैतिक कारणों से गिरफ्तार करने का असर भारत-व्यापी पड़ता है। इसलिए सरकार राजनैतिक कारणों को दबाकर इस प्रकार के कारण जान-बूझकर बनाना चाहती है। सरकार मजदूरों की माँगों को पूरा नहीं करना चाहती।

—संवाददाता

* * *

टिहरी राज्य महिलामण्डल की प्रथम वर्षगाँठ के उपलक्ष में टिहरी राज्य महिलामंडल का एक विराट् सम्मेलन श्रीमती नन्दीदेवी थपलियाल की अध्यक्षता में हुआ जिसका उद्घाटन टिहरी गढ़वाल राज्य के अर्थमंत्री श्री आनन्दशरण रतूड़ी ने किया। इसमें महिलामंडल द्वारा तैयार की गई वस्तुओं की प्रदर्शनी की गई जिसमें महिलामंडल की संयोजिका श्रीमती मोहनी देवी रतूड़ी द्वारा तोरी (सब्जी) अथवा गोदड़ी की अटैची एक बिलकुल नई चीज थी। प्रदर्शनी का उद्घाटन टिहरी राज्य के यातायात-मंत्री श्री खुशहालसिंह राँगड़ ने किया।

सम्मेलन में स्वीकृत हुए प्रस्तावों में सर्वप्रथम सभापति की ओर से पूज्य बापू के निधन पर शोक प्रकट करते हुये उनके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई; और बापू जी के सिद्धान्तों की पूर्ति तथा साम्प्रदायिकता को मिटाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा की गई। दूसरे प्रस्ताव द्वारा महिलाओं की बेकारी और निरर्थक शिकायती आदतों को दूर करने के लिए उनको रचनात्मक कार्यक्रम पर लगाये जाने का निश्चय किया गया, रचनात्मक कार्य ही टिहरी राज्य महिलामंडल का मुख्य कार्याङ्ग निश्चित हुआ। तीसरे प्रस्ताव द्वारा टिहरी राज्य महिला मंडल का औद्योगिक खोलना तय किया गया। चौथे प्रस्ताव द्वारा गढ़वाल की कुप्रथाओं का नामोनिशान मिटाने और उनके द्वारा पीड़ित ग्रामीण महिलाओं के उत्थान करने का संकल्प किया गया। पाँचवाँ प्रस्ताव टिहरी राज्य महिलामंडल के पिछले विधान के नव-निर्माण के विषय में था, जिसके लिए सात सदस्यों की एक विधान-निर्माण समिति का निर्वाचन कार्यकारिणी द्वारा किया जायगा।

प्रस्तावों के रखे जाने से पहले टिहरी राज्य महिलामण्डल की प्रधान मंत्राणी श्रीमती प्रेमवती सकलानी ने मण्डल की पिछले वर्ष की रिपोर्ट सुनाई जिसके द्वारा जनता को भली भाँति मालूम हो गया कि अनेक विरोधी परिस्थितियों के होते हुए भी टिहरी राज्य महिलामण्डल ने दृढ़ता से आशातीत प्रगति की।

तत्पश्चात् टिहरी राज्य के अर्थमंत्री श्री आनन्दशरण रतूड़ी ने भाषण दिया जिसमें महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। टिहरी महिलामण्डल के संस्थापक श्री बुद्धिसागर नौटियाल ने महिलामंडल की प्रशंसा की।

व्याख्यान-वाचस्पति श्री गुणानन्द डनियाल ने महिलाओं को कुप्रथाएँ तोड़ कर स्वावलम्बी बनने को कहा। अन्त में सम्मेलन की सभापति श्रीमती नन्दी देवी थपलियाल ने महिलाओं को टिहरी राज्य महिलामण्डल का स्पष्टीकरण करते हुए उनसे उसको सुदृढ़ बनाने की अपील की, तथा सभासदों को धन्यवाद दिया।

—सत्यवती देवी

* * *

रायबरेली जिले के गाँव रमई में कालीदीन नामक पासी के यहाँ माघ शुक्ल पूर्णिमा रविवार, तारीख १३ फरवरी को ४ बजे दिन में सूकरी (सुअरि) ने दो हाथी पैदा किये। उन बच्चों के हाथ, पैर, मुँह, नाक, सब आकार हाथी का सा था। लगभग दो घंटे तक जीवित रहकर बच्चे मर गये। मृत शरीर को भी देखने के लिये दो दिनों तक अत्यन्त भीड़ थी।

—कृष्णदत्त शास्त्री

* * *

खैरागढ़ राज्य (मध्यप्रांत) श्री रमण-विद्यापीठ की साहित्य विनोद, साहित्य सरोज तथा साहित्य दिवाकर परीक्षाओं का केन्द्र स्थापित कराने का आवेदन-पत्र भेजने की अंतिम तिथि १५ अप्रैल तथा परीक्षा का आवेदन-पत्र भेजने की अंतिम तिथि ३० अप्रैल, १९४९ कर दी गई है। फलतः परीक्षाएँ मई में न होकर जुलाई में होंगी। केन्द्र व्यवस्थापक और परीक्षार्थी कृपया इस तिथि-परिवर्तन को नोट कर लें।

—रजिस्ट्रार

* * *

रतनगढ़ (बीकानेर) के धर्मसभा भवन में एक विराट् साहित्य-समारोह आचार्य काशीनाथ पांडेय "चन्द्रमौलि" के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता कवि एवं पत्रकार श्री अद्भुत शास्त्री (कलकत्ता), बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री आचार्य ओङ्कारनाथ जी लाटा (सरदार शहर), आयुर्वेद प्रगति संघ के मन्त्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत (पिलानी), आचार्य हनुमतप्रसाद शास्त्री, धनेश गोस्वामी, मातृदत्त, घनश्याम शास्त्री, मदनमोहन मिश्र, वाचस्पति द्विवेदी, गजानन वर्मा, भवानीशंकर आदि महत्त्वपूर्ण कवि एवं वक्ताओं ने समारोह में भाग लिया। सर्वश्रेष्ठ कवि श्री अद्भुत शास्त्री द्वारा पुरस्कृत किया गया।

—प्रचार-मन्त्री

* * *

वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति का निरीक्षण विधान-परिषद् के अध्यक्ष डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने किया। आपने समिति के परीक्षा-विभाग, राष्ट्रभाषा, विभाग, पुस्तक-विभाग, प्रकाशन-विभाग तथा प्रेस आदि को देखकर विशेष सन्तोष प्रकट किया।

राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के कार्यकर्त्ताओं ने एक सभा का आयोजन किया जिसमें समिति की ओर से डा० राजेन्द्रप्रसाद जी का हार्दिक स्वागत किया गया।

बाबू जी ने अपना संतोष प्रकट करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के व्यापक कार्य को देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे मालूम भी न था कि समिति ने अपना इतना अधिक काम बढ़ा लिया है। भदन्त जी मुझे यह देखने के लिए यहाँ न लाते, तो शायद मैं इस बढ़े हुए काम को न देख पाता।

राष्ट्रभाषा के फैलते हुए प्रचार-कार्य का उल्लेख करते हुए डा० राजेन्द्रप्रसाद ने कहा कि लोगों में राष्ट्रभाषा का चाव इतना बढ़ गया है कि परीक्षार्थियों की संख्या एक लाख से ऊपर पहुँच गई है। आपने आशा प्रकट की कि यह कार्य दिनोंदिन बढ़ता जायगा। इस संस्था के द्वारा देश का उपकार हो रहा है इसमें तो कोई संदेह नहीं है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग के प्रति अपना आदर प्रकट करते हुए डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने आगे कहा कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से मेरा सम्बन्ध बहुत पुराना है। पूज्य मालवीय जी के सभापतित्व में जब प्रथम बार सम्मेलन हुआ था उसमें मैं गया था। सम्मेलन ने पिछले वर्षों में जो कार्य किया वह किसी से छिपा नहीं है। सम्मेलन का प्रधान कार्य राष्ट्रभाषा के प्रचार का रहा है और इसीलिए सम्मेलन का इतना नाम हुआ है।

कार्यकर्ताओं को उत्साहित करते हुए डा राजेन्द्रप्रसाद जी ने कहा कि खूब जोरों से और खूब उत्साहपूर्वक उन्हें अपना काम करते रहना चाहिये। आप जितने जोरों से जितनी लगन से राष्ट्रभाषा का प्रचार करते रहेंगे उतना ही देश का भला होगा और सब लोगों का उतना ही प्रेम और सहयोग समिति को मिलेगा। वर्धा अपना महत्त्व रखता ही है, राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति ने उसका महत्त्व और बढ़ाया है।

—संवाददाता

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२५
आरोंदा
सुरज १८६६ छाप
नीलगिरि तैल
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएन्जा, दादखाज आदि बीमारियोंमें
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय सरकार का बजट

एक करोड़ ५५ लाख के घाटे का अनुमान

तारीख २८ फरवरी को भारतीय पालियामेंट में स्वतन्त्र भारतीय संघ का द्वितीय वार्षिक बजट उपस्थित करते हुए केन्द्रीय सरकार के अर्थ-मंत्री डाक्टर जान मथाई ने घोषित किया कि इस चालू वर्ष के बजट में १ करोड़ ५५ लाख रुपये का घाटा होगा जब कि पहले २ करोड़ १४ लाख रुपये के घाटे का अनुमान किया गया था। करों के वर्तमान स्तर से अगले वर्ष आमदनी ३०७ करोड़ ७४ लाख रुपये की तथा ३२२ करोड़ और ५३ लाख रुपये का खर्च होगा। इस प्रकार सन् १९४९-५० के बजट में १४ करोड़ ७९ लाख रुपये के घाटे का अनुमान है।

बजट को दो भागों में बाँटा गया है। एक घाटे का भाग और दूसरा आय का। घाटा वाले भाग में (१) पूँजी के लाभ पर वसूल किया जानेवाला कर रद्द कर दिया गया है, (२) न्यूनतम तथा मध्यम श्रेणी की आयवाले वर्ग का आय-कर घटा दिया गया है, (३) सुपर टैक्स घटा दिया गया है, (४) तेलहन और वनस्पति तेल पर लगनेवाला निर्यात-कर उठा लिया गया है, (५) उद्योग-धन्धों के वास्ते कच्चे माल पर लगनेवाली चुंगी के सम्बन्ध में सहायता प्रदान की गई है, (६) हवाई डाक पर लगनेवाला अतिरिक्त कर उठा लिया गया है। इसके अतिरिक्त एक लाभ जनता के लिए दिखाई देता है—वह यह कि जहाँ तक सम्भव होगा सभी प्रथम श्रेणी की डाक वायुयान द्वारा ढोई जायगी। परन्तु जनता पर इसका भार भी पड़ेगा—वह यह कि डाक की दर बढ़ गई है। केवल लाभ की दृष्टि से विलासिता की वस्तुओं पर अतिरिक्त कर लगाया गया है। ऐसे कर (१) सिगार और सिगरेट पर एक नया निर्यात-कर लगाया गया है (२) मोटर-स्प्रिट पर कर बढ़ा दिया गया है, (३) चीनी, मोटर और टायर पर आबकारी कर बढ़ा दिया गया है, (४) सूती कपड़े पर भी आबकारी कर बढ़ाया गया है।

अर्थ मंत्री ने घोषित किया है कि पूँजी लाभ कर उठाने से ३ करोड़ की हानि होगी, दस हजार रुपये तक की आय पर कर एक पैसा घटा दिया गया है। यह कर घटाने से सरकारी आय में १ करोड़ की हानि होगी। अर्जित आय के मामले में इनकम टैक्स और सुपर टैक्स की अधिकतम दर रुपये में चौदह आने होगी। अर्जित आय में उन्होंने सुपर टैक्स की अधिकतम दर में दो पैसा घटाने का सुझाव दिया। इस रियाअत के कारण सरकारी आय में २ करोड़ १ लाख रुपये की हानि होगी। तेलहन और वनस्पति तेल पर चालू साल निर्यात कर न लगेगा। अतः इस मद में ५ करोड़ रुपये की हानि रहेगी। हवाई जहाजों में उपयोग की जानेवाली स्प्रिट का कर आधा कर देने से ४० लाख की सरकारी आय कम हो जायगी।

लाभ का जो अनुमान लगाया गया है वह यह कि—लिफाफे का मूल्य ६ पैसे से बढ़ाकर दो आना कर दिया जायगा। पोस्टकार्ड का दाम दो पैसे से बढ़ाकर तीन पैसे हो जायगा। हवाई डाकों का सर चार्ज हटा दिया गया है। इस पर भी ८४ लाख रुपये का लाभ होगा। शराब पर सर चार्ज लगेगा। अन्य कर जो बढ़ाये गये हैं उनमें—नकली रेशम, सूत, धागा, मिट्टी और चीन के बर्तनों पर सर चार्ज दूना हो जायगा। अखबारी कागज और स्टेशनरी को छोड़कर कागज, शीशे, शीशे के बर्तन, शेट और शीशे के प्लेट, धातुओं के बने मेज-कुर्सी, फ्लैश लाइट, फोटो के सामान, छोटी बड़ी घड़ियों पर ड्यूटी बढ़ाई जायगी। चीनी पर आबकारी ड्यूटी ३ रुपये प्रति हंडरवेट से बढ़ाकर ३ रुपये १२ आने कर दी गई हैं। आबकारी टैक्स १२ आने से १३ आने बढ़ा दिया गया है। सुपारी पर ५ आना प्रतिपौंड से ७॥ आना प्रतिपौंड बढ़ाया गया है। इससे सरकार को १ करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय होती। बारीक कपड़े पर ६॥ प्रतिशत, और मध्यम तथा मोटे कपड़े पर २ पैसा प्रतिगज आबकारी कर बढ़ाया गया है। यह कर केवल मिल के बने कपड़े पर लगेगा करघे से बुने पर नहीं। छोटी छोटी कम्पनियों को सहायता भी दी गई है। चीनी के ऊपर आबकारी कर के बढ़ाने से १॥ करोड़ रुपये की आय होगी। दियासलाई की फैक्टरियों पर ५ लाख ग्रोस से कम दियासलाई बनानेवाले पर अब पहिले से कम कर लगेगा। इससे आय में अन्तर न होगा। कर के प्रस्तावों तथा सहायता-सम्बन्धी कार्यों के फलस्वरूप १९४९-५० के बजट में अन्ततोगत्वा ४५ लाख रुपये की बचत होगी। टायर और मोटर गाड़ियों पर लगनेवाला कर, उसके मूल्य के १५ प्रतिशत से बढ़ाकर ३० प्रतिशत कर दिया गया है। इससे ७० लाख की सरकारी आय बढ़ जायगी।

बजट के मुख्य मदों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सरकार ने विलासिता को कम करने के उद्देश्य से उस पर अधिक कर बढ़ाया है। परन्तु एक विशेष बात बजट में स्पष्ट नहीं है—वह यह कि शिक्षा और उत्पादन-सम्बन्धी प्रश्न। यह बहुत कुछ सम्भव है इसका विवरण आगे की बैठकों में प्रस्तुत हो।

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

युक्तप्रांन्तीय बजट

१५ लाख की बचत का अनुमान

युक्तप्रान्तीय धारासभा में प्रान्त के प्रधान तथा अर्थमंत्री पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त ने सन १९४९-५० के चालू साल का बजट पेश करते हुए घोषित किया है कि इस चालू वर्ष के बजट में ५५७३ लाख रुपए की आय तथा ५५५८ लाख रुपए के व्यय का अनुमान है। बजट-सम्बन्धी सरकारी नीति घोषित करते हुए प्रधान मंत्री ने कहा कि सरकारी जमींदारी उन्मूलन कोष और शक्कर अनुसंधान तथा श्रम गृहवास कोष नामक दो कोषों की स्थापना करेंगी और १० करोड़ रुपए की पूँजी से प्रान्त के लिए एक औद्योगिक साख कारपोरेशन की स्थापना करेगी जिससे कि मुद्रास्फीति का विरोध किया जा सके तथा विभिन्न औद्योगिक योजनाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जा सके।

बजट में कम वेतन पानेवाले सरकारी कर्मचारियों के महँगाई भत्ता-वृद्धि को स्वीकार किया गया है। स्थानीय संस्थाओं को अपने कर्मचारियों के वेतन और भत्ता बढ़ाने के लिए सरकार उनके व्यय को पूरा करने को १०० लाख रुपए का एडवान्स देगी। सीमेण्ट और नकली रेशम, कागज, रंग, वार्निश की फैक्टरियाँ स्थापित करने के सम्बन्ध में प्रारम्भिक पर्यावलोकन करेगी तथा नेपाल-सीमा पर कोयले की खानों के सम्बन्ध में जाँच करेगी। इस साल के बजट में नये कर नहीं बढ़े हैं। विशेष कर खर्च विकास योजनाओं पर है। चीनी के मजदूरों की ओर विशेष ध्यान दिया जायगा।

प्रधान मंत्री ने कहा—कण्ट्रोल के समय में जब्त की हुई चीनी के स्टाक से १०० लाख रुपये लाभ में प्राप्त हुए थे। ५० लाख रुपये शीरे से लाभ हुआ है। इस रकम में से वे शकर के कारखानों में काम करनेवाले मजदूरों के मकान बनवाने में ५० लाख रुपये रक्खे गये हैं, ७३ लाख रुपये की एक रकम और मिलाकर २·२३ करोड़ रुपये इसी उद्योग में खर्च किये जायँगे। कम वेतन पानेवाले कर्मचारियों के भत्तों की वृद्धि से २०० लाख रुपये खर्च होंगे। शरणार्थियों के लिए सहायता का काफी प्रबन्ध किया गया है इस वर्ष प्रांतीय सरकार ६३५ लाख रुपये शरणार्थियों पर व्यय करेगी। समस्त प्रांत में अनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा-कार्य को बढ़ाने के लिए ४४०० नई पाठशालाएँ खोलना है। ४०,००० एकड़ नई भूमि को खेती के योग्य बनाना है। सरकारी समितियों द्वारा बीज और खेती के औजार किसानों को पहुँचाना, सिचाई की योजना को बढ़ाना है। प्रान्त में जिला बोर्डों और स्वयं की सड़कों को बनाना और यातायात को बढ़ाना है। देहाती क्षेत्रों में ५० एलोपैथिक और ७० देशी दवाखानें खोले जाएँगे।

जनता में नागरिक उत्तरदायित्व की भावना की वृद्धि करने के लिए पञ्चायत राज्य स्थापित किया जायगा। प्रांतीय रक्षकदल को भी सहायता दी जायगी जिससे शांति-स्थापना में सहायता मिलेगी। पुलिस-खर्च के खर्च का अनुमान ७.३३ करोड़ रुपये का था परन्तु चालू वर्ष में ५० लाख रुपये कम कर दिये गये हैं। सरकारी नौकरी के लिए नये प्रकार के कर्मचारी तैयार करने के लिए इलाहाबाद में एक ट्रेनिङ्ग संस्था खोली जायगी। यही हमारे प्रांत के बजट का चित्र है।

तीसरे महासमर की तैया[रियाँ]

(पेज ६ का शेष)

स्वतंत्र न होने पाये, इसलिये सब मि[लकर] काम कर रहे हैं। कोरिया में शीघ्र ही [गड़]बड़ी होने के लक्षण दिख रहे हैं। इसी[से] जेनरल मैकार्थर घबराये हैं कि [कहीं] जापान में भी यह कम्यूनिज्म रोग [न] आ जाय।

जर्मनी के नेताओं को युद्धाप[राधी] बनाकर नूरेन्बर्ग की तथोक्त अन्तर[राष्ट्रीय] न्यायालय से फाँसी आदि की जो स[जा] उनके राजनीतिक शत्रुओं ने दिला[ई है] उन्हें जर्मन कभी नहीं भूल सकते। [जब] अवसर मिलेगा, तभी वे बदला ले[ंगे]। इसी प्रकार जापान के तोजो आदि ने[ताओं] को फाँसी की जो सजा हुई है, उसे [क्या] जापान भूल सकता है? राजनीति में [नियम] है कि जब शत्रु प्रबल हो और उससे [जीतने] की कोई आशा न हो तब उसे सि[र पर] लेकर नाचे और ज्यों ही अनुकूल स[मय] देखे कि उसे कच्चे घड़े की तरह [जमीन] पर पटक दे। अमेरिका और ब्रिटेन [कम्यु]निज्म के विरुद्ध फ्रांस और हालैंड [से] जो मोर्चा लगा रहे हैं, उससे अ[न्त में] उन्हीं की हानि होगी, क्योंकि जर्मनी [और] जापान को रूस से कुछ मिलना नहीं [है]। जो मिलेगा, वह ब्रिटेन, फ्रांस और हा[लैंड] तथा बेलजियम-पश्चिमी राज्यसंघ [के] सदस्यों से ही मिलेगा। जर्मनी और जा[पान] को रूस से लड़ने के लिए ब्रिटेन [और] अमेरिका खड़े कर रहे हैं, परन्तु यह [नहीं] सोचते कि मधु कैटभ की तरह उन्हीं[को] मारने दौड़ेंगे। "प्रायः समापन्न वि[पत्ति] काले धीयोऽपि पुंसाम् मलिना भवन्ति[।]"

(प्रभात सिंडीकेट, ब[म्बई])

खटमल—आपके खून का प्यासा

(पेज १४ का शेष)

देना चाहिये। इसके बाद ही आपको [खट]मलों के उपद्रवों से मुक्त समझना चा[हिये] और अब आप देखेंगे कि आपके ब[च्चे] आप स्वस्थ नींद का उपभोग [करने] लगे हैं।

वाष्प द्वारा

बस्ती में एक ऐसा कमरा बनाना चा[हिये] जिसके दरवाजे और खिड़कियाँ इ[स तरह] बन्द हो सकें और उनमें से हवा का आ[वा]गमन न हो। इस कमरे के अन्दर [गरम] वाष्प के नलके लगे हों। चारपाइयाँ एक-दूसरे के ऊपर चुन दीजिये। क[मरे के] आयतन के अनुसार उसमें अधि[क से] अधिक चारपाइयाँ जमाने के बाद [ऐसा करें कि] कमरे के अन्दर गरम वाष्प भर जायँ। खटमलों और उनके अण्डे[ों] को मारने के लिए यह प्रभावशाली [विधि] से काम करेगी। बड़े शहरों में, जहाँ खर्च करके लोग गरम पानी के शावर (वर्षा स्नान) की सुविधा प्राप्त करते हैं, खटमलों को नष्ट करने के इस उ[पाय से] अवश्य लाभ उठाएँगे। गाँवों में और [छोटी] बस्तियों में तो लोग चारपाइयों को धू[प में] डालने, झाड़ने और गरम पानी से [धोने का] झंझट को कर लेते हैं, परन्तु बड़े श[हरों में] इसके लिए उपयुक्त सुविधायें न [होने से] वाष्प द्वारा खटमलों को नष्ट करने [के लिए] सार्वजनिक कमरों का अवश्य [प्रबन्ध] होगा। लौण्ड्री आदि की तरह यह [परि]मित धन्धा बन सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Chennai and eGangotri

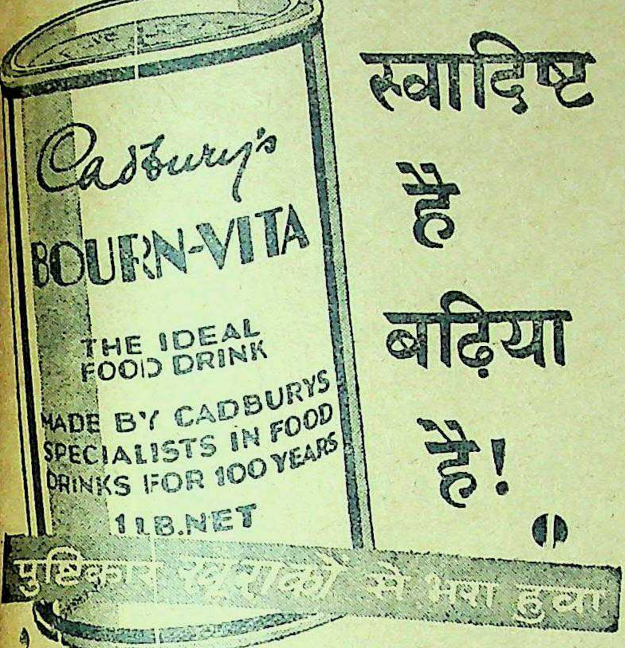

'बोर्न-विटा' में हड्डी बनाने और ताक़त देनेवाले उपादान ९५ सैकड़ा से अधिक ही होते हैं। साथ ही साथ यह ऐसा मजेदार होता है कि इससे हाजमा तेज़ हो जाता है और यह आसानी से हज़्म भी हो जाता है। ख़ास तौर पर गर्भ और स्वास्थ्य लाभ के दिनों में।

कैडबरी का

बोर्न-विटा

कैल्शियम और ग्लूकोज से भरपूर

K. B. 1

बृहत्

अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा

(मूल ले०—महामना डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)

ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)

प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिटल

पो० लहेरियासराय (बिहार)

आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा जगत के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उत्तम चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया कि बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहिये। इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, तथा दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है जो इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी हैं, क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया है। सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६।) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—

सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)

लहेरियासराय (बिहार)।

१०,०००) रुपये की असली घड़ियाँ मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, उनको लम्बे घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न उगते हों वहाँ फिर से पैदा करता है। आँखों की रोशनी को तेज करता है। दिमाग को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। दिमागी काम करनेवालों के लिए अकसीर है। शौकीनों के लिए उमदा तोहफा है। कीमत एक शीशी २।) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६।।) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी प्रत्येक शीशी के ग्राहक को एक अँगूठी सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और एक असली अमरीकन रिस्टवाच जिसकी गारण्टी १२ साल है मुफ्त।

नोट—तीन शीशी के खरीदार को छः अँगूठियाँ सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और तीन अमरीकन रिस्ट घड़ियाँ मुफ्त इनाम दी जाती हैं। आज ही आर्डर भिजवाएँ क्योंकि यह अवसर केवल चन्द दिनों के लिए है। नापसन्द होने पर कीमत वापस की गारण्टी।

संन्यासी आयुर्वेदिक फारमेसी, (D. A.) हल्का नं० २२, अमृतसर

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना ३) रुपये तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको दस हजार रु० नकद इनाम। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। बा० ला० मुन्शीराम जी क्लाथ मर्चेन्ट धर्मशाला से लिखते हैं कि आपका सोना अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला, यह देखकर बहुत खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। १२ तोले सोना वापसी डाक से और भेज दें बाद में आपको और भी आर्डर दिया जायगा। यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है और असली सोने की तरह कूटा या पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिसको हुशियार से हुशियार शर्राफ मुश्किल से पहचान सकता है, मशहूर करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु०। ३ तोला का मूल्य ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला का २८) रु०।

जरूरी नोट :—हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त दी जावेगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी कांटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोला के खरीदार को एक लाकट विमय चैन, दो जोड़ी चूड़ी और दो बाम्बे फैशन अँगूठी और डाक-खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता—

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी (D. A.)

हल्का नं० २२ अमृतसर

मुफ्त

यदि आप यौवन या बुढ़ापे में किसी प्रकार के रोग से दुखी हों तो हमें शीघ्र ही विस्तारपूर्वक लिखें। हम आपको अपनी स्वच्छ तथा फलदायक औषधि भेजेंगे। जिसके सेवन से आप शीघ्र ही आरोगी बनकर जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

हर प्रकार का पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

*पत्र-व्यवहार करते समय अपना नाम और पता पूरा और सुलेख लिखें।

इम्पोरियल चैम्बर आफ साइंस, दुर्ग्याना,

(P. B. 61 अमृतसर

'देशदूत' में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

कविता, उपन्यास और विज्ञान का आनन्द लीजिए

कवि रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाव-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता और कल्पना की उड़ान की दृष्टि से अनुपम। सजिल्द प्रति का मूल्य ३) तीन रुपये।

शान्त शिष्ट सत्याग्रही प्रताप ने अपने मधुर व्यवहार से
को किस प्रकार कट्टर देशभक्त बनाकर अपना अनुगत बना लिया
इस उपन्यास में पढ़िए। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

लेखक कुँवर सुरेशसिंह। यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। मन-बहलाव के साथ साथ विविध जानवरों की जानकारी के लिए इसे पढ़िए। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

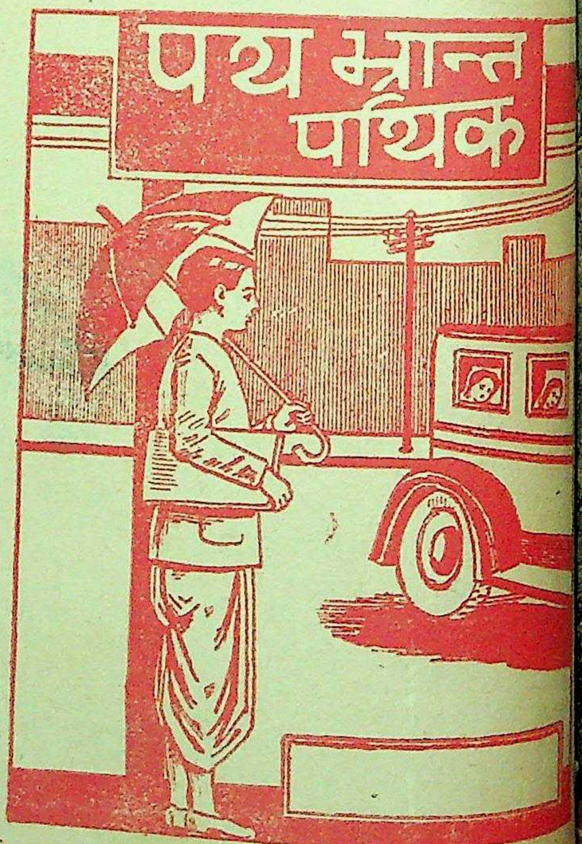

किस प्रकार उन्नति करने पर पुण्डरीकाक्ष पूर्तितुण्ड का
राजा बहादुर की बेटी [illegible] के साथ हो सका, इसका वर्णन इस
न्यास में पढ़िए। सजिल्द प्रति का मूल्य २।≡) दो रुपये [illegible]

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

...HDOOT
...STRATED
...DI WEEKLY
Price 2 Annas

...१३ मार्च, १९४९ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 13th March, 1949

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

प्रकाशक = इन्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

२ आना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

कविता, उपन्यास और विज्ञान का आनन्द लीजि...

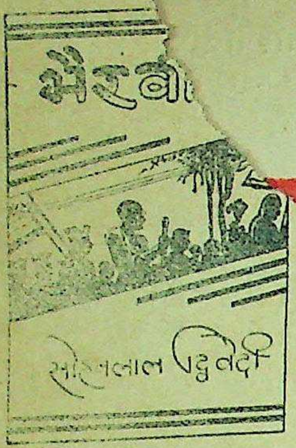

पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने 'भैरवी' की राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य है। इस काव्य की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। मूल्य २) दो रुपये।

यह कवि सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले आदि सुन्दर कविताए इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) बारह आने।

द्विवेदी-काव्यमाला

आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। पृष्ठ पौने पांच सौ से ऊपर। अच्छा कागज। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

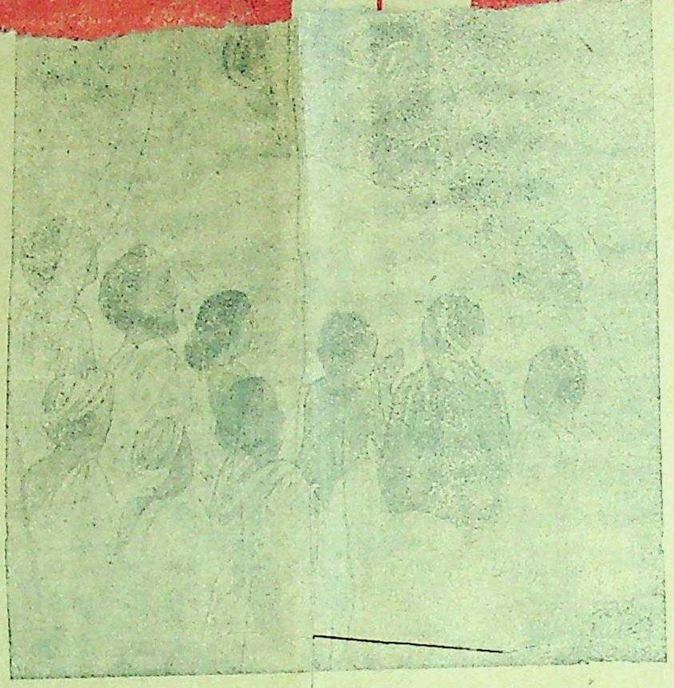

श्रद्धांजलि!

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित् श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ** ७॥) तथा **सेवाग्राम** १०) (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

अपराजिता

कवि 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी भूमिका में लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है।"

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य का स्वर्गीय आनन्द लूटिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदर... पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य... दो रुपये।

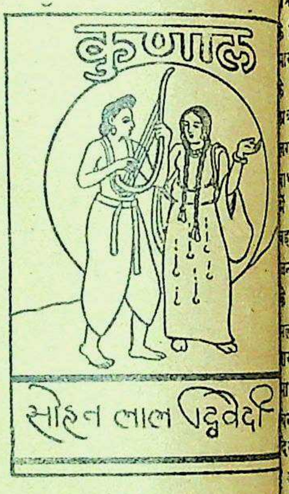

चक्रवर्ती अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १) रुपया चार आने। राज-संस्करण ३)

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा का प्रवाह तथा ओज और पात्रों का चित्रण कवि सोहनलाल जी की विशेषता है। मूल्य १) रुपया।

हल्दीघाटी

इस महाकाव्य पर लेखक श्यामनारायण पाण्डेय को दो हजार का देव पुरस्कार मिला है। इसमें हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की घटना का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, ... कविता में, किया गया है। ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

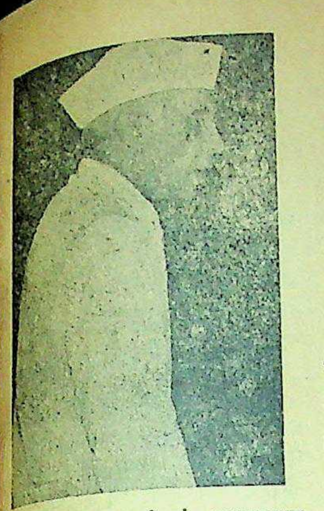

[भा]रत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू।

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २७] [रविवार, १३ मार्च, १९४९

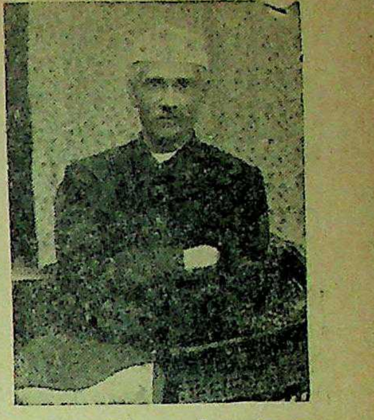

समाजवाद पार्टी ने आचार्य नरेन्द्रदेव को ६ मार्च को पटना में होनेवाले अधिवेशन का सभापति चुना है

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

[द. अ]फ्रीका की मलान सरकार वहाँ के [भा]रतीयों के पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई है। [म]लान सरकार ने पहले तो यह प्रयत्न [कि]या कि वहाँ के भारतीयों के विरुद्ध ऐसे [का]नून बनाये जाने चाहिये जिससे वह [अ]फ्रीका छोड़ दें और गोरों को बसने [के] लिए मैदान खाली कर दें, लेकिन [भा]रतीय किसी भी तरह से वहाँ से हटने [के] लिए तैयार नहीं हैं। मलान सरकार [अ]ब उन पर कुछ भयंकर आर्थिक प्रतिबन्ध [ल]गाकर उन्हें वहाँ से भाग जाने के लिए [बा]ध्य कर रही है। अपने राम की समझ [में] अफ्रीका के भारतीय ऐसे-वैसे नहीं हैं, [व]ह किसी भी भाँति अफ्रीका नहीं छोड़ेंगे। [ज]नरल स्मटस के जमाने में भी भारतीयों [के] विरुद्ध बड़े बड़े षड्यन्त्र रचे गये थे। [म]लान सरकार भी उसी मार्ग का अनु[स]रण कर रही है। बात यह है कि जब [भा]रतीयों ने अँगरेजों को हिन्दुस्तान से [बि]ना लड़ाई-झगड़े के पलक मारते भगा [दि]या तो वह दिन बहुत जल्दी आनेवाला [है] जब कि अफ्रीका के गोरे भी वहाँ से [नौ]दो ग्यारह होते हुये दिखाई देंगे। अफ्रीका [ए]शिया का एक महाद्वीप है इसलिए गोरों [को] कोई अधिकार नहीं है कि वह वहाँ के [भा]रतीय निवासियों को परेशान करें। यदि [य]ही स्थिति रही तो 'एशिया छोड़ो' का [न]ारा जब लगेगा तो गोरे भागते हुये ही [न]जर आयेंगे, किन्तु प्रत्येक कार्य का एक [स]मय होता है। वह समय भी आने ही [वा]ला है।

* * *

प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल [ने]हरू ने भारतीय वाणिज्य उद्योग-परिषद् [के] वार्षिक अधिवेशन में व्यापारियों [से] अनुरोध किया है कि वह जनता की [रह]न-सहन को ऊँचा उठाने में सरकार की [स]हायता करें। राष्ट्रीय सरकार के लिए [य]ह आवश्यक हो गया है कि जन-साधारण [के] हितों की ओर अधिक से अधिक ध्यान [दे]। अपने राम की राय में पंडित नेहरू [का] सिद्धांत है, तो बहुत ऊँचा लेकिन जब [दे]श में अधिक माल पैदा नहीं होगा और [उ]त्पादन अधिक से अधिक बढ़ेगा नहीं तो [ज]न-साधारण के हितों की उन्नति कैसे [हो]गी? यद्यपि सरकार उत्पादन का ढोल [ब]ड़े जोरों से पीटती रही है किन्तु, उसमें [अ]सफल होने के कारण सारी स्कीमें अन्ततो[ग]त्वा टाँय टाँय फिस होती दिखाई पड़ीं। [ने]हरू सरकार ने विदेशों से अनाज मँगाने [की] जितनी चेष्टा की है उतनी हिन्दुस्तान [की] पैदावार बढ़ाने में नहीं की। इसे यों [क]हा जा सकता है कि भारत-सरकार [ने] जितना रुपया विदेशों से माल खरीदने [में] लगाया है यदि उतना ही रुपया भारत में [खे]ती की उन्नति में खर्च किया जाता तो आज बहुत कुछ जनता का हित पूरा भी हो गया होता, लेकिन कागजी घुड़दौड़ ब्रिटिश राज्य की भाँति पंडित नेहरू के राज्य में भी जारी है। सारी उन्नति की स्कीमें कागजों और फाइलों के अन्तर्गत चक्कर काट रही हैं। रुपया बड़प्पन और प्रतिष्ठा को कायम रखने में फूँका जा रहा है। ऐसा अवसर ही नहीं आने पाता कि रुपया जन-साधारण की उन्नति के कामों में लगाया जाय, लेकिन अब अगला चुनाव आनेवाला है इसीलिए जनता के हितों की ओर हमारे नेताओं ने ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया है, क्योंकि बालिग मताधिकार के अनुसार गरीब मतदाताओं की संख्या अधिक है इसलिए अब भी समय है कि जनता के लिए हमारी सरकार कुछ कर गुजरे नहीं तो अगले चुनाव में ईश्वर ही मालिक है।

* * *

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मियाँ लियाकत अली खाँ ने अपनी पार्लियामेंट के सम्मुख भाषण देते हुए कहा है कि वह भारत के साथ पूर्ण मित्रता का सबन्ध रखना चाहते हैं, किन्तु ताली दोनों हाथ से बजती है एक हाथ से नहीं, इसका मतलब यह है कि पाकिस्तानी भारत से मित्रता रखना चाहते हैं, किन्तु भारत पाकिस्तान से सहयोग नहीं रखना चाहता। अपने राम की समझ में 'सफेद झूठ' इसी का नाम है। पाकिस्तानी कहते हैं ऊदपुर की ओर लेकिन जाते हैं महमूदपुर की ओर! वह स्वयं भारत की प्रत्येक प्रकार से निन्दा करते हैं, वहाँ के हिन्दुओं पर जिस प्रकार के अत्याचार हो रहे हैं उसे न कोई देखनेवाला है न सुननेवाला। भारत के मुसलमान हिन्दुओं की ही भाँति सुखी और सम्पन्न हैं, साथ ही भारतीय राजनीति में भी वह अपनी साझीदारी का दावा करते फिरते हैं, लेकिन पाकिस्तान में भला कोई हिन्दू सर तो उठाये, साझीदारी का दावा करना तो बहुत दूर की बात है। यह है पाकिस्तानी मायाजाल। विदेशियों को दिखाने के लिए पाकिस्तान बनता है बड़ा पाक-साफ, लेकिन वह स्वयं क्या है इसे तो भारत ही जानता है। मियाँ लियाकत अली की सरकार भारत के प्रति कितनी खुराफातें कर रही है इसे तो भारतीय ही जानते हैं। विदेशी क्या जाने? मियाँ लियाकत अली के सफेद झूठ से विदेशी राजनीतिज्ञ भले ही भूलभुलैया में पड़ जायँ। उनके रग-रेशे से पूरी जानकारी रखता है।

भारतीय पार्लियामेंट में 'हिन्दू कोड' बिल पर बड़ी बढ़िया गरमा-गरम बहस हुई, कांग्रेस-नेता चाहते हैं कि बिल स्वीकार हो जाय और स्त्रियों को पूर्ण स्वतन्त्रत प्राप्त हो। अपने राम तो स्त्री-स्वतन्त्रता के विरोधी हैं और न यही चाहते हैं कि स्त्रियाँ पुरुषों की गुलाम बनी रहें। लेकिन प्रश्न तो यह है कि क्या 'हिन्दू कोड' बिल ऊँचे पाये की पढ़ी-लिखी स्त्रियों अथवा महिला लीडरों की दृष्टि से बनाया गया है या सचमुच हिन्दुस्तान की करोड़ों अनपढ़ तथा मध्यम श्रेणी की स्त्रियों को दृष्टि में रखकर? ऊँचे पाये की महिला लीडर प्रायः पतिविरोधिनी होती है लेकिन मध्यम श्रेणी की स्त्रियाँ पतिभक्त होती हैं। क्या कानून के जरिये उनमें पति के विरोध की भावना न उत्पन्न होगी? अम्बेदकर साहब भले ही इस बिल को कानून का रुप दे दें, किन्तु इस बिल की भी वही दशा होगी जो 'शारदा बिल' की हुई है। क्या शारदा बिल के स्वीकार हो जाने पर 'अछूत' जाति में बाल-विवाह होना बन्द हो गया? सरकार का वह कानून कहाँ गया? स्त्रियों में सुधार करना, उनके स्वत्व की रक्षा करना तथा उन्हें पतियों के अनाचार से मुक्त करना, यह बात तो समझ में आती है, किंतु स्त्रियाँ पतियों के खिलाफ जिहाद बोल दें और घर-गृहस्थी छोड़ कर लीडरी करें इस देश का इतिहास न तो ऐसा बतलाता है और न यहाँ की संस्कृति इस तरह के काम की आज्ञा देती है। यह भारतवर्ष है, यूरोप नहीं। भारतवर्ष भारतवर्ष ही रहेगा और योरप योरप। जो कानून जनता की बिना स्वीकृति के बनाया जाता है उसकी छीछालेदर तो होगी, यदि भारत की मध्यम श्रेणी की स्त्रियों से हिन्दू कोड बिल के सम्बन्ध में सम्मति ली जाय, तो वह इसके विरुद्ध ही मत देंगी। केवल आज की लीडर कौम, वह भी शहर की रहनेवाली सम्भव है इसके पक्ष में मत दे। इसलिए हाथ कंगन को आरसी क्या? इसकी उपयोगिता भविष्य में अपने आप सिद्ध हो जायगी।

सरोजिनी नायडू के प्रति

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

कोकिल के कलकंठ बीच मधु-राग थम गया।
निशा उनींदी रोती थी रोता समीर था,
कण-कण वसुधा का शोकाहत था, सपीर था।
कहती थी ले करुण कण्ठ कोकिला सुमन से—
'भर वसन्त में बिदा ले रही मैं उपवन से—
जाती हूँ पर यह न समझना प्यार कम गया।'
कोकिल के कलकण्ठ बीच मधु-राग थम गया।
कोकिल का संदेश—हृदय पर माने कैसे?
ममता का जल जात, आग पहचाने कैसे?
है सरोजिनी कहाँ! राष्ट्र-सरसी की सुषमा?
है सरोजिनी कहाँ! राष्ट्र-कविता की उपमा!
उर-सर लहरें शून्य युगों को हाय जम गया।
कोकिल के कलकण्ठ बीच मधु-राग थम गया।
हम न जान पाते क्या छवि है, छाया क्या है?
क्या है चेतन अमर और यह काया क्या है?
कुछ न जानते, यही जानते—भाया क्या है!
जो क्षण आया पास, हमें वह लाया क्या है?
माना भ्रम यह, किन्तु सत्य से जीत भ्रम गया।
कोकिल के कलकण्ठ बीच मधु-राग थम गया।
जलधारा! हो गये धन्य सब कूल किनारे,
शुभतारा! भू-नभ दोनों पर दृष्टि पसारे।
तन-कारा से मुक्त, छंद सी नभ-मण्डल में—
गूँज गई हो, छाई दिशि-दिशि दिग्मंडल में।
भू-मंडल में नाम रम गया, नाम रम गया।
कोकिल के कलकंठ बीच मधु-राग थम गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस जनों से

भारत के उपप्रधान मन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अम्बाला के कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की एक सभा में, कांग्रेस जनों को सचेत करते हुए एक सामयिक भाषण दिया है। आपने कांग्रेसजनों से अनुरोध किया है कि वह अपनी गुटबन्दी तथा सरकारी पदों के लिए लोलुपता का त्याग कर दें। सरदार पटेल ने कहा है कि यदि कांग्रेस जन गुटबन्दी से प्रभावित होकर कार्य करेंगे तो यहाँ की जनता घबराहट में पड़ जायगी और उससे कुछ करते धरते नहीं बनेगा आज जब कि कांग्रेस पूर्ण शक्तिशाली है, वह केन्द्र तथा प्रान्तों में शासन व्यवस्था का संचालन कर रही है, सरदार पटेल का यह कथन विशेष रूप से विचारणीय है। जिस प्रकार कांग्रेसजनों ने सुसंगठित रूप में अँगरेजो को भारत से चले जाने के लिये बाध्य कर दिया उसी प्रकार उनके लिये आवश्यक हो गया है कि वह पारस्परिक मतभेदों तथा फूट को दूर करके स्वतन्त्र भारत की गरीबी दूर करने में अपनी सामूहिक शक्ति लग दे। साम्प्रदायिक मतभेद, अर्थ संकट तथा घूसखोरी जन साधारण के लिए अभिशाप बनी बैठी है। किन्तु क्या कांग्रेसजन आज इस ओर वास्तव में अग्रसर हैं? हमें तो आयेदिन कांग्रेसजनों की स्वार्थपरता पदलोलुपता और गुटबन्दी देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। और यदि यही स्थिति रही तो कांग्रेस ऐसी पवित्र संस्था, जिसे महात्मा गांधी, राष्ट्र के कर्णधारों तथा जनता ने अपने त्याग और बलिदान से जीवित रखा है, वह भी अधोगति को प्राप्त हो जायगी। हम देखते हैं कि कांग्रेसजनों में अनैतिकता भ्रष्टाचार तथा फूट इस सीमा तक पहुँचती जा रही है कि जन साधारण व्यक्तियों के अतिरिक्त कांग्रेस ऐसी पवित्र संस्था के प्रति क्षुब्ध हो उठे हैं। आज तो ऐसा जान पड़ता है कि कांग्रेस जन केवल पैसे का भूखा है वह एनकेन प्रकारेण अर्थ की चिंता में व्याकुल होकर भाग दौड़ मचा रही है। शक्ति का दुरुपयोग करके अपना कल्याण किया जा रहा है और जनता में प्रतिक्रिया की भावना उत्पन्न हो रही है। जनता को यह भरोसा था कि अँगरेजों के चले जाने के बाद 'राम राज्य' की स्थापना होगी और राष्ट्र अर्थचिंता से मुक्त हो जायेगा किन्तु गुलामी से स्वतन्त्रता महँगी दिखाई दे रही है। क्यों इसलिये कि कांग्रेसजन स्वयं अपनी राजनीति, स्वार्थपरता तथा गुट्टबन्दी में पड़ गये हैं, जनता का हितचिंतना की ओर उनका ध्यान ही नहीं है। अँगरेजों की गुलामी में जनता ने कांग्रेस का साथ दिया, कांग्रेस जनों ने जनहित की सुरक्षा का आश्वासन दिया किन्तु आज अमानत में खयानत हो रही है।

कांग्रेसजनों की अधोगति देखकर ही स्वर्गीय महात्मा जी ने अन्त में यह निश्चय किया था कि 'कांग्रेस' संस्था को ही भंग कर दिया जायेगा। यदि पूज्य बापू जीवित होते तो आज कांग्रेस तथा कांग्रेसजनों की स्थिति ही कुछ और होती। किंतु पूज्य बापू ने अपने बलिदान से कांग्रेस तथा कांग्रेस जनों को वर्षों के लिये जीवित कर दिया। कांग्रेस जनों को पूज्य बापू की उस पवित्र थाती की नैतिक दृष्टि से पूर्ण रक्षा करनी चाहिए। यह ठीक है भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। शासन-परिवर्तन के बाद राष्ट्र के जीवन में एक प्रकार की अस्तव्यस्तता उत्पन्न होती है, आर्थिक संतुलन में भी गड़बड़ी का होना अनिवार्य है किंतु उसे पुनः उच्च स्तर पर पहुँचाने का कार्य भी तो कांग्रेस जनों का ही है जो भारतीय स्वतंत्रता के रक्षक हैं। यदि रक्षक भी भक्षक बनने की ओर अग्रसर होगा तो जनता के कल्याण का मार्ग ही कौन सा होगा?

हम स्वयं कांग्रेस के अनुयायी हैं। कांग्रेस की नीति का हमने सदैव समर्थन किया और हम यह भी जानते हैं कि कांग्रेस में ऐसे त्यागी तपस्वी और बालदानी व्यक्ति आज भी मौजूद हैं जिनके पुन्य प्रताप से कांग्रेस का अस्तित्वस्थापित है, तथा कांग्रेस जन होने की लोकप्रियता बनी हुई है, नहीं तो अधिकांश कांग्रेस जनों की गति-विधि को स्वार्थलोलुपता की संक्रामक बीमारी ने ग्रस लिया है। आचरणहीनता की उन्हें तनिक भी परवाह नहीं है। स्वयं की दलबन्दी जनता की दलबन्दी को बल दे रहा है, दैनिक जीवन की शासन व्यवस्था के संचालन कार्यों में भी उनका सहयोग कहीं कहीं अहितकर सिद्ध हो रहा है। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कांग्रेस जनों को लक्ष्य कर के जो सुझाव दिये हैं, वह वास्तव में विचारणीय है। हमें आशा है कि हमारे कांग्रेसजन सरदार पटेल के कथनानुसार सुसंगठित रूप में मतभेद भुलाकर तथा स्वार्थपरता त्यागकर राष्ट्र की उन्नति की ओर अग्रसर होंगे। कांग्रेस की मान रक्षा का यही अवसर है। जनता के हित में ही कांग्रेस जनों का हित है तथा जनता के हित से भारतीय स्वतन्त्रता को अधिक से अधिक दृढ़ता प्राप्त होगी।

नहीं कुछ नाम में बेढब धरा है

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

नहीं कुछ नाम में बेढब धरा है।
वही हिंदी वही हिन्दोस्तानी
कहेंगे आग को भी आप पानी
पुकारें क्यों न मा को आप नानी
नमक जो है वही तो शर्करा है।

पिता को अब पुकारें लोग माता
इसी से एकता का एक नाता
न आता नाम से कुछ भी न जाता
कहीं जीवित किसी को या मरा है।

प्रगति का हो रहा है बोलबाला
नई किरणें नया आया उजाला
किया है नाम ने गड़बड़घोटाला
मिटाये नाम यह विष से भरा है।

झगड़ते नाम पर हैं आप नाहक
घिरे हैं देश पर बनकर बलाहक
नहीं स्वाधीनता के आप चाहक
किसी ने बुद्धि को मानो चरा है।

नहीं कुछ भेद भारत इण्डिया में
शमा में और अन्तर क्या दिया में
करुण रसगान में या मरसिया में
तवायफ है वही जो अप्सरा है।

विरोधी आप इसके कुछ अगर हैं
नये युग से बहुत ही बेखबर हैं
पुरातन काल के बुद्धू लचर हैं
नहीं अब आपका कुछ आसरा है।

हास-परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

[होली स्पेशल]

पंडित जवाहरलाल उस दिन दिल्ली में भाषण दे रहे थे उसी समय भूकंप आ गया। पहले तो देशवासी ही उनसे डरते थे अब धरतीमाता भी डरने लगीं।

* * *

पंडित सुन्दरलाल होली के अवसर पर डाक्टर रघुवीर से कैनाट सरकस में कुश्ती लड़नेवाले हैं। इस अवसर पर सब हिंदी-प्रेमियों को दिल्ली चलना चाहिए।

* * *

सुना जाता है आजाद साहब ने हिंदी पढ़ने का निश्चय कर लया है। पंडित बालकृष्ण शर्मा १८ मार्च से पाठारंभ करायेंगे। इस अवसर पर लीला देसाई का नृत्य भी होगा।

* * *

पहली अप्रैल से सभी सरकारी कर्मचारियों ने रिश्वत लेने का निश्चय किया है। उस दिन असेम्बली भवन में पंत जी अपने हाथ से हलवा बनाकर सबको वितरित करेंगे। जाने के लिए किसी को रोका नहीं जायगा। बजट में जो ... हुई है वह सब इसी में खर्च की जाय...

* * *

जमींदारी समाप्त होनेवाली है इ... ध्यान करके अवध के एक ताल्लुकदार ... दय ने अपनी रियासत हिंदी के उस ... को दान की है जो अपने को ... समझता है। देखें किसे मिलती है। ... गहरा है।

* * *

हिंदी भाषा में यों ही गालियों ... संख्या अधिक है। इतनी किसी भाषा ... नहीं है। इसमें लोगों ने एक शब्द ... जोड़ा है—'कम्युनिस्ट'। इसका पता ... उस दिन लगा जब कि एक खोंचेवा... अपने लड़के को डाँट रहा था। उ... कहा—कम्युनिस्ट कहीं का।

* * *

भारत-सरकार इस बात का अनुसं... करना चाहती है कि बनस्पति ... स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है इस... आगामी बैशाख मास में एक ह... व्यक्तियों को बनस्पति में पकाई पू... मुफ्त खिलाई जायँगी। जो लोग ... चाहें श्री खाद्य मंत्री के यहाँ लि... टिकट माँग लें।

* * *

यदि यह लोग दुबले हो जायँ ... बनस्पति घी ठीक नहीं समझा ज... और यह लोग मोटे हो जायँगे तो ... स्पति घी का प्रचार किया जायगा स... की ओर से।

* * *

महिलाओं का एक शिष्ट ... डाक्टर अम्बेडकर से मिलने जा र... कि हिंदू कोड बिल में महिलाओं को पु... को पीटने का अधिकार नहीं दिया ... है। इसलिए यह कानून अधूरा है।

* * *

महिलाओं में अभी इस बात ... मतभेद है कि जब ऐसा अवसर आवे ... किस अस्त्र से काम लिया जाय। ... कंपनी की ओर से भी कनवासिंग हो रही ...

* * *

राजनीतिक अधिकारियों में इस ... की चर्चा हो रही है कि संयुक्तप्रां... गवर्नर कौन हो। इस प्रांत के कुछ ... चाहते हैं कि महिला ही गवर्नर हो, ... वाले चाहते हैं कि पुरुष हो चाहे ... उसकी महिलाओं का हो।

* * *

सुना है नवाब रामपुर भदन्त ... प्रधान मंत्री के पद पर आसीन ... हैं। हिन्दी के लिये यह शुभ और ... की बात होगी। हिन्दीवाले बधाई ...

* * *

सरकार ने शराबबन्दी करना ... कर दिया है लोग घर पर अनियमित ... न उतारकर प्रयोग करने लगे ... उसने नकली और असली शराब ... का नियम प्रकाशित कर दिया है। ... कहीं शराब मिले तो पहले उसे कु... पिलाइये। यदि कुत्ता मर जाय तो ... नकली है और यदि कुत्ता बच ... कुत्ता असली नहीं है।

* * *

लेडी माउन्टबेटेन इस बार ... साथ इँगलैंड से एक कुत्ता लाई हैं जो ... देखकर पहचान जाता है कि कौन ... और उसका कपड़ा पकड़ लेता है। ... दिन वह विधान-परिषद् में चला ... उसके बाद से रोक दिया गया।

—अगड़बग...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भारत का रेलवे-बजट

क्या जन साधारण की दृष्टि से यह सफल बजट है ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारत-सरकार का सन् १९४९-५० का रेलवे-बजट कितना सफल है, जनता की दृष्टि से यह बजट सफल है अथवा असफल, इन सभी दृष्टियों से इस लेख में बजट की आलोचना की गई है। विद्वान् लेखक ने यह बतलाया है कि रेलवे एक व्यवसाय है। इसकी उन्नति और सफलता जनता के सहयोग पर निर्भर है। लेख सामयिक और पठनीय है

भारत सरकार के अर्थ-मंत्री श्री जान मथाई।

सारे देश के अन्दर फैली रेलवे की लाइन राष्ट्र-शरीर की धमनियाँ हैं। यदि इनका अटूट प्रवाह सतत बंधा रहे, तो देश के उद्योग-धंधे, व्यापार-व्यवसाय सब काम-काज और कारोबार ठीक चलते हैं। यहाँ तक कि घरों का चूल्हा भी इनके ठीक ठीक चलने पर निर्भर है। इसलिए रेलवे-बजट और पार्लामेंट में उस पर चार दिनों तक हुई बहस की ओर सब का ध्यान जाना स्वाभाविक है।

रेलवे-बजट हमारे वाणिज्य-व्यवसाय की प्रगति का मापक है, दर्पण है और भविष्य की अवस्था को इंगित करनेवाला है। फिर यह रेलवे-मन्त्री मा० श्री गोपाल स्वामी आयंगर के कथनानुसार देश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग है। इसकी सफलता और विफलता उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की कसौटी होगा। इस दृष्टि से भी रेलवे-बजट के अध्ययन में जनता का रस लेना स्वाभाविक है।

उत्साहप्रद नहीं

विभाजन, पंजाब का महानिष्क्रमण, देश के अन्दर व्याप्त आन्तरिक अशान्ति, हैदराबाद की पुलिस-कार्रवाई और काश्मीर-युद्ध, इन सब आपदाओं और विपत्तियों के धक्के को भारतीय रेलवे सफलतापूर्वक संभाल सकी है, और उससे पार हो गई है, यह भारतीय रेलवे के लिए गौरव की बात है। युद्ध-काल में रेलवे पर जो लाभ और मुनाफे की वार्ता शुरू हुई थी, वह जारी है, यह प्रसन्नता की बात है। जब अधिकांश प्रान्तिक सरकारों और भारत-सरकार का बजट घाटे का है, प्रत्येक प्रान्त पुराने करों में वृद्धि कर रहा है और नये लगाने में होड़ कर रहा है, उस समय रेलवे-बजट का लाभ और बचत का होना करदाताओं के लिए प्रसन्नतादायक है। रेलवे-मन्त्री की इस घोषणा का भी वे स्वागत करेंगे कि रेलवे का भाड़ा और किराया और नहीं बढ़ाया जायगा। यद्यपि इस नकारात्मक घोषणा से उनमें उत्साह उत्पन्न नहीं होगा। क्योंकि पीछे दो बार किराया बढ़ाया जा चुका है। जनवरी १९४८ से ही किराया बढ़ा है। मालगाड़ियों के नये रेट तो अक्टूबर ही से शुरू हुए हैं। इस अवस्था में ३२ करोड़ रु० की यात्रा में मुसाफिरों पर किराया बढ़ाने के बाद रेलवे-मन्त्री की इस घोषणा का कोई अर्थ नहीं रहता कि किराये में वृद्धि न होगी। १५ करोड़ रु० से अधिक बचत होने और १९४९-५० में भी लगभग ९ करोड़ रु० का लाभ होने की आशा होने की अवस्था में मुसाफिर और जनता किरायों में कुछ कमी होने की आशा करती थी, क्योंकि किराये और भाड़े में कमी होने से चीजों के भाव व्यवस्थित रूप से नीचे लाने में सहायता मिलती और मुद्रास्फीति का दबाव कुछ कम होता। पर दूसरे रेलवे-मन्त्री श्री सन्थानम ने इस सम्भावना पर ही पानी फेर दिया। उनके कथन से मालूम होता है कि रेलवे-बोर्ड का किराया और भाड़ा घटाने का कोई विचार नहीं है। आपका कहना है कि भारत में तीसरे दर्जे का किराया प्रतिमील ४·१८ पा० जब कि ब्रिटेन में प्रतिमील १३·३५ पा० और संयुक्तराष्ट्र अमरीका में १३·४१ पा० है। इसलिए रेलवे-मन्त्री ने कहा कि यदि किराया अब घटाया गया और तीसरे दर्जे के मुसाफिरों की आवश्यकता पूरी करने के लिए सब सवारी गाड़ियाँ जुटाई गईं, तो रेलवे को आज जो लाभ हो रहा है, वह होना बन्द हो जायगा। श्री सन्थानम ने यहाँ तक कहा कि रेलवे का किराया ५० प्रतिशत बढ़ाया गया है, जब कि कीमतें ३०० प्रतिशत बढ़ गई हैं। रेलवे-मन्त्री श्री सन्थानम के इस स्वर और युक्ति में और वायसराय की कौंसिल के रेलवे-सदस्य सर एडवर्ड बेंथल के टोन और युक्त में, जब कि रेलवे का किराया बढ़ाने का प्रस्ताव किया गया था—क्या कोई अन्तर है? रेलवे एक व्यवसायिक संस्था होने के साथ राष्ट्र और जन-सेवा के लिए भी है, यह रेलवे-मन्त्री को न भूलना चाहिए। रेलवे का संचालन-व्यय आज १९३९ की अपेक्षा लगभग दुगना है। रेलवे का उपरला खर्च बढ़ा-चढ़ा है। उसमें कमी करने की कोई कोशिश नहीं की गई। यदि उसमें कमी करने के बाद किराया बढ़ाया जाता, तब जनता को भी कोई शिकायत न होती। पर जब १५ करोड़ रु० से अधिक लाभ हो रहा है, उस समय जनता आशा करती थी कि तीसरे दर्जे का बढ़ाया गया किराया कुछ कम किया जायगा। क्योंकि किराया बढ़ाने के साथ यात्रा की सुविधायें नहीं बढ़ाई गई हैं। आज भी पायदान पर खड़े होकर सैकड़ों लोग मुसाफिरी करने को बाध्य होते हैं।

आर्थिक स्थिति

रेलवे का आर्थिक पक्ष सन्तोषजनक है। चालू वर्ष में विशुद्ध आय ३२·३७ करोड़ रु० होने का अनुमान था, पर अब ३८·०७ करोड़ रु० होने की आशा है। इसमें से २२·२४ करोड़ रु० ब्याज के निकाल देने पर चालू वर्ष में विशुद्ध बचत १५·८३ करोड़ रु० रह जायेंगे। १९४९-५० वर्ष के लिए विशुद्ध आय का अनुमान ३२·३२ करोड़ रु० किया गया है। इसमें से २२·८८ करोड़ रु० ब्याज का निकालने के बाद ९·४४ करोड़ रु० बचत रह जायगी। चालू साल से अगले वर्ष कम बचत होने का कारण यह है कि वेतन-भत्ता का बिल बढ़ गया है, रेल चलानेवालों का भत्ता बढ़ाया गया है, राज-हठ था—निर्णय को मानकर ७४००० रेल कर्मचारियों की बर्खास्तगी रोक दी गई है और अब वे काम पर लगे रहेंगे।

बचत में से 'स्पीकर-कमेटी' के निर्णयानुसार इस वर्ष ७·३४ करोड़ रुपया और अगले वर्ष ४·७२ करोड़ रु० आय बजट को मिलेगा। शेष में से ८४ लाख रु० को छोड़कर, जो कि रेलवे जनमंगल फण्ड में जायगा—सारा घिसाई फण्ड में जायगा। घिसाई फण्ड में ७ करोड़ रु० देना भी रेलवे-मन्त्री श्री आयंगर के मत में अल्प है। १९४९-५० के लिये इस

शेष पेज १८ पर देखिए

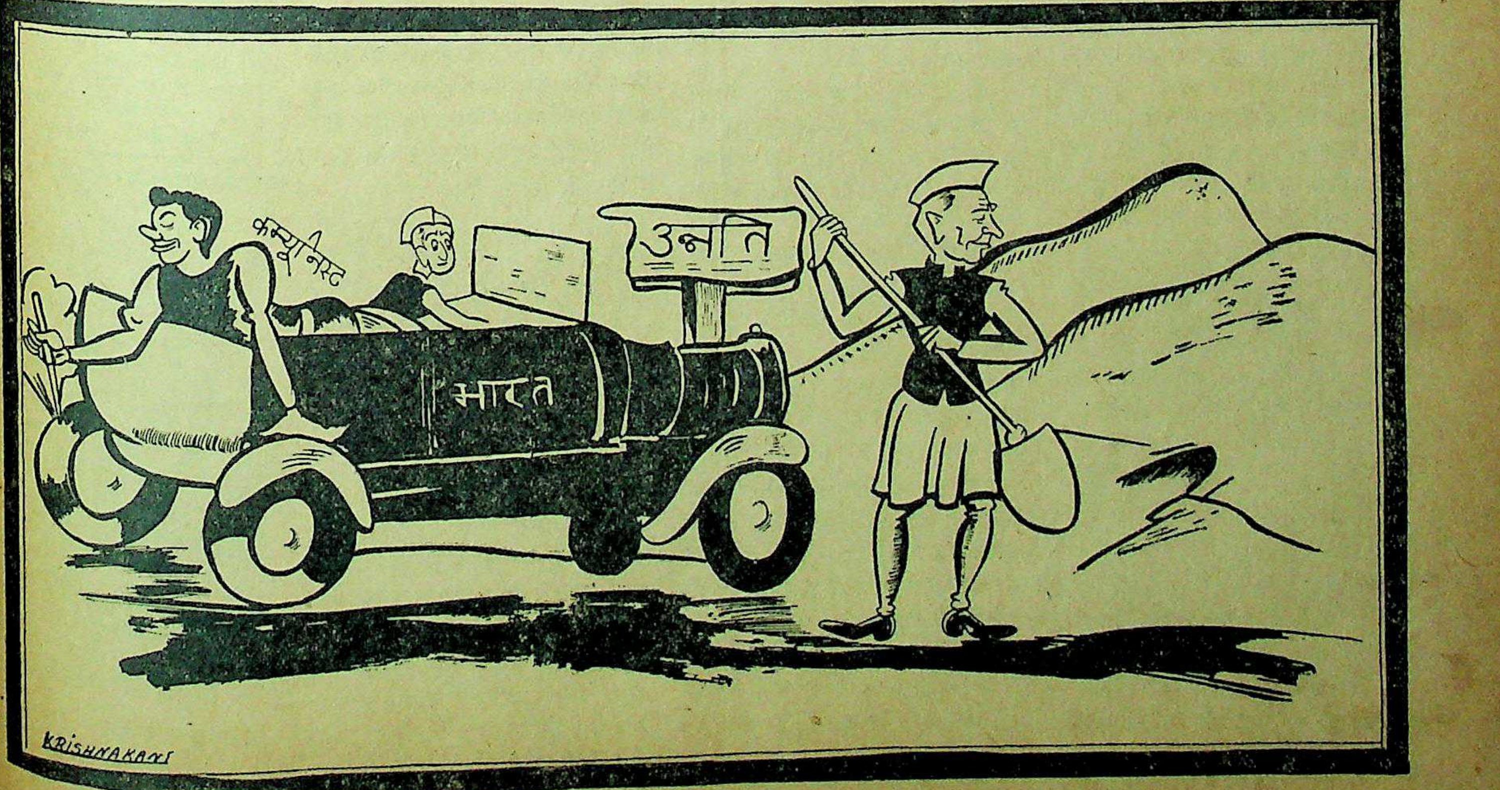

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिन्दी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिन्दी

राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन की एक मनोरंजक झाँकी

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल, (पत्रकार)

पिछले दिनों वर्धा में अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों के राष्ट्रभाषा प्रचारकों का एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्त्वावधान में हुआ था। इस सम्मेलन में क्या हुआ, इसका सुन्दर वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख सुन्दर, मनोरंजक तथा जानकारी से पूर्ण है।

राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन के सभापति सेठ गोविन्ददास।

पुण्यभूमि वर्धा के अंचल में राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के तत्त्वावधान में गत २६ तथा २७ फरवरी को अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गोविंददास जी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन हुआ, जिसका कि उद्घाटन मध्यप्रांत के गृहमंत्री तथा महाग्रन्थ कृष्णायन के प्रणेता पं० द्वारकाप्रसाद जी मिश्र ने किया था। उद्घाटन भाषण के अन्तर्गत उन्होंने कहा था कि मेरा ख्याल है कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के झगड़े में अपना समय गँवाकर हम हिन्दी के उन शत्रुओं के हाथ में खेल रहे हैं जो या तो अँगरेजी का आधिपत्य कायम रखना चाहते हैं या इतने प्रांतीयतावादी हैं कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के स्थान पर बैठते हुए नहीं देख सकते। ये ही आज हिन्दी के सच्चे शत्रु हैं न कि उर्दू या हिन्दुस्तानीवाले। हिन्दी के आज प्रबल शत्रु वे हैं जिन्हें अँगरेजी भाषा से प्रबल मोह है। उनके शब्दों ने उन पर जादू कर दिया है। वे अपने को जनसत्ता के उपासक मानते हैं, परन्तु जनभाषा से दूर भागना चाहते हैं। प्रांतीयतावादी मुख से तो हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना स्वीकार करते हैं, परन्तु जितने दिन बने उतने दिन उसे टालना चाहते हैं, क्योंकि अन्दर ही अन्दर उन्हें यह स्वीकार नहीं कि हिन्दी को उनकी मातृभाषा से बढ़कर स्थान मिले।

मिश्र जी ने आगे कहा कि आज देश में जनता की सरकारें कायम हुई हैं अतएव जनता की भाषा होने के कारण उसका स्वीकार किया जाना अनिवार्य है। यदि हम भूलें करेंगे या सरकार उपेक्षा करेगी तो इससे विलम्ब अवश्य हो सकता है, परन्तु भारत की राष्ट्रभाषा होना हिन्दी का जन्मसिद्ध अधिकार है; और उसे बहुत समय तक इस अधिकार से वंचित रखने की शक्ति किसी में नहीं है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रधान मंत्री भदंत आनंद कौशल्यायन।

* * *

सम्मेलन में विभिन्न अहिन्दी प्रान्तों से करीब ढाई सौ प्रतिनिधि पधारे थे। प्रांतीय संचालक भी आये थे—उनमें से कुछ हैं सर्वश्री रेवतीरंजन (बंगाल), हृषीकेश शर्मा (नागविदर्भ), जेठालाल जोशी (गुजरात), कांतिलाल जोशी (बंबई), डोंगरे (महाराष्ट्र), दौलतराम शर्मा (सिंध)। प्रतिनिधियों के दिलों में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के लिए आग थी, श्रद्धा थी और अमर भावना थी।

पंडाल बहुत ही सादगी के साथ सजाया गया था। यत्र-तत्र हिन्दी के कुछ वाक्य लिखे हुये थे। टण्डन जी का वाक्य था—"हिन्दी जहाँ गई है अपने साथ राष्ट्रीयता लेकर गई है।" बाबू मैथिलीशरण जी गुप्त का यह वाक्य—"अपनी मातृभूमि के उद्धार के लिये जूझने में हमें जितनी प्रेरणा हिन्दी के द्वारा मिली है उतनी और किसी के द्वारा नहीं—" बहुत सुन्दर था—और भी कई वाक्य थे। गांधी जी के जिस वाक्य ने अपनी ओर सबके नेत्र झुका लिये थे—वह था—"मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है। पूरी आजादी तो हमें अंगरेजी भाषा की गुलामी छोड़ने पर ही मिलेगी।"

* * *

सम्मेलन में एक विशेष बात यह थी कि स्वागताध्यक्ष कोई नहीं था—समिति के सभी कार्यकर्ता—छोटे से लेकर बड़े तक स्वागत की अपनी अपनी जिम्मेवारी महसूस कर रहे थे। भदंत आनन्द कौसल्यायन मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने आगत अतिथियों का विनोदी ढंग से स्वागत किया और कहा कि यह तो रूढ़ि का पालनमात्र है—हम सबका स्वागत तो तब ही कर चुके थे जब आप लोग वर्धा स्टेशन पर पधारे थे।

आनन्द जी ने समिति की प्रगति का उल्लेख करते हुये कहा कि आज समिति अपनी उम्र के पूरे १२ साल पूरे कर १३वें में कदम रख चुकी है। इसका अतीत अस्तित्व के रक्षण और संवर्धन में लगा रहा, वर्तमान इसकी संवृद्धि की बड़ी जिम्मेवारियाँ निबाहने में लगा है और इस वर्तमान के पेट में भविष्य अपना रूप निश्चित कर रहा है।

समिति का उद्देश्य है, हिन्द के घर घर में हिन्दी का संदेश पहुँचाना, प्रांतीय भाषाओं और उनके साहित्य की संवृद्धि में सहायक होकर हिन्दी के प्रेममय धागे में राष्ट्र के बिखरे तत्त्वों को एक साथ बाँधकर अपने राष्ट्र को सबल बना विश्व के राष्ट्र-संघ में अपना मस्तक ऊँचा रखना। और इसे विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं, जब हिन्दी हिन्द के हर बच्चे की जबान पर बोलेगी, जबरन नहीं प्यार और सम्मान के साथ स्वयं बुलाई जाकर।

* * *

दूध-सी चादर मंच पर बिछी हुई थी। उस मंच पर गंगा-जमुना का संगम प्रथम दिवस दिखाई दिया। आचार्य मश्रूवाला, आचार्य विनोबा भावे, आचार्य आर्य नायकम् तथा तपोधन श्रीकृष्णदास जी जाजू हिन्दुस्तानी के दल के थे, तो पं० मौलिचन्द्र शर्मा, श्री राहुल सांकृत्यायन, पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र, जेठालाल जोशी आदि हिन्दी के समर्थक थे। आचार्य मश्रूवाला ने अपने भाषण में कहा कि अब भाषा के वाद-विवाद में झगड़ा क्यों हो—यह झगड़ा तो खत्म हो जाय तो हम सारे हिन्दुस्तान को बड़ा रास्ता बता सकते हैं। बापू जी ने कहा था कि जब मतभेद तीव्र होते हैं और बहसें होती हैं तो बुद्धि का भेद नहीं, भावना का भेद होता है। हिन्दी हिन्दुस्तानी के बारे में दोनों तरफ प्रचार होते हुए भी हम जहाँ के तहाँ रहते हैं। दोनों अलग अलग रास्ते पकड़ लेते हैं। हमें कोई भी कार्य सोच-समझकर करना चाहिए। पचास साल तक बहसें करेंगे, तो भी कुछ न कर सकेंगे। हम हिन्दुस्तानी व हिन्दी का झगड़ा निपटानें के लिए कोई ऐसा आदमी चुन लें, उसे पंच बना लें जो झगड़ा निपटा दे।

आचार्य मश्रूवाला का भाषण बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा और सम्मेलन में बहुत ही काना-फूसी होने लगी। महापंडित राहुल जी ने कहा कि पंच डा० राजेंद्रप्रसाद जी को बनाया जाय। सेठ गोविदास जी ने कहा कि इस बात का निर्णय साहित्य-सम्मेलन करेगा।

* * *

आचार्य विनोबा ने राष्ट्रभाषा व लिपि के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा का विषय आम जनता का विषय है। यह आग्रह के लायक विषय नहीं है। कोई भी भाषा अपनी इच्छा से नहीं बनाता, वह तो प्रवाह से बनती है। भाषा के संबंध में कटुता व गर्मी दुःख की बात है। हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के होने योग्य है। हिन्दी पन्द्रह करोड़ लोगों की मातृभाषा है। अन्य पाँच-छः करोड़ भी जानते हैं। अगर हिन्दी को राष्ट्र[भाषा] बनाया जाय तो सबको कम तक[लीफ] होगी। नाम का झगड़ा मैं ठीक [नहीं] मानता। अरबी, फारसी, संस्कृत [के] शब्दों का न तिरस्कार हो और न [मोह] ही हो। जो शब्द घुल-मिल गए हैं [उनका] स्वीकार होना चाहिए।

माननीय पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र ने [राष्ट्र]भाषा प्रचारक सम्मेलन का उद्घा[टन] किया था।

लिपि के संबंध में उन्होंने क[हा] सारे हिन्दुस्तान में नागरी लिपि में [न केवल] हिन्दी बल्कि सभी देशी भाषाएँ [लिखी] जायँ। नागरी लिपि से सहूलियत [है] नई नई लिपियाँ सीखने में समय [बच] जाता है। राष्ट्रभाषा के साथ हम [अन्य] लिपियों की खूबियों की कद्र करें—[ऐसा] करने से देश की प्रगति होगी। [नागरी] लिपि में सुधार की जरूरत है। उस[का] ज्ञान दृष्टि से हो। मैं यांत्रिक दृष्टि से [सुधार] करना पुरुषार्थहीन मानता हूँ।

* *

सेठ गोविन्ददास जी ने अपने [भाषण] में कहा कि राष्ट्रभाषा का प्रश्न [स्वराज्य] मिलने के पश्चात् बहुत ही महत्त्व[पूर्ण हो] गया है। इस समय हमारे सामने

शेष पेज १६ पर

५००) महीना कमाइये
हमारे फैन्सी माल के लिए ५० [प्रति]शत कमीशन पर एजेन्ट चाहिये। एजेंसी के लिये लिखें-अंगेजी या हिन्दी में पत्र [व्यवहार]
फैन्सी गुड्स स्टोर्स - पो० बक्स ४३

देवनागरी और हिन्दी के प[क्ष में] विनोबा भावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति और जीवन

स्वर्गीया श्रीमती सरोजिनी नायडू

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

संसार की प्रसिद्ध कवियित्री तथा भारत के राष्ट्रीय जगत् की सुप्रसिद्ध नायिका शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू का स्वर्गवास हो गया। श्रीमती नायडू की राष्ट्रीय सेवा तथा त्याग भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में अमर रहेगा। इस लेख में लेखक ने स्वर्गीया नायडू के जीवन पर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

स्वर्गीया शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू

भारत-भूमि यों ही पवित्र नहीं हो गई, वरन् इस पर पैदा होनेवाले स्त्री और पुरुषों ने समय समय पर अपने त्यागों और तपस्याओं से संसार में भारत का मान ऊँचा किया है। सभ्यता के आदि काल से आज तक इस देश में सुख-दुख, गर्मी-वर्षा और शीत की कितनी घड़ियाँ आईं और गईं, पर, यह ज्यों का त्यों है। कविवर इकबाल ने भारत की महानता के सम्बन्ध में एक पद कहा है—"यूनान मिस्र रूमां सब मिट गये जहाँ से, अब तक मगर है बाकी नामों निशाँ हमारा।" यह अक्षरशः सत्य है। महात्मा गांधी, ठाकुर रवीन्द्रनाथ और सरोजिनी देवी इस आधुनिक युग की दिवंगत आत्मायें हमारे देश की ही नहीं, वरन् संसार की अमूल्य निधि हैं। महात्मा जी तो विश्व-कल्याण के लिए ही पैदा हुए थे और वे भारतीय आत्मा में अहिंसा, सत्य और प्रेम का दीप प्रज्वलित कर विश्व के सम्मुख भारत का आदर्श रखकर इस असार संसार से चले गये। उन्हीं की शिष्या सरोजिनी देवी भी इस असार संसार में नहीं रह गईं। तारीख २ मार्च सन् १९४९ ईसवी भारत के इतिहास में काले पृष्ठों से रँगा रहेगा। एक ओर देश के नेता भारतीय नारियों का उत्थान सोच रहे थे, भारत के गवर्नर-जनरल, प्रधान मंत्री तथा अन्य मंत्री और गवर्नर श्रीमती कमला नेहरू स्मारक अस्पताल में बेगम आजाद का अस्पताल खोलने में संलग्न थे, दूसरी ओर एक भारतीय रमणी—सरोजिनी देवी का हृदय इस पुण्य कार्य में सम्मिलित होने को तड़प रहा था। वह कदाचित् इतनी व्यथित हुईं कि कार्य की अनुपस्थिति को न सहन कर सकीं और उसी रात्रि की दूसरी बेला में इस असार संसार को छोड़ श्रीमती कमला नेहरू और बेगम आजाद से मिलने के लिए स्वर्गलोक में जा पहुँचीं। श्रीमती सरोजिनी नायडू का जीवन देश के लिए ही था—जैसा उनकी मृत्यु ने संसार को बतला दिया है।

श्रीमती सरोजिनी नायडू तारीख १३ फरवरी सन् १८७९ ईसवी को पैदा हुईं। उनके पिता डाक्टर अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक बड़े ही विद्याव्यसनी और अपने समय के महान् वैज्ञानिकों में से थे। सरोजिनी देवी की माता श्रीमती वरदासुन्दरी देवी अपनी युवावस्था में बंगाली भाषा की सुन्दर कविताओं की रचना किया करती थीं। डाक्टर अघोरनाथ चट्टोपाध्याय का जीवन बड़ा ही प्रतिभावान और सुन्दर रहा है। वह एडिनबरा विश्वविद्यालय की बी० एस-सी० परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण हुए और तत्पश्चात् जर्मनी के बोन विश्वविद्यालय में भी अध्ययन किया परन्तु उन्होंने अपने डाक्टर की उपाधि एडिनबरा विश्वविद्यालय से ही प्राप्त की। भारत वापस आने पर डाक्टर अघोरनाथ चट्टोपाध्याय को हैदराबाद के नवाब ने शिक्षा-प्रसार के लिए अपने राज्य में नियुक्त किया। उनका मकान सबके लिए खुला रहता था। गरीब-अमीर, राजा-महाराजा अथवा साधारण आदमी, सभी उनके पास आ-जा सकते थे। प्रत्येक जीवित प्राणी डाक्टर अघोरनाथ चट्टोपाध्याय के लिए पवित्र और देवता था। डाक्टर साहब को कई भाषाओं का अच्छा ज्ञान था। हरब्रू, फ्रांसीसी, जर्मन, ग्रीक, संस्कृत और उर्दू के वे अच्छे ज्ञाता थे। बंगला और अँगरेजी के तो वे पंडित ही थे। डाक्टर साहब के घरेलू वातावरण ने सरोजिनी देवी को मानव और मामलों की ओर अधिक आकर्षित कर दिया। इससे सरोजिनी देवी बाल्यकाल से ही मानवीय कार्यों की ओर विशेष अभिरुचि रखने लगीं।

बारह वर्ष की अपनी छोटी अवस्था में सरोजिनी देवी ने मद्रास विश्वविद्यालय की मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास की और अपने बाल्यकाल में ही साहित्य से विशेष अभिरुचि रखने लगीं। एक दिन जब कि वह ग्यारह वर्ष की थीं बीजगणित का एक कठिन प्रश्न हल करने में व्यस्त थीं, परन्तु वह प्रश्न हल न हो सका। उसी समय सरोजिनी को कविता याद हो आई और बीजगणित के स्थान पर कविता लिख डाली। तेरह वर्ष की अवस्था में तो उन्होंने एक लम्बी कविता की रचना की। उस कविता का नाम "झील की रानी" रक्खा। इसके पश्चात् तो उन्होंने एक धारावाहिक नाटक २००० पंक्तियों का लिखा कि इस नाटक की रचना के पूर्व सरोजिनी के दिमाग में न तो कोई नवीन भाव थे और न किसी प्रकार का कथानक ही। इस पर नवीनता यह कि रचना के समय सरोजिनी बीमार थीं; डाक्टर ने पुस्तक पढ़ने तक की मनाही कर दी थी। सरोजिनी की कवित्व शक्ति से प्रभावित होकर हैदराबाद के निजाम ने सरोजिनी को विदेश में अध्ययन के लिए जाने को प्रेरित किया और ३०० पौंड (लगभग ४२००रुपये) प्रतिवर्ष की छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। इन कारणों से सरोजिनी अपनी १६ वर्ष की अवस्था में सन् १८९५ ईसवी में इँगलैंड गईं।

इँगलैंड में लन्दन का किंग्स कालेज और कैम्ब्रिज का गिर्टन कालेज सरोजिनी देवी की अध्ययनशाला रहा है। वहाँ भी सरोजिनी केवल अध्ययन में ही व्यस्त न थीं, वरन्, अपनी कवित्व शक्ति का उपयोग करती रही हैं। कितनी सुन्दर और अच्छी कविताओं की रचना इँगलैंड में रहकर उन्होंने की है। वहाँ रहकर वह एडमण्ड गोस, विलियम आर्चर और हेनीमैन जैसे प्रकाशकों से मिलीं जिन्होंने सरोजिनी की कविताओं को प्रकाशित किया है। गोस ने सरोजिनी देवी की कविता लिखने की धारा को बदल दिया। उन्होंने सुझाया कि गगन पक्षी और पौराणिक कथाओं के आधार पर काव्य रचने के बजाय फूल, फल और वृक्षों पर रचनायें भारतीय अधिक पसन्द करेंगे न कि अँगरेजी ढंग की रचनायें। सरोजिनी देवी ने इस सुझाव के अनुसार कार्य किया। अँगरेजी कविताओं की उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें 'स्वर्णिम देहरा' (दि गोल्डेनथ्रेसहोल्ड) १९०५ में 'समय की चिड़िया' (दि बर्ड आफ टाइम) १९१२ ईसवी में और 'टूटे पंख' (दि ब्रोकेन विंग) १९१७ में प्रकाशित हुई है।

विश्वविद्यालय का जीवन सरोजिनी देवी के अनुकूल न हो सका। उसके दैनिक कार्य और अनुशासन से उनकी काव्य-रचना में बाधा पड़ती और साथ ही उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता था। उन दिनों सरोजिनी का स्वास्थ्य गिर गया इस लिए उन्होंने कैम्ब्रिज छोड़ दिया और थोड़े ही दिनों बाद स्विटजरलैण्ड और इटली होती हुई भारतवर्ष वापस चली आईं।

भारतवर्ष वापस आने पर सरोजिनी देवी ने अपनी इच्छानुसार ब्याह किया। जिस पुरुष को उन्होंने पसन्द किया वह थे—निजाम के प्रिन्सिपल मेडिकल अफसर डाक्टर एम० गोविन्द राजुलु नायडू। श्रीमती सरोजिनी का दाम्पत्य जीवन बड़ा ही सुखमय रहा।

सरोजिनी देवी को केवल गृहस्थी के कार्य संतुष्ट न कर सके। देश दासता की बेड़ी में जकड़ा हुआ था। संसार में भारत की गुलामी की चर्चा सरोजिनी देवी को खल रही थी। उनका हृदय अपने देश में विदेशी शासन को सहन न कर सका। वे रात-दिन इसी चिन्ता में रत रहतीं कि कौन से साधन अथवा मार्ग अपनाये जायँ कि भारत माँ के गुलामी के बन्धन टूक टूक हो जायँ। कांग्रेस उस समय देश-सेवा की ओर अग्रसर हो रही थी। भारतीय राजनीतिज्ञों में श्री गोपालकृष्ण गोखले एक उदीयमान तारा बनकर देश की भावी स्वतन्त्रता का पथ-प्रदर्शन कर रहे थे। सरोजिनी देवी ने उस पथ पर पग बढ़ाये। सन् १९१३ ईसवी में उन्होंने लखनऊ के मुस्लिम लीग अधिवेशन में प्रथम सार्वजनिक कार्यकर्त्री के रूप में प्रवेश किया। उस अधिवेशन में सरोजिनी की उपस्थिति ऐसा प्रकट करती थी मानो वह हिन्दू-मुस्लिम एकता की राजदूत हों। इसके पश्चात् तो सरोजिनी देवी ने राजनीति का पल्ला ही न छोड़ा। वह इसके साथ इतनी घुल गईं कि उनकी मृत्यु उनको राजनीति के उच्च सिंहासन पर ही प्राप्त कर सकी। सन् १९१५ में उन्होंने बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। यही उनका कांग्रेस में प्रथम प्रवेश था। इसके पश्चात् सन् १९१६ में उन्होंने लखनऊ कांग्रेस में भाग लिया जिसमें हिन्दू मुस्लिम एकता का ऐसा सुदृढ़ गठबन्धन हुआ जिससे भारतीय स्वतन्त्रता के मार्ग की एक महान् अड़चन दूर हो गई। सन् १९१७ में कांग्रेस-अधिवेशन में श्रीमती सरोजनी देवी ने अच्छा भाषण दिया और उसके दूसरे ही वर्ष तो आपकी विद्वत्ता ने ऐसी छाप जमा दी कि मद्रास

शेष पेज १६ पर देखिए

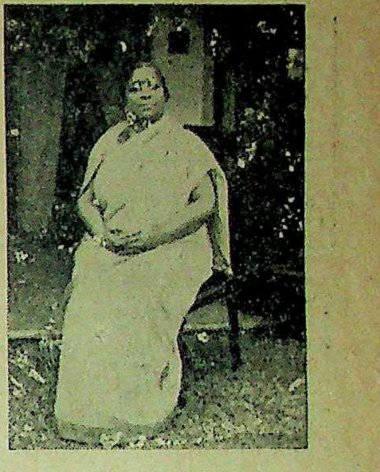

भारत-कोकिला श्रीमती नायडू।

टिकिया मशीन

गवर्नमेन्ट के उच्च अधिकारियों द्वारा सम्मानित लगभग १ पाव वजनी पीतल की बनी, बेहद मजबूत, ५/१६ व ३/८ इंच व्यासों की १/२ ग्रेन से १० ग्रेन तक की हूबहू एस्प्रो कुनैन की टिकियों जैसी फैन्सी १ घंटे में ३००/४०० टिकियाँ दवाइयों स्याही, पाउडर आदि की बनती हैं। विशेष विवरण भेजने को नहीं है। मूल्य १४) डाकखर्च १)

उपाधियाँ लीजिए

गवर्नमेन्ट से रजिस्टर्ड सुयोग्य कालेजों से होम्योपैथिक वैद्यक हकीमी के डिप्लोमा घर बैठे सरलतापूर्वक प्राप्त करने के नियम मँगायें। पता :—

जीवन प्रभा आफिस नं० ३० कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज की होली

लेखक, श्री दाऊदयाल शर्मा 'ब्रजेश'

ब्रज की होली ब्रज में ही नहीं, बल्कि सारे भारतवर्ष में विख्यात है। फाल्गुन मास के लिए ब्रज में यह लोकोक्ति प्रचलित है कि 'मस्त महीना फागुन कौ।' सच ही तो है, सारा ब्रज मस्ती में डूब जाता है। उस मस्ती में जिसे देखने सारा भारत उमड़ पड़ता है और अपना जीवन धन्य मानता है।

उसी मस्ती में मैं डूबना चाहता था और चल पड़ा उस ओर। हमारी ट्रेन जैसे ही ब्रज की सीमा में घुसी कि पटरी के सहारे के एक गाँव में से डफ, करताल, झाँझ, मृदंग और मजीरा की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। गाँव के पास से ज्यों ही ट्रेन निकली कि ब्रजवासियों के कंठ से निकले हुये इस गीत ने

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई।

हमें बता दिया कि अब हम उस ब्रज में आ गये जहा श्यामा श्याम ने कभी अपनी अनेक लीलाओं द्वारा ब्रजवासियों को अपना बना लिया था। मथुरा जंकशन पर ट्रेन के रुकते ही हमने देखा कि प्लेटफार्म के एक सिरे पर कुछ कुली आग जलाकर बैठे हैं। एक व्यक्ति हाथ उठा-उठाकर गाता है कि

प्यारी पिया दोऊ खेलत होरी।
नंद नंदन ब्रजराज साँवरो
श्री वृषभानुकिशोरी॥
परमानन्द प्रेमरस भीने
लिए अबीर भर झोरी।
करत मन में चित चोरी॥

और उसके बाद सभी दुहराने लगते हैं। धर्मशाला में जाकर ठहरे। किन्तु वहाँ आँख कैसे लगती जहाँ श्रीमती ब्रजांगनाएँ अपने कोकिल कण्ठ से ब्रजराज को चुनौती देकर कह रही थीं

थारे करूँगी कपोलन लालजी
म्हारी अँगिया न छूओ।
यह अँगिया नहीं धनुष जनक को
छुवत टुटो तत्काल॥
इतनी सुन मुसकाय साँवरे
लीनो अबिर गुलाल।
सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अंग
सखियन किये निहाल॥

प्रातःकाल होते यमुना स्नान किया। श्री द्वारकाधीश के मंदिर में दर्शनार्थ पहुँचे। सारा मंदिर अबीर और गुलालमय हो रहा था। देव-प्रतिमा के सामने बैठे हुए कीर्तन समाज ने पूरी लय के साथ

या ब्रज में कैसी धूम मचाई।
इतते आई कुँवर राधिका
उतते कुँवर कन्हाई॥
खेलत फाग परस्पर हिलमिल
या छवि बरन न जाई॥

गाया। सारे दर्शनार्थी यात्री आनन्द-विभोर हो गये।

मथुरा नगर की होली ब्रज की परिष्कृत होली है। किन्तु गाँवों में बसा ब्रज आज भी अतीत की ओर ले जाता है। ब्रजवासियों ने अपनी परम्पराओं को त्यागा नहीं है, बल्कि रीति-रवाज, चाल-ढाल और प्रत्येक प्रकार वेश-भूषा तक को अब तक सुरक्षित रक्खा है।

ब्रज में होली के अनेक रूप हैं। नन्दगाँव श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण और बरसाना श्री राधा के जन्म-स्थान के कारण अधिक प्रसिद्ध है। इन दोनों ही गाँव के निवासी राधाकृष्ण के सम्बन्ध को लगभग पाँच हजार वर्ष से अब तक निभा रहे हैं। बरसाना के निवासी श्री राधिका को पुत्री और बहन के समान मानते हैं और इसी नाते नंदगाँव का जल तक ग्रहण नहीं करते।

होली के आने के पूर्व ही दोनों ही गाँवों के युवक और युवतियाँ अपने शरीर को पुष्ट बनाने में लग जाते हैं। प्रथा यह है कि एक दिन बरसाने के युवक नंदगाँव की युवतियों से होली खेलने जाते हैं और दूसरे दिन नंदगाँव के युवक बरसाने की युवतियों से होली खेलने जाते हैं। युवक गुलाल की झोली एक हाथ में और दूसरे हाथ में ढाल रखते हैं। जब एक युवक किसी युवती के गुलाल मलने की चेष्टा करता है, तो वह ब्रजांगना डंडा मारकर निषेध करती है और युवक ढाल से अपनी रक्षा करता है। इस होली की ठिठोली में दया नाम की वस्तु पास भी नहीं फटकती। युवक घायल हो जाते हैं, सिर से रक्त की धार बह निकलती है और वह ब्रज-रज उठाकर अपने घाव पर लगाने के बाद फिर उसी प्रयास में लग जाते हैं। अंत में सफल होते हैं। यह है ब्रज की वह होली जो सारे भारत में विख्यात है।

वृन्दावन में घर घर और गली गली में मंदिर हैं। प्रत्येक मंदिर में दिन भर गुलाल और रंग फिकता रहता है। रंग जी के प्रसिद्ध मंदिर में सहस्रों फव्वारे चलते हैं, जिनकी विशेषता यह है कि प्रत्येक फव्वारे में से अलग अलग रंगों की धार फूटती है।

श्रीकृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता बलदाऊ जी भी होली खेलते हैं। श्रीकृष्ण की होली तो रँगीली होली ही कहलाती है, किन्तु बलदाऊ जी की होली का नाम ब्रज में हुरंगा है। मथुरा से सात कोस बलदेव नामक कस्बे में दाऊ जी का मंदिर है जहाँ बिना किसी भेद-भाव के जिनमें हरिजन भी होते हैं, होली खेलते हैं। भगवान् श्री बलदेव जी के सम्बन्ध में

अलबेली छैल चिकनियाँ,
ब्रज में ठाकुर दाऊदयाल।

नामक रसिया बड़ा ही प्रसिद्ध है।

ब्रज में जहाँ होली प्रत्येक व्यक्ति मादकता से सराबोर कर देती है, उसी में होली पर एक अद्भुत कार्य भी होता मथुरा से लगभग १४ कोस चमेली के निकट फारैन नामक एक गाँव जहाँ होली के दिन वृद्ध ब्राह्मण जो कहलाता है वह दिन भर निर्जल करता है। होली के जलने पर वह कुं स्नान करके जलती हुई होली के बी से नंगे पैर निकलता है और एक भी नहीं जलता। इस दृश्य को सहस्रों देखते हैं। यहाँ तक कि अधिकतर धीश भी उपस्थित रहते हैं।

गोकुलगाँव में जहाँ वल्लभ सम्प्रदाय के अधिकांश मंदिर हैं, एक मंदिर में

जो तेरे मन में होरी खेलन की
तो ले चल कुंजन
चोआ चंदन और अरगजा
छिरकूँगी फागन
घालत कुंकुम ताक कुचन पर
ऐसो निपट बे
ललितकिशोरी कर बरजोरी
मुख सों मलत अबी

पद सुनते ही हम आनंद-विभोर हो

बिड़ला-भवन के प्रति

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

(१)

मिट्टी के घर! तेरी महिमा अमर हो गई,
मिट्टी की आभा कंचन सी प्रखर हो गई;
त्रेता में पत्थर जल-धारा पर उतराएँ—
और आज पत्थर की जड़ता स-स्वर हो गई।

(२)

संध्या के क्षण में तूने सूर्योदय देखा,
तिमिरांचल पर लिखा ज्योति का निश्चय देखा;
जो देवों के लिए पूज्य बन गया धरा पर—
रक्त-बिन्दुओं का तूने वह संचय देखा।

(३)

काल-चक्र पर घूम फिरी वह शाम यहीं पर,
गूँजा था हे राम! अमर 'हे राम!' यहीं पर;
ओ मिट्टी के घर! तेरी उर-व्यथा अमर है—
तेरे उर पर लिखा गया परिणाम यहीं पर।

(४)

महामरण का नहीं, तीर्थ तू महा सृजन का,
तू एकाकी ठौर, विश्व के लिए शरण का;
तू बापू का यत्न—विश्व के तिमिर-हरण का—
तू अविनाशी चिह्न पिता के पूत चरण का।

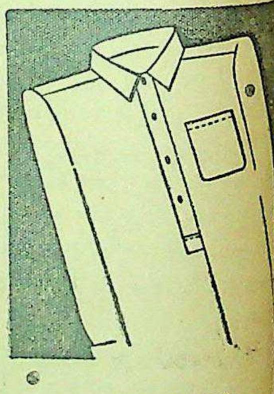

धोने के लिये
५०१ साबुन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि

सफेद बाल काला
खिजाब से नहीं हमारे आयु सुगन्धित तैल से बाल का पकना सफेद बाल जड़ से काला हो जा यह तैल दिमागी ताकत और आँ रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश् हो वे मूल्य वापस की शर्त लिख मूल्य २॥), बाल आधा पका हो और कुल पका हो तो ५) मँगवा लें।
विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

अभिशाप

लेखक, श्री राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी, एम० ए०

> समाज में कुछ ऐसी कुरीतियाँ हैं जिससे समाज ही नहीं वरन् देश भी रसातल में पहुँच गया है। नारी रत्न की तो इतनी अवहेलना की जाती है कि वही कलंकिनी पापिनी और अन्य बुरे नामों से पुकारी जाती है। इन्हीं कुरीतियों में बेमेल विवाह और दहेज ने समाज को कितना पतित कर डाला है, कथाकार ने बड़े ही मार्मिक और रोचक ढंग से वर्णन किया है। कहानी सुन्दर, भावपूर्ण और पठनीय है।

हम कभी कभी धोखे से ठीक काम कर जाते है, बिना चेष्टा के अथवा बिना इच्छा किए हुए ही बहुत सी बातें जान जाते हैं। प्रायः ऐसा भी होता है कि आप करना कुछ चाहते हैं, परन्तु समय की प्रेरणा आपको अन्य किसी ओर ले जाती है। इसी को हम दैव का विधान कहते हैं।

हमारी बचपन से ही कुछ भली बुरी आदतें पड़ जाती हैं। इसका कारण प्रायः माता-पिता की असावधानी अथवा उनकी ओर से देख रेख का अभाव ही समझना चाहिए। फिर आप कितनी ही चेष्टा क्यों न करें, आपके हमदर्द लोग आपको कितना ही क्यों न समझायें, वे आदतें फिर जाती ही नहीं। विशेष कर बुरी टेवें तो मनुष्य के शरीर में घुन की तरह घुस बैठती हैं। वे जब तक आदमी को कई बार ठोकरें नहीं लगा देतीं, उसे एकदम बर्बाद नहीं कर देतीं, तब तक जाती थोड़े ही हैं। लोहे के गोले में आप आग की चिनगारी को एक बार प्रविष्ट हो जाने दीजिये, फिर वह समूचे गोले को भस्म करके ही शान्त होगी।

बचपन से मुझमें भी दो-चार कुटेवें आ गई थीं। परन्तु सौभाग्य से मैं सचेत शीघ्र ही हो गया...मेरे बर्बाद होने की नौबत न आ पाई, शायद इसका कारण यह रहा हो कि मैं जन्म का नीम नहीं था, जो घी-गुड़ से भी सींचने पर मीठा न होता। मेरे संस्कारों ने मुझे एक स्वर्ण के हल का स्वरूप प्रदान कर रखा है, जो गन्दे खेतों में चलने में अपना अपमान समझता है। या यों कहिए कि स्वर्ण-पात्र पर काई जम गई थी। तनिक सी रगड़ लगते ही दूर हो गई।

जो भी हो। वह दिन मेरे जीवन में बड़े महत्त्व का अवसर हैं। उसकी याद मेरे हृदय में आज भी सर्वथा की भाँति नवीन है।

कलकत्ते की सड़कें तो आपने देखी ही होंगी। यदि नहीं, तो कम से कम वहाँ की चौरंगी का नाम तो सुना ही होगा। चौरंगी एक तरह से कलकत्ते का केन्द्र-स्थान है। वहाँ पर प्रायः सब बड़ी बड़ी सड़कें आकर मिलतीं और वहाँ होकर सब ट्रामें व मोटरें निकलती हैं। उसके चारों ओर कलकत्ते का प्रसिद्ध पाँच-छः मील लम्बा मैदान है। चारों ओर असंख्य बिजली की बत्तियाँ अपना प्रकाश देतीं और झिलमिल करती हुई मन को बरबस मोह लेती हैं। देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ किसी ने तिलस्म का जाल बिछा रखा हो। यहाँ चौरंगी पर हर किस्म के और हर फन के आदमी देखने को मिल जाते हैं। यहाँ पर दिखाई देनेवाले रंग-बिरंगे मनुष्य और उनके रँगीले ठाठों के कारण ही सम्भवतः इसका नाम चौरंगी सार्थक हुआ है। इसी चौरंगी पर मैं भी प्रायः घूमने चला जाया करता था। रंग-बिरंगी तितलियाँ मुझे अपनी ओर खींचे लेती थीं...परन्तु उन्हें पकड़ते हुए भय लगता था। इस भय की मीमांसा करना मेरी शक्ति के परे है।

सदैव की भाँति मैं उस दिन भी चौरंगी पर खड़ा खड़ा एक तितली को देख रहा था। पीछे से किसी की आवाज आई, "क्यों बाबू। तितलियाँ बहुत पसन्द हैं?" इतने में ही मेरे सम्मुख लगभग ६०वर्षीय एक वृद्ध जन आकर खड़े हो गये। उनकी सफेद दाढ़ी हवा से बातें कर रही थी और वे सिर पर सफेद साफा बाँधे तथा एक सफेद अँगरखा व चूड़ीदार पाजामा पहने हुए थे। उनका स्वरूप देखकर मैं पहले तो कुछ संकोच में पड़ गया, और मुझे ऐसा लगा कि किसी ने मुझे चोरी करने के लिए जाते हुए देख लिया है। परन्तु जैसे ही मेरी दृष्टि उनके अधरों पर खेलती हुई स्मित हास्य-रेखा के ऊपर पड़ी, वैसे ही मुझमें साहस का संचार हो गया और मेरे मुँह से एकदम "हाँ" निकल पड़ा।

मेरे मुँह से 'हाँ' निकलना क्या था, मानो उसे अपने उद्देश्य की पूर्ति की स्वीकृति मिल गई। उसने "कहा तो आई फिर मेरे साथ, मैं आपको तितलियाँ दिखाऊँगा। कहेंगे तो एक-दो दिलवा भी दूँगा"...इतना कहते कहते उसकी आँखों में एक अजब शरारत खेलने लगी और वह पीछे घूमकर आगे बढ़ दिया। मैं भी उसके पीछे हो लिया।

थोड़ी दूर तक चलने के बाद हम एक गली में मुड़े और कोई ५० गज चलने के बाद हम एक ऊँचे चार मंजिल के मकान में घुसकर ऊपर चढ़ने लगे। यहाँ हमारी शान्ति भंग हुई और वह वृद्ध बोला "बाबू साहब। दौरा टका होवे।" मैंने भी चट से भालौ कहा...और हम ऊपर चढ़कर दूसरी मंजिल के कमरे में जा बैठे। अब मामला साफ था, केवल अवसर की प्रतीक्षा थी। सलाम करके वह वृद्ध चलता बना। जिस कमरे में मैं बैठा था, वह कमरा अत्यन्त स्वच्छ एवं सुघड़ था। फर्श पर एक कालीन बिछा हुआ था। तीन-चार सोफे की कुर्सियाँ थीं। एक कोने में स्प्रिंगदार सुन्दर पलँग पड़ा था। उसके ऊपर लगभग एक फुट ऊँचा मुलायम गद्दा था और बिछी हुई थी उसके ऊपर समुन्द्रफेन की स्वच्छ चद्दर। उस कमरे में बिजली का पंखा तो था ही, साथ ही एक रेडियो भी था। चारों ओर खिड़कियों में रंग-बिरंगे पर्दे भी लगे हुए थे। इनके अतिरिक्त उस कमरे में चार-छः चित्ताकर्षक चित्र टँग रहे थे। हो सकता है इनके अतिरिक्त वहाँ कुछ चीजें हों, परन्तु मैं इतना ही देख पाया था कि सामने से एक ११ वर्षीय बालक निहायत साफ-सुथरे कपड़े पहने हुए, एक चाँदी की तश्तरी में पान, इलायची, तम्बाकू व सिगरेट लेकर कमरे में आया। आते ही उसने अत्यन्त आदर-भाव से मुझे नमस्कार किया और मेरे सामने पड़ी हुई छोटी मेज पर उस तश्तरी को रखकर चला गया। मैंने पान खाया और सिगरेट पीने लगा। अब मेरा चित्त कुछ कुछ चलायमान-सा हो चला था; और मैं कुछ बेचैन-सा था।

युवती ने कहा—चलो मैं तुम्हारे ही घर चलती हूँ, बोलो हो तैयार।

थोड़ी ही देर में एक बराबरवाले कमरे में से दो महिलायें आती दिखाई दीं। आगे आगे एक लगभग ६०वर्षीय वृद्धा थी...और उसके पीछे एक लगभग २५-२६ वर्षीय युवती। मेरी दृष्टि तुरन्त ही उस युवती पर जाकर टिक गई। उसकी बारीक साड़ी में होकर उसका प्रत्येक अंग साफ दिखाई दे रहा था। वह काफी जेवर पहने तथा शृङ्गार किए हुए थी...इत्यादि, इतना सब कुछ होने पर भी, वह मुझे अपनी ओर विशेष आकर्षित न कर सकी। उसका बनाव-शृङ्गार मुझे लुभा न सका। मुझे उसमें स्त्रियोचित लावण्य का सर्वथा अभाव-सा प्रतीत होने लगा।

खैर वह युवती मेरे बराबरवाली कुर्सी पर आकर बैठ गई। मैं बराबर उसी की ओर देख रहा था। अब मैंने उस पर से नजर हटाकर इधर उधर देखा तो वहाँ और कोई न था। वह वृद्धा न मालूम कहाँ चली गई थी। वह युवती मेरी ओर देखकर, सम्भवतः मेरी नादानी पर, मुस्करा रही थी।

लोग कहते हैं कि मारनेवाले से बचानेवाला बड़ा होता है। गिरानेवाले से उठानेवाला और धक्का देनेवाले से सहारा देनेवाला बड़ा होता है। जब हम गिरने को होते हैं, तो तनिक से प्रलोभन हमें भुलावे में डाल देते हैं...हम नाली का पानी भी निस्संकोच पी लेते हैं। कभी कभी वह हमें स्वादिष्ट भी लगने लगता है। परन्तु जब हम उठने को होते हैं, अथवा जब हमारा बचानेवाला हमारे साथ होता है, तब बड़े बड़े प्रलोभन भी हमें नहीं लुभा पाते। हम अपरिचित पुष्प को भी, कीड़े-मकोड़े के भय से, सूँघते हुए डरते हैं। इसी को आप भगवान् की माया कह सकते हैं। भगवत् भक्त इसी बात को यों कहेंगे कि संसार में ज्ञानी और मूर्ख कोई नहीं है, जब भगवान् उसे जैसा बना दें, तब वह वैसा ही बन जाता है। जो कुछ भी हो। हम नहीं कह सकते कि हम कहाँ और कब गिर पड़े अथवा कहाँ और कब, किस तरह बाल बाल बच जायें और सँभल कर खड़े हो जायें।

इस समय न मालूम क्यों, मेरे अन्दर विरक्ति जैसे भाव उदय होने लगे। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय मेरी हालत उस व्यक्ति जैसी थी जो किसी बगीचे में आकर फूल तोड़ना चाहता है, परन्तु एकाएक उसका हाथ रुक जाता है। जैसे वह यह सोचने लगे कि बजाय इस फूल को तोड़कर और सूँघकर नष्ट कर देने के. यदि इसके पौधे के सम्बन्ध में माली से पूरी पूरी जानकारी प्राप्त की जावे, तो कहीं अधिक अच्छा है। बस मैं उस फूल की डाल-पात के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये उत्सुक हो उठा। वह युवती मेरी ओर जितने ही अधिक कटाक्ष करती, उतना ही अधिक मैं विरक्त-सा होता चला जाता। मेरे ऊपर विरक्ति के भाव ठीक उसी प्रकार जम चुके थे, जिस तरह चूने के ऊपर पड़कर सीमेंट पत्थर की तरह दृढ़ हो जाता है। पानी के थपेड़े, बजाय उसे बहा देने के क्रमशः दृढ़तर ही बनाते जाते हैं।

मैंने उस युवती से प्रश्न किया... "क्यों तुम्हें मेरे साथ कितनी देर तक रहने का आदेश है ?" "केवल ४० मिनट..." उसने कुछ लज्जित-सी होकर कहा। अब मैंने विचार किया कि अधिक सोच-विचार में समय व्यतीत करना अवसर को स्वयं खोना है। मैं तुरन्त अपने मतलब की बात करने लगा। १० रु० का नोट मैंने उस युवती की ओर बढ़ाते हुये कहा..."यह लो अपनी फीस...और बस मेरी एक बात का उत्तर दे दो। मुझे तुमसे और कुछ नहीं चाहिये। चाहिये केवल अपने एक प्रश्न का सही सही उत्तर।"मेरी बात सुनकर वह कुछ कुछ भ्रमित सी हो गई।" सम्भवतः उसे ऐसा लगा मानो शराब का नाम लेकर किसी ने उसे पानी पिला दिया हो। उसने हँसकर फुहार छोड़ दी.. "अच्छी बात है। पूछिये। मैंने सीधा सा प्रश्न किया, "तुम यह काम क्यों करती हो।" शायद मेरे प्रश्न ने उसके मर्मस्थान पर चोट की। वह विह्वल और व्यथित सी हो गई। उसकी मुखमुद्रा और आकृति अब एकदम बदल गई। वह अपने ओंठ चबाती हुई कुछ देर तक न मालूम क्या क्या सोचती रही..न मालूम किन किन भाव-तरङ्गों में तैरती-डूबती रही। शायद उसे जवाब देने के लिए बहुत से बिखरे हुए साहस का संचय करना पड़ा होगा। अन्ततोगत्वा उसने कहना प्रारम्भ किया। इस समय उसकी बड़ी बड़ी सजीली आँखों से मोती सदृश बड़े बड़े अश्रु-बिन्दु ढलक रहे थे। वह कह रही थी, "मैं एक उच्च ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुई हूँ। हम लोग आगरे जिले के रहनेवाले हैं। यह साथ में जो वृद्धा हैं, वह मेरी माँ हैं। आज से बीस वर्ष पहले हमारे घर में सब कुछ था, हम लोग पूर्ण रूप से सम्पन्न थे। भगवान् का प्रकोप..धीरे धीरे मेरी पिता जी की आर्थिक अवस्था बिगड़ती गई और उनके पास मेरी शादी करने भर को भी पैसे न रह गये। मेरे पिता जी जहाँ कहीं भी शादी की चर्चा करते, वहीं से लम्बे-चौड़े देन-दहेज की बात होती। मैं इसी तरह १६ वर्ष की हो गई। आस-पास के बहुत से नवयुवक मुझ पर मेरे स्वरूप के कारण मुग्ध थे.. परन्तु मेरे साथ शादी करने को कोई भी तैयार नहीं होता था।

मैं अपने पिता को भारस्वरूप प्रतीत होने लगी। यह सच है कि गाय को सींग भारी नहीं मालूम पड़ते हैं, परन्तु फिर भी उनमें कोई रोग जब लग जाये, तो गाय को भी उसके कारण कष्ट होने लगता है। जिस तरह बढ़े हुये नाखूनों को कटा डालने के लिये हम उत्सुक हो जाते हैं, ठीक वही हाल मेरे पिताजी का था। वह मुझे किसी तरह कहीं न कहीं टालने के लिए विह्वल हो उठे थे। साथ ही वह मुझे अभागिनी भी समझने लगे थे। मेरी माता जी भी मेरे ऊपर बात बात में झल्लाने लग गई थीं। उनकी प्यारी बेटी अब उनके लिए अभिशाप बन गई थी।

एक दिन शाम को घर में आते समय मेरे पिता जी सदैव की भाँति उदास न थे। उस समय वह अत्यन्त प्रसन्नचित्त थे। उनकी मुखाकृति देखकर मैं तो यह समझती कि आज इन्हें रायबहादुरी मिल गई है, क्योंकि उन दिनों यह रायबहादुर होने के लिए अनेक दावतें देते रहते थे। इस कारण कर्जदार भी हो गये थे। परन्तु बात ऐसी न निकली, सम्भवतः मेरी माता जी उनके भाव को ताड़ गई थीं। बोली, "क्यों, क्या आज कहीं ठीक-ठाक कर आये हो।" बस मेरे पिता जी खुशी खुशी अपनी विजय-गाथा सुनाने लग गये। उनके स्वर में उस समय एक अपूर्व माधुर्य था। वह कह रहे थे, "मीठा और भर कठौता। सोना और सुहागा। आज मैं शान्ती के लिए वर तय कर आया हूँ। आज तो किसी भले का मुँह देखकर उठा था। घर बैठे ही सब कुछ पा गया, उम्र तो कुछ अधिक है। लोग लगभग ४० वर्ष के बताते हैं, परन्तु देखने में अत्यन्त सुन्दर, स्वस्थ तथा सुशील है। कलकत्ते में रहता है, कपड़े की दूकान है, और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह अकेला है, उसके भाई-बहन, माँ-बाप, कोई भी तो नहीं है। बस, मेरी शान्ती एक-छत्र राज्य करेगी।" इतना कहकर मेरी ओर पिता जी ने अत्यन्त नेहपूर्ण नेत्रों से देखा, मानो उन्हें मेरे भाग्य पर गर्व हो रहा था, मैं लज्जा और संकोच से जमीन में गड़ी जा रही थी।

माता जी ने पूछा, "और देन-दहेज" ...इस प्रश्न का होना था कि पिता जी का सीना फूल उठा। वह गर्व करते हुए बोले, "देन-दहेज, जिसकी लड़की में कुछ अवगुण हो, वह देन-दहेज दे। मैं तो उलटे उससे ढाई हजार रुपये लूँगा।"

इसके बाद बहुत सी अनेक बातें हुईं। उन्हें कहने-सुनने में विशेष कोई लाभ नहीं। कहने का अभिप्राय यह है कि मेरे पिता जी ने रुपये के लालच में आकर मुझे उस ५५ वर्षीय वृद्ध के हाथों ढाई हजार रुपयों में बेच दिया। मैं उनकी चौथी पत्नी थी। अब मैं अपने वृद्ध एवं रोगग्रस्त पति के साथ आकर कलकत्ते में हरीसन रोड पर एक चौमंजिले मकान में एक कमरे में रहने लगी। यह सच था कि उनके और कोई न था। कभी कभी अपने भाग्य को कोस लेने के अतिरिक्त मुझे अपने माता-पिता के प्रति विशेष क्षोभ न था। मैंने अपना मन यह कहकर मना लिया था कि "जब भाग्य में ही यह था तो पिता जी अथवा और कोई क्या करता......"

हमारे मकान के सामने नीचे सड़क के किनारे एक सुनार की दूकान थी। सुनार एक २५-२६वर्षीय नवयुवक था। वह मेरी ओर प्रायः देखा करता था।

हमारे विवाह को हुये अभी पूरा एक वर्ष भी न हो पाया था कि मेरे पतिदेव चारपाई से लग गये। उनको श्वास का पुराना रोग था। चिकित्सा में धन व्यय होने लगा और मेरे सम्मुख अन्धकारमय भविष्य अट्टहास करने लगा।

इन्हीं दिनों वह सुनार युवक मेरे काम आया। वही मेरे पतिदेव के लिए दवाई-दारू लाता, उनकी देख-भाल करता तथा अवसर पाकर मुझे ढाढ़स बँधाता था। उसकी सज्जनता ने मुझे आकर्षित किया। मेरा हाथ तंग देखकर वह अपने पास से ही दवा इत्यादि का बहुत-सा खर्च करने लगा। न मैं जोर देकर उसे पैसे देती और न उसे उन्हें माँगने की आवश्यकता ही थी। धीरे धीरे मैं उस पर मुग्ध होने लगी। अब वह मेरे पास बैठने-उठने भी लगा। हमारी उसकी अब घंटों बातें भी होती रहतीं। संक्षेप में मेरा उससे प्रेम हो गया और मैं उसकी पत्नी बनने को तैयार थी। लगभग छः महीने की बीमारी के बाद मेरे पतिदेव परलोकवासी हुए। सुनार के घर में मेरे प्रथम छः महीने कैसे बीते......अब उनका उल्लेख क्या करूँ। वहाँ सदैव वसन्त और पावस दो ही ऋतुएँ रहती थीं। सारा संसार गुलाबी दिखाई देता था। धीरे धीरे ऊषा की लालिमा की जगह सूर्य की प्रखर ज्योति प्रकट हुई। और अन्त में सन्ध्या की उदासी छा गई। लगभग एक वर्ष बाद एक दिन मेरे प्रेमी पतिदेव ने मुझसे कहा—"तुम्हारे रहने से मेरी बदनामी हो रही है। घरवाले मुझसे अप्रसन्न हैं। मेरी जाति-बिरादरी के लोग मुझे जाति-बहिष्कृत करने की बात कह रहे हैं। अब मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारा जहाँ जी चाहे, वहाँ तुम चली जाओ।" मैंने कुछ ना-नूँ, करनी चाही, तो उनकी त्यौरियाँ चढ़ गईं। "कल शाम तक यह घर खाली हो जावे।" इतना कहकर वह बाहर चले गये।

अब मुझे ऐसा लगा कि मुझे चारों ओर से काँटों ने घेर लिया था। परन्तु मुसीबत के वक्त घर याद आता है। मुझे भी अपनी "अम्मा" की याद आई और मैं टिकट लेकर सीधी आगरा पहुँची। वहाँ मकान में केवल मेरी माँ थीं। मेरे पिता जी छः महीने पहले मर चुके थे। कर्ज चुकाने में घर व जमीन-जायदाद सब कुछ पहले ही, उनके जीवन-काल में ही बिक चुके थे। मेरी माता जी मेहनत-मजदूरी करके, किसी तरह अपना पेट पाल रही थीं। मैं उन्हें देखकर बहुत दुःखी हुई। उनकी गोद में मैं अपना सिर रखकर अपने दुर्भाग्य को याद करके रोने लगी। वह भी रोईं, दोनों ने अपना-अपना दुःख हलका किया। दुःख का यह नियम है कि किसी से कहने से वह बँट जाता है। तथा रोने से आँसू बनकर बह जाता है और उसका भार कुछ समय के लिए हलका लगने लगता है, हमारा भी वही हाल था।

थोड़े दिनों तक इधर-उधर हम दोनों भटकीं। अन्त में कुछ एक लोगों के समझाने बुझाने का परिणाम यह हुआ कि मेरी माँ मेरे यौवन का क्रय-विक्रय करने लगीं, मुझे भी उसमें कोई आपत्ति न हुई, डूबते को तिनके का सहारा मिल रहा था, अथवा प्यासे की प्यास बुझ रही थी। साथ ही सुनार के सुखों की कसक भी कभी-कभी मुझे सताने लगती थी।

तब से लेकर आज तक मैं इस काम को करती हूँ, यह साथ में जो बुढ़िया है, वही मेरी माँ है. ...इतना कहते-कहते उसने अपनी गर्दन नीची कर ली, देखा तो उसके नेत्रों से अबाध अश्रुधारा बह निकली थी।

तुम किसी के साथ शादी करके क्यों नहीं एक ठिकाने से किसी घर की मालकिन बनकर बैठती हो, मैंने पूछा। उसने सिसकते हुए कहा, कोई सज्जन मुझे अपने घर में बैठाने को भी तो तैयार हो। यहाँ आते हुए किसी को लाज नहीं लगती, परन्तु मैं उनके घर चली जाऊँगी तो गाज गिर पड़ेगी। चलो, मैं तुम्हारे ही साथ चलती हूँ। दिन भर मेहनत, मजदूरी, सिलाई, बुनाई सब कुछ करूँगी। बोलो, हो तैयार।

उसकी ये हृदयविदारक बातें नीचा सर किए हुए चुपचाप सुनता रहा। मैं यही सोच रहा था कि "यह है हमारे समाज का अभिशाप।"

मुफ्त कलाई घड़ी

हमारे ब्लैक हेयर आयल नं० ५ (रजिस्टर्ड) तेल से हर प्रकार के बाल सर्वदा के लिए एकदम काले हो जाते हैं। यह तेल बालों को झरने से भी रोकता है, उन्हें बढ़ाता, चमकीला करता और घुँघराले बना देता है। मूल्य २॥) एक शीशी, तीन शीशी पूरे कोर्स के लिए ६॥) साढ़े छः रुपये में। इस अद्भुत तेल को प्रिय बनाने के लिए हमने एक मूल्यवान सुन्दर कलाई घड़ी और सोने की अगूठी प्रत्येक शीशी के साथ देने का निश्चय किया है। यदि असत्य प्रमाणित हो तो मूल्य वापस।

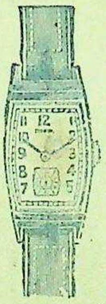

अमेरिकन ट्रेडिंग एजेन्सी
पी० बी० ७५ (डी० डी० ९)
अमृतसर

सफेद बाल काला!

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदीय "केश सञ्जीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २) रु० बाल अधिक पक गया हो तो ४) रु० का तैल मँगावें।

श्री प्रयागराम ६४ काजी डांगा
पो० शिवपुर (हवड़ा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय श्री वी० एच० देसाई

फिल्म-जगत् में हास्य तथा मनोरंजन के सुप्रसिद्ध अभिनेता

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

प्रमुख रसों में 'हास्यरस' की अत्यधिक प्रधानता रही है। नाटकीय अंगों में यह रस इतनी अश्लीलता से प्रदर्शित किया जाता है कि हृदय घृणा और ग्लानि-परिपूर्ण हो जाता है, परन्तु जब यह सीमित दशा में जनता के सम्मुख प्रदर्शित होता है तो जनता हृदय से इसका स्वागत करती है। यों तो कहने के लिये जिसने भी दीक्षित, घोरी, चार्ली और गोपे को देखा है, हृदय से उनकी सराहना करते हैं। हास-परिहास के दृश्यों में चार्ली और गोपे के अभिनय व्यंग्यात्मक हास्य में मिश्रित होते हैं और दीक्षित तथा घोरी को कभी-कभी परिधि से बाहर भी देखते हैं। पर हास्य-सम्राट् स्वर्गीय श्री विष्णु भाई हरिप्रसाद देसाई के अभिनय के प्रथम चरण में ही वास्तविकता की मात्रा अधिक थी—जिसने भविष्य में श्री विष्णु भाई हरिप्रसाद देसाई को इतना लोकप्रिय सिद्ध किया कि भारतवासी केवल—'श्री वी० एच० देसाई'—के द्वारा ही अपनी प्रशंसात्मक भावनाओं को प्रकट करने लगे।

श्री वी० एच० देसाई के अभिनय-जीवन की गति उस समय से प्राप्त होती है जब कि आप जी० आई० पी० संयान-संस्था में 'गार्ड' की स्थिति में कार्य किया करते थे। इसके पूर्व का जीवन अंधकार-मय है। इसके अतिरिक्त न तो आपने अपने उदार हृदय और साधारण होने के कारण कभी भी किसी पत्रकार को उस विशेष अंश को ही सुनाया और न किसी पत्रकार ने ही आपके उस जीवन का विवरण प्राप्त करने की कृपा की। पर इसमें नाममात्र के हेतु भी संदेह नहीं है कि आपका अध्ययन सफल रहा और आपने जिस दृष्टि से विश्व को देखा, आपके अभिनय में वे सब विचार क्रमशः आर्यवासियों के सम्मुख आते रहे हैं और अपने अंतिम चित्र 'रोशनी' में भी आएँगे।

कहते हैं, बम्बई विश्वविद्यालय से बी० ए० एल्०-एल० बी० में उत्तीर्ण होने के पश्चात् श्री देसाई ने अपनी इच्छानुसार अभिनेता होने के हितार्थ सागर कम्पनी के द्वारा खटखटाये, परन्तु दुर्भाग्यवश सागर कम्पनी के धनलोलुप एवं अभिमानी निर्माताओं अथवा सेठों ने अपने मद में भूलकर आपको अस्वीकार कर दिया। तत्पश्चात् सर्वश्री लुहार, बदामी, ('रामा-यणी') महबूब आदि ने आपको 'साधारण कलाकारों' की अनुक्रमणिका में स्थान प्रदान किया। देसाई जी ने अपनी आन्त-रिक भावनाओं को शिथिल पड़ते देखकर फिल्म-जगत् को त्याग कर जी० आई० पी० संयान-संस्था में 'गार्ड' का कार्य-भार सँभाला। आप सदैव गाना गाया करते और यात्रियों से भी कभी-कभी हास-परिहास के वार्तालाप कर बैठते थे। ऐसे ही स्थलों पर यात्री कह बैठते थे—"गार्ड साहब! यदि आप सिनेमा में अभिनेता हो जायँ तो अति उत्तम हो—" और आप हँसकर टाल देते थे। उन्हीं दिनों भार-तीय चंचल-क्षेत्र के सर्वस्व स्वर्गवासी श्री हिमांशुराय अपने चित्र "भाभी" के नायक-पिता की खोज में इधर-उधर भटक रहे थे। संयोगवश श्री हिमांशुराय की भेंट

फिल्म-जगत् के सुप्रसिद्ध हँसोड़ अभिनेता श्री वी० एच० देसाई।

श्री देसाई से हो गई। वह अत्यधिक प्रभावित हुए और 'गार्ड' के पद को त्याग-पत्र दिलवाकर आपको अपने साथ बम्बई ले आये, नायक के पिता की भूमिका प्रदान की और चित्र में प्रदर्शित अत्यधिक सुन्दर एवं स्वाभाविक अभिनय को निरखकर 'अनिश्चित समय के लिये आपको अपनी निर्माण-संस्था में सहर्ष स्थान दिया।

"भाभी" के हास्यमय अभिनय से समस्त प्रदर्शन-गृहों और बम्बई टाकीज की दीवारें प्रसन्नता में झूम उठीं। हिमांशु-राय जी की अध्यक्षता और दिग्दर्शन में 'नवजीवन', 'कंगन', 'नया संसार', 'बंधन', 'झूला', 'दुर्गा', 'अंजान', 'किस्मत', आदि का निर्माण हुआ। दर्शकों की मनोरंजक रुचि और सफल दिग्दर्शनों की कला को प्राप्त कर कलाकार धन्य हो गया और श्री देसाई हास्य-अभिनेताओं में चार्ली और घोरी से भी अधिक सम्मानित किये जाने लगे। इन्हीं दिनों श्री हिमांशुराय जी की मृत्यु हो जाने के कारण बम्बई टाकीज के समस्त कलाकारों ने इस संस्था से हाथ खींचकर एक नवीन चल-चित्र निर्माण-संस्था 'फिल्मिस्तान लिमिटेड' की स्थापना की। फिल्मिस्तान का प्रथम चित्र 'चल चल रे नौजवान' प्रदर्शित हुआ। श्री देसाई के विदेशी भाषा में कथन—"आई ऐम रुइण्ड" ने समस्त हास्य-अभिनेताओं को 'रुइण्ड' कर दिया। इसके पश्चात् "शिकारी", "आठ दिन", "शहनाई", "सफर", "खिड़की" आदि में आपको विशेष रूप से अपनी अनुपम हास्य-कला को प्रदर्शित करने के सुअवसर प्राप्त हुए। जनता आत्म-विभोर हो उठी और फिल्म-गगन-मंडल पर हास्य-अभिनेताओं में केवल 'श्री वी० एच० देसाई बी० ए० एल्०-एल० बी०' (नौटंकीवाले) ही चम-कने लगे। पर दूसरी ओर—वृद्धावस्था एवं वासनामय अभिनय की ओर अग्रसर होने के कारण आपके अभिनय पर लांछन आने लगा था, जिसका ज्वलंत उदाहरण "खिड़की" है। श्री देसाई को अपनी रोग-ग्रस्त (पूज्यनीय) माता का तार मिला। आपका हृदय टूट गया और उसी उजड़े हुये हृदय के साथ सोमवार दिनांक २४ जनवरी सन् १९४९ को वायुयान द्वारा बड़ौदा पहुँचे। दुर्भाग्यवश, उसी दिन हृदय की गति रुक जाने के कारण भारतीय छाया-लोक के अखिल भारतीय ख्याति-प्राप्त हास्य-अभिनेता श्री विष्णु भाई हरिप्रसाद देसाई बी० ए० एल्०-एल० बी० 'शहीद' हुये और अपने स्वाभाविक अभिनय की 'रोशनी' फैलाते हुए इस नश्वर एवं स्वार्थी संसार से मुख मोड़ लिया।

पर प्रश्न उठता है, जिस मनुष्य ने अपने प्राण की आहुति देने में किंचित्मात्र भी न चिन्ता की उसके लिए हमारे फिल्मिस्तान के महापुरुषों ने क्या किया? इसके उत्तर में उनके मुखों पर विराम सुशोभित हो जाते हैं। ठीक ही है, उन्होंने पैसा दिया और श्री देसाई ने उसके बदले में अभिनय किया। मनुष्य कितने-कितने पुण्य-कर्मों को करने के पश्चात् इस मनुष्य शरीर को प्राप्त करता है, परन्तु जब वह ऐसे निम्न एवं कलंकित विचारों को अपने मुख से उगलता है तो सभ्यता और मानवता के मस्तक नत हो जाते हैं। भार-तीय चित्र-जगत् का 'हृदय'—सहगल—'दिग्दन्त' में खोया, परन्तु इन नीच निर्देशक-निर्माताओं ने उसके लिए क्या किया? कुछ नहीं!

अपने व्यवहारिक जीवन की ही भाँति श्री वी० एच० देसाई भारतीय चल-चित्रों में भी एक हँसमुख, साधारण, उदार हृदय, सज्जन एवं भावुक मानव दृष्टि-गोचर होते थे। इसके अतिरिक्त जिस संस्था से आपने अपना अभिनय वास्तविक रूप में प्रदर्शित करना प्रारम्भ किया, जब तक उस संस्था के चित्रों में कार्य करते रहे, परिश्रम में नाममात्र के लिये भी अन्तर न आया। दुख केवल इसी बात का है कि श्री हिमांशुराय के निधन के पश्चात् आपने भी उस अमर संस्था को त्यागकर बड़ा अनर्थ किया। सौभाग्यवश जिस संस्था का आपने (उसके पश्चात्) हाथ पकड़ा अन्त तक उसका साथ दिया।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि श्री वी० एच० देसाई जैसे हास्य-अभिनेता के काल-कवलित हो जाने के कारण भारतीय सिने-जगत् को जो असहनीय हानि हुई है, उसकी सरलता से पूर्ति करना सर्वथा असम्भव है।

अन्त में शोक के साथ उस मृतात्मा की परलोक में शान्ति के लिये हम कर-बद्ध खड़े हैं और आशा करते है कि प्रत्येक जीवन का अन्त यहीं होता है, जहाँ गति शून्य में विलीन होकर जीवन भर के किये गये पाप और पुण्य अलग अलग दृष्टि-गोचर होते हैं; परन्तु मृत्यु एक महान् तप है जिसके आवरण में सब कुछ मिट जाता है और उसके प्रतिद्वन्द्वियों के शीश भी नत रहते हैं। हम पाठकों की ओर से उसे अमर शांति भेजते हैं और पीछे छूट जाने-वाली आत्माओं को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। साथ ही सिने-कलाकारों को उद्बुद्धि की भी!

* * *

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
आरोरा
१८६६
सुरज छाप
नीलगिरि तैल
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

फोटो खींचने में सर्वश्रेष्ठ "गिफ्ट" रालफिल्म
बाक्स केमरा

सुन्दर, मजबूत, नया डिजाइन, बढ़िया फोकस लेन्स। इस केमरे से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का अत्यन्त मनोहर फोटो नं० १२० के फिल्म पर २॥" × ३॥" साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य १२॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) बढ़िया फोटो न खिंचे तो दाम वापस।
डिस्ट्रीब्यूटर्स—रतनबिहारीलाल एण्ड सन्स (डी० डी०) रंगमहल, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

जमीकन्द
स्वास्थ्य के लिये उपयोगिता

लेखक, कविराज ओमप्रकाश वैद्यवाचस्पति

जमीकन्द भारतवर्षोत्पन्न एक अलौकिक और अत्यन्त ही लाभप्रद कन्द है। इसे भारतवर्ष के सभी भागों में तरकारी, अचार, कांजी तथा औषधि-रूप में प्रयुक्त करते हैं। इसकी दो प्रकार की जातियाँ पाई जाती हैं। एक जंगली और दूसरी बोई हुई। जंगली जमीकन्द अधिक उग्र होता है।

सूरन का कन्द गहरा बादामी रंग लिए हुए चपटा अथवा अण्डाकार होता है। कन्द के ऊपर भूमि से बाहर ५-६ फुट ऊँचा इसका पौधा होता है और इसके पत्ते २५ से लगाकर ६० सेन्टीमीटर तक चौड़े होते हैं। इस पौधे में एक और विशेषता यह है कि इसमें फूल पहले लगते हैं और पत्ते बाद में।

तरकारी—इसकी तरकारी बनाने में बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है, प्रथम तो छीलते और काटते समय हाथों पर सरसों का तेल लगा लेना चाहिये; ताकि इसका रस हाथों की त्वचा को न लगने पावे। यदि थोड़ी सी असावधानी होने से इसका रस त्वचा से स्पर्श कर जाता है तो वहाँ भयंकर जलन होने लग जाती है। अब इसके छोटे छोटे टुकड़े करके नमक लगाकर धूप में रख दें। तकरीबन एक घण्टे के पश्चात् इसमें से विषैला पानी अलग हो जायेगा। अब इन टुकड़ों को शुद्ध जल से धोकर कपड़े से पोंछकर सुखा लें और सरसों के तेल में तल लें। तलते समय जब यह टुकड़े भली प्रकार पक जायें और लाली मायल हो जाये तो निकाल लें। यह ध्यान रखें कि यदि यह टुकड़े कच्चे रह गये तो गले में थोड़ा-बहुत जलन पैदा करेंगे। कुछ लोग इसे घी में तलना पसन्द करते हैं, किन्तु घी में तलना उतना लाभप्रद नहीं जितना कि सरसों के तेल में। अब इन तले हुए टुकड़ों को मसाले में छोड़कर रसदार सब्जी बना लें। सब्जी बनाते समय थोड़ा सा दही भी इसमें डाल लेना चाहिये। इससे तरकारी और भी स्वादिष्ट बन जाती है।

एक अन्य विधि भी है कि टुकड़ों को खौलते हुए जल में उबाल लिया जाये। जब भली प्रकार पक जाये तो इनकी सब्जी बना ली जाये।

अचार—जल में उबले हुए टुकड़ों को अचार के उपयुक्त मसाले और तेल डालकर चीनी के बर्तन में रख छोड़ें। १५-२० रोज में अचार तैयार हो जाता है जो कि एक वर्ष तक रह सकता है।

कांजी—इन्हीं जल में उबले हुए टुकड़ों को मिट्टी के घड़े में डालकर जल से भर दें और उपयुक्त नमक, मिर्च-मसाले तथा पिसी हुई राई डालकर घड़े को ३ दिन धूप में रख छोड़ें। अत्यन्त स्वादिष्ट और लाभप्रद कांजी तैयार हो जायेगी।

शेष पेज १४ पर देखिए

"उन्हें चाय पसन्द है.. पर अच्छी चाय का स्वाद वे नहीं जानते। और जान भी कैसे सकते हैं? वे बर्तन में ही दूध डाल देते हैं और

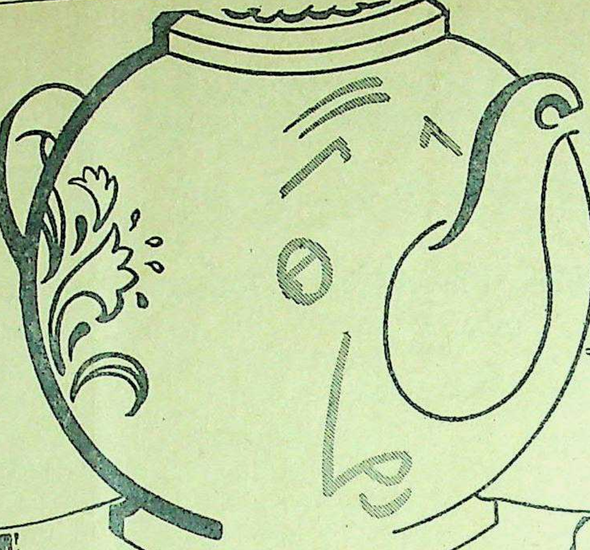

प्यालों में ढाले जाने के पहले ही चाय को खराब कर देते हैं। अच्छी चाय बनाने के लिये प्यालों में दूध डालना चाहिये, बर्तन में नहीं"

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम

१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये पूरी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोस्ट बक्स २१७२ कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

अच्छी बनी चाय

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

यह बढ़ती हुई महँगाई

आज देश के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या है महँगाई की जो बरसाती नदी की भाँति बढ़ती हुई देश की गरीब जनता को डसे जा रही है। भारत-सरकार काफी प्रयत्नशील है कि भाव गिरे और आर्थिक संकट दूर हो। किन्तु अभी तक उसकी कोई भी स्कीमें इस मामले में सफल नहीं हुईं। देश की अशांति का सबसे बड़ा कारण आर्थिक संकट ही है। भारत की गरीब, भूखी, नंगी जनता को सबसे पहले पेट भर खाने को और पहनने को चाहिये। युद्धकाल के समय में आशा की जाती थी कि इस लड़ाई के ही मारे महँगाई है और स्वराज्य मिलने पर राष्ट्रीय सरकारें स्थापित हो जाने पर अवश्य ही जीवन की आवश्यक वस्तुओं के दाम घट जाएँगे। किन्तु ऐसा हुआ नहीं। सोचा था क्या, हो गया ! चीजें दिन दिन महँगी होने लगीं और अब यह दशा है कि प्रत्येक वस्तु साधारणतः पहले से चौगुने मूल्य पर बिक रही है और सस्ती होने की सम्भावना भी नहीं दीख पड़ती।

मूल्य बढ़ रहे हैं—सही है ! पर इन बढ़ते हुए मूल्यों का कोई कारण भी तो होगा। अर्थशास्त्र की छात्रा होने के नाते चाहूँ तो उसकी बारीकियों में आपको उलझा सकती हूँ किन्तु हमें तो भारत की साधारण जनता का दृष्टिकोण चाहिये और उसी की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन ! इन बढ़ते हुये मूल्यों के सबसे मुख्य दो कारण हैं। पहला तो युद्धकालीन मुद्रास्फीति या मुद्रा का बढ़ जाना। युद्ध-काल में विदेशी सत्ता के युद्ध के लिए करोड़ों-अरबों का माल भारत से ले लिया गया और उसके बदले में कागज के नोट छाप-छापकर दे दिये गये। यदि इन नोटों की अपेक्षा कोई ठोस वस्तु, सोना, चाँदी या बड़ी बड़ी मशीनरियाँ मिली होतीं तो भारत को कई दृष्टियों से लाभ होता। लड़ाई के पहले लगभग २०० करोड़ के नोट 'सारकुलेशन' में थे और सन् १९४८ में लगभग १,२०० करोड़ हो गया। कागजी मुद्रा की असंख्य भरमार से सभी वस्तुओं का मूल्य पहले चौगुना, पँचगुना बढ़ जाना स्वाभाविक ही था। अभी जो अर्थशास्त्र का ३१ वाँ अधिवेशन हुआ उसमें प्रो० जे० सी० सिनहा ने बतलाया कि आजकल लगभग राष्ट्र की आय का आधा धन जनता के हाथ में है।

और दूसरा कारण है उत्पादन की कमी। मुद्रास्फीति की अपेक्षा भी यदि हमारे देश के उत्पादन में वृद्धि हुई होती तो चीजों के मूल्य आज इतने बढ़े हुये न होते ! युद्धकाल में जो उत्पादन था उससे अब ३० प्रतिशत कम हो गया है। मशीनरी की कमी, यतायात के साधनों की असुविधा, मजदूर-संघर्ष और आए दिन के स्ट्राइकों के कारण जो कुछ उत्पादन आसानी से हो सकता था, वह भी न हो सका। साम्प्रदायिक दंगों से भी उत्पादन को काफी हानि पहुँची। विशेषकर अनाज की उपज बहुत कम हो गई। इस कमी के कारण विदेशों से भीख माँगनी पड़ती है और प्रतिवर्ष ३०, ४० लाख टन अनाज लेने को लगभग १०० करोड़ रुपये विदेशों को देने पड़ते हैं। अनाज की कमी पूरी नहीं हो रही है और उद्योग-धंधों का उत्पादन भी घटने लगा है। आये दिन मजदूरों की हड़तालें होती हैं। मालगाड़ियों के डब्बे पूँजीपतियों के सामान ढोने से नहीं बचते। जो कुछ उत्पादन होता है वह भी ठीक समय पर बिक्री के लिए नहीं पहुँच पाता। तो जब माँग अधिक है और वस्तु कम है तो मूल्य बढ़ना बिलकुल स्वाभाविक है।

जीवन की आवश्यक चीजें पर्याप्त मात्रा में न मिलने के कारण ही चोर-बाजारी, घूसखोरी और मुनाफाखोरी जैसी बीमारियाँ भी बढ़ने लगती हैं। चोरबाजार के कारण धनी व्यापारियों के पेट और अधिक फूल जाते हैं और उनकी खरीदने की शक्ति बढ़ने के कारण कीमतें बढ़ जाने की और भी अधिक सम्भावना हो जाती है। इस प्रकार चोरबाजार मुद्रास्फीति का कारण भी है और परिणाम भी। भारत की वर्तमान दशा में चोरबाजारी एक अभिशाप है।

चीजों के मूल्य बढ़ने के कारण तो हमें ज्ञात हो गये अब इनके निवारण के भी कुछ उपाय सोचे जायँ। यह तो सभी को मानना पड़ेगा कि इस अभिशाप को दूर करना सहज नहीं। फिर भी कुछ तो अवश्य ही करना होगा। अतः पहले मुद्रा-प्रसार को कम करने के तरीकों पर ही ध्यान दें।

(१) बैंकों, पोस्टआफिसों और सरकारी हुण्डियों में धन जमा करने का आन्दोलन। किन्तु यह आन्दोलन सफल नहीं हो रहा है, क्योंकि मध्यमवर्ग के पास तो इतना बचता ही नहीं कि वह जमा करे या नेशनल सेविंग सार्टिफिकेट खरीदे और धनीवर्ग के पास सारा धन चोरबाजार की कमाई से आता है जिसे बैंकों में जमा करना जान-बूझकर खतरा मोल लेना है। अतः यह तरीका कुछ ठीक नहीं है।

(२) दूसरा है—बैंकों में जो रुपया जमा है वह एक निश्चित समय के ऊपर कुछ वर्षों तक वापस न दिया जाय।

(३) पिता की सम्पत्ति उसकी मृत्यु के बाद बच्चों के पास जाय तो उस पर भारी टेक्स वसूल किया जाय और इस धन से अध्यम वर्ग के वेतन में वृद्धि की जाय।

(४) केन्द्रिय तथा प्रान्तीय सरकारें अपना खर्च कम करने की पूरी कोशिश करें। अधिक वेतन पानेवाले अफसरों का वेतन कम कर दिया जाय।

(५) व्यापारियों पर कड़ी दृष्टि रक्खी जाय। चोरबाजारी या मुनाफाखोरी का कोई भी 'केस' पकड़ जाने पर ऐसी सख्त कार्यवाही की जाय कि दुबारा उस व्यक्ति की कभी हिम्मत न पड़े।

उपर्युक्त लिखे यह चारों सुझाव 'साउथ इंडियन जर्नल आफ इक्नामिक्स' ने सम्मुख रक्खे हैं; और हम भी इन सुझावों से सहमत हैं।

अब दूसरा प्रश्न है उत्पादन की वृद्धि का। सबसे पहले खेती का उत्पादन ही लीजिये। वैसे तो बेकार जमीन को समतल बनाना, गोवन की नस्ल सुधारना आदि ऐसे काम हैं जिनमें वर्षों का समय चाहिए। किन्तु फिलहाल कम्पोस्ट खाद बनाने का प्रचार बहुत उपयुक्त है, अच्छे बीज बाँटने और बेकार पड़ी जमीन में कुछ न कुछ उपजाने से बहुत लाभ होगा। और सबसे बड़ी बात है कि किसान और जनता या सरकार के बीच में मुनफाखोरों को घुसने का मौका न मिले। सिंचाई के लिए पर्याप्त साधन होना अनिवार्य है। नागपुर रेडियो से भाषण देते हुए आचार्य श्री श्री मन्नारायण अग्रवाल ने कहा है "उद्योग-धन्धों की उत्पत्ति बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि मजदूर और मिल-मालिकों के बीच के संघर्ष दूर हों। मजदूर चाहते हैं कि कम से कम काम करके ज्यादा से ज्यादा मजदूरी मिले। लेकिन उन्हें समझना चाहिए कि जब उत्पादन ही कम होगा; तो अधिक मजदूरी कहाँ से मिल सकेगी ? उद्योगपतियों को भी ख्याल रखना चाहिए कि अगर मजदूर असन्तुष्ट रहेंगे तो उनका हेतु सफल न हो सकेगा। सरकार के नये उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए उद्योगपतियों को कुछ विशेष रियायतें देना भी स्वीकार किया है। फिर भी उद्योगपतियों ने असन्तोष प्रकट किया है। उन्हें यह ध्यान में रखना चाहिए कि अगर उनकी नीति इसी तरह की रही तो हिन्दुस्तान में साम्यवाद रोके न रुकेगा और सारा देशवर्ग कलह के भयंकर तूफान में तहस-नहस हो जायगा।"

अग्रवाल जी का कहना सोलह आने सही है। उत्पादन के संकट काल में गृह-उद्योग-धन्धों को जितना हो सके उतना प्रोत्साहन मिलना चाहिए। क्योंकि इन उद्योगों में मालिक-मजदूर के झगड़ों की बात ही नहीं उठती। गृह-उद्योगों के आरम्भ करने में अधिक धन की आवश्यकता नहीं होती और सबसे बड़ी बात यह कि यह जल्द ही कार्यान्वित हो सकते हैं। न मशीनरी मिलने की कठिनाई न फैक्टरी की बिल्डिंग बनने की राह गृह-उद्योगों को सरकारी ढंग से संगठित किया जाय तो अवश्य ही उत्पादन भी बढ़ेगा और जनता किसी हद तक आर्थिक संकटों, बेबसी और बेकारी से छुट्टी पा जायगी।

अग्रवाल जी के भाषण की एक बात और कह दूँ—"बढ़ते हुए मूल्यों का मुख्य कारण हमारा घटता हुआ चरित्र है। अगर हम चरित्र को बढ़ाएँ और पुरुषार्थ से उत्पादन बढ़ाते जायँ तो बढ़े हुए मूल्य तेजी से घटते जायँगे।"

इस कथन में कितना कठोर सत्य भरा है यह प्रत्येक समझदार व्यक्ति समझ सकता है। देश में नैतिक पतन किस सीमा तक पहुँच गया है यह हर आँखवाला देख सकता है।

हैदराबाद (दक्षिण) —कुमारी ज्ञान अस्थाना

* * *

वनस्पति घी

श्री जयरामदास दौलतराम जी खाद्य मन्त्री भारत-सरकार ने धारा-सभा में प्रश्न का उत्तर देते हुये कहा कि इस वर्ष के अन्त तक वनस्पति घी के २२ नये कारखाने चालू हो जायँगे। यह भी बताया कि सरकार वनस्पति घी के पौष्टिक तत्वों तथा खराबियों की जाँच करवा रही है। खाद्य-मन्त्री महोदय का उत्तर असंगत तथा अनुचित है। पूरी जाँच करवाकर ही नये कारखाने खोलने की इजाजत देनी चाहिये थी। यदि भोजन के पदार्थ में जहर या स्वास्थ्य के लिये हानिकारक चीज का सन्देह भी हो तो साधारण बुद्धि का मनुष्य उसे खाता नहीं, या जाँच करवा कर खाता है। जाँच का परिणाम निकलने से पूर्व कारखाने खोलने की आज्ञा देना केवल जाँच के नाम पर जाता को बहकाना है। सरकार को वनस्पति घी की पौष्टिकता तथा खराबियों की बाबत सन्देह ही नहीं, बल्कि निश्चय है कि वनस्पति घी में खाद्योज या विटामिन नहीं तथा सेहत के लिये हानिकारक है। यह निश्चय इज्जतनगर बरेली की प्रयोगशाला के परिणाम के

नया चलान, नई डिजाइन

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर कम्पनियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई हैं। देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीभर मशीन। प्रत्येक घड़ी को गारंटी ३ साल।

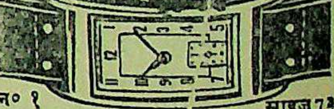

न० १ साइज 7½
५ जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड—४०)
७ ,, ,, केस—३५) रोल्ड गोल्ड—४५)
१५ ,, ,, केस—५२) रोल्ड गोल्ड ६२)

न० २ साइज 6½
९ जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड—४२)
,, ,, —३८) रोल्ड गोल्ड—४७)
१५ ,, ,, ...५५ रोल्ड गोल्ड—६५)

न० ३ साइज 10½
५ जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३०)
१५ ,, ,, ,, —४८) रोल्ड गोल्ड—६०)
१५ वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड—८५)

न० ४ साइज 11½
क्रोम केस—१६) सेकण्ड काँटा की—१८)
सेण्टर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर—२२)
१५ जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५)
एलार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर—२०)
बेस्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से १२॥) प्रति सैकड़ा कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ११४२४
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधार पर चित्र द्वारा १९४७ की सरकारी पशु तथा खाद्य प्रदर्शनी में दिखलाया गया है जिससे रोग कीवृद्धि ही हुई है।

इससे पूर्व भी कितने ही प्रसिद्ध तथा जिम्मेदार सरकारी और गैर-सरकारी विशेषज्ञों ने वनस्पति घी को अपौष्टिक तथा सेहत खराब करनेवाली चीज बतलाया है। केवल सेहत की खराबी का सवाल ही नहीं, सरकार द्वारा पशु-रक्षा तथा उन्नति कमेटी, व सब सरकारी पशु-विशेषज्ञों ने बनस्पति घी के प्रचार को गोवंश तथा किसानों के लिये बारबार हानिकारक कहा है।

देश की जनता के देशरत्न बाबू राजेन्द्र-प्रसाद जी तथा स्वयं श्री जय रामदास दौलतराम जी की प्रधानता में गो-सम्मेलनों में बनस्पति घी के विरुद्ध प्रस्ताव पास किये हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने वनस्पति घी को जाली सिक्के से उपमा देकर उसका विरोध किया है। राष्ट्रपति डा० पट्टाभि सीतारमैया ने जयपुर के भाषण में वनस्पति घी के नुकसान बतलाते हुये उसको न जमाने पर जोर दिया। सरकार को चाहिये था कि नये कारखानों को इजाजत न देती और पुराने कारखानों में हाइड्रोजनेशन या घी की तरह जमाना बन्द कर देती। वन-स्पति घी की जाँच पूरी तरह हो चुकी है यह एक खराब और हानिकारक चीज है फिर जाँच करवाने का कोई मतलब नहीं। पिछले साल बजाजवाड़ी वर्धा में देश के बड़े बड़े नेताओं और कार्यकर्ताओं की वनस्पति घी-सम्बन्धी बातचीत के समय कितने आदमियों ने कहा कि सरकार अब जो यह वनस्पति घी की जाँच करवा रही है, वह ठीक नहीं होगी। कारखानेवालों का दबाव पड़ सकेगा। चूहों पर जाँच हो चुकी है। छः महीनों में चूहों की तीन नसलों पर अनुभव हुआ। मनुष्य पर तीन नसल की पीढ़ी का अनुभव करने के लिये साठ वर्ष चाहिये, जो असम्भव है। सरकार का कर्तव्य है कि वह पुनः जाँच का नाम लेकर लोगों को गलतफहमी में न डाले। यह जाँच व्यर्थ है, राष्ट्रपिता तथा राष्ट्रपति के वचनों, पशु विशेषज्ञों की सम्मति, इज्जत नगर के परिणाम और जनता की भावना को दृष्टि में रखते हुये वनस्पति घी को जमाना रंग-रूप तथा सुगन्ध देना बिलकुल बन्द कर दे। तेल की तरह बने तथा बिके यदि सर-कार ने बनस्पति घी के कारखानेवालों, विशेषज्ञों तथा अधिकारियों के जाल में फँसकर हाइड्रोजनेशन बन्द न किया तो पशु-धन और लोगों की सेहत बरबाद हो जावेगी। कुछ बड़े कहलानेवाले लोगों के हित के लिये देश भर में लोगों का अहित होगा।

नई दिल्ली —हरदेवसहाय
मन्त्री अ० भा० गो-सेवक-संघ

* * *

जमीकन्द

(पेज १२ का शेष)

गुण—जमीकन्द सभी कन्द शाकों में भावप्रकाश के मतानुसार उत्तम गिना गया है। यह अत्यन्त ही अग्निवर्धक है। जिन व्यक्तियों को भली प्रकार भूख न लगती हो, थोड़ा सा भोजन करने के पश्चात् ही जिनको खाने में अरुचि सी प्रतीत होने लग जाती हो, उन्हें जमीकन्द की तरकारी कुछ समय तक लगातार खानी चाहिए, इससे उनकी भूख में भी वृद्धि होगी और खाने में रुचि भी बढ़ जायेगी। जमीकन्द का प्रभाव यकृत (जिगर) पर सीधा होता है; यकृत की क्रिया सुधर जाती है, शौच खुलकर आने लग जाता है। इसी प्रभाव से जमीकन्द बवासीर में लाभ करता है। बवासीर किसी भी प्रकार की हो। (खूनी अथवा बादी) इससे लाभ ही होता है। खूनी बवासीर में, यह उन रक्तवाहिनियों के मुख को संकोच कर देता है, जिनसे रक्त-स्राव होता है, क्योंकि यह स्वयं कषाय रस (कसैला) प्रधान है। कसैले रस का प्रधान गुण है संकोच करना। निघण्टुकारों ने इसका नाम ही "अर्शोदन" रखा है, जो कि वस्तुतः उपयुक्त है।

जिन व्यक्तियों की तिल्ली बढ़ गई हो, अथवा जिनके पेट में बायगोला उत्पन्न होता हो उन्हें भी इसके सेवन करने से लाभ होता है। आजकल उन्हें इसकी कांजी का प्रयोग करना चाहिए। यह मलमूत्र को खूब खुलकर लाती है; जिससे उदर में उत्पन्न हो रहे अनेक प्रकार के विषों का निष्क्रमण होकर बायगोला उठना बन्द हो जाता है और बढ़ी हुई तिल्ली भी अपने स्थान पर आ जाती है।

जल के समीपवाले प्रदेशों में एक विशेष रोग श्लीपद (फीलपाँव अथवा हाथीपाँव) नाम का पाया जाता है; जिसमें हाथ-पैर अथवा अण्डकोष सूज-कर बहुत अधिक मोटे हो जाते हैं। इस रोग में भी अन्य औषधियों के साथ साथ यदि पथ्यरूप में जमीकन्द का प्रयोग कराया जाये, तो जल्दी लाभ हो जात है।

संधिवात रोग में जब शरीर की विविध संधियाँ सूज जाती हैं और उनमें भयङ्कर वेदना होती है; ऐसी अवस्था में इसके कन्द और बीजों को पीसकर रुग्ण स्थान पर लेप करना चाहिये। इससे उस स्थान पर रक्त-संचार अधिक हो जाता है और चुनचुनाहट सी प्रतीत होती है। कुछ समय के प्रयोग से सूजन भी नष्ट हो जाती है और दर्द भी।

दोष—जमीकन्द में एक दोष भी है कि जिन व्यक्तियों को शरीर पर खुजली अथवा दाद हो रही हो; उन्हें इसका सेवन न करना चाहिए, क्योंकि इसके सेवन से खुजली, दाद तथा कोढ़ आदि रक्त-विकार प्रधान रोग बढ़ जाते हैं।

आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्रों में जमी-कन्द के बहुत से उपयोग बवासीर की शान्ति के लिए आते हैं। औषधियों में प्रयोग करने के लिए जमीकन्द के पतले-पतले टुकड़े करके छाया में सुखाकर रख छोड़ते हैं और पुनः उनको कूट-पीस और कपड़-छान करने के पश्चात् प्रयोग में लाते हैं। स्वल्पसूरन मोदक, बृहत् सूरन मोदक तथा सूरणपिण्डी आदि मशहूर योग हैं; जो बावासीर की शान्ति के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं।

विविध उपयोग—सूरणकन्द पर दो अंगुल मोटी कपड़मिट्टी करके धूप में सुखा लें। सूखने पर जलते हुए उपलों में रख दें; जब मिट्टी बिलकुल लाल हो जाय तो बाहर निकाल लें। शीतल होने पर ऊपर से मिट्टी हटा दें और छोटे छोटे टुकड़े करके नमक तथा तिल-तैल लगाकर बावासीरवाले रोगी को खिलावें। एक बार में एक छटाक से आध पाव तक खिलाया जा सकता है।

छाया में सुखाये हुए जमीकन्द के टुकड़ों को बारीक पीस, कपड़छान कर ३-३ माशा की मात्रा में दिन में तीन बार थोड़े गर्म जल से दें। बवासीर में लाभ होने के साथ-साथ भूख बढ़ती है, शरीर में नए रक्त का संचार होकर कान्ति बढ़ती है।

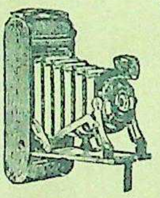

फोटो खींचने का
अपूर्व साधन
फोटो कैमरा

सुन्दर मजबूत और विश्वसनीय इस कैमरे से आप चाहे जिस दिलपसंद चीज का अत्यन्त ही मनोहर फोटो नं० १२० के कट फिल्म पर २॥ × ३॥ इंच साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य ७॥≋) फोलडिग कैमरा नं० १००० मूल्य १५) पोस्टेज पैकिंग १॥) पसन्द न होने पर कीमतें शीघ्र वापस होंगी।

इम्पीरियल कैमरा स्टोर
पी० बी० ६१ (D. D. A.) अमृतसर

डोंगरे बालामृत से
कमजोर बच्चे
ताकतवर बनते हैं।

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो –) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

T. B. टी. बी. "तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर, खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

अनेक प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि— आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (Jabri Jagadhri) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैङ्कर्स (D) 'जगाधरी' (पूर्व पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सचित्र 'देशदूत' की साप्ताहिक चित्रावली

शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू के जीवन की विविध चित्रावली

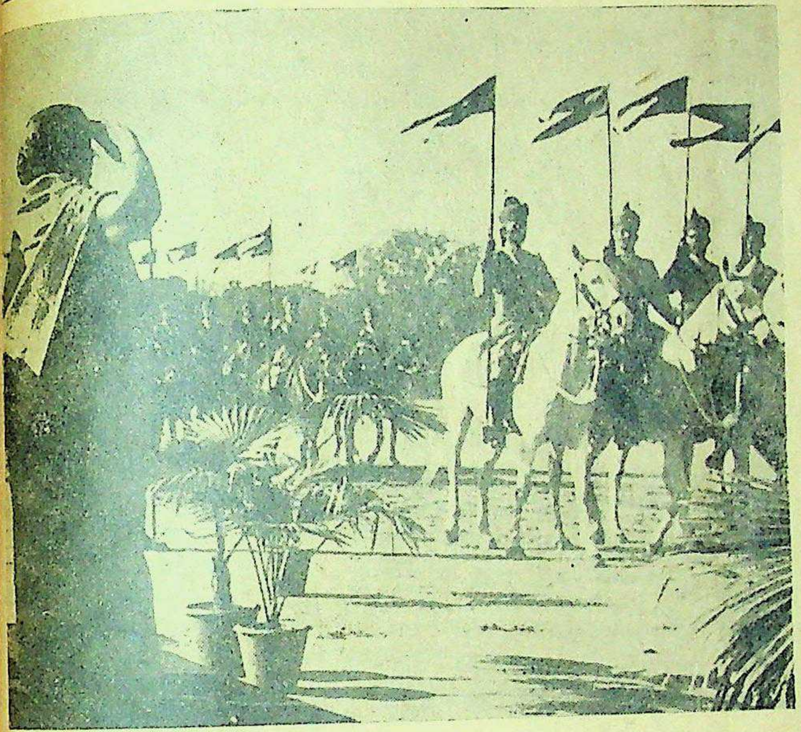

युक्तप्रान्त की गवर्नर के पद से लखनऊ में पुलिस परेड पर सलामी ले रही हैं।

१९४७—दिल्ली में।

१९२४—डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में।

१९०६—लन्दन में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिन्दी प्रांतों में राष्ट्रभाषा हिन्दी

(पेज ६ का शेष)

काम है हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को राष्ट्र-लिपि घोषित करवाना। भाषा के प्रश्न को सुलझाने में हमें जोश से काम नहीं लेना है, किन्तु मस्तिष्क से काम लेना है। राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हो जाने से प्रान्तीय भाषाओं पर कोई कुठाराघात नहीं होगा—वे फूलती-फलती रहेंगी। यहाँ जो प्रचारक पधारे हैं उनके सामने मुख्य काम है कि वे अपने अपने क्षेत्र के विधान-परिषद् के सदस्यों को समझायें कि वे राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्ष में अपना वोट दें।

यह सम्मेलन मैं सफल मानता हूँ और प्रतिनिधि जो यहाँ आये हैं वे अपने साथ नई भावना, नई चेतना व नई स्फूर्ति लेकर जायँ और राष्ट्रभाषा के कार्य में जुट जायँ। हमारे मार्ग में कोई भी रोड़ा आयेगा तो हम उसे हटा देंगे।

* * *

राष्ट्र-भाषासम्मेलन में कई प्रस्ताव पास हुए। सम्मेलन ने एक महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया जो इस प्रकार है—

"अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचारकों के इस सम्मेलन को इस बात की खुशी है कि जहाँ तक देश की राष्ट्रलिपि का सवाल है, उस संबंध में अब कोई विशेष मतभेद नहीं रहा है और देवनागरी लिपि ही अब राष्ट्रलिपि मानी जाने लगी है। लिपि के समान ही राष्ट्रभाषा के स्वरूप के संबंध में कोई अधिक मतभेद नहीं है। भाषा के स्वरूप के संबंध में यह सभी मानने लगे हैं कि जनता के साधारण कामों के लिए सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाय और शास्त्रीय तथा वैज्ञानिक परिभाषाओं के लिए संस्कृत का आश्रय लिया जाय। यह इसलिए भी कि इस तरह हमारी राष्ट्रभाषा प्रान्तीय भाषाओं के अधिक निकट रहेगी। देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद और पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी लिपि और भाषा के स्वरूप के बारे में इधर अपने जो विचार प्रकट किए हैं वे भी ऊपर कही गई बातों की पुष्टि करते हैं। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद अब राष्ट्रभाषा के प्रश्न को देर तक अनिश्चित हालत में रखे रहना देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षणिक एकता एवं उत्थान के लिए किए जानेवाले आयोजनों में बाधक सिद्ध होगा। और जब तक राष्ट्रभाषा का निर्णय नहीं हो जाता, तब तक इस देश में अँगरेजी का प्रभुत्व बना ही रहेगा—इसलिए इस सम्मेलन की राय है कि राष्ट्रभाषा के सवाल का जल्दी से जल्दी निपटारा किया जाय। इस सम्मेलन का मत है कि नागरी लिपि में लिखी जानेवाली हिन्दी ही देश की राष्ट्रभाषा होने के सर्वथा उपयुक्त है; परन्तु चूँकि कतिपय विद्वान् और अहिन्दी भाषाभाषी प्रान्तों के कुछ निवासी हिन्दुस्तानी को हिन्दी का ही पर्यायवाची मानते हैं, अतः यह सम्मेलन नाम के झगड़े को निपटाने के लिए यह सुझाव पेश करता है कि राष्ट्रभाषा का क्या नाम हो, इसका निर्णय कुछ ऐसे विद्वानों के ऊपर छोड़ दिया जाय जो कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को भी मान्य हों।

इस सम्मेलन की यह स्पष्ट राय है कि भारतीय विधान-सभा के कार्य के समाप्त होने के पूर्व विधान-परिषद् द्वारा राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि की घोषणा हो ही जानी चाहिए।"

* * *

इस सम्मेलन में यह भी एक प्रस्ताव पास हुआ जिसमें कहा गया है कि राष्ट्रभाषा प्रचार के कार्य, विस्तार और आज की समस्याओं को देखते हुए उसका विधान तैयार किया जाय। एक समिति नियुक्त की गई जो विधान के मसविदे को सम्मेलन के आगामी अधिवेशन में पेश करेगी। समिति में निम्न व्यक्ति रहेंगे—

६ प्रांतीय संचालक, अध्यक्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, मंत्री राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति, राहुल जी, मौलिचन्द्र शर्मा, अपसिंधीकर जी तथा श्री वियोगी हरि।

* * *

प्रथम रात्रि को श्री करुण जी की अध्यक्षता में कवि-सम्मेलन हुआ था। कवि-सम्मेलन निष्प्राण-सा लगा—सिर्फ दो-चार कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं का मन लुभाया। पता नहीं सम्मेलनों में कवि-सम्मेलन भरवाने की परिपाटी का कब खात्मा होगा? और कविगण अपनी पुरानी रचनाएँ ही सुनाते हैं। कवि-सम्मेलन की विफलता इसी से जानी जा सकती है कि बाहर से आनेवाले तीन-चौथाई प्रतिनिधि कवि-सम्मेलन का आनन्द लेने के बजाय सोने चले गए थे।

दूसरे दिन रात्रि को सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए—उसमें नृत्य, बाँसुरी-वादन, गीत आदि अच्छे कार्यक्रम थे। सुधा दातार व कुमारी भारती शर्मा के गीत खूब पसन्द किए गए।

* * *

यदि हिन्दी-हिन्दुस्तानी के झगड़े का निपटारा पंच-द्वारा हो जायगा और दोनों दल पंच की बात मान लेंगे, तो भाषा के क्षेत्र में एक बड़ा कार्य हो जायगा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति तथा हिन्दुस्तानी प्रचार ये दोनों संस्थाएं सभी बहनों की तरह हिन्दी प्रचार का कार्य करेंगी। कुछ लोगों में यह चर्चा रही कि अच्छा होता हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के प्रधान डा० राजेन्द्रप्रसाद जी तथा उपसभापति काका कालेलकर भी सम्मेलन में उपस्थित रहते। देखना है कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन इस सम्बन्ध में कौन-सी नीति ग्रहण करता है। यद्यपि सेठ गोविन्ददास जी ने कहा कि मेरी इस सम्बन्ध में अभी कोई स्पष्ट राय नहीं है—जो सम्मेलन करेगा, उसे मैं मानूँगा।

राहुल जी तो इस मत के थे कि जो शब्द अन्य भाषाओं के मिल गए हैं, उन्हें नहीं छोड़ना चाहिए। संस्कृति के कठिन शब्दों को भी वे बोल-चाल की भाषा में लाना पसन्द नहीं करते। जिन शब्दों का प्रचार नहीं है उन्हें भी हमें ग्रहण करना नहीं है।

* * *

इसमें कोई शक नहीं कि यदि हिन्दी व हिन्दुस्तानीवालों में भाषा व लिपि के सम्बन्ध में समझौता हो जाता है—तो राष्ट्रभाषा प्रचारक सम्मेलन को ऐतिहासिक महत्त्व प्राप्त हो जायगा और सब लोग सम्मिलित शक्ति के साथ—"एक हृदय हो भारत जनता" के लिए कार्य प्रारम्भ कर देंगे।

अगले सम्मेलन के लिए श्री जेठालाल भाई ने गुजरात का निमंत्रण दिया है—जो कि स्वीकार कर लिया गया है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का भविष्य आशाप्रद, उज्ज्वल व प्रेरणापूर्ण है। जो अहिन्दी-भाषी हिन्दी को अपनी मातृभाषा से हीन बनाकर उसकी उपेक्षा करते हैं, उनके साथ विवाद करना छोड़कर हमें उन्हें हिन्दी-साहित्य को समुन्नत करने के लिए निमंत्रित करना चाहिए। राष्ट्रभाषा के नाते हिन्दी अब सभी भारतीयों की भाषा है और उसकी हीनता केवल हिन्दी भाषियों की हीनता न होकर राष्ट्रीय हीनता होगी।

[भारतेंदु हिन्दी सिंडिकेट, वर्धा]

* * *

स्वर्गीया श्रीमती सरोजिनी देवी

(पेज ७ का शेष)

प्रान्तीय सम्मेलन ने सरोजिनी देवी को अपनी अध्यक्षा चुना।

भारतीय नारियों के उत्थान में सबसे अधिक भाग लेनेवाली सरोजिनी देवी ही नारी-जागरण की प्रभात-कालीन महिला हैं। उन्होंने मिस्टर मांटेग्यू के ऐतिहासिक भारतीय दौरे के समय अखिल भारतीय नारी डेपूटेशन का नेतृत्व किया, जिसमें भारतीय नारियों को बालिग मताधिकार की माँग की। वह सन् १९१९ में दुबारा इंगलैंड गईं। इस बार वे आल इंडिया होमरूल लीग डेपूटेशन की एक सदस्या होकर गईं। वहाँ जाकर मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार पर पार्लियामेंटरी ज्वाइंट सलेक्ट कमेटी के सम्मुख भारतीय अधिकारों के प्रति भाषण दिया। कमेटी के अध्यक्ष ने आपके वक्तव्य की बड़ी प्रशंसा की। दूसरे वर्ष सन् १९२० ईसवी में श्रीमती सरोजिनी देवी पुनः इंगलैण्ड गईं, इस बार पंजाब के अन्दर अँगरेजों की निर्दयता से उनका हृदय भर गया था। इंगलैण्ड में उन्होंने अँगरेजों के काले कारनामों का सच्चा चित्र उपस्थित किया। मिस्टर मांटेग्यू ने जो ललकार दी थी उन सबको सरोजिनी देवी ने अपने ओजस्वी भाषणों से ऐसा आहत कर दिया कि इंगलैण्ड की ओर से कोई नया प्रश्न न उपस्थित हो सका।

सन् १९२४ में सरोजिनी देवी दक्षिणी अफ्रीकन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता करने दक्षिणी अफ्रीका गईं। सन् १९२५ में देश ने आपको कानपुर कांग्रेस अधिवेशन के लिए राष्ट्रपति का पद देकर भारतीय नारी योग्यता का समादर किया। सरोजिनी देवी ने अपना भाषण अन्य अध्यक्षों की तरह नहीं तैयार किया वरन्, अधिवेशन के मंच पर ही वे अपना भाषण समयानुकूल तैयार कर बोली थीं। इस भाषण की देश और विद्वत्-समाज ने भूरि भूरि प्रशंसा की है। सरोजिनी देवी ने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाले सभी आन्दोलनों में प्रत्यक्ष भाग लिया। सन् १९२० ईसवी तक वे अपने विचारों से चलती थीं, परन्तु १९२१ में महात्मा जी के राजनीति में प्रवेश करने से वह महात्मा जी की शिष्या बन गईं तब से आज तक उन्होंने अपना जीवन महात्मा जी के आदेशानुसार देश-सेवा में लगाया।

सन् १९२८ में वह अमरीका मिस मेयो के उस झूठे प्रचार को रोकने के लिए अमरीका गईं जिसमें भारतीय नारियों का बड़ा ही नीचतम नग्न वर्णन मिस मेयो ने अपनी पुस्तक में किया था। वहाँ से वापस आने पर सरोजिनी देवी ने नमक-सत्याग्रह में भाग लिया उसमें उन्हें जेल भेजा गया। द्वितीय गोलमेज-परिषद् में वे भाग लेने के लिए सन् १९३१ में लन्दन गईं और सन् १९४२ के स्वतंत्रता-संग्राम में खुलकर अँगरेजों से लड़ीं। सन् १९४५ तक वे ब्रिटिश कारागार में बन्द रहीं। अस्वस्थता के कारण वे जेल से छोड़ी गईं।

सरोजिनी देवी कांग्रेस कार्य-समिति की सन् १९२५ से आज तक सदस्या रही हैं। सन् १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त हो जाने पर देश ने उनके सिर पर वृद्धावस्था में युक्तप्रांत जैसे बड़े प्रांत के शासन का भार सौंपा था। साथ ही वे मृत्युपर्यंत युक्त-प्रांत के गवर्नर का पद सुशोभित करती रही हैं। अपने गवर्नरी के कार्यकाल में सरोजिनी देवी ने हिन्दू-मुस्लिम दंगों में जिस बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है वह स्मरणीय रहेगा।

सरोजिनी देवी की दो पुत्रियाँ कुमारी पद्मजा नायडू और कुमारी लीलामणि नायडू हैं तथा पुत्र डाक्टर जयसूर्या। यद्यपि उनकी ये सन्तानें उनका स्मरण दिलाती रहेंगी, परन्तु उनके वास्तविक कार्य, साहित्य और देश-सेवायें सरोजिनी देवी को संसार के बीच सर्वदा अमर रखेंगे।

मुफ़ असली रिस्टवाच

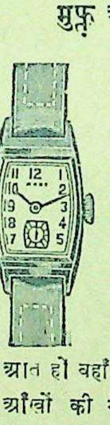

हमारे प्रसिद्ध काला [illegible] नं० ५५५ डी लक्स के [illegible] करने से बाल हमेशा के [illegible] काले हो जाते हैं और [illegible] जीवन भर काले पैदा [illegible] हैं। यह तेल गिरते हुए [illegible] को रोकता है और उन्हें लम्बे व घुँघरवाले और चम[illegible] दार बनाता है, जहाँ बाल [illegible] आते हों वहाँ फिर से पैदा होने लगते हैं [illegible] आँखों की रोशनी को तेज करता है [illegible] सिर को ठंडक पहुँचाता है। अतीव [illegible] न्धित है। कीमत एक शीशी २॥), [illegible] शीशी पूरा कोर्स ६॥)। इस तेल को [illegible] करने के लिए एक शीशी के साथ [illegible] फैंसी रिस्टवाच जिसकी सुन्दरता व [illegible] की गारन्टी दस साल है और एक [illegible] सोना (न्यू गोल्ड लण्डन) बिलकुल [illegible] भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल पसन्द न होने [illegible] कीमत शीघ्र वापस कर दी जाती है। [illegible] शीशी दवाई के खरीदार को डाक [illegible] बिलकुल माफ और चार अँगूठी ([illegible] न्यू गोल्ड) और चार घड़ियाँ बिलकुल [illegible] इनाम दी जाती हैं। जल्दी करें [illegible] यह समय बार बार हाथ नहीं आ[illegible] आर्डर देते समय अपना नाम और [illegible] साफ लिखें।

हिमालय औषधालय (D. A.)
हलका नं० २२ अमृतसर

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

अजमेर-मेरवाड़ा के जिला मजिस्ट्रेट ने एक विज्ञप्ति द्वारा दो मास के लिये बाहर से इस प्रांत में बसने के लिये आनेवालों पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसका कारण अजमेर-मेरवाड़ा प्रांत में केन्द्रीय सरकार द्वारा निश्चित ५० हजार के स्थान पर ८५ हजार सिंधी शरणार्थियों का आगमन है। इतनी अधिक संख्या को प्रांत में व्यवसाय दिलाना सरकार के लिये एक कठिन कार्य है इसलिये यह आज्ञा जारी की गई है।

लोको ग्राउंड पर हिन्दुस्तान स्काउट एसोसियेशन की ओर से एक विशाल गर्ल्स गाइड रैली रावसाहब मसूदा के सभापतित्व में हुई। इस रैली में सोफिया कालेज, सरस्वती बालिका विद्यालय, मिशन गर्ल्स हाईस्कूल और गवर्नमेंट नारमल ट्रेनिंग स्कूल की बालिकाओं ने भाग लिया। डिप्टी कमिश्नर श्री दुर्गाप्रसाद जी की धर्मपत्नी ने गर्ल्स गाइडों द्वारा तैयार की गई वस्तुओं की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

—संवाददाता

* * *

हरिद्वार के महन्त शान्तानन्दनाथ महाराज का २२ फरवरी मंगलवार को कैलाशवास हो गया था। उनका भंडारा ७ मार्च सोमवार को समारोहपूर्वक हुआ, ११ बजे ब्रह्मीभूत महन्त जी के सुयोग्य उत्तराधिकारी परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ वेदान्तवागीश राजगुरु श्री स्वामी मोहनानन्द जी महामण्डलेश्वर महाराज को श्री श्रवणनाथ मठ हरिद्वार की गद्दीनशीनी हुई।

इस अवसर पर आप पधारकर अनुगृहीत करें।

—संवाददाता

* * *

कोटा की भारतेन्दु समिति ने अपने वार्षिकोत्सव के अवसर पर ता० ११, १२, १३ मार्च को अ० भा० हिन्दी स्नातक सम्मेलन करने का निश्चय किया है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सर्वप्रथम साहित्यरत्न श्री कृष्णदत्त जी पालीवाल ने अध्यक्ष-पद स्वीकार कर लिया है। भारत में फैले हुए सम्मेलन के विशारद तथा साहित्यरत्न इस सूचना को ही निमंत्रण मानकर पधारने का कष्ट करें। प्रतिनिधि शुल्क २) है। प्रस्ताव तथा सुझाव ५ मार्च तक 'संयोजक के पास पहुँच जाना चाहिए।

—संवाददाता

* * *

उज्जैन मध्यभारत एवं राजस्थान के वनवासी भील एवं किसानों के एकमात्र नेता पं० बालेश्वरदयाल जब राजस्थान सरकार के जंगल-विभाग के मंत्री से मिलकर जंगलात की समस्याओं का शांतिपूर्वक ढंग से हल निकालने के हेतु उदयपुर गए थे तब वहीं पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर नजरबन्द कर लिया गया है।

स्मरण रहे पिछले आठ महीनों से बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ और कुशलगढ़ में होनेवाले एकतंत्रीय अत्याचारों के विरुद्ध आपने राजस्थान की सरकार से लिखा-पढ़ी की थी और प्रार्थना की थी कि वह वातावरण के क्षुब्ध होने के पूर्व इन अत्याचारों का अन्त करे।

राजस्थान सरकार के इस एकतंत्रीय दमन से राजस्थान और मध्यभारत की जनता में असन्तोष उमड़ पड़ा है। जनता सभाएँ करके और तार-पत्रादि भेजकर अपना विरोध एवं असन्तोष व्यक्त कर रही है और एकस्वर से माँग कर रही है कि उन्हें रिहा किया जाये।

—संवाददाता

* * *

जयपुर राजपूताने की जनता से भावी संयुक्त राजस्थान संघ की सरकार को हर संभव सहयोग देने को और जिन पर सरकार का संचालन करने का भार पड़ेगा उन्हें पूरी सहायता देने को, जयपुर के मुख्य सचिव और संयुक्त राजस्थान के नेता, पंडित हीरालाल शास्त्री ने कल पिलानी में बिड़ला कालेज के वार्षिकोत्सव पर भाषण दिया। आपने प्रकट किया कि ३० मार्च को राजस्थान संघ का उद्घाटन होगा।

श्री शास्त्री जी ने कहा अब हमारे विभिन्न रियासतों का एकीकरण होकर उनका एक राज बनने जा रहा है। मैं आपसे बताना चाहता हूँ कि इसका कामकाज चलाना बड़ा मुश्किल होगा, इतनी मुश्किल किसी और प्रांत का काम चलाने में नहीं होती, परन्तु इस काम में यदि प्रान्त के प्रत्येक नागरिक का सहयोग भावी सरकार को मिला तो इसमें कोई संदेह नहीं कि हम काम को कर ले जायंगे, सरकार प्रान्त के हर व्यक्ति के सहयोग और हर एक की सहायता की अधिकारिणी होगी। हमारे यहाँ एक रक्तहीन क्रान्ति हुई है, इसके बाद प्रांत का काम चलाना किसी एक का या जिनको मिनिस्टर बनने का अवसर मिलेगा केवल उनका ही नहीं है, इसके लिए हर व्यक्ति को अपने हिस्से का काम पूरा करना पड़ेगा।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर के राजस्थान विद्यापीठ जनपद लोकमंच से प्रोफेसर शान्तिप्रसाद वर्मा ने एशिया की मौजूदा गति-विधि पर भाषण देते हुए कहा कि आजकल एशिया में बड़ी राजनैतिक उथल-पुथल मची हुई है। पश्चिम में फिलस्तीन में अरब और यहूदियों के झगड़े चल रहे हैं। इससे हमारे देश में घबराहट पैदा होना स्वाभाविक है। हमारे यहाँ भी कम्यूनिज्म फैलने और संस्कृति नष्ट होने का खतरा बताया जाता है। जहाँ तक कम्यूनिज्म के फैलने के पीछे रूस का हाथ बताया जाता है—यह बिलकुल गलत धारणा है। गरीबी और भुखमरी ही इसका कारण है। इसके आगे प्रोफेसर वर्मा ने बताया कि चीन और हिन्देशिया के साम्यवाद और रूस के साम्यवाद में बड़ा फर्क है। चीन और हिन्देशिया का साम्यवाद अपनी ही संस्कृति के अनुसार ढाला हुआ है—परन्तु भारत में कम्यूनिस्ट पार्टी ने भारत के अनुकूल अपने को नहीं ढाला है।

अब हमारे देश के सामने सवाल यह उठता है कि क्या चीन जैसी ही हालत भारत की होगी? इससे भारत को खतरा है—परन्तु हमारी सरकार जैसे व्यक्तियों के हाथ में है—उनसे आशा है कि वे देश में इस प्रकार की कोई अशान्ति नहीं फैलने देंगे और स्थिति पर काबू पा लेंगे।

यह तो सही है कि पूँजीवाद के खात्मे के बिना एशिया बच नहीं सकता, परन्तु पूँजीवाद का हल कम्यूनिज्म ही तो नहीं है—समाजवाद के द्वारा भी जिसमें अहिंसा आदि हो, पूँजीवाद को समाप्त किया जा सकता है।

राजस्थान विश्वविद्यापीठ कुल की ओर से कुलपति श्रीमान् श्री महाराणा भूपालसिंह जी का ता० २३ फरवरी को उनके जन्मोत्सव के अवसर पर अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन-पत्र में कहा गया कि आपकी व्यक्तिगत उदारता आपका साहस, सौजन्य, विद्याप्रेम तथा भारतीय जनता के चक्रवर्ती राज्य को दृढ़ करने के लिये मेवाड़ राज्य को भारतमाता को समर्पण एवं राजस्थान विश्वविद्यापीठ की उद्घोषणा तथा स्थापना आदि महान् कार्यों द्वारा आप ने निस्सन्देह राजपूताना और विद्या-जगत् का हृदय जीत लिया है। राजस्थान विश्वविद्यापीठ आप द्वारा प्रदत्त चम्पाबाग में व्यवस्थित रूप से चला जा रहा है और निरन्तर विकासोन्मुख है।

आगामी सप्ताह से 'जनसन्देह' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन पं० जनार्दनराय जी नागर के संपादकत्व में होने जा रहा है। इस पत्र की नीति समाजवादी विचारधारा को प्रोत्साहन देना तथा समाजवादी अर्थनीति पर प्रकाश डालना है।

राजस्थान विश्वविद्यापीठ प्राचीन साहित्य शोध-संस्थान कार्य के लिये मंत्री श्री पुरुषोत्तम मेनारिया कलकत्ता गये हुए हैं। श्री मेनारिया को कलकत्ता के प्रमुख व्यक्तियों श्री भागीरथ जी कानोड़िया श्री सीताराम जी सेकसरिया एवं श्री भँवरमल जी सिंघी के अतिरिक्त डाक्टर कालीदास नाग, डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, एवं अन्य सभी विद्वानों और नागरिकों का पूर्ण सहयोग मिल रहा है।

—संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिला ब्राह्मण सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन फतेहपुर नगर में श्री पं० शालिगराम जी तिवारी ऐडवोकेट की अध्यक्षता में हुआ। जिले के समस्त भागों के सभी ब्राह्मण समुदाय के प्रमुख व्यक्तियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। बंगाली, सरयूपारीण, गौड़, सारस्वत, मालवीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण बड़ी संख्या में उपस्थित थे। यह सम्मेलन जिले के समस्त वर्गों के ब्राह्मणों को संगठित करने और सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने के उद्देश से किया गया था। सम्मेलन में सर्वप्रथम आये हुये प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए स्वागत भाषण श्री पं० दयाशंकर मिश्र "सूर्य" ने दिया।

श्री केदारनाथ तिवारी वकील एवं सभापति जी के भाषण हुये। सर्वसम्मति से शीघ्र फतेहपुर शहर में एक बड़ा "ब्राह्मण-छात्रावास" बनने का प्रस्ताव पास हुआ। श्री "सूर्य्य" जी ने हिन्दू कोडबिल के विरोध में एक प्रस्ताव पेश करते हुये उसे देश, समाज और हिन्दू सभ्यता एवं संस्कृति के लिये अनिष्टकारी बतलाया और उसे केन्द्रीय सरकार से वापस लेने का अनुरोध किया। सरकार से शीघ्र राष्ट्रभाषा हिंदी करने और देवनागरी लिपि स्वीकार करने का भी प्रस्ताव पास हुआ। जिला ब्राह्मण सम्मेलन के अगले वर्ष के लिये निम्नलिखित सज्जन पदाधिकारी निर्विरोध सर्वसम्मति से निर्वाचित हुये—

अध्यक्ष श्री पं० शालिगराम तिवारी ऐडवोकेट, उपाध्यक्ष श्री पं० कृपाशंकर मिश्र गवर्नमेंट ऐडवोकेट, श्री पं० मन्नूलाल मिश्र राजवैद्य, श्री पं० शिवमंगलप्रसाद तिवारी एम० ए० प्रोफेसर, मंत्री, श्री पं० प्रणवदेव शर्मा वकील, श्री पं० दयाशंकर मिश्र "सूर्य्य", श्री देवनारायण दुबे वकील, उपमंत्री श्री प्रेमनारायण मिश्र, कोषाध्यक्ष श्री बैजनाथप्रसाद दुबे मुख्तार। इनके अलावा जिला कार्य-समिति में जिले की तीनों तहसीलों से चार चार सदस्य निम्नलिखित निर्वाचित हुये, फतेहपुर तहसील श्री पं० अमरना पाण्डेय एम० ए०, भूतपूर्व एम० एल० सी० रघुनाथप्रसाद, श्री ब्रह्मदत्त त्रिपाठी वकील, श्री बद्रीप्रसाद गौड़। खजुहा-तहसील श्री बद्रीप्रसाद मिश्र वकील, श्री शिवदयाल उपाध्याय एम० एल० ए०, श्री रामभद्र मिश्र, श्री गिरजाशंकर शुक्ल। खागा-तहसील श्री वासुदेव दीक्षित, श्री प्रतापनारायण मिश्र, श्री अमरनाथ मिश्र, पं० महावीरप्रसाद। कुल पदाधिकारियों को मिलाकर २१ व्यक्तियों की कार्य समिति निर्वाचित हुई।

—संवाददाता-द्वारा

मुफ्त

यदि आप यौवन या बुढ़ापे में किसी प्रकार के रोग से दुखी हों तो हमें शीघ्र ही विस्तारपूर्वक लिखें। हम आपको अपनी स्वच्छ तथा फलदायक औषधि भेजेंगे। जिससे सेवन से आप शीघ्र ही आरोगी बनकर जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

हर प्रकार का पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

पत्र-व्यवहार करते समय अपना नाम और पता पूरा और सुलेख लिखें।

इम्पोरियल चैम्बर आफ साइंस, दुर्ग्याना,

(P. B. 61 अमृतसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का रेलवे-बजट

(पेज ५ का शेष)

फण्ड में केवल ४७२ करोड़ रु० ही देना विचारा गया है। साधरणतः घिसाई की रकम १२ करोड़ रु० रखी जाती है, पर १९४८-४९ के लिये २३ करोड़ रु० रखा गया है और १९४९-५० के लिए इससे भी ११ करोड़ रु० अधिक अर्थात् ३४ करोड़ रु० रखा गया है। यात्रियों की सुख-सुविधा पर वर्ष भर में केवल १·५ करोड़ रु० खर्च करने का इरादा है। पर यह छोटी रकम भी अर्थपूर्ण है, क्योंकि जब से इस फण्ड की स्थापना हुई है इसमें से अब तक १३ लाख रु० ही खर्च किया गया है। इसलिए यदि जन-मंगल के व्यय के लिये संकलित रकम खर्च हुई तो यह भी बहुत होगी। रेलवे-मन्त्री ने आश्वासन दिया है कि तीसरे दर्जे के यात्रियों के मुसाफिरखाने में बिजली के पंखे लग जायँगे, पानी का अच्छा इन्तजाम होगा, स्टेशनों पर शेड भी डाले जायँगे। पर रेलगाड़ी में जगह देने के बारे में कोई वचन नहीं दिया गया है और तीन साल और प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया है। पर यह भी एक नवीन नीति का सूचक है। मर्यादा बाँध दी गई है, कारण निश्चित कर दिया गया है। केवल कोरा आश्वासन नहीं दिया गया है।

संचालन-व्यय

१९४७ से ४८ की रेलवे की प्रगति की तुलना करना व्यर्थ है, क्योंकि वह वर्ष असाधारण था। अव्यवस्था और अशान्ति का वर्ष था। इसलिए दोनों की तुलना सम्भव नहीं है। फिर भी दोनों की तुलना यह तो बताती है कि अब अवस्था सुधर रही है और अन्धकार बीत गया है। अप्रैल १९४८ से नवम्बर १९४८ के बीच १९४७ की इसी अवधि की अपेक्षा ५५,००,००० मील अधिक मुसाफिर गाड़िया चलीं। नियमित समय पर गाड़ियों के आने-जाने में वृद्धि हुई। नियमितता ६० प्रतिशत और अनेकों में तो ८३ प्रतिशत तक रही। मालगाड़ियों में भी उन्नति हुई है। जून १९४८ में जहाँ प्रतिदिन ६८०० माल के डब्बे भरे जाते थे, वहाँ दिसम्बर १९४८ में ११२६७ माल-डब्बे भरे जाने लगे। इसी अवधि में डब्बों का एक चक्कर लगाकर अपने स्थान पर लौटने के समय में १५·०३ दिन लगने के बजाय १२·२१ दिन लगने लगे। माल गाड़ियों की चाल में भी वृद्धि हुई है। यद्यपि अभी तक यह युद्धकाल की सीमा पर नहीं पहुँची है। आसनसोल के पास मिट्टीजाम में-इसका नाम अब बदलकर देशबन्धु चितरञ्जनदास के नाम पर चितरञ्जन कर दिया गया है—रेलवे एंजिन बनाने का कारखाना स्थापित किया जायगा। १९५१ से रेलवे-एंजिन भारत में बनने लगेंगे। पूर्ववर्ती रेलवे मन्त्री डा० जान मथाई ने पिछले साल आशा दिलाई थी कि १९५० से भारत में रेलवे एंजिन बनने लगेंगे। एक साल रेलवे बोर्ड ने स्थान चुनने में लगाया।

(शेष अगले अंक में)

मनोरञ्जक चुटकुले

एक गाँव में सभा हो रही थी। एक आदमी ने कहा—'पञ्चायत बना ली जाय।'

दूसरे सज्जन ने पूछा—कैसी पञ्चायत?

पहले सज्जन ने कहा—"प्रेम की।"

दूसरे ने उत्तर दिया—क्या झगड़ों का फैसला अब भी अदालतें करती रहेंगी।

तब तो भगवान् ही प्रेम-पञ्चायत से बचाये।

*　　*　　*

एक सज्जन ने पूछा, 'दिल्ली में एशियाई सम्मेलन में क्या हुआ?

दूसरे ने उत्तर दिया—"जो उपनिवेशिक देश कर सकते थे, वही हुआ।"

"इसका मतलब?"

मतलब यही कि पिछड़े देशों का सारा कार्य भी पिछड़ा ही रहता है।

"तब?"

"तब क्या हिन्देशिया की स्वतन्त्रता के लिए सारे आस्ट्रेलियाई, एशियाई और अफ्रीकी देश लग गये तब भी एक मच्छर जैसे हालैंड का कुछ न बिगाड़ सके। एक साल को मामला और खसका।"

"तब तो कुछ न हुआ।"

"हुआ क्यों नहीं, खोदा पहाड़ और निकली चुहिया!"

*　　*　　*

"सरदार पटेल की आवाज में भयावनी चेतावनी रहती है।"

एक व्यक्ति ने कहा।

"तभी तो लोहे का पुरुष कहा जाता है उनको।" दूसरे ने उत्तर दिया।

"कहीं धृतराष्ट्र से भेंट न हो जाय कि लौहरूपी भीम का-सा हाल हो जाय!"

*　　*　　*

"चीन के तानाशाह जनरल च्यांग-काई शेक के सिर से मुकुट हट गया।"

"अब भारत से दीक्षा लेकर लकुट ग्रहण कर लें, यही उनके लिए हितकर है।" एक संन्यासी ने हँसते हुए कहा।

"पर, लकुट भी लेने पायें तो। अभी तक पुष्पहार पहनाया जाता था। सुना है कम्युनिस्ट फाँसी का हार पहनाना चाहते हैं। तब भी सम्मान था और अब भी सम्मान है, फिर क्यों लकुट पहनें? लकुट तो महात्मा गांधी जैसे भारतीयों की पोशाक है।"

*　　*　　*

चीन के एक गवर्नर ने भी अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। कहते हैं गवर्नर के इस्तीफे के बाद से चीन में सुंगवंश के शासन का अन्त हो गया। कहा जाता है कि इस वंश ने शताब्दियों तक चीन का शासन किया।

सुंगवंश के शासन की स्थापना पुरुषों द्वारा हुई और मेडम च्यांग जो अमरीकन भक्त थीं, के हाथों उस वंश का ही नहीं, वरन् चीन का भी सत्यानाश हो गया! बुरा क्या है, मर्द कमावें और स्त्रियाँ खा जायँ।

*　　*　　*

प्रिवीकौंसिल की चर्चा पुनः स... चार पत्रों में हुई है। प्रिवीकौंसिल ... निर्णय चाहे जैसा हो, पर अँगरेज येन केन प्रकारेण भारत में आना और रहना चाहते हैं। उचित ही है। भगवान् की पवित्र भूमि ठहरी भारत-भूमि; फिर अँगरेज क्या इसके अधिकारी नहीं? वे कहते हैं—

कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो,
श्री रघुवीर कृपालु कृपा तें,
यहि विधि हौं निबहौंगो।

*　　*　　*

एक सज्जन प्रान्त की राजधानी के राजभवन में टहल रहे थे। एक पोस्टर वहीं पर लटका हुआ था जिसमें लिखा था—'घरों में सोना भरा है।' राजभवन का एक कर्मचारी जो वहीं पास खड़ा था कहने लगा—कितना उच्च आदर्श इस पोस्टर से भासित होता है। सज्जन ने कहा—'इस पोस्टर में एक शब्द नहीं लिखा गया।' कर्मचारी चौंका और पूछा: क्या?

सज्जन ने कहा—मिनिस्टरों (के घरों) में सोना)। पास में खड़े हुए सज्जन खिलखिलाकर हँस पड़े।

घर पर छापने के लिये जेबी प्रेस

नाम, पता, पत्र, लेबुल एवं प्रोग्राम आदि घर पर ही अच्छी तरह इसकी मदद से छापे जा सकते हैं। मूल्य नं० ११, २) नं० १३, ३) स्पेशल ३।।) सर्वोत्तम ५) पैकिंग और पोस्टेज ।।।=)

ज्युएल फिटेड रिस्ट वाचेज!

ठीक समय देनेवाली गारंटी ५ साल मजबूत क्रीमियम केस की ४ ज्वैल १३) अच्छा १४) सेंटर सेकेंड १५) रु० लेडी साइज २६) रु० चौकोर आकारवाली ५ ज्वैल १८), अच्छी २०) रोल्ड गोल्ड १० वर्ष की गारटी, ७ ज्वैल के साथ २५) अच्छी २७)। अलार्म टाइमपीस १४) रु० उत्तम १५) रुपया पैकिंग और पोस्टेज ।।।=)

पता—फ्रेंच कमर्शियल स्टोर्स (D.) पोस्ट बक्स नम्बर १२२१६ कलकत्ता(५)

शक्तिहीन पुरुषों के लिए

छोटी आयु जवानी की गलतियों, बुरी संगति से पैदा होनेवाले अनेक प्रकार के अनेक रोगों—प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र पतन, कमजोरी, सुस्ती, कमरदर्द, सर चकराना, दिमागी कमजोरी, खाँसी, नजला, जुकाम, बदहजमी वगैरह को जड़ से उखाड़ने, वीर्य अधिक पैदा करके शहद की तरह गाढ़ा करने के लिए मेरे पास एक हैरतअंगेज महाशक्ति संन्यासी अक्सीर है जिसको मैंने नौकरी करते समय नागपुर में एक साधु संन्यासी से प्राप्त किया था। कीमत मुकम्मिल कोर्स डाक-खर्च-सहित ५।।।) पाँच रुपये बारह आने जिसमें खाने और लगाने की दोनों अक्सीरें शामिल हैं। पिछले १ वर्ष में ७४५८ रोगी इसका सेवन कर चुकने के बाद गृहस्थी-जीवन आनन्द से बिता रहे हैं। ये सब चमत्कार इलाका काश्मीर की एक पहाड़ी बूटी का है जो इस महाशक्ति संन्यासी अक्सीर में मिलाई जाती है। आर्डर देते समय अपना नाम तथा पता साफ लिखें, हर ऋतु में लाभदायक है।

प्रोफेसर राजेन्द्रकुमार ए० ए० एम० रिसर्च लिबरेटरी
पी० बी० नम्बर १५ मेरठ (D. W. A.)

"नर्गिस"

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

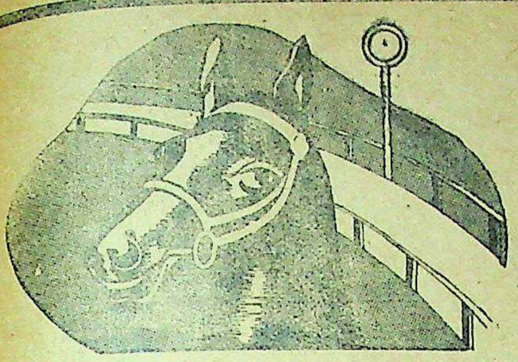

यदि यह घोड़ा बोल सकता ....

तो आप से यह साधारण प्रश्न पूछता : कितने ऐसे मनुष्यों को आप जानते हैं जो जूये के भरोसे किसी विशेष अवधि तक फलते-फूलते रहे हों—सम्भवतः हज़ार में एक ! कारण तो प्रत्यक्ष ही है : यदि हारने वालों की संख्या जीतने वालों की अपेक्षा अधिक न होती तो भला दलाल, ऐजन्ट और "बुकी" भारी आय कैसे कर पाते ? इस से भी कहीं बुरी बात तो यह है कि वह जो जीत भी जाते हैं अपनी जीत की आय को प्रायः व्यर्थ ही नष्ट कर देते हैं और परिणाम यह होता है कि आर्थिक रूप से उनकी स्थिति भी हारने वालों जैसी ही हो जाती है।

जो जूये के बारे में सच है वही सट्टे के सम्बन्ध में भी कहा जा सकता है। इस लिये क्यों न आप बुद्धिमत्ता से काम लें और अपना रुपया और बचत—जैसी भी हो, थोड़ी हो, या अधिक,—सुरक्षित और लाभप्रद मद में लगाएँ ?

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए। ये ५, ७, और १२ वर्ष की विभिन्न अवधियों में प्राप्त किये जा सकते हैं और अवधि के समाप्त होने पर इन पर क्रमशः ३%, ३-१/२% और ४-१/६% ब्याज प्राप्त होता है।
अन्य सरकारी सिक्योरिटियों, डाकखानों और सेविंग्ज़ बैंक के खातों, बीमा कम्पनियों और कोऑपरेटिव संस्थाओं की मद में रुपया लगाइए।

भविष्य के लिए आज बचाइए
जो कुछ बचाइए बुद्धिपूर्वक लगाइए

हिन्द सरकार के अर्थ विभाग, नई देहली, द्वारा प्रकाशित।
AC. 430

कालेज की एकाकी बालिका

अब लोक प्रिय एवं पारितोषिक विजेत्री क्रूशन को धन्यवाद

कालेज जीवन में एक ही वर्ष के अन्दर सीता ने अपनी अच्छी शक्ल एवं सहेलियों को खो दिया। वह थकी सी रहने लगी। उसका चर्म मोटा हो गया। प्रत्येक व्यक्ति उसको सुस्त एवं चिड़चिड़ा मिज़ाज का समझने लगा। एक दिन तंग आकर जब उसने अपनी माँ से कालेज छोड़ने की बात कही तो उसकी माँ ने उसे नेक सलाह दी कि प्रत्येक दिन प्रातः-काल जलपान के पूर्व क्रूशन साल्ट लेने की कोशिश करे।

एक वर्ष बाद ही सीता को इन्टर परीक्षा में पारितोषिक मिला। उसकी सहेलियों ने कहा—तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो, तुम्हारे पास सौंदर्य एवं मस्तिष्क दोनों ही हैं। सीता ने मुस्कराते हुए अपनी माँ के उपदेश को स्मरण किया। मनुष्य को जितनी बीमारियाँ तंग करती हैं उनमें से आधी का कारण आन्तरिक गन्दगी है। प्रतिदिन पेट की सफाई का पक्का साधन 'क्रूशन साल्ट' का सेवन है। यह छः खनिज नमकों का सम्मिश्रण है। यह मल प्रवाहित करने वाली अँतड़ियों को साफ रखता है। बाहर निकाल फेंकने योग्य सड़े पदार्थों को अँतड़ियों में एकत्र होकर रक्त को विषाक्त बनाने से रोकता है। क्रूशन स्वस्थ एवं सुन्दर बनाता है।

आज ही क्रूशन खरीदें। सर्वत्र प्रत्येक दवा-विक्रेता के यहाँ मिलता है। पीले कागज की तख्ती के डिब्बे के अन्दर मूल्य १॥=)

आप भी
क्रूशन से लाभ उठाइये।

Ad. No. KSID. 4 Hindi

... रुपये तोला

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइ...
सिन्हा होमियो मेडि...
... लहेरियासरा...

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र
२ आना
प्रकाशक — इन्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

कविता, उपन्यास और विज्ञान का आनन्द लीजिए

कवि रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता और कल्पना की उड़ान की दृष्टि से अनुपम। सजिल्द प्रति का मूल्य ३) तीन रुपये।

शान्त शिष्ट सत्याग्रही प्रताप ने अपने मधुर व्यवहार से विरोधि[illegible] को किस प्रकार कट्टर देशभक्त बनाकर अपना अनुगत बना लिया, [illegible] इस उपन्यास में पढ़िए। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

[illegible] राजेन्द्रकुमार ए० ए० एम० रिसर्च लिबरेटरी
पी० वी० नम्बर १५ मेरठ (D. W. A.)

गाड़िया [illegible] के आने-जाने में वृ[illegible] ६० प्रतिशत और अनेकों में [illegible] शत तक रही। मालगाड़ियों [illegible] हुई है। जून १९४८ में जहाँ प्रा[illegible] ६८०० माल के डब्बे भरे जाते थे, दिसम्बर १९४८ में ११२६७ माल-ड[illegible] भरे जाने लगे। इसी अवधि में डब्बों का एक चक्कर लगाकर अपने स्थान पर लौटने के समय में १५·०३ दिन लगने के बजाय १२·२१ दिन लगने लगे। माल गाड़ियों की चाल में भी वृद्धि हुई है। यद्यपि अभी तक यह युद्धकाल की सीमा पर नहीं पहुँची है। आसनसोल के पास मिट्टीजाम में—इसका नाम अब बदलकर देशबन्धु चितरञ्जनदास के नाम पर चितरञ्जन कर दिया गया है—रेलवे एंजिन बनाने का कारखाना स्थापित किया जायगा। १९५१ से रेलवे-एंजिन भारत में बनने लगेंगे। पूर्ववर्ती रेलवे मन्त्री डा० जान मथाई ने पिछले साल आशा दिलाई थी कि १९५० से भारत में रेलवे एंजिन बनने लगेंगे। एक साल रेलवे बोर्ड ने स्थान चुनने में लगाया।

(शेष अगले अंक में)

[illegible] आदि [illegible] अच्छी तरह इसकी मदद से छापे जा सकते हैं। मूल्य नं० ११, २) नं० १३, ३) स्पेशल ३॥) सर्वोत्तम ५) पैकिंग और पोस्टेज ॥।=)

ज्युएल फिटेड रिस्ट वाचेज !

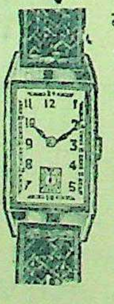

ठीक समय देनेवाली गारंटी ५ साल मजबूत क्रीमियम केस की ४ ज्वैल १३) अच्छा १४) सेंटर सेकेंड १५) रु० लेडी साइज २६) रु० चौकोर आकारवाली ५ ज्वैल १८), अच्छी २०) रोल्ड गोल्ड १० वर्ष की गारटी, ७ ज्वैल के साथ २५) अच्छी २७)। अलार्म टाइमपीस १४) रु० उत्तम १५) रुपया पैकिंग और पोस्टेज ॥।=)

पता—फ्रेंच कमर्शियल स्टोर्स (D.)
पोस्ट बक्स नम्बर १२२१६ कलकत्ता (५)

कोमलता से सुगंधित किया गया वेस्लीन ब्ल्यू सील पोमेड बालों की रक्षा करता है, उन्हें स्वस्थ और चमकीला रखता है। प्रतिदिन थोड़ा प्रयोग में लाइये।

वेसलीन ब्ल्यू सील पोमेड पर ही ज़ोर दीजिये।

Copyright:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२० मार्च, १९४९ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 20th March, 1949

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

२ आना
प्रकाशक— इन्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने 'भैरवी' की राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य है। इस काव्य की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। मूल्य २) दो रुपये।

यह कवि सोहनलाल जी की बालोपयोगी २२ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ी जाओ ही अकेले आदि सुन्दर कविताएं इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल ।।।) बारह आने।

द्विवेदी-काव्यमाला

आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। पृष्ठ पौने पाँच सौ से ऊपर। अच्छा कागज। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

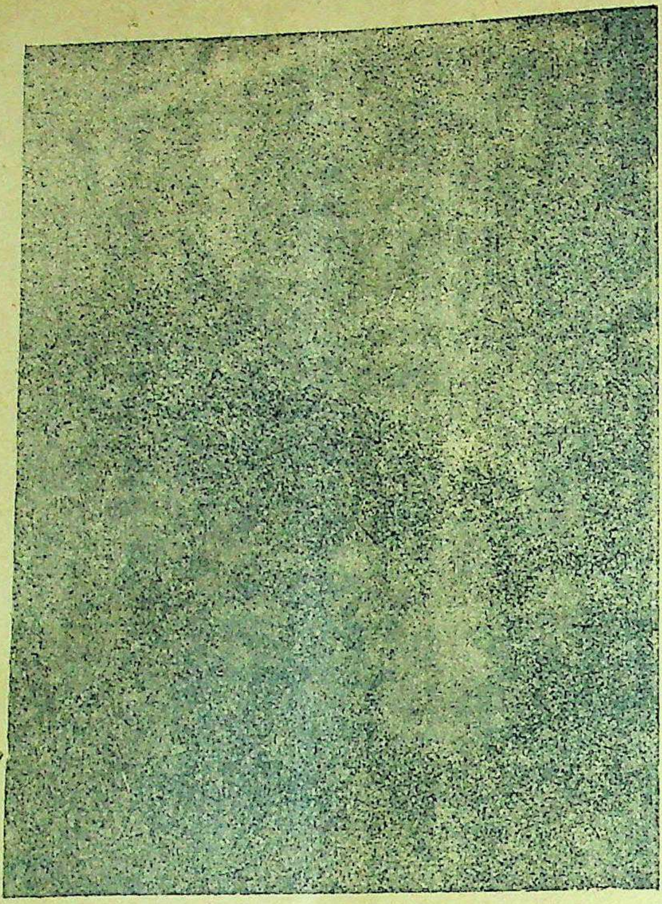

श्रद्धांजलि !

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ** ७॥) तथा **सेवाग्राम** १०) (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

अपराजिता

कवि 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएं हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी भूमिका में लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है।"

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य का स्वर्गीय आनन्द लूटिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत् के चोटी के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वंद्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फेदरवेट पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

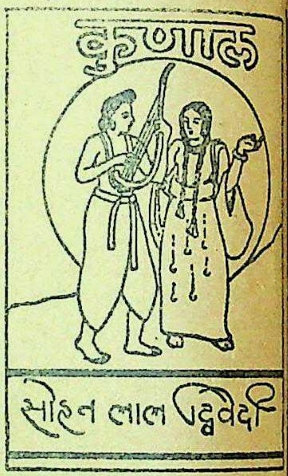

चक्रवर्ती अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढंग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोककालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राज-संस्करण ३)

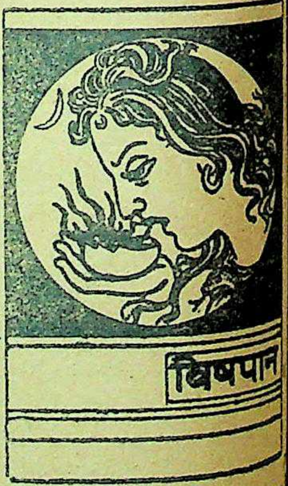

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा का प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि सोहनलाल जी की विशेषता है। मूल्य १) रुपया।

हल्दीघाटी

इस महाकाव्य पर लेखक श्री श्यामनारायण पाण्डेय को दो हजार का देव पुरस्कार मिला है। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कथा का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, फड़कती कविता में, किया गया है। मूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर—बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २८] [रविवार, २० मार्च, १९४९

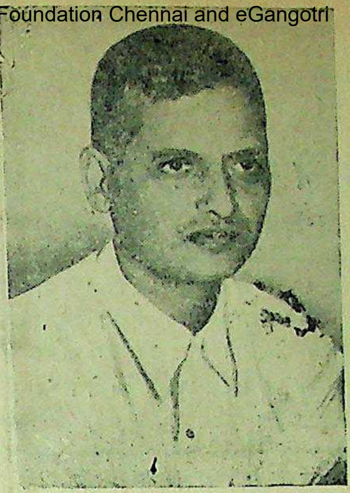

गांधी हत्या-काण्ड के प्रमुख अभियुक्त श्री नाथूराम गोडसे, जिन्हें फाँसी की सजा दी गई है। श्री गोडसे ने पंजाब हाई-कोर्ट में अपील की दरखास्त दी है।

गांधी हत्या-काण्ड के प्रधान विचारपति जस्टिस आत्माचरण आई०सी०एस० जिन्होंने हत्या-काण्ड के दोषी अभियुक्तों को कारावास की विभिन्न सजायें दी हैं।

रेखा-चित्र

वसंत-वायु

लेखक, प्रोफेसर चंद्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

आज वसंत आ गया। आज फिर कामदेव की प्रत्यंचा पर कुसुमों के पंच-बाण सज गए। आज फिर कला-कुशल कोकिला के कंठ में काम-कीर्त्तन भर गया। आज जो पवन बह रहा है वह मानो मधुर प्रणय के प्रथम अनुभव में डूबा हुआ सा है। आज मन कितना दौड़ता है कि उसकी यह चंचलता भार हो उठी है और यह भार जैसे जीवन का सब कुछ है। समय-प्रवाह की तरंग बनी यह वसंत-वायु कब से प्रेम-मत्त व्रजांगना सी सृष्टि के बीच झूम रही है। कितने प्रेमियों की स्मृति का स्मारक बनी है यह! हिम-शुभ्र हिमगिरि के अंचल में शीतल शिखरों के बीच शिव-प्रेमाराधिका देवी पार्वती के कोमल अंगों को छूकर यह प्रलयंकर के तृतीय नेत्र के अग्नि-दाह से झुलस गई। काम भस्म हुआ पर यह कहाँ मरी! इसने तो उस सुमन-चापधारी काम की देह-भस्म को उड़ाकर संसार में बिखरा दिया। काम हारा पर काम की दूती यह मदमत्त वायु तो शंकर की रोष-ज्वाल से भी बच गई। और आज भी तो न जाने यह कितने मन-कपाटों को धीरे से, मन्मथ के अमूर्त्त परस का सहारा ले, विलास-विभ्रम से हिला आती है।

हिमगिरि के शीतल-शिखरों से नीचे उतर यह वायु अतीत भारत-भू-खंड के एक हवन-धूम्र पूर्ण तपोवन में गई और वहाँ इसने एक चीरधारिणी, उन्मुक्त कुन्तला शकुन्तला के वल्कल-बद्ध-वक्षस्थल के हृदय दोल को कुछ और अधिक चंचल कर दिया। कमल-नाल-लेखनी-संयुक्त कर काँप उठा। भाल का उद्वेग-जनित श्रम-जल और नयन का आतुर अर्घ्य-जल—इन दोनों ने मिलकर उसी थल पर प्रेम के महोदधि का निर्माण कर दिया जिसकी तरंगों में अनुरागी दुष्यंत के लक्ष-लक्ष चित्र बिखर गए। फिर चित्र बदले। अरी वसंत-वायु! तू देख कैसे सकी! फिर अपनी असहायता में नारी का सम्पूर्ण समर्पण चीत्कार कर उठा। शताब्दियाँ बीत गईं पर वह पुकार काल-वीणा के तारों को छेड़ती हुई आज भी मेरे कानों में करुण के निर्झर की भाँति अनवरत गिर रही है। तू उस वक्ष से लिपटी भी उस पुकार को न सुन सकी, पाषाणी!

हिमगिरि की विजयिनी, रामगिरि पर तेरी एक न चली। कोमल कुसुम-पथ पर कुसुम-रज में बने तेरे पद-चिह्न प्रणयी ने न पढ़े। उस विरही यक्ष ने तो आषाढ़ के श्याम मेघ को ही अपने हृदय का उज्ज्वल रहस्य सुना दिया। तू अपमानित हो रोष से भर, शैल-शिखर से टकरा उठी। अलका-निवासिनी यक्षिणी का म्लान कुरबक-कुसुमों की गंध से सुवासित कवरी-भार श्याम-मेघ की आर्द्रता से स्निग्ध हो उठा। वह तेरे स्वागत को उठी कहाँ! उसके कर्ण-कुसुमों की झलक तेरी गति से चंचल कहाँ हुई! उसका कुसुंभी चीर तेरी मत्तता से दोलित कहाँ हुआ! कुसुमायुध की कुसुमांजलि की अवशिष्ट स्मृति, अलका की सुनेत्रा की नयन-तरेर ने तुझे जर्जर कर दिया। फिर आज यह कैसा नवीन साज! रति-विलाप से द्रवित हृदय कैलाशपति ने तुझे जीवन-यौवन का कोई नव-वरदान तो नहीं दे दिया! आज तू विलासमयी हो उठी है। किसलयों में, कुसुमों में, द्रुमों में, बेलि-लता-कुंजों में, किशोर-किशोरियों के बीच तू ऋतुपति का नया विजय-पत्र सा पढ़ रही है। सब तेरे इस मंद-मृदु निर्घोष से सम्मोहित से, तेरे आदेशों की सम्मोहिनी छाया के नीचे समाधान सा पा रहे हैं। यदि विनाश-विलासी धूर्जटि ने तुझे पुनः जीवन-दान दिया है तो फिर तेरी जय हो। तू फिर अगणित 'कुमार-सम्भवों' और 'शकुन्तलाओं' की रचना कर। नयन-मालाओं में माधव की तरलता ला! कुसुम-चषकों में भ्रमरों को मकरन्द पिला। आशा ला! प्रकाश ला! हास-उल्लास ला! विश्व का वक्ष एक बार फिर तेरे स्वर की सम्पूर्णता से भर उठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्दमान की आज की राजनीति

शरणार्थियों के बसाने की नई व्यवस्था

लेखक, श्री सत्यसहाय श्रीवास्तव, एम० ए०

अन्दमान भारत के दक्षिण में ऐसा टापू है जो पूर्व काल से 'कालापानी' के नाम से प्रसिद्ध था। किंतु अब भारत-सरकार यहाँ शरणार्थियों के बसाने की एक नई योजना कार्यान्वित करने जा रही है। इस लेख में लेखक ने अन्दमान की वर्तमान स्थिति के साथ ही शरणार्थियों को बसाने की समस्या पर प्रकाश डाला है। लेख सुंदर और पठनीय है।

अधिकांश भारतवासी अन्दमान द्वीप को 'कालेपानी' के नाम से अधिक जानते हैं। भारत में अंगरेजी शासन के समय जिस कैदी को आजन्म कैद की सजा होती थी उसे 'कालेपानी' की सजा कहते थे। वे कैदी अन्दमान भेजे जाते थे इसलिये अन्दमान को लोग कालापानी कहते हैं। कुछ लोगों का तो यह ख्याल है कि अन्दमान का पानी काला होता है तथा वहाँ की आबहवा इतनी खराब होती है कि वहाँ आदमी बीमार पड़कर मर जाता है। लेकिन यथार्थ में यह बात नहीं है। न तो वहाँ का पानी ही काला है और न जलवायु ही खराब है।

भारत-विभाजन होने से पूर्वीय बंगाल और पश्चिमी बंगाल से लाखों की तादाद में शरणार्थी भारत आये और पूर्वीय बंगाल से तो अब भी आ रहे हैं। ये शरणार्थी अपने घर-बार, जमीन, जायदाद सब छोड़कर भागे। इनके जीवन निर्वाह का प्रबंध करना सरकार का कर्त्तव्य है क्योंकि उनकी यह दशा देश की राजनैतिक परिस्थिति के कारण हुई। हमारी राष्ट्रीय सरकार इन शरणार्थियों की पूर्ण रूप से सहायता करना चाहती है। सरकार कुछ शरणार्थियों को मय बाल-बच्चों सहित अन्दमान निकोबार द्वीपों में बसाना चाहती है। अन्दमान निकोबार द्वीप भारत के अन्तर्गत हैं। अभी तक अँगरेजों ने इन द्वीपों को केवल 'कालापानी' ही बना रखा था। उनको उन्नत करने का कोई प्रयत्न नहीं किया इसीलिए अधिकांश भारतवासी अन्दमान को केवल कालापानी के सिवा कुछ नहीं जानते। जब सरकार ने शरणार्थियों को यहाँ भेजने की योजना बनाई तो कुछ लोगों को बहुत बुरा लगा तथा उन्होंने कहा कि हमारी राष्ट्रीय सरकार इन मुसीबत के मारे शरणार्थियों के साथ वह सलूक कर रही है जो बुरे से बुरे कैदियों के साथ किया जाता था। यथार्थ में लोगों को इन द्वीपों के विषय में बहुत कम मालूम है और इसीलिये कुछ लोग इस योजना के विरुद्ध बोले।

अन्दमान निकोबार द्वीप उसी तरह उपजाऊ हैं जिस तरह दक्षिणी-पूर्वीय एशिया के अन्य द्वीप। उन द्वीपों की राजधानी अन्दमान पोर्ट ब्लेयर है। कलकत्ता या मद्रास से समुद्र-यात्रा द्वारा लगभग अस्सी घंटे में पहुँचते हैं। यहाँ प्रधानतः चावल की खेती होती है। जलवायु भी चावल की खेती के लिये बहुत उपयुक्त है। साल में एक ही खेत में चावल की दो फसलें होती हैं। चावल की उपज प्रतिएकड़ चालीस या पचास मन है। इस प्रकार की भूमि भारत में बहुत ही अधिक उपजाऊ मानी जाती है। गेहूँ तथा गन्ने की उपज भी यहाँ अच्छी तरह से हो सकती है। नारियल के झाड़ बहुतायत से पाये जाते हैं और यदि उनकी ओर विशेष ध्यान दिया जाये तो उनकी संख्या और भी बढ़ सकती है। नीबू, पपीता, सेब, केला इत्यादि फल बहुतायत से हो सकते हैं। अँगरेज सरकार ने इसकी उन्नति करने का कोई विशेष ध्यान नहीं दिया और भारतवासियों के लिये तो इसका उपयोग केवल जेल ही के रूप में रहा है। जो अँगरेज यहाँ रहते थे उन्होंने इसकी बड़ी प्रशंसा की है क्योंकि उनके लिये हर एक प्रकार के सुभीते थे। हेनरी फ्रेंक ने तो इस द्वीप को स्वर्ग कहा है।

चारों ओर समुद्र घिरा होने के कारण यहाँ मछली का धन्धा खूब बढ़ाया जा सकता है। इसके सिवा 'पोल्ट्री फार्मिंग' भी हो सकता है। यद्यपि अभी तक रबर और काफी की उपज की ओर ध्यान नहीं दिया गया है लेकिन यहाँ की जलवायु इनके लिये उपयुक्त है। यहाँ के जंगल बहुत कीमती हैं। सरकार को इनसे बहुत आमदनी हो सकती है। इन जंगलों में कई तरह की कीमती इमारती लकड़ी होती है जो केवल फर्नीचर ही नहीं वरन् खेल के सामान बनाने के लिये उपयुक्त है। पंजाब के शरणार्थी इस उद्योग-धन्धे में अच्छी उन्नति कर सकते हैं। अभी वहाँ सरकार के 'जंगली महकमे' की ओर से एक बहुत बड़ा लकड़ी चीरने का कारखाना है। यहाँ से हर माह लाखों रुपये की चिरी हुई लकड़ी भारत भेजी जाती है। माचिस की काड़ी बनाने का भी एक कारखाना है। इस कारखाने से लाखों रुपये की माचिस की काड़ी तथा माचिस की डिब्बी बनाने की लकड़ी कलकत्ता और मद्रास भेजी जाती है। चारों ओर समुद्र होने के कारण यहाँ सीप बहुतायत से मिलती है। सीप के बटन बनाने का कारखाना यहाँ बहुत ही आसानी से चल सकता है। बहुत ही सस्ती कीमत पर सीप बिनवाई जा सकती है। सुपाड़ी के भी बहुत झाड़ पाये जाते हैं।

लोगों की बिलकुल गलत धारणा है कि इन द्वीपों पर मलेरिया बहुत होता है अथवा यहाँ की जलवायु लोगों के लिये उपयुक्त नहीं है। हाल ही में डाक्टर महराज कृष्ण कपूर इन द्वीपों को गये थे। उन्होंने इनका बड़ी अच्छी तरह अध्ययन किया। उनका कहना है कि यहाँ की जलवायु में कोई भी खराबी नहीं है। इस विषय पर उन्होंने वहाँ के सबसे बड़े मेडिकल आफिसर से भी वार्तालाप किया। उनका मत है कि बरसात के दिनों में भी यहाँ भा[रत] के पंजाब और बंगाल प्रान्तों [से] कम मलेरिया होता है। यहाँ को[ई] ऐसी बिमारी भी नहीं है जो यहाँ के लि[ये] विशेष हो। डा० कपूर ने इन द्वीपों [को] प्रत्येक दृष्टि से अच्छी तरह अध्य[यन] किया है। वहाँ बच्चों और औरतों के लि[ये] अलग अस्पताल हैं और इसमें स[न्देह] नहीं कि जब सरकार वहाँ शरणार्थि[यों] को बसायेगी तो उनके स्वास्थ्य का पू[रे] रूप से ध्यान रखेगी। यह अध्ययन ... के लिये कि शरणार्थियों को वहाँ कि[सी] प्रकार की असुविधा तो न होगी; भा[र]तीय सरकार ने पूर्वीय पंजाब और पश्चि[मी] बंगाल के प्रतिनिधियों को वहाँ की ... स्थिति का अध्ययन करने के लिये भे[जा] था। पूर्वीय पंजाब ने अपने यहाँ से च... प्रतिनिधि वहाँ भेजे थे तथा पश्चि[मी] बंगाल के तो बीस प्रतिनिधियों का ... मण्डल वहाँ गया था; तथा साथ में ... और उद्योग विभाग के सेक्रेटरी भी ... गये थे। इन द्वीपों की उन्नति के लि[ये] सरकार विशेष ध्यान दे रही है।

मार्च तक दो सौ शरणार्थियों ... परिवारों को (फेमिली) सरकार ... अन्दमान भेजने की योजना की ... ये लोग प्रधानतः किसान होंगे। ...

शेष पेज १६ पर देखि[ये]

गीत

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

किसके पग-पायल की रुनझुन!
श्यामा की मधुमयी तान-सी,
विगत स्वप्न के मधुर ध्यान-सी,
नीरवता में स्वर भर जाती, सुध-बुध खोता मेरा तन-मन!
किसके पग-पायल की रुनझुन!
मलयानिल के रथ पर आती,
हृदय-सिन्धु में ज्वार उठाती,
बरबस एक टीस दे जाती, नयनों में कुछ आता सावन!
किसके पग-पायल की रुनझुन!
सतरंगी सुधियों के रँग भर,
अमृत-घन दिशि-दिशि में झर-झर,
तार-तार झंकृत कर जाता, एक एक स्वर विद्युत बन-घन!
किसके पग-पायल की रुनझुन!
कन-कन से मादक स्वर भरता,
भू पर जैसे स्वर्ग उतरता,
दूर कहीं स्वर-लहरी उठती, पर न सफल हो पाते लोचन!
किसके पग-पायल की रुनझुन!

भारत के प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु और सोवियट रूस के भारत स्थित राजदूत एम० निकोव।

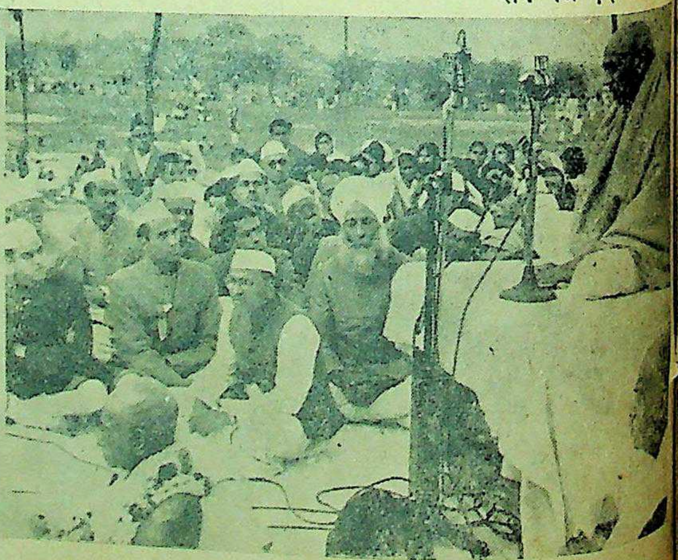

अस्थि-विसर्जन-दिवस के अवसर पर सरदार वल्लभभाई पटेल राजघाट (दिल्ली) की एक सभा में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

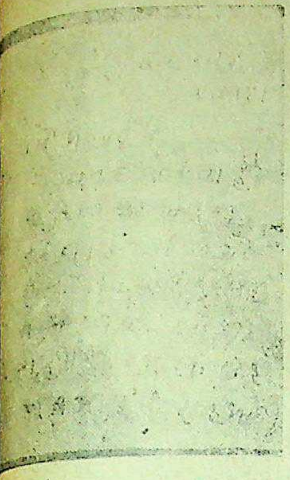

पत्र नं० १

बापू तथा बालक

मानवता और मनोरंजन के प्रतीक

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

महात्मा गांधी राष्ट्र नायक थे। उन्होंने राजनीतिक आन्दोलनों को जन्म देकर भारत को स्वतंत्रता दिलाई। जीवन में जहाँ उन्होंने एक महान् राजनीतिज्ञ की दृष्टि से महानता प्राप्त की वहाँ मानवता, सहृदयता, भावुकता तथा मनोविनोद की दृष्टि से भी उनकी तुलना नहीं हो सकती थी। इस लेख में लेखक ने, पूज्य बापू का बच्चों के प्रति कैसा प्रेम था, इसका सुंदर और सजीव वर्णन किया है, जो पठनीय तथा सुंदर है।

बड़े आदमी बहुधा महान् घटनाओं [illegible] बड़े, आन्दोलनों में इतने अधिक [illegible] रहते हैं कि वे जीवन के मनुष्यत्व [की] ओर अधिक ध्यान नहीं देते, जो कि [जीवन के] आनन्द का प्राणाधार है। किन्तु [गांधी जी] इस विषय में अपवाद थे। [उन्हों]ने बड़े आन्दोलनों को प्रारम्भ किया, [राजनै]तिक सम्मेलनों में भाग लिया, [देश] को आवश्यकता पड़ने पर शिक्षाएँ [दीं] तथा आवश्यक वार्तालापों में भाग [लिया] किन्तु वे कभी जीवन के अन्य मनो[रंजक] तथा नाजुक पहलुओं की ओर [असा]वधान नहीं थे। उनके ऊपर बहुत [बड़ी] जिम्मेदारी थी फिर भी उन्होंने [रोगि]यों की सेवा की, आश्रमवासियों की [देखभा]ल की, गरीबों की आवश्यकताओं की [ओर] ध्यान दिया, छोटे बच्चों के साथ [खेले], निम्नकोटि के लोगों को सान्त्वना [दी,]अपनी लम्बी-चौड़ी डाक की ओर [ध्या]न दिया तथा अपने चारों ओर की [छोटी] छोटी वस्तुओं पर भी निगाह [रख]ा। यही गांधी जी का सच्चा बड़प्पन [था]। बच्चों के साथ खेलने में उन्हें सबसे [अधि]क आनन्द आता था और उनके [भोलेप]न तथा संक्रामक हँसी से मुग्ध हो [जा]ते थे। गांधी जी के समान शायद ही [किसी] ने बच्चों की भोली मुसकान तथा [उन]के खेलाड़ीपन का आनन्द उठाया हो। [यहाँ] पर गांधी जी के कुछ पत्र उद्धृत [किये] जाते हैं जिससे पता चलेगा कि उनका [बच्च]ों से कितना मधुर तथा घनिष्ठ सम्बन्ध [था]। वे उनके भलाई तथा स्वास्थ्य के लिये [सदा] संलग्न रहते थे।

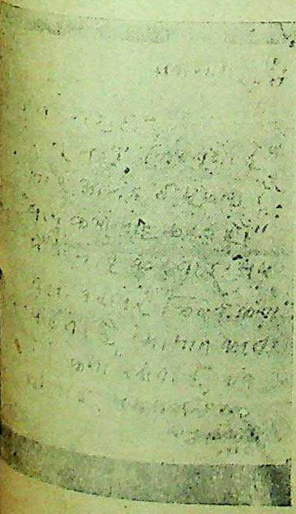

पत्र नं० २

महादेव हिंगोरानी को गांधी के समीप रहने का सौभाग्य प्राप्त था तथा उनके माता-पिता (आनन्द हिंगोरानी तथा विद्या हिंगोरानी) कभी कभी बालक महादेव के लिये बापू से उपदेश प्राप्त किया करते थे। एक बार महादेव के पिता ने गांधी को लिखा कि उनका पुत्र रात में बहुत ही डर गया था तथा वे उसके बारे में बहुत ही चिन्तित थे। एक पत्र में (पत्र नं० १) गांधी जी ने महादेव को लिखा—"आनन्द मुझे बतलाते हैं कि तुम रात में बहुत डरते हो। किन्तु रात्रि में डर कैसा? यहाँ तक कि जब हम सोते रहते हैं उस समय भी ईश्वर हमारा ध्यान रखता है। तब तुम्हें डर किस बात का है? जब तुम सोने जाओ तो राम-नाम का जप करो और तब तुम्हें तनिक भी डर न लगेगा!"

महादेव बापू को बहुत ही चाहते थे। उसने एक दिन अपने पिता से पूछा कि क्या बापू ने उसे कभी याद किया था। उसके पिता ने बापू के पास इस बात को लिखा। कुछ दिनों बाद बापू ने नीचे लिखे पत्र (पत्र नं० २) को महादेव के पास भेजा—"तुम स्वयं तो कुछ भी नहीं लिखते किन्तु आनन्द से पूछते हो कि क्या बापू मुझे याद करते हैं। हाँ, मुझे तुम्हारी याद आती है। अब मुझे कभी कभी लिखा करो। तुम किस कक्षा में पढ़ते हो? क्या तुम कसरत करते हो? तुम क्या खाते हो? और सोने कै बजे जाते हो? मुझे इन सब बातों का उत्तर दो।"

बापू के हाथ भारी भारी कामों से भरे रहने पर भी, वे छोटी छोटी बातों में भी रुचि रखते थे यदि उससे किसी का भला होता था। एक बार महादेव ने बापू को पत्र लिखा किन्तु उसको ऐसा लगा कि कुछ गलतियाँ रह गई थीं और उनकी ओर इशारा भी किया। बापू ने पत्र के गलतियों को सुधार दिया और निम्नलिखित पत्र (पत्र नं० ३) भेजा—"तुम्हारे पत्र को पाकर मुझे प्रसन्नता हुई, इसमें कुछ साधारण भूलें हैं किन्तु उनके बारे में विशेष चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। 'प्रीछा' के स्थान पर 'परीक्षा' होना चाहिये और 'सिहत' को 'सेहत' लिखना चाहिये। रात में 'जय साहेब' का पाठ करना बहुत अच्छा होता है। मैंने तुम्हारा चित्र देखा है तथा उसके ऊपर शुभ कामनायें लिखी हैं। तुम्हारे पैरों में तो पुट्ठे दिखलाई नहीं पड़ते। व्यायाम किया करो। तुम तो कमजोर मालूम पड़ते हो।"

एक दिन जब महादेव बीमार और काफी कमजोर था उसने एक छोटा सा पत्र बापू को लिखा। बापू ने शीघ्र उत्तर देते हुये कहा—(पत्र नं० ४)—"जब तुम इतने कमजोर हो तो तुम्हें कुछ भी नहीं लिखना चाहिए था। जब तुम बिलकुल ठीक हो जाओ तब लिखना। पहले ठीक हो जाओ तब लिखना।" जब महादेव की उम्र १५ वर्ष की हुई उसने एक पत्र बापू को लिखा और उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। गांधी जी ने कहा—"तुम्हारे पत्र को पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे ऐसा लगता है जैसे तुम्हारा जन्म कल ही हो। यह सोचना कि तुमने पंद्रह वर्ष पार कर लिये हैं बड़ा ही कठिन है। मुझसे मिलने से तुम्हें क्या मिलेगा। कम से कम हम लोग मानसिक जगत् में तो मिलते ही हैं। तुम दीर्घायु हो और मैं चाहता हूँ कि तुम बहुत दिनों तक अपने देश की सेवा करो।

बापू बच्चों की ओर बहुत ही सहृदय तथा विचारवान् थे। बहुधा वे उन्हें अनेक विषयों पर व्याख्यान देते थे। महादेव के माता-पिता को लिखे गये ये कुछ पत्र इस बात को दिखलाते हैं कि वे बालकों में मूलरूप से कितना ध्यान देते थे—

"बालकों को अपच से बचाये रखने की नितान्त आवश्यकता है। यदि तुम (विद्या) उसे नित्य एक कैस्टर आयल की छोटी खुराक, चाहे वह दस ही बूँद की क्यों न हो, दे सको तो बहुत ही अच्छा हो।" (मार्च २६, १९३३)

"मेरे विचार से महादेव को अपच के लिये दस बूँद कैस्टर आयल का देना बहुत अच्छा होगा। यदि तुमने आलिव आयल (जैतून का तेल) का देना पहले ही से प्रारम्भ कर रक्खा है तो उसे देती रहो।" (अप्रैल १६, १९३३)

"महादेव कैसा है? वह कितना दूध पिता है? क्या इसमें उसे कोई कठिनाई पड़ती है? क्या तुम उसे टहलाने के लिये बाहर निकालती हो?" (जनवरी १, १९३४)

"यदि तुम स्वयं महादेव की आवश्यकताओं की ओर ध्यान रक्खो तो बहुत ही अच्छा होगा। हाँ, जहाँ तक तुम इस कार्य के करने योग्य हो। क्या महादेव को नारंगी या मुसम्मी का रस दिया जाता है? बच्चों को नारंगी तथा अंगूर का रस भी दिया जाना चाहिये।" (फरवरी २, १९३२)

"जब कि महादेव बढ़ रहा है विद्या को कठोर तथा नम्र दोनों ही उसके साथ होना पड़ेगा। बच्चों का पालन-पोषण

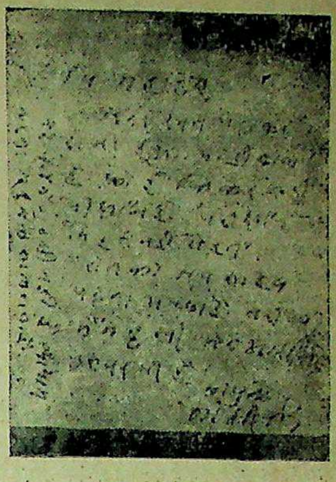

पत्र नं० ३

करना एक कला है। विद्या को इसमें महारत हासिल करना चाहिये।"

सन् १९३० में यू० पी० कोर्ट आफ वार्डस के सभापति पं० जगन्नाथ त्रिपाठी के अल्पायु पुत्र कैलाश ने बापू को एक पत्र लिखा जिसमें उसने बापू से राय माँगी कि क्या नवयुवक विद्यार्थियों को यदि असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ होता है तो उसमें भाग लेना चाहिये। उन दिनों बापू जेल में थे और उन्होंने निम्नलिखित उत्तर कैलाश को दिया—(पत्र नं० ५) "तुम्हारा पत्र मिला। मुझे दुःख है कि मैं तुम्हें कोई राय नहीं दे सकता क्योंकि मैं जेल में हूँ। तुम्हें अपने माता-पिता के सलाहों पर चलना चाहिये। जो तुम्हारी माता को प्रिय लगे वही करो।" कैलाशनाथ त्रिपाठी अब फौज में लेफ्टिनेंट कर्नल हैं तथा उस पत्र को एक अमूल्य निधि की तरह रक्खे हैं।

जब गांधी जी लन्दन में थे, वे बहुत से बालकों से मिले। बच्चे उन्हें "चाचा-गांधी" कहकर पुकारते थे। वे गांधी को अपने बीच पाकर बहुत ही प्रसन्न थे तथा उस दिन अपने को बड़ा ही गर्वशाली समझा था। चिल्ड्रेनस् होम के बालकों ने बापू को निम्नलिखित पत्र भेजा—"हम सभी आपकी वर्षगाँठ पर शुभ कामनायें भेजते हैं। और आपके लिये जन्मदिन का एक गीत गायेंगे। हम लोग आपको एक उपहार भी भेज रहे हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारी भेजी हुई केक जिस पर एक पक्षी का चित्र बना है स्वीकार करें। क्या आप

शेष पेज १८ पर देखिए

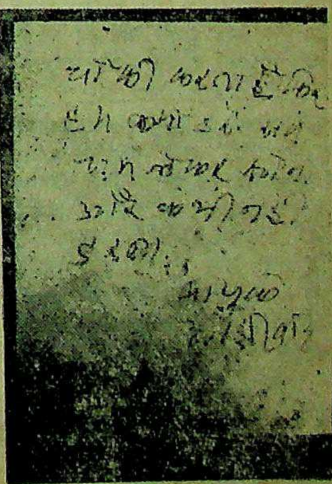

पत्र नं० ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में रेडियो का विस्तार

जनता को साक्षर बनाने का यह एक अपूर्व साधन है

लेखिका, सुश्री कृष्णाकुमारी नाग, एम० ए०, साहित्यरत्न

भारत में रेडियो का विस्तार व्यापक रूप में हो रहा है। इससे जनता की ज्ञान-वृद्धि में पूर्ण सहयोग प्राप्त हो रहा है। इस लेख में लेखिका ने रेडियो के विस्तार की वर्तमान स्थिति का वर्णन करते हुए, इसकी उपयोगिता बतलाई है। लेख विचारणीय और पठनीय है।

आज के युग में रेडियो हमारे लिये नवीन वस्तु नहीं है। उसकी दिन-प्रतिदिन वृद्धि होते देखकर एक बार राष्ट्रपिता बापू ने कहा था कि यह एक आश्चर्यजनक वस्तु है, इसमें ईश्वर की अद्भुत सत्ता, शक्ति पाता हूँ। समस्त भारतवर्ष में रेडियो के विभिन्न स्टेशन प्रतिवर्ष संगीत, समाचार, वार्ता, नाटक आदि के लगभग ३६,९०० घन्टे के प्रोग्राम आकाशवाणी के द्वारा सुनाते हैं। सन् १९४७ में रेडियो के लायसेंस जिन मनुष्यों ने लिये, उनकी संख्या २,३०,०२५ थी और इसके दस वर्ष पूर्व यानी सन् १९३७ में केवल ५०,६५० ही थी। अब तो यहाँ एक इस प्रकार की योजना बनाई गई है कि विदेशों में इसका उचित प्रचार हो। पहले इसका प्रचार केवल अँगरेजी पढ़ी-लिखी जनता तक था पर अब घर-घर में बच्चों के पास तक रेडियो की पहुँच है क्योंकि प्रत्येक भाषा में प्रोग्राम रखा जाता है। गत वर्ष जब कि १५ अगस्त, ४७ को भारत का स्वाधीनता समारोह मनाया गया, देश-विदेश के कोने कोने पहुँचने का श्रेय सूचना तथा ब्राडकास्टिंग सचिवालय को है। विदेशी जनता ने भी हमारे सौभाग्य का घर बैठे-बैठे आनन्द लूटा।

प्रथम तो भारत में रेडियो से भाषण देने के नौ केन्द्र थे, जैसे देहली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, ढाका, त्रिचन पल्ली, लाहौर, लखनऊ और पेशावर। पर 'पाकिस्तान' बन जाने के कारण ढाका, लाहौर, पेशावर तीनों केन्द्र भारतवर्ष में से पृथक् कर दिये गये हैं। शेष स्टेशनों के अलावा स्वाधीनता के प्रथम वर्ष में ही पटना, कटक, जालंधर, अमृतसर, शिलांग, गौहाटी तथा नागपुर इत्यादि सात नये स्टेशन और खोले जा चुके हैं। इस प्रकार अब कोई ऐसा प्रान्त नहीं है जहाँ पर रेडियो-स्टेशन न हो। अनेक प्रान्तीय केन्द्रों में ब्राडकास्टिंग की उचित व्यवस्था की जा रही है। देश में अधिक से अधिक प्रचार करने के लिए भारी योजना तैयार की जा रही है। पाँच मुख्य केन्द्रों में भारी शक्तिवाले ट्रांसमीटर लगाये जायेंगे पर इस योजना में कई वर्ष लग सकते हैं। अतः एक अंतरिम योजना भी तैयार की गई है। इस योजना के अंतर्गत, चुने गये केन्द्रों में पाइलट स्टेशन कायम किये जायेंगे। इन पाइलट स्टेशनों के ट्रांसमीटर शहर और देहाती दोनों क्षेत्रों के लिए सन्तोषजनक कार्य करेंगे और जब बड़े ट्रांसमीटर लगा दिये जायेंगे तब भारत के प्रत्येक देहात के लिए ये छोटे ट्रांसमीटर कुशलता से काम कर सकेंगे। जब ग्रामवासियों के लिए भाषण की योजना की जायेगी, तो उनके लिए उचित शिक्षा का प्रचार हो सकेगा। रेडियो पर इसलिये "देहाती प्रोग्राम" या "पंचायतघर" नामक कार्यक्रम सदैव होता रहता है। यदि किसी खोये हुए व्यक्ति के पदचिह्न का पता लगाना हो तो रेडियो ही सबसे सरल मार्ग है। कटक, गोहाटी, नागपुर स्टेशन अभी तो सूक्ष्म-रूप से कार्य कर रहे हैं।

रेडियो की सर्विस देश-सेवा, समाज-सेवा का कितना उच्च कार्य कर सकती है, इसका अनुमान इस कार्य से लगाया जा सकता है जब गत वर्ष अगस्त सितम्बर १९४७ में अखिल भारतीय रेडियो ने पंजाब तथा अन्य स्थानों में होनेवाले उपद्रव को रोकने के लिये भिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया था। शरणार्थी-समस्या को लेकर भी कभी कभी भाषण हुआ करते हैं, उनके ठहरने और बसाने की उचित व्यवस्था का प्रबन्ध भी रेडियो के द्वारा हो जाता है। जब परिवार के लोग एक दूसरे से बिछुड़ गये—स्त्रियाँ इधर-उधर भगाई गईं, उनका दुःख-भरा संवाद उनके संबंधियों के पास इसी रेडियो के द्वारा पहुँचाया गया। भिन्न व्यक्तियों को उनके परिजनों का पता बताकर रेडियो ने जनता की सबसे अधिक भलाई की जो कि मनुष्य की शक्ति के बाहर की बात थी।

अखिल भारतीय रेडियो से १२ भारतीय भाषाओं में प्रतिदिन ३३ समाचार बुलेटिन ब्राडकास्ट किये जाते हैं। इस वर्ष से कन्नड, काश्मीरी, डोंगरी उड़िया और आसामी भाषाओं के समाचार बुलेटिन बढ़ाये गये हैं। विदेशों में बसनेवाले भारतीयों की सुविधा के लिए और अन्य देशों के साथ भारत का मित्रतापूर्ण बर्ताव रखने के लिए आज तो अखिल भारतीय रेडियो से अन्य १३ भाषाओं में समाचार ब्राडकास्ट किये जाते हैं—अँगरेजी, हिन्दोस्थानी, बर्मी, पश्तो, कओयूं, कन्टोनी, अमाय, इंडोनेशियन, अफगान, फारसी और अरबी।

भारत के उपप्रधान मंत्री तथा भारतीय रेडियो के प्रधान सरदार वल्लभभाई पटेल।

इस वर्ष रेडियो स्टेशनों से एक अन्य कार्यक्रम की आयोजना की गई थी जैसे—स्वाधीनता-दिवस समारोह, महात्मा गांधी जी के प्रार्थना-सभा के भाषण, महात्मा गांधी जी की शव-यात्रा, प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल द्वारा शपथ-ग्रहण, "जलऊषा" प्रथम भारतीय जहाज का समुद्र गमन, एशियाई देशों का अर्थ सम्मेलन, तथा लंका में भी स्वाधीनता उत्सव के सम्बन्ध में आँखोंदेखा हाल ब्राडकास्ट किया गया। गत वर्ष दीपावली उत्सव पर महात्मा गांधी (१२ नवम्बर १९४७) ब्राडकास्टिंग भवन में आये और उन्होंने शरणार्थियों के लिए रेडियो पर से एक भाषण दिया। देश के महान् नेता और नेत्रियों ने भिन्न भिन्न आयोजित विषयों पर रेडियो से भाषण दिया है। स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए प्रत्येक सप्ताह एक-आध शिक्षा-संबंधी कार्यक्रम रेडियो से ब्राडकास्ट हुआ करता है। देश में ज्ञान-विज्ञान का प्रचार करने के लिए रेडियो सर्वोत्तम साधन है।

अखिल भारतीय रेडियो विभाग में ट्रेन्ड कर्मचारियों की बहुत कमी है, अतः १० जुलाई से दिल्ली में एक ट्रेनिंग स्कूल खोला गया है। भारत में रेडियो की उत्तरोत्तर वृद्धि देखना है तो १९४७ के लायसेंसों की संख्या तथा १९३७ के लायसेंसों की संख्या से हम लगा सकते हैं। यहाँ तक देखने में आ रहा है कि बाजार में रेडियो सेट उपलब्ध नहीं है पर खरीदनेवालों की संख्या अधिक है, यहाँ तक कि छोटे-छोटे से दूकानदार भी रेडियो के द्वारा जनता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया करते हैं। प्रदर्शनी दूकानों में अधिक बिक्री होने का रेडियो एक साधन-सा बन गया है। अखिल भारतीय रेडियो का उद्देश्य आज तो जनता की उन्नतिमात्र बन गया है। इसलिए आज भारत-सरकार ने इस बात की ओर अपना लक्ष्य दिया है कि भारत में ही जहाजों के समान सस्ते रेडियो सेटों का उत्पादन किया जाये और लायसेंस देने की प्रणाली में भी कुछ सुधार किया जाये।

क्योंकि भारतवर्ष खेतिहर देश है—यहाँ पर शहरों की तुलना में देहात ही अधिक हैं—इसलिए देहात में रेडियो को लोकप्रिय बनाने के लिए बैटरी-रेडियो-सेटों का अधिक प्रचार किया जा रहा है। बम्बई प्रान्त में ४०० और मद्रास में १००० से भी अधिक रेडियो सेट देहाती भाइयों के लिये लगाये गये हैं। यहाँ तक कि कलकत्ता और बम्बई में तो रेडियो-स्टेशनों से कारखानों के मजदूरों के लिए विशेष प्रोग्राम का आयोजन किया जा रहा है और समय-समय पर उन्हें उनके कर्त्तव्यों का ज्ञान कराया जाता है।

इस वर्ष अखिल भारतीय रेडियो [illegible] कुल ३६,९०० घंटे चालू रूप से [illegible] किया। संगीत का प्रोग्राम भी विशेष [illegible] पाया गाया तथा समाचार का अनुपात १९ और संगीत ४४ अनुपात पाया गया [illegible] भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित सूचना [illegible] हम रेडियो की उत्तरोत्तर वृद्धि का [illegible] लगा सकते हैं।

रेडियो लायसेंस जो कि जनता [illegible] दिय गये :—

सन्	रेडियो लायसेंस
१९२७	३,५९८
१९३०	७,७१९
१९३३	१०,८७२
१९३६	३७,७९७
१९३९	९२,७७२
१९४२	१,६५,६७५
१९४४	१,९४,०००
१९४७	२,३०,०२५

कुछ दिनों से तो रेडियो केन्द्र खो[illegible] में भारतीय रियासतों ने भी सहयोग [illegible] प्रारम्भ कर दिया है—हैदराबाद [illegible] मैसूर तो रेडियो-स्टेशन है ही पर अब काश्मीर में भी ब्राडकास्टिंग केन्द्र खुल [illegible] है। बड़ौदा में भी रेडियो-स्टेश[न] कई [illegible] से सुचारु रूप से काम कर रहा है पर [illegible] भी हमें ऐसा लगता है कि तीस [illegible] जनता इसका पूरा लाभ नहीं उठा [illegible] है; क्योंकि भारतवासी अधिकतर नि[illegible] मनुष्य हैं और रेडियो धनवानों के [illegible] मनोरंजन का साधन बन गया [illegible] अमेरिका, इंग्लैंड, जापान आदि देशों में रेडियो का घर घर में होना एक सामा[न्य] रीति है—उनके जीवन का भोजन, वस्त्र [illegible] समान रेडियो भी एक आवश्यक [illegible] है पर भारत में अभी रेडियो [illegible] महत्ता जन-साधारण की समझ में [illegible] रूप से नहीं आ पाई है। जो [illegible] हो—रेडियो की भाषा जनता की [illegible] भाषा होनी चाहिए क्योंकि रेडियो [illegible] प्रचार जनहित के लिए ही किया जा[ता] है। स्वाधीनता के पूर्व रेडियो से [illegible] प्रकार की भाषा का प्रचार किया जाता [illegible] वह स्पष्ट रूप से उर्दू भाषा रहती थी [illegible] यों कहिए कि अँगरेजी, हिन्दी, उर्दू, ती[नों] मिलकर खिचड़ी हिन्दुस्थानी भाषा हो[ती] थी। प्रतिदिन अखिल भारतीय रेडि[यो] प्रातःकाल 'आदाबअर्ज' करता था [illegible] आज तो कितना अधिक फेर-बदल [illegible] गया है—बंगाल से "नमस्कार"—दि[ल्ली] से "जय हिन्द", बम्बई से "नमस्ते" [illegible] ही सुशब्दों का प्रयोग होता है। चिट्ठि[यों] के उत्तरों की भाषा भी मनोरंजक र[हती] है तथा "बहनों का प्रोग्राम", "बच्चों [का] प्रोग्राम" आदि की भाषा सरल हिन्दी [illegible] करती है जिसमें शिक्षाप्रद बातों का स[मा]वेश रहता है। हम तो दावे के साथ [illegible] हैं कि आज तो रेडियो के प्रचार में के[वल] वृद्धि ही नहीं हो रही है वरन् उस[की] भाषा, भाव, उद्देश्य, कार्यक्रम सबमें [illegible] महान् संशोधन हो गया है—यदा-[कदा] हिन्दी कवि-सम्मेलनों का भी आयो[जन] किया जाता है—जिसमें खड़ी बो[ली] अवधी, छत्तीसगढ़ी, व्रज-भाषा आदि [illegible] महत्ता दी जाती है। भारत-सर[कार] लगातार इस बात का प्रयत्न कर रही है [illegible] रेडियो सर्वसाधारण भारतीयों को उप[लब्ध] होने लगे और पढ़ तथा अपढ़ दोनों के [illegible] उपयोग की वस्तु बन सके। केवल त[भी] २२ करोड़ ग्रामीण जनता की साक्षरता [illegible] का प्रश्न दूर हो सकेगा—साक्षरता त[था] सफाई दोनों एक दूसरे पर आश्रित है। [illegible] यह सब कार्य केवल रेडियो के प्रचार से [हो] सकेगा। इस वैज्ञानिक युग में भारत [illegible] अन्य देशों के समान दिन-प्रतिदि[न] [illegible] करता जा रहा है, जिसे देखकर [illegible] अत्यन्त प्रसन्नता होती है।

(प्रभात [illegible] डीकेट, [illegible])

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत का रेलवे-बजट

क्या जन-साधारण की दृष्टि से यह सफल बजट है ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

भारत-सरकार का सन् १९४९-५० का रेलवे-बजट कितना सफल है, जनता की दृष्टि से यह बजट सफल है अथवा असफल, इन सभी दृष्टियों से इस लेख में बजट की आलोचना की गई है। विद्वान् लेखक ने यह बतलाया है कि रेलवे एक व्यवसाय है। इसकी उन्नति और सफलता जनता के सहयोग पर निर्भर है। लेख सामयिक और पठनीय है इस लेख का प्रथम अंश गतांक में प्रकाशित हो चुका है।

(गतांक से आगे)

...और एक साल खराब न किया गया, ...आशा करनी चाहिए कि १९४० में ...गया कार्य एक युग के बाद पूरा ...। धातु के हल्के भार की सवारी ...बनाने के लिये 'सेन्ट्रल कोच ...फैक्चरिंग वर्कशाप' खोलने का भी ...का विचार है।

...५० एंजिन १५ जनवरी १९४८ को ...है। अप्रैल तक और १२० एंजिन ...वाले हैं। १९४९-५० में और ५०७ ...के आने की आशा है। दिसम्बर ...तक २३४९ माल के नये डब्बे ...पर दिये गये। अगले दो मासों ...और ४८५ माल-डब्बों की वृद्धि की ...गी।

यह प्रगति भविष्य के लिए आशा-...क होते हुए भी, यह प्रश्न उठना ...भाविक है कि यह कितने व्यय के ...धार पर हुआ है। रेलवे-व्यय आज ...युद्ध-कालिक मानदण्ड के आधार पर ...हुआ है। भारतीय रेलवे का संचालन-...बहुत अधिक है। यथा:—

संचालन-व्यय	प्रतिशत
१९३८–३९	५३·१
१९४०–४१	४७·१
१९४२–४३	५१·५३
१९४८–४९	७१·२
१९४९–५०	७६

जो कि युद्ध-काल से भी अधिक है—बिना किसी रोक-टोक के इसका ...ते आना वांछनीय नहीं कहा जा ...ता। १९४९–५० में व्यय-प्रोग्राम ७१ ...रोड़ रु० का है, पर इसमें से १·५ करोड़ ...मुसाफिरों की सुख-सुविधा को बढ़ाने ...होगा। यद्यपि ४·८९ करोड़ रु० रेलवे ...कर्मचारियों पर खर्च किया जायगा और ...०० करोड़ रेलवे-मुसाफिरों पर केवल ...९८ करोड़ रु०।

...साधारण स्थिति में नहीं

एक बात स्पष्ट है कि रेलवे की कार्य-...क्षमता युद्ध-काल की स्थिति पर भी नहीं ...पहुँची है। युद्ध-काल में १,०५,००० माल-...डब्बे भरे जाते थे। अब हर एक प्रकार ...माल की रफ्तनी में गिरावट आ गई ...। संवाहन की कुल माँग और उनकी ...वास्तविक पूर्ति के बीच आज बहुत अन्तर ...। प्राथमिकता का जारी रहना इस बात ...का प्रमाण है कि साधारण स्थिति अभी ...नहीं आई है। रेलवे के पास अब ४० ...माल-डब्बों की कमी नहीं रही है। एंजिनों ...की कमी की शिकायत पर शेष है। पर ...प्रश्न यह है क्या सर्वत्र एंजिनों के होते ...हुए भी अभीप्सित सुधार और प्रगति ...हो जायगी? इसके लिए आधुनिक टेक-...निकल (तंत्र) ज्ञान और मजदूरों में ...उत्साह है। क्या यह विद्यमान है? इसके ...अभाव में वांछित फल कैसे प्राप्त होगा? ...यही कारण है कि १९४५ की अपेक्षा ...कोयले को छोड़कर सबकी माल-लदाई ...घटी है। 'ईस्टर्न इकानमिस्ट' ने इस ...सम्बन्ध में एक तुलनात्मक सारिणी दी है, ...इसको देखने से यह बात स्पष्ट हो ...जायगी। यथा:—

माल डब्बों की लदाई—प्रथम श्रेणी की रेलवे

मासिक औसत (हजारों में)

	कोयला व कोक	अनाज व दालें	तिलहन	रुई	अन्य (विविध)	योग
१९३८	९५	६०	२३	१४	४१०	६०२
१९३९	१०३	६६	२०	१४	४२३	६२६
१९४०	१०५	६१	१८	१	४३३	६३२
१९४१	१०४	६०	१९	१४	४२८	६२५
१९४२	८८	४९	१५	१२	३८३	५४७
१९४३	८७	५४	१४	११	४११	५७७
१९४४	८८	५१	१५	१०	४६४	६२८
१९४५	९७	५१	१५	११	४७८	६५२
१९४६	८९	३६	९	७	२९१	४३२
१९४७ जनवरी	७८	५१	७	१२	४४७	५९५
मार्च	९५	४८	१५	११	४०५	५७४
जून	९५	५८	१२	८	३६०	५३३
सितम्बर	८४	३४	७	६	२६६	३९७
नवम्बर	९०	३०	१०	९	२४९	३८६
दिसम्बर	९३	३२	१०	९	२८८	४३२
१९४८ जनवरी	९४	३६	८	८	३२७	४७३
मार्च	९७	४२	६	१०	३३७	४९२
जून	९१	४५	९	८	२७२	४२५
सितम्बर	९४	३८	८	५	२९१	४३६
अक्तूबर	३०२	३९	१०	७	२८६	४४४
नवम्बर	१०५	३६	९	७	२८२	४२९

इस वार्षिक और मासिक माल-डब्बों की रफ्तनी के चार्ट को देखकर स्पष्ट हो जाता है कि वांछित प्रगति अभी नहीं हुई है। मार्च १९४८ में रफ्तनी चरम सीमा पर पहुँची। साल के पिछले मासों में पुनः तेजी दिखाई दी। पर वह मार्च के समान नहीं पहुँची। पर इन चीजों को छोड़कर अन्य चीजों के लिए माल के डब्बे मिलने में और भी अधिक कठिनाई है। ट्रांसपोर्ट-संवाहन की कमी के कारण उद्योगों की प्रगति में भारी बाधा पड़ी है। इस सम्बन्ध में दो उदाहरण देने काफी होंगे। टीटागढ़ पेपर मिल्स भारत भर में कागज का एक प्रसिद्ध मिल पर इसको अपने लिए आवश्यक कच्चा माल लाने के लिए जितने माल के डिब्बे मिलने चाहिये थे, उसके एक-तिहाई ही कठिनाई से मिले। टायर और ट्यूब के लिए बम्बई और दिल्ली के बीच केवल एक माल-डब्बा प्रतिमास मिला जब कि २० माल डिब्बों की जरूरत है। संवाहन के अभाव के कारण ही रासायनिक द्रव्यों और सीमेंट उद्योग के उत्पादन का स्तर नीचा रहा और माल के डब्बे न मिलने से माल के स्टाक का वितरण न हो सका। हैदराबाद के चारों ओर के कुछ प्रदेशों को छोड़कर सारे देश के अन्दर १९४८ में परिस्थिति बहुत अच्छी रही। फिर भी माल-डब्बों की पूर्ति में एक सादृश्यता नहीं रही, वृद्धि की तो बात ही दूर रही। निस्संदेह कुछ विलंब माल के लदाई-उतराई के कारण हुआ और व्यवसायी समाज इसके लिए उत्तरदायी है। पर कुल कमी का यह केवल एक कारण है।

एंजिनों की कमी

पहले के रेलवे-मन्त्री इसका कारण माल-डब्बों की कमी बताते थे; पर इस बार वह बात नहीं रही है। इसलिये एंजिनों की कमी बताई गई है। बड़ी मात्रा में रेलवे-एंजिन बाहर से मँगाए जा रहे हैं। १९४८ के आरम्भ में ७१९१ में से ६८० रेलवे-एंजिन अपनी औसत आयु पूरी कर चुके थे। इस हिसाब से १० प्रतिशत से कम एंजिन अपनी आयु पूरी कर चुके हैं। पुराने एंजिनों के चाल में दोष का ख्याल करके यदि उनकी कार्य-क्षमता ५० प्रतिशत घटा दें, तो एंजिनों की कमी मोटे तौर पर ५ प्रतिशत रह जाती है। इस पार्श्व-भूमि का ध्यान करने से स्पष्ट हो जाता है कि एंजिनों की स्थिति में सुधार हुआ है। १९४८ में ८६३ एंजिनों का आर्डर दिया

भारत सरकार के अर्थ-मन्त्री श्री जान मथाई

गया, जिसमें वस्तुतः ५० आ गए हैं। १९४९-५० में और ३३७ एंजिन आने-वाले हैं। इस अवस्था में माल के डब्बों की इतनी कमी नहीं होनी चाहिए थी, जितनी कि इस समय है। असली कारण यह है कि माल-डब्बे अपना चक्कर आज भी १२·२१ दिन में पूरा करते हैं। यह सूचित करता है कि रेलवे में निरीक्षण नाम की कोई वस्तु नहीं है। वर्कशाप, रेलवे स्टेशन, मार्शलिंग-यार्ड, शंटिंग आदि में थोड़ी-थोड़ी हुई देरी मिलकर बहुत हो जाती है। यदि इन सब स्थानों पर निरीक्षण कड़ा हो तो यह अवस्था न हो।

श्रम और रेलवे

रेलवे के व्यवस्थित और सुचारू रूप से न चलने का एक बड़ा कारण श्रम-समस्या है। रेलवे-कर्मचारी रेलवे को अपनी चीज नहीं मानते। उनमें अपने कार्य के लिए उत्साह और प्रेम नहीं है। रेलवे बोर्ड और रेलवे-अधिकारियों का बर्ताव इसमें एक मुख्य और बड़ा कारण है। श्रम के प्रति रेलवे बोर्ड का दृष्टिकोण और भावना सहृदय होने के बदले कठोर है। फलतः रेलवे-संचालकों और श्रमियों के बीच एक गहरी खाई है। सरकार रेलवे मैन फेडरेशन के मुकाबले एक और संस्था खड़ी करके, या किसी संस्था को सरकारी संरक्षण देकर इस खाई को नहीं पाट सकती। रेलवे-मन्त्री का यह कहना कि मजदूर-संघटनों को राजनीतिक लक्ष्य की सिद्धि और दलमत उद्देश्य की पूर्ति में उपयोग नहीं करना चाहिए; मालूम होता है कि वे १९४२ को भूल गए हैं। क्या इस बीसवीं सदी में राजनीति से अलग किसी मजदूर संघटन को

शेष पेज १४ पर देखिए

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो -) का टिकट भेज शर्तें लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम में कम्यूनिज्म आया !

कम्यूनिज्म के पर दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैल रहे हैं

लेखक, श्री राधानाथ चतुर्वेदो

कम्यूनिज्म की हवा दक्षिण-पूर्वी एशिया में फैल रही है। यद्यपि कम्यूनिस्ट अभी चीन को पराजित नहीं कर सके लेकिन उनकी गति प्रशांत महासागर की ओर भी बढ़ने लगी है। इस लेख में लेखक ने प्रजातंत्र स्याम की आज की समस्या पर प्रकाश डाला है, जो सामयिक और पठनीय है।

अब तो बैंकाक से भी विप्लव के समाचार मिलने लगे हैं। समस्त एशिया की जनता, जो चीन में कम्यूनिस्ट विजयों को देख रही है, वर्मा में करे-वर्मी संग्राम से त्रस्त है तथा मलाया, हिन्दचीन और हिन्दएशिया में होनेवाले अँगरेजों, फ्रांसीसियों और डचों के अत्याचारों से परेशान है। उसे स्याम के आन्तरिक-संघर्ष के समाचारों से और भी चिन्ता उत्पन्न हो सकती है।

स्याम की राजनीति अत्यन्त सरल है। किन्तु सरल सी चीज भी जब तक हम उसे समझें नहीं, कठिन सी मालूम होती है। यही हाल स्याम की राजनीति का है। वहाँ की राजनीति में अमेरिका से दाँवपेंच और रूसी कूटनीतिक गुत्थियाँ नहीं हैं किन्तु समय समय पर जो सैनिक-विप्लव स्याम में होते हैं और कभी विपुल-संग्राम तथा कभी प्रोदीयांग महामन्त्री अथवा प्रधान मन्त्री बन बैठते हैं उससे कभी कभी साधारण समाचार-पत्र पाठक को परेशानी हो जाती है।

वस्तुतः स्याम की वर्तमान राजनीतिक स्थिति किसी भी प्रकार चिन्ताजनक नहीं है। स्याम अभी तक राजनीतिक संघर्षों और उग्र आन्दोलनों के ज्वार-भाटों से मुक्त रहा है। आज तो एशिया में पाश्चात्य औपनिवेशिक दासता के युग की संध्या आ गई है, किन्तु जब समस्त एशिया दासता के पाश में बँधा था, उस समय भी स्याम एक स्वतन्त्र राष्ट्र था। कम से कम जहाँ तक आन्तरिक शासन और व्यवस्था का प्रश्न है स्याम में वह स्थिति कभी उत्पन्न नहीं हो पाई जो किसी समय भारत, बर्मा, हिन्दचीन, मलाया अथवा हिन्दएशिया में थी। यही कारण है स्याम में उग्र राजनीतिक आन्दोलन अथवा संघर्ष कभी नहीं हुए।

* * *

किसी विदेशी लेखक ने लिखा है—"स्याम में मुश्किल से ऐसे २०० आदमी भी आपको नहीं मिल सकते हैं जिन्हें राजनीति में अभिरुचि हो?" इसका कारण स्पष्ट है, पहली बात तो यह कि स्याम अन्य एशियाई देशों की अपेक्षा अधिक समृद्ध है और दूसरे वहाँ की जन-संख्या भी कम है। इसका स्वाभाविक फल यह हुआ है कि स्याम की जनता को भूखों कभी नहीं मरना पड़ा। जहाँ जनता को पर्याप्त भोजन और वस्त्र मिल जाय वहाँ व्यर्थ के लिए संघर्ष में जनता क्यों पड़े? यही वजह है कि स्याम की विदेशनीति का अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि यदि विवशकारी परिस्थितियाँ ही उत्पन्न न हो जयं तो स्याम तटस्थ रहना ही अधिक पसन्द करता है। सन् १९४२ में जापान ने जब समग्र एशिया रौंद डाला था उस समय जापान के प्रभाव में पड़कर ही स्याम ने मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध घोषणा की थी किन्तु इस युद्ध-घोषणा में भी कितनी झिझक थी इसका अनुमान इसी से लगाया ज सकता है कि स्याम के वर्तमान प्रधान मन्त्री तक ने इस घोषणा का विरोध किया था।

स्याम में राजनीति में अभिरुचि न रखनेवालों में अधिकांशतः वह व्यापारी-वर्ग है तो चीनवासी है। यह व्यापारीवर्ग चीन की आन्तरिक ऊहापोह के कारण स्याम में भाग आया है और वह धनोपार्जन के अतिरिक्त किसी भी प्रकार की राजनीतिक अभिरुचि का विरोधी है। ऐसी स्थिति में स्याम के कृषकवर्ग के लोग तो पर्याप्त समृद्ध होने के कारण राजनीति से अलग रहते हैं और व्यापारी वर्ग धनोपार्जन के कार्य में संलग्न रहता है। अस्तु, कोई भी राजनीतिक आन्दोलन स्याम में व्यापक रूप ग्रहण करने का आधार प्राप्त नहीं कर सकता।

* * *

राजनीति केवल कुछ नौ-सेना और थल-सेना के अधिकारियों तक ही सीमित है जिनकी स्याम में तगड़ी पार्टीबन्दी है। पिछले १६ वर्षों में प्रधान मन्त्रित्व का आसन इन्हीं दो विरोधी दलों में बँटा रहा है और प्रधान मंत्रित्व के आसन को प्राप्त करने के लिए सैनिक-विप्लव के साधन ही अपनाए गये हैं। यहाँ तक मार्शल विपुलसंग्राम जो आजकल स्याम के प्रधान मंत्री हैं, इन तक ने प्रधान मंत्री का पद पिछले बरस सैनिक-विप्लव कराके ही प्राप्त किया है। अभी हाल ही में बैंकाक से जो उपद्रव के समाचार मिले थे उसका रहस्य यह था कि जिन लोगों को अपदस्थ करके विपुलसंग्राम प्रधान मंत्री बने थे उन लोगों वर्तमान प्रधान मंत्री विपुलसंग्राम को अपदस्थ करने की चेष्टा की थी किन्तु उनकी चेष्टा असफल रही और विपुलसंग्राम अपने पद पर अब भी ज्यों के त्यों हैं।

* * *

सन् १९३२ तक स्याम में एक राजा का शासन था किन्तु सन् १९३२ में निरंकुश सत्ता उलट दी गई और स्याम का राजा केवल एक वैधानिक प्रमुख रह गया। जहाँ तक अन्य देशों का सम्बन्ध है वहाँ जब जब राजा के विरुद्ध कोई विद्रोह हुआ है उसमें जनता का हाथ रहा है किन्तु स्याम की तो बात ही निराली है। सन् १९३२ में स्याम के राजा की निरंकुशता उलटने के लिए जो विप्लव हुआ उसमें केवल एक बुद्धिवादी दल का हाथ था। इस बुद्धिवादी दल के नेता प्रिदी फानोमयांग थे। प्रिदी फानोमयांग अभी तक प्रधान मंत्री थे और विपुलसंग्राम भी उनके साथ थे किन्तु विपुलसंग्राम तथा फानोमयांग में स्याम के राजा आनन्द की हत्या के बाद से मतभेद हो गया और विपुलसंग्राम ने फानोमयांग की सत्ता उलट दी और स्वयं प्रधान मंत्री बन बैठे। आजकल फानोमयांग देश निष्कासित है और विपुलसंग्राम की सरकार उन पर राजा आनन्द की हत्या का मामला चला... के लिए खोज कर रही है।

* * *

स्याम के सैनिक-विप्लव भी ... मजेदार होते हैं। प्रत्येक विप्लव ... प्रतिविप्लव में कोई भी नेता एक ... की हत्या नहीं करता। यह एक विशे... है कि दोनों दल घोर प्रतिद्वन्द्विता ... हुए भी एक दूसरे के साथ किसी ... तक सहयोग करते जाते हैं। पिछले म... युद्ध में यद्यपि एक दल जापानियों ... साथ सहयोग कर रहा था किन्तु जापानि... के साथ सहयोग करनेवाले दल में ... बात पर कभी आपत्ति नहीं की कि विरो... पक्ष मित्रराष्ट्रों के साथ क्यों रहता है ... मित्रराष्ट्रों के दृष्टिकोण का समर्थन ... करता है। स्वयं विपुलसंग्राम बहुत दि... तक जेल की हवा खाते रहे थे किन्तु ... में उनको बड़ी छोटी सी बात पर ... कर दिया गया।

* * *

यद्यपि एक दूसरे का रक्त बहाने ... विरोधी दल के नेता बराबर बचते ... हैं किन्तु उनकी प्रतिद्वंद्विता चरम ... तक पहुँचे बिना नहीं रहती। ३ वर्ष ... बैंकाक में राजा आनन्द की उनके ... में जो हत्या की गई थी उसके सम्बन्ध ... फानोमयांग की तलाश की जा रही ... उस समय जब कि प्रधान मंत्री विपुल... संग्राम स्वयं यह स्वीकार कर चुके हैं ... प्रिदी फानोमयांग राजा आनन्द के ... उत्तरदायी नहीं है। विपुलसंग्राम ... अनुयायियों के लिए राजा आनन्द ... हत्या का उतना महत्त्व नहीं है, जि... महत्त्व उनके लिए इस बात का ... राजा आनन्द की हत्या की आड़ में वि... पक्ष को बिलकुल कुचल दिया जाय।

* * *

स्याम की जनता तथा वहाँ के नि... सियों की जो वर्तमान आर्थिक स्थिति ... तथा स्यामवासियों की राजनीति में ... अनभिरुचि है, उसे देखते हुए इस ... की कोई संभावना नहीं दिखलाई ... है कि स्याम में किसी प्रकार का कम्यू... संकट आसन्न है, किन्तु फिर भी वि... संग्राम के साथी इस बात की चेष्टा ... बराबर जुटे रहते हैं कि वह अपने विरो... को कम्यूनिस्ट बताकर उनका सम्पू... से दमन कर दें।

यही कारण है कि अक्टूबर में ... अभी मार्च में जो सैनिक उपद्रव हु... उन्हें विपुलसंग्राम का दल कम्यूनि... उपद्रव बताते अघाता नहीं है।

वस्तुस्थिति यह है कि स्याम ... किसी भी प्रकार की चिन्ताजनक स्थि... नहीं है और न ऐसी परिस्थिति उत्प... होने की निकट भविष्य में कोई आ... ही की जाती है।

* * *

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्यो... बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, ... चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकि... के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली ... मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूतन भावनाओं का तरुण गायक

फिल्म-जगत् के यशस्वी गीतकार श्री मोती बी० ए०

लेखक, श्री उमेश जोशी

मेरा ऐसा ख्याल था कि जो साहित्यकार तथा कवि फिल्मी-संसार में पहुँच जाते हैं, वे फिर अपने साहित्यिक-अस्तित्व को विस्मृति के आवरण में लपेट देते हैं। उनकी सम्पूर्ण साहित्यिक चहल-पहल अन्धकार के विशाल गर्भ में विलीन हो जाती है। परन्तु मेरा यह ख्याल गलत निकला, जब कि मेरी भेंट हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं साहित्यकार श्री मोती बी० ए० से हुई। मैंने उनके अन्दर साहित्यिक जिन्दादिली देखी और देखी भारतीय संस्कृति को नैतिकता की उच्चतम पृष्ठभूमि पर ले जाने की अमर प्रेरणा। मोती जी आज-कल फिल्मी-संसार में गीतकार हैं। उन्होंने फिल्मी दुनिया में गीत लिखकर बड़ा नाम पैदा किया है और कर रहे हैं। वह ख्याति की दुनिया में काफी बढ़ चुके हैं और दिन ब दिन बड़े साहस, लगन, एवं उत्साह के साथ उत्थान-मार्ग पर बढ़े चले जा रहे हैं। इतने स्वल्प समय में उन्होंने ख्याति की ऊँची-नीची घाटियों को चुटकियों में पार कर लिया, उनके सामने अनेक रुकावटें, अनेक कठिनाइयाँ आईं लेकिन उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ रुकावटों की सुदृढ़ चट्टानों को ध्वंस कर दिया। मायूसी के आलम ने भी उनको खूब घेरा, परन्तु वह मायूसी, और निराशा के घने कुहरे को चीरकर अपनी सुनहरी मंजिल की ओर बढ़ते गये। मैंने सबसे बड़ी विशेषता मोती जी के अन्दर यह देखी कि उनमें विषम परिस्थितियों से जूझने की अपरिमित शक्ति है। उनके मार्ग में चाहे कितनी ही भयंकर आँधियाँ, तूफान क्यों न आए लेकिन वह एक क्षण के लिए भी अपने पैरों को डगमगाते नहीं, उस भीषण आँधी-तूफान में वह तिनके की तरह उड़ नहीं जातें, बल्कि बड़ी दिलेरी के साथ जिन्दादिली का दामन पकड़े हुए उठते-बैठते अपनी मंजिल की तरफ बढ़ते हैं। इसीलिए ही आज मोती जी अपनी जीवन-किश्ती को लोल लहरों के टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चला सके, यह नहीं कि उनकी किश्ती भँवरों में न पड़ी हो——भँवरों ने उनकी किश्ती को चकनाचूर भी किया, लेकिन फिर भी भँवर उनकी किश्त. को डुबो न सके। आवर्तों पर विजय प्राप्त करना ही जिन्दगी है। मोती जी के हो शब्दों में सुनिए——"चार दिन की जिन्दगी, आराम ही आराम है। आग पर चलना, मगर हँसना हमारा काम है। खूब है लिखा किसी शायर ने जोशीला ख्याल, दोस्तो यह जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है।"

कष्टों की दुर्गम पहाड़ियों पर चढ़ने की अमर साधना का उज्ज्वल नकशा मैंने मोती जी के विशाल दृष्टि-पटल पर देखा, और तभी वह आज सफलता के सोपान पर सोपान चढ़ते चले जा रहे हैं। परिश्रम की उपत्यका में ही कामयाबी के खुशनुमा फूल प्रस्फुटित होते हैं। मोती जी के जीवन पुस्तक के पृष्ठों को पलटने से यह बात प्रमाणित हो जाती है। उनके जीवन-पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में आपको मिलेगा संघर्ष और विषमताओं के बीहड़ मार्ग के मनोहर नकशे, वे नकशे जो कि मानव को प्रगति के प्रकाश-स्तम्भ की ओर बढ़ाते हैं। जब मोती जी के अरमानों की बस्ती में गम की घटनाओं का दौर-दौरा होता है, जब कि उनके जीवन के इर्द-गिर्द अंधकार

तरुण गीतकार श्री मोती बी० ए०

का साम्राज्य फैला हुआ होता है, तो उस वक्त आप बड़े साहस और लगन के साथ अपने जीवन की गाड़ी को प्रगति की मंजिल की ओर ले जाते है, हाँ, रास्ते में उनको कभी-कभी आशा का दामन बिलकुल खिसकता हुआ मालूम पड़ता है; परन्तु तुरन्त ही वह सँभल जाते हैं। मोती जी काम में अधिक विश्वास रखते है। उनको प्रोपेगेंडा से बहुत चिढ़ है। उनका ऐसा ख्याल है कि हमारा काम ही एक दिन हमें जनता की आँखों का तारा बना देगा। आत्म-प्रशंसा के ढोल पीटने से क्या लाभ? ऐसा प्रायः कहा जाता है कि कवि मनुष्यता की दुनिया से, व्यवहार की दुनिया से एकदम बहुत दूर होते हैं, वे अपनी ही मस्ती में इतने बेखबर एवं बेसुध होते हैं कि उनको दीन-दुनिया का कुछ पता नहीं रहता वे एक अजीब मंजर में अपने को भुलाए रखते हैं, परन्तु यह बात मैंने मोती जी में नहीं देखी, इसका मतलब यह नहीं कि वह सफल कवि नहीं। वह सफल कवि भी हैं और साथ साथ सफल मानव भी। उनकी कविताओं में भी मनुष्यता बड़ी अल्हड़ता के साथ जगह जगह झाँकती है। वह बनावट की दुनिया से, बाहरी तड़क-भड़क से घृणा करते हैं। उनको तो सरलता, सादगी, स्वाभाविकता, सच्चाई अधिक प्रिय है। उनका सम्पूर्ण जीवन ही स्वाभाविकता की पावन भूमि पर क्रीड़ा करता है. उनके अन्दर मस्ती है और मस्ती में पुरलुफ्त खुमारी भी है, और उस खुमारी में कलात्मक जीवन का उभार भी है। उसी रम्य उभार पर उनकी कल्पनाएँ अनुभूतियों की सुदृढ़ता, उसकी व्यापकता, उसकी विराटता, उसकी प्रसारता का भव्य भाव चित्र का सजीव मूर्त निर्माण कर देती है और उस निर्माण का प्रवाह चढ़ती भादों की गंगा सी तृष्णा लिए हुए होता है। आपके काव्य में शास्त्रीय ढंग की अलंकारिक मनोहरता तो मिलती ही है, परन्तु साथ साथ भावान्मेष की रम्यता के प्रवाह में आत्मक सुषमा और समृद्धि के जाज्वल्यमान कगारों पर विश्व-चिन्तन की सूक्ष्म अन्तरदृष्टि का चमत्कारपूर्ण कुलेलों का प्राधान्य भी होता है। प्रातःकाल की रश्मियों के साथ सरोवर की क्रीड़ा करती हुई लोल लहरों के आवर्त के समान उनके आत्मिक भाव हैं। जोकि मानव को अधिक अनुप्राणित करते हैं, क्योंकि उस सौष्ठव रूप में रुहानी ताकत होती है। भावों के फस्ले गुल में जब आशा की डालियों पर पवित्र प्रेम के दिव्य प्रसून प्रस्फुटित होते हैं, तो वे अपनी अद्वितीय सुषमा से मानव को आत्म-विभोर कर देते हैं। मैंने जब मोती जी की साहित्यिक कृतियों को देखा तो मैं दंग रह गया, वह इसलिए कि उन्होंने फिल्मी संसार में रहकर साहित्यिक-साधना को किस प्रकार प्रारम्भ रक्खा? उन्होंने अब तक तेईस-चौबीस पुस्तकें लिख डाली हैं; उनमें से दो-तीन प्रकाशित भी हो चुकी हैं, बाकी प्रकाशित होने के लिए योग्य प्रकाशक के लिए बाट जोह रही हैं। वह अपनी कृतियों के प्रकाशन की तरफ से बहुत लापरवाह हैं, नहीं तो अब तक सभी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी होतीं, जिन लोगों का यह ख्याल है कि

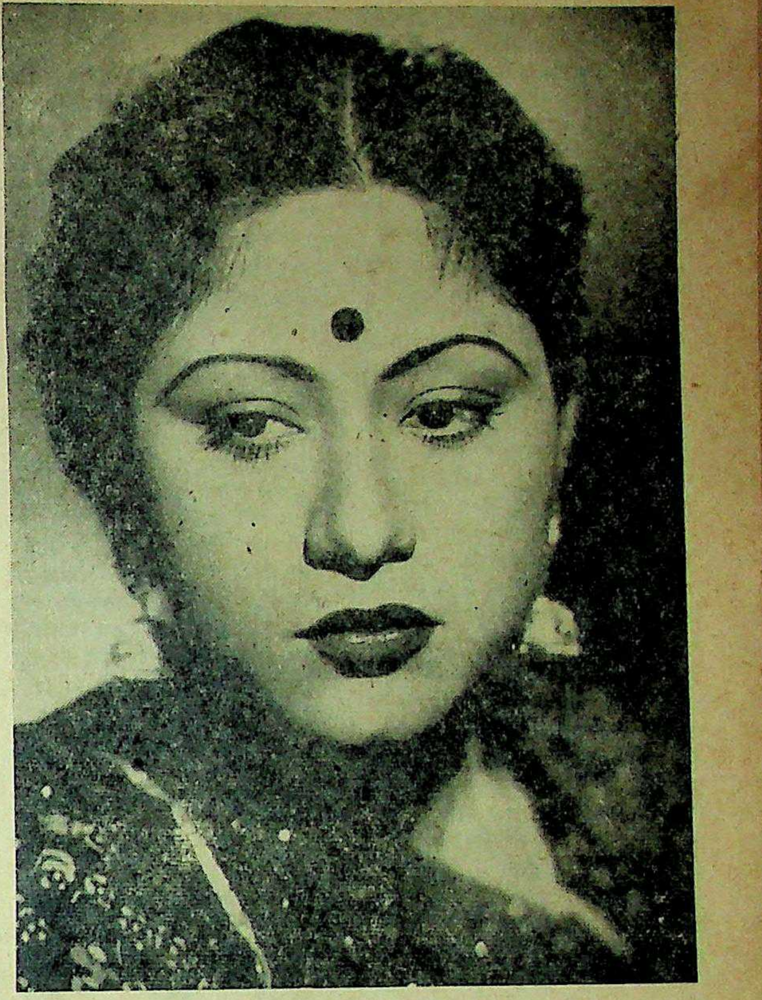

फिल्म कारपोरेशन के नये फिल्म 'नई रीत' की प्रधान अभिनेत्री सुलोचना चटर्जी।

फिल्मिस्तान के नये फिल्म-'एक्ट्रेस' में अभिनेत्री मीना और रेहाना।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तेल मँगवा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)
पो० वारसलीगंज (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

एक समाचार-पत्र में अमरीका की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है कि गत वर्ष में स्त्री-पुरुषों के तलाक की अपेक्षा शादियाँ अधिक हुई हैं।

* * *

ब्रिटेन में मारफिन से भी ६ गुनी लाभदायक दवा की खोज हो गई है। इस दवा को 'हेप्टेलिगन' रसायन कहते हैं हेप्टेलिगन रसायन गठिया की शिकायत, फेफड़े की झिल्ली का प्रदाह, हृदय रोग, दाँत के दर्द, आमाशय (उदर-सम्बन्धी दर्द), पीप बहनेवाला खुला घाव और दूषित घाव जिसका आपरेशन न हो सके पर रामबाण का कार्य किया है।

हेप्टेलिगन रसायन कुछ ही मिनटों के अन्दर कार्य करती है और पुराने मर्जों पर जो आधे घण्टे से तीन या चार घण्टों के भीतर प्रारम्भ हुआ हो वह भी शान्त होता है।

* * *

इँगलैण्ड में सन् १९४८ में तलाक की ४७,०४१ दरख्वास्तें अदालतों में पेश हुईं। कुल ५३३२२ मुकदमों की सुनवाई हुई और ५२२४६ तलाक के प्रार्थना-पत्र स्वीकृत किये गये विशेष बात यह कि युद्ध के पूर्व तलाक की दरख्वास्त देनेवालों में स्त्रियाँ अधिक हुआ करती थीं, किन्तु गत वर्ष तलाक के लिए प्रार्थना करनेवाले पुरुष अधिक हैं।

* * *

विभिन्न देशों में फौज पर अपनी आमदनी का क्या खर्च होता है इसका एक मनोरंजक वर्णन एक पत्र में यों छपा हैं :—

नार्वे ८ प्रतिशत, कनाडा १२ प्रतिशत ब्रिटेन १३ प्रतिशत, रूस १७ प्रतिशत, अमरीका २५ प्रतिशत, फ्रांस १२ प्रतिशत, हिन्दुस्तान ४७ प्रतिशत और पाकिस्तान ५५ प्रतिशत।

भारत में १९४१ की जन-संख्या के अनुसार १९ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। इनकी संख्या ४,७३,२२,००० थी। इसमें उन व्यक्तियों की भी गणना है जो अंगूठा लगाने के स्थान पर हस्ताक्षर करना सीख लिए हैं।

* * *

भारतीय सेना ने कुछ ऐसे कार्य किये हैं जो उसकी महत्ता को बढ़ाते हैं जैसे यहाँ के वायुयान चालक समुद्रतल से २०,००० फीट ऊँचे अपने वायुयान उड़ाते हैं और पैदल सैनिक १८ हजार ऊँची पर्वतमाला पर युद्ध किये हैं। टैंकों ने भी १४ हजार फुट की ऊँचाई पर अपना रणकौशल दिखलाया है।

* * *

वर्तमान समय में एक भारतीय की औसत आमदनी ५०) वार्षिक है जब कि अमरीका के एक व्यक्ति की वार्षिक आमदनी ३०००) रुपया है।

* * *

भारत का क्षेत्रफल १६ लाख वर्ग-मील और जन संख्या ३४ करोड़ है। इँगलैण्ड जो संसार की शक्तियों में एक महान् शक्ति है का क्षेत्रफल ९४ हजार वर्गमील और जनसंख्या केवल ४½ करोड़ है जो युक्तप्रान्त के क्षेत्रफल के बराबर है परन्तु जनसंख्या में भी कम है। युक्तप्रांत की जन संख्या ५½ करोड़ है।

—राजकली

* * *

अन्दमान की आज की राजनीति

(पेज ६ का शेष)

वहाँ तक जाने का कोई खर्चा न लगेगा। परिवार पीछे १० एकड़ भूमि हर एक को खेती के लिये दी जावेगी। खेती आरम्भ करने के लिये प्रत्येक किसान को एक जोड़ी बैल और खेती के सब औजार मुफ्त दिये जावेंगे। खेतों में बोने के लिये बीज भी बिना कीमत के दिया जावेगा तथा दो साल तक उनसे कोई लगान न लिया जावेगा। जब तक पहली फसल न आ जावेगी तब तक उन्हें मुफ्त 'राशन' दिया जावेगा। उन्हें मकान बनाने के लिये मुफ्त जमीन और मकान बनाने का सामान भी दिया जावेगा। उनके बाल-बच्चों की चिकित्सा और शिक्षा का मुफ्त प्रबन्ध किया जावेगा।

शरणार्थियों को यह बड़ा ही अच्छा अवसर है। मैं यह मानता हूँ कि भारत की आजादी इन बेचारों को बड़ी महँगी पड़ी। जो कल रईस थे और आनन्द से रहते थे आज वे शरणार्थी कहलाते हैं। उनका घर छूटा, जमीन छूटी, जायदाद छूटी और कुछ का परिवार भी छूटा। आज वे मारे मारे फिर रहे हैं। जो हुआ सो हुआ, हो सकता है हमारी राष्ट्रीय सरकार से भूल हुई हो और राजनैतिक भूल देशवासियों को बड़ी महँगी पड़ती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमारे नेताओं को दिल में इन शरणार्थियों के लिये स्थान नहीं है। वे जानते हैं कि इस देश की आजादी लड़कर नहीं, इन शरणार्थियों की बरबादी पर खरीदी गई है। इसीलिये वे उनको जितना भी संभव हो सकता है सहूलियत देना चाहते हैं। मैं यह कहता हूँ कि जो शरणार्थी अन्दमान जावेंगे वे यहाँ से अधिक आनन्द में रहेंगे। यहाँ शरणार्थी इतने अधिक हो गये हैं कि न तो उनका ठीक प्रकार से सरकार ही इन्तजाम कर पा रही है और वे स्वयं यह नहीं खोज पा रहे हैं कि कहाँ जीवन-निर्वाह करें। इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब के शरणार्थी मिहनत और व्यापार करने में बहुत तेज हैं। ये लोग अवश्य ही अन्दमान में उद्योग-धन्धे और कृषि की बहुत अधिक उन्नति कर सकते हैं। उनको यह अवसर जाने न देना चाहिये। अभी तक अठारह सौ व्यक्तियों ने मय बाल-बच्चों के वहाँ जाकर बसने की अर्जी दी है। इनमें से कई डाक्टर, शिक्षक और व्यापारी भी हैं।

पहले अन्दमान में एक जेल था जो 'सेलूलर जेल' (कालकोठरी) कहलाता था इसमें बहुत खतरनाक कैदी और राजनैतिक कैदी रखे जाते थे। भारत-सरकार ने उस जेल को गिरवाकर वहाँ उन राजनैतिक कैदियों की स्मृति में एक स्मारक बनवाया है जो देश के स्वतंत्रता संग्राम में बन्दी बनाकर यहाँ लाये गये और उनकी यहाँ मृत्यु हुई। सरकार की आयोजना है कि उस जेल के स्थान पर एक बहुत बड़ा अस्पताल बनवाया जावेगा। शीघ्र ही अन्दमान मलाया इत्यादि अन्य द्वीपों के समान उन्नतिशील हो जावेगा। अब उसका 'कालापानी' नाम हमेशा के लिये कृष्णमुख कर दिया गया।

* * *

जुकाम सर्दी पर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
अमृतांजन
अमृत १८९६ नीलगिरि तैल
हिम, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, दाद खाज आदि बीमारियों में फायदेमंद
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

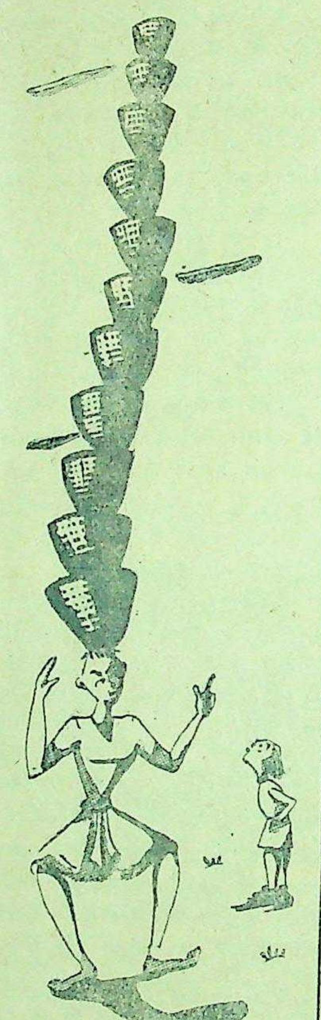

बराबर तौल रखनेवाले प्रयोग करते हैं ?

HAMAM

हमाम साबुन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लिमिटेड

देशदूत में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

सफेद बाल काला !

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक "केश सञ्जीवनी" (सुगन्धित) तैल से बालों का पकना रुककर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २) रु० बाल अधिक पक गया हो तो ४) रु० का तैल मँगावें। पता—
श्री प्रयागराम ६४ काजी डांगा लेन
पो० शिवपुर (हवड़ा)

डोंगरे बालामृत से कमजोर बच्चे ताकतवर बनते हैं।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

दो भाग

भारत के इतिहास में गुप्त-सम्राटों का समय सुवर्ण युग नाम से प्रसिद्ध है। उस समय हमारी सभ्यता उच्च शिखर पर थी। बृहत्तर भारत में हमारी सभ्यता का प्रचलन था। इसमें गुप्त-पूर्व-भारत, नागवंश, भारशिव और वाकाटक-वंश आदि का वर्णन है। फिर गुप्त-सम्राटों के शासन आदि का ब्योरेवार विशद वर्णन है। यह विषय हिन्दी में इतने ब्योरे से अन्यत्र दुर्लभ है। इतिहास-प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य लेना चाहिये। पुस्तक बड़े आकार में छोटे टाइप में, अच्छे कागज पर छपी है। सुन्दर जिल्द है। सचित्र है। मूल्य प्रथम खण्ड ४) चार रुपये; द्वितीय खण्ड ५॥) पाँच रुपये आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ्तार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापू तथा बालक

(पेज ५ का शेष)

यहाँ आने का कष्ट करेंगे और अपना जन्मदिन हम लोगों के बीच मनाएँगे। हम लोग जीजस के जन्मदिन पर गाये जानेवाले 'डेजी' और 'अवे इन ए मैंगर' नामक गान बाजे के साथ गायेंगे और मोमबत्तियाँ जलायेंगे। मारिस, हेनले, पीटर जान, जीन, एलिस, जोन, बरनर्ड, जान, विली, फिलिस, डोरियन, डैविड तथा अन्य सभी बच्चों की ओर से प्यार।" बालकों ने उन्हें यह पत्र एक टोकरी के साथ भेजा, जिसमें दो ऊन के कुत्ते, तीन गुलाबी रङ्ग की जन्मदिन की मोमबत्तियाँ, एक टीन का प्लेट, एक नीली पेन्सिल तथा कुछ मुरब्बे और मिठाइयाँ थीं। गांधी जी लन्दन में उनके प्रिय पत्र का उत्तर न दे सके बच्चों के खिलौने तथा पत्र को वे भारत ले आये। कुछ सप्ताह के बाद जब वे भारत में गिरफ्तार हो गये थे बच्चों ने निम्नलिखित पत्र पाया—

"प्रिय छोटे मित्रो !

मैं बहुधा तुम्हें तथा तुम्हारे सुन्दर उत्तरों को सोचता हूँ जो तुमने उस दोपहर को दिया था जब हम सब एक साथ बैठे थे।

जब मैं किंग्स ले हाल में था तो मुझे समय ही न मिला कि तुम्हें एक पत्र भेजकर तुम्हारे प्रेम-भरे उपहारों के लिये जो तुमने मेरे पास भेजा था, धन्यवाद दे सकता। और अब मैं उस कार्य को जेल से करता हूँ।

मैंने आशा की थी कि उन उपहारों को आश्रम के बालकों को दे सकूँगा किन्तु अपने आश्रम तक पहुँच ही न सका।

यह कुछ अजीब ही है कि तुम्हें जेल से पत्र मिले। किन्तु जेल के अन्दर होते हुए भी मैं अपने को एक कैदी के समान नहीं समझता हूँ। मैंने कोई बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं जानता।

तुम सभी को मेरा प्यार,

तुम्हारा—

जिसे तुम 'चाचा गांधी' कहते हो"

एक बार एक छोटी लड़की ने बापू से पूछा कि—"लोग जनेऊ क्यों पहनते हैं? गाय को माता क्यों कहा जाता है?" बापू ने उत्तर दिया—जनेऊ किसी हद तक पवित्र होने में सहायता पहुँचाती है। आजकल यह बहुत लाभदायक नहीं समझी जाती है। गाय माता के समान समझी जाती है, क्योंकि वह माता के समान दूध देती है और माता तो केवल अपने ही बच्चों को दूध देती है और वह भी एक ही साल तक, किन्तु गाय सभी को दूध देती है। इसीलिए वह सबकी माता है। माता तो अपने बच्चे से बहुत सेवा लेती है—किन्तु गाय की सेवा कौन करता है। यही कारण है कि गाय बड़ी माता है।"

एक दिन एक लड़के ने बापू से पूछा कि क्या राम के समान एक महापुरुष को सीताहरण के पश्चात् एक पागल आदमी के समान शोक करना चाहिये था! बापू ने कहा—"किसे मालूम है कि राम ने इतना विलाप किया था। हमें तो कवि के कथन को ही पढ़ते हैं, किन्तु यह सत्य है कि इस प्रकार का दुःख करना बुद्धिमान् लोगों को शोभा नहीं देता। इसीलिये हम लोगों को विश्वास करना चाहिये कि हम लोगों की कल्पनावाले राम उस भाँति दुःखी नहीं हुये थे।

बापू को पता चला कि हेमप्रभा का पुत्र अरुण बहुत ही बीमार और बड़ा अशान्त था। उन्होंने निम्नलिखित पत्र उस छोटे बच्चे को भेजा।

"माता जी मुझे बतलाती हैं कि तुम बीमार हो फिर भी पढ़ाई तथा काम करने की जिद करते हो। क्या तुम अपने को विश्राम न दोगे जिससे तुम्हारा शरीर फिर से ठीक हो जाय। यद्यपि जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पटलों के समान हैं और यद्यपि हमें उसी प्रसन्नता के साथ मृत्यु का सामना करना चाहिये जैसे जीवित रहते हैं; फिर भी वह आवश्यक है कि जब तक प्राण है शरीर की ओर उचित ध्यान दें। यह ईश्वर के द्वारा नियोजित हमारा कर्तव्य है। और इसके लिये हमें सभी यथोचित वस्तुओं की ओर ध्यान देना होगा। यदि उत्तर दे सकते हो तो अवश्य देना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।"

जब कभी बापू को तनिक भी छुट्टी मिलती थी आश्रम के बालकों को पत्र लिखना आरम्भ कर देते थे। समय समय पर लिखे गये महान् पत्रों में से यह एक पत्र है जिसे वह आश्रम के बच्चों को लिखा करते थे।

"बालको तथा बालिकाओ,

बच्चे स्वभाव से ही निर्दोष, प्रिय तथा शीलवान् होते हैं। जब वे बड़े हो जाते हैं तभी उनमें बुराइयाँ आती हैं। उनकी शरारतें भी निर्दोष होती हैं। यदि तुम्हारे बारे में यह ठीक है तो तुममें से हर एक को दूसरे की सेवा करनी चाहिए। और उन्हें ऊँचा उठने तथा नीचे गिरने से रोकने में सहायक होना चाहिए। तुम्हें एक दूसरे का निरीक्षण करना चाहिये तथा आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरे को आगाह भी करना चाहिये। किन्तु तुम्हारी निगरानी एक पुलिस के समान न होकर ईश्वर के समान होनी चाहिये। ईश्वर हमारा निरीक्षण हमें दण्ड देने के लिये नहीं वरन् पवित्र बनाने के लिए करता है। इसी प्रकार तुम्हारे निरीक्षण का भी ध्येय होना चाहिये। तुम्हें दूसरों को इन बातों की शिक्षा देनी चाहिये जिसे वे नहीं जानते हैं जो कोई झूठ बोलता है उसे प्रेमपूर्वक उससे विमुख करना चाहिये। स्मरण रहे कि जो प्रतिज्ञायें तुमने की हैं उनका पूरा करना तुम्हारा धर्म है।"

विश्व में बालकों का एक बहुत बड़ा समूह इस बात को अपने माता-पिता अथवा उनके लेखों से जान गया था कि 'भारत के श्रीमान् गांधी' बच्चों को बहुत चाहते थे तथा उन्होंने उन्हें कभी हताश नहीं किया और जब कभी भी समय मिला उनके साथ खेलते थे। सन् १९४७ में १ वर्ष के एक विद्यार्थी ने कनाडा से गांधी जी को लिखा कि वह भारतीय डाकखा

बृहत्

अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा

(मूल ले०—महामना डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)

ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)

प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिटल

पो० लहेरियासराय (बिहार)

आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा जगत के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उत्तम चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया कि बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहिये। इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, तथा दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है जो इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी हैं, क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया है। सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६॥) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—

सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)

लहेरियासराय (बिहार)।

'बोन वाइटा' का कैल्सियम और ग्लूकोज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मांस को कड़क बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताक़त का खज़ाना बख़्शता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर उधर की

एक समाचार-पत्र में अमरीका की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है कि गत वर्ष में स्त्री-पुरुषों के तलाक की अपेक्षा शादियाँ अधिक हुई हैं।

* * *

ब्रिटेन में मारफिन से भी ६ गुनी लाभदायक दवा की खोज हो गई है। इस दवा को 'हेप्टेलिगन' रसायन कहते हैं हेप्टेलिगन रसायन गठिया की शिकायत, फेफड़े की झिल्ली का प्रदाह, हृदय रोग, दाँत के दर्द, आमाशय (उदर- सम्बन्धी दर्द), पीप बहनेवाला खुला घाव और दूषित घाव जिसका आपरेशन न हो सके पर रामबाण का कार्य किया है।

हेप्टेलिगन रसायन कुछ ही मिनटों के अन्दर कार्य करती है और पुराने मर्जों पर जो आधे घण्टे से तीन या चार घण्टों के भीतर प्रारम्भ हुआ हो वह भी शान्त होता है।

* * *

इँगलैण्ड में सन् १९४८ में तलाक की ४७,०४१ दरख्वास्तें अदालतों में पेश हुईं। कुल ५३३२२ मुकदमों की सुनवाई हुई और ५२२४६ तलाक के प्रार्थना-पत्र स्वीकृत किये गये विशेष बात यह कि युद्ध के पूर्व तलाक की दरख्वास्त देनेवालों में स्त्रियाँ अधिक हुआ करती थीं, किन्तु गत वर्ष तलाक के लिए प्रार्थना करनेवाले पुरुष अधिक हैं।

* * *

विभिन्न देशों में फौज पर अपनी आमदनी का क्या खर्च होता है इसका एक मनोरंजक वर्णन एक पत्र में यों छपा हैं :—

नार्वे ८ प्रतिशत, कनाडा १२ प्रतिशत ब्रिटेन १३ प्रतिशत, रूस १७ प्रतिशत, अमरीका २५ प्रतिशत, फ्रांस ३२ प्रतिशत, हिन्दुस्तान ४७ प्रतिशत और पाकिस्तान ५५ प्रतिशत।

भारत में १९४१ की जन-संख्या के अनुसार १९ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। इनकी संख्या ४,७३,२२,००० थी। इसमें उन व्यक्तियों की भी गणना है जो अंगूठा लगाने के स्थान पर हस्ताक्षर करना सीख लिए हैं।

* * *

भारतीय सेना ने कुछ ऐसे कार्य किये हैं जो उसकी महत्ता को बढ़ाते हैं जैसे यहाँ के वायुयान चालक समुद्रतल से २०,००० फीट ऊँचे अपने वायुयान उड़ाते हैं और पैदल सैनिक १८ हजार ऊँची पर्वतमाला पर युद्ध किये हैं। टैंकों ने भी १४ हजार फुट की ऊँचाई पर अपना रणकौशल दिखलाया है।

* * *

वर्तमान समय में एक भारतीय की औसत आमदनी ५०) वार्षिक है जब कि अमरीका के एक व्यक्ति की वार्षिक आमदनी ३०००) रुपया है।

* * *

भारत का क्षेत्रफल १६ लाख वर्ग-मील और जन संख्या ३४ करोड़ है। इँगलैण्ड जो संसार की शक्तियों में एक महान् शक्ति है का क्षेत्रफल ९४ हजार वर्गमील और जनसंख्या केवल ४३/२ करोड़ है जो युक्तप्रान्त के क्षेत्रफल के बराबर है परन्तु जनसंख्या में भी कम है। युक्तप्रांत की जन संख्या ५.१/२ करोड़ है।

—राजकली

* * *

अन्दमान की आज की राजनीति

(पेज ६ का शेष)

वहाँ तक जाने का कोई खर्चा न लगेगा। परिवार पीछे १० एकड़ भूमि हर एक को खेती के लिये दी जावेगी। खेती आरम्भ करने के लिये प्रत्येक किसान को एक जोड़ी बैल और खेती के सब औजार मुफ्त दिये जावेंगे। खेतों में बोने के लिये बीज भी बिना कीमत के दिया जावेगा तथा दो साल तक उनसे कोई लगान न लिया जावेगा। जब तक पहली फसल न आ जावेगी तब तक उन्हें मुफ्त 'राशन' दिया जावेगा। उन्हें मकान बनाने के लिये मुफ्त जमीन और मकान बनाने का सामान भी दिया जावेगा। उनके बाल-बच्चों की चिकित्सा और शिक्षा का मुफ्त प्रबन्ध किया जावेगा।

शरणार्थियों को यह बड़ा ही अच्छा अवसर है। मैं यह मानता हूँ कि भारत की आजादी इन बेचारों को बड़ी महँगी पड़ी। जो कल रईस थे और आनन्द से रहते थे आज वे शरणार्थी कहलाते हैं। उनका घर छूटा, जमीन छूटी, जायदाद छूटी और कुछ का परिवार भी छूटा। आज वे मारे मारे फिर रहे हैं। जो हुआ सो हुआ, हो सकता है हमारी राष्ट्रीय सरकार से भूल हुई हो और राजनैतिक भूल देशवासियों को बड़ी महँगी पड़ती है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हमारे नेताओं को दिल में इन शरणार्थियों के लिये स्थान नहीं है। वे जानते हैं कि इस देश की आजादी लड़कर नहीं, इन शरणार्थियों की बरबादी पर खरीदी गई है। इसीलिये वे उनको जितना भी संभव हो सकता है सहूलियत देना चाहते हैं। मैं यह कहता हूँ कि जो शरणार्थी अन्दमान जावेंगे वे यहाँ से अधिक आनन्द में रहेंगे। यहाँ शरणार्थी इतने अधिक हो गये हैं कि न तो उनका ठीक प्रकार से सरकार ही इन्तजाम कर पा रही है और वे स्वयं यह नहीं खोज पा रहे हैं कि कहाँ जीवन-निर्वाह करें। इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब के शरणार्थी मिहनती और व्यापार करने में बहुत तेज हैं। ये लोग अवश्य ही अन्दमान में उद्योग-धन्धे और कृषि की बहुत अधिक उन्नति कर सकते हैं। उनको यह अवसर जाने न देना चाहिये। अभी तक अठारह सौ व्यक्तियों ने मय बाल-बच्चों के वहाँ जाकर बसने की अर्जी दी है। इनमें से कई डाक्टर, शिक्षक और व्यापारी भी हैं।

पहले अन्दमान में एक जेल था जो 'सेलूलर जेल' (कालकोठरी) कहलाता था इसमें बहुत खतरनाक कैदी और राजनैतिक कैदी रखे जाते थे। भारत-सरकार ने उस जेल को गिरवाकर वहाँ उन राजनैतिक कैदियों की स्मृति में एक स्मारक बनवाया है जो देश के स्वतंत्रता संग्राम में बन्दी बनाकर यहाँ लाये गये और उनकी यहाँ मृत्यु हुई। सरकार की आयोजना है कि उस जेल के स्थान पर एक बहुत बड़ा अस्पताल बनवाया जावेगा। शीघ्र ही अन्दमान मलाया इत्यादि अन्य द्वीपों के समान उन्नतिशील हो जावेगा। अब उसका 'कालापानी' नाम हमेशा के लिये कृष्णमुख कर दिया गया।

* * *

के टिकटों का इच्छुक है। उसने कहा—"मुझे आश्चर्य है कि आप मुझे कुछ भारतीय टिकट भेज सकेंगे। मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होगी और जवाब में कनाडा तथा संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका के टिकटों को मैं आपको भेजूँगा। मैं शीघ्र ही आपको फिर लिखूँगा। मैं आपके लिए कुछ टिकट अभी भेज रहा हूँ।" गांधी जी के नजदीकी लोगों का कथन है कि उन्होंने यह आदेश दिया था कि कुछ भारतीय टिकट उनके लेखनी के मित्र को कनाडा अवश्य भेजे जाने चाहिये।

बापू इस बात को जानते थे कि बालक ही मनुष्य का पिता होता है। उन्होंने बच्चों के उचित पालन-पोषण पर विशेष बल दिया था। तथा चाहते थे कि वे स्वस्थ मस्तिष्क तथा स्वस्थ शरीर के हों। वह जानते थे कि ये ही भविष्य के लोग होंगे जो देश के भाग्य को बदलेंगे। बालकों के बेसिक शिक्षा के वे ही जन्मदाता थे। गांधी जी ने उनके अनेक दिशाओं में बढ़ने तथा उन्नति करने में पूर्णरूप से ध्यान दिया। अब यह महान् पिता मर चुके हैं। किन्तु वह अमर भी हैं। वह अपने संदेशों में हमारे बीच अब भी हैं। वह अपने ग्रंथों द्वारा हमारी सहायता तथा मार्गप्रदर्शन करते हैं। उनके वीरता के कार्य अतुलनीय हैं। उनका जीवन की और संतों का-सा दृष्टिकोण था। मनुष्यत्व के लिए दी गई उनकी शिक्षायें बड़ी ही गम्भीर हैं। वह मनुष्यों के बीच ईश्वर थे। उनके संदेश भविष्य में भी वर्तमान रहेंगे। उनके लिए गरीब-अमीर, छोटे बड़े सब बराबर थे। उन्हें सभी से प्रेम था तथा दूसरों के ही लिए वे जीवित थे।

* * *

स्वास्थ्य-चर्चा—अमरूद

(पेज १२ का शेष)

लग जाये अथवा हैजा हो जाय तो इसकी कोमल कोमल पत्तियों का काढ़ा करके थोड़ी थोड़ी मात्रा में पिलाने से लाभ होता है। जिन बच्चों को गुदभ्रंश रोग हो जाता है; अर्थात् टट्टी जाते समय जिनकी गुदा (अत्यन्त प्रवाहण के कारण) बाहर निकल आती है; उनको भी इसके पत्ते के काढ़े से धोना चाहिए। काढ़ा बनाते समय यदि छाल और जड़ भी डाल दी जाये तो और भी अच्छा है। यह काढ़ा अपने संकोचक और रोपक प्रभाव से गुदभ्रंश को बहुत जल्दी ठीक कर देता है।

यदि दाँतों में पीड़ा हो रही हो; मसूड़े फूल रहे हों तो इसके पत्तों को मुँह में रख कर चबाना चाहिए; और थूक फेंकते रहना चाहिए। इससे सभी प्रकार के विकार नष्ट होकर दाँत मजबूत हो जाते हैं।

यदि कोई व्यक्ति मात्रा से अधिक भाँग पी जाये और उसे भाँग के उपद्रव आरम्भ हो जावें तो अमरूद की कोमल पत्तियों का रस पिलाना चाहिए, यदि निकटस्थ स्थान पर पत्तियाँ न मिल सकें तो अमरूद ही खिलाते जायँ। इससे भाँग का नशा उतर जाता है।

दुखती आँखों की लाली, सूजन, पानी का बराबर बहना तथा पीड़ा होना आदि नेत्र-विकारों पर अमरूद की कोमल पत्तियों का लेप आँखों पर कर देना चाहिये, यदि इस लेप को थोड़ा गर्म करके लगावें तो पीड़ा तत्काल नष्ट हो जाती है और यदि इस लेप में थोड़ी सी अफीम और फिटकिरी मिला दी जाय तो वेदना की शांति चिरस्थायी हो जाती है।

(प्रभात सिंडीकेट, वर्धा)

शक्तिहीन पुरुषों के लिए

छोटी आयु जवानी की गलतियों, बुरी संगति से पैदा होनेवाले अनेक प्रकार के अनेक रोगों—प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्र पतन, कमजोरी, सुस्ती, कमरदर्द, सर चकराना, दिमागी कमजोरी, खाँसी, नजला, जुकाम, बदहजमी वगैरह को जड़ से उखाड़ने, वीर्य अधिक पैदा करके शहद की तरह गाढ़ा करने के लिए मेरे पास एक हैरतअंगेज महाशक्ति संन्यासी अक्सीर है जिसको मैंने नौकरी करते समय नागपुर में एक साधु संन्यासी से प्राप्त किया था। कीमत मुकम्मिल कोर्स डाक-खर्च-सहित ५।॥) पाँच रुपये बारह आने जिसमें खाने और लगाने की दोनों अक्सीरें शामिल हैं। पिछले १ वर्ष में ७४५८२ रोगी इसका सेवन कर चुकने के बाद गृहस्थी-जीवन आनन्द से बिता रहे हैं। ये सब चमत्कार इलाका काश्मीर की एक पहाड़ी बूटी का है जो इस महाशक्ति संन्यासी अक्सीर में मिलाई जाती है। आर्डर देते समय अपना नाम तथा पता साफ लिखें, हर ऋतु में लाभदायक है।

प्रोफेसर राजेन्द्रकुमार ए० ए० एम० रिसर्च लिबरेटरी
पी० बी० नम्बर १५ मेरठ (D. W. A.)

विज्ञापन ही व्यापार का सर्वोत्तम साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना ३) रुपये तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको दस हजार रु० नकद इनाम। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। ला० मुन्शीराम जी कलाथ मर्चेन्ट धर्मशाला से लिखते हैं कि आपका सोना अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला, यह देखकर बहुत खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है। १२ तोले सोना वापसी डाक से और भेज दें बाद में आपको और भी आर्डर दिया जायगा। यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है और असली सोने की तरह कूटा या पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिसको हुशियार से हुशियार शर्राफ मुश्किल से पहचान सकता है, मशहूर करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु०। ३ तोला का मूल्य ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला का २८) रु०।

जरूरी नोट :—हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त दी जावेगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी कांटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोला के खरीदार को एक लाकट विमय चैन, दो जोड़ी चूड़ी और दो बाम्बे फैशन अँगूठी और डाक-खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता—

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी (D. A.)

हल्का नं० २२ अमृतसर

१०,०००) रुपये की असली घड़ियाँ मुफ्त इनाम

हमारे प्रसिद्ध काला तेल नं० ५०१ रजिस्टर्ड के सेवन से बाल हमेशा के लिए काले हो जाते हैं और फिर जीवन भर काले पैदा होते हैं। यह हमारे पूज्य स्वामी जी की ओर से लाजवाब तोहफा है। यह तेल गिरते हुए बालों को रोकता है, उनको लम्बे घुंघरवाले और चमकदार बनाता है। जहाँ बाल न उगते हों वहाँ फिर से पैदा करता है। आँखों की रोशनी को तेज करता है। दिमाग को ठण्डक पहुँचाता है। अतीव सुगन्धित है। दिमागी काम करनेवालों के लिए अकसीर है। शौकीनों के लिए उमदा तोहफा है। कीमत एक शीशी २।।) रु० तीन शीशी पूरा कोर्स की रियायती कीमत ६।।) इस तेल को प्रसिद्ध करने के लिए कम्पनी प्रत्येक शीशी के ग्राहक को एक अँगूठी सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और एक असली अमरीकन रिस्टवाच जिसकी गारण्टी १२ साल है मुफ्त।

नोट—तीन शीशी के खरीदार को छः अँगूठियाँ सोना अमरीकन न्यू गोल्ड और तीन अमरीकन रिस्ट घड़ियाँ मुफ्त इनाम दी जाती हैं। आज ही आर्डर भिजवाएँ क्योंकि यह अवसर केवल चन्द दिनों के लिए है। नापसन्द होने पर कीमत वापस की गारण्टी।

संन्यासी आयुर्वेदिक फार्मेसी, (D. A.) हल्का नं० २२, अमृतसर

मुफ्त

... यौवन या बुढ़ापे में किसी प्रकार के रोग से दुखी हों तो हमें शा... विस्तारपूर्वक लिखें। हम आपको अपनी स्वच्छ तथा फलदायक औषधि भेजेंगे। जिसके सेवन से आप शीघ्र ही आरोगी बनकर जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

हर प्रकार का पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

पत्र-व्यवहार करते समय अपना नाम और पता पूरा और सुलेख लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस, दुर्ग्याना,

(P. B. 61) अमृतसर

'देशदूत' में विज्ञापन देकर लाभ उठाइये।

बृहत्

अमेरिकन होमियोपैथिक पारिवारिक चिकित्सा

(मूल ले०—महामना डा० सैमुयल हैनिमैन का आशीर्वाद)

ले०—डा० यदुवीर सिन्हा एम० डी० एस० (U.S.A.)

प्रिन्सिपल—दि सिन्हा होमियो मेडिकल कालेज एन्ड हासपिटल

पो० लहेरियासराय (बिहार)

आज ही ३) एडवान्स के साथ आर्डर भेज दें।

यह पुस्तक होमियोपैथी का मूल मन्त्र है। इसकी एक-एक बात चिकित्सा जगत के गूढ़ से गूढ़ भेद बतानेवाली कुञ्जी है। सदृश विधान ही संसार में सबसे उत्तम चिकित्सा विधान है। विरोधियों का माथा झुका दिया और दुनियाँ को बता दिया कि बीमारी को जड़ मूल से दूर करने के लिये, किस ढंग से औषधि प्रयोग करना चाहिये। इतना ही नहीं, रोगी के लिये दवा को चुनने की विधि, दवा बनाने की विधि, तथा दवाओं के प्रयोग करने की रीति, चिकित्सा सम्बन्धी ऐसी कोई भी बात नहीं है जो इसमें न बताई गई हो। साधारण तथा डाक्टरों के जानने योग्य बातें भरी पड़ी हैं, क्योंकि इसमें होमियोपैथी के हरेक सिद्धांत को बड़ी बारीकी से समझाया गया है। सुन्दर छपाई पृष्ठ १००० मू० ६।।) रु० लागत मात्र।

प्रकाशक—

सिन्हा एण्ड को० (अमेरिकन होमियो फार्मेसी)

लहेरियासराय (बिहार)।

'बोन वाइटा' का केल्सेयम और खाद्योज बढ़नेवाले बच्चों की हड्डियों को मजबूत और मास को फड़क बनाते हैं। बालिगों के लिये भी यह गहरी और मीठी नींद लाता और ताकत का खजाना बढ़ाता है।

कैडबरी का

बोर्न-विटा

केल्सेयम और खाद्योज से भरपूर

K. B. 2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे अनुपम प्रकाशन

कविता, उपन्यास और विज्ञान का आनन्द लीजिए

कवि रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाव-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता और कल्पना की उड़ान की दृष्टि से अनुपम। सजिल्द प्रति का मूल्य ३) तीन रुपये।

शान्त शिष्ट सत्याग्रही प्रताप ने अपने मधुर व्यवहार से विरोधियों को किस प्रकार कट्टर देशभक्त बनाकर अपना अनुगत बना लिया, यह इस उपन्यास में पढ़िए। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

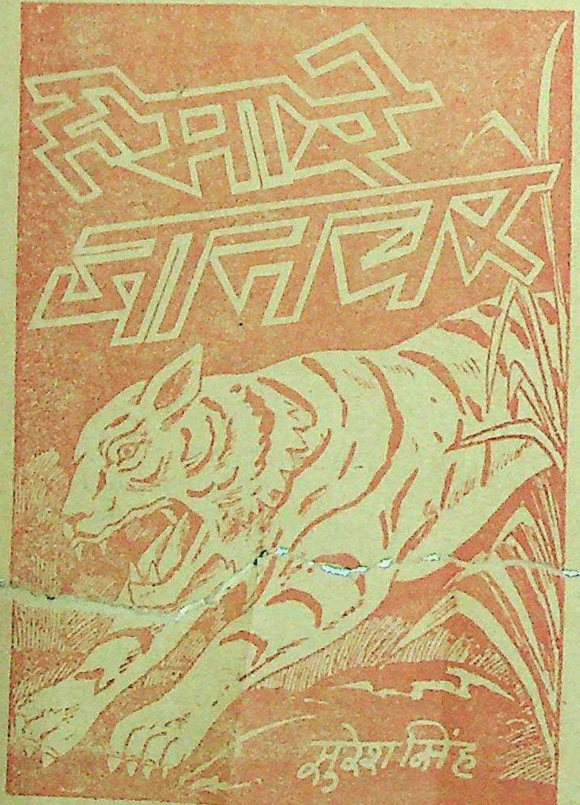

लेखक कुंवर सुरेश सिंह [illegible] यह पुस्तक [illegible] ढंग की एक ही है। [illegible] के साथ साथ [illegible] जानवरों की जानकारी के लिए इसे पढ़िए। स[illegible] प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

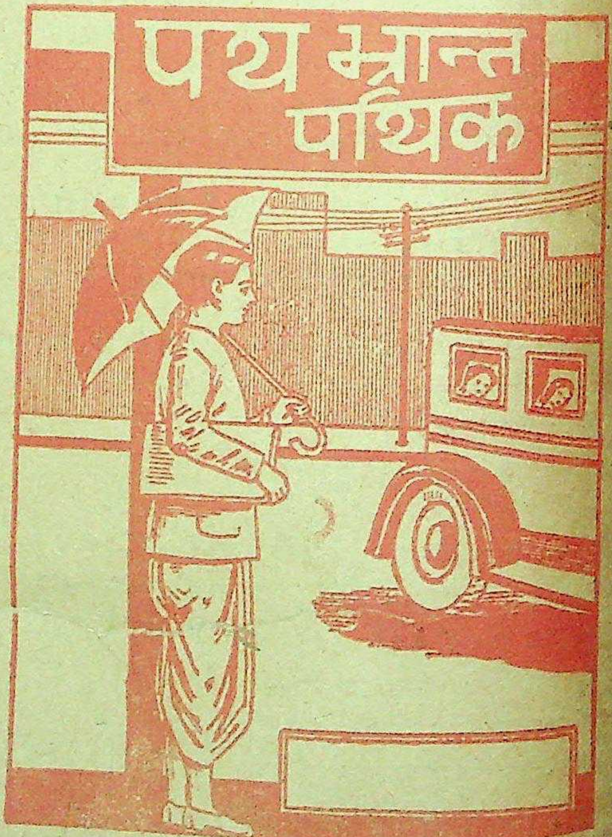

किस प्रकार [illegible] करने पर पुस्तकाकार पृतितुराड का विवाह राजा बहादुर की बेटी [illegible] के साथ हो सका, इसका वर्णन इस उपन्यास में पढ़िए। सजिल्द प्रति का मूल्य २॥) दो रुपये [illegible] आने।

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible] इंडियन प्रेस, लि० [illegible] प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[वा]र्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

[रविव]ार, २७ मार्च, १९४९ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 27th March, 1949

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

२ आना

... इण्डियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने 'भैरवी' की राष्ट्रीय कविताओं को पसन्द किया है। इसकी हजारों प्रतियाँ बिकी हैं। विद्वानों की सम्मति में भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। मूल्य २॥=) दो रुपये ग्यारह आने।

हिन्दी का एक आधुनिक काव्य है। इस काव्य की प्रशंसा विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। मूल्य २) दो रुपये।

यह कवि सोहनलालजी की बालकोपयोगी २३ कविताओं का संग्रह है। मातृभूमि, जय-जय स्वदेश, हवा का झोंका, तुम बढ़ो आगे ही अकेले आदि सुन्दर कविताए इसमें हैं। अच्छे कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य केवल ॥।) बारह आने।

द्विवेदी-काव्यमाला

आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी की अमर कविताओं का पूर्ण संग्रह। पृष्ठ पौने पाँच सौ से ऊपर। अच्छा कागज। सजिल्द प्रति का मूल्य ४) चार रुपये।

श्रद्धांजलि !

आज हम अपने प्यारे बापू को अन्तिम—श्रद्धांजलि समर्पित कर रहे हैं, किन्तु, हम शोक से इतने अभिभूत हैं कि हमें उचित शब्द भी नहीं मिल रहे, जिनसे हम अपनी यत्किंचित् श्रद्धा भी निवेदित कर सकें। फिर भी, भारतीय-वाङ्मय के समर्थ साहित्यकारों ने, हमारी मूक भावनाओं को वाणी प्रदान की है। उन्होंने यथोचित शब्दों में, छंदों में बापूजी का अभिनन्दन किया है। देश विदेश के इन प्रतिनिधि कवियों की कविताओं द्वारा हम बापूजी को आज अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए समुचित सामग्री पा सकते हैं। महात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए—तथा बापूजी की अमर ज्योति को जागृत रखने के लिए **गांधी-अभिनन्दन-ग्रंथ** ७॥) तथा सेवाग्राम १०) (की सेवा स्वीकृत कीजिए)

अपराजिता

कवि 'अंचल' की मादक-मधुर कविताओं का अनूठा संग्रह। भाषा-सौष्ठव, अनुभूति की तीक्ष्णता, कल्पना की उड़ान और रस-प्रवाह की दृष्टि से ये कविताएँ हिन्दी-साहित्य में अनूठा स्थान रखती हैं। पण्डित नन्ददुलारे वाजपेयी भूमिका में लिखते हैं—"अंचल की विरह-साधना में बड़ी ही एकनिष्ठ, सजग, विह्वलताकारी तथा जीवनमय अनुभूतियों का संग्रह है। कवि के वास्तविक विद्रोह का यहीं से आरम्भ होता है। अपराजिता में अंचल की अनुभूतियाँ अपेक्षा से अधिक व्यापक और बहुमुखी हो गई हैं। वियोग के अन्तर्गत कवि की अनेकानेक अन्तर्वृत्तियों और मनोदशाओं का समारोह देखने योग्य हुआ है।"

इन कविताओं को पढ़कर आपको जीवन में एक नई प्रेरणा और नया दृष्टिकोण मिलेगा। पढ़िए और काव्य का स्वर्गीय आनन्द लूटिए। मूल्य ३) तीन रुपये।

कवि और छवि

सुप्रसिद्ध कवि श्री बालकृष्ण राव प्रणीत

कवि श्री बालकृष्ण राव आधुनिक हिन्दी-जगत के बड़ों के कलाकार और सर्वश्रेष्ठ गीतिकार हैं। 'कवि और छवि' आपका नवीनतम गीतों का संग्रह है। प्रत्येक गीत भावना, अनुभूति, आकांक्षा, कल्पना और अंतर्द्वन्द्व से परिपूर्ण तो है ही, साथ ही सरस और हृदय पर मधुर प्रभाव और छाप छोड़ जानेवाला है। हृदय को तन्मय तथा गहन अनुभूति से सराबोर कर देनेवाले ऐसे गीत हिन्दी में आज लिखे ही नहीं जा रहे हैं। 'कवि और छवि' में संगृहीत सभी गीत बिलकुल नवीन हैं, पढ़ते पढ़ते हृदय उद्वेलित हो उठता है। छपाई-सफाई नयनाभिराम। सचित्र और सजिल्द प्रति का मूल्य केवल २) दो रुपये।

यह कवि की नवीनतम राष्ट्रीय कविताओं का संग्रह है। प्रत्येक कविता जीवन में स्फूर्ति का संचार करती है। फ़ेदरवेट पीले कागज पर छपी पुस्तक का मूल्य २) दो रुपये।

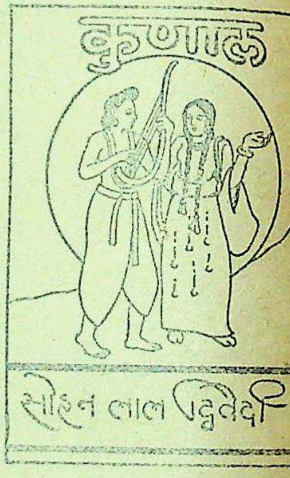

चक्रवर्ती अशोक के पुत्र कुणाल की कथा करुणापूर्ण भाषा में बड़े रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। पढ़ते समय अशोक-कालीन भारतवर्ष का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है। मूल्य १।) एक रुपया चार आने। राज-संस्करण ३)

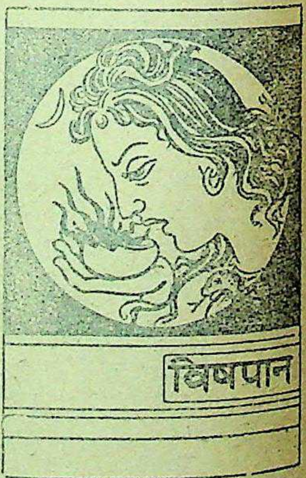

समुद्र-मन्थन की पौराणिक कथा के आधार पर रचित खण्ड-काव्य। भाषा में प्रवाह तथा ओज और पात्रों का सजीव चित्रण कवि सोहनलाल जी की खास विशेषता है। मूल्य १) रुपया।

हल्दीघाटी

इस महाकाव्य पर लेखक श्रीयुत श्यामनारायण पाण्डेय को दो हजार रुपये का देव पुरस्कार मिला है। इस पुस्तक में हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध की पवित्र कहानी का वर्णन बड़े ही अनूठेपन से, फड़कती हुई कविता में, किया गया है। मूल्य २॥=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैनेजर—बुकडिपो हरिदास [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशदूत

वर्ष ११, संख्या २९] [रविवार, २७ मार्च, १९४९

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, आप अमेरिका में भारत की राजदूत नियुक्त होंगी। वट लेंगी अभी से भविष्यवाणी करना ठीक नहीं।

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

भारत सरकार के खाद्य मंत्री श्री जयरामदास दौलतराम ने यह घोषित किया कि सरकार ने भोजन के सम्बन्ध में देश को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प कया है। माननीय मंत्री ने यह भी कहा कि सन् १९५१ के बाद साधारण रूप से विदेशों से अन्न नहीं मँगाया जायगा। अपने राम की समझ में अगर यही सूझ कम से कम एकाध साल पहले या सन् १९४९ के लिए ही कार्यरूप में परिणत की जाती तो कहीं अच्छा होता। सन् १९५१ के बाद अर्थात्, १९५२ में ऐसा दिन आनेवाला है जब कि खुदा चाहेगा तो आयात का कार्य यों ही ठप्प हो जायगा। यूरोपीय राष्ट्रों का रवैया देखकर ऐसा अनुमान होता है कि सन् १९५२ में तीसरी लड़ाई की डुगडुगी पिटने लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। अटलाण्टिक और प्रशान्त महासागर के सम्बन्ध में जो समझौते चल रहे हैं वह तीसरे महायुद्ध के लक्षण बतला रहे हैं। भारत सरकार अपने देश में जहाँ तक हो सके जल्दी से जल्दी अन्न की मँहगी दूर करने की व्यवस्था करे। जनता को वास्तविकता की आवश्यकता है, आदर्शवाद और कल्पना की नहीं। आत्मनिर्भर बनाना, तो आदर्शवादी दृष्टिकोण है ही, किन्तु आवश्यकता है इस समय सस्ते और स्वस्थ अन्न की।

* * *

पुराने समय में राजा-महाराजा कवियों और कविराजों तथा राजपूताने के नरेश चारणों और भाटों को आश्रय देते थे। बड़े बड़े दरबारों में इनकी कवितायें सुनी जाती थीं और उनको पुरस्कृत किया जाता था। रुपये-पैसे से ही नहीं, जमीन-जायदाद से भी। उस समय का प्रभाव आज की कांग्रेस सरकार पर भी पड़ना आरम्भ हो गया है। अभी हाल में मद्रास सरकार ने अपने प्रान्त के चार अच्छे कवियों को राजकवि नियुक्त किया है। मद्रास सरकार के शिक्षा मंत्री ने इनकी नियुक्तियों के समय यह घोषित किया है कि यह कार्य सांस्कृतिक और साहित्यिक विकास के लिए किया गया है। क्या हमारी प्रान्तीय सरकार भी मद्रास सरकार की तरह आगे कदम बढ़ायेगी? क्योंकि इस प्रान्त में भी राजकवि बनने के लिए बहुत से कवि वर्षों से प्रतीक्षा किये बैठे हैं। यदि युक्तप्रान्त के कवियों को राजकवि नियुक्त किया गया तो वह किस प्रकार की संस्कृति और शिक्षा का विकास करेंगे। यह भी पहले से सोच लेना आवश्यक है; क्योंकि यहाँ के कवि प्रायः कम्युनिज्म से प्रभावित हैं और साहित्य में प्रगतिवाद को छोड़कर और कुछ लिख भी नहीं सकते हैं।

* * *

पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मिस्टर लियाकत अली खाँ करांची में राज्य कर रहे हैं, किन्तु उनकी रियासत जो संयुक्त-प्रांत में है उनके नाम की माला जप रही है। इसलिए संयुक्तप्रांतीय सरकार ने निश्चय किया है कि उनकी रियासत कोर्ट-आफ वार्ड के अन्दर कर दी जाय। अपने राम की समझ में मिस्टर लियाकत अली की रियासत संयुक्तप्रान्त की सरकार राज्य की रियासत मानी जाय क्योंकि पाकिस्तान के बन जाने पर यदि मिस्टर लियाकत अली खाँ पाकिस्तान के हो सकते हैं तो उनकी रियासत भी संयुक्तप्रांत की रियासत हो सकती है। सरकार जगमानपुर, नानपुर और सलेमपुर रियासतों को भी कोर्ट आफ वार्ड में लेने का विचार कर रही है। यह भी ठीक ही है, क्योंकि इन रियासतों का प्रबन्ध भी घोटाले में है। बात यह है कि पाकिस्तान बन जाने से मुस्लिम जमींदारों का दिल सच पूछिये तो अब हिन्दुस्तान में नहीं लगता और जब से जमींदारी प्रथा के उन्मूलन की घोषणा सरकार ने की है तब से वह रियासत छोड़कर स्वयं भाग जाने को इच्छुक है। इसलिए प्रान्तीय सरकार जो कुछ कर रही है वह सुन्दर है उसे इस ओर जल्दी से जल्दी कदम बढ़ाना चाहिये।

* * *

इँगलैण्ड के टोरी नेता मिस्टर चर्चिल कुछ दिनों के लिए अमरीका जा रहे हैं। कहा जाता है कि चर्चिल साहब अमरीका में आराम करने जा रहे हैं, किन्तु, वह वहाँ सचमुच आराम करने जा रहे हैं या किसी तिकड़मबाजी से जा रहे इसे जान ही कौन सकता है? सच तो यह है कि संसार की तीसरी लड़ाई धीरे धीरे आगे कदम बढ़ाती आ रही है, जिससे अँगरेज विशेष रूप से परेशान हों। लड़ाई की दाहनी भुजा अमरीका है और बाँई सोवियट रूस किंतु इँगलैण्ड क्या है—इस पर निर्णय कौन दे? यदि महायुद्ध प्रारम्भ हुआ और रूस और अमरीका भिड़ गये तो इँगलैण्ड क्या करेगा यह समस्या बड़ी टेढ़ी है। इसीलिए इँगलैण्ड अभी से दाँव पेंच लगाने में पिल पड़ा है। यदि कुछ हो जाय तो अच्छा ही है। चर्चिल साहब हो सकता है कि अमरीका किसी ऐसे ही उद्देश्य से जा रहे हों। क्योंकि इँगलैण्ड छोड़कर चर्चिल का कहीं भी इधर-उधर जाना रहस्य से खाली नहीं। चर्चिल के जीवित रहते इँगलैंड का साम्राज्यवाद और राष्ट्रीयता कौन सी कर-

* * *

कटक में सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन् ने भाषण करते हुए कहा कि वर्तमान युग में किसी देश का विकास तब तक सम्भव नहीं, जब तक वह थोड़े से लोगों की आर्थिक और जन्मगत सुविधाओं की रक्षा के लिए सक्रिय है—इसलिए कांग्रेसवालों को साहस व क्रियाशीलता और दृढ़ता से कार्य करना है। उन्नति के दिनों में हमें संस्कृति की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। धर्म निरपेक्ष राज्य का अर्थ धर्महीन या ईश्वर विरोधी नहीं है। अपने राम की समझ में डाक्टर राधाकृष्णन् का कहना बावन तोला पाव रत्ती है, लेकिन हमारे राष्ट्रीय नेता जो भारत को असाम्प्रदायिक और अधार्मिक राष्ट्र कहते हुए गर्व का अनुभव करते हैं, वह किस आधार पर? वह असाम्प्रदायिक तथा अधार्मिक राष्ट्र का क्या मतलब समझते हैं? सच तो यह है कि भारत सदा से अपनी संस्कृति और आध्यात्मवादी विचारधाराओं के लिए संसार का सिरमौर रहा है। फिर क्या भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिक भावनाएँ ऐसे नये राष्ट्र में खत्म कर दी जायेंगी? डाक्टर राधाकृष्णन् ने 'सरकुलर स्टेट' की जो परिभाषा की है क्या उसकी ओर राष्ट्र के कर्णधारों का ध्यान जायेगा? जब पाकिस्तान बन गया तो अब परदेवाले पाकिस्तानियों की आर्थिक तथा संरक्षण की चिंता क्यों? यह भारतवर्ष है योरोप नहीं।

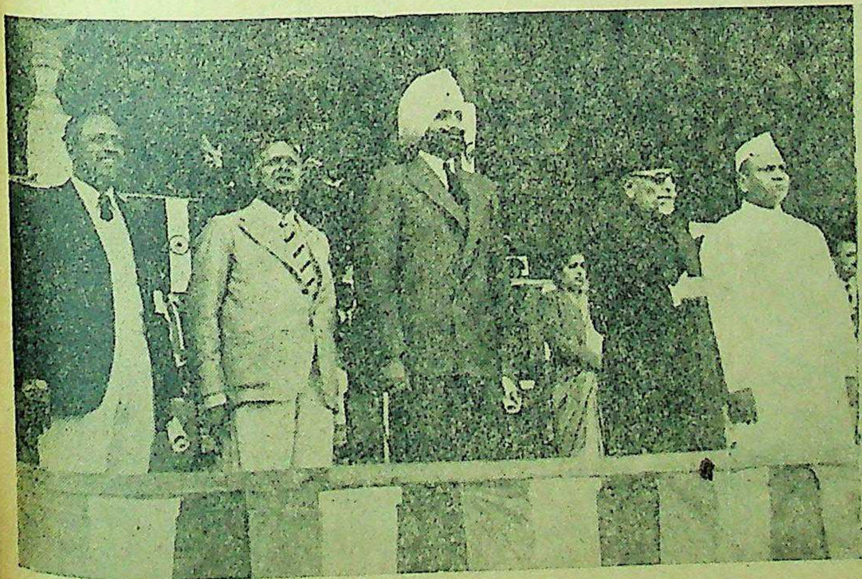

मौलाना आजाद दिल्ली में इरविन स्टूडियो के भीतर १४वीं अखिल भारतीय चैम्पियनशिप का उद्घाटन करते समय।

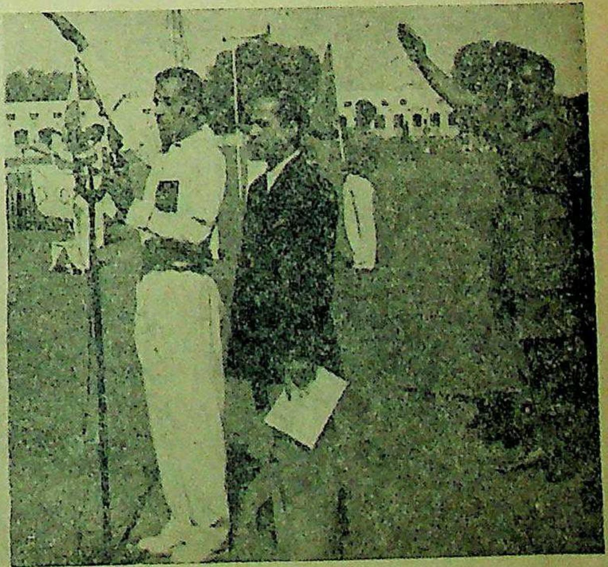

दिल्ली ओलम्पिक टीम के कप्तान श्री के० जी० ककड़ अन्य साथियों के साथ शपथ ले रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक का पृष्ठ

संसार विनाश की ओर !

अमरीका के प्रगतिशील दल के नेता श्री हेनरी वैलेस ने आजकल होनेवाली समुद्री सन्धियों के संबन्ध में अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है, "इन सन्धियों के स्वीकृत होने से तीसरा महायुद्ध प्रारम्भ हो सकता है। ये सन्धियाँ संयुक्त-राष्ट्रसंघ के घोषणा-पत्र का स्पष्ट उल्लंघन हैं। संयुक्त-राष्ट्रसंघ के एक विश्व की एकता का उद्देश नष्ट हो जायगा और परस्पर विरोधी राष्ट्रों के दो गुट सदा के लिए बन जायँगे।" वास्तव में हेनरी वैलेस का यह कथन तथ्य-पूर्ण है। इस समय अमरीका और सेविियट रूस दो महान् राष्ट्र एक दूसरे के विरोधी बन रहे हैं। यही कारण है कि प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर की सन्धियाँ हो रही हैं। इन सन्धियों में अनिवार्य रूप से उन सभी राष्ट्रों को सम्मिलित होना पड़ेगा जो पूँजीपति अमरीका के या तो किसी प्रकार से आर्थिक दबाव में हैं अथवा समुद्री संरक्षा की आवश्यकता समझते हैं। हमारी समझ में इसके दो मुख्य कारण हो सकते हैं—अमरीका को प्रशांत महासागर में अपने संरक्षण की चिन्ता होती है, चीन में कम्युनिज्म की व्यापकता बढ़ने से अमरीकी प्रभुत्व नष्टप्राय हो चुका है। यही नहीं, कम्युनिस्ट दक्षिण-पूर्वी एशिया में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अब तक प्रशांत महासागर में पूँजीपति अमरीका का एकछत्र राज्य है। राजनैतिक, व्यासायिक तथा आर्थिक दृष्टि से अमरीका ने प्रशांत महासागर पर वर्षों से एकछत्र अधिकार स्थापित कर रक्खा है; और यदि कम्युनिस्ट किसी भी दृष्टि से इस ओर अपने प्रभुत्व का प्रसार करते हैं तो अमरीका का क्षुब्ध होना अनिवार्य है।

जापान पर अमरीकन अधिकार है। यदि कम्युनिज्म का इसी प्रकार से विस्तार होता रहा तो वह दिन भी आ सकता है जब कि अमरीका को जापान पर से अपना प्रभुत्व हटाना पड़े। पिछले दिन हमने पढ़ा था कि जनरल मैक आर्थर के पास इस तरह का परिपत्र भेजा गया है जिसमें यह कहा गया है कि जापानी युद्ध के जापानी बन्दियों पर से मुकदमा उठा लेना चाहिये। सम्भवतः जनरल मैक आर्थर ने इस प्रकार के परिपत्र को स्वीकार भी कर लिया है। इसलिए अब सम्भावना है कि जापानी सम्राट् हिरोहितो पर से मुकदमा उठा लिया जाय। यह सब क्यों हो रहा है? इससे स्पष्ट होता है कि अमरीका इस समय कम्युनिज्म की बढ़ती हुई प्रगति से भयभीत अवश्य है और यदि कम्युनिज्म की प्रगति में व्यापकता होती गई तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महान् परिवर्तन घटित हो सकता है।

अटलांटिक महासागर की जो सन्धि हुई है उसका आधार भी अमरीका और रूस की राजनीतिक दलबन्दी ही है। वर्षों से अटलांटिक के क्षेत्र में भी अमरीकन और रूसी स्वार्थों का द्वन्द्व-युद्ध छिड़ा हुआ है। दोनों पूँजीपति राष्ट्र एक दूसरे के प्रति तरह देने को तैयार नहीं हैं। इसीलिए अटलांटिक की सन्धि कितनी शीघ्रता से हुई है। संयुक्त-राष्ट्रसंघ जो संसार के राष्ट्रों की शांति और एकता स्थापित करने के लिए स्थापित हुआ था उसके आदर्शों और सिद्धांतों का इस समय तनिक भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। संयुक्त-राष्ट्रसंघ पर भी अमरीका तथा उसके सहयोगी राष्ट्रों का प्रभुत्व है। सेवियट रूस इस समय संयुक्त-राष्ट्रसंघ से उदासीन है। ऐसी दशा में अटलांटिक की सन्धि से यह प्रमाणित होता है कि अमरीका, ब्रिटेन तथा अन्यान्य साम्राज्यवादी शक्तियाँ एक इस प्रकार का शक्तिशाली दल बनायें जो कम्युनिज्म अथवा सेवियट रूस का विरोधी हो।

बर्लिन की समस्या आज तक हल नहीं हो पाई है। अमरीका, ब्रिटेन तथा सेवियट रूस जर्मनी को अपने अपने ढंग से स्वतन्त्र करने में लगे हुए हैं। किन्तु, क्या सचमुच जर्मनी इन तीनों साम्राज्यवादी शक्तियों की छत्रछाया में अपनी पूर्व शक्ति प्राप्त कर सकेगा, जिसके द्वारा द्वितीय महायुद्ध में वह अजेय प्रमाणित होने लगा! जर्मनी की समस्या भी इस ओर संकेत करती है कि इन तीनों साम्राज्यवादियों में भयंकर राजनैतिक मतभेद ही नहीं, स्वार्थों की प्रतिद्वन्द्विता है। पिछले दिनों स्टालिन और ट्रूमन के मिलने का भी एक राजनैतिक दाँव चला गया था, किन्तु पारस्परिक मिलन नहीं हो सका। प्रेसीडेंट ट्रूमन स्टालिन से वाशिंगटन में मिलना चाहते थे। और डिक्टेटर स्टैलिन स्विट्जरलैण्ड या उसके आस-पास किसी देश में। इस प्रकार घुटे हुए दोनों अन्तर्राष्ट्रीय नेता मिलने की इच्छा करते हुए भी अलग ही अलग बने रहे।

यही सब कारण है कि जिससे तीसरे महायुद्ध का स्पष्ट लक्षण दिखाई देता है। अब तो संसार में यह स्पष्ट हो गया है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में केवल दो ही गुट हैं—अमरीका और सोवियट रूस। अमरीका तीव्र गति से ऐसे उपचारों अथवा तैयारियों को समाप्त कर लेना चाहता है जो उसके लिए युद्ध में सहायक बन सकें। अटलांटिक और प्रशान्त महासागर की संधियाँ इसी का प्रारम्भिक रूप हैं। यद्यपि सोवियट रूस की राजनीति बहुत गुप्त और न समझ में आनेवाली, है किन्तु अमरीकन क्षेत्रों में कम्युनिज्म की व्यापकता से यह सिद्ध हो रहा है कि वह भी प्रत्यक्ष रूप में न सही, किन्तु अप्रत्यक्ष रूप में शान्त नहीं बैठा है। तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ दोनों ओर से होने लगी हैं। संयुक्त-राष्ट्रसंघ की स्थिति इस समय बड़ी डावाँडोल है। उसके आदर्श और उद्देश्य की कोई परवाह नहीं कर रहा है। उसका भी वही आदर्श और उद्देश्य है जो इन साम्राज्यवादी राष्ट्रों का है। ब्रिटेन भी चुप नहीं बैठा है, किन्तु वह उतना प्रत्यक्ष नहीं। यद्यपि ब्रिटेन के वैदेशिक मन्त्री मिस्टर बेविन ने अटलांटिक सन्धि के कार्यों में सक्रिय भाग लिया है और आक्रमणकारी राष्ट्रों की एक चुनौती भी दी है। फिर भी यह निश्चित है कि ब्रिटेन अमरीका के साथ ही रहेगा। वह कम्युनिस्ट कदापि नहीं हो सकता। इस प्रकार तृतीय महायुद्ध का वातावरण पूर्ण रूप से संसार के सामने उभरता हुआ दिखाई दे रहा है।

* * *

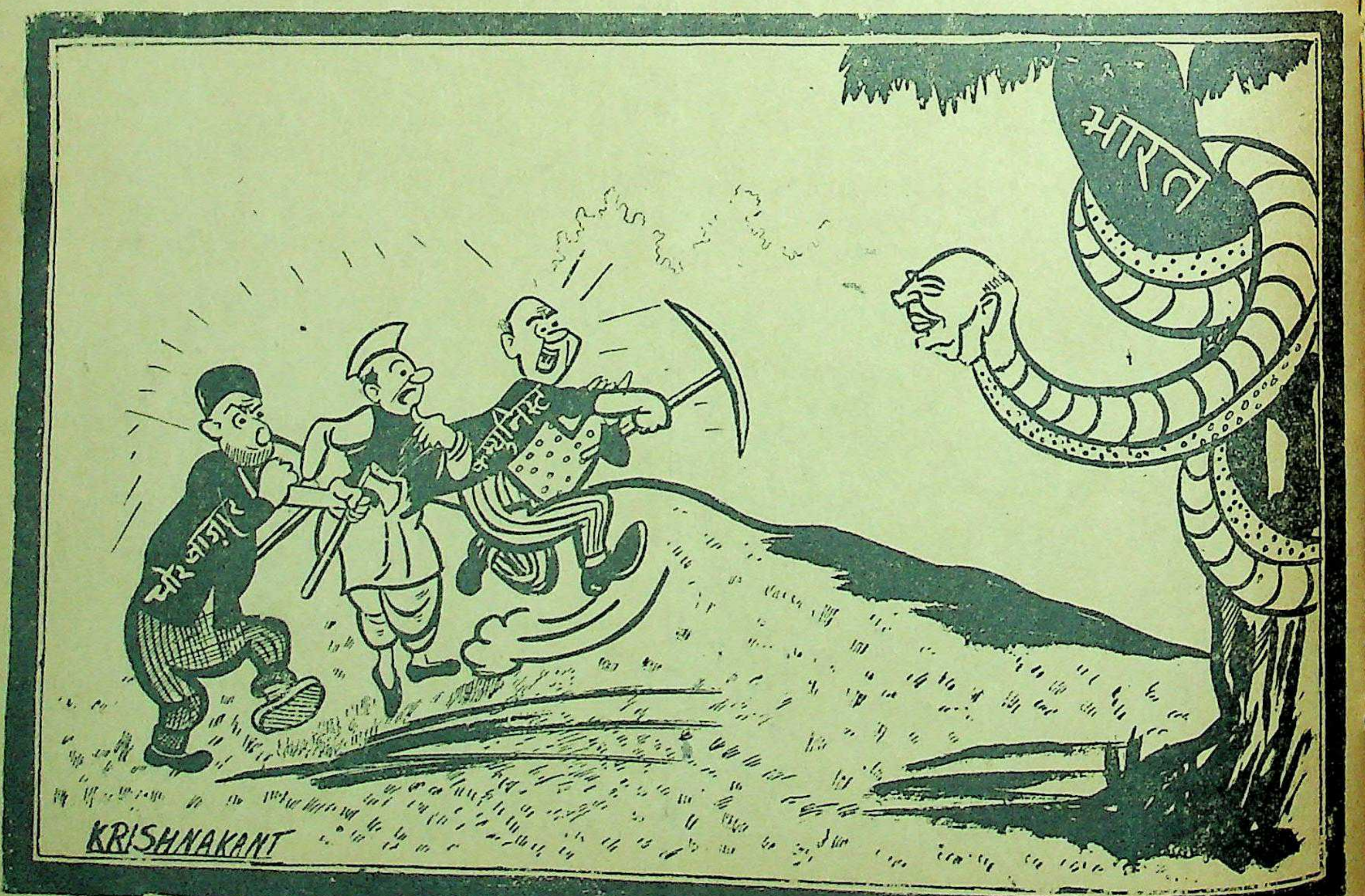

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय स्वातंत्र्य की दो भुजाएँ

महात्मा गांधी तथा शुभमूर्ति सरोजिनी नायडू

लेखक, श्री उमाशंकर शुक्ल

गांधी जी अपने प्रयोग से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का अंचल पकड़ रहे थे जो एक निरस्त्र और शक्तिहीन के लिए असम्भव था, परन्तु ईश्वर की सृष्टि की आधी शक्ति नारी—सरोजिनी के सहयोग ने स्वतंत्रता को शीघ्र ही पास ला दिया। लेखक ने सरोजिनी और बापू के सम्बन्धों का सुन्दर चित्र इस लेख में बड़े ही सुन्दर ढंग से वर्णन किया है, जो जानकारी से पूर्ण और पठनीय है।

सेवाग्राम में महात्मा गांधी के साथ शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू।

देश की प्रथम श्रेणी की कार्यकर्त्री श्रीमती सरोजिनी नायडू का देहावसान भारत के लिए एक और वज्र-प्रहार है। यों तो उनके बारे में समाचार-पत्रों में इतना कुछ लिखा जा चुका है कि उनके जीवन का परिचय देने की अब आवश्यकता नहीं रही है—किन्तु इस लेख में हम यह बताने जा रहे हैं कि सरोजिनी देवी का गांधी जी के जीवन से क्या सम्बन्ध था। सेवाग्राम में बापू रहते थे, इसलिए देश के कोने-कोन से नेतागण बापू से मंत्रणा करने आते थे और सप्ताहों व महीनों तक रहते थे। एक पत्रकार के नाते मुझे प्रायः सभी नेताओं से 'समाचार' प्राप्त करने का प्रयत्न करना होता। बजाजवाड़ी में नेताओं का जमघट लगा रहता। जमनालाल अतिथि-गृह में सभी नेताओं के कमरे 'रिजर्व' रहा करते थे। नेहरू जी का कमरा, राजेन्द्र बाबू का कमरा, सरदार पटेल का कमरा, आजाद साहब का कमरा—आदि कमरों के नामकरण नेताओं के नाम पर हुए थे। सरोजिनीदेवी का भी कमरा था।

पत्रकारों से तो वे बहुत ही विनोद किया करती थीं। जब बोलतीं तो ऐसा मालूम होता कविता बोल रही हों। कभी-कभी मुँह बिचकाकर पत्रकारों को हँसा दिया करती थीं। अकसर वे बैंगनी रंग की रेशमी साड़ी पहनकर आया करती थीं। उनकी क्रियाशील प्रतिभा से भारत का साहित्यिक और राजनैतिक क्षेत्र, पिछले पचास वर्षों से आलोकित और समृद्ध रहता आया है। भारतीय स्वाधीनता के दीर्घ संघर्ष में वे भारतीय मातृ-जाति के महान् त्याग और कठोर निश्चय की मूर्ति बनकर अवतरित हुई थीं। उनका पगसंचार एक योद्धा की भाँति दृढ़ एवं अडिग होता था।

आप गांधी जी को अपना गुरु, अपना नेता व अपना पिता मानती थीं। महात्मा जी का पूर्ण विश्वास आपको प्राप्त था और आजीवन उन्होंने गांधी जी के आदर्शों के अनुरूप ही कार्य किया। वे दीर्घकाल तक बापू की सहयोगिनी और परिचारिका रहीं तथा वे बापू को उनके दीर्घकालीन उपवासों में अपनी सेवा के बल पर जीवित रख सकीं। जीवन, हास्य और माधुर्य से भरी हुई वे जहाँ भी पहुँच जाती थीं, प्रकाश बिखर जाता था।

आजादी की लड़ाई के लिए जिस समय आपको गांधी जी का आह्वान मिला, उन्होंने तुरन्त बिना झिझक के उसमें कूद पड़ने का फैसला किया और तब से ... लड़ाई में वे हमेशा आगे ही ... रहीं। १९४२ के ऐतिहासिक आन्दोलन में बीमार और अत्यधिक शारीरिक कष्ट होते हुए भी वे पहले पहल गिरफ्तार होनेवालों के साथ पकड़ी गईं। जेल में उन्होंने महात्मा जी के साथ रहने की इच्छा प्रकट की—जिसकी अनुमति उन्हें मिल गई थी।

फा० ३

बापू उपवास कर या न करें—इसका बहुत कुछ निर्णय करना सरोजिनी देवी पर रहता था। जिस समय बापू जी आगा खाँ भवन में नजरबन्द थ—उस समय बापू ने अनशन किया था। अनशन के पूर्व प्यारेलाल जी ने डाक्टर सुशीला नायर से पूछा कि तुम्हारे ख्याल से बापूकितने दिनों का उपवास सहन कर सकते हैं?

डाक्टर सुशीला नायर ने कहा—"निश्चित रूप से कहना कठिन है, लेकिन राजकोट के उपवास के वक्त तो पाँचवें दिन ही हालत गम्भीर हो गई थी। उस हिसाब से देखें, तो बापू इस बार बहुत दिन तक टिक नहीं सकेंगे।"

इस पर श्रीमती सरोजिनी नायडू ने कहा—"बापू को उपवास करना ही न चाहिए। इस उमर में वे उपवास के बाद बच नहीं सकेंगे और अभी अन्तिम बलिदान का समय आया नहीं है।"

बा को समझाते हुए श्रीमती नायडू ने कहा था—"आप चिन्ता न करें। बापू तो कहते हैं कि जब तक ईश्वर की आज्ञा न होगी, अन्तरात्मा की आवाज सुनाई न पड़ेगी, वे उपवास करेंगे ही नहीं। और भगवान् उन्हें कभी उपवास करने को कहेगा ही नहीं।"

* * *

११ मार्च १९२२ को महात्मा गांधी को राजद्रोह के अभियोग में छः वर्ष की सजा हुई थी। महात्मा जी ने जेल जाते समय सरोजिनी देवी से कहा था—भारत की एकता, मैं तुम्हारे हाथों सौंपता हूँ।" सरोजिनी ने सिर झुकाकर इस थाती को स्वीकार किया। उन्होंने १९२१ के बम्बई के दंगों में अपने प्राणों को खतरे मे डालकर जो साहसिक कार्य किया था, उसे कौन भूल सकता है।

एक बार लंका में आप भारतीय जागरण का सन्देश पहुँचाने गई थीं। वहाँ आपने एक भाषण दिया था। उक्त भाषण सुनकर वहाँ की राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री एच० जे० सी० पेरीरा ने कहा था—"जिस प्रकार श्री रवीन्द्रनाथ भारतीय पुनरुत्थान के पुरुष कवि हैं, उसी प्रकार सरोजिनी उसकी नारी कवि हैं।"

जिस समय गांधी जी जेल से छूटे थे तो उनकी प्रबल इच्छा थी कि १९२४ ई० की बलगाँव कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर उन्हें सुशोभित किया जाय। पर गांधी जी उन्हीं दिनों जेल से छूटे थे और राष्ट्र उनके नेतृत्व का लाभ उठाने को व्याकुल था। देवी सरोजिनी भी गांधी जी को ही राष्ट्रपति बनाने के पक्ष में थीं इसलिए वे उस वर्ष अध्यक्ष न बनीं और सन् १९२५ में कानपुर में उनको वह गौरवपूर्ण स्थान दिया गया।

धारासना के नमक सत्याग्रह में गांधी जी के बाद सरोजिनी देवी ने भाग लिया था और वे गिरफ्तार की गई थीं। अन्तिम समय तक वे गांधी जी के पद-चिह्नों पर चलती रहीं।

बापू के अवसान पर सरोजिनीदेवी ने अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—"मैं पूछती हूँ कि ऐसे व्यक्ति कैसे मर सकते हैं, जिन्होंने अपने जीवन, आचरण तथा बलिदान, प्रेम, साहस तथा आस्था से जगत् को यह शिक्षा दी कि आत्मिक-शक्ति अखिल जगत् की सेना यहाँ तक कि युगों की सेनाओं से अधिक बली है? क्या बात थी कि जिस व्यक्ति का शरीर लघु तथा दुर्बल था, जिसके पास धन-दौलत नहीं थी, जिसके तन पर पूरे कपड़े तक न थे, जो सूच्याग्र परिमित भूमि के अधिकारी भी नहीं थे, वे हिंसा की अगणित काली शक्तियों से, साम्राज्यवाद की नख-शिख सशस्त्र अक्षौहिणियों से अधिक बलशाली प्रमाणित हुए, तथा उन पर विजय पाई?"

शुभमूर्ति श्रीमती सरोजिनी नायडू सेवाग्राम में विद्यार्थी को अपना हस्ताक्षर दे रही हैं।

"मृत्यु क्या है? मेरे अपने पिता ने मृत्युशय्या पर पड़े-पड़े मृत्यु को सन्मुख खड़ी जानकर कहा था—'न तो जन्म है, न मृत्यु है।' केवल आत्मा एक उच्च सोपान से दूसरे सोपान में आरोहण करती है।"

"मैं यह नहीं चाहती कि मेरे गुरु, मेरे नेता, मेरे पिता की राख शान्ति में रहे, बल्कि मैं यह चाहती हूँ कि चन्दन का कोयला और राख तथा उनकी हड्डियों का चूर्ण जीवन तथा अनुप्रेरणा से इस प्रकार ओतप्रोत रहें कि वह स्वतन्त्रता को चिरजीवी रखें।"

आज सरोजिनी देवी हमारे बीच में नहीं हैं—यह हमारा दुर्भाग्य है। वे हमारी स्वाधीनता की एक महान् शिल्पी थीं। हमारी देशभक्ति और नवीन भारत की अन्तरात्मा का प्रकाश हमें उनकी लेखनी और वक्तृता में मिलता था। डाक्टर सैयद महमूद के शब्दों में वह अच्छाइयाँ और सदगुणों की स्वरूपा थीं। गांधी जी के बाद सरोजिनीदेवी को ही पीड़ित मानवता के लिए सबसे अधिक चिन्ता थी।

गांधी जी के कहे मुताबिक उन्होंने अपना कार्य किया। उन्होंने कविता का स्वच्छंद व निर्मल जीवन छोड़कर जेल में कष्ट सहे। गांधी जी ने पर्णकुटी में जब अनशन-व्रत किया तो श्रीमती नायड ने उनकी खूब सेवा की थी। वे गांधी जी को हँसाती थीं, स्वयं हँसती थीं और कभी-कभी गांधी जी की हँसी भी करती थीं। श्रीमती नायडू की विनोदप्रियता से श्री जार्ज स्लोकोंब इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने उन्हें "गांधी जी के छोटे दरबार का 'विदूषक' कहा था।"

सरोजिनी देवी में विनोद कूट-कूटकर भरा था। वे नेताओं से अकसर समयोचित मजाक कर बैठती थीं। यहाँ तक कि गांधी जी को भी नहीं छोड़ती थीं। एक बार कांग्रेस कार्य-समिति की आवश्यक बैठक हो रही थी। कार्य-समिति के सभी

शेष पेज १८ पर देखिए

गीत

लेखक, श्री नर्मदाप्रसाद खरे

जीवन-वीणा मुखरित कर दो!
नील गगन में स्वर्ण-पंख ले,
मेरे गीत-विहग उड़ जायें;
चम-चम चमक उठें विद्युत्-से
सजल मेघ घन जग पर छायें,
तुम मेरी पावन-गंगा हो, गीतों में गति-स्वर-लय भर दो!
प्रलय-प्रभञ्जन, घन गर्जन में
हँसकर गाने की अभिलाषा;
आँसू के छन्दों में लिख दूँ;—
प्रभू के भाव, गगन की भाषा;
नूपर-शिञ्जित मृदुल चरण तुम, मेरे पाहन-उर पर धर दो!
रवि का तेज, चन्द्र की शोभा,
अमर रागिनी ले स्वर-धारा;—
चपला चमक उठे प्राणों में,
तोड़ सकूँ हँसकर ध्रुव-तारा;
नीलकंठ-सा पिऊँ हलाहल, कल्याणी केवल यह वर दो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशदूत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवनागरी का वैज्ञानिक प्रयोग

भारतीय भाषाओं की अन्य लिपियों से यह अधिक सरल और लोकप्रिय है

लेखक, डाक्टर रघुवीर एम० ए० डी० लिट्

राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी हो इस पर आजकल सैकड़ों लेख निकल रहे हैं, पर अंगरेजी के विद्वान् रोमन लिपि की प्रधानता दे रहे हैं। देवनागरी की उपयोगिता और प्रयोग का लेखक ने वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण किया है। लेख सामयिक, विद्वत्ता पूर्ण तथा पठनीय है।

प्राचीन काल में संसार की अन्य लिपियों की भांति देवनागरी लिपि का प्रयोग कई प्रकार से किया जाता था। इस लेख में हम उन प्रयोगों का संक्षेप में वर्णन करेंगे।

वैदिक साहित्य में बहुत से शब्दों की व्याख्या की है। यह शब्द-व्याख्या शाकल्य के पादापथ से लेकर पाणिनी तक चलती रही। किसी एक वाक्य को विभिन्न शब्दों की व्याख्या के अतिरिक्त अलग-अलग शब्द स्वयं मिश्रित अथवा यौगिक शब्दों के प्रस्तावित विषय थे। इनमें कुछ पृथक्करण प्रत्यय भी थे। एक विशेष चिन्ह वाक्यों को शब्दों की व्याख्या के दिखलाने के लिए बढ़ाया गया और शब्दों के भी अपने अंगों के दिखलाने के लिए चिन्ह बना (यह चिन्ह 'अवग्रह' के नाम से प्रसिद्ध है)। प्राचीनकाल में जो लिपि प्रचलित थी और जिसका प्रचलन आज भी सारे भारतवर्ष में है (जिनमें भारतवर्ष की अन्य लिपियाँ भी सम्मिलित हैं) अक्षरों में शब्दांशसूचक कही जाती हैं। परन्तु हमारी लिपियों में वैसे शब्दांश नहीं, जैसा कि चीनी लिपि और अन्य लिपियां हैं और जो एक ही नियमानुवर्तिनी है। एक शब्दांश-सूचक चिन्ह के प्रत्येक मौलिक सिद्धान्त एक अकेला ध्वनिप्रदर्शक इकाई विचार किया जाता था। वाक्यों में सारे वाक्य, यदि वह लम्बे होते, तो कई छोटी इकाइयों या वाक्यखंडों में विभाजित हो जाते थे। ये वाक्य इकाइयाँ या वाक्यखण्ड चाहे वे छोटे हों या बड़े, उनको एक सुलिखित इकाई की भांति व्यवहार करते थे। उदाहरणार्थ उनके बीच में थोड़ी जगह देकर अलग शब्द नहीं लिखा जाता बल्कि सन्धि का नियम तमाम वाक्यों में प्रयोग होता था। परन्तु बहुत से चिन्ह मूल-लिपि द्वारा बचाये जाते थे। यह पतंजलि महाभाष्य में स्पष्ट है उन लिपियों में उच्चारण अथवा स्वर-सम्बन्धी वाक्य-खण्ड सन्धि नियमों द्वारा चिन्हित हैं। इस प्रकार एक लम्बा वाक्य सन्धि के बिना दो या दो से अधिक ध्वनि-प्रदर्शक वाक्य-खण्डों में विभाजित होकर प्रयोग किया जाता था। आज जब हम संस्कृत बोलते हैं तो उन्हीं नियमों का पालन करते हैं। वैदिक मूललिपियों और किसी समय अन्य मनुष्यों की लिपियों में, यद्यपि एक वाक्य के विभिन्न शब्दों के बीच कोई स्थान खाली नहीं, फिर भी एक शीर्षस्थानीय शब्द सिरे पर अलग से प्रयोग किये जाते हैं। शब्दों का विग्रह पादापथ में बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन किया गया है। उसमें अपरिवर्तनीय आकार बड़े ही सुन्दर हैं। इसलिए पादापथ द्वारा लिखावट में वाक्यविग्रह के प्रथम मूल सिद्धान्त दिये गये हैं।

हमारी लिखावट में हिसाब का चिन्ह एक दूसरा बहुत ही महत्त्वपूर्ण आकार है। तीन अधिक शब्दांश के चिन्ह संसार की अन्य लिपि से असमानान्तर उपयोग किये जाते हैं। सामवेद में हमको यह नवीनता दिखलाई देती है कि संख्याएँ वर्णमाला के अक्षर और चिन्ह संगीत सांकेतिक चिन्हावली में एक विशेष स्थान और अर्थ रखते हैं।

किसी वस्तु पर खुदे अक्षर और संख्याओं का सामवेद में उसी प्रकार प्रयोग किया गया है जैसे कि आधुनिक काल के प्रारम्भिक दिनों में खुदाई में अक्षरों और संख्याओं का प्रयोग हुआ है। संस्कृत मूल लिपियों को भली भाँति जानने और चिन्हों तथा सांकेतिक चिन्हावली को उनके उपयोगों को इकट्ठा करके दोनों का मिश्रित अध्ययन अच्छी जानकारी देगा। इसके हजारों प्रमाण मिलेंगे।

हमारी मूल लिपियों में प्रत्येक पन्ने के किनारे पर संक्षेपकरण के लिए वर्णमाला के अक्षर-चिन्ह प्रगट करने के लिए किये गये हैं। तंत्र में भी ये ही संकेत जादूग्रस्त उद्देश्यों के लिये प्रयुक्त हैं। इस प्रकार संख्याएँ और चिन्हों की बहु-संख्याएँ हैं तो भी भली प्रकार से नहीं समझी जातीं।

हमारे भाषा विज्ञान के पंडित उन्होंने यूरोपीय प्रोफेसरों के साथ में रहकर उनसे शिक्षा प्राप्त की है, रोमन के प्रयोग से प्रभावित हैं। उनका कहना है कि भाषा की वैज्ञानिक व्याख्या के लिए रोमन का प्रयोग बड़ा ही प्रभावपूर्ण है। परन्तु जब मैं लन्दन में पढ़ रहा था उस समय भाषा-विज्ञान के मेरे एक गुरु ने सर्वप्रथम मुझको इसका पाठ पढ़ाया तो मझे बड़ा ही धक्का लगा। कारण बताया गया कि "देवनागरी लिपि शब्दांश-सूचक लिपि है तुम यहाँ शब्दांश लिखते हो अक्षर नहीं। परन्तु व्याख्या के लिए प्रत्येक अक्षर को शब्दांश में मिलाकर लिखने की अपेक्षा अलग लिखना अत्यावश्यक है।" दर्शन-शास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते मैं इस प्रभाव को सहन कर सकता हूँ। "परन्तु देव-नागरी लिपि वर्णमाला के अक्षरों को अलग से नहीं लिख सकती" समझना निरी मूर्खता है। मैं अपनी बाल्यावस्था में जब लघु कौमुदी का अध्ययन कर रहा था तो मेरे पंडित मेरे समझने के लिए अक्षर लिखा करते थे परन्तु शब्दांश नहीं। मैं एक उदाहरण दूंगा—सिद्धि + उपास्थ। इसमें द् ध्, इ तीन अक्षर एक ही शब्द में लिखे गये हैं। किसी भी छात्र को समझने के लिए यह तब तक सम्भव नहीं, जब तक कि वे अलग-अलग न लिखे जायँ। पंडित लोग उन्हें ठीक अलग-अलग लिखते हैं। जब कार्य पूर्ण हो जाता है तो उसे ठीक अच्छी तरह से समझाते हैं कि द् और ध् के पश्चात् आनेवाले य् में परिवर्तन हो जाते हैं। पंडित पुनः चतुरता से द, ध, य को पीछे कर बाद में उ को एक शब्दांशसूचक शब्द में रखते हैं जिसका एक सुलिखित वाक्यखंड 'द्ध्य' बना देते हैं।

शब्दांश-सम्बन्धी लिखावट से समय जगह और धन की बचत होती है। अँगरेजी तथा अन्य यूरोपीय भाषा-भाषी लोग कहते हैं कि जिस प्रकार देवनागरी लिपि में हम टाइप बनाते हैं वे लोग अपनी भाषाओं में हमारी लिपि की अपेक्षा छोटे टाइप बना सकते हैं। परन्तु यह भ्रम है। यदि हम चीनी और जापानी लिपियों पर दृष्टिपात करें और उनकी पुस्तकों को देखें जो ६ प्वाइंट के टाइपों में छपी हैं तो हम ऐसे वक्तव्य देने का साहस न कर सकेंगे। देवनागरी प्रयोग की योग्यता के लाभ को या तो एक शब्दांश-सम्बन्धी लिपि की तरह जैसा कि इसका आज का प्रयोग है उपयोग करते हैं। या जब कभी विश्लेषक उद्देश्यों के लिए आवश्यकता होती है तब रोमन लिपि की भाँति उपयोग करते हैं। इस उपयोग में प्रत्येक अक्षर अलग-अलग रहते हैं। जब व्याख्या बड़े स्तर पर की जाती है तब विराम का चिन्ह व्यंजन के बाद रक्खा जाता है। चाहे विराम न भी हो तो भी छोटे 'अ' के लिए आपस में लिखा जाने पर भी अलग समझा जायगा।

मुझे विभिन्न विज्ञानों से व्यवहार करने का भी अवसर मिला है जिनमें हमारी लिपि ने कितनी ही उलझनवाले प्रश्नों को सुलझाने में सहायता दी है। गणित, रेखागणित और बीजगणित से प्रारम्भ करके ऊँचे गणित जिसमें पूर्ण और गणित की विभिन्न गणना प्रणालियां हैं और शून्य से असीमता तक गिनतियाँ और अक्षरों से मध्य, ऊँचे, अगल-बगल छोटे से लेकर बड़े आकार के प्रश्न समाधान किये जा सकते हैं सभी को हल करने में देवनागरी कभी असफल नहीं होती।

चिन्ह की दृष्टि से, देवनागरी के अक्षरों में बहुत से भेद हैं और जो ठीक शब्दांशसूचक-सम्बन्धी लिपि कहे जाते है। जब कि बेचारे यूरोपीयों के पास रोमन वर्णमाला के २६ अक्षर अथवा उनके दूने ५२ (इसमें बड़े अक्षरों को भी सम्मिलित कर लेते हैं) अक्षर ही हैं। इनमें २४ अक्षर तो ग्रीक वर्णमाला के हैं (इन अक्षरों के बहुत थोड़े अक्षर बड़े अक्षरों में प्रयुक्त होते हैं (वे लोग अपने कुछ अक्षरों को ही उपयोग करते हैं जैसे एक अक्षर L (एल) या S (एस) अथवा R (आर) पौण्ड या डालर अथवा दवाइयों में व्यंजनादि बनानेवाले नुस्खे में लिखा करते हैं।

व्यवस्था पर जब हमारा ध्यान जाता है तब हम चिन्हों और संक्षेप में वर्णन करनेवाले उद्देशों को पाते हैं। इन चिन्हों में १४ स्वर (इनमें छोटे और बड़े 'ऋ' और 'लृ' भी हैं) है। हमारे व्यंजन ३३ हैं। प्रत्येक व्यंजन में स्वरों के योग द्वारा १४ शब्दांश हो सकते हैं। चौदहों व्यंजन २ अधिक श्रेणियां होने से तिगुने हो सकते हैं। एक ऊँची लिपिवाले अनुस्वार के साथ, दूसरे किनारेवाली लिपि विसर्ग के साथ। इस प्रकार देवनागरी की योग्यता बहुत बड़ी है। यह रोमन को पोला करके बहुत पीछे कर देती है। रोमन में जो भी नियम-चिन्हों के बनाने स्पष्ट रूप करने या परस्पर सम्बन्धित होने के चिन्ह जैसे डेट, डैश या लेखनी आदि के चिन्ह और सिर के छोटे वृत्त) प्रयोग किये जाते हैं वे सब ठीक हमारी लिपि की तरह प्रयुक्त होते हैं। वे इटैलिक्स का प्रयोग करते हैं। वह हम भी कर सकते हैं। रोमन लिपिवाले अक्षरों को गिनती प्रयोग करते हैं वैसा हमने प्राचीन काल में किया और आधुनिक काल में भी कर रहे हैं। परस्पर सम्बन्धित होनेवाले चिन्हों को हमने किसी समय उसी अक्षर विभिन्न ढंग से प्रयोग किया है, रोमन और ग्रीक लिपियां आपस में मिलकर तीन जगह टक्कर लेती हैं। जैसे A a B b B अथवा G g Γ y केवल दो जगह जब कि ग्रीक का प्रयोग नहीं करते C c) उसके बदले हमारी एक तालिका है—

क का कि की . . . कं कां किं कीं.
कः काः किः कीः।

देवनागरी स्वरों और व्यंजनों की पूरी सूची में एक ही अक्षर को भिन्न-भिन्न उच्चारण निर्देशक चिन्हों से कितनी ही भाषाओं की भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ या स्वर को बतलाने के लिए अलग-अलग चिन्ह प्राप्य हैं। क्योंकि लेखा-चित्र या रेखा-चित्र के कार्य जिसमें आड़ी रेखा और ऊर्ध्वाधर रेखाओं के स्तरों के हवाला द्वारा निश्चित दशाएँ बतलाई गई हैं। एक श्रेणी को स्वरों द्वारा और दूसरी को व्यंजनों द्वारा चित्रित करने की सर्वोत्तम सुविधा देव-नागरी लिपि में मौजूद है। इस प्रकार लेखा या रेखा-चित्र में की अथवा इत्यादि की विशेष स्थिति होगी।

यह एक बड़ा विषय है और मुझे सन्देह है कि मैं देवनागरी लिपि की उच्चता को वैज्ञानिक उद्देश्य के लिए व्याख्या करने के योग्य नहीं हो सका। उपर्युक्त विषयों का हवाला देकर विभिन्न ही उद्देश्यों का ऐतिहासिक दृष्टि से चित्रित करते हुए एक ग्रन्थ तैयार किया जा सकता है। परन्तु मेरा विश्वास है कि यह छोटा सा लेख भारतवर्ष की सहोदर लिपियों और देवनागरी के प्रयोग का आश्वासन दिलाने में काफी सहायक होगा। यह लिपियाँ सिद्ध करती हैं कि देश के लिए एक सम्पन्न पैतृक धन हैं जो आधुनिक युग के उद्देश्यों के सफल बनाने में सहायक होगी।

'मंजरी'

सचित्र कलात्मक कहानी मासिक

जनवरी १९४८ से 'मंजरी' प्रतिमास अपूर्व सजधज के साथ प्रकाशित हो रही है। तिरङ्गा आवरण और दर्जनों चित्र रहते हैं। श्रेष्ठ कथाकारों की सरस कहानियाँ, धारावाहिक उपन्यास और कथा-साहित्य पर गम्भीर आलोचनात्मक लेख पढ़ने की रुचि हो, तो आप 'मंजरी' के वार्षिक ग्राहक बन जाइए। 'मंजरी' को जब जिसने देखा, मुग्ध गया हो। विद्वान् आलोचकों और पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वार्षिक मूल्य ६) छः रुपये।

मैनेजर—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी

खाली बोतल

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

मनुष्य जीवन में विपत्तियों का सामना करता है। जब कभी वह घबड़ा जाता है, तो उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है, और दूसरे भी ऐसे समय में साथ नहीं देना चाहते। पर जैसे ही वह विपत्तियों से दूर होकर समाज में चमकता है तो फिर वे ही लोग अपनाने लगते हैं, इसलिए नहीं कि आदरवश बल्कि धनवश परन्तु पद्मा और जगदीश बाबू निस्वार्थ प्रेम करते हैं, जिसका सुंदर चित्रण किया गया है। कहानी मार्मिक, सुंदर और पठनीय है।

रिमझिम आसमान बरस रहा था। [साव]न का महीना। दूर कहीं पर औरतें [गा] रही थीं। उनके गाने का स्वर कमरे [में प]ड़े हुए जगदीश बाबू के कानों में [आ] रहा था—'सावन भी आ गई सजनी, पिया नहीं आये।' मकान के नीचे [सड़]क पर साये में बैठा हुआ पकौड़ीवाला [अप]नी चिर अभ्यस्त आवाज लगा रहा [था]—'गरमागरम पकौड़ी...मौसम की [बहा]र...'

—और तभी जगदीश बाबू ने आतुर [भा]व में गहरे हो आये आसमान की ओर [से] आँखें फेरकर कमरे की ओर देखा। [अ]द अपनी ओर, उन्होंने गहरी वेदना [की] साँस ली और छोड़ दी। सिर आराम [कु]र्सी पर पीछे डाल दिया। दृष्टि कमरे की [छ]त की ओर लगा दी और उनका मन [का]प गया कि काश, वह भी सावन मनाते! [झू]ला झूलते! सैर करते! इन रिमझिम बूँदों में भीगते। नदी किनारे जाते। आम चूसते। मित्रों से हँसी-मजाक करते। और—और—

जगदीश बाबू ने फिर अपनी दृष्टि [को] कमरे के फर्श पर टिकाया। मानो एक [वे]दना ही थी उनके मन में, एक टीस; [जि]सने बरबस ही उस प्रौढ़ व्यक्ति के [शा]न्त और स्वस्थ मानव को बेचैन और अव्यवस्थित बना दिया। निदान, अपनी उस अवस्था में ही, उन्होंने फिर बाहर की ओर देखा, कैसा शान्त और सुहावना मौसम था, वह! कितना भावुक! कितना मनोरम! एक तरफ बरसात थी, गरम पकौड़ियाँ थीं और दूर किन्हीं सुन्दर और युवा नारियों का यह सावन गीत...

हाँ, निःसन्देह, जगदीश बाबू ने सोचा कि वह क्यों दूर हैं? क्यों हैं, अकेले और एकाकी? उन्हें भी रस चाहिए, उमंग चाहिए, जीवन चाहिए? और तब उन्होंने अपनी थकी आँखों से उस बरसते हुए आसमान को देखते हुए कहा—'यह मेरे लिए नहीं...मुझको नहीं!'

लेकिन मन तो इच्छुक था, जैसे अधीर; उसने तुरन्त ही जगदीश बाबू के मानस पर जैसे आघात करते हुए कहा—'क्यों नहीं मेरे लिए! तो—?'

भला जगदीश बाबू इसका क्या जवाब देते। कैसे कहते कि उनकी बहार गई, उनके जीवन का जो सावन था, वह तो आया और चला गया। अब नहीं आयेगा। अब वह उन्हें नहीं मिलेगा।

तभी जगदीश बाबू ने याद किया, अपना वह गौरवपूर्ण दिन, वह बहार का मौसम, जब कि वह युवा थे, पैसेवाले! उन्हें इस बात का धोखा हो सकता था कि शायद आज के जगदीश में और बीस वर्ष पूर्व के जगदीशचन्द्र में कोई अन्तर नहीं; परन्तु जब वह देर तक उसी अवस्था में बैठे रहे और अपने मन की आकुल वाणी को सुनते हुए ही व्याकुल और बेचैन बनते गये, तो बरबस हीं, मानो अज्ञात भाव में, जीवन के उस स्थल पर पहुँच गये कि जहाँ से वह चले थे और उसी को अपने जीवन का आराम कह सकते थे। उस विषय को पाकर वह सुखी हुए। निदान, वह उसी में डूब गये।

उन्हीं दिनों की कथा है कि जब जगदीश बाबू यौवन के द्वार पर आये, तो पिता का देहावसान हो गया। दैव की बात कि उसी के अनन्तर माता ने भी अपने सफर का अन्त कर दिया। यों एकाएक ही जगदीश बाबू को माता-पिता से छूटकर अतिशय दुःख हुआ। उस दुःख में जिसने साथ दिया, वह थी पद्मा, सुकुमार और सलोनी। पद्मा युवा तो थी, परन्तु अविवाहित भी थी। जाने किस भावनावश वह जगदीशचन्द्र को अपना कह सकी थी। सूने घर में जब जगदीश बैठा होता, तो तभी पद्मा उसके पास आती। वह धनिक की पुत्री थी। समाज की बनाई हुई दृष्टि में वह जगदीशचन्द्र से ऊँची थी, लेकिन आश्चर्य कि प्रेरणा पद्मा ने दी। वह स्वतः ही उस ओर आई। वह जगदीश के बहते हुए आँसुओं को देख, अपने को नहीं सहार सकी। एक दिन जब सचमुच ही जगदीशचन्द्र चिन्तित था और बेचैन; तो पद्मा ने उसके पास आकर अपने आँचल से उसके आँसुओं को पोंछते हुए कहा—'तुम रोते हो,—छिः!'

जगदीश ने कहा—'मैं अकेला हूँ,—मैं अभागा!'

'मैं तो साथ हूँ,—मैं तुम्हारी—'

जगदीश ने आकुल भाव में कह दिया—'आह, पद्मा!'

किन्तु उन्हीं दिनों पद्मा की मा ने पा लिया कि लड़की जगदीश के पास जाती है। उस दिन की सन्ध्या के झुटपुटे में, मा जोर से चीखकर बोली—'हाँ, तू है इसकी! कलमुँही, बदजात—'

पद्मा ने आतुर और भीत बनकर कहा—'मा—'

'चुप, नालायक, गधी!'

लेकिन पद्मा ने फिर मा के पैर पकड़कर कहा—'मा, ये अकेले—'

पद्मा ठिठक गई पर बोल न सकी। जगदीश ने कहा—पहचानती हो?

'लड़की, मैं तेरा मुँह नोंच लूँगी। गला घोट दूँगी। जहर दे दूँगी।' मा ने एक ही साँस में फिर जगदीश को ओर देखा और कहा—'तू भी सुनता है! जान की खैर है तो अपना मुँह काला कर जा! मा-बाप मर गये, तो साँड बन गया,—बेशर्म! पराई 'बहू-बेटियों पर—'

'मुझे गलत मत समझो, पद्मा की मा!'

मा ने कहा—'मैं, ठीक समझती हूँ। यह इज्जत का सवाल है। लड़की की इज्जत का सवाल, इसके घर का सवाल!' वह नरम बनी और कूटनीतिज्ञ बनकर बोली—'भैया, मैं जानती हूँ, तू बुरा नहीं। पर कहनेवालों का मुँह कौन पकड़ सकता है? मैं कहती हूँ, अब तू घर में क्यों बैठा है? काम कर, शहर छोड़ जा। कहीं और चला जा। देश चोरी, परदेश भीख—'

हाथ मलते हुए जगदीश बोला—'मैं चला जाऊँगा। तुम्हारी बदनामी न कराऊँगा।'

तभी अपनी रोती हुई आँखों से पद्मा ने जगदीश की ओर देखा और वह घर छोड़ दिया।

जाते-जाते पद्मा की मा ने कहा—'अब तुम दोनों का बचपन चला गया। वह साथ-साथ खेलना भी समाप्त हो गया।'

जगदीश ने सिर उठाया, तो वह अकेला था। परन्तु पद्मा की मा जो कुछ कह गई, वह उसके मस्तिष्क में घूम रहा था। प्रातः हुआ, तो लोगों ने देखा कि जगदीश के मकान पर ताला पड़ा था। दिन गये, महीने गये, फिर वर्ष भी चले गये। कई वर्ष बाद जब वह लौटकर आया, तो उसके पास पैसा था। नौकर थे, मोटर थी और दूर परदेश में चलता हुआ उसका कारबार था; लेकिन अचरज की बात यह थी कि जगदीश के मन की जो एक इच्छा थी, वह अभी जीवित थी। निश्चय ही, वह इतना नहीं भूल सका कि उसके बिगड़े हुये दिनों में, लोक-लाज को भूलकर पद्मा ने जिस प्रकार उसे शाश्वत और धीर बनने के लिये कहा, वह मानो एक कवच था कि जिससे जगदीशचन्द्र अपने ऊपर होनेवाले प्रहारों को आसानी से रोक सका। केवल एक पद्मा ही तो थी कि जिसने कहा, तुम मेरे हो, मैं तुम्हारी! तुम एकाकी नहीं, मुझसे दूर नहीं। और ऐसा कहने के साथ जाने कितनी बार उसने जगदीशचन्द्र के आँसुओं को पोंछा। उन्हीं आँसुओं में अपनी आँखों का खारा जल भी उस पद्मा ने सम्मिलित किया।

अतएव, निश्चय ही, जगदीशचन्द्र अपनी पैतृक भूमि पर इसलिए नहीं लौटा कि वह अपना मकान देखे। आत्मीय और पड़ोसी देखे। उसके मन तो में केवल एक साध थी कि वह पद्मा को पाये। एक बार उससे बोले। अपनी कहे और उसकी सुने। लेकिन वहाँ आते ही, उसने सुना कि पद्मा के पिता का दिवाला निकल गया। घर में भोजनों का भी टोटा आ गया। पद्मा का भाग्य भी फूट गया। विवाह के वर्ष भर बाद ही उसका पति मर गया। ससुरालवालों ने अपने घर का द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके लिए यह कहकर बन्द कर दिया कि वह बदनसीब है.. आते देर नहीं हुई कि लड़का मर गया। धन भी चला गया। परिणामस्वरूप, पद्मा अब भी पिता के यहाँ थी। जगदीशचन्द्र की इच्छा थी कि पद्मा आये। वह उसे दिखाई दे।

दूसरे दिन ही पद्मा उसे दिखाई दी। बड़ी दुर्बल, विपिन्न! वह सन्ध्या के झुटपुटे में अपने से दूसरे घर जा रही थी। जगदीशचन्द्र ने जब देखी, तो सोचा, भूल गई होगी। आवाज दूँगा, तो जाने क्या सोच लेगी, लेकिन उसे तो पद्मा से कुछ कहना ही था। वह आवश्यक था। निदान उसने आवाज दी—'पद्मा देवी—'

सुनकर, पद्मा ठिठक गई, मुड़कर खड़ी भी हो गई। बोल नहीं सकी।

पास जाकर जगदीश ने कहा—'पहचानती हो।

किन्तु तब भी पद्मा ने जगदीश की ओर देखा और सिर झुका लिया।

जगदीश ने कहा—'कल ही से चिन्तित हूँ कि तुमसे मिलूँ! बात सब सुन चुका हूँ। सोचा मैंने, तुम्हारी मा फिर न फटकार दें, इसलिए आ भी न सका। पद्मा, दुनिया मूर्ख है! यह पैसे को ही बड़ा मानती है। इनसान के मन को नहीं—इस नारी और नर को—'

आतुर बनकर पद्मा ने कहा—'तुम अब भी अकेले हो। अब तो पैसा पा गये हो।'

जगदीश ने इतना सुना और जाने कैसे ईर्षायुक्त भाव में मुसकरा दिया। तदनन्तर बोला—'कुछ दोष न हो, तो आओ; बैठो। कुछ कहूँगा। तुम्हें बताऊँगा, मैं सुखी नहीं।' वह तभी—पद्मा को साथ लेकर घर में गया। वहाँ जाते ही बोला—'पद्मा देवी, मैं तुम्हें नहीं भूल सका। चाँदी और सोने की झंकार में भी मैं याद करता रहा कि एक पद्मा है, कि जिसने मुझे प्यार किया। मुझे अपना कहा। आया, तो सोचता आया कि तुम्हारा बच्चा होगा, तुम्हारा जीवन फला-फूला होगा, तुम—'

उसी समय जगदीश ने पद्मा की आँखों को रोती पाया। वह रुक गया। आकुल और बेचैन भी बन गया। उसने पीड़ित भाव में कहा—'मैं तुम्हारे लिए सभी कुछ कर सकता हूँ, पद्मा! अपना धन तुम्हारे चरणों पर डाल सकता हूँ। तुम्हारा पति तो नहीं लौटा सकता, परन्तु जो कुछ पास है, वह दे सकता हूँ।'

तभी जोर से फूटकर रोते हुए पद्मा बोली—'मैं दुर्भागी हूँ, मैं कालंकिनी—'

ओह, तुम भी ऐसा सोचती हो, पद्मा! न, तुम तो महान् हो। तुम मधुर! तुम अनुपम! तुम्हीं तो हो, जो एक दिन इस जगदीश को—जगदीश रुका और जेब से बटुआ निकालकर, उसमें से कई हजार के नोटों को पद्मा के सामने रखते हुए बोला—'इन्हें अपने पिता को देना। कह देना, उधार नहीं, दया के साथ भी नहीं; मनुष्यता के साथ यह जगदीश ने दिया है।'—उसने कहा—'पद्मा देवी, जीवन भी एक समस्या है। इसे समझना भी आसान नहीं। कौन अपना है, कौन पराया; यह भी नहीं दिखाई देता। पर हम तुम जीवित रहेंगे, तो जरूर एक-दूसरे को देखते रहेंगे, इतना समझते रहेंगे कि हम एक दिन मिलकर रोये थे, मिलकर हँसे थे, मिलकर बैठे थे।'

उसी समय चंचल बनकर पद्मा ने कहा—'जगदीश बाबू—'

'चंचल मत बनो। जगदीश तुम्हारा है। अब घर जाओ तुम! जानता हूँ, अब तुम्हारी स्थिति और है। पहले से नाजुक, गम्भीर।'

'पर ये रुपये—'

'हाँ, इन्हें ले जाओ। पिताजी को दो। उन्हें फिर कार-बार करने दो। बेचारे चल रहे थे कि गिर गये। रुक गये।'—और तभी उसने पद्मा की आँखों में झाँककर कहा—'पैसा छोटा है—बहुत छोटा! तुम इसे महत्त्व मत दो। हम दोनों ने जिस विषय पर एक दिन अपने को समर्पित किया, मुझे उसी को समझने दो। देखती तो हो, मैं आज भी अकेला हूँ। नौकरों पर आश्रित हूँ। विवाह न करने का प्रण कर चुका हूँ। सोचता हूँ न, प्रेम तुमसे किया, जो सुन्दर और स्वच्छ भाव था वह तुम्हें समर्पित किया, तो दूसरे को क्या दूँगा। न, मैं उसे नहीं ठगूँगा। आज भी जब परेशान होता हूँ, तो तुम्हें याद करता हूँ, तुम्हारे उन आँसुओं को देख पाता हूँ, पद्मा देवी!

किन्तु उस समय पद्मा का सिर झुका था, वह झुका ही रहा।

उसी समय जगदीश ने रुपये पद्मा के आँचल में रखे और उसे दरवाजे तक लाकर बोला—'यह समझता रहूँगा कि तुम मुझे देखती हो, अपना समझती हो, मैं इतना भर पाने के लिए अपना सर्वस्व दे दूँगा।'

अगले दिन जगदीशचन्द्र लौट गया। वह पद्मा और उसके माता-पिता से पत्र देने के लिए कहता गया।

* * *

रिमझिम वर्षा जोर से होने लगी थी। झटका-सा खाकर जगदीश बाबू उस पुरानी स्मृति के उपसंहार पर आते हुए बोले—'और अब आयेगी, वह पद्मा! पत्र में लिखा है, तुम नहीं आते, तो मैं आऊँगी।'—उन्होंने कहा—'भला क्यों!' फिर अपने बालों में हाथ देते हुए कहा—अब उन नहीं आना चाहिए...इस जगदीश से...इस बूढ़े से...

लेकिन उसी समय जगदीश बाबू ने देखा कि पद्मा द्वार पर खड़ी है। वह उठते ही थे कि पद्मा ने पास आकर कहा—'देखती हूँ तुम सबको भूल गये, इस पद्मा को भूल गये; तो आने को भी भूल गये।' कहते हुए उसने मेज पर रखी शराब की खाली बोतल पर दृष्टि डाली। उसी ओर उसने देखते हुए कहा—'इसे भी शुरू कर दिया...शराब...'

बात सुनने के साथ जगदीश बाबू ने कमरे में छत की ओर देखा और तदनन्तर ही, पद्मा की ओर देख, जैसे वेदनासिक्त-भाव में बरबस मुसकराते हुए कहा—'पद्मा देवी, अब क्या रखा है। बोतल खाली है। यह जगदीश अशक्त!' कहते हुए उन्होंने साँस भरी और कुर्सी पर पीछे सिर रखते हुए कहा—'जीवन गया, तो चलो, अब पैसा भी चला गया। ऐसा ही होना था।

किन्तु पद्मा क्या कहती! यौवन उसका भी चला गया था। बात सुनी, तो जैसे वह छाती में घूँसा-सा खाकर तड़प गई। काश, वह पहली पद्मा होती और जगदीश बाबू की छाती पर अपना मुँह रखकर एक बार फिर इतना कह पाती—'तुम मेरे—मैं तुम्हारी—'

पर हाय! वह भी दुर्बल थी। वह भी अशक्त! इसलिए वह मूक बनकर भी जगदीश बाबू के पैरों में बैठी हुई, बरसते हुए आसमान की तरह अपनी आँखों का खारा जल बहा रही थी।

* * *

१००) इनाम

एक सिद्ध महात्मा की बताई श्वेत कुष्ट की अद्भुत जड़ी, जिसके चन्द रोज के ही लगाने से सफेद कोढ़ जड़ से आराम। अगर आप हजारों डाक्टर, वैद्य, कविराज की दवा से निराश हो चुके हैं तो भी इसे एक बार सेवन कर इस महान् दुष्ट रोग से छुटकारा पावें! अगर विश्वास न हो तो –) का टिकट भेज शर्त लिखा लें। गुणहीन होने पर १०० रु० इनाम। मूल्य लगाने की दवा २), खाने की ३॥) रु०।

श्री चन्द्रकान्ता फार्मेसी (२१२)
पो० राजधनवार (हजारी बाग)

१००००) रु० मुफ्त इनाम

अमृतसर में सोना ३) रुपये तोला

जो कोई नीचे लिखी बातों को झूठा साबित करेगा उसको दस हजार रु० नकद इनाम। जिस घर में यह सोना गया वहाँ से दोबारा तिबारा फरमाइश आई। बा० ला० मुन्शीराम जी क्लाथ मर्चेन्ट धर्मशाला से लिखते हैं कि आपका सोना अमरीकन न्यू गोल्ड १२ तोले का पार्सल मिला, यह देखकर बहुत खुशी हुई कि न्यू गोल्ड और असली सोने में कोई फर्क नहीं। आपने इस नई चीज को तैयार करके दुनिया की एक भारी जरूरत को पूरा किया है।।१२ तोले सोना वापसी डाक से और भेज दें बाद में आपको और भी आर्डर दिया जायगा। यह सोना कसौटी पर असली सोने का रंग देता है और असली सोने की तरह कूटा या पिघलाया जा सकता है। हर किस्म के जेवरात बनाये जा सकते हैं जिसको हुशियार से हुशियार शर्राफ मुश्किल से पहचान सकता है, मशहूर करने के लिए कीमत फी तोला ३) रु०। ३ तोला का मूल्य ८) रु० ६ तोला का १५) रु० १२ तोला का २८) रु०।

जरूरी नोट :—हर तीन तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी मुफ्त दी जावेगी। ६ तोला के खरीदार को २ बाम्बे फैशन अँगूठी, एक जोड़ी काँटे और एक जोड़ी चूड़ी मुफ्त दी जावेगी। १२ तोला के खरीदार को एक लाकट विमय चैन, दो जोड़ी चूड़ी और दो बाम्बे फैशन अँगूठी और डाक-खर्च माफ। माल पसन्द न होने पर कीमत वापस की जाती है। जल्दी मँगवा लें वरना यह समय हाथ न आवेगा।

मिलने का पता—

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी (D. A.)

हल्का नं० २२ अमृतसर

मुफ्त

यदि आप यौवन या बुढ़ापे में किसी प्रकार के रोग से दुखी हों तो हमें शीघ्र ही विस्तारपूर्वक लिखें। हम आपको अपनी स्वच्छ तथा फलदायक औषधि भेजेंगे। जिसके सेवन से आप शीघ्र ही आरोगी बनकर जीवन का आनन्द प्राप्त करेंगे।

हर प्रकार का पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है।

पत्र-व्यवहार करते समय अपना नाम और पता पूरा और सुलेख लिखें।

इम्पीरियल चैम्बर आफ साइंस, दुर्ग्याना,

(P. B. 61) अमृतसर

विज्ञापन ही व्यापार का सर्वोत्तम साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान का भविष्य क्या है ?

शरणार्थी, आर्थिक, राजनैतिक असंतोष तथा सरहदी कबीले

लेखक, श्री गोविन्दसहाय एम० एल० ए०

संयुक्तप्रान्तीय सरकार के माननीय प्रधान मंत्री के सभा सचिव श्री गोविन्दसहाय प्रामाणिक तथ्यों पर अधिकारपूर्ण विवेचन करने की क्षमता रखने के कारण हिन्दी के इने-गिने लेखकों में माने जाते हैं। आपके इस लेख से पाकिस्तान के भविष्य पर तीक्ष्ण किन्तु स्पष्ट प्रकाश पड़ता है, जो पठनीय तथा सुंदर है।

भविष्य का अनुमान हम केवल वर्तमान के आधार पर ही लगा सकते हैं। जब हम पाकिस्तान के वर्तमान को देखते हैं, तो भविष्य कुछ उज्ज्वल नहीं दिखाई देता। फिर भी जीवन और भविष्य वे चीजें हैं, जिनका निर्माण मनुष्य अपने परिश्रम से बदल भी सकता है। अतः केवल वर्तमान के आधार पर कुछ संभावना का ही इशारा किया जा सकता है।

पाकिस्तान में इस समय चार मुख्य समस्याएँ हैं, जिनके आधार पर हम यही कह सकते हैं कि यदि पाकिस्तान सरकार इन समस्याओं को भविष्य में हल न कर सकी तो उसका भविष्य निश्चय अंधकारमय होगा। वे चार समस्याएँ हैं—(१) शरणार्थी, (२) आर्थिक, (३) राज्य-शक्ति के लिये व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्द्धा और बढ़ता हुआ आर्थिक एवं राजनीतिक असंतोष और (४) सरहदी कबीले।

उपर्युक्त चारों समस्याओं के हल पर और उनकी बढ़ती या घटती हुई प्रगति पर ही पाकिस्तान के भविष्य का निश्चय होना है।

* * *

पाकिस्तान में हिन्द यूनियन और अन्य रियासतों से लगभग चौंसठ पैंसठ लाख शरणार्थी गये हैं और उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान की सरकार को इन ६४, ६५ लाख शरणार्थियों के पालन-पोषण और जीवनयापन का प्रश्न हल करना है। इन प्रश्नों के हल करने में पेचीदगियाँ हैं। हिन्द यूनियन में लगभग ५५ लाख शरणार्थी आये हैं और यहाँ की आबादी ३२,३३ करोड़ है। ३२, ३३ करोड़ आबादीवाले इलाके में केवल ५५ लाख शरणार्थी को बसाने और उन्हें रोजगार दिलाने में जिस प्रकार की पेचीदगियाँ पड़ रही हैं, वहाँ पाकिस्तान में तो इस शरणार्थी समस्या ने कई गुनी अधिक पेचीदगियां और परेशानियां पैदा कर दी हैं। क्योंकि डेढ़ दो करोड़ की आबादी में ६५ लाख शरणार्थियों को नये सिरे से पुनः जीवन में स्थापित करना महान् और भयंकर कार्य है। शरणार्थी समस्या इतनी सरल नहीं कि जो लोग इधर से गये हैं उनको उधर से आनेवाले लोगों के मकान, दूकान, रोजगार और व्यवसाय दिये जायँ। इस अदला-बदली के कारण जो अनेकों आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भयंकर स्थितियाँ पैदा हो गई हैं, और जिस प्रकार सारा वातावरण दूषित हुआ है, शरणार्थी समस्या पाकिस्तान के लिए शीघ्र ही उसकी अस्तव्यस्तता का एक मुख्य कारण बन सकती है। पाकिस्तान की सरकार को रोज लगभग १० लाख रुपये से अधिक इस समस्या के हल करने में खर्च करना पड़ रहा है। फिर भी आये दिन शरणार्थी और गैर शरणार्थी मुसलमानों में आर्थिक और सामाजिक संघर्ष बढ़ता ही जा रहा है। हो सकता है यदि पाकिस्तान की सरकार को कई साल शान्ति के साथ कार्य करने को मिले और उद्योगों तथा व्यवसायों में विदेशी सहायता मिले तो वह अपने यहाँ इस समस्या को सुलझाने में सफल हो सके। पर, जो हो रहा है, वह स्पष्ट है। पाकिस्तान के रहनेवाले वकील, डाक्टर और व्यवसायी समझते थे कि हिन्दुओं और सिक्खों के चले जाने से उन्हें जीवन में फलने-फलने का अच्छा मौका मिलेगा, पर आज उन्हें स्वयं अनुभव करना पड़ रहा है कि यद्यपि अब उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं रहा, पर जो पैसा देनेवाले अच्छे मुवक्किल, मरीज और खरीदार थे, उनका पाकिस्तान में अब कहीं नाम-निशान भी नहीं है, और जो उनके एवज में आये हैं, उनके दिल इतने उखड़े हुए हैं और मस्तिष्क इतना उत्तेजित है कि उन्हें जो कोई आदमी सुखी दिखाई देता है, उसे वे अपना दुश्मन समझने लगते हैं। इन मुसलमानों में गरीब, मैकनिक और ड्राइवर तथा अन्य मजदूरी पेशेवाले मजदूरों की संख्या अधिक है, जो समझते थे कि पाकिस्तान में वे स्वयं छोटे-मोटे कारखानों के मालिक बन सकेंगे, अथवा मजदूरी अधिक मिलेगी। आज उन्हें वह अनुभव करना पड़ रहा है कि कारखानों के चलानेवाले वहाँ से विदा हो गये हैं और इधर से जानेवाले गरीब मजदूर, मैकनिक, और ड्राइवर इधर इकट्ठे हो गये और उधर से आनेवाले हिन्दू और सिक्ख कारखानों के मालिक, व्यापारी, कुशल किसान और अन्य छोटे मोटे दूकानदार इधर इकट्ठा हो गये हैं।

इस शरणार्थी समस्या के केवल दो ही हल हैं:—पहला, यह कि दोनों ही देशों की जनता इस बात का अनुभव करे कि जो लाखों आदमी एक देश से दूसरे देश में गये हैं, वे पुनः वापस लौटें, ताकि दोनों देश पुनः अपने अस्तव्यस्त आर्थिक ढांचे का निर्माण करके पहला-सा जीवन व्यतीत कर सकें। दूसरे, इन शरणार्थियों के जो मकान, भूमि, मुरब्बे, कल-कारखाने, बैंकों में हिसाब-किताब हैं, उनका कोई ठीक तरीके से समझौता हो सके और दोनों तरफ के शरणार्थियों को जीवन-निर्वाह के लिए अपनी जायदादों से कुछ हिस्सा मिल सके।

जहां तक पहली बात का संबंध है, सही मानों में इस समस्या का हल तो वही है। पर उसके लिए उचित वातावरण चाहिए और चाहिए दोनों सरकारों में गहरा पारस्परिक सहयोग। गांधी जी इसी की इच्छा करते थे, क्योंकि वह जानते थे कि पागलपन के जमाने में चाहे लोग न महसूस करें, पर अन्त में जो बात सच है, उसी को करने के लिए लोगों को विवश होना पड़ेगा। इसीलिये वह इस कार्य को करने के लिए अपने यहाँ ऐसा वातावरण पैदा करना चाहते थे। इसमें कोई शक नहीं कि पाकिस्तान से जो खबरें आ रही थीं उनसे पता चलता है कि वहाँ के लाखों लोग इस बात का अनुभव करने लगे थे कि हिन्दुओं और सिक्खों के जाने से उनकी जीवन-संबंधी कठिनाइयाँ बढ़ी हैं। इस तरह जो मुसलमान पाकिस्तान गये हैं, वे भी वहाँ बहुत अप्रसन्न और दुखी हैं। उनका पाकिस्तान जाने का नशा अब कुछ फीका पड़ने लगा है। दूसरी बात के बारे में दोनों देशों में वहाँ के निष्क्रमणार्थियों, और शरणार्थियों द्वारा छोड़ी गई चल-अचल सम्पत्ति के बंटवारे और खरीद-फरोख्त संबंधी एक समझौता दोनों ओरों की सरकारों के बीच गत जनवरी मास में हुआ है और उस पर अमल करने के लिए वाजिब तौर पर अफसर मुकर्रर कर दिये गये हैं, पर पाकिस्तानी लीडरों की अब तक की कथनी और करनी को देखते हुए अभी यह कह सकना कि पाकिस्तान के अधिकारी उस पर तत्परतापूर्वक और सचाई से अमल करेंगे, कठिन है।

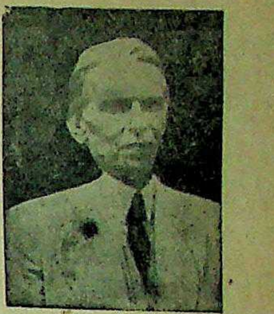

पाकिस्तान के प्रणेता कायदे आजम

आर्थिक दृष्टि से पाकिस्तान के बारे में कुछ आँकड़ों द्वारा यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि पाकिस्तान एक स्वावलम्बी राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। उसे अपनी आर्थिक समस्या हल करने के लिए या तो बाहर की पूंजी और व्यवसाय पर निर्भर रहना होगा अन्यथा अपने फौजी और शासन-संबंधी खर्चों को कम करके पैदावार बढ़ाना होगा। स्थिति तो यह है कि पाकिस्तान बिना फौजी सहायता के—चाहे वह हिन्द यूनियन से ले, चाहे ब्रिटिश और अमेरिका से ले—जीवित नहीं रह सकता। हिन्द यूनियन से यह सहयोग तभी मिल सकता है, जब पाकिस्तान और हिन्द यूनियन के पारस्परिक संबंध अच्छे हों। पर दुर्भाग्य से इस ओर पाकिस्तानी नेता कोई प्रयत्न नहीं कर रहे हैं बल्कि इसके विपरीत हिन्द यूनियन को अपने दुश्मन के नाम से संबोधित कर अपने संबंधों को आये दिन खराब ही कर रहे हैं। जहाँ तक वैदेशिक पूंजी का सवाल है, वह या तो इंगलैंड से मिल सकती है, या अमेरिका से। और ये दोनों देश अपनी पूंजी लगाने से पहले इस बात की जमानत और संरक्षण चाहेंगे कि हिन्द यूनियन और पाकिस्तान में कोई लड़ाई न हो, क्योंकि ऐसा होने से उनकी पूंजी खतरे में पड़ जायगी। स्काटिश फर्मों के पूंजीपतियों ने एक प्रमुख मुस्लिम नेता से बातें करते हुए बताया कि जिस प्रकार पाकिस्तान में कोशिश हो रही है, और हिन्द यूनियन से उसके संबंध बिगड़ रहे हैं, उस स्थिति में वह पाकिस्तान को एक शिलिंग भी देने की सिफारिश नहीं करेगा। कायदे आजम जिन्ना ने मिस्टर मुड़ी, गवर्नर पश्चिमी पंजाब जार्ज कनिंघम गवर्नर सीमाप्रान्त और अन्य ब्रिटिश अधिकारियों को इसलिए भी पाकिस्तान में रखने का प्रोत्साहन दिया कि वे उनके द्वारा ब्रिटिश पूंजी को खींच सकेंगे। पर इस थोड़े ही काल में लाहौर के प्रसिद्ध प्रोफेसर बरलोना की तथा बारामूला में मिसेज डाइक्स की हत्या ने अँगरेजों के हृदयों में पाकिस्तानी राज्य-व्यवस्था के बारे में बड़ी बेचैनी पैदा कर दी। और सुना गया है कि पाकिस्तान जानेवाले अँगरेज अफसरों ने पाकिस्तानी सरकार से साफ साफ कह दिया कि जब तक प्रोफेसर बरलोना के कातिल का पता नहीं लगाया जाता, कोई भी अँगरेज पाकिस्तान की नौकरी पसंद नहीं कर सकता। इस प्रश्न ने पाकिस्तान की सरकार के सामने काफी उलझन पैदा कर दी है। एक ओर प्रोफेसर बरलोना के कातिल मुस्लिम विद्यार्थियों को फाँसी का दंड देने का प्रश्न है, और उनके साथ मुस्लिम जनता की पूरी हमदर्दी है। दूसरी ओर अपनी आर्थिक व्यवस्था ठीक रखने के लिए अँगरेज अफसरों तथा अँगरेज पूँजीपतियों के हृदय में अपनी न्याय-प्रियता का सबूत देकर और उनकी पूँजी तथा उद्योग से लाभ उठाकर पाकिस्तान का पुनः निर्माण करने का मामला है। ब्रिटिश पूँजीपति और सरकार भी स्वयं यह नहीं चाहते कि पाकिस्तान और

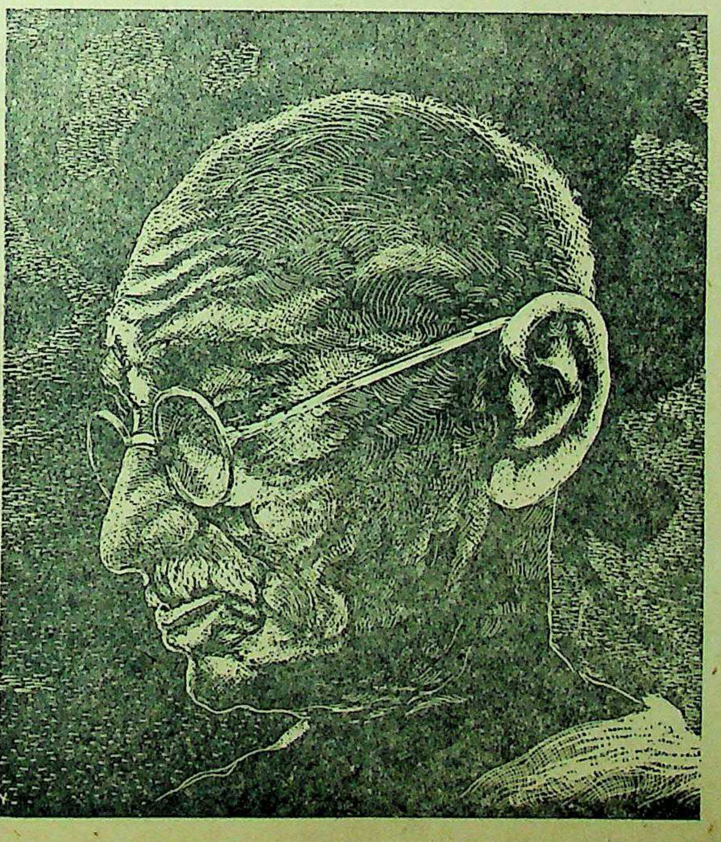

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान में जब संबंध बिगड़ रहे हों, तो वे हिन्दुस्तान के विरुद्ध पाकिस्तान की सहायता करें, क्योंकि इससे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-व्यवस्था और शक्ति-तारतम्य के बिगड़ने की भी संभावना है और ब्रिटिश कामनवेल्थ कमजोर पड़ सकता है। यही बात अमेरिका के संबंध में भी लागू है।

पाकिस्तान को जो रुपया बँटवारे में मिला, वह बड़ी तेजी से खर्च हो रहा है, क्योंकि इसके तीन प्रान्त डेफिसिट (कम आय खर्च ज्यादा) प्रान्त हैं, और आमदनी के जरिये भी कम हैं। पाकिस्तान का पुनःनिर्माण करने के लिए उसको बहुत अधिक पूंजी की आवश्यकता है। बिना इस पूंजी के न तो वह अपनी रेलों को चलाने के लिये कोयले के दाम ही दे सकता है और न अपनी मशीनरी को चलाने के लिये तेल ही खरीद सकता है। नये उद्योग-धन्धों को खोलने के लिये पैसे और क्रेडिट (साख) दोनों ही की बड़ी आवश्यकता है। पाकिस्तान के पास दूसरे देशों की पूंजी खींचने के लिये कोई साधन नहीं है। हां, निस्संदेह, मुसलमानों को आकर्षित करने के लिए पाकिस्तानी नेताओं के पास मिस्टर जिन्नावाला नारा है—पाकिस्तान मुसलमानों की सबसे बड़ी सल्तनत है और दुनिया के बड़े बड़े राष्ट्रों में उसका पांचवां नम्बर है। पर, इन नारों से न तो बड़े देशों के लोगों को पूंजी लगाने के लिये आकर्षित किया जा सकता है और न अपनी बड़ी बड़ी आर्थिक योजनाओं को ही पूरा किया जा सकता है।

प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक मनी मार्केट होता है, जिसके द्वारा दुनिया पर की पूंजी के साथ अपना संबंध बनाया जाता है। दुर्भाग्य से पाकिस्तान के पास अपना कोई मनी मार्केट नहीं है। हिन्दुस्तान में आज तक यह काम रिजर्व बैंक करते थे और ये बैंक हिन्द यूनियन के हिस्से में हैं। साथ ही जब अगस्त और सितम्बर १९४७ में पाकिस्तान में लूट-मार और रक्तपात हुआ, तो पाकिस्तान सरकार की मर्यादा पूंजी जगत् में बहुत घटी। जो कुछ पूंजी पाकिस्तान में थी भी, उसका बहुत बड़ा भाग लोगों ने आरम्भ से ही निकालना शुरू कर दिया था। जब विभाजन हुआ था, उस समय पाकिस्तान के नाम से रिजर्व बैंक में केवल २० करोड़ रुपया जमा था। किसी नये देश के लिये यह पूंजी बहुत कम थी। अंत में तय होकर यह ७५ करोड़ रुपया निश्चित हुई और हिन्द यूनियन नें गांधी जी की मृत्यु के १०, १५ दिन पहले यह ५५ करोड़ रुपया भी पाकिस्तान को दे दिया। इसमें कोई शक नहीं कि यदि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के संबंध अच्छे रहें तो पाकिस्तान अपनी आर्थिक स्थिति को सँभाल सकता है, क्योंकि उसके यहाँ रुई, कपास, अनाज, कच्चा चमड़ा, सन, खेतों की खाद के लिये केमिकल इत्यादि कच्चा माल काफी मात्रा में होता है। उसके लिये पाकिस्तान को बाजार चाहिये और हिन्द यूनियन उसके लिये सबसे अच्छा खरीदार हो सकता है।

पाकिस्तानी नेता दूसरे इलाकों से रुपया प्राप्त करने के लिये निःसंदेह काफी प्रयत्न कर रहे हैं और ये लोग पाकिस्तान में छिपी हुई दौलत की बाबत काफी चर्चा कर रहे हैं, पर अभी तक उन्हें इस दिशा में कोई खास सफलता नहीं हुई। कुछ दिन पहले अमेरिका से ६०० मिलियन डालर के कर्जे की बात चल रही थी, पर वह अन्त में सफल नहीं हुई। बाहरी कर्जे के साथ-साथ पाकिस्तान के अपने आमदनी के जरिये भी आये दिन कम हो रहे हैं। इनमें रेलवे का घाटा प्रमुख है। प्रारम्भ में ही अनेकों कठिनाइयों के कारण पाकिस्तान की रेलों का मार्च ३१ सन् ४८ तक ६ करोड़ रुपया घाटे का अनुमान लगाया गया। सामान और मुसाफिरों का किराया बढ़ाया है, और इस बात को बताते हुए यातायात मंत्री ने कहा–उन्हें अपनी रेलवे सर्विस को काफी कम करना पड़ा, क्योंकि उनके पास कोयला नहीं है। और कोयला हिन्दुस्तान से जाता है। जितना उन्हें मिलना चाहिए था उसमें से मुश्किल से आधा ही मिल सका है।

पाकिस्तानी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार से अच्छे संबंध स्थापित करने के काफी प्रयत्न किये और जैसा कि पहले कहा गया है, पाकिस्तान में पाँच में से तीन गवर्नर अँगरेज हैं, नौ डिप्टी सेक्रेटरियों में से पाँच अँगरेज हैं, और फौजों में प्रायः सभी प्रमुख सेनानी अँगरेजों को केवल इसीलिये रखा गया है कि उनके द्वारा ही ब्रिटिश सरकार के प्रति अपनी सद्भावना का परिचय दिया जा सकता है। पर इस नीति को बरतने से पाकिस्तान के मुस्लिम अधिकारियों और जनता में काफी असंतोष भी हुआ, और खुले आम इस प्रकार के लेक्चर भी दिये गये कि लीगी नेता मुसलमानों को अँगरेजी कामनवेल्थ में रहकर गिरवी रखना चाहते हैं। उन्हीं दिनों आर्थिक असंतोष के कारण मुस्लिम नवयुवक आन्दोलन ने भी जोर पकड़ा है। और इस तरह पाकिस्तान युवक नेता यह कहते सुने गये–ब्रिटेन और अमेरिका से संबंध जोड़कर हम सोवियत यूनियन से दुश्मनी नहीं कर सकते।

रूस के साथ हमारी साम्यवादी सीमा मिलती है न मुसलमान स्वभाव से ही कम्युनिस्ट होता है। इस बढ़ते हुए असंतोष के कारण अँगरेजों को पाकिस्तान में रखने की नीति कुछ अच्छा नतीजा नहीं दिखा रही है।

उपर्युक्त बातों के आधार पर ही केवल इतना अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के संबंध जरा भी और बिगड़े तो उसका गहरा असर आर्थिक साख, औद्योगिक उन्नति और पूंजी पर पड़ेगा, और बिना पूंजी, उद्योग और आर्थिक सहयोग के पाकिस्तान का निर्माण नहीं हो सकता, क्योंकि आर्थिक दृष्टि से पाकिस्तान स्वावलम्बी नहीं है।

* * *

मुसलमानों के जातीय विश्वास, सामाजिक ढंग और सोचने के तरीके ने मुस्लिम राजनीति को अबतक एक ट्राइबल (जंगली) राजनीति का रूप दे रखा है। मुगल सल्तनत से लेकर आज तक का इतिहास बतलाता है कि जब तक मुसलमानों में किसी व्यक्ति ने शक्ति को अपने हाथ में ले लिया, वह उठा, आगे बढ़ा और आम मुसलमानों ने उसके राज्य को स्वीकार किया, और जब कभी उस शक्तिशाली व्यक्ति की शक्ति क्षीण हुई या उस आदमी की मृत्यु हुई, विभिन्न फिरके उसके विरोध में उठ खड़े हुए, और शक्ति के लिए आपस में तब तक लड़ते रहे जब तक कि उनमें से एक ने अपने को दूसरे के मुकाबले में अधिक शक्तिशाली साबित नहीं कर दिया। यही कारण है कि जब दिल्ली का मगलिया शासन कमजोर पड़ा तो कितने ही सूबेदारों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। ठीक इसी तरह पिछले १० सालों में भारत की राजनीति में कायदे आजम मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना ने अपनी दृढ़ मानसिक शक्ति द्वारा मुसलमानों को एक नया नारा दिया और थोड़े ही दिनों में आम मुसलमान उनके इर्द-गिर्द इकट्ठा हो गये। यद्यपि मिस्टर जिन्ना मुस्लिम दृष्टिकोण से कोई अच्छे मुसलमान न थे, उन्हें प्रारम्भ में नमाज पढ़नी तक न आती थी, रीति-रवाज, रहन-सहन सोचने के तरीके किसी भी बात में उनके ऊपर इस्लामी मजहब की छाप न थी। पर फिर भी कट्टर से कट्टर मुसलमान इस्लामी नशे में पागल होकर उनकी ओर आकर्षित हो रहा था। इस प्रकार के नेतृत्व की शक्ति उस व्यक्ति की जीत के साथ ही कायम रहती है। जहां किसी ऐसे नेतृत्व की एक दो हारें होती हैं, उसके अनुयायियों का नैतिक पतन होने लगता है। पिछले डेढ़ साल में इस बात को देखा गया है कि जहां हिन्दुस्तान में रहनेवाले मुसलमानों म से ८० प्रतिशत मुसलमान अपनी कल्पना का पाकिस्तान बनाने के लिये लालायित थे, वहाँ उस ढांचे के बिगड़ते और पंजाब तथा बंगाल का विभाजन होते ही उनकी सारी खुशी समाप्त हुई, नेतृत्व से विश्वास हटा और अन्त में वे अपने को लावारिश समझने लगे।

जहाँ उन पिछले दस सालों में मुसलमानों को इस प्रकार मिस्टर जिन्ना के नेतृत्व से शक्ति मिली, वहाँ उनकी राजनीतिक हार होते ही उसका घटना भी शुरू हो गया और अन्त में उनकी मृत्यु के बाद आज वही नेतृत्व और उसकी हथौटी (टेकनिक) मुसलमानों की आन्तरिक अस्तव्यस्तता का कारण बनकर रहेगी।

व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और नेतृत्व को हटाने का श्रीगणेश पहले पश्चिमी पंजाब में सर फिरोज खां नून और नवाब ममदोत से प्रारम्भ हुआ। पश्चिमी पंजाब के बहुत से मेम्बरों को अपनी ओर करके सर फिरोज खां नून ने उनसे एक प्रस्ताव पास कराकर अपने को पश्चिमी पंजाब का नेता घोषित किया। पर नवाब ममदोत के साथ कायदे आजम और नवाब जादा लियाकत अली का आशीर्वाद था, और इसी कारण वह अन्त में सफल हुए। सुना है पश्चिमी पंजाब से नवाब लियाकत अली खां की सलाह से एक लीगी एम० एल० ए० को नवाब ममदोत के समर्थन के लिये ऊपर से भेजा गया था। दुर्भाग्य से रास्ते में मियाँवाली के नजदीक एक मुस्लिम कान्सटेबुल के हाथ से उसकी मृत्यु हुई। कहा जाता है कि इस कत्ल में फीरोज खां नून के आदमियों का हाथ था। इस तरह राजनीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षाओं के लिये गोलियों का दौर भी प्रारम्भ हुआ। बड़ी मुश्किल से मियाँ गजनफर अली ने इस चुनाव की सदारत की। लोगों को बताया गया कि सर फिरोज खां नून का समर्थन करना पुनः खिज्रहयात खां को गद्दी पर बिठाना है। यह भी प्रचार किया गया कि इन दोनों की काफी रिश्तेदारी है। इस तरह पाकिस्तान की राजनीति में पार्टीबन्दी और गोली के साथ ही साथ छल-कपट का भी प्रारम्भ हुआ। इस नेतृत्व में जिस जिस तरह की चालबाजियाँ, रिश्वतखोरियाँ तथा अन्य हथकण्डों को बरता गया, उसका पता ३ अगस्त १९४७ के "पाकिस्तान टाइम्स" के इस लेख से चलता है–"मेम्बरों को बड़ी बड़ी नौकरियाँ, मुरब्बे और मसविदे देने के सौदे किये गये, जातीय और खानदानी सारे ही प्रश्न उठाये गये। रातों रात फाइलों के आर्डर्स बदले गये, और हर तरीके से उन सब ब्रिटिश काल के दकियानूसी और बड़े बड़े जागीरदारों की शक्ति को पुनः जीवित किया गया। और फिर चुनाव के आखरी वक्त तक काफी जोर पड़े। अन्त में काइदे आजम की इच्छा को जानकर शौकत हयात खां अपने साथियों सहित ममदोत की ओर झुक गये।" और इस तरह ड्रामे का सुखद अन्त हुआ। सर फीरोजखां नून ने किसी दूसरे अच्छे वक्त के लिये अपना नाम वापस ले लिया पर संघर्ष बढ़ता ही गया। शरणार्थियों की बढ़ती हुई समस्या के कारण मियाँ इफ्तखारुद्दीन की नियुक्ति हुई, और अपने को अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए मियाँ इफ्तखारुद्दीन ने प्रधान मंत्री के पद के लिये संघर्ष किया। मिस्टर जिन्ना और नवाब ममदोत की इच्छा के विरुद्ध भी मियाँ इफ्तखारुद्दीन पश्चिमी पंजाब लीग के प्रधान चुने गये। इस तरह पश्चिमी पंजाब की राजनीति, राजनीतिक संघर्ष के रूप में बदल गई। मियाँ इफ्तखारुद्दीन एक पुराने कम्यूनिस्ट हैं। उनके चुने जाने के कारण लीगी जागीरदारों को काफी चिन्ता हुई, पर मुस्लिम जनता में उन्होंने अपने लिये काफी मन और मुहब्बत पैदा की, और परेशान, पीड़ित शरणार्थियों और मुस्लिम किसानों को अपनी ओर आकर्षित किया। मियाँ इफ्तखारुद्दीन के इस बढ़ते हुए प्रभाव की प्रतिक्रिया करने के लिये नवाब ममदोत ने मुसलमानों को मजहब का घूँट पिलाया और एक ब्राडकास्ट में अपनी सरकार की घोषणा करते हुए बतलाया—"हम अपने सूबे में शरियत की किस्म का राज्य कायम करेंगे।" और इसके लिये घोषणा की कि—"मुस्लिम स्टेट (राज्य) में रंडियाँ नहीं रह सकतीं।" अफसरों के प्रति बढ़ते हुए असंतोष को ठीक करने के लिये जनता को सान्त्वना देते हुए बताया, "मैं शीघ्र ही उन अफसरों को, जिनके विरुद्ध रिश्वतखोरी की शिकायतें हैं, बरखास्त करूँगा और कोड़ों की सजा दूँगा।" सिविल सप्लाई डिपार्ट-

शेष पेज १६ पर देखिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृ मन्दिर

भारत के शिशुओं की अल्पायु में मृत्यु क्यों ?

भारतीय नारियाँ इस ओर ध्यान क्यों नहीं देतीं

लेखिका, श्रीमती 'कली'

यह सुना जाता है कि प्राचीन काल में भारतवर्ष एक स्वर्गीय देश था। यहाँ के रहनेवाले बड़ी ही योग्यता और स्वच्छता के साथ रहा करते थे। उस प्राचीनता की झिलमिल झलक आज भी गाँवों में मौजूद है। ज्यों ही प्रभात हुआ, त्यों ही पूर्व में ऊषा मुसकाई और खगों ने अपने नीड़ से प्रभाती गान प्रारम्भ किये, गाँवों में जागरण प्रारम्भ हो गया। स्त्रियाँ चक्की पीसने अथवा धान कूटने में लग जाती हैं पुरुष पशुओं के खिलाने-पिलाने और खेती के कार्य में जुट पड़ते हैं। प्रातःकाल की सूर्य-रश्मियों से ज्यों ही जगती का आँचल स्वर्णिम रँगना प्रारम्भ होता है; ग्रामीण बालक-बालिकाएँ और शिशु भी उठ जाते हैं। फिर वे पूरे दिन प्राकृतिक तत्त्वों का उपयोग करते हैं। जंगल में स्वच्छन्द विचरण, कुँओं से पीने के लिए पानी भरना, हल चलाना अथवा खेत काटना; सारे कार्य प्रकृति की स्वच्छन्द और खुली गोद में किया करते हैं।

जब कि शहर की दिनचर्या इसके प्रतिकूल है। शहरों में स्त्रियों को तो शायद ही घरों से बाहर निकलना पड़ता है। पुरुष भी दफ्तरों तक जाने अथवा सौदा सुल्फ खरीदने के सिवा प्राकृतिक साधनों का उपभोग भी बहुत कम करते हैं। शहरों में घूमने या मिलने-जुलने के लिए जाना; क्लब या मनोरंजन गृहों में जाने से केवल शारीरिक अथवा मानसिक आनन्द भले ही मिल जाय परन्तु उनमें बन्द हवा और बन्द प्रकाश से प्राकृतिक तत्त्वों का अभाव रहता है। इन तत्त्वों को हम गाँवों में प्रचुर मात्रा में पाते हैं। कृषक दिन भर स्वच्छन्द वायु और प्रकाश में काम करते, स्त्रियाँ स्वच्छन्द खुली हवा और प्रकाश में कुओं से पानी भरती हैं, खेत काटती हैं।

इसके अतिरिक्त शरीर को स्वस्थ रखने के लिए चक्की पीसना, धान कूटना तथा अन्य कार्य ऐसे हैं जो शहरों से आजकल लुप्त हो गये हैं। मशीनें और कल-पुर्जों ने कितनी ही स्त्रियों के स्वास्थ्य को मिट्टी में मिला दिया है। पुरुष भी बहुत कुछ अकर्मण्य हो रहे हैं। शहर में यदि मनोरंजन के लिए भी इकट्ठा होना है तो भी गृहों में। कुछ कार्य करना है; मुकदमा करना है तो घरों में; परन्तु गाँवों में बरगद के वृक्ष आज भी न्यायालय या मनोरंजन-गृह बने हैं। ग्रामीण लोग स्वच्छन्द वातावरण में बैठकर अपने मुकदमों का फैसला करते, पारस्परिक विनोद करते हैं। स्त्रियाँ कुओं से पानी भरकर सिर पर जोड़े घड़े रख अपने घरों तक लाती हैं। ये कार्य शारीरिक स्वस्थता के लिए कितने उपयोगी हैं। पशुओं के चराने के लिए छोटे छोटे बालक-बालिकाएँ गाँवों के पास प्रातःकाल इकट्ठे होकर एक साथ पशुओं को जंगल की ओर ले जाते और जंगल के स्वच्छ और खुले वायु-मण्डल में वे अपने पशुओं को चराते हैं। गाँवों में आज भी ऐसा सुन्दर और मनोहारी दृश्य मौजूद है जिसके लिए शहर अपने गाँवों की ईर्षा कर सकता है।

उपर्युक्त दृश्य से यह प्रगट होता है कि हमारे गाँव स्वर्गीय प्रदेश हैं, परन्तु ऐसा नहीं, वहाँ तो नर्क से भी गया—बीता दृश्य है। जिसे देखकर शहर उस प्रदेश से घृणा करके भागता है। वह इसलिए नहीं कि गाँव शहर का सत्यानाश कर देगा, वरन् गाँव में इतनी असभ्यता है कि शहर-निवासी एक दिन भी गाँव में नहीं रह सकता। इसके कई कारण हैं। सबसे बड़ी बात यह कि हमारे गाँव इतने गन्दे हैं कि उनके रहनेवाले स्वच्छ और खुले वायुमण्डल में रहकर भी अधिकांशतः रोगग्रस्त रहते हैं। वयस्कों की अपेक्षा शिशुओं को रोग अधिक होता है—वह भी एक वर्ष के भीतरवाले शिशुओं को अधिक रोग घेरते हैं। इसके कारण हैं, ग्रामीण दाइयों में आज भी पुरातनता भरी है। प्रसवनी माँ को क्या करना चाहिए ? कैसे रहना चाहिए ? इसका गाँव में अब भी अच्छा ज्ञान नहीं।

यद्यपि अब गाँवों में शिक्षित समुदाय इन चीजों की जिज्ञासा रखता है, परन्तु वहाँ समझानेवालों की बहुत ही कमी है। स्वास्थ्य-सम्बन्धी रिपोर्ट देखने से प्रगट होता है कि भारतवर्ष में जितनी मृत्यु होती है उसकी आधी एक वर्ष के भीतर-वालों शिशुओं की होती है। यद्यपि शिशुओं को देखने से ऐसा प्रगट होता है मानो वे बड़े ही स्वस्थ हों। परन्तु उनमें रोग धीरे-धीरे इतनी प्रबलता धारण कर लेते हैं कि भारतवर्ष की मृत्यु-संख्या में शिशुओं की मृत्यु को प्रधानता हो रही है। एक बार गाँव की एक माँ को उसके बच्चे के स्वास्थ्य पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। परन्तु जब मैं उसे दुबारा देखने को सोचा तो मेरी एक संगिनी ने मुझसे कहा—"वह तो कल ही मरा है।" मुझे इस समाचार से बड़ा ही दुख हुआ। पर क्या कर सकती थी ?

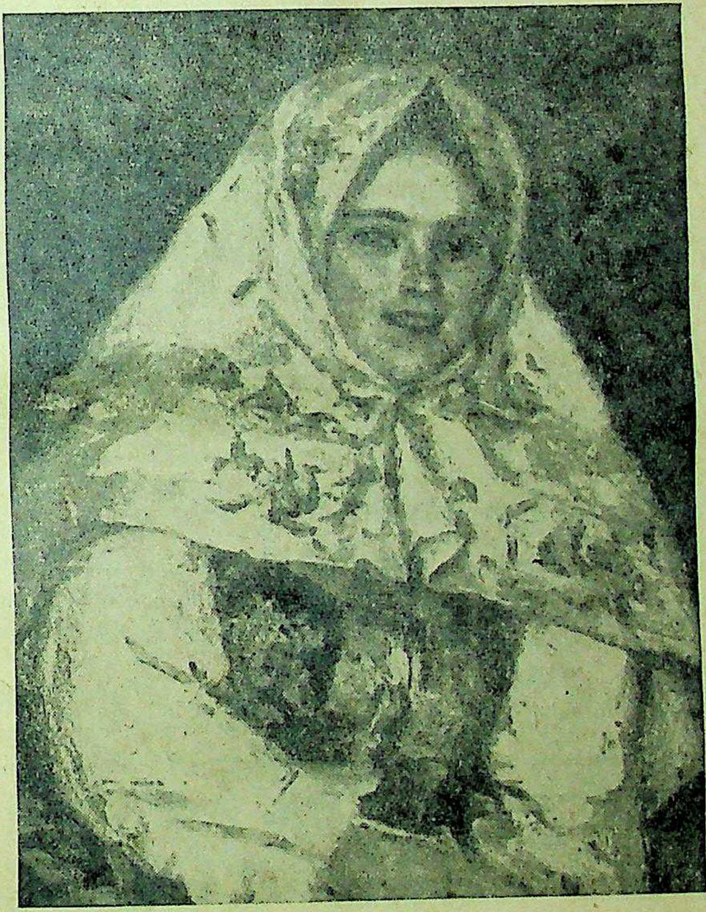

रूसी कलाकार द्वारा अंकित सीरिया की एक सुन्दर रमणी

"दस्त आते थे।" नलिनी ने कहा।

बहन, तुमने उस बालक कोई परिचर्या नहीं की ?"

मैंने पूछा।

"किया क्यों नहीं दीदी। मैं जाकर स्वयं उसको अस्पताल में ले आई और चंगा कर दिया, परन्तु उसकी माँ के दिमाग में ग्रामीणता की पुरानी हवा थी। वह कहने लगी—मेम साहब ! मुन्नू को टोना लग गया है। बिना झाड़-फूँक के अच्छा नहीं हो सकता। मैंने बहुत कुछ समझाया, पर उसके दिमाग में एक भी बात न सूझी। इस अन्धविश्वास से उस भोले बच्चे की मृत्यु हो गई।"

भारतवर्ष जैसे बड़े देश में शिशुओं की जरा भी परवाह नहीं करते। माताएँ अपने कामों में लग जाती हैं, वे यह नहीं सोचतीं की शिशु की क्या दशा होगी ? वह बच्चे का रोना सुनकर भी टाल-मटूल किया करती हैं और कहती हैं—इसके रोने की आदत पड़ गई है, पर यह नहीं समझतीं कि बच्चे को कोई कष्ट तो नहीं है। इन असावधानियों से शिशुओं का स्वास्थ्य ऐसा गिर जाता है कि वे अल्प-कालीन जीवन में ही इस संसार का त्याग कर देते हैं। मीनू मसानी ने अपनी 'हमारा भारत' नाम की अँगरेजी पुस्तक में लिखा है—भूखों मरना और गन्दे घर जिनमें शिशुओं का जन्म होता है इतने बुरे रहते हैं कि शिशु एक वर्ष के भीतर ही मर जाते हैं।' बहुत सी तो ऐसी मृत्यु होती हैं कि शिशुओं के जन्म लेने के कुछ क्षण पश्चात् ही उनकी मृत्यु हो जाती है। इन सबकी तह में गाँवों की स्थिति का चित्र दिया हुआ है, गाँवों की क्या वास्तविक स्थिति है ? इसका चित्र अपने नन्हें शिशुओं की मृत्यु से प्रगट होता है। गाँवों में हमारे घर इतने गन्दे रहते हैं कि हम उनकी स्वच्छता का ध्यान नहीं रखते। गृह-निर्माण में भी हमारी अनभिज्ञता तो नहीं है पर रुढ़िवादी विचार-धारा का अब भी एक स्रोत वहाँ बह रहा है जिससे हमारे घर अब भी बन्द आकार में बनते हैं।

घरों में न तो ठीक से प्रकाश पहुँच पाता है और न वायु। इन कारणों से घरों में नमी बनी रहती है जो बीमारी का मूल कारण बन जाती है। इससे भी भयंकर स्थिति यह कि गाँव किसी ऊँचे स्थान पर न आबाद होकर ऐसे स्थान पर बसाये गये हैं कि वर्षाकाल में पानी और कीचड़ से भरे रहते हैं। इसके अतिरिक्त गाँवों के नाबदान और नालियाँ खुली रहती हैं जिनमें पानी और गन्दगी सड़कर मच्छर तथा अन्य कीड़े-मकोड़ों के पैदा करने का स्थल बन जाती हैं। इन सबसे अतिरिक्त बुरी चीज यह है कि कुएँ भी खुले और गन्दे रहते हैं न उनकी सफाई की जाती और न दवा छोड़कर कीड़ों को मारकर पीने के योग्य पानी बनाया जाता है।

गाँव में किसी प्रकार के वैद्य या औषधि का कोई प्रबन्ध नहीं। इस पर भी हमारी नारियों में रुढ़िवादी परम्परा का बाहुल्य है जो रोगी को चंगा करने की अपेक्षा मृत्यु के निकट पहुँचाने में अधिक काम करता है। इसलिए जब तक अपने गाँव को रुढ़िवादी परम्परा से दूर न करेंगे, उनमें स्वच्छता और संयम का प्रसार न होगा, अशिक्षा न दूर की जायगा साथ ही उनकी मनोवृत्ति में आमूल परिवर्तन न किया जायगा तो हमारे भोले; सुन्दर शिशु बिना मौत के मरते रहेंगे जो आज की सभ्यता में हमारे लिए महान् कलंक है। उससे माताओं को देश की कलंकिनी के नाम से कहा जायगा जो माताओं के लिए एक महान् अपमान होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में अब दलितों का स्तर ऊँचा होगा

हरिजन वस्ती के उद्घाटन के अवसर पर श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने क्या कहा ?

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

भारत सरकार की सहायता तथा पुनर्वास मन्त्रालय की हरिजन विभाग की अध्यक्ष श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने करोलबाग में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा हरिजन बस्ती के उद्घाटन के अवसर पर निम्न वक्तव्य पढ़कर श्रोतृवर्ग को सुनाया—

हम देखते हैं, संसार के सब देशों में हमारा मूल्य बढ़ रहा है। एशिया के पिछड़े हुए देश हमसे नेतृत्व भी चाहते हैं। जो हमारे लिये बड़ी सन्तोष और गौरव की बात है। इसका श्रेय हरिजन बस्ती में महानुभावों को है। परन्तु बाहर के देशों का नेतृत्व कार्य तब ही सफल हो सकता है, जब देश में शांति और सुव्यवस्था हो; और वह तब हो सकती है, जब पद-दलित गरीब जनता को रहने का स्तर ऊँचा हो, उनको अमन और सन्तोष हो। आप उस रहस्य को अच्छी तरह जानते हैं; तभी तो आपने गरीबों की इन झोपड़ियों में पदार्पण करके उनको पवित्र बनाया। आपके आने से हम सबका बहुत उत्साह बढ़ा है।

श्रद्धेय पंडित जी, हम कुछ आजन्म हरिजन सेवक पिछले एक वर्ष से हरिजन शरणार्थियों की सेवा करने और उनको फिर से बसाने का काम आपकी सरकार की अधीनता में रहकर कर रहे हैं। भारत सरकार की निर्जीव मशीन के छोटे छोटे पुर्जे बनकर काम करने का साहस हमको सिर्फ इसलिये हुआ है कि आप इस मशीन के संचालक और सरपरस्त हैं। अनेक कठिनाइयों के रहते हुए जो कुछ थोड़ा बहुत काम कर सके हैं उसका बयान हरिजन विभाग के डायरेक्टर श्री सेवकराम जी पढ़कर सुनायेंगे। आपसे मैं इतना कह देना जरूरी समझती हूँ कि इस विभाग में जो कुछ भी हुआ था, वह श्री सेवकराम जी के अथक परिश्रम का परिणाम है। मेरा काम तो समय-समय पर परामर्श देना ही रहा, क्योंकि महिला विभाग के काम में शरणार्थी बहनों, बच्चों की सेवा में मैं गत सारे वर्ष इतनी व्यस्त रही, कि मुझे कोई दूसरा काम करने का समय ही नहीं मिला। विकेन्द्रीकरण के बाद, जब प्रांतों को काम बाँट दिया गया है, मुझे कुछ अधिक अवकाश मिलेगा और मैं इधर अधिक ध्यान दे सकूँगी। आप जानते ही हैं कि मैंने या मेरे सहकारियों ने सरकार के साथ पहले कभी काम नहीं किया था। इसलिये हमने कुछ भूलें भी कीं। गलतियाँ करने पर भी बड़ी उदारता से हमारे अफसरों ने हमें क्षमा कर दिया और बराबर अपना सहयोग बनाये रक्खा, इसलिये तो जो कर पाये, वह हो सका है। मैं आपके सामने उन सबको धन्यवाद देती हूँ और यह बता देना चाहती हूँ कि हम अवैतनिक कार्यकर्ता तब तक ही बराबर काम करते रहेंगे, जब तक कि दुःखियों और हरिजनों की कुछ सेवा हो सकेगी।

हमारे हरिजन भाई आपके लिये जो अभिनन्दन-पत्र पढ़ेंगे उसमें अपने हृदय के भाव और कुछ मांगें आपको पेश करेंगे, परन्तु दो तीन बातें मैं भी आपसे कह देना चाहती हूँ।

(१) एक लाख सिन्धी हरिजन खेतिहर सिन्ध के थर पारकर जिले में पड़े हैं वहाँ अपनी जमीन के मालिक हैं, जिनको वह अपने हाथ से निकालना चाहते हैं, परन्तु यहाँ आकर भटकना नहीं चाहते। मत्स्य प्रदेश अलवर में काफी जमीन पड़ी है जिसमें वे बसाये जा सकते हैं, इसका प्रबन्ध जल्दी होना चाहिये।

(२) मवेशियों का बाहर जाना पाकिस्तान सरकार ने बन्द कर रखा है। बहुतेरे हरिजनों का केवल यही मवेशीमात्र धन है। वह उनको छोड़कर आना नहीं चाहते। एक बार इस सम्बन्ध में मैं आपको लिख भी चुकी हूँ। उनके मवेशियों के निकालने का पूरा प्रबन्ध अवश्य ही होना चाहिये।

हरिजनों सम्बन्धी आज्ञा पाकिस्तान सरकार ने अभी तक रद्द नहीं की है। इसलिए काफी हरिजन सिन्ध और पंजाब में रुक पड़े हैं; उनको पूरी छूट होनी चाहिये कि वे जब चाहें आ सकें।

मैं आपको यह भी जता देना चाहती हूँ कि हरिजन श्रम कर सकते हैं, हुनरवाले भी हैं और इसमें चमड़े और कपड़े का काम करनेवाले काफी लोग हैं। इसलिए इनकी सबसे बड़ी जरूरत मकानों की है। यदि इनको जमीन के टुकड़े मिल जायें तो; थोड़ी सी सहायता से अपने मकान आप भी बनवा सकते हैं। एक बार मकान बन जाने से ये अपने परिश्रम से आप ही अपने स्तर को ऊँचा बना सकेंगे। इसलिए बड़े से बड़े पैमाने पर सब से पहले मकानों का प्रबन्ध होना चाहिये।

जब तक यह लोग सिर्की, टीन, झाड़ पत्तियों की झोपड़ियों में रह रहे हैं, तब तक राजधानी दिल्ली की सुन्दरता पर एक बड़ा काला धब्बा तथा बड़ी इमारतों के लिए एक कलंक बना रहेगा।

जुकाम सर्दीपर अकसीर उपाय
स्थापना १९२६
आरोदा
सुरज १८६६ छाप
नीलगिरि तैल
हिम.मलेरिया.इन्फ्लुएन्जा. टाइफाइड. आदि बीमारियोंमेंलाभदायक
प्रो. खांडालेकर बंधु बम्बई ४.

घर बैठे डाक्टर बनिये

थोड़े पढ़े लिखे भी घर बैठे होम्योपैथी बायोकेमिस्ट्री, प्राकृतिक चिकित्सा, जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा; तथा सूर्य चिकित्सा के डाक्टर बन सकते हैं। नियमावली मुफ्त मँगायें।

इंटर नेशनल इन्स्टीट्यूट रजिस्टर्ड अलीगढ़

नया चालान, नई डिजाइन

ये घड़ियाँ स्वीटजरलैंड की मशहूर कम्पनियाँ ओरीस, पीअर्स आदि की बनी हुई हैं देखने में हुबहू चित्र जैसी। लीभर मशीन प्रत्येक घड़ी को गारंटी ३ साल।

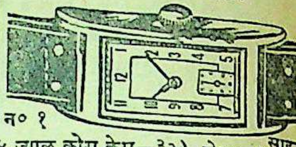

न० १ साइज [illegible]
५ जुएल क्रोम केस—३२) रोल्ड गोल्ड—[illegible]
७ ,, ,, केस—३५) रोल्ड गोल्ड—[illegible]
१५ ,, ,, केस—५२) रोल्ड गोल्ड [illegible]

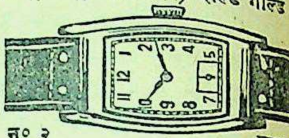

न० २ साइज [illegible]
५ जुएल क्रोम—३५) रोल्ड गोल्ड—४२)
७ ,, ,, —३८) रोल्ड गोल्ड—४२)
१५ ,, ,, ...५५ रोल्ड गोल्ड—६५)

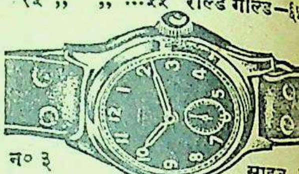

न० ३ साइज 10½
५ जुएल क्रोम केस—२४) ७ जुएल—३०)
१५ ,, ,, ,, —४८) रोल्ड गोल्ड—६०)
१५ वाटर प्रूफ—७०) रोल्ड गोल्ड—८५)

न० ४ साइज 11½
क्रोम केस—१६) सेकण्ड कांटा की—१८)
सेण्टर सेकेण्ड की २०) सुपीरियर—२२)
१५ जुएल क्रोम—३०) सुपीरियर—३५)
एलार्म टाइमपीस—१६) सुपीरियर—२०)
बेल्ट २५) पोस्टेज अतिरिक्त। कोई भी तीन घड़ी एक साथ लेने से १२॥) प्रति सैकड़ा कमीशन।

एच० डेविड ऐन्ड को, पो० ब० ११४२४ कलकत्ता

५००) महीना कमाइये

हमारे फैन्सी माल के लिए ५० प्रतिशत तक कमीशन पर एजेन्ट चाहिये। एजेंसी की शर्तों के लिये लिखें-अंगेजी या हिन्दी में पत्र व्यवहार करें

फैन्सी गुड्स स्टोर्स पो० बक्स ४३, अमृतसर

T. B. टी. बी. **"तपेदिक' चाहे फेफड़ों का हो या अँतड़ियों का बड़ा भयंकर रोग है**

(१) पहला स्टेज	(२) दूसरा स्टेज	(३) तीसरा स्टेज	(४) चौथा स्टेज	अन्तिम स्टेज
मामूली ज्वर, खाँसी	ज्वर-खाँसी की अधिकता	शरीर सूखना, ज्वर-खाँसी की भयंकरता	सब ही बातों की भयंकरता शरीर पर वर्म, दस्त आदि का शुरू होना	रोगी की मौत और भयंकर जर्मों का इधर-उधर फैलना
जबरी	(JABRI)	जबरी	(JABRI)	

अनेक प्रशंसापत्र आप इन्हीं कालमों में देख चुके हैं। भारत के कोने-कोने में लोगों ने यह मान लिया है कि इस दुष्ट रोग से रोगी की जान बचानेवाली यदि कोई औषधि है तो वह एकमात्र "जबरी" ही है। "जबरी" के नाम में ही भारत के पूज्य ऋषियों के आत्मिक बल का कुछ ऐसा विलक्षण रहस्य है कि प्रथम दिन से ही इस दुष्ट रोग के जर्म नष्ट होना शुरू हो जाते हैं। यदि—आप इस तरफ से हताश हो चुके हों तो भी परमात्मा का नाम लेकर एक बार "जबरी" की परीक्षा करें। परीक्षार्थ ही हमने १० दिन का नमूना रख दिया है, जिसमें तसल्ली हो सके। बस—आज ही आर्डर दें। अन्यथा फिर वही कहावत होगी कि—अब पछताये क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत। सैकड़ों डाक्टर, हकीम, वैद्य अपने रोगियों पर व्यवहार करके नाम पैदा कर रहे हैं और तार द्वारा आर्डर देते हैं। हमारा तार का पता केवल "जबरी" जगाधरी (Jabri Jagadhri) काफी है। तार में अपना पूरा पता दें। मूल्य इस प्रकार है—जबरी स्पेशल नं० १ जिसमें साथ साथ ताकत बढ़ाने के लिए सोना, मोती, अभ्रक आदि मूल्यवान् भस्में भी पड़ती हैं। पूरा ४० दिन का कोर्स ७५) रु०, नमूना १० दिन के लिए २०) रु०। जबरी नं० २ जिसमें केवल मूल्यवान् जड़ी-बूटियां हैं, पूरा कोर्स २०) रु०, नमूना १० दिन के लिए ६) रु०। महसूल आदि अलग है। आर्डर देते समय नं० १ या २ तथा पत्र का हवाला जरूर दें। पार्सल जल्द प्राप्त करने के लिए मूल्य मनीआर्डर से भेजें।

पता—रायसाहब के० एल० शर्मा एण्ड सन्स, रईस एण्ड बैङ्कर्स (D) 'जगाधरी' (पूर्व पंजाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

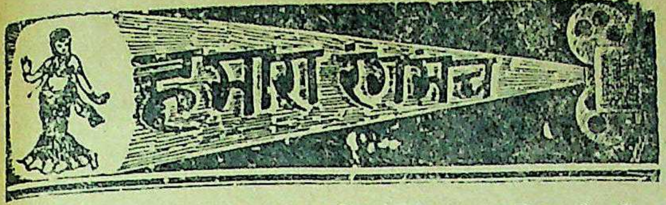

'चंदा की चाँदनी' और 'प्यार की जीत'

क्या ऐसे ही फिल्मों के प्रदर्शन से जनता का नैतिक स्तर ऊँचा होगा ?

लेखक, श्री गोपाल मेहरोत्रा

युगों से प्रचारित भारतीय ग्रामों की पवित्रता एवं आदर्शों को ढोंग, अंध-विश्वास एवं वासना का अड्डा घोषित करने के लिए भारतीय--छायालोक की अधिकांश विभूतियों ने जान पड़ता है शपथ ले ली है, ग्रामों से सम्बन्धित चल-चित्रों को देखने से ऐसा ही प्रतीत होता है। वास्तविकता तो यह है कि हमारे निर्देशक-निर्माता एवं कलाकार अधिकतर ग्राम-सुधार का ठेका लेकर जनता के प्रति विश्वासघात करने का दुस्साहस किया करते हैं। फेमस पिक्चर्स कृत "प्यार की जीत" और खोसला कृत 'चँदा की चाँदनी' इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

* * *

प्रगतिशील युग था। बम्बई की उच्च अट्टालिकाओं में निवास करनेवाले किशोर के लिए धन के व्यापारियों ने बिजली के विवाह पर पाँच हजार की प्राप्ति की इच्छा प्रकट की। किन्तु बिजली किशोर बाबू को अपने दोनों नेत्रों से देख-भालकर ही अपनायेगी। अपनी विवाहित सहेली, रानी के साथ वह बम्बई गई और एक दिन, किशोर की अनुपस्थिति में, उसके घर पधारी। वह किशोर के सेवक, भोला की पुत्री, किशोर की पत्नी और साम्राज्यहीन कुलपति की 'बिटिया' बनीं। दूसरी ओर, दीवान साहब की सुपुत्री सुशीला किशोर से 'मुहब्बत' करती थी, परन्तु वह 'गिर-गिटान' की भाँति परिवर्तित हो गया। 'बिटिया' के कहने पर एक 'घोड़ा' खरीदा गया और प्रतियोगिता में दीवान साहब की पराजय ने 'जल-भुनकर कोयला भई' को 'राख' बना दिया। विजय के उपलक्ष में बिजली ने अपना पाश्चात्य नग्न-नृत्य प्रदर्शित किया। प्रगतिशीलता ने भारतीय-संस्कृति पर कीचड़ उछाला। 'काली-काली रात है', 'ओ जादूगर आए, हमारी गली' तथा 'उल्फत के दर्द का मजा लो'—का समा बाँध दिया। दर्शकों ने उसे देखा और सुना।

तात्पर्य यह है कि प्रस्तुत चित्र की कहानी अश्लीलता, एवं कुरुचित की प्रतीक है। संवादकार ने कामुकता और दिवालियेपन का स्पष्ट परिचय दिया है। श्री डी० एन० मधोक द्वारा लिखित गीतों में 'जोबन', 'जवानी', 'मजेदार', आदि के प्रयोग के साथ ही नृत्य के नाम पर नग्न-नृत्य दिखाया गया है। दिग्दर्शक ने कथा-कार एवं संवादकार के नाम नहीं प्रदर्शित किया। चित्रालेखन निरर्थक एवं अस्वा-भाविक और संगीत-निर्देशन निकृष्ट कोटि का है। रहस्यमय संगीत अस्वाभाविक और वेषभूषा परिवर्तन अश्लील है।

रेहाना, जयराज, ई० बिलमोरिया, शान्ता कुँवर, आदि जैसे कलाकारों की छीछालेदर देखकर अत्यन्त खेद होता है।

धन के व्यापारियों के सम्मुख बिजली कड़कती है—'अगर आज मेरे हाथों में सरकार होती तो इन धन के व्यापारियों को बीच सड़क पर कोड़ों से पिटवाती' यह है राष्ट्रीय सरकार के विरुद्ध प्रचार, अश्लीलता की आड़ में।

* * *

जाग्रत वासना को शान्त करने के लिये परदेशी पनघट पर गोरियों के पास 'नैनसुख' प्राप्त करने गया। 'बाँके' बिहारी ने रूपा से छेड़-छाड़ की...। दो सहस्र रुपयों की आवश्यकता हुई। एक ओर परदेशी रुपये के लिए नगर गया और दूसरी ओर धनी मोती के साथ उसके हाथ पीले कर दिये गये। लैला, मजनू को न भुला सकी। मोती ने बिहारी की द्वितीय प्रेमिका, गौरी को वचन दिया, परन्तु अभिलाषा मृत्यु के करों में निर्भर थी। मोती और गौरी ने विष-पान किया और बाँके ने अपनी 'प्यारी' का अमृत-पान!

यह है श्री ओ० पी० दत्त द्वारा लिखित सामाजिक कलाकृति 'प्यार की जीत' की संक्षिप्त कहानी, जो अत्यन्त अस्वाभाविक है।

भाषा के साथ अन्याय तथा संवाद तृतीय श्रेणी के हैं। सर्वश्री हुस्नलाल तथा भगतराम का संगीत निर्देशन साधारण है। चित्रालेखन एवं ध्वनिआलेखन की साधारण है। रूपा का बायाँ और गौरी का दाँया उरोज सदैव खुला रहना तथा कई स्थानों पर रूपा व गौरी की चुनरिया अथवा ओढ़नी का फिसल जाना—उत्साह एवं प्रेमपूर्वक पदर्शित किये गये हैं।

अभिनय की दृष्टि से खलनायक मोती की भूमिका में राज मेहरा के अति-रिक्त किसी भी कलाकार ने संतोषजनक कार्य नहीं किया है। गोपे का मुच्छ अस्वाभाविक है।

आजकल इसी तरह के बाजारू फिल्मों का बोलबाला है। इनसे स्वतंत्र भारत में जनता का नैतिक स्तर कितना ऊँचा हो सकेगा, यह भी समझने की बात है।

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री सुरैया।

'साजन' फिल्म में सुप्रसिद्ध अभिनेत्री रेहाना एक अन्य अभिनेत्री के साथ।

ESTD 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंट रिकगनाइजड AIDED

सिन्हा होमियो मेडिकल कौलेज

—पो० लहेरियासराय बिहार—

आज हिन्दी उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़ कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीस H.L.M.S. १०), H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५) पुस्तकें—अ० पारिवारिक १॥). बायोकेमिक १॥) मेटेरिया मेडिका १॥) मेडिकल डिक्सनरी २) आर्गेनन १॥) फार्माकोपिया १॥) रेड लाईन सीम्पटम्स १॥) कुल किताबें १०) में एक साथ दी जायँगी डा० ख० माफ। अमेरिकन दवाइयाँ ३०—=)॥ २००—≡) ड्राम, फी औंस ॥), घरेलू बक्स पुस्तक सहित ३६ शीशी का ८) सुगर और गोली २॥) फी पाउण्ड।

(१) बृ० इंजेक्सन चिकित्सा ३) बृ० अ० पारिवारिक चिकित्सा ६॥-)

बृ० अ० मेटेरिया मेडीका ६॥-)

नोट :—बृहत् सूची मुफ्त—सचित्र मेडिकल मैगजीन मासिक ॥) सालाना—४)

संरक्षक—राय साहब डा० यदुबीरसिंह एम० डी० एस० (U.S.A.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य और व्यायाम

नीम का महत्त्व

स्वास्थ्य के लिये अपूर्व ओषधि

लेखक, श्री रामेश बेदी आयुर्वेदालंकार,
(हिमालय हर्बल इन्स्टिट्यूट, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार)

भारतवर्ष में नीम बोने का इतना प्रचलित रिवाज होने का कारण यह समझा जाता है कि यह वायु को शुद्ध रखता है और मलेरिया के मच्छरों को दूर करता है। इसके पत्तों में से गुजरकर जानेवाली हवा स्वास्थ्य के लिए अच्छी समझी जाती है। नीचे गिरकर सड़ते हुए पत्ते सम्भवतः छोटे हानिकारक जीवों को आसपास न पनपने देते हों। अत्युत्तम पथ वृक्ष के रूप में इसकी ख्याति वस्तुतः ठीक ही है। गरमियों में जब और वृक्ष नग्न होते हैं, यह शीतल छाया देता रहता है। इसलिए भी यह सार्वजनिक स्थानों में छाया के लिए बहुत बोया जाता है।

संयुक्तप्रांत में मैंने कई स्थानों पर नीम वृक्षों को विशाल पथ वृक्षों के रूप में देखा है। घेरे में ये पाँच से दस फीट तक पहुँच गये हैं। चौड़ी सड़क के दोनों ओर दूर तक लगे हुये और ऊपर जाकर सब मिलाकर एक लम्बी हरी रेखा बनाते हुए ये सुन्दर, शीतल छाया देनेवाले पथ-वृक्ष राहगीरों के लिए बहुत आरामदायक होते हैं। इनके फल पककर जमीन पर गिरते रहते हैं। गाँव की स्त्रियाँ अपने प्रातःकालीन दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर दोपहर को छोटे बालकोंसहित इन पेड़ों के नीचे आ जाती हैं। फल पकने के मौसम (जुलाई) में छोटी-छोटी टोकरियों और वृक्षों की टहनियों से बनाई गई झाडुओं के साथ इन्हें वृक्षों के नीचे बुहारकर निमोली इकट्ठा करते हुए देखा जा सकता है। ये सब इकट्ठी की गई निमोलियाँ एक केन्द्र में लाई जाती हैं और इनमें से तेल निकाल लिया जाता है। तेल दो विधियों से निकाला जाता है—(१) कोल्हू में पेरकर या (२) मींगी को कूटकर और पानी में उबालकर।

गरीब लोग नीम के तेल को जलाने के काम में लाते हैं। यह धुआँ बहुत बुरी तरह देता है, इसलिए जलाने के प्रयोजन से यह घटिया तेल है। कीड़ों से बचाने के लिए वृक्षों की छालों को प्रायः इस तेल से पोत दिया जाता है। उदर कृमिहर और कीटाणुनाशक के रूप में इसका बहुत मान है। यह तेल मद्रास से लङ्का निर्यात होता है।

बीजों को मनकों की तरह पिरोकर मालाएँ बनाई जाती हैं। पक्के फलों को बच्चे शौक से खाते हैं। बीजों में कीड़े मारने के गुण होने से सिन्ध में स्त्रियाँ बीजों को पानी में पीसकर सिर धोती हैं जिनसे जुएँ और लीखें मर जाती हैं। साबुनों में भी तेल डाला जाता है।

नीम की लकड़ी टिकाऊ होती है। बिना सुखाई लकड़ी का भार पचपन से सत्तर पौंड और सूखी हुई का भार पैंतालीस से बावन पौंड प्रति घनफुट होता है। एक घनइञ्च की व्यत्यस्त (ट्रान्सवर्स) शक्ति २·५५ से ५·१२५ टन है। मोटे वृक्षों से ली गई लकड़ी अच्छी होती है। इसकी कठोरता इसे पेटियों और बक्सों को बनाने में उपयोगी बना देती है। खुली रहने पर अन्तःकाष्ठ का रंग अधिक गहरा हो जाता है चीरते हुए इसमें से एक गन्ध आती है जो मोहागनी से बहुत कुछ मिलती है। लकड़ी जलाने पर यह गन्ध नहीं जाती। गरीब देहातियों की झोंपड़ियों में खम्भों और शहतीरों के लिए, गाड़ियों और पहियों, हलों, तेल पेरने के कोल्हुओं में, जहाजों में और लकड़ी के औजारों को बनाने के लिए इसकी लकड़ी का उपयोग होता है। संयुक्तप्रांत में ढोलकियों के लिये नीम की लकड़ी अच्छी

समझी जाती है। मारवाड़ में नीम का ऊखल और मूसल अच्छा समझा जाता है। दक्षिणी भारत में फर्निचर बनाने में इसका प्रयोग किया जाता है। इमारती लकड़ी के लिए भी यह अच्छी होती है। कड़वी होने के कारण इसमें घुन, दीमक और अन्य कीड़े नहीं लगते। सम्भवतः इसीलिए इसे हिन्दू लोग पवित्र मानते हैं और इसकी मूर्तियाँ बनाते हैं। इस प्रसिद्ध वृक्ष की लकड़ी बाजार में बड़े परिमाण में प्रायः नहीं आती।

* * *

नीम की छाल, पत्ते और फल (निमोली) भारतीय चिकित्सा में बहुत प्राचीनकाल से प्रयुक्त हो रहे हैं और संस्कृत के सुश्रुत, चरक आदि प्राचीनतम चिकित्सा-ग्रन्थों में इसका उल्लेख मिलता है।

* * *

व्रणों और त्वचा के रोगों पर बाहरी प्रयोग के लिए नीम के पत्ते—पुल्टिस, मरहम और लेप भिन्न भिन्न प्रकार से प्रयुक्त होते हैं। पत्तों को उबलते पानी में डालकर बनाया फाण्ट, पत्तों का कल्क

शेष पेज १६ पर देखिए

"ये हैं आनन्द मिश्र...

अभी आफिस से घर आये हैं, बढ़िया चाय पीने के लिये बेताब हैं। पर बेचारे को अच्छी चाय नहीं मिल सकती क्योंकि केतली का पानी सुबह से अब तक खौल ही रहा है। अच्छी चाय के लिये फौरन खौले पानी की जरूरत होती है।

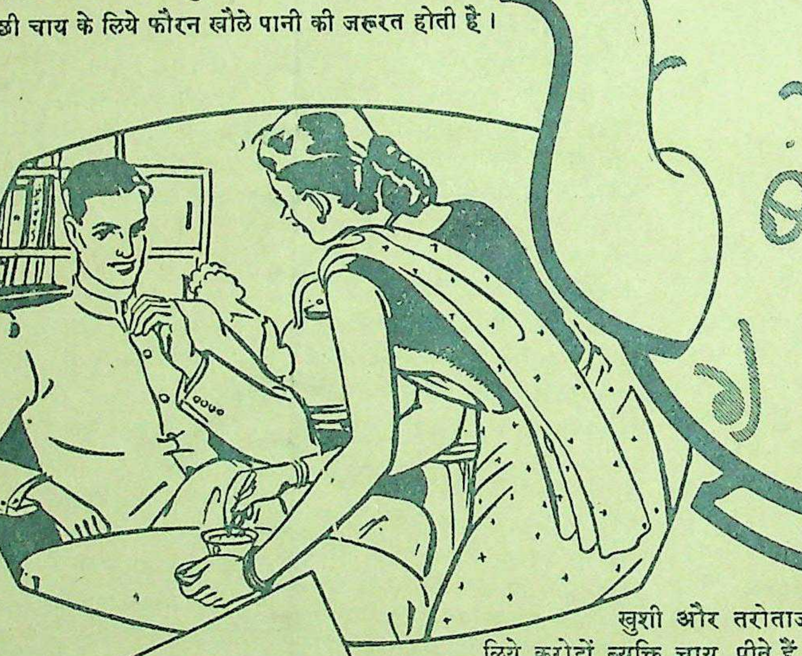

खुशी और तरोताजगी हासिल करने के लिये करोड़ों व्यक्ति चाय पीते हैं। कितने अफसोस की बात है कि बहुत से चाय पीने वाले इतना भी नहीं जानते कि अच्छी चाय कैसी होती है या कैसे बनाई जाती है। अच्छी चाय बनाने में कोई विशेष खर्च या तकलीफ नहीं होती; सिर्फ पांच सरल नियम मानना काफी है। अपने पैसों की पूरी कीमत और चाय का पूरा स्वाद लेना हो तो इन नियमों को याद कर लीजिये और घर में उनका हमेशा पालन हो इसका ख्याल रखिये।

पांच सरल नियम
★
१. सिर्फ ताजा और फौरन खौला पानी लीजिये। २. चाय के बर्तन को पहले गर्म कर लीजिये। ३. हर व्यक्ति के लिये एक चम्मच और एक चम्मच बर्तन के लिये सूखी चाय डालिये। ४. तीन से पांच मिनट तक चाय को सीझने दीजिये। ५. दूध प्याले में मिलाइये, बर्तन में नहीं।

चाय-चर्चा नामक पुस्तिका अंगरेजी, हिन्दी, बंगला, उर्दू या तामिल किसी भी भाषा में कमिश्नर, इण्डियन टी मार्केट एक्सपेन्शन बोर्ड, १०१, नेताजी सुभाष रोड, पोष्ट बक्स २१७२, कलकत्ता से आवेदन कर मुफ्त मँगाई जा सकती है।

सबसे अच्छी

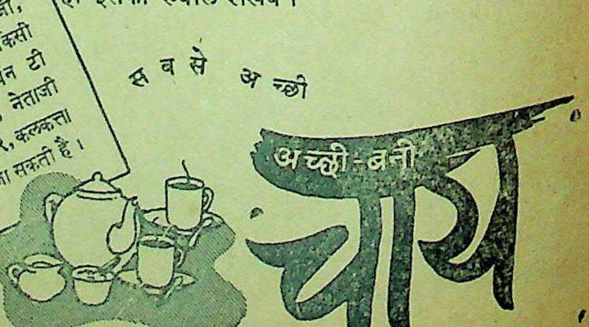

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, के पुरस्कार

प्रतिवर्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर निम्न-लिखित पारितोषिक तथा पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। इस वर्ष उन सबके लिए विचारार्थ पुस्तकें स्वीकार किए जाने की अन्तिम तिथि सौर वैशाख ३१ सं० २००६ [तारीख १४ मई सन् १६४६] है। सभी पारितोषिक तथा पुरस्कारों के संक्षिप्त परिचय नीचे दिये जा रहे हैं। मंगलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार के अतिरिक्त सभी पारितोषिकों तथा पुरस्कारों के लिये उक्त तिथि से १५ मास से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाएँ नहीं ली जायँगी। केवल जीवित लेखकों तथा लेखिकाओं की रचनाएँ ही पारितोषिकों तथा पुरस्कारों में विचारार्थ स्वीकार की जायँगी। ये सभी पारितोषिक तथा पुरस्कार मौलिक रचनाओं के सम्मानार्थ दिये जाते हैं। सङ्कलित, संगृहीत या अनुवादित ग्रन्थों को मौलिक रचना के अन्तर्गत नहीं माना जायगा, किन्तु स्वतन्त्र रूप से सिद्धान्त स्थापित करनेवाली व्याख्यायें मौलिक रचना की श्रेणी में रखी जायँगी। पूरा पारितोषिक या पुरस्कार किसी एक लेखक को ही मिलेगा। श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार में प्रतियोगितार्थ भेजी जानेवाली पुस्तकें लेखक के जीवन-काल में दो बार तक भेजी जा सकती हैं। अन्य पुरस्कारों में विचारार्थ पूर्व भेजी गई पुस्तकों पर फिर से विचार नहीं किया जायगा। विस्तृत जानकारी के लिए प्रत्येक पारितोषिक या पुरस्कार की नियमावली निःशुल्क सम्मेलन कार्यालय द्वारा मँगाई जा सकती हैं। इस वर्ष मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक तथा सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार के लिये प्रत्येक पुस्तक की ८८ प्रतियाँ तथा अन्यान्य पारितोषिक अथवा पुरस्कार के लिये ७-७ प्रतियाँ उक्त तिथि तक "प्रधान मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग" के पते पर आनी चाहियें। हिन्दी-साहित्य के लेखकों, लेखिकाओं तथा प्रकाशकों से निवेदन है कि वे अपनी रचनायें उपर्युक्त सूचना के अनुसार भेजने की कृपा करें।

श्री मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक–१२००) का पारितोषिक इस वर्ष साहित्य के तात्त्विक विज्ञान विषय पर दिया जायगा। तात्त्विक विज्ञान, अन्तर्गत गणित, रसायन भौतिक-शास्त्र, ज्योतिष, जन्तु-विज्ञान और वनस्पति-विज्ञान सम्बन्धी साहित्य की गणना की जायगी। श्री सेठ गोविन्दराम सेकसरिया विज्ञान पुरस्कार—१५००) का उक्त पुरस्कार इस वर्ष जीव-विज्ञान विषय की वैज्ञानिक मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। जीव विज्ञान विषय के अन्तगत जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, औषधि विज्ञान और कृषि-शास्त्र की गणना की जायगी। श्री सेकसरिया महिला पारितोषिक—५००) का उक्त महिला पारितोषिक किसी महिला लेखिका को उनकी स्वरचित हिन्दी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। श्री मुरारका पारितोषिक—५००) का उक्त पारितोषिक बंगाली, उड़िया या आसामी भाषा-भाषी लेखक या लेखिका द्वारा लिखी गई हिन्दी की किसी रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा श्री रत्नकुमारी पुरस्कार—२५०) का उक्त पुरस्कार हिन्दी के किसी मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जायगा। श्री नेमीचन्द्र पुरस्कार—५००) का उक्त पुरस्कार वीररस पूर्ण बाल साहित्य विषय पर हिन्दी की किसी मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया जायगा। बाल-साहित्य के अन्तर्गत वे सभी रचनायें गृहीत होंगी, जो देश, धर्म, समाज एवं बालकों के चतुर्दिक विकास और उत्थान को ध्यान में रखकर लिखी गई होंगी।

—बलभद्रप्रसाद मिश्र
प्रधान मन्त्री

* * *

पत्रकार बन्धुओं से

रायगढ़ में होनेवाले आगामी ६, १० और ११ अप्रैल को चक्रधर नगर रायगढ़ में होनेवाली महाकोशल-राजनैतिक परिषद् के अवसर पर, प्रान्तीय पत्रकारों का एक सम्मेलन भी होने जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता के लिये 'कर्मवीर'-सम्पादक पं० माखनलाल चतुर्वेदी से अनुरोध किया गया है। 'भारत में अँगरेजी राज' के लेखक तपस्वी सुन्दरलाल जी सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे ऐसी आशा है। 'हरिजन' के सम्पादक आचार्य किशोरीलाल मश्रूवाला, 'सत्य संदेश' के सम्पादक स्वामी सत्यभक्त जी तथा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के श्री भदन्त आनन्द कौसल्यायन जैसे अनेक गणमान्य व्यक्तियों को सम्मेलन में भाग लेने के लिये निमंत्रित किया गया है। कितने ही ऐसे पत्रकारों के पधारने की सम्भावना है, जो पत्रकार होने के साथ ही कवि भी हैं और कवि-सम्मेलन में योग-दान करेंगे। अतः जिन लोगों के पास व्यक्तिगत निमंत्रण किन्हीं कारणों से न पहुँच सका हो, वे इस सूचना को ही निमंत्रण समझ लेने की कृपा करें। पत्रकार-सम्मेलन में निम्नलिखित विषय विचारणीय हैं:—

पत्रकारिता केवल कला नहीं, एक कर्त्तव्य है। मध्यप्रान्त में पत्रकारों की वर्त्तमान स्थिति एवं भविष्य। पत्रकारों को दलगत राजनीति से ऊपर उठना चाहिये। पत्र-व्यवसाय सहकारिता के आधार पर चलाना श्रेयस्कर होगा। पत्रकारों का संगठन स्वतंत्र रूप से हो अथवा साहित्य-सम्मेलन के अन्तर्गत।

निवेदक
बन्देअली फातमी
पत्रकार-सम्मेलन-स्वागत-उपसमिति

* * *

राष्ट्रसेवक अभिनन्दन-ग्रन्थ

अखिल भारतीय राष्ट्रसेवक संघ बम्बई ने उन राष्ट्रसेवकों का परिचयात्मक ग्रन्थ निकालने का निश्चय किया है जिन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम को सफल बनाने में तन, मन, धन से सहयोग दिया और यातनाएँ उठाईं। ऐसे राष्ट्रसेवकों को यह ग्रन्थ समर्पित कर सम्मानित किया जायेगा इस आयोजन का उद्देश्य ऐसे देश-सेवकों का नाम साहित्य और इतिहास में चिरस्थायी बना देना है। इस कार्य के लिये प्रत्येक प्रांत में समितियाँ बनी हैं। मध्यप्रांतीय समिति इस कार्य में जनता, कांग्रेस कमेटियों, समाजवादी दलों आदि का सहयोग चाहती है। यह कार्य दलबंदी की भावना से निर्लिप्त रहकर दिया जा रहा है; अतः किसी भी विचारधारा का व्यक्ति क्यों न हो यदि उसने देश की आजादी के लिये प्रयत्न किये हैं तो उसका भी अभिनन्दन किया जायेगा। आप अपना संक्षिप्त परिचय शीघ्र भेजें। कांग्रेस कमेटियाँ आदि इसे ही हमारी प्रार्थना समझकर ऐसे त्यागी पुरुषों की सूची भेजने की कृपा करें। विशेष जानकारी और कागजात-प्राप्ति के लिये चार आने के डाक-टिकट निम्न पते पर भेजें।

—डा० अनन्तराम दुबे "प्रभात"
प्रधान मंत्री

आविष्कारों की कथा

मशीनें कैसे बनीं? तरह-तरह के औजार कैसे बनें? रेल, जहाज, तार और सिनेमा वगैरह कैसे बने? नई-नई चीज़ें बनाकर या नये काम करके क्या आप दुनिया में प्रसिद्ध हो सकते हैं? इन सारी बातों को जानने के लिए यह पुस्तक जरूर पढ़िए। मूल्य १)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113450

इधर उधर की

भारतवर्ष में मुद्रा की जो नीति है उससे कागज के नोटों की भरमार है। इस वर्ष ४ मार्च तक देश में ११७, २३८ करोड़ के नोट चालू थे। १९१४ से लेकर १९४७-४८ तक २१२-८६ करोड़ के सिक्के चालू थे।

* * *

भारत की केन्द्रीय तथा प्रांतीय पुलिस की संख्या सन् १९४७ के ३० जून तक ९५,०५० थी जो सन् १९४८ के ३० जून को बढ़ाकर ३,२९,६६० कर दी गई है।

* * *

भारत की ५६२ रियासतों में से ५३८ रियासतें अब तक भारतीय यूनियन में विलीन हो चुकी हैं। इनका क्षेत्रफल देश के पूरे क्षेत्रफल का २९ प्रतिशत तथा आबादी ४ करोड़ ८८ लाख है।

* * *

माण्डले बर्मा के विद्रोहियों के हाथ में है।

* * *

भारत-सरकार के अर्थ-मंत्री डाक्टर जान मथाई ने असेम्बली में घोषणा की है कि अगले अप्रैल में अनाज का भाव गिर जायगा।

* * *

पाकिस्तान में तीन यूरोपीय महिलाओं की हत्या की गई है। एक तो अभी हाल की है जिसमें कुमारी एल सी शाइलट विलियम्स एक ऐंग्लो इंडियन परिचारिका की लाश पाकिस्तान रेल के पहले डिब्बे में पाई गई है। इससे पहले फ्रांस के काबुल-स्थित उपवाणिज्य दूत की पत्नी मैडम कप्पा कराची से ट्रेन द्वारा पेशावर जाने के बीच और कुछ मास पूर्व मेजर बान रैनेन की पत्नी सिन्ध एक्सप्रेस के डिब्बे में मरी पाई गई थीं।

* * *

दामोदर बाँध-निर्माण के कार्य के लिए सन् १९४९-५० के लिए ७,५३,४५,-०००) स्वीकृत किये गये हैं जिसमें भारत-सरकार २,१८,८१,११४), पश्चिमी बंगाल-सरकार ३,३९,६६,८८३) तथा बिहार-सरकार १,९४,८६,९३३) देगी। धन इस प्रकार व्यय होगा। सिंचाई पर १,५३,६४,२००), विद्युत् पर ४,८५,९५,३००) तथा बाढ़ रोकने में १,१३,८५,५००) व्यय होगा।

* * *

पाकिस्तान का भविष्य कैसा है?

(पेज ८ का शेष)

मेंट के लिये एक ऐन्टी करप्शन कमेटी स्थापित करने की भी घोषणा की गई। शराबबन्दी के बारे में आपने राय बताते हुए कहा—"इस प्रश्न का ताल्लुक केन्द्रीय सरकार से है।" अन्य कई किस्म की बातों की भी घोषणा की। इन सबका मतलब एक ओर इफ्तखारुद्दीन के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना और दूसरी ओर मुसलमानों को पुनः अपनी ओर आकर्षित करने के लिये अपने पुराने नुसखे "इस्लाम खतरे में है" और "इस्लाम शरीअत की दुहाई दी" "पश्चिमी पंजाब में ममदोत, मियाँ इफ्तखारुद्दीन, सर फीरोजखां नून, सर जनफर अलीखां, सभी में राजनीतिक होड़ लगी रही। नवाब ममदोत को दो बार अपनी कैबिनट बदलनी पड़ी और आखिकार नतीजा यह हुआ कि पश्चिमी पंजाब के मंत्रिमंडल को ही खत्म कर दिया गया, और फरवरी ४९ के पहले हफ्ते में वहां के गवर्नर मूडी ने १९३५ के भारत-[वि]धान की धारा ९३ के [अ]नुसार प्रान्त का शासन अपने [हा]थ में ले लिया। अब वह वहाँ का एकमात्र शासक है। अपने सलाहकार रखने से भी उसने यह कहकर इनक[ा]र कर दिया है कि सलाहकारों से कोई खास फायदा नहीं होता। उनकी अनुपयोगिता को हम अविभाजित भारत के प्रान्तों में देख चुके हैं। इस प्रकार पश्चिमी पाकिस्तान के एक बड़े सूबे में इस्लामी अखवत (बन्धुत्व) का नाटक अनेक गर्म और तेज अभिनयों के बाद, इस प्रकार खत्म हुआ। एक व्यक्ति का शासन, सो भी एक अँगरेज का। जम्हूरियत (लोकतंत्र) के नाम पर बने पाकिस्तान के एक प्रान्त में यह सब केवल इस प्रकार हुआ कि उस प्रान्त के नेता [इ]स्लामी भाई-चारे के वास्तविक तत्त्व से बिलकुल परे रहते हुए पारस्परिक सहयोग और सौजन्य द्वारा शासन चलाने में बिलकुल नाकाबिल साबित हुए।

फ्रन्टियर, (सीमाप्रान्त) और पूर्वी बंगाल में भी इसी प्रकार राजनीतिक महत्त्वाकांक्षी लोग उभड़ रहे हैं। एक ओर जहाँ विभिन्न प्रान्तों में आर्थिक संघर्ष बढ़ रहा है, वहाँ केन्द्र में भी इसको कमी नहीं है। फ्रन्टियर के अफरीदी दूसरे नेता पाकिस्तान के किसी अन्य हिस्से के मुसलमानों की मातहती में रहना कभी पसंद नहीं करते और वह बिलोचिस्तान की किस्म का शासन विधान अपने यहाँ माँग रहे हैं। ठीक इसी तरह पीर मनकी शरीफ खान अब्दुल कयूम और यूसुफ-हारूं आदि सभी नेताओं को विश्वास है कि पाकिस्तान उन्हीं की मदद से बना है। प्रान्तीयता के ये भाव भी, उग्ररूप धारण करने लगे हैं। पश्चिमी पाकिस्तान के लिये जहाँ एक ओर प्रान्तीयता के आधार पर संघर्ष करने का विचार हो रहा है, वहाँ पूर्वी बंगाल के लोगों के अन्दर अन्य पाकिस्तानी भागों से अधिक जनसंख्या होने, संस्कृति, वेश-भूषा तथा भाषा आदि के पश्चिमी बंगाल से एक होने के नाते, यह हवा जोरों से बढ़ रही है। "जब हमारी आबादी अधिक है, तो पाकिस्तान की शक्ति पूर्वी बंगाल के हाथ में क्यों न हो?" यही सबसे बड़ा कारण है कि कायदे आजम मिस्टर जिन्ना की मृत्यु के पश्चात् ख्वाजा नाजिमुद्दीन को पाकिस्तान का गवर्नर जनरल बनाया गया है। पर राजनैतिक आकांक्षाओं की कोई सीमा नहीं होती। एक महत्त्वाकांक्षा के पश्चात् दूसरी आकांक्षा बढ़ती ही रहती है। कायदे आजम के जमाने में जो शक्तियाँ उनके व्यक्तित्व से दबी रहीं वे भी अब उठेंगी और मुस्लिम मनोवृत्ति के आधार पर केवल इतना ही कहा जा सकता है कि मिस्टर जिन्ना ने अपने जीवनकाल में किसी को अपने नजदीक नहीं पहुँचने दिया। मुस्लिम लीग के वह सदैव प्रेसिडेन्ट रहे, और किसी अन्य को इसका अवसर नहीं दिया। उनकी यह नीति सारे पाकिस्तान के लिये घातक साबित होगी। ठीक इसी प्रकार की बातें नवाबजादा लियाकत अली खां के विरुद्ध उ[ठ] रही है—"यह यू० पी० का हिन्दुस्तानी मुसलमान अब पंजाबियों पर हुकूमत कर रहा है" इत्यादि। डर है कि पाकिस्तान की नाव कहीं अपनी डाँवाडोल हालत में आकांक्षाओं, महत्त्वाकांक्षाओं तथा प्रतिस्पर्द्धा के भँवर में फँसकर डूब न जाय।

इस प्रकार की बातों के कोई फौरन नतीजे नहीं निकला करते, पर उनके जो आधार होते हैं, वे थोड़े दिनों बाद अपना रंग अवश्य लाते हैं।

(शेष अगले अंक में)

* * *

नीम का महत्त्व

(पेज १२ का शेष)

या पत्तों को शहद से मिलाकर बनाया लेप दूषित फुन्सियों, अस्वास्थ्यकर ग्रंथिक सोजिशों, फोड़ों और व्रणों पर लगाने से कृमिहर का कार्य करता है और व्रणों की सफाई करता है। कैपदेव इसे श्रेष्ठ कृमिनाशक समझते हैं।

* * *

पत्तों का काढ़ा हलका, कृमिहर और रोपण घोल है। नीम के पत्ते, घी, शहद, दारुहल्दी तथा मुलहठी के मिश्रित कल्क को गाँज में लगाकर व्रणों में रोपण के लिए लगाया जाता है। फोड़ों को नीम के पानी या काढ़े से प्रतिदिन धोना चाहिए और फिर इसी के पत्तों से जख्मों को ढक देने का भी रिवाज है। पत्तों के काढ़े से घावों को धोने, भ्रूणोत्पत्ति के पश्चात् चिकित्सा में योनि को पिचकारी द्वारा धोने आदि में निर्बल कार्बोलिकाम्ल के समान लाभकारी है। दुष्ट व्रणों, शोथ-युक्त गाँठों, रगड़ और मलकोड़ पर इसके कषाय का सेंक करने से वेदना शान्त होती है। नीम के पत्ते, वच, हींग, सेंधा नमक और सरसों का धूपन व्रण की रूक्षता और कण्डू को दूर करता है, वेदना शान्त करता है और व्रण के कृमियों को मारता है। तिल के तेल के साथ मिलाकर बनाई पत्तों की पुल्टिस अस्वस्थ व्रणों के लिए बहुत लाभप्रद है। वेदनायुक्त और दूषित व्रणों में, विशेषकर लम्बे चलनेवाले व्रणों में नीम के पत्तों की पुल्टिस उत्तेजक रूप में लाभकारी होती है। ताजे पत्तों को पर्याप्त परिमाण में लेकर गरम जल के साथ पीस लें। इसे कपड़े पर फैलाकर व्रणयुक्त पृष्ठ पर लगाए। कभी-कभी इसमें वेदना और क्षोभ उत्पन्न हो जाता है। इससे बचने के लिए इसमें समान भाग चावलों का आटा मिलाया जा सकता है। घाव में कीड़े पड़ गये हों तो उनको मारने के लिए पत्तों के कल्क में थोड़ी हींग डालकर बाँधना चाहिए।

मुफ्त

युवको! यदि अपनी भूल से यौवन नष्ट कर चुके हो, अथवा विवाहित जीवन फीका हो चुका हो तो भारत भर में सुप्रसिद्ध सिद्धहस्त गुप्त रोग विशेषज्ञ

कविराज ब्रह्मस्वरूप बी० ए०

(D.A.) फतेहपुरी देहली से सलाह मशविरा मुफ्त करके अपना जीवन सुधार लें।

भारतमाता के पुजारी

इस संग्रह में वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक के, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के, प्रतिनिधियों को स्थान दिया गया है। प्रतिनिधि-पुरुष के जीवन चरित के साथ यह भी दिखाया गया है कि उस महापुरुष ने भारतीय जनता की विचारधारा में क्या और कैसे परिवर्तन किया। प्रत्येक युग की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इसमें ऋषिपुत्र नचिकेता से लेकर गांधी और जवाहरलाल तक १५ महापुरुषों का आदर्श आपको मिलेगा। इस पुस्तक में लिखी बातों को मानने से किशोर अवस्था वाले छात्रों का विशेष उपकार होगा। वैसे लाभ तो सभी को होगा। मूल्य १॥) एक रुपया बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सफेद बाल काला

खिजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित तैल से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापस की शर्त लिखा लें। मूल्य २॥), बाल आधा पका हो ३॥) और कुल पका हो तो ५) का तैल मँगा लें।

विष्णु आयुर्वेद भवन (दे)

पो० वारसलीगंज (गया)

फोटो खींचने में सर्वश्रेष्ठ "गिफ्ट" रालफिल्म

बाक्स केमरा

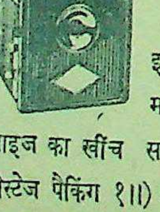

सुन्दर, मजबूत, नया डिजाइन, बढ़िया फोकस लेन्स। इस केमरे से आप चाहे जिस दिलपसन्द चीज का अत्यन्त मनोहर फोटो नं० १२० के फिल्म पर २॥" × ३॥" साइज का खींच सकते हैं। फोटो खींचने की तरकीब मुफ्त। मूल्य १२॥) पोस्टेज पैकिंग १॥) बढ़िया फोटो न खिंचे तो दाम वापस।

डिस्ट्रीब्यूटर्स—रतनबिहारीलाल एण्ड सन्स (डी० डी०) रंगमहल, अलीगढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवाददाताओं के पत्र

जोधपुर कांग्रेस की नीव में शहीदों का खून है महात्माओं की तपस्या है अतएव कांग्रेस की शक्ति कम नहीं हो सकती है। कोई प्रतिक्रियावादी ताकत कांग्रेस को तोड़ नहीं सकती है। व्यापारीवर्ग को कांग्रेस से न केवल सहानुभूति रखकर पर कांग्रेस से मिलकर कार्य करना चाहिए, कांग्रेस सब वर्गों के लिए है इन शब्दों में मारवाड़ के व्यापारियों द्वारा आयोजित जोधपुर के खेजडला हाउस की व्यापारियों की सभा में जोधपुर के प्रधान मंत्री श्री जयनारायण जी व्यास ने व्यापारियों से कांग्रेस के साथ कार्य करने की सलाह दी।

* * *

सर्वप्रथम लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास, अर्थ मंत्री श्री द्वारकादास जी पुरोहित, शिक्षा मंत्री श्री मथरादास जी माथुर और अन्य मंत्री अधिकारियों, कांग्रेस के नेताओं तथा व्यापारी वर्ग की उपस्थिति में मारवाड़ के व्यापारियों की ओर से सेठ श्री सदासुख जी कावरा ने भाषण देते हुए कहा कि भारतवर्ष को आज की आजादी का सौख्य देखना नसीब हुआ [illegible] वह वे [illegible] हमारी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस ही वे [illegible] व एवं सिपाहियों के बलिदान का फल है, व्यापारी समाज देश के नेताओं के कार्य की सफलता, देश की विपत्तियों, व्यापार-धन्धे की चर्चा करने के बाद मारवाड़ की जनता [illegible] जो सेवा वर्तमान मंत्रि मंडल [illegible] की उसकी चर्चा करते हुए आपने कहा [illegible] कांग्रेस के मारवाड़ के नताओं ने [illegible]पुर सरकार में रहकर बहुत परिश्रम [illegible] निस्वार्थ भाव से काम कर दिखाया है।

* * *

श्री कावरा जी ने आगे कहा कि अब चूंकि बृहत् राजस्थान बनने जा रहा है अतएव हमारा कर्तव्य है कि हम भी राजधानी और उच्च न्यायालय के विषय में अब कुछ कहें। इन दोनों का फैसला राजस्थान की जनता की यातायात की सुविधा, कम खर्च और मध्यास्थान के सुभीते के आधार पर होना चाहिए। मारवाड़ के कांग्रेस के नेताओं से भी हम अनुरोध करेंगे कि वे कोई कोशिश इस कार्य में उठा न रखें। आगे आपने कहा कि दो रोज पूर्व की हिन्दुस्तान टाइम्स आदि पत्रों की खबर से हमे आशा से परे असंतोष हुआ है और हमारी राय में एक तरह का षड्यंत्र ही है। हम समझते हैं हमारे नेतागण भी इससे अवश्य सतर्क होंगे।

* * *

आगे आपने कहा कि दूसरी बात जो हम देख रहे हैं वह है सिरोही के विषय की हमारी राय और समझ से सिरोही को न्यायानुकूल बृहत् राजस्थान से किसी भी हालत से अलग नहीं किया जा सकता। किन्तु हमें खेद है कि इस बारे में राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के नेता लोग एवं वर्तमान जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, एवं वर्तमान संयुक्त राजस्थान के मंत्री वर्ग के लोग भी कुछ भी खुली बात कहने का साहस नहीं कर रहे हैं। जब सब जगह प्रजातंत्र की आवाज बुलन्द की जाती है तो क्या वजह है कि हमारे राजस्थान का आबू पहाड़ हमसे छीना जाने की चाल प्रत्यक्ष में चली जा रही है। क्यों नहीं इस विषय में कम से कम सिरोही की जनता का मत ही ले लिया जावे। हम चाहते हैं कि इस मामले को किसी भी रूप से हाथ से न जाने दें।

* * *

अन्त में कावरा जी ने व्यापारी वर्ग की ओर से कांग्रेस के कार्य के लिए ११ हजार रू० की थैली भेंट की। लोकनायक व्यासजी ने इन रूपयों को कांग्रेस के कार्य के लिए मारवाड़ कांग्रेस को दे देने की घोषणा की।

* * *

लोकनायक व्याजजी ने व्यापारी वर्ग को उत्तर देते हुए कहा कि होली पर जो गुलाल चारों ओर फैली है वह और भी रंग लानेवाली है। बृहत् राजस्थान के निर्माण की चर्चा हो रही है। राजस्थान की बड़ी रियासतें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, उदयपुर, आदि जिनकी संस्कृति और भाषा एक है, जिनका इतिहास एक है वे एक होने जा रहे हैं यह खुशी की बात है। सिरोही और मेरवाड़ा भी राजस्थान के अंग हैं।

* * *

जोधपुर राजस्थान के बीच में है। किन्तु दिल्ली अहमदाबाद लाइन पर जयपुर की भांति नहीं होने से इसे ज्यादा लोगों ने देखा नहीं है। एक बार जो भी इसे देख लेता है उसे प्रसन्नता होती है। जोधपुर राजस्थान में अपना महत्त्व का स्थान रखता है। यदि ऐसा महत्त्व नहीं होता तो जयपुर को राजधानी बनाने की घोषणा अब तक हो जाती। जयपुर में पैसेवाले अधिक हैं। बिड़ला जी के हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दुस्तान आदि और डालमिया जी के न्यूज क्रानिकल, नवभारत आदि अखबार है। जयपूर के धनवानों के प्रभाव और कार्य के यह नमूने हैं। मारवाड़ में भी धनवान् हैं वे भी अखबार निकालते रहे हैं पर उनकी दिशा कुछ और ही रही है। किन्तु किसी स्थान का महत्त्व अधिक धनवानों के होने से या उनके समाचार-पत्रों के होनेवाले प्रचार से नहीं हो सकता है।

* * *

राजस्थान की राजधानी के लिए जो कमेटी बनाई गई है उसके प्रति जनता में शंकाएँ हो रही हैं। स्थायी राजधानी तो वही होगी जिसे राजस्थान की जनता की विधान परिषद् तय करेगी। इस प्रकार के निर्णय के पूर्व यदि जयपुर सब चीजें अपने यहाँ रखना चाहेगा तो जयपुर राजस्थान की जनता के विरोध को मोल लेगा। हमें अपने कर्तव्य का पालन करना है, जोधपुर की सड़कें, जयपुर, बीकानेर, उदयपुर की सम्मिलित सड़कों से ज्यादा हैं। जोधपुर के आस-पास ६० मील के विस्तार में जितनी सड़कें हैं वे ही जयपुर से ज्यादा हैं। पूर्वी एसिया में श्रेष्ठ हवाई अड्डा जोधपुर है। केवल एक छीतर पेलेस ऐसा है जहाँ ३०० दफ्तर लग सकते हैं। बंगले, पाना आदि की भीं कमी नहीं है। रेलवे यातायात श्रेष्ठ हैं, किन्तु सब बातें कमेटी की सिफारिशों पर निर्भर है। जोधपुर को अपना अपना मामला रखना है जो भी निर्णय होगा वह सामने आवेगा। राजधानी तो एक ही जगह रहेगी।

* * *

अजमेर मेरवाड़ा राजस्थान में आगे-पीछे आवेगा किन्तु राजस्थान में सिरोही नहीं आ रही है वह आगे जाकर आ सकती है या नहीं यह आगे की बात है, आज सिरोही की जनता माँग कर रही है कि उसे राजस्थान में मिलाया जावे। सिरोही को ग्रेटर गुजरात में ले जाने के लिए कुछ जोर लगाया गया है, सिरोही का दूसरी रियासतों या नगरों की भांति दूसरे प्रान्तों की सीमा पर होने का अर्थ यह नहीं है कि सिरोही की संस्कृति गुजरात की संस्कृति है, सीमा के नगरों पर प्रत्येक स्थान पर आपकी पड़ोस के प्रान्त की भाषा आदि के शब्दों का प्रयोग होते मिलेगा। किन्तु इससे किसी स्थान की संस्कृति नहीं बदल जाती है। सिरोही के साथ आबू का महत्व है, हमें साहित्यिक, संस्कृति, और इतिहास की दृष्टि से देखना होगा, सिरोही का प्रश्न संस्कृति के आधार पर हमें लेना होगा।

* * *

लोकनायक व्यास जी ने कहा कि राजस्थान के नए मंत्रिमंडल में जोधपुर के भी कोई मंत्री होंगे। हमारा यत्न होना चाहिए कि हम गरीब जनता की भलाई के लिए काम करें। जोधपुर मंत्रिमंडल के जनहितकारी कार्यों की चर्चा करते हुए आपने कहा कि गरीबों के आर्थिक लाभ के लिए जितने यत्न किए गए हैं उनका भी कुछ अवसरवादियों ने और जागीरदारों ने विरोध किया। किन्तु कांग्रेस को सब वर्गों का ध्यान रखकर कार्य करना पड़ता है। अतएव हमें अवसरवादियों और ऐसे तत्त्वों को जो कि बाहर के इशारे पर गड़बड़ करना चाहते हैं उनको तो हमें नहीं पनपाना है किन्तु हमें कांग्रेस को मजबूत बनाना है।

व्यापारीवर्ग की ओर से उपस्थित व्यक्तियों का ठंढाई, शरबत और अल्पाहार द्वारा स्वागत किया गया।

—संवाददाता

* * *

जयपुर होली के दिन १५ मार्च को जयपुर शहर में कुछ झगड़ा हो गया। बतलाया जाता है कि शहर की एक घनी बस्ती के हिस्से में एक सिन्धी शरणार्थी द्वारा एक मुसलमान पर रंग का पानी फेंके जाने से झगड़ा हुआ। इसका उस मुसलमान ने विरोध किया। परिणामस्वरूप दोनों में झगड़ा होने लगा। शीघ्र ही बड़ी संख्या में लोग वहाँ इकट्ठे हो गये और कई स्थानों पर लूटने और आग लगाने की घटनाएँ हो गईं। इसकी सूचना जिलाधीश और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट को टेलीफोन से मिली और उन्होंने जहाँ भी आवश्यक हुआ पुलिस के दल भेज दिये। स्थिति को पूरी तरह काबू में कर लिया गया है। शाम को ५ बजे से सुबह ७ बजे तक शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया है।

—संवाददाता

* * *

कानपुर स्वावलम्बी महिला विद्यालय में महिलाओं और लड़कियों को साहित्य की प्रवेशिका, विनोदिनी, विदुषी, विशारद, साहित्यरत्न इत्यादि परीक्षाओं के अतिरिक्त पंजाब की भूषण और प्रभाकर तथा देवघर और गीताप्रेस की परीक्षाओं की तैयारी भी कराई जाती है। "गन्धर्व भारतीय आर्य संगीत पाठशाला' की ओर से इसी विद्यालय के अन्तर्गत कोर्स के अनुसार संगीत और सब प्रकार के वाद्ययन्त्रों का भी शास्त्रीय अभ्यास कराया जाता है। साहित्य और संगीत-कला के साथ ही मराठी, गुजराती बंगाली, तामिल, तैलगू इत्यादि प्रांतीय भाषाएँ सीखने और सिखाने का भी समुचित प्रबन्ध है। सिलाई में बुनाई, कढ़ाई इत्यादि सुई के काम के अलावा चर्खा क्लास में धुनाई, कताई, बुनाई इत्यादि का अभ्यास भी महिलाओं को कराया जाता है। शरणार्थी महिलाओं को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। प्रत्येक कला की शिक्षा के लिए योग्य अध्यापिकाओं का प्रबन्ध किया गया है। विद्यालय का स्थान गांधीनगर, जवाहर पार्क, सिंधी गुरुद्वारा के सामने पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी का मकान नं० १०६।२७७, कानपुर।

—ज्वालादेवी शर्मा

* * *

उद्योग

उद्योग-धन्धा तथा व्यापार-सम्बन्धी मासिकपत्रिका। सम्पादक श्री वी० डी० मुकर्जी, श्री केदारनाथ गुप्त। प्रकाशक नवभारत दारागंज प्रयाग। वार्षिक मूल्य ५) भारत की आर्थिक अवस्था तभी ठीक हो सकती है जब उसके निवासी उसके उद्योग-धन्धों की ओर बढ़ें और जन-साधारण की प्रवृत्ति उस ओर तभी होगी जब उद्योग-धन्धा सम्बन्धी अच्छे साहित्य का आविर्भाव होगा। नवभारत प्रकाशन के प्रबन्धकों ने 'उद्योग' का प्रकाशन करके इस ओर जो महत्त्वपूर्ण पग बढ़ाया है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है और इसमें कोई सन्देह नहीं है हिन्दी भाषी जनता के लिए उद्योग-धन्धा के क्षेत्र में वह पथ-प्रदर्शक का काम करेगा।

सम्पादकों ने पत्रिका का एक एक पृष्ठ का ज्ञानकोष और परमोपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। लोहे के कीलों का कारखाना, लकड़ी के बुरादे का व्यवसाय, मोमबत्ती के बनाने का कारखाना, दूध और दूध के सामानों का व्यवसाय, सिलोलाइड के सामान बनाना आदि शीर्षक लेख किसी भी भारत की महान् प्राकृतिक चमत्कार, प्रचुर खनिज-पदार्थ तथा औद्योगिक विकास के साधनों की जानकारी जन-साधारण को कराने के लिए 'उद्योग' जैसी पत्रिका की बड़ी आवश्यकता थी। यह प्रकाशन केवल जन-साधारण को ही लाभ पहुँचायेगी। वरन् विभिन्न प्रांतीय तथा रियासती सरकारों और उनकी जनता की टूटी हुई जंजीरों के बीच एक दृढ़ कड़ी का काम करेगी। यदि जन-साधारण समस्त योजनाएँ पहुँचाने का साधन न हुआ तो सरकारी योजनाएँ केवल कागजी योजनाएँ ही रह जायेंगी किन्तु 'उद्योग' उनको कार्यरूप में परिणित कराने में समर्थ होगा। बेकार के लिए अँधेरे में दीपक का काम करेंगे।

प्रान्तीय सरकारें, शिक्षा विभाग, शिक्षा प्रसार, शरणार्थी विभाग आदि में इस पत्रिका-द्वारा नया जीवन पैदा कर सकती हैं।

* * *

जयपुर भारत की स्वास्थ्य मंत्रिणी श्रीमती राजकुमारी अमृत कौर ने पिलानी में बिरला-शिक्षण-संस्थाओं का निरीक्षण और चिकित्सालय का शिलान्यास किया। उन्होंने इसी सिलसिले में श्री आचार्य नित्यानन्द सारस्वत को बतलाया कि "वैद्यक की उन्नति के लिए अनुसन्धान परमावश्यक हैं। आयुर्वेद की उच्च शिक्षा से पहले विज्ञान के बुनियादी सिद्धान्तों का अध्ययन अनिवार्य होने से चिकित्सा का स्तर ऊँचा हो सकेगा।" श्री आचार्य जी ने चौपड़ा-कमेटी की देशी-चिकित्सा-पद्धति पर अपने विचारों और वैद्यों की दिक्कतों से उन्हें अवगत कराया।

—अखिल विनय

टिकिया मशीन

गवर्नमेन्ट के उच्च अधिकारियों द्वारा सम्मानित लगभग १ पाव वजनी पीतल की बनी, बेहद मजबूत, ५/१६ व ३/८ इंच व्यासों की १/२ ग्रेन से १० ग्रेन तक की हूबहू एस्प्रो कुनैन की टिकियों जैसी फैन्सी १ घंटे में ३००/४०० टिकियाँ दवाइयों स्याही, पाउडर आदि की बनती हैं। मूल्य १४) डाकखर्च १)
इन्टर नेशनल इन्डस्ट्रीज लि०, अलीगढ़

113450

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंञ्जक चुटकुले

"अफ़गानिस्तान के कालेजों और स्कूलों तथा विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जायगी। इस आशय के कानून भी वहाँ बन रहे हैं। यह इसलिए नहीं कि संस्कृत की वृद्धि हो, बल्कि अफ़गानिस्तान की पश्तो भाषा का अधिकतर सम्बन्ध संस्कृत से है।

पर, भारत में तो राष्ट्रीयता के नाम पर उर्दू पढ़ाई जायगी जिसका सीधा सम्बन्ध फारसी और अरबी से है--क्योंकि शायद यहाँ के आर्यों की मूल भाषा अरबी से विकसित हुई है! भारत का पड़ोसी राष्ट्र संस्कृत सीख रहा है जो आर्यों की भाषा है, पर आर्यों की सन्तानें अपनी भाषा का लाभ कर रही हैं। यही तो सच्चे संत और वैरागियों की पहिचान है।

* * *

सरदार वल्लभभाई पटेल ने मद्रास के भाषण में हिन्दी के आगे राष्ट्रभाषा जोड़कर कहा है--राष्ट्रभाषा हिन्दी का का प्रचार कीजिए। महात्मा जी का यही रचनात्मक कार्यक्रम पूरा होने से रह गया है।

क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू सरदार पटेल के भाषण को पढ़ेंगे? अब हिन्दी और हिन्दुस्तानी का मामला अवश्य हल होना चाहिये। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। भारतीय मंत्रिमंडल के पटेल और नेहरू अविच्छिन्न अंग हैं। पंडित नेहरू विदेशी भाषा के मर्मज्ञ हैं और सरदार पटेल देशी के। परन्तु होगा क्या? इस पवारे के अंत का कोई मार्ग है या नहीं?

* * *

फिलीपाइन्स द्वीपसमूह में ७० वर्षीय एक वृद्ध के सिर पर सींग निकल आया है। डाक्टर लोग इस रोग को दूर करने का भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। पर उन्हें थोड़ी प्रतीक्षा और लेना चाहिए—क्योंकि देखते देखते उस बुड्ढे के कहीं दुम भी न निकल आये?

* * *

भार के कम्युनिस्ट सिर उठाने लगे हैं। कहा जाता है कि बर्मा और भारतीय सीमा से वे भारत में प्रवेश कर रहे हैं। उन्हीं के इशारे से भारत में भी उनका ध्वनि-विस्तार हो रहा है। कम्युनिज्म का प्रसार तो गीदड़ों की सी आवाज है। एक बोला कि फिर जंगल भर में शोर हुआ। फिर अफ़सोस है कि वे अपना आगा पीछा नहीं देख रहे हैं।

* * *

भारत में नये कारखाने खुलेंगे। रेलों के इंजिन बनेंगे, बिजली के और करखाने खुल रहे हैं। कपड़े की मिलें खुलेंगी पर, अभी सभी योजनाएं बिना रुपए के कागज तक ही सीमित हैं। काहे को ६ मन तेल इकट्ठा होगा और काहे राधा नाचेगी।

* * *

दक्षिणी लूजाँ के विशेल क्षेत्र में एक ७० वर्ष के बुड्ढे के बाईं कनपटी पर ५ इंच लम्बा सींग निकल आया है। पहले इस समाचार पर कोई विश्वास नहीं करता था, किन्तु पत्रकारों ने राष्ट्रपति कुरीत्रे के साथ लेगस्पी अस्पताल में उसे अपनी आँखों से देखा। उन्होंने इसका फोटो लेना चाहा किन्तु अस्पताल के अध्यक्ष डाक्टर पोबलो डी विलर ने इस पर आपत्ति की। राष्ट्रपति के अनुरोध पर भी उन्होंने फोटो नहीं खींचने दिया। डाक्टर विलर ने बताया कि चिकित्सा के इतिहास में यह अपने ढंग की प्रथम घटना है और वे इसका अध्ययन कर रहे हैं। उस ७० वर्षीय व्यक्ति ने--का कहना है कि ९० वर्ष का है--अपना नाम बताने से इनकार कर दिया। उसका कहना है कि उसके १३ लड़के-लड़कियाँ हैं और पोते पोतियों की संख्या उसे याद नहीं है। वह व्यक्ति कुछ दिनों पूर्व अपने सम्बन्धी द्वारा अस्पताल में भर्ती कराया गया है, सम्बन्धियों ने डाक्टर से बताया कि उसे १ वर्ष से सींग आ रहा था। देखने में सख्त पत्थर-सा लगता है और नीचे की ओर झुका है।

* * *

'जेट' विमान बड़ी ऊँची उड़ान तक उड़ सकेंगे। वे प्रति घंटे हजारों मील की गति से उड़ेंगे।

* * *

भारतवर्ष की रेलवे द्वारा सन् १९४७-४८ में १ अरब ४ करोड़ ४० लाख व्यक्तियों ने यात्रा की। उक्त वर्ष ७ करोड़ ३५ लाख टन माल रेल से भेजा गया। उतने ही दिनों में भारत के विभाजन के बाद घिसाई तथा सूद आदि का खर्च काटते हुए रेलवे को ७॥ करोड़ रुपये का घाटा हुआ। आसनसोल से २० मील दूर सिमम में एंजिन का कारखाना खुलेगा जिसमें १४ करोड़ रुपया व्यय होगा। इसके बन जाने पर एकपाली में १० हजार व्यक्ति काम करेंगे। उतने समय तक स्थायी तथा अस्थायी रूप से नियुक्त रेलवे कर्मचारियों की संख्या ८ लाख २३ हजार ७१२ थी जब कि सन् १९४६-४७ में यह संख्या ७ लाख ७१ हजार ९९३ थी।

* * *

भारत में इस समय प्रति वर्ष प्रायः ५॥ अरब किलोवाट बिजली खर्च होती है। सन् १९५९ तक १० अरब किलोवाट बिजली की जरूरत पड़ेगी।

* * *

सोवियट रूस की राजधानी मास्को में भारतीय दूतावास का मासिक किराया ८७२० रुपये हैं।

भारतीय स्वातन्त्र्य की दो भुजाएँ

(पेज ५ का शेष)

सदस्य आ गये। गांधी जी के आगमन की प्रतीक्षा की जा रही थी। गांधी जी जरा देर से आये।

उनके कमरे में प्रवेश करते ही सरोजिनीदेवी कूक उठीं—'लो दूल्हा आ गया!' गांधी जी ने झट उत्तर दिया कि "दुलहिन तो यहीं मौजूद है न?"

उस गम्भीर वातावरण में इस मधुर हास-परिहास ने स्वच्छ, शीतल समीर का-सा प्रभाव डाला।

आज सरोजिनी व बापू दोनों नहीं हैं—दोनों उस जगह हैं जहाँ वे आज तक कोई लौटकर नहीं आया। फिर भी ये दोनों विभूतियाँ युगों तक भारतीयों को नहीं भूलेंगी। वे सर्वतोमुखी महिला थीं। नेताओं के बीच में वे बड़ी बहन सी जँचती थीं। उन्हें 'हिन्द की बुलबुल' की योग्य पदवी मिली थी। गांधी जी तो उन्हें 'बुलबुल' नाम से ही लिखते थे और गांधी जी के पास रहनेवाले कई भाई-बहन उन्हें बड़े प्रेम से 'फओवा' (बुआ) कहते थे।

श्रीमती सरोजिनी स्वयं कवियित्री थीं--इसलिए देश के कवियों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि कविता की पंक्तियों के रूप में अर्पित की हैं। एक कवि की ये पंक्तियाँ श्रीमती सरोजिनीदेवी के सम्बन्ध में कितनी भावपूर्ण हैं--कवि लिखता है--

"पा तुम्हें नारीत्व ने निज,
स्वत्व और महत्त्व पाया,
पायेगा तव दिव्य अंचल,
की अपार ममत्व छाया।
काल के आगे गई तुम,
छोड़कर रथ स्वास का यह,
कीजिए स्वीकार श्रद्धा हार,
कवि, विश्वास का यह।"

सरोजिनी देवी की आत्मा को ईश्वर सद्गति दे।

डोंगरे बालामृत से
कमजोर बच्चे
ताक़तवर बनते हैं।

अन्तू सरदार

भरोस सरदार के लड़की के सिवा कोई सन्तान न थी। और भरोस था ऐसा लठैत जिससे पुलिस भी डरती थी। एक जमींदार के यहाँ भरोस नौकर था। उसने अपनी बेटी को भी लाठी चलाना सिखला दिया था। इसका ब्याह जिस अनन्त (अन्तू) से किया गया था वह भरोस से सवाया था। एक झमेले में बड़ी मार-काट हुई। इसमें अन्तू की स्त्री भी मारी गई और भतीजा प्रताप पागल-सा हो गया। पुलिस ने अन्तू को गिरफ़ार कर सज़ा करा दी। इधर प्रताप भी चल बसा। यह कहानी है तो बड़ों के लिए भी रोचक, परन्तु बच्चों को बहुत पसन्द आवेगी। सुन्दर सरल भाषा, कई चित्र और कवर-पृष्ठ रंगीन। मूल्य केवल बारह आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

दो भाग

भारत के इतिहास में गुप्त-सम्राटों का समय सुवर्ण युग नाम से प्रसिद्ध है। उस समय हमारी सभ्यता उच्च शिखर पर थी। बृहत्तर भारत में हमारी सभ्यता का प्रचलन था। इसमें गुप्त-पूर्व-भारत, नागवंश, भारशिव और वाकाटक-वंश आदि का वर्णन है। फिर गुप्त-सम्राटों के शासन आदि का ब्योरेवार विशद वर्णन है। यह विषय हिन्दी में इतने ब्योरे से अन्यत्र दुर्लभ है। इतिहास-प्रेमियों को यह ग्रन्थ अवश्य लेना चाहिये। पुस्तक बड़े आकार में छोटे टाइप में, अच्छे कागज पर छपी है। सुन्दर जिल्द है। सचित्र है। मूल्य प्रथम खण्ड ४) चार रुपये; द्वितीय खण्ड ५॥) पाँच रुपये आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

मुफ़्त असली रि

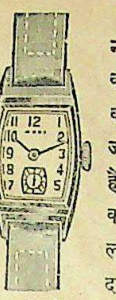

हमारे प्रसि नं० ५५५ डी करने से बाल काले हो जाते जीवन भर हैं। यह तैल सि को रोकता है लम्बे व घुँघराले दार बनाता है, आते हों वहाँ फिर से पैदा है आँखों की रोशनी को तेज सिर को ठंडक पहुँचाता है। न्वित है। कीमत एक शीश शीशी पूरा कोर्स ६॥)। इस करने के लिए एक शीशी फैंसी रिस्टवाच जिसकी सुन्द की गारन्टी दस साल है औ सोना (न्यू गोल्ड लण्डन) भेजी जाती है।

जरूरी नोट—माल कीमत शीघ्र वापस क शीशी दवाई के खरीद बिलकुल माफ और चार अँ न्यू गोल्ड) और चार घड़िया इनाम दी जाती हैं। जल्दी यह समय बार बार जो सेवा आर्डर देते समय अपने उसकी चर्चा साफ लिखें।

हिमालय औषधालय
हलका नं० २२ अमृत

सफेद बाल क

खिजाब से नहीं हमारे "केश सञ्जीवनी" (सुगन्धित) का पकना रुककर सफेद बाल हो जाता है। यह तैल दिमाग आँखों की रोशनी को बढ़ विश्वास न हो वे दूना मूल्य लिखा लें। मूल्य २) रु० बा गया हो तो ४) रु० का तैल मँ

श्री प्रयागराम ६४ काजी
पो० शिवपुर (हव

परीदेश

यह पुस्तक ख़ास कर लिए है। इसमें ऐसी एक जिसको समझने के लिए मा पड़े। इसमें रोजमर्रा की अच्छे ढंग से लिखी गई हैं। की पुस्तक रंग-बिरंगे चित्रों पत्तियों की सुन्दरता मनोहर

अपराजित

यह श्रीयुत रामेश्वर ए०, 'अञ्चल' की कतिपय सुन्द का संग्रह है। कविताएँ न नूतन सांस्कृतिक रुचि और हैं। कवि 'अंचल' की रचनाओं प्राप्त करने के लिए अपराजित देखिए। सजिल्द पुस्तक का

मैनेजर इंडियन प्रेस, लि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Stock Verification-2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar